किताबे-मुक़द्दस

The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo Version, Hindi Script

किताबे-मुक़द्दस

The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo Version, Hindi Script

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: اردو (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.
You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:
You include the above copyright and source information.
You do not sell this work for a profit.
You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.
Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2023-11-29

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 22 Feb 2024 from source files dated 30 Nov 2023
a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299

Contents

मत्ती . . . 1
मरक़ुस . . . 39
लूक़ा . . . 64
यूहन्ना . . . 106
आमाल . . . 136
रोमियों . . . 173
1 कुरिंथियों . . . 190
2 कुरिंथियों . . . 206
गलतियों . . . 217
इफ़िसियों . . . 223
फ़िलिप्पियों . . . 228
कुलुस्सियों . . . 233
1 थिस्सलुनीकियों . . . 237
2 थिस्सलुनीकियों . . . 241
1 तीमुथियुस . . . 243
2 तीमुथियुस . . . 248
तितुस . . . 252
फ़िलेमोन . . . 254
इबरानियों . . . 255
याक़ूब . . . 269
1 पतरस . . . 273
2 पतरस . . . 278
1 यूहन्ना . . . 281
2 यूहन्ना . . . 285
3 यूहन्ना . . . 286
यहूदाह . . . 287
मुकाशफ़ा . . . 289
ज़बूर . . . 307

मत्ती

ईसा मसीह का नसबनामा

[1] ईसा मसीह बिन दाऊद बिन इब्राहीम का नसबनामा :

[2] इब्राहीम इसहाक़ का बाप था, इसहाक़ याक़ूब का बाप और याक़ूब यहूदा और उसके भाइयों का बाप। [3] यहूदा
के दो बेटे फ़ारस और ज़ारह थे (उनकी माँ तमर थी)। फ़ारस हसरोन का बाप और हसरोन राम का बाप था। [4] राम
अम्मीनदाब का बाप, अम्मीनदाब नहसोन का बाप और नहसोन सलमोन का बाप था। [5] सलमोन बोअज़ का बाप था
(बोअज़ की माँ राहब थी)। बोअज़ ओबेद का बाप था (ओबेद की माँ रूत थी)। ओबेद यस्सी का बाप और [6] यस्सी
दाऊद बादशाह का बाप था।

दाऊद सुलेमान का बाप था (सुलेमान की माँ पहले ऊरिय्याह की बीवी थी)। [7] सुलेमान रहुबियाम का बाप, रहुबियाम
अबियाह का बाप और अबियाह आसा का बाप था। [8] आसा यहूसफ़त का बाप, यहूसफ़त यूराम का बाप और यूराम
उज़्ज़ियाह का बाप था। [9] उज़्ज़ियाह यूताम का बाप, यूताम आख़ज़ का बाप और आख़ज़ हिज़क़ियाह का बाप था।
[10] हिज़क़ियाह मनस्सी का बाप, मनस्सी अमून का बाप और अमून यूसियाह का बाप था। [11] यूसियाह यहूयाकीन *
और उसके भाइयों का बाप था (यह बाबल की जिलावतनी के दौरान पैदा हुए)।

[12] बाबल की जिलावतनी के बाद यहूयाकीन † सियालतियेल का बाप और सियालतियेल ज़रुब्बाबल का बाप था।
[13] ज़रुब्बाबल अबीहूद का बाप, अबीहूद इलियाक़ीम का बाप और इलियाक़ीम आज़ोर का बाप था। [14] आज़ोर सदोक़
का बाप, सदोक़ अख़ीम का बाप और अख़ीम इलीहूद का बाप था। [15] इलीहूद इलियज़र का बाप, अलियज़र मत्तान
का बाप और मत्तान का बाप याक़ूब था। [16] याक़ूब मरियम के शौहर यूसुफ़ का बाप था। इस मरियम से ईसा पैदा हुआ,
जो मसीह कहलाता है।

[17] यों इब्राहीम से दाऊद तक 14 नसलें हैं, दाऊद से बाबल की जिलावतनी तक 14 नसलें हैं और जिलावतनी से
मसीह तक 14 नसलें हैं।

ईसा मसीह की पैदाइश

[18] ईसा मसीह की पैदाइश यों हुई : उस वक़्त उस की माँ मरियम की मँगनी यूसुफ़ के साथ हो चुकी थी कि वह
रूहुल-क़ुद्स से हामिला पाई गई। अभी उनकी शादी नहीं हुई थी। [19] उसका मंगेतर यूसुफ़ रास्तबाज़ था, वह अलानिया
मरियम को बदनाम नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने ख़ामोशी से यह रिश्ता तोड़ने का इरादा कर लिया। [20] वह
इस बात पर अभी ग़ौरो-फ़िकर कर ही रहा था कि रब का फ़रिश्ता ख़ाब में उस पर ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, "यूसुफ़
बिन दाऊद, मरियम से शादी करके उसे अपने घर ले आने से मत डर, क्योंकि पैदा होनेवाला बच्चा रूहुल-क़ुद्स से
है। [21] उसके बेटा होगा और उसका नाम ईसा रखना, क्योंकि वह अपनी क़ौम को उसके गुनाहों से रिहाई देगा।"

[22] यह सब कुछ इसलिए हुआ ताकि रब की वह बात पूरी हो जाए जो उसने अपने नबी की मारिफ़त फ़रमाई थी,
[23] "देखो एक कुँवारी हामिला होगी। उससे बेटा पैदा होगा और वह उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे।" (इम्मानुएल का
मतलब 'ख़ुदा हमारे साथ' है।)

[24] जब यूसुफ़ जाग उठा तो उसने रब के फ़रिश्ते के फ़रमान के मुताबिक़ मरियम से शादी कर ली और उसे अपने
घर ले गया। [25] लेकिन जब तक उसके बेटा पैदा न हुआ वह मरियम से हमबिसतर न हुआ। और यूसुफ़ ने बच्चे का
नाम ईसा रखा।

2

मशरिक़ से मजूसी आलिम

[1] ईसा हेरोदेस बादशाह के ज़माने में सूबा यहूदिया के शहर बैत-लहम में पैदा हुआ। उन दिनों में कुछ मजूसी आलिम
मशरिक़ से आकर यरूशलम पहुँच गए। [2] उन्होंने पूछा, "यहूदियों का वह बादशाह कहाँ है जो हाल ही में पैदा हुआ
है? क्योंकि हमने मशरिक़ में उसका सितारा देखा है और हम उसे सिजदा करने आए हैं।"

[3] यह सुनकर हेरोदेस बादशाह पूरे यरूशलम समेत घबरा गया। [4] तमाम राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा को
जमा करके उसने उनसे दरियाफ़्त किया कि मसीह कहाँ पैदा होगा।

---

* **1:11** यूनानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है। † **1:12** यूनानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

5 उन्होंने जवाब दिया, “यहूदिया के शहर बैत-लहम में, क्योंकि नबी की मारिफ़त यों लिखा है, 6 ‘ऐ मुल्के-यहूदिया
में वाक़े बैत-लहम, तू यहूदिया के हुक्मरानों में हरगिज़ सबसे छोटा नहीं। क्योंकि तुझमें से एक हुक्मरान निकलेगा जो
मेरी क़ौम इसराईल की गल्लाबानी करेगा’।”
7 इस पर हेरोदेस ने ख़ुफ़िया तौर पर मजूसी आलिमों को बुलाकर तफ़सील से पूछा कि वह सितारा किस वक़्त
दिखाई दिया था। 8 फिर उसने उन्हें बताया, “बैत-लहम जाएँ और तफ़सील से बच्चे का पता लगाएँ। जब आप उसे पा
लें तो मुझे इत्तला दें ताकि मैं भी जाकर उसे सिजदा करूँ।”
9 बादशाह के इन अलफ़ाज़ के बाद वह चले गए। और देखो जो सितारा उन्होंने मशरिक़ में देखा था वह उनके आगे
आगे चलता गया और चलते चलते उस मक़ाम के ऊपर ठहर गया जहाँ बच्चा था। 10 सितारे को देखकर वह बहुत
ख़ुश हुए। 11 वह घर में दाख़िल हुए और बच्चे को माँ के साथ देखकर उन्होंने औंधे मुँह गिरकर उसे सिजदा किया।
फिर अपने डिब्बे खोलकर उसे सोने, लुबान और मुर के तोहफ़े पेश किए।
12 जब रवानगी का वक़्त आया तो वह यरूशलम से होकर न गए बल्कि एक और रास्ते से अपने मुल्क चले गए,
क्योंकि उन्हें ख़ाब में आगाह किया गया था कि हेरोदेस के पास वापस न जाओ।

मिसर की जानिब हिजरत

13 उनके चले जाने के बाद रब का फ़रिश्ता ख़ाब में यूसुफ़ पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “उठ, बच्चे को उस की माँ
समेत लेकर मिसर को हिजरत कर जा। जब तक मैं तुझे इत्तला न दूँ वहीं ठहरा रह, क्योंकि हेरोदेस बच्चे को तलाश
करेगा ताकि उसे क़त्ल करे।”
14 यूसुफ़ उठा और उसी रात बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मिसर के लिए रवाना हुआ। 15 वहाँ वह हेरोदेस
के इंतक़ाल तक रहा। यों वह बात पूरी हुई जो रब ने नबी की मारिफ़त फ़रमाई थी, “मैंने अपने फ़रज़ंद को मिसर से
बुलाया।”

बच्चों का क़त्ल

16 जब हेरोदेस को मालूम हुआ कि मजूसी आलिमों ने मुझे फ़रेब दिया है तो उसे बड़ा तैश आया। उसने अपने
फ़ौजियों को बैत-लहम भेजकर उन्हें हुक्म दिया कि बैत-लहम और इर्दगिर्द के इलाक़े के उन तमाम लड़कों को क़त्ल
करें जिनकी उम्र दो साल तक हो। क्योंकि उसने मजूसियों से बच्चे की उम्र के बारे में यह मालूम कर लिया था।
17 यों यरमियाह नबी की पेशगोई पूरी हुई, 18 “रामा में शोर मच गया है, रोने पीटने और शदीद मातम की आवाज़ें।
राख़िल अपने बच्चों के लिए रो रही है और तसल्ली क़बूल नहीं कर रही, क्योंकि वह हलाक हो गए हैं।”

मिसर से वापसी

19 जब हेरोदेस इंतक़ाल कर गया तो रब का फ़रिश्ता ख़ाब में यूसुफ़ पर ज़ाहिर हुआ जो अभी मिसर ही में था।
20 फ़रिश्ते ने उसे बताया, “उठ, बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मुल्के-इसराईल वापस चला जा, क्योंकि जो बच्चे
को जान से मारने के दरपै थे वह मर गए हैं।” 21 चुनाँचे यूसुफ़ उठा और बच्चे और उस की माँ को लेकर मुल्के-इसराईल
में लौट आया।
22 लेकिन जब उसने सुना कि अरख़िलाउस अपने बाप हेरोदेस की जगह यहूदिया में तख़्तनशीन हो गया है तो वह
वहाँ जाने से डर गया। फिर ख़ाब में हिदायत पाकर वह गलील के इलाक़े के लिए रवाना हुआ। 23 वहाँ वह एक शहर
में जा बसा जिसका नाम नासरत था। यों नबियों की बात पूरी हुई कि ‘वह नासरी कहलाएगा।’

3

यहया बपतिस्मा देनेवाले की ख़िदमत

1 उन दिनों में यहया बपतिस्मा देनेवाला आया और यहूदिया के रेगिस्तान में एलान करने लगा, 2 “तौबा करो,
क्योंकि आसमान की बादशाही क़रीब आ गई है।” 3 यहया वही है जिसके बारे में यसायाह नबी ने फ़रमाया, ‘रेगिस्तान
में एक आवाज़ पुकार रही है, रब की राह तैयार करो! उसके रास्ते सीधे बनाओ।’
4 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था। ख़ुराक के तौर पर वह
टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था। 5 लोग यरूशलम, पूरे यहूदिया और दरियाए-यरदन के पूरे इलाक़े से निकलकर
उसके पास आए। 6 और अपने गुनाहों को तसलीम करके उन्होंने दरियाए-यरदन में यहया से बपतिस्मा लिया।
7 बहुत-से फ़रीसी और सदूक़ी भी वहाँ आए जहाँ वह बपतिस्मा दे रहा था। उन्हें देखकर उसने कहा, “ऐ ज़हरीले
साँप के बच्चो! किसने तुम्हें आनेवाले ग़ज़ब से बचने की हिदायत की? 8 अपनी ज़िंदगी से ज़ाहिर करो कि तुमने
वाक़ई तौबा की है। 9 यह ख़याल मत करो कि हम तो बच जाएंगे क्योंकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुमको बताता हूँ
कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। 10 अब तो अदालत की कुल्हाड़ी दरख़्तों

की जड़ों पर रखी हुई है। हर दरख़्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में झोंका जाएगा। 11 मैं तो तुम तौबा
करनेवालों को पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं उसके जूतों को उठाने के भी
लायक़ नहीं। वह तुम्हें रूहुल-क़ुद्स और आग से बपतिस्मा देगा। 12 वह हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से
अलग करने के लिए तैयार खड़ा है। वह गाहने की जगह बिलकुल साफ़ करके अनाज को अपने गोदाम में जमा करेगा।
लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।”

ईसा का बपतिस्मा

13 फिर ईसा गलील से दरियाए-यरदन के किनारे आया ताकि यहया से बपतिस्मा ले। 14 लेकिन यहया ने उसे रोकने
की कोशिश करके कहा, “मुझे तो आपसे बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है, तो फिर आप मेरे पास क्यों आए हैं?”
15 ईसा ने जवाब दिया, “अब होने ही दे, क्योंकि मुनासिब है कि हम यह करते हुए अल्लाह की रास्त मरज़ी पूरी
करें।” * इस पर यहया मान गया।
16 बपतिस्मा लेने पर ईसा फ़ौरन पानी से निकला। उसी लमहे आसमान खुल गया और उसने अल्लाह के रूह को
देखा जो कबूतर की तरह उतरकर उस पर ठहर गया। 17 साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा
फ़रज़ंद है, इससे मैं ख़ुश हूँ।”

4

ईसा को आज़माया जाता है

1 फिर रूहुल-क़ुद्स ईसा को रेगिस्तान में ले गया ताकि उसे इबलीस से आज़माया जाए। 2 चालीस दिन और चालीस
रात रोज़ा रखने के बाद उसे आख़िरकार भूक लगी। 3 फिर आज़मानेवाला उसके पास आकर कहने लगा, “अगर तू
अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इन पत्थरों को हुक्म दे कि रोटी बन जाएँ।”
4 लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, “हरगिज़ नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि इनसान की ज़िंदगी
सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।”
5 इस पर इबलीस ने उसे मुक़द्दस शहर यरूशलम ले जाकर बैतुल-मुक़द्दस की सबसे ऊँची जगह पर खड़ा किया
और कहा, 6 “अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो यहाँ से छलाँग लगा दे। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘वह
तेरी ख़ातिर अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न
लगे’।”
7 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “कलामे-मुक़द्दस यह भी फ़रमाता है, ‘रब अपने ख़ुदा को न आज़माना’।”
8 फिर इबलीस ने उसे एक निहायत ऊँचे पहाड़ पर ले जाकर उसे दुनिया के तमाम ममालिक और उनकी शानो-शौकत
दिखाई। 9 वह बोला, “यह सब कुछ मैं तुझे दे दूँगा, शर्त यह है कि तू गिरकर मुझे सिजदा करे।”
10 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया और कहा, “इबलीस, दफ़ा हो जा! क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में यों
लिखा है, ‘रब अपने ख़ुदा को सिजदा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर’।”
11 इस पर इबलीस उसे छोड़कर चला गया और फ़रिश्ते आकर उस की ख़िदमत करने लगे।

गलील में ईसा की ख़िदमत का आग़ाज़

12 जब ईसा को ख़बर मिली कि यहया को जेल में डाल दिया गया है तो वह वहाँ से चला गया और गलील में आया।
13 नासरत को छोड़कर वह झील के किनारे पर वाक़े शहर कफ़र्नहूम में रहने लगा, यानी ज़बूलून और नफ़ताली के
इलाक़े में। 14 यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,
15 “ज़बूलून का इलाक़ा, नफ़ताली का इलाक़ा,
झील के साथ का रास्ता, दरियाए-यरदन के पार,
ग़ैरयहूदियों का गलील :
16 अंधेरे में बैठी क़ौम ने एक तेज़ रौशनी देखी,
मौत के साये में डूबे हुए मुल्क के बाशिंदों पर रौशनी चमकी।”
17 उस वक़्त से ईसा इस पैग़ाम की मुनादी करने लगा, “तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही क़रीब आ गई
है।”

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

* **3:15** लफ़्ज़ी तरजुमा : हम तमाम रास्तबाज़ी पूरी करें।

18 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे किनारे चल रहा था तो उसने दो भाइयों को देखा—शमौन जो
पतरस भी कहलाता था और अंदरियास को। वह पानी में जाल डाल रहे थे, क्योंकि वह माहीगीर थे। 19 उसने कहा,
“आओ, मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको आदमगीर बनाऊँगा।” 20 यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़कर उसके पीछे
हो लिए।
21 आगे जाकर ईसा ने दो और भाइयों को देखा, याक़ूब बिन ज़बदी और उसके भाई यूहन्ना को। वह कश्ती में बैठे
अपने बाप ज़बदी के साथ अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे। ईसा ने उन्हें बुलाया 22 तो वह फ़ौरन कश्ती और अपने
बाप को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

ईसा तालीम देता, मुनादी करता और शफ़ा देता है

23 और ईसा गलील के पूरे इलाक़े में फिरता रहा। जहाँ भी वह जाता वह यहूदी इबादतख़ानों में तालीम देता, बादशाही
की ख़ुशख़बरी सुनाता और हर क़िस्म की बीमारी और अलालत से शफ़ा देता था। 24 उस की ख़बर मुल्के-शाम के
कोने कोने तक पहुँच गई, और लोग अपने तमाम मरीज़ों को उसके पास लाने लगे। क़िस्म क़िस्म की बीमारियों तले
दबे लोग, ऐसे जो शदीद दर्द का शिकार थे, बदरूहों की गिरिफ़्त में मुब्तला, मिरगीवाले और फ़ालिजज़दा, ग़रज़ जो
भी आया ईसा ने उसे शफ़ा बख़्शी। 25 गलील, दिकपुलिस, यरूशलम, यहूदिया और दरियाए-यरदन के पार के इलाक़े
से बड़े बड़े हुजूम उसके पीछे चलते रहे।

5

पहाड़ी वाज़

1 भीड़ को देखकर ईसा पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया। उसके शागिर्द उसके पास आए 2 और वह उन्हें यह तालीम
देने लगा :

हक़ीक़ी ख़ुशी

3 “मुबारक हैं वह जिनकी रूह ज़रूरतमंद है, क्योंकि आसमान की बादशाही उन्हीं की है।
4 मुबारक हैं वह जो मातम करते हैं, क्योंकि उन्हें तसल्ली दी जाएगी।
5 मुबारक हैं वह जो हलीम हैं, क्योंकि वह ज़मीन विरसे में पाएँगे।
6 मुबारक हैं वह जिन्हें रास्तबाज़ी की भूक और प्यास है, क्योंकि वह सेर हो जाएंगे।
7 मुबारक हैं वह जो रहमदिल हैं, क्योंकि उन पर रहम किया जाएगा।
8 मुबारक हैं वह जो ख़ालिस दिल हैं, क्योंकि वह अल्लाह को देखेंगे।
9 मुबारक हैं वह जो सुलह कराते हैं, क्योंकि वह अल्लाह के फ़रज़ंद कहलाएँगे।
10 मुबारक हैं वह जिनको रास्तबाज़ होने के सबब से सताया जाता है, क्योंकि उन्हें आसमान की बादशाही विरसे में
मिलेगी।
11 मुबारक हो तुम जब लोग मेरी वजह से तुम्हें लान-तान करते, तुम्हें सताते और तुम्हारे बारे में हर क़िस्म की बुरी
और झूटी बात करते हैं। 12 ख़ुशी मनाओ और बाग़ बाग़ हो जाओ, तुमको आसमान पर बड़ा अज्र मिलेगा। क्योंकि
इसी तरह उन्होंने तुमसे पहले नबियों को भी ईज़ा पहुँचाई थी।

तुम नमक और रौशनी हो

13 तुम दुनिया का नमक हो। लेकिन अगर नमक का ज़ायक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर दुबारा नमकीन किया
जा सकता है? वह किसी भी काम का नहीं रहा बल्कि बाहर फेंका जाएगा जहाँ वह लोगों के पाँवों तले रौंदा जाएगा।
14 तुम दुनिया की रौशनी हो। पहाड़ पर वाक़े शहर की तरह तुमको छुपाया नहीं जा सकता। 15 जब कोई चराग़
जलाता है तो वह उसे बरतन के नीचे नहीं रखता बल्कि शमादान पर रख देता है जहाँ से वह घर के तमाम अफ़राद
को रौशनी देता है। 16 इसी तरह तुम्हारी रौशनी भी लोगों के सामने चमके ताकि वह तुम्हारे नेक काम देखकर तुम्हारे
आसमानी बाप को जलाल दें।

शरीअत

17 यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और नबियों की बातों को मनसूख़ करने आया हूँ। मनसूख़ करने नहीं बल्कि
उनकी तकमील करने आया हूँ। 18 मैं तुमको सच बताता हूँ, जब तक आसमानो-ज़मीन क़ायम रहेंगे तब तक शरीअत
भी क़ायम रहेगी—न उसका कोई हरफ़, न उसका कोई ज़ेर या ज़बर मनसूख़ होगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए।
19 जो इन सबसे छोटे अहकाम में से एक को भी मनसूख़ करे और लोगों को ऐसा करना सिखाए उसे आसमान की
बादशाही में सबसे छोटा क़रार दिया जाएगा। इसके मुक़ाबले में जो इन अहकाम पर अमल करके इन्हें सिखाता है उसे

आसमान की बादशाही में बड़ा क़रार दिया जाएगा। 20 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी शरीअत
के उलमा और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज़्यादा नहीं तो तुम आसमान की बादशाही में दाख़िल होने के लायक़ नहीं।

गुस्सा

21 तुमने सुना है कि बापदादा को फ़रमाया गया, 'क़त्ल न करना। और जो क़त्ल करे उसे अदालत में जवाब देना
होगा।' 22 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि जो भी अपने भाई पर ग़ुस्सा करे उसे अदालत में जवाब देना होगा। इसी तरह
जो अपने भाई को 'अहमक़' कहे उसे यहूदी अदालते-आलिया में जवाब देना होगा। और जो उसको 'बेवुक़ूफ़!' कहे
वह जहन्नुम की आग में फेंके जाने के लायक़ ठहरेगा। 23 लिहाज़ा अगर तुझे बैतुल-मुक़द्दस में क़ुरबानी पेश करते वक़्त
याद आए कि तेरे भाई को तुझसे कोई शिकायत है 24 तो अपनी क़ुरबानी को वहीं क़ुरबानगाह के सामने ही छोड़कर
अपने भाई के पास चला जा। पहले उससे सुलह कर और फिर वापस आकर अल्लाह को अपनी क़ुरबानी पेश कर।
25 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़दमा चलाया है। अगर ऐसा हो तो कचहरी में दाख़िल होने से पहले पहले
जल्दी से झगड़ा ख़त्म कर। ऐसा न हो कि वह तुझे जज के हवाले करे, जज तुझे पुलिस अफ़सर के हवाले करे और
नतीजे में तुझको जेल में डाला जाए। 26 मैं तुझे सच बताता हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक नहीं निकल पाएगा जब तक
जुर्माने की पूरी पूरी रक़म अदा न कर दे।

ज़िनाकारी

27 तुमने यह हुक्म सुन लिया है कि 'ज़िना न करना।' 28 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, जो किसी औरत को बुरी ख़ाहिश
से देखता है वह अपने दिल में उसके साथ ज़िना कर चुका है। 29 अगर तेरी दाईं आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो
उसे निकालकर फेंक दे। इससे पहले कि तेरे पूरे जिस्म को जहन्नुम में डाला जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही अज़ु
जाता रहे। 30 और अगर तेरा दहना हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काटकर फेंक दे। इससे पहले कि तेरा पूरा
जिस्म जहन्नुम में जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही अज़ु जाता रहे।

तलाक़

31 यह भी फ़रमाया गया है, 'जो भी अपनी बीवी को तलाक़ दे वह उसे तलाक़नामा लिख दे।' 32 लेकिन मैं तुमको
बताता हूँ कि अगर किसी की बीवी ने ज़िना न किया हो तो भी शौहर उसे तलाक़ दे तो वह उससे ज़िना कराता है। और
जो तलाक़शुदा औरत से शादी करे वह ज़िना करता है।

क़सम मत खाना

33 तुमने यह भी सुना है कि बापदादा को फ़रमाया गया, 'झूटी क़सम मत खाना बल्कि जो वादे तूने रब से क़सम
खाकर किए हों उन्हें पूरा करना।' 34 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, क़सम बिलकुल न खाना। न 'आसमान की क़सम'
क्योंकि आसमान अल्लाह का तख़्त है, 35 न 'ज़मीन की' क्योंकि ज़मीन उसके पाँवों की चौकी है। 'यरूशलम की
क़सम' भी न खाना क्योंकि यरूशलम अज़ीम बादशाह का शहर है। 36 यहाँ तक कि अपने सर की क़सम भी न खाना,
क्योंकि तू अपना एक बाल भी काला या सफ़ेद नहीं कर सकता। 37 सिर्फ़ इतना ही कहना, 'जी हाँ' या 'जी नहीं।'
अगर इससे ज़्यादा कहो तो यह इबलीस की तरफ़ से है।

बदला लेना

38 तुमने सुना है कि यह फ़रमाया गया है, 'आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत।' 39 लेकिन मैं तुमको बताता
हूँ कि बदकार का मुक़ाबला मत करना। अगर कोई तेरे दहने गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश कर दे।
40 अगर कोई तेरी क़मीस लेने के लिए तुझ पर मुक़दमा करना चाहे तो उसे अपनी चादर भी दे देना। 41 अगर कोई
तुझको उसका सामान उठाकर एक किलोमीटर जाने पर मजबूर करे तो उसके साथ दो किलोमीटर चला जाना। 42 जो
तुझसे कुछ माँगे उसे दे देना और जो तुझसे क़र्ज़ लेना चाहे उससे इनकार न करना।

दुश्मन से मुहब्बत

43 तुमने सुना है कि फ़रमाया गया है, 'अपने पड़ोसी से मुहब्बत रखना और अपने दुश्मन से नफ़रत करना।'
44 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उनके लिए दुआ करो जो तुमको सताते हैं। 45 फिर
तुम अपने आसमानी बाप के फ़रज़ंद ठहरोगे, क्योंकि वह अपना सूरज सब पर तुलू होने देता है, ख़ाह वह अच्छे हों या
बुरे। और वह सब पर बारिश बरसने देता है, ख़ाह वह रास्तबाज़ हों या नारास्त। 46 अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से मुहब्बत
करो जो तुमसे करते हैं तो तुमको क्या अज्र मिलेगा? टैक्स लेनेवाले भी तो ऐसा ही करते हैं। 47 और अगर तुम सिर्फ़
अपने भाइयों के लिए सलामती की दुआ करो तो कौन-सी ख़ास बात करते हो? ग़ैरयहूदी भी तो ऐसा ही करते हैं।
48 चुनाँचे वैसे ही कामिल हो जैसा तुम्हारा आसमानी बाप कामिल है।

6

ख़ैरात
1 ख़बरदार! अपने नेक काम लोगों के सामने दिखावे के लिए न करो, वरना तुमको अपने आसमानी बाप से कोई
अज्र नहीं मिलेगा।
2 चुनाँचे ख़ैरात देते वक़्त रियाकारों की तरह न कर जो इबादतख़ानों और गलियों में बिगुल बजाकर इसका एलान
करते हैं ताकि लोग उनकी इज़्ज़त करें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है।
3 इसके बजाए जब तू ख़ैरात दे तो तेरे दाएँ हाथ को पता न चले कि बायाँ हाथ क्या कर रहा है। 4 तेरी ख़ैरात यों
पोशीदगी में दी जाए तो तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

दुआ
5 दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना जो इबादतख़ानों और चौकों में जाकर दुआ करना पसंद करते हैं,
जहाँ सब उन्हें देख सकें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 6 इसके बजाए जब
तू दुआ करता है तो अंदर के कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में है। फिर
तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।
7 दुआ करते वक़्त ग़ैरयहूदियों की तरह तवील और बेमानी बातें न दोहराते रहो। वह समझते हैं कि हमारी बहुत-सी
बातों के सबब से हमारी सुनी जाएगी। 8 उनकी मानिंद न बनो, क्योंकि तुम्हारा बाप पहले से तुम्हारी ज़रूरियात से
वाक़िफ़ है, 9 बल्कि यों दुआ किया करो,
ऐ हमारे आसमानी बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
10 तेरी बादशाही आए।
तेरी मरज़ी जिस तरह आसमान में पूरी होती है ज़मीन पर भी पूरी हो।
11 हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।
12 हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर
जिस तरह हमने उन्हें मुआफ़ किया *
जिन्होंने हमारा गुनाह किया है।
13 और हमें आज़माइश में न पड़ने दे
बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख।
[क्योंकि बादशाही, क़ुदरत और जलाल अबद तक तेरे ही हैं।]
14 क्योंकि जब तुम लोगों के गुनाह मुआफ़ करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुमको मुआफ़ करेगा। 15 लेकिन
अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाह मुआफ़ नहीं करेगा।

रोज़ा
16 रोज़ा रखते वक़्त रियाकारों की तरह मुँह लटकाए न फिरो, क्योंकि वह ऐसा रूप भरते हैं ताकि लोगों को मालूम
हो जाए कि वह रोज़ा से हैं। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 17 ऐसा मत
करना बल्कि रोज़े के वक़्त अपने बालों में तेल डाल और अपना मुँह धो। 18 फिर लोगों को मालूम नहीं होगा कि तू
रोज़ा से है बल्कि सिर्फ़ तेरे बाप को जो पोशीदगी में है। और तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा
देगा।

आसमान पर ख़ज़ाना
19 इस दुनिया में अपने लिए ख़ज़ाने जमा न करो, जहाँ कीड़ा और ज़ंग उन्हें खा जाते और चोर नक़ब लगाकर चुरा
लेते हैं। 20 इसके बजाए अपने ख़ज़ाने आसमान पर जमा करो जहाँ कीड़ा और ज़ंग उन्हें तबाह नहीं कर सकते, न चोर
नक़ब लगाकर चुरा सकते हैं। 21 क्योंकि जहाँ तेरा ख़ज़ाना है वहीं तेरा दिल भी लगा रहेगा।

जिस्म की रौशनी
22 बदन का चराग़ आँख है। अगर तेरी आँख ठीक हो तो फिर तेरा पूरा बदन रौशन होगा। 23 लेकिन अगर तेरी
आँख ख़राब हो तो तेरा पूरा बदन अंधेरा ही अंधेरा होगा। और अगर तेरे अंदर की रौशनी तारीकी हो तो यह तारीकी
कितनी शदीद होगी!

---

* **6:12** लफ़्ज़ी तरजुमा : हमारे क़र्ज़ हमें मुआफ़ कर जिस तरह हमने अपने क़र्ज़दारों को मुआफ़ किया।

बेफ़िकर होना
24 कोई भी दो मालिकों की ख़िदमत नहीं कर सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके दूसरे से मुहब्बत रखेगा या
एक से लिपटकर दूसरे को हक़ीर जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और दौलत की ख़िदमत नहीं कर सकते।
25 इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ, अपनी ज़िंदगी की ज़रूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो कि हाय, मैं क्या खाऊँ
और क्या पियूँ। और जिस्म के लिए फ़िकरमंद न रहो कि हाय, मैं क्या पहनूँ। क्या ज़िंदगी खाने-पीने से अहम नहीं
है? और क्या जिस्म पोशाक से ज़्यादा अहमियत नहीं रखता? 26 परिंदों पर ग़ौर करो। न वह बीज बोते, न फ़सलें
काटकर उन्हें गोदाम में जमा करते हैं। तुम्हारा आसमानी बाप ख़ुद उन्हें खाना खिलाता है। क्या तुम्हारी उनकी निसबत
ज़्यादा क़दरो-क़ीमत नहीं है? 27 क्या तुममें से कोई फ़िकर करते करते अपनी ज़िंदगी में एक लमहे का भी इज़ाफ़ा
कर सकता है?
28 और तुम अपने कपड़ों के लिए क्यों फ़िकरमंद होते हो? ग़ौर करो कि सोसन के फूल किस तरह उगते हैं। न
वह मेहनत करते, न कातते हैं। 29 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के बावुजूद
ऐसे शानदार कपड़ों से मुलब्बस नहीं था जैसे उनमें से एक। 30 अगर अल्लाह उस घास को जो आज मैदान में है और
कल आग में झोंकी जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ कमएतक़ादो, वह तुमको पहनाने के लिए क्या कुछ
नहीं करेगा?
31 चुनाँचे परेशानी के आलम में फ़िकर करते करते यह न कहते रहो, ‘हम क्या खाएँ? हम क्या पिएँ? हम क्या
पहनें?’ 32 क्योंकि जो ईमान नहीं रखते वही इन तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं जबकि तुम्हारे आसमानी बाप को
पहले से मालूम है कि तुमको इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत है। 33 पहले अल्लाह की बादशाही और उस की रास्तबाज़ी
की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीज़ें भी तुमको मिल जाएँगी। 34 इसलिए कल के बारे में फ़िकर करते करते परेशान
न हो क्योंकि कल का दिन अपने लिए आप फ़िकर कर लेगा। हर दिन की अपनी मुसीबतें काफ़ी हैं।

7

औरों का मुंसिफ़ बनना
1 दूसरों की अदालत मत करना, वरना तुम्हारी अदालत भी की जाएगी। 2 क्योंकि जितनी सख़्ती से तुम दूसरों का
फ़ैसला करते हो उतनी सख़्ती से तुम्हारा भी फ़ैसला किया जाएगा। और जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी पैमाने से तुम
भी नापे जाओगे। 3 तू क्यों ग़ौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र
नहीं आता जो तेरी अपनी आँख में है? 4 तू क्योंकर अपने भाई से कह सकता है, ‘ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा
तिनका निकालने दो,’ जबकि तेरी अपनी आँख में शहतीर है। 5 रियाकार! पहले अपनी आँख के शहतीर को निकाल।
तब ही तुझे भाई का तिनका साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से देखकर निकाल सकेगा।
6 कुत्तों को मुक़द्दस ख़ुराक मत खिलाना और सुअरों के आगे अपने मोती न फेंकना। ऐसा न हो कि वह उन्हें पाँवों
तले रौंदें और मुड़कर तुमको फाड़ डालें।

माँगते रहना
7 माँगते रहो तो तुमको दिया जाएगा। ढूँडते रहो तो तुमको मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिए दरवाज़ा
खोल दिया जाएगा। 8 क्योंकि जो भी माँगता है वह पाता है, जो ढूँडता है उसे मिलता है, और जो खटखटाता है उसके
लिए दरवाज़ा खोल दिया जाता है। 9 तुममें से कौन अपने बेटे को पत्थर देगा अगर वह रोटी माँगे? 10 या कौन उसे
साँप देगा अगर वह मछली माँगे? कोई नहीं! 11 जब तुम बुरे होने के बावुजूद इतने समझदार हो कि अपने बच्चों
को अच्छी चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी ज़्यादा यक़ीनी बात है कि तुम्हारा आसमानी बाप माँगनेवालों को अच्छी
चीज़ें देगा।
12 हर बात में दूसरों के साथ वही सुलूक करो जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें। क्योंकि यही शरीअत
और नबियों की तालीमात का लुब्बे-लुबाब है।

तंग दरवाज़ा
13 तंग दरवाज़े से दाख़िल हो, क्योंकि हलाकत की तरफ़ ले जानेवाला रास्ता कुशादा और उसका दरवाज़ा चौड़ा
है। बहुत-से लोग उसमें दाख़िल हो जाते हैं। 14 लेकिन ज़िंदगी की तरफ़ ले जानेवाला रास्ता तंग है और उसका दरवाज़ा
छोटा। कम ही लोग उसे पाते हैं।

हर दरख़्त का अपना फल होता है

15 झूटे नबियों से ख़बरदार रहो! गो वह भेड़ों का भेस बदलकर तुम्हारे पास आते हैं, लेकिन अंदर से वह ग़ारतगर
भेड़िये होते हैं। 16 उनका फल देखकर तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या ख़ारदार झाड़ियों से अंगूर तोड़े जाते हैं या
ऊँटकटारों से अंजीर? हरगिज़ नहीं। 17 इसी तरह अच्छा दरख़्त अच्छा फल लाता है और ख़राब दरख़्त ख़राब फल।
18 न अच्छा दरख़्त ख़राब फल ला सकता है, न ख़राब दरख़्त अच्छा फल। 19 जो भी दरख़्त अच्छा फल नहीं लाता
उसे काटकर आग में झोंका जाता है। 20 यों तुम उनका फल देखकर उन्हें पहचान लोगे।

सिर्फ़ असल पैरोकार दाख़िल होंगे

21 जो मुझे 'ख़ुदावंद, ख़ुदावंद' कहते हैं उनमें से सब आसमान की बादशाही में दाख़िल न होंगे बल्कि सिर्फ़ वह
जो मेरे आसमानी बाप की मरज़ी पर अमल करते हैं। 22 अदालत के दिन बहुत-से लोग मुझसे कहेंगे, 'ऐ ख़ुदावंद,
ख़ुदावंद! क्या हमने तेरे ही नाम में नबुव्वत नहीं की, तेरे ही नाम से बदरूहें नहीं निकालीं, तेरे ही नाम से मोजिज़े नहीं
किए?' 23 उस वक़्त मैं उनसे साफ़ साफ़ कह दूँगा, 'मेरी कभी तुमसे जान पहचान न थी। ऐ बदकारो! मेरे सामने से
चले जाओ।'

दो क़िस्म के मकान

24 लिहाज़ा जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल करता है वह उस समझदार आदमी की मानिंद है जिसने
अपने मकान की बुनियाद चटान पर रखी। 25 बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोड़ने लगी।
लेकिन वह न गिरा, क्योंकि उस की बुनियाद चटान पर रखी गई थी।

26 लेकिन जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता वह उस अहमक़ की मानिंद है जिसने अपना
मकान सहीह बुनियाद डाले बग़ैर रेत पर तामीर किया। 27 जब बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को
झँझोड़ने लगी तो यह मकान धड़ाम से गिर गया।"

ईसा का इख़्तियार

28 जब ईसा ने यह बातें ख़त्म कर लीं तो लोग उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए, 29 क्योंकि वह उनके
उलमा की तरह नहीं बल्कि इख़्तियार के साथ सिखाता था।

8

कोढ़ से शफ़ा

1 ईसा पहाड़ से उतरा तो बड़ी भीड़ उसके पीछे चलने लगी। 2 फिर एक आदमी उसके पास आया जो कोढ़ का
मरीज़ था। मुँह के बल गिरकर उसने कहा, "ख़ुदावंद, अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।"

3 ईसा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।" इस पर वह फ़ौरन उस
बीमारी से पाक-साफ़ हो गया। 4 ईसा ने उससे कहा, "ख़बरदार! यह बात किसी को न बताना बल्कि बैतुल-मुक़द्दस में
इमाम के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह क़ुरबानी ले जा जिसका तक़ाज़ा मूसा की शरीअत उनसे
करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा मिली है। यों अलानिया तसदीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-साफ़ हो गया है।"

रोमी अफ़सर के ग़ुलाम की शफ़ा

5 जब ईसा कफ़र्नहूम में दाख़िल हुआ तो सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर एक अफ़सर उसके पास आकर उस की मिन्नत
करने लगा, 6 "ख़ुदावंद, मेरा ग़ुलाम मफ़लूज हालत में घर में पड़ा है, और उसे शदीद दर्द हो रहा है।"

7 ईसा ने उससे कहा, "मैं आकर उसे शफ़ा दूँगा।"

8 अफ़सर ने जवाब दिया, "नहीं ख़ुदावंद, मैं इस लायक़ नहीं कि आप मेरे घर जाएँ। बस यहीं से हुक्म करें तो मेरा
ग़ुलाम शफ़ा पा जाएगा। 9 क्योंकि मुझे ख़ुद आला अफ़सरों के हुक्म पर चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी फ़ौजी
हैं। एक को कहता हूँ, 'जा!' तो वह जाता है और दूसरे को 'आ!' तो वह आता है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक्म
देता हूँ, 'यह कर' तो वह करता है।"

10 यह सुनकर ईसा निहायत हैरान हुआ। उसने मुड़कर अपने पीछे आनेवालों से कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ,
मैंने इसराईल में भी इस क़िस्म का ईमान नहीं पाया। 11 मैं तुम्हें बताता हूँ, बहुत-से लोग मशरिक़ और मग़रिब से आकर
इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के साथ आसमान की बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 12 लेकिन बादशाही के
असल वारिसों को निकालकर अंधेरे में डाल दिया जाएगा, उस जगह जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।" 13 फिर
ईसा अफ़सर से मुख़ातिब हुआ, "जा, तेरे साथ वैसा ही हो जैसा तेरा ईमान है।"

और अफ़सर के ग़ुलाम को उसी घड़ी शफ़ा मिल गई।

बहुत-से मरीज़ों की शफ़ा

14 ईसा पतरस के घर में आया। वहाँ उसने पतरस की सास को बिस्तर पर पड़े देखा। उसे बुख़ार था। 15 उसने
उसका हाथ छू लिया तो बुख़ार उतर गया और वह उठकर उस की ख़िदमत करने लगी।
16 शाम हुई तो बदरूहों की गिरिफ़्त में पड़े बहुत-से लोगों को ईसा के पास लाया गया। उसने बदरूहों को हुक्म
देकर निकाल दिया और तमाम मरीज़ों को शफ़ा दी। 17 यों यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि "उसने हमारी
कमज़ोरियाँ ले लीं और हमारी बीमारियाँ उठा लीं।"

पैरवी की संजीदगी

18 जब ईसा ने अपने गिर्द बड़ा हुजूम देखा तो उसने शागिर्दों को झील पार करने का हुक्म दिया। 19 रवाना होने से
पहले शरीअत का एक आलिम उसके पास आकर कहने लगा, "उस्ताद, जहाँ भी आप जाएंगे मैं आपके पीछे चलता
रहूँगा।"
20 ईसा ने जवाब दिया, "लोमड़ियाँ अपने भटों में और परिंदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं, लेकिन
इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम करने की कोई जगह नहीं।"
21 किसी और शागिर्द ने उससे कहा, "ख़ुदावंद, मुझे पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करने की इजाज़त दें।"
22 लेकिन ईसा ने उसे बताया, "मेरे पीछे हो ले और मुरदों को अपने मुरदे दफ़न करने दे।"

ईसा आँधी को थमा देता है

23 फिर वह कश्ती पर सवार हुआ और उसके पीछे उसके शागिर्द भी। 24 अचानक झील पर सख़्त आँधी चलने
लगी और कश्ती लहरों में डूबने लगी। लेकिन ईसा सो रहा था। 25 शागिर्द उसके पास गए और उसे जगाकर कहने
लगे, "ख़ुदावंद, हमें बचा, हम तबाह हो रहे हैं!"
26 उसने जवाब दिया, "ऐ कमएतक़ादो! घबराते क्यों हो?" खड़े होकर उसने आँधी और मौजों को डाँटा तो लहरें
बिलकुल साकित हो गईं। 27 शागिर्द हैरान होकर कहने लगे, "यह किस क़िस्म का शख़्स है? हवा और झील भी
उसका हुक्म मानती हैं।"

दो बदरूह-गिरिफ़्ता आदमियों की शफ़ा

28 वह झील के पार गदरीनियों के इलाक़े में पहुँचे तो बदरूह-गिरिफ़्ता दो आदमी क़ब्रों में से निकलकर ईसा को
मिले। वह इतने ख़तरनाक थे कि वहाँ से कोई गुज़र नहीं सकता था। 29 चीख़ें मार मारकर उन्होंने कहा, "अल्लाह
के फ़रज़ंद, हमारा आपके साथ क्या वास्ता? क्या आप हमें मुक़र्ररा वक़्त से पहले अज़ाब में डालने आए हैं?"
30 कुछ फ़ासले पर सुअरों का बड़ा ग़ोल चर रहा था। 31 बदरूहों ने ईसा से इल्तिजा की, "अगर आप हमें निकालते
हैं तो सुअरों के उस ग़ोल में भेज दें।"
32 ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, "जाओ।" बदरूहें निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे का पूरा ग़ोल भाग भागकर
पहाड़ी की ढलान पर से उतरा और झील में झपटकर डूब मरा। 33 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। शहर
में जाकर उन्होंने लोगों को सब कुछ सुनाया और वह भी जो बदरूह-गिरिफ़्ता आदमियों के साथ हुआ था। 34 फिर
पूरा शहर निकलकर ईसा को मिलने आया। उसे देखकर उन्होंने उस की मिन्नत की कि हमारे इलाक़े से चले जाएँ।

9

मफ़लूज आदमी की शफ़ा

1 कश्ती में बैठकर ईसा ने झील को पार किया और अपने शहर पहुँच गया। 2 वहाँ एक मफ़लूज आदमी को चारपाई
पर डालकर उसके पास लाया गया। उनका ईमान देखकर ईसा ने कहा, "बेटा, हौसला रख। तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए
गए हैं।"
3 यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा दिल में कहने लगे, "यह कुफ़र बक रहा है!"
4 ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा, 5 "तुम दिल में बुरी बातें क्यों सोच रहे हो?
क्या मफ़लूज से यह कहना ज़्यादा आसान है कि 'तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं' या यह कि 'उठ और चल-फिर?'
6 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार है।" यह कहकर
वह मफ़लूज से मुख़ातिब हुआ, "उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।"
7 वह आदमी खड़ा हुआ और अपने घर चला गया। 8 यह देखकर हुजूम पर अल्लाह का ख़ौफ़ तारी हो गया और
वह अल्लाह की तमजीद करने लगे कि उसने इनसान को इस क़िस्म का इख़्तियार दिया है।

मत्ती की बुलाहट

9 आगे जाकर ईसा ने एक आदमी को देखा जो टैक्स लेनेवालों की चौकी पर बैठा था। उसका नाम मत्ती था। ईसा
ने उससे कहा, "मेरे पीछे हो ले।" और मत्ती उठकर उसके पीछे हो लिया।
10 बाद में ईसा मत्ती के घर में खाना खा रहा था। बहुत-से टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार भी आकर ईसा और उसके
शागिर्दों के साथ खाने में शरीक हुए। 11 यह देखकर फ़रीसियों ने उसके शागिर्दों से पूछा, "आपका उस्ताद टैक्स
लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाता है?"
12 यह सुनकर ईसा ने कहा, "सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को। 13 पहले जाओ
और कलामे-मुक़द्दस की इस बात का मतलब जान लो कि 'मैं क़ुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ।' क्योंकि मैं
रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।"

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

14 फिर यहया के शागिर्द उसके पास आए और पूछा, "आपके शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते जबकि हम और फ़रीसी
रोज़ा रखते हैं?"
15 ईसा ने जवाब दिया, "शादी के मेहमान किस तरह मातम कर सकते हैं जब तक दूल्हा उनके दरमियान है? लेकिन
एक दिन आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।
16 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया टुकड़ा बाद में
सुकड़कर पुराने लिबास से अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले की निसबत ज़्यादा ख़राब हो
जाएगी। 17 इसी तरह अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं डाला जाता। अगर ऐसा किया जाए तो
पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मशकें दोनों ज़ाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर
का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं। यों रस और मशकें दोनों ही महफ़ूज़ रहते हैं।"

याईर की बेटी और बीमार औरत

18 ईसा अभी यह बयान कर रहा था कि एक यहूदी राहनुमा ने गिरकर उसे सिजदा किया और कहा, "मेरी बेटी
अभी अभी मरी है। लेकिन आकर अपना हाथ उस पर रखें तो वह दुबारा ज़िंदा हो जाएगी।"
19 ईसा उठकर अपने शागिर्दों समेत उसके साथ हो लिया।
20 चलते चलते एक औरत ने पीछे से आकर ईसा के लिबास का किनारा छुआ। यह औरत बारह साल से ख़ून बहने
की मरीज़ा थी 21 और वह सोच रही थी, "अगर मैं सिर्फ़ उसके लिबास को ही छू लूँ तो शफ़ा पा लूँगी।"
22 ईसा ने मुड़कर उसे देखा और कहा, "बेटी, हौसला रख! तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।" और औरत को उसी
वक़्त शफ़ा मिल गई।
23 फिर ईसा राहनुमा के घर में दाख़िल हुआ। बाँसरी बजानेवाले और बहुत-से लोग पहुँच चुके थे और बहुत शोर-
शराबा था। यह देखकर 24 ईसा ने कहा, "निकल जाओ! लड़की मर नहीं गई बल्कि सो रही है।" लोग हँसकर उसका
मज़ाक़ उड़ाने लगे। 25 लेकिन जब सबको निकाल दिया गया तो वह अंदर गया। उसने लड़की का हाथ पकड़ा तो वह
उठ खड़ी हुई। 26 इस मोजिज़े की ख़बर उस पूरे इलाक़े में फैल गई।

दो अंधों की शफ़ा

27 जब ईसा वहाँ से रवाना हुआ तो दो अंधे उसके पीछे चलकर चिल्लाने लगे, "इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।"
28 जब ईसा किसी के घर में दाख़िल हुआ तो वह उसके पास आए। ईसा ने उनसे पूछा, "क्या तुम्हारा ईमान है कि
मैं यह कर सकता हूँ?"
उन्होंने जवाब दिया, "जी, ख़ुदावंद।"
29 फिर उसने उनकी आँखें छूकर कहा, "तुम्हारे साथ तुम्हारे ईमान के मुताबिक़ हो जाए।" 30 उनकी आँखें बहाल
हो गईं और ईसा ने सख़्ती से उन्हें कहा, "ख़बरदार, किसी को भी इसका पता न चले!"
31 लेकिन वह निकलकर पूरे इलाक़े में उस की ख़बर फैलाने लगे।

गूँगे आदमी की शफ़ा

32 जब वह निकल रहे थे तो एक गूँगा आदमी ईसा के पास लाया गया जो किसी बदरूह के क़ब्ज़े में था। 33 जब
बदरूह को निकाला गया तो गूँगा बोलने लगा। हुजूम हैरान रह गया। उन्होंने कहा, "ऐसा काम इसराईल में कभी नहीं
देखा गया।"
34 लेकिन फ़रीसियों ने कहा, "वह बदरूहों के सरदार ही की मदद से बदरूहों को निकालता है।"

ईसा को लोगों पर तरस आता है

35 और ईसा सफ़र करते करते तमाम शहरों और गाँवों में से गुज़रा। जहाँ भी वह पहुँचा वहाँ उसने उनके इबादतख़ानों
में तालीम दी, बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाई और हर क़िस्म के मरज़ और अलालत से शफ़ा दी। 36 हुजूम को देखकर
उसे उन पर बड़ा तरस आया, क्योंकि वह पिसे हुए और बेबस थे, ऐसी भेड़ों की तरह जिनका चरवाहा न हो। 37 उसने
अपने शागिर्दों से कहा, "फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर कम। 38 इसलिए फ़सल के मालिक से गुज़ारिश करो कि वह
अपनी फ़सल काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे।"

10

बारह रसूलों को इख़्तियार दिया जाता है

1 फिर ईसा ने अपने बारह रसूलों को बुलाकर उन्हें नापाक रूहें निकालने और हर क़िस्म के मरज़ और अलालत से
शफ़ा देने का इख़्तियार दिया। 2 बारह रसूलों के नाम यह हैं : पहला शमौन जो पतरस भी कहलाता है, फिर उसका भाई
अंदरियास, याक़ूब बिन ज़बदी और उसका भाई यूहन्ना, 3 फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई, तोमा, मत्ती (जो टैक्स लेनेवाला
था), याक़ूब बिन हलफ़ई, तद्दी, 4 शमौन मुजाहिद और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे दुश्मनों के हवाले कर
दिया।

रसूलों को तबलीग़ के लिए भेजा जाता है

5 इन बारह मर्दों को ईसा ने भेज दिया। साथ साथ उसने उन्हें हिदायत दी, "ग़ैरयहूदी आबादियों में न जाना, न
किसी सामरी शहर में, 6 बल्कि सिर्फ़ इसराईल की खोई हुई भेड़ों के पास। 7 और चलते चलते मुनादी करते जाओ कि
'आसमान की बादशाही क़रीब आ चुकी है।' 8 बीमारों को शफ़ा दो, मुरदों को ज़िंदा करो, कोढ़ियों को पाक-साफ़
करो, बदरूहों को निकालो। तुमको मुफ़्त में मिला है, मुफ़्त में ही बाँटना। 9 अपने कमरबंद में पैसे न रखना—न सोने,
न चाँदी और न ताँबे के सिक्के। 10 न सफ़र के लिए बैग हो, न एक से ज़्यादा सूट, न जूते, न लाठी। क्योंकि मज़दूर
अपनी रोज़ी का हक़दार है।
11 जिस शहर या गाँव में दाख़िल होते हो उसमें किसी लायक़ शख़्स का पता करो और रवाना होते वक़्त तक उसी के
घर में ठहरो। 12 घर में दाख़िल होते वक़्त उसे दुआए-ख़ैर दो। 13 अगर वह घर इस लायक़ होगा तो जो सलामती तुमने
उसके लिए माँगी है वह उस पर आकर ठहरी रहेगी। अगर नहीं तो यह सलामती तुम्हारे पास लौट आएगी। 14 अगर
कोई घराना या शहर तुमको क़बूल न करे, न तुम्हारी सुने तो रवाना होते वक़्त उस जगह की गर्द अपने पाँवों से झाड़
देना। 15 मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अदालत के दिन उस शहर की निसबत सदूम और अमूरा के इलाक़े का हाल ज़्यादा
क़ाबिले-बरदाश्त होगा।

आनेवाली ईज़ारसानियाँ

16 देखो, मैं तुम भेड़ों को भेड़ियों में भेज रहा हूँ। इसलिए साँपों की तरह होशियार और कबूतरों की तरह मासूम
बनो। 17 लोगों से ख़बरदार रहो, क्योंकि वह तुमको मक़ामी अदालतों के हवाले करके अपने इबादतख़ानों में कोड़े
लगवाएँगे। 18 मेरी ख़ातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया जाएगा और यों तुमको उन्हें और
ग़ैरयहूदियों को गवाही देने का मौक़ा मिलेगा। 19 जब वह तुम्हें गिरिफ़्तार करेंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो
जाना कि मैं क्या कहूँ या किस तरह बात करूँ। उस वक़्त तुमको बताया जाएगा कि क्या कहना है, 20 क्योंकि तुम ख़ुद
बात नहीं करोगे बल्कि तुम्हारे बाप का रूह तुम्हारी मारिफ़त बोलेगा।
21 भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले करेगा। बच्चे अपने वालिदैन के ख़िलाफ़ खड़े
होकर उन्हें क़त्ल करवाएँगे। 22 सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आख़िर तक
क़ायम रहेगा उसे नजात मिलेगी। 23 जब वह एक शहर में तुम्हें सताएँगे तो किसी दूसरे शहर को हिजरत कर जाना। मैं
तुमको सच बताता हूँ कि इब्ने-आदम की आमद तक तुम इसराईल के तमाम शहरों तक नहीं पहुँच पाओगे।
24 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता, न ग़ुलाम अपने मालिक से। 25 शागिर्द को इस पर इकतिफ़ा करना है
कि वह अपने उस्ताद की मानिंद हो, और इसी तरह ग़ुलाम को कि वह अपने मालिक की मानिंद हो। घराने के सरपरस्त
को अगर बदरूहों का सरदार बाल-ज़बूल क़रार दिया गया है तो उसके घरवालों को क्या कुछ न कहा जाएगा।

किससे डरना है?

26 उनसे मत डरना, क्योंकि जो कुछ अभी छुपा हुआ है उसे आख़िर में ज़ाहिर किया जाएगा, और जो कुछ भी इस
वक़्त पोशीदा है उसका राज़ आख़िर में खुल जाएगा। 27 जो कुछ मैं तुम्हें अंधेरे में सुना रहा हूँ उसे रोज़े-रौशन में सुना
देना। और जो कुछ आहिस्ता आहिस्ता तुम्हारे कान में बताया गया है उसका छतों से एलान करो। 28 उनसे ख़ौफ़ मत

खाना जो तुम्हारी रूह को नहीं बल्कि सिर्फ़ तुम्हारे जिस्म को क़त्ल कर सकते हैं। अल्लाह से डरो जो रूह और जिस्म
दोनों को जहन्नुम में डालकर हलाक कर सकता है। 29 क्या चिड़ियों का जोड़ा कम पैसों में नहीं बिकता? ताहम
उनमें से एक भी तुम्हारे बाप की इजाज़त के बग़ैर ज़मीन पर नहीं गिर सकती। 30 न सिर्फ़ यह बल्कि तुम्हारे सर के
सब बाल भी गिने हुए हैं। 31 लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी क़दरो-क़ीमत बहुत-सी चिड़ियों से कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इक़रार या इनकार करने का नतीजा

32 जो भी लोगों के सामने मेरा इक़रार करे उसका इक़रार मैं ख़ुद भी अपने आसमानी बाप के सामने करूँगा।
33 लेकिन जो भी लोगों के सामने मेरा इनकार करे उसका मैं भी अपने आसमानी बाप के सामने इनकार करूँगा।

ईसा सुलह-सलामती का बाइस नहीं

34 यह मत समझो कि मैं दुनिया में सुलह-सलामती क़ायम करने आया हूँ। मैं सुलह-सलामती नहीं बल्कि तलवार
चलवाने आया हूँ। 35 मैं बेटे को उसके बाप के ख़िलाफ़ खड़ा करने आया हूँ, बेटी को उस की माँ के ख़िलाफ़ और बहू
को उस की सास के ख़िलाफ़। 36 इनसान के दुश्मन उसके अपने घरवाले होंगे।

37 जो अपने बाप या माँ को मुझसे ज़्यादा प्यार करे वह मेरे लायक़ नहीं। जो अपने बेटे या बेटी को मुझसे ज़्यादा
प्यार करे वह मेरे लायक़ नहीं। 38 जो अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न हो ले वह मेरे लायक़ नहीं। 39 जो भी अपनी
जान को बचाए वह उसे खो देगा, लेकिन जो अपनी जान को मेरी ख़ातिर खो दे वह उसे पाएगा।

ईसा और उसके पैरोकारों को क़बूल करने का अज्र

40 जो तुम्हें क़बूल करे वह मुझे क़बूल करता है, और जो मुझे क़बूल करता है वह उसको क़बूल करता है जिसने
मुझे भेजा है। 41 जो किसी नबी को क़बूल करे उसे नबी का-सा अज्र मिलेगा। और जो किसी रास्तबाज़ शख़्स को उस
की रास्तबाज़ी के सबब से क़बूल करे उसे रास्तबाज़ शख़्स का-सा अज्र मिलेगा। 42 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो इन
छोटों में से किसी एक को मेरा शागिर्द होने के बाइस ठंडे पानी का गलास भी पिलाए उसका अज्र क़ायम रहेगा।"

11

यहया का ईसा से सवाल

1 अपने शागिर्दों को यह हिदायात देने के बाद ईसा उनके शहरों में तालीम देने और मुनादी करने के लिए रवाना
हुआ।

2 यहया ने जो उस वक़्त जेल में था सुना कि ईसा क्या क्या कर रहा है। इस पर उसने अपने शागिर्दों को उसके पास
भेज दिया 3 ताकि वह उससे पूछें, "क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और के इंतज़ार में रहें?"

4 ईसा ने जवाब दिया, "यहया के पास वापस जाकर उसे सब कुछ बता देना जो तुमने देखा और सुना है। 5 'अंधे
देखते, लँगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुरदों को ज़िंदा किया जाता है
और ग़रीबों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई जाती है।' 6 मुबारक है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर बरगश्ता नहीं
होता।"

7 यहया के यह शागिर्द चले गए तो ईसा हुजूम से यहया के बारे में बात करने लगा, "तुम रेगिस्तान में क्या देखने गए
थे? एक सरकंडा जो हवा के हर झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 8 या क्या वहाँ जाकर ऐसे आदमी की तवक़्क़ो कर
रहे थे जो नफ़ीस और मुलायम लिबास पहने हुए है? नहीं, जो शानदार कपड़े पहनते हैं वह शाही महलों में पाए जाते हैं।
9 तो फिर तुम क्या देखने गए थे? एक नबी को? बिलकुल सहीह, बल्कि मैं तुमको बताता हूँ कि वह नबी से भी बड़ा
है। 10 उसी के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, 'देख, मैं अपने पैग़ंबर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ जो तेरे सामने
रास्ता तैयार करेगा।' 11 मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस दुनिया में पैदा होनेवाला कोई भी शख़्स यहया से बड़ा नहीं
है। तो भी आसमान की बादशाही में दाख़िल होनेवाला सबसे छोटा शख़्स उससे बड़ा है। 12 यहया बपतिस्मा देनेवाले
की ख़िदमत से लेकर आज तक आसमान की बादशाही पर ज़बरदस्ती की जा रही है, और ज़बरदस्त उसे छीन रहे हैं।
13 क्योंकि तमाम नबी और तौरेत ने यहया के दौर तक इसके बारे में पेशगोई की है। 14 और अगर तुम यह मानने के
लिए तैयार हो तो मानो कि वह इलियास नबी है जिसे आना था। 15 जो सुन सकता है वह सुन ले!

16 मैं इस नसल को किससे तशबीह दूँ? वह उन बच्चों की मानिंद हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उनमें से कुछ
ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत कर रहे हैं, 17 'हमने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे। फिर हमने नोहा के गीत
गाए, लेकिन तुमने छाती पीटकर मातम न किया।' 18 देखो, यहया आया और न खाया, न पिया। यह देखकर लोग
कहते हैं कि उसमें बदरूह है। 19 फिर इब्ने-आदम खाता और पीता हुआ आया। अब कहते हैं, 'देखो यह कैसा पेटू

और शराबी है। और वह टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों का दोस्त भी है।' लेकिन हिकमत अपने आमाल से ही सहीह
साबित हुई है।"

तौबा न करनेवाले शहरों पर अफ़सोस

20 फिर ईसा उन शहरों को डाँटने लगा जिनमें उसने ज़्यादा मोजिज़े किए थे, क्योंकि उन्होंने तौबा नहीं की थी।
21 "ऐ ख़ुराज़ीन, तुझ पर अफ़सोस! बैत-सैदा, तुझ पर अफ़सोस! अगर सूर और सैदा में वह मोजिज़े किए गए होते
जो तुममें हुए तो वहाँ के लोग कब के टाट ओढ़कर और सर पर राख डालकर तौबा कर चुके होते। 22 जी हाँ, अदालत
के दिन तुम्हारी निसबत सूर और सैदा का हाल ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त होगा। 23 और ऐ कफ़र्नहूम, क्या तुझे आसमान
तक सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा। अगर सदूम में वह मोजिज़े
किए गए होते जो तुझमें हुए हैं तो वह आज तक क़ायम रहता। 24 हाँ, अदालत के दिन तेरी निसबत सदूम का हाल
ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त होगा।"

बाप की तमजीद

25 उस वक़्त ईसा ने कहा, "ऐ बाप, आसमानो-ज़मीन के मालिक! मैं तेरी तमजीद करता हूँ कि तूने यह बातें दानाओं
और अक़्लमंदों से छुपाकर छोटे बच्चों पर ज़ाहिर कर दी हैं। 26 हाँ मेरे बाप, यही तुझे पसंद आया।

27 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है। कोई भी फ़रज़ंद को नहीं जानता सिवाए बाप के। और कोई बाप को
नहीं जानता सिवाए फ़रज़ंद के और उन लोगों के जिन पर फ़रज़ंद बाप को ज़ाहिर करना चाहता है।

28 ऐ थकेमाँदे और बोझ तले दबे हुए लोगो, सब मेरे पास आओ! मैं तुमको आराम दूँगा। 29 मेरा जुआ अपने ऊपर
उठाकर मुझसे सीखो, क्योंकि मैं हलीम और नरमदिल हूँ। यों करने से तुम्हारी जानें आराम पाएँगी, 30 क्योंकि मेरा
जुआ मुलायम और मेरा बोझ हलका है।"

12

सबत के बारे में सवाल

1 उन दिनों में ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा था। सबत का दिन था। चलते चलते उसके शागिर्दों को भूक
लगी और वह अनाज की बालें तोड़ तोड़कर खाने लगे। 2 यह देखकर फ़रीसियों ने ईसा से शिकायत की, "देखो,
आपके शागिर्द ऐसा काम कर रहे हैं जो सबत के दिन मना है।"

3 ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक लगी?
4 वह अल्लाह के घर में दाख़िल हुआ और अपने साथियों समेत रब के लिए मख़सूसशुदा रोटियाँ खाईं, अगरचे उन्हें
इसकी इजाज़त नहीं थी बल्कि सिर्फ़ इमामों को? 5 या क्या तुमने तौरेत में नहीं पढ़ा कि गो इमाम सबत के दिन
बैतुल-मुक़द्दस में ख़िदमत करते हुए आराम करने का हुक्म तोड़ते हैं तो भी वह बेइलज़ाम ठहरते हैं? 6 मैं तुम्हें बताता
हूँ कि यहाँ वह है जो बैतुल-मुक़द्दस से अफ़ज़ल है। 7 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, 'मैं क़ुरबानी नहीं बल्कि रहम
पसंद करता हूँ।' अगर तुम इसका मतलब समझते तो बेक़ुसूरों को मुजरिम न ठहराते। 8 क्योंकि इब्ने-आदम सबत का
मालिक है।"

सूखे हाथवाले आदमी की शफ़ा

9 वहाँ से चलते चलते वह उनके इबादतख़ाने में दाख़िल हुआ। 10 उसमें एक आदमी था जिसका हाथ सूखा हुआ
था। लोग ईसा पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे थे, इसलिए उन्होंने उससे पूछा, "क्या शरीअत सबत
के दिन शफ़ा देने की इजाज़त देती है?"

11 ईसा ने जवाब दिया, "अगर तुममें से किसी की भेड़ सबत के दिन गढ़े में गिर जाए तो क्या उसे नहीं निकालोगे?
12 और भेड़ की निसबत इनसान की कितनी ज़्यादा क़दरो-क़ीमत है! ग़रज़ शरीअत नेक काम करने की इजाज़त देती
है।" 13 फिर उसने उस आदमी से जिसका हाथ सूखा हुआ था कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ा।"

उसने ऐसा किया तो उसका हाथ दूसरे हाथ की मानिंद तनदुरुस्त हो गया। 14 इस पर फ़रीसी निकलकर आपस में
ईसा को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।

अल्लाह का चुना हुआ ख़ादिम

15 जब ईसा ने यह जान लिया तो वह वहाँ से चला गया। बहुत-से लोग उसके पीछे चल रहे थे। उसने उनके तमाम
मरीज़ों को शफ़ा देकर 16 उन्हें ताकीद की, "किसी को मेरे बारे में न बताओ।" 17 यों यसायाह नबी की यह पेशगोई
पूरी हुई,

18 'देखो, मेरा ख़ादिम जिसे मैंने चुन लिया है,

मेरा प्यारा जो मुझे पसंद है।
मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा,
और वह अक़वाम में इनसाफ़ का एलान करेगा।
19 वह न तो झगड़ेगा, न चिल्लाएगा।
गलियों में उस की आवाज़ सुनाई नहीं देगी।
20 न वह कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा,
न बुझती हुई बत्ती को बुझाएगा
जब तक वह इनसाफ़ को ग़लबा न बख़्शे।
21 उसी के नाम से क़ौमें उम्मीद रखेंगी।'

ईसा और बदरूहों का सरदार

22 फिर एक आदमी को ईसा के पास लाया गया जो बदरूह की गिरिफ़्त में था। वह अंधा और गूँगा था। ईसा ने उसे
शफ़ा दी तो गूँगा बोलने और देखने लगा। 23 हुजूम के तमाम लोग हक्का-बक्का रह गए और पूछने लगे, "क्या यह
इब्ने-दाऊद नहीं?"
24 लेकिन जब फ़रीसियों ने यह सुना तो उन्होंने कहा, "यह सिर्फ़ बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल की मारिफ़त
बदरूहों को निकालता है।"
25 उनके यह ख़यालात जानकर ईसा ने उनसे कहा, "जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी। और
जिस शहर या घराने की ऐसी हालत हो वह भी क़ायम नहीं रह सकता। 26 इसी तरह अगर इबलीस अपने आपको
निकाले तो फिर उसमें फूट पड़ गई है। इस सूरत में उस की बादशाही किस तरह क़ायम रह सकती है? 27 और अगर मैं
बदरूहों को बाल-ज़बूल की मदद से निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे उन्हें किसके ज़रीए निकालते हैं? चुनाँचे वही इस बात
में तुम्हारे मुंसिफ़ होंगे। 28 लेकिन अगर मैं अल्लाह के रूह की मारिफ़त बदरूहों को निकाल देता हूँ तो फिर अल्लाह
की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच चुकी है।
29 किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुसकर उसका मालो-असबाब लूटना किस तरह मुमकिन है जब तक कि उसे
बाँधा न जाए? फिर ही उसे लूटा जा सकता है।
30 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे ख़िलाफ़ है और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है। 31 ग़रज़ मैं तुमको
बताता हूँ कि इनसान का हर गुनाह और कुफ़र मुआफ़ किया जा सकेगा सिवाए रूहुल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़र बकने
के। इसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा। 32 जो इब्ने-आदम के ख़िलाफ़ बात करे उसे मुआफ़ किया जा सकेगा, लेकिन जो
रूहुल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ बात करे उसे न इस जहान में और न आनेवाले जहान में मुआफ़ किया जाएगा।

दरख़्त उसके फल से पहचाना जाता है

33 अच्छे फल के लिए अच्छे दरख़्त की ज़रूरत होती है। ख़राब दरख़्त से ख़राब फल मिलता है। दरख़्त उसके
फल से ही पहचाना जाता है। 34 ऐ साँप के बच्चो! तुम जो बुरे हो किस तरह अच्छी बातें कर सकते हो? क्योंकि जिस
चीज़ से दिल लबरेज़ होता है वह छलककर ज़बान पर आ जाती है। 35 अच्छा शख़्स अपने दिल के अच्छे ख़ज़ाने से
अच्छी चीज़ें निकालता है जबकि बुरा शख़्स अपने बुरे ख़ज़ाने से बुरी चीज़ें।
36 मैं तुमको बताता हूँ कि क़ियामत के दिन लोगों को बेपरवाई से की गई हर बात का हिसाब देना पड़ेगा। 37 तुम्हारी
अपनी बातों की बिना पर तुमको रास्त या नारास्त ठहराया जाएगा।"

इलाही निशान का तक़ाज़ा

38 फिर शरीअत के कुछ उलमा और फ़रीसियों ने ईसा से बात की, "उस्ताद, हम आपकी तरफ़ से इलाही निशान
देखना चाहते हैं।"
39 उसने जवाब दिया, "सिर्फ़ शरीर और ज़िनाकार नसल इलाही निशान का तक़ाज़ा करती है। लेकिन उसे कोई भी
इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस नबी के निशान के। 40 क्योंकि जिस तरह यूनुस तीन दिन और तीन
रात मछली के पेट में रहा उसी तरह इब्ने-आदम भी तीन दिन और तीन रात ज़मीन की गोद में पड़ा रहेगा। 41 क़ियामत
के दिन नीनवा के बाशिंदे इस नसल के साथ खड़े होकर इसे मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि यूनुस के एलान पर उन्होंने
तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूनुस से भी बड़ा है। 42 उस दिन जुनूबी मुल्क सबा की मलिका भी इस नसल के
साथ खड़ी होकर इसे मुजरिम क़रार देगी। क्योंकि वह दूर-दराज़ मुल्क से सुलेमान की हिकमत सुनने के लिए आई थी
जबकि यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है।

बदरूह की वापसी

43 जब कोई बदरूह किसी शख़्स से निकलती है तो वह वीरान इलाक़ों में से गुज़रती हुई आराम की जगह तलाश
करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा मक़ाम नहीं मिलता 44 तो वह कहती है, 'मैं अपने उस घर में वापस चली जाऊँगी
जिसमें से निकली थी।' वह वापस आकर देखती है कि घर ख़ाली है और किसी ने झाड़ू देकर सब कुछ सलीक़े से रख
दिया है। 45 फिर वह जाकर सात और बदरूहें ढूँड लाती है जो उससे बदतर होती हैं, और वह सब उस शख़्स में घुसकर
रहने लगती हैं। चुनाँचे अब उस आदमी की हालत पहले की निसबत ज़्यादा बुरी हो जाती है। इस शरीर नसल का भी
यही हाल होगा।"

ईसा की माँ और भाई

46 ईसा अभी हुजूम से बात कर ही रहा था कि उस की माँ और भाई बाहर खड़े उससे बात करने की कोशिश करने
लगे। 47 किसी ने ईसा से कहा, "आपकी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आपसे बात करना चाहते हैं।"
48 ईसा ने पूछा, "कौन है मेरी माँ और कौन हैं मेरे भाई?" 49 फिर अपने हाथ से शागिर्दों की तरफ़ इशारा करके
उसने कहा, "देखो, यह मेरी माँ और मेरे भाई हैं। 50 क्योंकि जो भी मेरे आसमानी बाप की मरज़ी पूरी करता है वह
मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।"

13

बीज बोनेवाले की तमसील

1 उसी दिन ईसा घर से निकलकर झील के किनारे बैठ गया। 2 इतना बड़ा हुजूम उसके गिर्द जमा हो गया कि
आख़िरकार वह एक कश्ती में बैठ गया जबकि लोग किनारे पर खड़े रहे। 3 फिर उसने उन्हें बहुत-सी बातें तमसीलों में
सुनाईं।
"एक किसान बीज बोने के लिए निकला। 4 जब बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर गिरे और परिंदों
ने आकर उन्हें चुग लिया। 5 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह जल्द उग आए क्योंकि मिट्टी
गहरी नहीं थी। 6 लेकिन जब सूरज निकला तो पौदे झुलस गए और चूँकि वह जड़ न पकड़ सके इसलिए सूख गए।
7 कुछ ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें
फलने फूलने न दिया। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे और बढ़ते बढ़ते
तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक ज़्यादा फल लाए। 9 जो सुन सकता है वह सुन ले!"

तमसीलों का मक़सद

10 शागिर्द उसके पास आकर पूछने लगे, "आप लोगों से तमसीलों में बात क्यों करते हैं?"
11 उसने जवाब दिया, "तुमको तो आसमान की बादशाही के भेद समझने की लियाक़त दी गई है, लेकिन उन्हें यह
लियाक़त नहीं दी गई। 12 जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उसके पास कसरत की चीज़ें होंगी। लेकिन
जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है। 13 इसलिए मैं तमसीलों में उनसे बात
करता हूँ। क्योंकि वह देखते हुए कुछ नहीं देखते, वह सुनते हुए कुछ नहीं सुनते और कुछ नहीं समझते। 14 उनमें
यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हो रही है :
'तुम अपने कानों से सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।
15 क्योंकि इस क़ौम का दिल बेहिस हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्होंने अपनी आँखों को बंद कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।'
16 लेकिन तुम्हारी आँखें मुबारक हैं क्योंकि वह देख सकती हैं और तुम्हारे कान मुबारक हैं क्योंकि वह सुन सकते
हैं। 17 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम देख रहे हो बहुत-से नबी और रास्तबाज़ इसे देख न पाए अगरचे वह
इसके आरज़ूमंद थे। और जो कुछ तुम सुन रहे हो इसे वह सुनने न पाए, अगरचे वह इसके ख़ाहिशमंद थे।

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

18 अब सुनो कि बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब क्या है। 19 रास्ते पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो बादशाही
का कलाम सुनते तो हैं, लेकिन उसे समझते नहीं। फिर इबलीस आकर वह कलाम छीन लेता है जो उनके दिलों में
बोया गया है। 20 पथरीली ज़मीन पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे ख़ुशी से क़बूल तो कर लेते हैं,
21 लेकिन वह जड़ नहीं पकड़ते और इसलिए ज़्यादा देर तक क़ायम नहीं रहते। ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के
बाइस किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ तो वह बरगश्ता हो जाते हैं। 22 ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान
गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियाँ और दौलत का फ़रेब कलाम को
फलने फूलने नहीं देता। नतीजे में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता। 23 इसके मुक़ाबले में ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे हुए
दाने वह लोग हैं जो कलाम को सुनकर उसे समझ लेते और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल
लाते हैं।"

ख़ुदरौ पौदों की तमसील

24 ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई। "आसमान की बादशाही उस किसान से मुताबिक़त रखती है जिसने अपने
खेत में अच्छा बीज बो दिया। 25 लेकिन जब लोग सो रहे थे तो उसके दुश्मन ने आकर अनाज के पौदों के दरमियान
ख़ुदरौ पौदों का बीज बो दिया। फिर वह चला गया। 26 जब अनाज फूट निकला और फ़सल पकने लगी तो ख़ुदरौ पौदे
भी नज़र आए। 27 नौकर मालिक के पास आए और कहने लगे, 'जनाब, क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं
बोया था? तो फिर यह ख़ुदरौ पौदे कहाँ से आ गए हैं?'

28 उसने जवाब दिया, 'किसी दुश्मन ने यह कर दिया है।'

नौकरों ने पूछा, 'क्या हम जाकर उन्हें उखाड़ें?'

29 'नहीं,' उसने कहा। 'ऐसा न हो कि ख़ुदरौ पौदों के साथ साथ तुम अनाज के पौदे भी उखाड़ डालो। 30 उन्हें
फ़सल की कटाई तक मिलकर बढ़ने दो। उस वक़्त मैं फ़सल की कटाई करनेवालों से कहूँगा कि पहले ख़ुदरौ पौदों को
चुन लो और उन्हें जलाने के लिए गठों में बाँध लो। फिर ही अनाज को जमा करके गोदाम में लाओ'।"

राई के दाने की तमसील

31 ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई। "आसमान की बादशाही राई के दाने की मानिंद है जो किसी ने लेकर
अपने खेत में बो दिया। 32 गो यह बीजों में सबसे छोटा दाना है, लेकिन बढ़ते बढ़ते यह सब्ज़ियों में सबसे बड़ा हो जाता
है। बल्कि यह दरख़्त-सा बन जाता है और परिंदे आकर उस की शाख़ों में घोंसले बना लेते हैं।"

ख़मीर की तमसील

33 उसने उन्हें एक और तमसील भी सुनाई। "आसमान की बादशाही ख़मीर की मानिंद है जो किसी औरत ने लेकर
तक़रीबन 27 किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो वह उसमें छुप गया तो भी होते होते पूरे गुंधे हुए आटे को ख़मीर बना
दिया।"

तमसीलों में बात करने का सबब

34 ईसा ने यह तमाम बातें हुजूम के सामने तमसीलों की सूरत में कीं। तमसील के बग़ैर उसने उनसे बात ही नहीं
की। 35 यों नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि "मैं तमसीलों में बात करूँगा, मैं दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक
छुपी हुई बातें बयान करूँगा।"

ख़ुदरौ पौदों की तमसील का मतलब

36 फिर ईसा हुजूम को रुख़सत करके घर के अंदर चला गया। उसके शागिर्द उसके पास आकर कहने लगे, "खेत
में ख़ुदरौ पौदों की तमसील का मतलब हमें समझाएँ।"

37 उसने जवाब दिया, "अच्छा बीज बोनेवाला इब्ने-आदम है। 38 खेत दुनिया है जबकि अच्छे बीज से मुराद
बादशाही के फ़रज़ंद हैं। ख़ुदरौ पौदे इबलीस के फ़रज़ंद हैं 39 और उन्हें बोनेवाला दुश्मन इबलीस है। फ़सल की कटाई
का मतलब दुनिया का इख़्तिताम है जबकि फ़सल की कटाई करनेवाले फ़रिश्ते हैं। 40 जिस तरह तमसील में ख़ुदरौ
पौदे उखाड़े जाते और आग में जलाए जाते हैं उसी तरह दुनिया के इख़्तिताम पर भी किया जाएगा। 41 इब्ने-आदम
अपने फ़रिश्तों को भेज देगा, और वह उस की बादशाही से बरगश्तगी का हर सबब और शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी
करनेवाले हर शख़्स को निकालते जाएंगे। 42 वह उन्हें भड़कती भट्टी में फेंक देंगे जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।
43 फिर रास्तबाज़ अपने बाप की बादशाही में सूरज की तरह चमकेंगे। जो सुन सकता है वह सुन ले!

छुपे हुए ख़ज़ाने की तमसील

44 आसमान की बादशाही खेत में छुपे ख़ज़ाने की मानिंद है। जब किसी आदमी को उसके बारे में मालूम हुआ तो
उसने उसे दुबारा छुपा दिया। फिर वह ख़ुशी के मारे चला गया, अपनी तमाम मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस खेत
को ख़रीद लिया।

मोती की तमसील

45 नीज़, आसमान की बादशाही ऐसे सौदागर की मानिंद है जो अच्छे मोतियों की तलाश में था। 46 जब उसे एक
निहायत क़ीमती मोती के बारे में मालूम हुआ तो वह चला गया, अपनी तमाम मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस मोती
को ख़रीद लिया।

जाल की तमसील

47 आसमान की बादशाही जाल की मानिंद भी है। उसे झील में डाला गया तो हर क़िस्म की मछलियाँ पकड़ी गईं।
48 जब वह भर गया तो मछेरों ने उसे किनारे पर खींच लिया। फिर उन्होंने बैठकर क़ाबिले-इस्तेमाल मछलियाँ चुनकर
टोकरियों में डाल दीं और नाक़ाबिले-इस्तेमाल मछलियाँ फेंक दीं। 49 दुनिया के इख़्तिताम पर ऐसा ही होगा। फ़रिश्ते
आएँगे और बुरे लोगों को रास्तबाज़ों से अलग करके 50 उन्हें भड़कती भट्टी में फेंक देंगे जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते
रहेंगे।"

नई और पुरानी सच्चाइयाँ

51 ईसा ने पूछा, "क्या तुमको इन तमाम बातों की समझ आ गई है?"

"जी," शागिर्दों ने जवाब दिया।

52 उसने उनसे कहा, "इसलिए शरीअत का हर आलिम जो आसमान की बादशाही में शागिर्द बन गया है ऐसे
मालिके-मकान की मानिंद है जो अपने ख़ज़ाने से नए और पुराने जवाहर निकालता है।"

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

53 यह तमसीलें सुनाने के बाद ईसा वहाँ से चला गया। 54 अपने वतनी शहर नासरत पहुँचकर वह इबादतख़ाने में
लोगों को तालीम देने लगा। उस की बातें सुनकर वह हैरतज़दा हुए। उन्होंने पूछा, "उसे यह हिकमत और मोजिज़े करने
की यह क़ुदरत कहाँ से हासिल हुई है? 55 क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उस की माँ का नाम मरियम नहीं है,
और क्या उसके भाई याक़ूब, यूसुफ़, शमौन और यहूदा नहीं हैं? 56 क्या उस की बहनें हमारे साथ नहीं रहतीं? तो
फिर उसे यह सब कुछ कहाँ से मिल गया?" 57 यों वह उससे ठोकर खाकर उसे क़बूल करने से क़ासिर रहे।

ईसा ने उनसे कहा, "नबी की इज़्ज़त हर जगह की जाती है सिवाए उसके वतनी शहर और उसके अपने ख़ानदान
के।" 58 और उनके ईमान की कमी के बाइस उसने वहाँ ज़्यादा मोजिज़े न किए।

14

यहया का क़त्ल

1 उस वक़्त गलील के हुक्मरान हेरोदेस अंतिपास को ईसा के बारे में इत्तला मिली। 2 इस पर उसने अपने दरबारियों
से कहा, "यह यहया बपतिस्मा देनेवाला है जो मुरदों में से जी उठा है, इसलिए उस की मोजिज़ाना ताक़तें इसमें नज़र
आती हैं।"

3 वजह यह थी कि हेरोदेस ने यहया को गिरिफ़्तार करके जेल में डाला था। यह हेरोदियास की ख़ातिर हुआ था जो
पहले हेरोदेस के भाई फ़िलिप्पुस की बीवी थी। 4 यहया ने हेरोदेस को बताया था, "हेरोदियास से तेरी शादी नाजायज़
है।" 5 हेरोदेस यहया को क़त्ल करना चाहता था, लेकिन अवाम से डरता था क्योंकि वह उसे नबी समझते थे।

6 हेरोदेस की सालगिरह के मौक़े पर हेरोदियास की बेटी उनके सामने नाची। हेरोदेस को उसका नाचना इतना पसंद
आया 7 कि उसने क़सम खाकर उससे वादा किया, "जो भी तू माँगेगी मैं तुझे दूँगा।"

8 अपनी माँ के सिखाने पर बेटी ने कहा, "मुझे यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर ट्रे में मँगवा दें।"

9 यह सुनकर बादशाह को दुख हुआ। लेकिन अपनी क़समों और मेहमानों की मौजूदगी की वजह से उसने उसे देने
का हुक्म दे दिया। 10 चुनाँचे यहया का सर क़लम कर दिया गया। 11 फिर ट्रे में रखकर अंदर लाया गया और लड़की
को दे दिया गया। लड़की उसे अपनी माँ के पास ले गई। 12 बाद में यहया के शागिर्द आए और उस की लाश लेकर
उसे दफ़नाया। फिर वह ईसा के पास गए और उसे इत्तला दी।

ईसा *5000* मर्दों को खाना खिलाता है

13 यह ख़बर सुनकर ईसा लोगों से अलग होकर कश्ती पर सवार हुआ और किसी वीरान जगह चला गया। लेकिन
हुजूम को उस की ख़बर मिली। लोग पैदल चलकर शहरों से निकल आए और उसके पीछे लग गए। 14 जब ईसा ने
कश्ती पर से उतरकर बड़े हुजूम को देखा तो उसे लोगों पर बड़ा तरस आया। वहीं उसने उनके मरीज़ों को शफ़ा दी।
15 जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्द उसके पास आए और कहा, "यह जगह वीरान है और दिन ढलने लगा है।
इनको रुख़सत कर दें ताकि यह इर्दगिर्द के देहातों में जाकर खाने के लिए कुछ ख़रीद लें।"
16 ईसा ने जवाब दिया, "इन्हें जाने की ज़रूरत नहीं, तुम ख़ुद इन्हें खाने को दो।"
17 उन्होंने जवाब दिया, "हमारे पास सिर्फ़ पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।"
18 उसने कहा, "उन्हें यहाँ मेरे पास ले आओ," 19 और लोगों को घास पर बैठने का हुक्म दिया। ईसा ने उन पाँच
रोटियों और दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ़ देखा और शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसने रोटियों को
तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया, और शागिर्दों ने यह रोटियाँ लोगों में तक़सीम कर दीं। 20 सबने जी भरकर खाया। जब
शागिर्दों ने बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे भर गए। 21 ख़वातीन और बच्चों के अलावा खानेवाले तक़रीबन
5,000 मर्द थे।

ईसा पानी पर चलता है

22 इसके ऐन बाद ईसा ने शागिर्दों को मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें और झील के पार
चले जाएँ। इतने में वह हुजूम को रुख़सत करना चाहता था। 23 उन्हें ख़ैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने के लिए
अकेला पहाड़ पर चढ़ गया। शाम के वक़्त वह वहाँ अकेला था 24 जबकि कश्ती किनारे से काफ़ी दूर हो गई थी।
लहरें कश्ती को बहुत तंग कर रहीं थीं क्योंकि हवा उसके ख़िलाफ़ चल रही थी।
25 तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके पास आया। 26 जब शागिर्दों ने उसे झील की
सतह पर चलते हुए देखा तो उन्होंने दहशत खाई। "यह कोई भूत है," उन्होंने कहा और डर के मारे चीख़ें मारने लगे।
27 लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुख़ातिब होकर बोला, "हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।"
28 इस पर पतरस बोल उठा, "ख़ुदावंद, अगर आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का हुक्म दें।"
29 ईसा ने जवाब दिया, "आ।" पतरस कश्ती पर से उतरकर पानी पर चलते चलते ईसा की तरफ़ बढ़ने लगा।
30 लेकिन जब उसने तेज़ हवा पर ग़ौर किया तो वह घबरा गया और डूबने लगा। वह चिल्ला उठा, "ख़ुदावंद, मुझे
बचाएँ!"
31 ईसा ने फ़ौरन अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया। उसने कहा, "ऐ कमएतक़ाद! तू शक में क्यों पड़ गया
था?"
32 दोनों कश्ती पर सवार हुए तो हवा थम गई। 33 फिर कश्ती में मौजूद शागिर्दों ने उसे सिजदा करके कहा,
"यक़ीनन आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं!"

गन्नेसरत में मरीज़ों की शफ़ा

34 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास पहुँच गए। 35 जब उस जगह के लोगों ने ईसा को पहचान लिया
तो उन्होंने इर्दगिर्द के पूरे इलाक़े में इसकी ख़बर फैलाई। उन्होंने अपने तमाम मरीज़ों को उसके पास लाकर 36 उससे
मिन्नत की कि वह उन्हें सिर्फ़ अपने लिबास के दामन को छूने दे। और जिसने भी उसे छुआ उसे शफ़ा मिली।

15

बापदादा की तालीम

1 फिर कुछ फ़रीसी और शरीअत के आलिम यरूशलम से आकर ईसा से पूछने लगे, 2 "आपके शागिर्द बापदादा
की रिवायत क्यों तोड़ते हैं? क्योंकि वह हाथ धोए बग़ैर रोटी खाते हैं।"
3 ईसा ने जवाब दिया, "और तुम अपनी रिवायात की ख़ातिर अल्लाह का हुक्म क्यों तोड़ते हो? 4 क्योंकि अल्लाह
ने फ़रमाया, 'अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना' और 'जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत
दी जाए।' 5 लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे, 'मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने मन्नत मानी है
कि जो कुछ मुझे आपको देना था वह अल्लाह के लिए वक़्फ़ है' तो तुम इसे जायज़ क़रार देते हो। 6 यों तुम कहते हो
कि उसे अपने माँ-बाप की इज़्ज़त करने की ज़रूरत नहीं है। और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को अपनी रिवायत
की ख़ातिर मनसूख़ कर लेते हो। 7 रियाकारो! यसायाह नबी ने तुम्हारे बारे में क्या ख़ूब नबुव्वत की है,
8 'यह क़ौम अपने होंटों से तो मेरा एहतराम करती है
लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है।
9 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफ़ायदा।

क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के अहकाम सिखाते हैं'।"

इनसान को क्या कुछ नापाक कर देता है?

10 फिर ईसा ने हुजूम को अपने पास बुलाकर कहा, "सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की कोशिश करो। 11 कोई
ऐसी चीज़ है नहीं जो इनसान के मुँह में दाख़िल होकर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता
है वही उसे नापाक कर देता है।"
12 इस पर शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा, "क्या आपको मालूम है कि फ़रीसी यह बात सुनकर नाराज़ हुए हैं?"
13 उसने जवाब दिया, "जो भी पौदा मेरे आसमानी बाप ने नहीं लगाया उसे जड़ से उखाड़ा जाएगा। 14 उन्हें छोड़
दो, वह अंधे राह दिखानेवाले हैं। अगर एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई करे तो दोनों गढ़े में गिर जाएंगे।"
15 पतरस बोल उठा, "इस तमसील का मतलब हमें बताएँ।"
16 ईसा ने कहा, "क्या तुम अभी तक इतने नासमझ हो? 17 क्या तुम नहीं समझ सकते कि जो कुछ इनसान के
मुँह में दाख़िल हो जाता है वह उसके मेदे में जाता है और वहाँ से निकलकर जाए-ज़रूरत में? 18 लेकिन जो कुछ
इनसान के मुँह से निकलता है वह दिल से आता है। वही इनसान को नापाक करता है। 19 दिल ही से बुरे ख़यालात,
क़त्लो-ग़ारत, ज़िनाकारी, हरामकारी, चोरी, झूटी गवाही और बुहतान निकलते हैं। 20 यही कुछ इनसान को नापाक
कर देता है, लेकिन हाथ धोए बग़ैर खाना खाने से वह नापाक नहीं होता।"

ग़ैरयहूदी औरत का ईमान

21 फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल में सूर और सैदा के इलाक़े में आया। 22 इस इलाक़े की एक कनानी
ख़ातून उसके पास आकर चिल्लाने लगी, "ख़ुदावंद, इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें। एक बदरूह मेरी बेटी को बहुत
सताती है।"
23 लेकिन ईसा ने जवाब में एक लफ़्ज़ भी न कहा। इस पर उसके शागिर्द उसके पास आकर उससे गुज़ारिश करने
लगे, "उसे फ़ारिग़ कर दें, क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे चीख़ती-चिल्लाती है।"
24 ईसा ने जवाब दिया, "मुझे सिर्फ़ इसराईल की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया है।"
25 औरत उसके पास आकर मुँह के बल झुक गई और कहा, "ख़ुदावंद, मेरी मदद करें!"
26 उसने उसे बताया, "यह मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के सामने फेंक दिया जाए।"
27 उसने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, लेकिन कुत्ते भी वह टुकड़े खाते हैं जो उनके मालिक की मेज़ पर से फ़र्श पर
गिर जाते हैं।"
28 ईसा ने कहा, "ऐ औरत, तेरा ईमान बड़ा है। तेरी दरख़ास्त पूरी हो जाए।" उसी लमहे औरत की बेटी को शफ़ा
मिल गई।

ईसा बहुत-से मरीज़ों को शफ़ा देता है

29 फिर ईसा वहाँ से रवाना होकर गलील की झील के किनारे पहुँच गया। वहाँ वह पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया।
30 लोगों की बड़ी तादाद उसके पास आई। वह अपने लँगड़े, अंधे, मफ़लूज, गूँगे और कई और क़िस्म के मरीज़ भी
साथ ले आए। उन्होंने उन्हें ईसा के सामने रखा तो उसने उन्हें शफ़ा दी। 31 हुजूम हैरतज़दा हो गया। क्योंकि गूँगे बोल
रहे थे, अपाहजों के आज़ा बहाल हो गए, लँगड़े चलने और अंधे देखने लगे थे। यह देखकर भीड़ ने इसराईल के ख़ुदा
की तमजीद की।

ईसा *4000* मर्दों को खाना खिलाता है

32 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर उनसे कहा, "मुझे इन लोगों पर तरस आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन
दिन हो चुके हैं और इनके पास खाने की कोई चीज़ नहीं है। लेकिन मैं इन्हें इस भूकी हालत में रुख़सत नहीं करना
चाहता। ऐसा न हो कि वह रास्ते में थककर चूर हो जाएँ।"
33 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, "इस वीरान इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह लोग खाकर सेर
हो जाएँ?"
34 ईसा ने पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?" उन्होंने जवाब दिया, "सात, और चंद एक छोटी मछलियाँ।"
35 ईसा ने हुजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा। 36 फिर सात रोटियों और मछलियों को लेकर उसने शुक्रगुज़ारी
की दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़कर अपने शागिर्दों को तक़सीम करने के लिए दे दिया। 37 सबने जी भरकर खाया।
बाद में जब खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर गए। 38 ख़वातीन और बच्चों के अलावा
खानेवाले 4,000 मर्द थे।
39 फिर ईसा लोगों को रुख़सत करके कश्ती पर सवार हुआ और मगदन के इलाक़े में चला गया।

16

फ़रीसी इलाही निशान का तक़ाज़ा करते हैं

1 एक दिन फ़रीसी और सदूक़ी ईसा के पास आए। उसे परखने के लिए उन्होंने मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान
की तरफ़ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उसका इख़्तियार साबित हो जाए। 2 लेकिन उसने जवाब दिया, "शाम
को तुम कहते हो, 'कल मौसम साफ़ होगा क्योंकि आसमान सुर्ख़ नज़र आता है।' 3 और सुबह के वक़्त कहते हो,
'आज तूफ़ान होगा क्योंकि आसमान सुर्ख़ है और बादल छाए हुए हैं।' ग़रज़ तुम आसमान की हालत पर ग़ौर करके
सहीह नतीजा निकाल लेते हो, लेकिन ज़मानों की अलामतों पर ग़ौर करके सहीह नतीजे तक पहुँचना तुम्हारे बस की
बात नहीं है। 4 सिर्फ़ शरीर और ज़िनाकार नसल इलाही निशान का तक़ाज़ा करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही
निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस नबी के निशान के।"

यह कहकर ईसा उन्हें छोड़कर चला गया।

फ़रीसियों और सदूक़ियों का ख़मीर

5 झील को पार करते वक़्त शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल गए थे। 6 ईसा ने उनसे कहा, "ख़बरदार, फ़रीसियों
और सदूक़ियों के ख़मीर से होशियार रहना।"

7 शागिर्द आपस में बहस करने लगे, "वह इसलिए कह रहे होंगे कि हम खाना साथ नहीं लाए।"

8 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने कहा, "तुम आपस में क्यों बहस कर रहे हो कि हमारे पास
रोटी नहीं है? 9 क्या तुम अभी तक नहीं समझते? क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने पाँच रोटियाँ लेकर 5,000 आदमियों
को खाना खिला दिया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे? 10 या क्या तुम भूल गए हो कि मैंने
सात रोटियाँ लेकर 4,000 आदमियों को खाना खिलाया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे?
11 तुम क्यों नहीं समझते कि मैं तुमसे खाने की बात नहीं कर रहा? सुनो मेरी बात! फ़रीसियों और सदूक़ियों के ख़मीर
से होशियार रहो!"

12 फिर उन्हें समझ आई कि ईसा उन्हें रोटी के ख़मीर से आगाह नहीं कर रहा था बल्कि फ़रीसियों और सदूक़ियों
की तालीम से।

पतरस का इक़रार

13 जब ईसा क़ैसरिया-फ़िलिप्पी के इलाक़े में पहुँचा तो उसने शागिर्दों से पूछा, "इब्ने-आदम लोगों के नज़दीक
कौन है?"

14 उन्होंने जवाब दिया, "कुछ कहते हैं यहया बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास नबी हैं। कुछ यह
भी कहते हैं कि यरमियाह या नबियों में से एक।"

15 उसने पूछा, "लेकिन तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?"

16 पतरस ने जवाब दिया, "आप ज़िंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं।"

17 ईसा ने कहा, "शमौन बिन यूनुस, तू मुबारक है, क्योंकि किसी इनसान ने तुझ पर यह ज़ाहिर नहीं किया बल्कि
मेरे आसमानी बाप ने। 18 मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि तू पतरस यानी पत्थर है, और इसी पत्थर पर मैं अपनी जमात
को तामीर करूँगा, ऐसी जमात जिस पर पाताल के दरवाज़े भी ग़ालिब नहीं आएँगे। 19 मैं तुझे आसमान की बादशाही
की कुंजियाँ दे दूँगा। जो कुछ तू ज़मीन पर बाँधेगा वह आसमान पर भी बँधेगा। और जो कुछ तू ज़मीन पर खोलेगा वह
आसमान पर भी खुलेगा।"

20 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया, "किसी को भी न बताओ कि मैं मसीह हूँ।"

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

21 उस वक़्त से ईसा अपने शागिर्दों पर वाज़िह करने लगा, "लाज़िम है कि मैं यरूशलम जाकर क़ौम के बुज़ुर्गों,
राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हाथों बहुत दुख उठाऊँ। मुझे क़त्ल किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन मैं जी
उठूँगा।"

22 इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जाकर समझाने लगा। "ऐ ख़ुदावंद, अल्लाह न करे कि यह कभी भी आपके
साथ हो।"

23 ईसा ने मुड़कर पतरस से कहा, "शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का बाइस है, क्योंकि तू
अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इनसान की।"

24 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और अपनी सलीब
उठाकर मेरे पीछे हो ले। 25 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी ख़ातिर

अपनी जान खो दे वही उसे पा लेगा। 26 क्या फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए, लेकिन वह
अपनी जान से महरूम हो जाए? इनसान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है? 27 क्योंकि इब्ने-आदम अपने बाप
के जलाल में अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा, और उस वक़्त वह हर एक को उसके काम का बदला देगा। 28 मैं तुम्हें
सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही इब्ने-आदम को उस की बादशाही में आते हुए देखेंगे।"

17

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

1 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। 2 वहाँ उस
की शक्लो-सूरत उनके सामने बदल गई। उसका चेहरा सूरज की तरह चमकने लगा, और उसके कपड़े नूर की मानिंद
सफ़ेद हो गए। 3 अचानक इलियास और मूसा ज़ाहिर हुए और ईसा से बातें करने लगे। 4 पतरस बोल उठा, "ख़ुदावंद,
कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। अगर आप चाहें तो मैं तीन झोंपड़ियाँ बनाऊँगा, एक आपके लिए, एक मूसा के
लिए और एक इलियास के लिए।"

5 वह अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकदार बादल आकर उन पर छा गया और बादल में से एक आवाज़
सुनाई दी, "यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, जिससे मैं ख़ुश हूँ। इसकी सुनो।"

6 यह सुनकर शागिर्द दहशत खाकर औंधे मुँह गिर गए। 7 लेकिन ईसा ने आकर उन्हें छुआ। उसने कहा, "उठो, मत
डरो।" 8 जब उन्होंने नज़र उठाई तो ईसा के सिवा किसी को न देखा।

9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, "जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक़्त तक किसी को न
बताना जब तक कि इब्ने-आदम मुरदों में से जी न उठे।"

10 शागिर्दों ने उससे पूछा, "शरीअत के उलमा क्यों कहते हैं कि मसीह की आमद से पहले इलियास का आना
ज़रूरी है?"

11 ईसा ने जवाब दिया, "इलियास तो ज़रूर सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा। 12 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ
कि इलियास तो आ चुका है और उन्होंने उसे नहीं पहचाना बल्कि उसके साथ जो चाहा किया। इसी तरह इब्ने-आदम
भी उनके हाथों दुख उठाएगा।"

13 फिर शागिर्दों को समझ आई कि वह उनके साथ यहया बपतिस्मा देनेवाले की बात कर रहा था।

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

14 जब वह नीचे हुजूम के पास पहुँचे तो एक आदमी ने ईसा के सामने आकर घुटने टेके 15 और कहा, "ख़ुदावंद,
मेरे बेटे पर रहम करें, उसे मिरगी के दौरे पड़ते हैं और उसे शदीद तकलीफ़ उठानी पड़ती है। कई बार वह आग या पानी
में गिर जाता है। 16 मैं उसे आपके शागिर्दों के पास लाया था, लेकिन वह उसे शफ़ा न दे सके।"

17 ईसा ने जवाब दिया, "ईमान से ख़ाली और टेढ़ी नसल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें बरदाश्त
करूँ? लड़के को मेरे पास ले आओ।" 18 ईसा ने बदरूह को डाँटा, तो वह लड़के में से निकल गई। उसी लमहे उसे
शफ़ा मिल गई।

19 बाद में शागिर्दों ने अलहदगी में ईसा के पास आकर पूछा, "हम बदरूह को क्यों न निकाल सके?"

20 उसने जवाब दिया, "अपने ईमान की कमी के सबब से। मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अगर तुम्हारा ईमान राई के दाने के
बराबर भी हो तो फिर तुम इस पहाड़ को कह सकोगे, 'इधर से उधर खिसक जा,' तो वह खिसक जाएगा। और तुम्हारे
लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं होगा। 21 [लेकिन इस क़िस्म की बदरूह दुआ और रोज़े के बग़ैर नहीं निकलती।]"

ईसा दूसरी बार अपनी मौत का ज़िक्र करता है

22 जब वह गलील में जमा हुए तो ईसा ने उन्हें बताया, "इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा।
23 वह उसे क़त्ल करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।"

यह सुनकर शागिर्द निहायत ग़मगीन हुए।

बैतुल-मुक़द्दस का टैक्स

24 वह कफ़र्नहूम पहुँचे तो बैतुल-मुक़द्दस का टैक्स जमा करनेवाले पतरस के पास आकर पूछने लगे, "क्या आपका
उस्ताद बैतुल-मुक़द्दस का टैक्स अदा नहीं करता?"

25 "जी, वह करता है," पतरस ने जवाब दिया। वह घर में आया तो ईसा पहले ही बोलने लगा, "क्या ख़याल है
शमौन, दुनिया के बादशाह किनसे ड्यूटी और टैक्स लेते हैं, अपने फ़रज़ंदों से या अजनबियों से?"

26 पतरस ने जवाब दिया, "अजनबियों से।"
ईसा बोला "तो फिर उनके फ़रज़ंद टैक्स देने से बरी हुए। 27 लेकिन हम उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहते। इसलिए
झील पर जाकर उसमें डोरी डाल देना। जो मछली तू पहले पकड़ेगा उसका मुँह खोलना तो उसमें से चाँदी का सिक्का
निकलेगा। उसे लेकर उन्हें मेरे और अपने लिए अदा कर दे।"

18

कौन सबसे बड़ा है?

1 उस वक़्त शागिर्द ईसा के पास आकर पूछने लगे, "आसमान की बादशाही में कौन सबसे बड़ा है?"
2 जवाब में ईसा ने एक छोटे बच्चे को बुलाकर उनके दरमियान खड़ा किया 3 और कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ
अगर तुम बदलकर छोटे बच्चों की मानिंद न बनो तो तुम कभी आसमान की बादशाही में दाख़िल नहीं होगे। 4 इसलिए
जो भी अपने आपको इस बच्चे की तरह छोटा बनाएगा वह आसमान में सबसे बड़ा होगा। 5 और जो भी मेरे नाम में इस
जैसे छोटे बच्चे को क़बूल करे वह मुझे क़बूल करता है।

आज़माइशें

6 लेकिन जो कोई इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में बड़ी
चक्की का पाट बाँधकर उसे समुंदर की गहराइयों में डुबो दिया जाए। 7 दुनिया पर उन चीज़ों की वजह से अफ़सोस जो
गुनाह करने पर उकसाती हैं। लाज़िम है कि ऐसी आज़माइशें आएँ, लेकिन उस शख़्स पर अफ़सोस जिसकी मारिफ़त
वह आएँ।
8 अगर तेरा हाथ या पाँव तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काटकर फेंक देना। इससे पहले कि तुझे दो हाथों
या दो पाँवों समेत जहन्नुम की अबदी आग में फेंका जाए, बेहतर यह है कि एक हाथ या पाँव से महरूम होकर अबदी
ज़िंदगी में दाख़िल हो। 9 और अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकालकर फेंक देना। इससे पहले
कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम की आग में फेंका जाए बेहतर यह है कि एक आँख से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी
में दाख़िल हो।

खोई हुई भेड़ की तमसील

10 ख़बरदार! तुम इन छोटों में से किसी को भी हक़ीर न जानना। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि आसमान पर इनके
फ़रिश्ते हर वक़्त मेरे बाप के चेहरे को देखते रहते हैं। 11 [क्योंकि इब्ने-आदम खोए हुओं को ढूँडने और नजात देने
आया है।]
12 तुम्हारा क्या ख़याल है? अगर किसी आदमी की 100 भेड़ें हों और एक भटककर गुम हो जाए तो वह क्या
करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें पहाड़ी इलाक़े में छोड़कर भटकी हुई भेड़ को ढूँडने नहीं जाएगा? 13 और मैं तुमको
सच बताता हूँ कि भटकी हुई भेड़ के मिलने पर वह उसके बारे में उन बाक़ी 99 भेड़ों की निसबत कहीं ज़्यादा ख़ुशी
मनाएगा जो भटकी नहीं। 14 बिलकुल इसी तरह आसमान पर तुम्हारा बाप नहीं चाहता कि इन छोटों में से एक भी
हलाक हो जाए।

गुनाह में पड़े भाई से सुलूक

15 अगर तेरे भाई ने तेरा गुनाह किया हो तो अकेले उसके पास जाकर उस पर उसका गुनाह ज़ाहिर कर। अगर वह
तेरी बात माने तो तूने अपने भाई को जीत लिया। 16 लेकिन अगर वह न माने तो एक या दो और लोगों को अपने साथ
ले जा ताकि तुम्हारी हर बात की दो या तीन गवाहों से तसदीक़ हो जाए। 17 अगर वह उनकी बात भी न माने तो जमात
को बता देना। और अगर वह जमात की भी न माने तो उसके साथ ग़ैरईमानदार या टैक्स लेनेवाले का-सा सुलूक कर।

बाँधने और खोलने का इख़्तियार

18 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ भी तुम ज़मीन पर बान्धोगे आसमान पर भी बँधेगा, और जो कुछ ज़मीन पर
खोलोगे आसमान पर भी खुलेगा।
19 मैं तुमको यह भी बताता हूँ कि अगर तुममें से दो शख़्स किसी बात को माँगने पर मुत्तफ़िक़ हो जाएँ तो मेरा आसमानी
बाप तुमको बख़्शेगा। 20 क्योंकि जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम में जमा हो जाएँ वहाँ मैं उनके दरमियान हूँगा।"

मुआफ़ न करनेवाले नौकर की तमसील

21 फिर पतरस ने ईसा के पास आकर पूछा, "ख़ुदावंद, जब मेरा भाई मेरा गुनाह करे तो मैं कितनी बार उसे मुआफ़
करूँ? सात बार तक?"

22 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे बताता हूँ, सात बार नहीं बल्कि 77 बार। 23 इसलिए आसमान की बादशाही
एक बादशाह की मानिंद है जो अपने नौकरों के कर्ज़ों का हिसाब-किताब करना चाहता था। 24 हिसाब-किताब शुरू
करते वक़्त एक आदमी उसके सामने पेश किया गया जो अरबों के हिसाब से उसका क़र्ज़दार था। 25 वह यह रक़म
अदा न कर सका, इसलिए उसके मालिक ने यह क़र्ज़ वसूल करने के लिए हुक्म दिया कि उसे बाल-बच्चों और तमाम
मिलकियत समेत फ़रोख़्त कर दिया जाए। 26 यह सुनकर नौकर मुँह के बल गिरा और मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मोहलत
दें, मैं पूरी रक़म अदा कर दूँगा।’ 27 बादशाह को उस पर तरस आया। उसने उसका क़र्ज़ मुआफ़ करके उसे जाने दिया।

28 लेकिन जब यही नौकर बाहर निकला तो एक हमख़िदमत मिला जो उसका चंद हज़ार रूपों का क़र्ज़दार था।
उसे पकड़कर वह उसका गला दबाकर कहने लगा, ‘अपना क़र्ज़ अदा कर!’ 29 दूसरा नौकर गिरकर मिन्नत करने
लगा, ‘मुझे मोहलत दें, मैं आपको सारी रक़म अदा कर दूँगा।’ 30 लेकिन वह इसके लिए तैयार न हुआ, बल्कि जाकर
उसे उस वक़्त तक जेल में डलवाया जब तक वह पूरी रक़म अदा न कर दे। 31 जब बाक़ी नौकरों ने यह देखा तो उन्हें
शदीद दुख हुआ और उन्होंने अपने मालिक के पास जाकर सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 32 इस पर मालिक ने
उस नौकर को अपने पास बुला लिया और कहा, ‘शरीर नौकर! जब तूने मेरी मिन्नत की तो मैंने तेरा पूरा क़र्ज़ मुआफ़
कर दिया। 33 क्या लाज़िम न था कि तू भी अपने साथी नौकर पर उतना रहम करता जितना मैंने तुझ पर किया था?’
34 ग़ुस्से में मालिक ने उसे जेल के अफ़सरों के हवाले कर दिया ताकि उस पर उस वक़्त तक तशद्दुद किया जाए जब
तक वह क़र्ज़ की पूरी रक़म अदा न कर दे।

35 मेरा आसमानी बाप तुममें से हर एक के साथ भी ऐसा ही करेगा अगर तुमने अपने भाई को पूरे दिल से मुआफ़ न
किया।”

19

तलाक़ के बारे में तालीम

1 यह कहने के बाद ईसा गलील को छोड़कर यहूदिया में दरियाए-यरदन के पार चला गया। 2 बड़ा हुजूम उसके
पीछे हो लिया और उसने उन्हें वहाँ शफ़ा दी।

3 कुछ फ़रीसी आए और उसे फँसाने की ग़रज़ से सवाल किया, “क्या जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को किसी भी
वजह से तलाक़ दे?”

4 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कलामे-मुक़द्दस में नहीं पढ़ा कि इब्तिदा में ख़ालिक़ ने उन्हें मर्द और औरत
बनाया? 5 और उसने फ़रमाया, ‘इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। वह
दोनों एक हो जाते हैं।’ 6 यों वह कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। जिसे अल्लाह ने
जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे।”

7 उन्होंने एतराज़ किया, “तो फिर मूसा ने यह क्यों फ़रमाया कि आदमी तलाक़नामा लिखकर बीवी को रुख़सत
कर दे?”

8 ईसा ने जवाब दिया, “मूसा ने तुम्हारी सख़्तदिली की वजह से तुमको अपनी बीवी को तलाक़ देने की इजाज़त दी।
लेकिन इब्तिदा में ऐसा न था। 9 मैं तुम्हें बताता हूँ, जो अपनी बीवी को जिसने ज़िना न किया हो तलाक़ दे और किसी
और से शादी करे, वह ज़िना करता है।”

10 शागिर्दों ने उससे कहा, “अगर शौहर और बीवी का आपस का ताल्लुक़ ऐसा है तो शादी न करना बेहतर है।”

11 ईसा ने जवाब दिया, “हर कोई यह बात समझ नहीं सकता बल्कि सिर्फ़ वह जिसे इस क़ाबिल बना दिया गया हो।
12 क्योंकि कुछ पैदाइश ही से शादी करने के क़ाबिल नहीं होते, बाज़ को दूसरों ने यों बनाया है और बाज़ ने आसमान
की बादशाही की ख़ातिर शादी करने से इनकार किया है। लिहाज़ा जो यह समझ सके वह समझ ले।”

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन छोटे बच्चों को ईसा के पास लाया गया ताकि वह उन पर अपने हाथ रखकर दुआ करे। लेकिन शागिर्दों
ने लानेवालों को मलामत की। 14 यह देखकर ईसा ने कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि
आसमान की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है।”

15 उसने उन पर अपने हाथ रखे और फिर वहाँ से चला गया।

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

16 फिर एक आदमी ईसा के पास आया। उसने कहा, “उस्ताद, में कौन-सा नेक काम करूँ ताकि अबदी ज़िंदगी
मिल जाए?”

17 ईसा ने जवाब दिया, “तू मुझे नेकी के बारे में क्यों पूछ रहा है? सिर्फ़ एक ही नेक है। लेकिन अगर तू अबदी
ज़िंदगी में दाख़िल होना चाहता है तो अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार।”

18 आदमी ने पूछा, “कौन-से अहकाम?”

ईसा ने जवाब दिया, “क़त्ल न करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, 19 अपने बाप और अपनी
माँ की इज़्ज़त करना और अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।”

20 जवान आदमी ने जवाब दिया, “मैंने इन तमाम अहकाम की पैरवी की है, अब क्या रह गया है?”

21 ईसा ने उसे बताया, “अगर तू कामिल होना चाहता है तो जा और अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त करके पैसे ग़रीबों
में तक़सीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।”

22 यह सुनकर नौजवान मायूस होकर चला गया, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।

23 इस पर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि दौलतमंद के लिए आसमान की बादशाही
में दाख़िल होना मुश्किल है। 24 मैं यह दुबारा कहता हूँ, अमीर के आसमान की बादशाही में दाख़िल होने की निसबत
ज़्यादा आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।”

25 यह सुनकर शागिर्द निहायत हैरतज़दा हुए और पूछने लगे, “फिर किस को नजात हासिल हो सकती है?”

26 ईसा ने ग़ौर से उनकी तरफ़ देखकर जवाब दिया, “यह इनसान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन अल्लाह के
लिए सब कुछ मुमकिन है।”

27 फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं। हमें क्या मिलेगा?”

28 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, दुनिया की नई तख़लीक़ पर जब इब्ने-आदम अपने जलाली तख़्त
पर बैठेगा तो तुम भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है बारह तख़्तों पर बैठकर इसराईल के बारह क़बीलों की अदालत करोगे।
29 और जिसने भी मेरी ख़ातिर अपने घरों, भाइयों, बहनों, बाप, माँ, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है उसे सौ गुना
ज़्यादा मिल जाएगा और मीरास में अबदी ज़िंदगी पाएगा। 30 लेकिन बहुत-से लोग जो अब अव्वल हैं उस वक़्त आख़िर
होंगे और जो अब आख़िर हैं वह अव्वल होंगे।

20

अंगूर के बाग़ में मज़दूर

1 क्योंकि आसमान की बादशाही उस ज़मीनदार से मुताबिक़त रखती है जो एक दिन सुबह-सवेरे निकला ताकि अपने
अंगूर के बाग़ के लिए मज़दूर ढूँडे। 2 वह उनसे दिहाड़ी के लिए चाँदी का एक सिक्का देने पर मुत्तफ़िक़ हुआ और
उन्हें अपने अंगूर के बाग़ में भेज दिया। 3 नौ बजे वह दुबारा निकला तो देखा कि कुछ लोग अभी तक मंडी में फ़ारिग़
बैठे हैं। 4 उसने उनसे कहा, ‘तुम भी जाकर मेरे अंगूर के बाग़ में काम करो। मैं तुम्हें मुनासिब उजरत दूँगा।’ 5 चुनाँचे
वह काम करने के लिए चले गए। बारह बजे और तीन बजे दोपहर के वक़्त भी वह निकला और इस तरह के फ़ारिग़
मज़दूरों को काम पर लगाया। 6 फिर शाम के पाँच बज गए। वह निकला तो देखा कि अभी तक कुछ लोग फ़ारिग़ बैठे
हैं। उसने उनसे पूछा, ‘तुम क्यों पूरा दिन फ़ारिग़ बैठे रहे हो?’ 7 उन्होंने जवाब दिया, ‘इसलिए कि किसी ने हमें काम
पर नहीं लगाया।’ उसने उनसे कहा, ‘तुम भी जाकर मेरे अंगूर के बाग़ में काम करो।’

8 दिन ढल गया तो ज़मीनदार ने अपने अफ़सर को बताया, ‘मज़दूरों को बुलाकर उन्हें मज़दूरी दे दे, आख़िर में
आनेवालों से शुरू करके पहले आनेवालों तक।’ 9 जो मज़दूर पाँच बजे आए थे उन्हें चाँदी का एक एक सिक्का मिल
गया। 10 इसलिए जब वह आए जो पहले काम पर लगाए गए थे तो उन्होंने ज़्यादा मिलने की तवक़्क़ो की। लेकिन
उन्हें भी चाँदी का एक एक सिक्का मिला। 11 इस पर वह ज़मीनदार के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे, 12 ‘यह आदमी जिन्हें
आख़िर में लगाया गया उन्होंने सिर्फ़ एक घंटा काम किया। तो भी आपने उन्हें हमारे बराबर की मज़दूरी दी हालाँकि
हमें दिन का पूरा बोझ और धूप की शिद्दत बरदाश्त करनी पड़ी।’

13 लेकिन ज़मीनदार ने उनमें से एक से बात की, ‘यार, मैंने ग़लत काम नहीं किया। क्या तू चाँदी के एक सिक्के
के लिए मज़दूरी करने पर मुत्तफ़िक़ न हुआ था? 14 अपने पैसे लेकर चला जा। मैं आख़िर में काम पर लगनेवालों को
उतना ही देना चाहता हूँ जितना तुझे। 15 क्या मेरा हक़ नहीं कि मैं जैसा चाहूँ अपने पैसे ख़र्च करूँ? या क्या तू इसलिए
हसद करता है कि मैं फ़ैयाज़दिल हूँ?’

16 यों अव्वल आख़िर में आएँगे और जो आख़िरी हैं वह अव्वल हो जाएंगे।”

ईसा तीसरी मरतबा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

17 अब जब ईसा यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहा था तो बारह शागिर्दों को एक तरफ़ ले जाकर उसने उनसे कहा,
18 “हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-आदम को राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हवाले कर
दिया जाएगा। वह उस पर सज़ाए-मौत का फ़तवा देकर 19 उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर देंगे ताकि वह उसका मज़ाक़
उड़ाएँ, उसको कोड़े मारें और उसे मसलूब करें। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

याक़ूब और यूहन्ना की माँ की गुज़ारिश

20 फिर ज़बदी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना की माँ अपने बेटों को साथ लेकर ईसा के पास आई और सिजदा करके
कहा, “आपसे एक गुज़ारिश है।”
21 ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहती है?”
उसने जवाब दिया, “अपनी बादशाही में मेरे इन बेटों में से एक को अपने दाएँ हाथ बैठने दें और दूसरे को बाएँ
हाथ।”
22 ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने को हूँ?”
“जी, हम पी सकते हैं,” उन्होंने जवाब दिया।
23 फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम मेरा प्याला तो ज़रूर पियोगे, लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा काम नहीं कि कौन
मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन बाएँ हाथ। मेरे बाप ने यह मक़ाम उन्हीं के लिए तैयार किया है जिनको उसने ख़ुद मुक़र्रर
किया है।”
24 जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें याक़ूब और यूहन्ना पर ग़ुस्सा आया। 25 इस पर ईसा ने उन सबको
बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि क़ौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब डालते हैं और उनके बड़े अफ़सर उन पर
अपने इख़्तियार का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 26 लेकिन तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा होना चाहे वह
तुम्हारा ख़ादिम बने 27 और जो तुममें अव्वल होना चाहे वह तुम्हारा ग़ुलाम बने। 28 क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए
नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे और अपनी जान फ़िद्या के तौर पर देकर बहुतों को छुड़ाए।”

दो अंधों की शफ़ा

29 जब वह यरीहू शहर से निकलने लगे तो एक बड़ा हुजूम उनके पीछे चल रहा था। 30 दो अंधे रास्ते के किनारे
बैठे थे। जब उन्होंने सुना कि ईसा गुज़र रहा है तो वह चिल्लाने लगे, “ख़ुदावंद, इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”
31 हुजूम ने उन्हें डाँटकर कहा, “ख़ामोश!” लेकिन वह और भी ऊँची आवाज़ से पुकारते रहे, “ख़ुदावंद, इब्ने-
दाऊद, हम पर रहम करें।”
32 ईसा रुक गया। उसने उन्हें अपने पास बुलाया और पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?”
33 उन्होंने जवाब दिया, “ख़ुदावंद, यह कि हम देख सकें।”
34 ईसा को उन पर तरस आया। उसने उनकी आँखों को छुआ तो वह फ़ौरन बहाल हो गईं। फिर वह उसके पीछे
चलने लगे।

21

यरूशलम में पुरजोश इस्तक़बाल

1 वह यरूशलम के क़रीब बैत-फ़गे पहुँचे। यह गाँव ज़ैतून के पहाड़ पर वाक़े था। ईसा ने दो शागिर्दों को भेजा 2 और
कहा, “सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुमको फ़ौरन एक गधी नज़र आएगी जो अपने बच्चे के साथ बँधी हुई होगी।
उन्हें खोलकर यहाँ ले आओ। 3 अगर कोई यह देखकर तुमसे कुछ कहे तो उसे बता देना, ‘ख़ुदावंद को इनकी ज़रूरत
है।’ यह सुनकर वह फ़ौरन इन्हें भेज देगा।”
4 यों नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,
5 ‘सिय्यून बेटी को बता देना,
देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है।
वह हलीम है और गधे पर,
हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।’
6 दोनों शागिर्द चले गए। उन्होंने वैसा ही किया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 7 वह गधी को बच्चे समेत ले आए
और अपने कपड़े उन पर रख दिए। फिर ईसा उन पर बैठ गया। 8 जब वह चल पड़ा तो बहुत ज़्यादा लोगों ने उसके
आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने शाख़ें भी उसके आगे आगे रास्ते में बिछा दीं जो उन्होंने दरख़्तों
से काट ली थीं। 9 लोग ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे और चिल्लाकर यह नारे लगा रहे थे,

"इब्ने-दाऊद को होशाना! *
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।
आसमान की बुलंदियों पर होशाना।" †
10 जब ईसा यरूशलम में दाख़िल हुआ तो पूरा शहर हिल गया। सबने पूछा, "यह कौन है?"
11 हुजूम ने जवाब दिया, "यह ईसा है, वह नबी जो गलील के नासरत से है।"

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

12 और ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उन सबको निकालने लगा जो वहाँ क़ुरबानियों के लिए दरकार चीज़ों की
ख़रीदो-फ़रोख़्त कर रहे थे। उसने सिक्कों का तबादला करनेवालों की मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों की कुरसियाँ उलट
दीं 13 और उनसे कहा, "कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, 'मेरा घर दुआ का घर कहलाएगा।' लेकिन तुमने उसे डाकुओं
के अड्डे में बदल दिया है।"
14 अंधे और लँगड़े बैतुल-मुक़द्दस में उसके पास आए और उसने उन्हें शफ़ा दी। 15 लेकिन राहनुमा इमाम और
शरीअत के उलमा नाराज़ हुए जब उन्होंने उसके हैरतअंगेज़ काम देखे और यह कि बच्चे बैतुल-मुक़द्दस में "इब्ने-दाऊद
को होशाना" चिल्ला रहे हैं। 16 उन्होंने उससे पूछा, "क्या आप सुन रहे हैं कि यह बच्चे क्या कह रहे हैं?"
"जी," ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुमने कलामे-मुक़द्दस में कभी नहीं पढ़ा कि 'तूने छोटे बच्चों और शीरख़ारों
की ज़बान को तैयार किया है ताकि वह तेरी तमजीद करें'?"
17 फिर वह उन्हें छोड़कर शहर से निकला और बैत-अनियाह पहुँचा जहाँ उसने रात गुज़ारी।

अंजीर के दरख़्त पर लानत

18 अगले दिन सुबह-सवेरे जब वह यरूशलम लौट रहा था तो ईसा को भूक लगी। 19 रास्ते के क़रीब अंजीर का
एक दरख़्त देखकर वह उसके पास गया। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि फल नहीं लगा बल्कि सिर्फ़ पत्ते ही
पत्ते हैं। इस पर उसने दरख़्त से कहा, "अब से कभी भी तुझमें फल न लगे!" दरख़्त फ़ौरन सूख गया।
20 यह देखकर शागिर्द हैरान हुए और कहा, "अंजीर का दरख़्त इतनी जल्दी से किस तरह सूख गया?"
21 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता हूँ, अगर तुम शक न करो बल्कि ईमान रखो तो फिर तुम न सिर्फ़
ऐसा काम कर सकोगे बल्कि इससे भी बड़ा। तुम इस पहाड़ से कहोगे, 'उठ, अपने आपको समुंदर में गिरा दे' तो यह
हो जाएगा। 22 अगर तुम ईमान रखो तो जो कुछ भी तुम दुआ में माँगोगे वह तुमको मिल जाएगा।"

किसने ईसा को इख़्तियार दिया?

23 ईसा बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल होकर तालीम देने लगा। इतने में राहनुमा इमाम और क़ौम के बुज़ुर्ग उसके पास
आए और पूछा, "आप यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह इख़्तियार दिया है?"
24 ईसा ने जवाब दिया, "मेरा भी तुमसे एक सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको बता दूँगा कि मैं यह किस
इख़्तियार से कर रहा हूँ। 25 मुझे बताओ कि यहया का बपतिस्मा कहाँ से था—क्या वह आसमानी था या इनसानी?"
वह आपस में बहस करने लगे, "अगर हम कहें 'आसमानी' तो वह पूछेगा, 'तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न
लाए?' 26 लेकिन हम कैसे कह सकते हैं कि वह इनसानी था? हम तो आम लोगों से डरते हैं, क्योंकि वह सब मानते
हैं कि यहया नबी था।" 27 चुनाँचे उन्होंने जवाब दिया, "हम नहीं जानते।"
ईसा ने कहा, "फिर मैं भी तुमको नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहा हूँ।

दो बेटों की तमसील

28 तुम्हारा क्या ख़याल है? एक आदमी के दो बेटे थे। बाप बड़े बेटे के पास गया और कहा, 'बेटा, आज अंगूर के
बाग़ में जाकर काम कर।' 29 बेटे ने जवाब दिया, 'मैं जाना नहीं चाहता,' लेकिन बाद में उसने अपना ख़याल बदल
लिया और बाग़ में चला गया। 30 इतने में बाप छोटे बेटे के पास भी गया और उसे बाग़ में जाने को कहा। 'जी जनाब, मैं
जाऊँगा,' छोटे बेटे ने कहा। लेकिन वह न गया। 31 अब मुझे बताओ कि किस बेटे ने अपने बाप की मरज़ी पूरी की?"
"पहले बेटे ने," उन्होंने जवाब दिया।
ईसा ने कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ तुमसे पहले अल्लाह की बादशाही में
दाख़िल हो रहे हैं। 32 क्योंकि यहया तुमको रास्तबाज़ी की राह दिखाने आया और तुम उस पर ईमान न लाए। लेकिन
टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ उस पर ईमान लाए। और यह देखकर भी तुमने अपना ख़याल न बदला और उस पर ईमान
न लाए।

* **21:9** होशाना (इबरानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है। † **21:9** होशाना (इबरानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

अंगूर के बाग़ में मुज़ारेओं की बग़ावत

33 एक और तमसील सुनो। एक ज़मींनदार था जिसने अंगूर का बाग़ लगाया। उसने उस की चारदीवारी बनाई,
अंगूरों का रस निकालने के लिए एक गढ़े की खुदाई की और पहरेदारों के लिए बुर्ज तामीर किया। फिर वह उसे
मुज़ारेओं के सुपुर्द करके बैरूने-मुल्क चला गया। 34 जब अंगूर को तोड़ने का वक़्त क़रीब आ गया तो उसने अपने
नौकरों को मुज़ारेओं के पास भेज दिया ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा वसूल करें। 35 लेकिन मुज़ारेओं ने उसके
नौकरों को पकड़ लिया। उन्होंने एक की पिटाई की, दूसरे को क़त्ल किया और तीसरे को संगसार किया। 36 फिर
मालिक ने मज़ीद नौकरों को उनके पास भेज दिया जो पहले की निसबत ज़्यादा थे। लेकिन मुज़ारेओं ने उनके साथ भी
वही सुलूक किया। 37 आख़िरकार ज़मींनदार ने अपने बेटे को उनके पास भेजा। उसने कहा, 'आख़िर मेरे बेटे का तो
लिहाज़ करेंगे।' 38 लेकिन बेटे को देखकर मुज़ारे एक दूसरे से कहने लगे, 'यह ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे
क़त्ल करके उस की मीरास पर क़ब्ज़ा कर लें।' 39 उन्होंने उसे पकड़कर बाग़ से बाहर फेंक दिया और क़त्ल किया।"
40 ईसा ने पूछा, "अब बताओ, बाग़ का मालिक जब आएगा तो उन मुज़ारेओं के साथ क्या करेगा?"
41 उन्होंने जवाब दिया, "वह उन्हें बुरी तरह तबाह करेगा और बाग़ को दूसरों के सुपुर्द कर देगा, ऐसे मुज़ारेओं के
सुपुर्द जो वक़्त पर उसे फ़सल का उसका हिस्सा देंगे।"
42 ईसा ने उनसे कहा, "क्या तुमने कभी कलाम का यह हवाला नहीं पढ़ा,

'जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया,
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।
यह रब ने किया
और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है'?

43 इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ कि अल्लाह की बादशाही तुमसे ले ली जाएगी और एक ऐसी क़ौम को दी जाएगी जो
इसके मुताबिक़ फल लाएगी। 44 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो जाएगा, जबकि जिस पर वह ख़ुद गिरेगा
उसे वह पीस डालेगा।"
45 ईसा की तमसीलें सुनकर राहनुमा इमाम और फ़रीसी समझ गए कि वह हमारे बारे में बात कर रहा है। 46 उन्होंने
ईसा को गिरिफ़्तार करने की कोशिश की, लेकिन वह अवाम से डरते थे क्योंकि वह समझते थे कि ईसा नबी है।

22

बड़ी ज़ियाफ़त की तमसील

1 ईसा ने एक बार फिर तमसीलों में उनसे बात की। 2 "आसमान की बादशाही एक बादशाह से मुताबिक़त रखती
है जिसने अपने बेटे की शादी की ज़ियाफ़त की तैयारियाँ करवाईं। 3 जब ज़ियाफ़त का वक़्त आ गया तो उसने अपने
नौकरों को मेहमानों के पास यह इत्तला देने के लिए भेजा कि वह आएँ, लेकिन वह आना नहीं चाहते थे। 4 फिर
उसने मज़ीद कुछ नौकरों को भेजकर कहा, 'मेहमानों को बताना कि मैंने अपना खाना तैयार कर रखा है। बैलों और
मोटे-ताज़े बछड़ों को ज़बह किया गया है, 5 सब कुछ तैयार है। आएँ, ज़ियाफ़त में शरीक हो जाएँ।' लेकिन मेहमानों
ने परवा न की बल्कि अपने मुख़्तलिफ़ कामों में लग गए। एक अपने खेत को चला गया, दूसरा अपने कारोबार में
मसरूफ़ हो गया। 6 बाक़ियों ने बादशाह के नौकरों को पकड़ लिया और उनसे बुरा सुलूक करके उन्हें क़त्ल किया।
7 बादशाह बड़े तैश में आ गया। उसने अपनी फ़ौज को भेजकर क़ातिलों को तबाह कर दिया और उनका शहर जला
दिया। 8 फिर उसने अपने नौकरों से कहा, 'शादी की ज़ियाफ़त तो तैयार है, लेकिन जिन मेहमानों को मैंने दावत दी थी
वह आने के लायक़ नहीं थे। 9 अब वहाँ जाओ जहाँ सड़कें शहर से निकलती हैं और जिससे भी मुलाक़ात हो जाए उसे
ज़ियाफ़त के लिए दावत दे देना।' 10 चुनाँचे नौकर सड़कों पर निकले और जिससे भी मुलाक़ात हुई उसे लाए, ख़ाह
वह अच्छा था या बुरा। यों शादी हाल मेहमानों से भर गया।
11 लेकिन जब बादशाह मेहमानों से मिलने के लिए अंदर आया तो उसे एक आदमी नज़र आया जिसने शादी के
लिए मुनासिब कपड़े नहीं पहने थे। 12 बादशाह ने पूछा, 'दोस्त, तुम शादी का लिबास पहने बग़ैर अंदर किस तरह
आए?' वह आदमी कोई जवाब न दे सका। 13 फिर बादशाह ने अपने दरबारियों को हुक्म दिया, 'इसके हाथ और पाँव
बाँधकर इसे बाहर तारीकी में फेंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।'
14 क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, लेकिन चुने हुए कम।"

क्या टैक्स देना जायज़ है?

15 फिर फ़रीसियों ने जाकर आपस में मशवरा किया कि हम ईसा को किस तरह ऐसी बात करने के लिए उभारें
जिससे उसे पकड़ा जा सके। 16 इस मक़सद के तहत उन्होंने अपने शागिर्दों को हेरोदेस के पैरोकारों समेत ईसा के पास

भेजा। उन्होंने कहा, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और दियानतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं।
आप किसी की परवा नहीं करते क्योंकि आप ग़ैरजानिबदार हैं। 17 अब हमें अपनी राय बताएँ। क्या रोमी शहनशाह
को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़?"

18 लेकिन ईसा ने उनकी बुरी नीयत पहचान ली। उसने कहा, "रियाकारो, तुम मुझे क्यों फँसाना चाहते हो? 19 मुझे
वह सिक्का दिखाओ जो टैक्स अदा करने के लिए इस्तेमाल होता है।"

वह उसके पास चाँदी का एक रोमी सिक्का ले आए 20 तो उसने पूछा, "किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा है?"

21 उन्होंने जवाब दिया, "शहनशाह का।"

उसने कहा, "तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।"

22 उसका यह जवाब सुनकर वह हक्का-बक्का रह गए और उसे छोड़कर चले गए।

क्या हम जी उठेंगे?

23 उस दिन सदूक़ी ईसा के पास आए। सदूक़ी नहीं मानते कि रोज़े-क़ियामत मुरदे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक
सवाल किया। 24 "उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका
भाई हो तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 25 अब फ़र्ज़ करें कि
हमारे दरमियान सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। इसलिए दूसरे भाई ने बेवा से शादी की।
26 लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा।
यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया। 27 आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 28 अब बताएँ कि
क़ियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।"

29 ईसा ने जवाब दिया, "तुम इसलिए ग़लती पर हो कि न तुम कलामे-मुक़द्दस से वाक़िफ़ हो, न अल्लाह की क़ुदरत
से। 30 क्योंकि क़ियामत के दिन लोग न शादी करेंगे न उनकी शादी कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फ़रिश्तों की
मानिंद होंगे। 31 रही यह बात कि मुरदे जी उठेंगे, क्या तुमने वह बात नहीं पढ़ी जो अल्लाह ने तुमसे कही? 32 उसने
फ़रमाया, 'मैं इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ,' हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अरसे से
मर चुके थे। इसका मतलब है कि यह हक़ीक़त में ज़िंदा हैं। क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं बल्कि ज़िंदों का ख़ुदा
है।"

33 यह सुनकर हुजूम उस की तालीम के बाइस हैरान रह गया।

अव्वल हुक्म

34 जब फ़रीसियों ने सुना कि ईसा ने सदूक़ियों को लाजवाब कर दिया है तो वह जमा हुए। 35 उनमें से एक ने जो
शरीअत का आलिम था उसे फँसाने के लिए सवाल किया, 36 "उस्ताद, शरीअत में सबसे बड़ा हुक्म कौन-सा है?"

37 ईसा ने जवाब दिया, " 'रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।'
38 यह अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। 39 और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, 'अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत
रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।' 40 तमाम शरीअत और नबियों की तालीमात इन दो अहकाम पर मबनी हैं।"

मसीह के बारे में सवाल

41 जब फ़रीसी इकट्ठे थे तो ईसा ने उनसे पूछा, 42 "तुम्हारा मसीह के बारे में क्या ख़याल है? वह किसका फ़रज़ंद
है?"

उन्होंने जवाब दिया, "वह दाऊद का फ़रज़ंद है।"

43 ईसा ने कहा, "तो फिर दाऊद रूहुल-क़ुद्स की मारिफ़त उसे किस तरह 'रब' कहता है? क्योंकि वह फ़रमाता
है,

44 'रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।'

45 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह उसका फ़रज़ंद हो सकता है?"

46 कोई भी जवाब न दे सका, और उस दिन से किसी ने भी उससे मज़ीद कुछ पूछने की जुर्रत न की।

23

उलमा और फ़रीसियों से ख़बरदार

1 फिर ईसा हुजूम और अपने शागिर्दों से मुख़ातिब हुआ, 2 "शरीअत के उलमा और फ़रीसी मूसा की कुरसी पर
बैठे हैं। 3 चुनाँचे जो कुछ वह तुमको बताते हैं वह करो और उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारो। लेकिन जो कुछ वह करते
हैं वह न करो, क्योंकि वह ख़ुद अपनी तालीम के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारते। 4 वह भारी गठड़ियाँ बाँध बाँधकर
लोगों के कंधों पर रख देते हैं, लेकिन ख़ुद उन्हें उठाने के लिए एक उँगली तक हिलाने को तैयार नहीं होते। 5 जो
भी करते हैं दिखावे के लिए करते हैं। जो तावीज़ * वह अपने बाज़ुओं और पेशानियों पर बाँधते और जो फुँदने अपने
लिबास से लगाते हैं वह ख़ास बड़े होते हैं। 6 उनकी बस एक ही ख़ाहिश होती है कि ज़ियाफ़तों और इबादतख़ानों में
इज़्ज़त की कुरसियों पर बैठ जाएँ। 7 जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़्ज़त करते और 'उस्ताद' कहकर
उनसे बात करते हैं तो फिर वह ख़ुश हो जाते हैं। 8 लेकिन तुमको उस्ताद नहीं कहलाना चाहिए, क्योंकि तुम्हारा सिर्फ़
एक ही उस्ताद है जबकि तुम सब भाई हो। 9 और दुनिया में किसी को 'बाप' कहकर उससे बात न करो, क्योंकि तुम्हारा
एक ही बाप है और वह आसमान पर है। 10 हादी न कहलाना क्योंकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही हादी है यानी अल-मसीह।
11 तुममें से सबसे बड़ा शख़्स तुम्हारा ख़ादिम होगा। 12 क्योंकि जो भी अपने आपको सरफ़राज़ करेगा उसे पस्त किया
जाएगा और जो अपने आपको पस्त करेगा उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।

उनकी रियाकारी पर अफ़सोस

13 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम लोगों के सामने आसमान की बादशाही
पर ताला लगाते हो। न तुम ख़ुद दाख़िल होते हो, न उन्हें दाख़िल होने देते हो जो अंदर जाना चाहते हैं।

14 [शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बेवाओं के घरों पर क़ब्ज़ा कर लेते
और दिखावे के लिए लंबी लंबी नमाज़ पढ़ते हो। इसलिए तुम्हें ज़्यादा सज़ा मिलेगी।]

15 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम एक नौमुरीद बनाने की ख़ातिर ख़ुश्की
और तरी के लंबे सफ़र करते हो। और जब इसमें कामयाब हो जाते हो तो तुम उस शख़्स को अपनी निसबत जहन्नुम का
दुगना शरीर फ़रज़ंद बना देते हो। 16 अंधे राहनुमाओ, तुम पर अफ़सोस! तुम कहते हो, 'अगर कोई बैतुल-मुक़द्दस की
क़सम खाए तो ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन अगर वह बैतुल-मुक़द्दस के सोने की क़सम खाए तो लाज़िम
है कि उसे पूरा करे।' 17 अंधे अहमक़ो! ज़्यादा अहम किया है, सोना या बैतुल-मुक़द्दस जो सोने को मख़सूसो-मुक़द्दस
बनाता है? 18 तुम यह भी कहते हो, 'अगर कोई क़ुरबानगाह की क़सम खाए तो ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे।
लेकिन अगर वह क़ुरबानगाह पर पड़े हदिये की क़सम खाए तो लाज़िम है कि वह उसे पूरा करे।' 19 अंधो! ज़्यादा
अहम किया है, हदिया या क़ुरबानगाह जो हदिये को मख़सूसो-मुक़द्दस बनाती है? 20 ग़रज़, जो क़ुरबानगाह की क़सम
खाता है वह उन तमाम चीज़ों की क़सम भी खाता है जो उस पर पड़ी हैं। 21 और जो बैतुल-मुक़द्दस की क़सम खाता है
वह उस की भी क़सम खाता है जो उसमें सुकूनत करता है। 22 और जो आसमान की क़सम खाता है वह अल्लाह के
तख़्त की और उस पर बैठनेवाले की क़सम भी खाता है।

23 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! गो तुम बड़ी एहतियात से पौदीने, अजवायन
और ज़ीरे का दसवाँ हिस्सा हदिये के लिए मख़सूस करते हो, लेकिन तुमने शरीअत की ज़्यादा अहम बातों को नज़रंदाज़
कर दिया है यानी इनसाफ़, रहम और वफ़ादारी को। लाज़िम है कि तुम यह काम भी करो और पहला भी न छोड़ो।
24 अंधे राहनुमाओ! तुम अपने मशरूब छानते हो ताकि ग़लती से मच्छर न पी लिया जाए, लेकिन साथ साथ ऊँट को
निगल लेते हो।

25 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बाहर से हर प्याले और बरतन की
सफ़ाई करते हो, लेकिन अंदर से वह लूट-मार और ऐशपरस्ती से भरे होते हैं। 26 अंधे फ़रीसियो, पहले अंदर से प्याले
और बरतन की सफ़ाई करो, और फिर वह बाहर से भी पाक-साफ़ हो जाएंगे।

27 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम ऐसी क़ब्रों से मुताबिक़त रखते हो जिन
पर सफ़ेदी की गई हो। गो वह बाहर से दिलकश नज़र आती हैं, लेकिन अंदर से वह मुरदों की हड्डियों और हर क़िस्म
की नापाकी से भरी होती हैं। 28 तुम भी बाहर से रास्तबाज़ दिखाई देते हो जबकि अंदर से तुम रियाकारी और बेदीनी
से मामूर होते हो।

29 शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम नबियों के लिए क़ब्रें तामीर करते और
रास्तबाज़ों के मज़ार सजाते हो। 30 और तुम कहते हो, 'अगर हम अपने बापदादा के ज़माने में ज़िंदा होते तो नबियों को
क़त्ल करने में शरीक न होते।' 31 लेकिन यह कहने से तुम अपने ख़िलाफ़ गवाही देते हो कि तुम नबियों के क़ातिलों
की औलाद हो। 32 अब जाओ, वह काम मुकम्मल करो जो तुम्हारे बापदादा ने अधूरा छोड़ दिया था। 33 साँपो,

* **23:5** तावीज़ों में तौरेत के हवालाजात लिखकर रखे जाते थे।

ज़हरीले साँपों के बच्चो! तुम किस तरह जहन्नुम की सज़ा से बच पाओगे? 34 इसलिए मैं नबियों, दानिशमंदों और
शरीअत के आलिमों को तुम्हारे पास भेज देता हूँ। उनमें से बाज़ को तुम क़त्ल और मसलूब करोगे और बाज़ को अपने
इबादतख़ानों में ले जाकर कोड़े लगवाओगे और शहर बशहर उनका ताक़्क़ुब करोगे। 35 नतीजे में तुम तमाम रास्तबाज़ों
के क़त्ल के ज़िम्मादार ठहरोगे—रास्तबाज़ हाबील के क़त्ल से लेकर ज़करियाह बिन बरकियाह के क़त्ल तक जिसे
तुमने बैतुल-मुक़द्दस के दरवाज़े और उसके सहन में मौजूद क़ुरबानगाह के दरमियान मार डाला। 36 मैं तुमको सच बताता
हूँ कि यह सब कुछ इसी नसल पर आएगा।

यरूशलम पर अफ़सोस

37 हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों को क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़ंबरों को संगसार करती
है। मैंने कितनी ही बार तेरी औलाद को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मुरग़ी अपने बच्चों को अपने
परों तले जमा करके महफ़ूज़ कर लेती है। लेकिन तुमने न चाहा। 38 अब तुम्हारे घर को वीरानो-सुनसान छोड़ा जाएगा।
39 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ, तुम मुझे उस वक़्त तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि मुबारक है वह जो
रब के नाम से आता है।"

24

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

1 ईसा बैतुल-मुक़द्दस को छोड़कर निकल रहा था कि उसके शागिर्द उसके पास आए और बैतुल-मुक़द्दस की मुख़्तलिफ़
इमारतों की तरफ़ उस की तवज्जुह दिलाने लगे। 2 लेकिन ईसा ने जवाब में कहा, "क्या तुमको यह सब कुछ नज़र
आता है? मैं तुमको सच बताता हूँ कि यहाँ पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा बल्कि सब कुछ ढा दिया जाएगा।"

मुसीबतों और ईज़ारसानियों की पेशगोई

3 बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैठ गया। शागिर्द अकेले उसके पास आए। उन्होंने कहा, "हमें ज़रा बताएँ, यह
कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिससे पता चलेगा कि आप आनेवाले हैं और यह दुनिया ख़त्म होनेवाली है?"
4 ईसा ने जवाब दिया, "ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। 5 क्योंकि बहुत-से लोग मेरा नाम लेकर
आएँगे और कहेंगे, 'मैं ही मसीह हूँ।' यों वह बहुतों को गुमराह कर देंगे। 6 जंगों की ख़बरें और अफ़वाहें तुम तक
पहुँचेंगी, लेकिन मुहतात रहो ताकि तुम घबरा न जाओ। क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी अभी
आख़िरत नहीं होगी। 7 एक क़ौम दूसरी के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही दूसरी के ख़िलाफ़। काल
पड़ेंगे और जगह जगह ज़लज़ले आएँगे। 8 लेकिन यह सिर्फ़ दर्दे-ज़ह की इब्तिदा ही होगी।
9 फिर वह तुमको बड़ी मुसीबत में डाल देंगे और तुमको क़त्ल करेंगे। तमाम क़ौमें तुमसे इसलिए नफ़रत करेंगी कि
तुम मेरे पैरोकार हो। 10 उस वक़्त बहुत-से लोग ईमान से बरगश्ता होकर एक दूसरे को दुश्मन के हवाले करेंगे और एक
दूसरे से नफ़रत करेंगे। 11 बहुत-से झूटे नबी खड़े होकर बहुत-से लोगों को गुमराह कर देंगे। 12 बेदीनी के बढ़ जाने
की वजह से बेशतर लोगों की मुहब्बत ठंडी पड़ जाएगी। 13 लेकिन जो आख़िर तक क़ायम रहेगा उसे नजात मिलेगी।
14 और बादशाही की इस ख़ुशख़बरी के पैग़ाम का एलान पूरी दुनिया में किया जाएगा ताकि तमाम क़ौमों के सामने उस
की गवाही दी जाए। फिर ही आख़िरत आएगी।

बैतुल-मुक़द्दस की बेहुरमती

15 एक दिन आएगा जब तुम मुक़द्दस मक़ाम में वह कुछ खड़ा देखोगे जिसका ज़िक्र दानियाल नबी ने किया और जो
बेहुरमती और तबाही का बाइस है।" (क़ारी इस पर ध्यान दे!) 16 "उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर पहाड़ी
इलाक़े में पनाह लें। 17 जो अपने घर की छत पर हो वह घर में से कुछ साथ ले जाने के लिए न उतरे। 18 जो खेत में
हो वह अपनी चादर साथ ले जाने के लिए वापस न जाए। 19 उन ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों
या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों। 20 दुआ करो कि तुमको सर्दियों के मौसम में या सबत के दिन हिजरत न करनी
पड़े। 21 क्योंकि उस वक़्त ऐसी शदीद मुसीबत होगी कि दुनिया की तख़लीक़ से आज तक देखने में न आई होगी। इस
क़िस्म की मुसीबत बाद में भी कभी नहीं आएगी। 22 और अगर इस मुसीबत का दौरानिया मुख़तसर न किया जाता तो
कोई न बचता। लेकिन अल्लाह के चुने हुओं की ख़ातिर इसका दौरानिया मुख़तसर कर दिया जाएगा।
23 उस वक़्त अगर कोई तुमको बताए, 'देखो, मसीह यहाँ है' या 'वह वहाँ है' तो उस की बात न मानना। 24 क्योंकि
झूटे मसीह और झूटे नबी उठ खड़े होंगे जो बड़े अजीबो-ग़रीब निशान और मोजिज़े दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने

हुए लोगों को भी ग़लत रास्ते पर डाल दें—अगर यह मुमकिन होता। 25 देखो, मैंने तुम्हें पहले से इससे आगाह कर
दिया है।
26 चुनाँचे अगर कोई तुमको बताए, 'देखो, वह रेगिस्तान में है' तो वहाँ जाने के लिए न निकलना। और अगर कोई
कहे, 'देखो, वह अंदरूनी कमरों में है' तो उसका यक़ीन न करना। 27 क्योंकि जिस तरह बादल की बिजली मशरिक़
में कड़ककर मग़रिब तक चमकती है उसी तरह इब्ने-आदम की आमद भी होगी।
28 जहाँ भी लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो जाएंगे।

इब्ने-आदम की आमद

29 मुसीबत के उन दिनों के ऐन बाद सूरज तारीक हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी। सितारे आसमान
पर से गिर पड़ेंगे और आसमान की क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 30 उस वक़्त इब्ने-आदम का निशान आसमान पर नज़र
आएगा। तब दुनिया की तमाम क़ौमें मातम करेंगी। वह इब्ने-आदम को बड़ी क़ुदरत और जलाल के साथ आसमान के
बादलों पर आते हुए देखेंगी। 31 और वह अपने फ़रिश्तों को बिगुल की ऊँची आवाज़ के साथ भेज देगा ताकि उसके
चुने हुओं को चारों तरफ़ से जमा करें, आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक इकट्ठा करें।

अंजीर के दरख़्त से सबक़

32 अंजीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। ज्योंही उस की शाख़ें नरम और लचकदार हो जाती हैं और उनसे कोंपलें फूट
निकलती हैं तो तुमको मालूम हो जाता है कि गरमियों का मौसम क़रीब आ गया है। 33 इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात
देखोगे तो जान लोगे कि इब्ने-आदम की आमद क़रीब बल्कि दरवाज़े पर है। 34 मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस नसल
के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 35 आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक
क़ायम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

36 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन या कौन-सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के फ़रिश्तों और
फ़रज़ंद को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को। 37 जब इब्ने-आदम आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे।
38 क्योंकि सैलाब से पहले के दिनों में लोग उस वक़्त तक खाते-पीते और शादियाँ करते कराते रहे जब तक नूह कश्ती
में दाख़िल न हो गया। 39 वह उस वक़्त तक आनेवाली मुसीबत के बारे में लाइल्म रहे जब तक सैलाब आकर उन
सबको बहा न ले गया। जब इब्ने-आदम आएगा तो इसी क़िस्म के हालात होंगे। 40 उस वक़्त दो अफ़राद खेत में होंगे,
एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 41 दो ख़वातीन चक्की पर गंदुम पीस रही
होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़ दिया जाएगा।
42 इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा ख़ुदावंद किस दिन आ जाएगा। 43 यक़ीन जानो, अगर
किसी घर के मालिक को मालूम होता कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर चौकस रहता और उसे अपने घर में नक़ब
लगाने न देता। 44 तुम भी तैयार रहो, क्योंकि इब्ने-आदम ऐसे वक़्त आएगा जब तुम उस की तवक़्क़ो नहीं करोगे।

वफ़ादार नौकर

45 चुनाँचे कौन-सा नौकर वफ़ादार और समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर के मालिक ने किसी नौकर को बाक़ी नौकरों
पर मुक़र्रर किया हो। उस की एक ज़िम्मादारी यह भी है कि उन्हें वक़्त पर खाना खिलाए। 46 वह नौकर मुबारक होगा
जो मालिक की वापसी पर यह सब कुछ कर रहा होगा। 47 मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक उसे अपनी
पूरी जायदाद पर मुक़र्रर करेगा। 48 लेकिन फ़र्ज़ करो कि नौकर अपने दिल में सोचे, 'मालिक की वापसी में अभी देर
है।' 49 वह अपने साथी नौकरों को पीटने और शराबियों के साथ खाने-पीने लगे। 50 अगर वह ऐसा करे तो मालिक
ऐसे दिन और वक़्त आएगा जिसकी तवक़्क़ो नौकर को नहीं होगी। 51 इन हालात को देखकर वह नौकर को टुकड़े
टुकड़े कर डालेगा और उसे रियाकारों में शामिल करेगा, वहाँ जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।

25

दस कुँवारियों की तमसील

1 उस वक़्त आसमान की बादशाही दस कुँवारियों से मुताबिक़त रखेगी जो अपने चराग़ लेकर दूल्हे को मिलने के
लिए निकलें। 2 उनमें से पाँच नासमझ थीं और पाँच समझदार। 3 नासमझ कुँवारियों ने अपने पास चराग़ों के लिए
फ़ाल्तू तेल न रखा। 4 लेकिन समझदार कुँवारियों ने कुप्पी में तेल डालकर अपने साथ ले लिया। 5 दूल्हे को आने में
बड़ी देर लगी, इसलिए वह सब ऊँघ ऊँघकर सो गईं।

6 आधी रात को शोर मच गया, 'देखो, दूल्हा पहुँच रहा है, उसे मिलने के लिए निकलो!' 7 इस पर तमाम कुँवारियाँ
जाग उठीं और अपने चराग़ों को दुरुस्त करने लगीं। 8 नासमझ कुँवारियों ने समझदार कुँवारियों से कहा, 'अपने तेल
में से हमें भी कुछ दे दो। हमारे चराग़ बुझनेवाले हैं।' 9 दूसरी कुँवारियों ने जवाब दिया, 'नहीं, ऐसा न हो कि न सिर्फ़
तुम्हारे लिए बल्कि हमारे लिए भी तेल काफ़ी न हो। दुकान पर जाकर अपने लिए ख़रीद लो।' 10 चुनाँचे नासमझ
कुँवारियाँ चली गईं। लेकिन इस दौरान दूल्हा पहुँच गया। जो कुँवारियाँ तैयार थीं वह उसके साथ शादी हाल में दाख़िल
हुईं। फिर दरवाज़े को बंद कर दिया गया।
11 कुछ देर के बाद बाक़ी कुँवारियाँ आईं और चिल्लाने लगीं, 'जनाब! हमारे लिए दरवाज़ा खोल दें।' 12 लेकिन
उसने जवाब दिया, 'यक़ीन जानो, मैं तुमको नहीं जानता।'
13 इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम इब्ने-आदम के आने का दिन या वक़्त नहीं जानते।

तीन नौकरों की तमसील

14 उस वक़्त आसमान की बादशाही यों होगी : एक आदमी को बैरूने-मुल्क जाना था। उसने अपने नौकरों को
बुलाकर अपनी मिलकियत उनके सुपुर्द कर दी। 15 पहले को उसने सोने के 5,000 सिक्के दिए, दूसरे को 2,000
और तीसरे को 1,000। हर एक को उसने उस की क़ाबिलियत के मुताबिक़ पैसे दिए। फिर वह रवाना हुआ। 16 जिस
नौकर को 5,000 सिक्के मिले थे उसने सीधा जाकर उन्हें किसी कारोबार में लगाया। इससे उसे मज़ीद 5,000
सिक्के हासिल हुए। 17 इसी तरह दूसरे को भी जिसे 2,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल हुए।
18 लेकिन जिस आदमी को 1,000 सिक्के मिले थे वह चला गया और कहीं ज़मीन में गढ़ा खोदकर अपने मालिक
के पैसे उसमें छुपा दिए।
19 बड़ी देर के बाद उनका मालिक लौट आया। जब उसने उनके साथ हिसाब-किताब किया 20 तो पहला नौकर
जिसे 5,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 5,000 सिक्के लेकर आया। उसने कहा, 'जनाब, आपने 5,000 सिक्के मेरे
सुपुर्द किए थे। यह देखें, मैंने मज़ीद 5,000 सिक्के हासिल किए हैं।' 21 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शाबाश, मेरे
अच्छे और वफ़ादार नौकर। तुम थोड़े में वफ़ादार रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्रर करूँगा। अंदर आओ और
अपने मालिक की ख़ुशी में शरीक हो जाओ।'
22 फिर दूसरा नौकर आया जिसे 2,000 सिक्के मिले थे। उसने कहा, 'जनाब, आपने 2,000 सिक्के मेरे सुपुर्द
किए थे। यह देखें, मैंने मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल किए हैं।' 23 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शाबाश, मेरे अच्छे
और वफ़ादार नौकर। तुम थोड़े में वफ़ादार रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्रर करूँगा। अंदर आओ और अपने
मालिक की ख़ुशी में शरीक हो जाओ।'
24 फिर तीसरा नौकर आया जिसे 1,000 सिक्के मिले थे। उसने कहा, 'जनाब, मैं जानता था कि आप सख़्त
आदमी हैं। जो बीज आपने नहीं बोया उस की फ़सल आप काटते हैं और जो कुछ आपने नहीं लगाया उस की पैदावार
जमा करते हैं। 25 इसलिए मैं डर गया और जाकर आपके पैसे ज़मीन में छुपा दिए। अब आप अपने पैसे वापस ले सकते
हैं।'
26 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शरीर और सुस्त नौकर! क्या तू जानता था कि जो बीज मैंने नहीं बोया उस
की फ़सल काटता हूँ और जो कुछ मैंने नहीं लगाया उस की पैदावार जमा करता हूँ? 27 तो फिर तूने मेरे पैसे बैंक में
क्यों न जमा करा दिए? अगर ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।' 28 यह
कहकर मालिक दूसरों से मुख़ातिब हुआ, 'यह पैसे इससे लेकर उस नौकर को दे दो जिसके पास 10,000 सिक्के हैं।
29 क्योंकि जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उसके पास कसरत की चीज़ें होंगी। लेकिन जिसके पास
कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है। 30 अब इस बेकार नौकर को निकालकर बाहर की
तारीकी में फेंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।'

आख़िरी अदालत

31 जब इब्ने-आदम अपने जलाल के साथ आएगा और तमाम फ़रिश्ते उसके साथ होंगे तो वह अपने जलाली तख़्त
पर बैठ जाएगा। 32 तब तमाम क़ौमें उसके सामने जमा की जाएँगी। और जिस तरह चरवाहा भेड़ों को बकरियों से
अलग करता है उसी तरह वह लोगों को एक दूसरे से अलग करेगा। 33 वह भेड़ों को अपने दहने हाथ खड़ा करेगा
और बकरियों को अपने बाएँ हाथ। 34 फिर बादशाह दहने हाथवालों से कहेगा, 'आओ, मेरे बाप के मुबारक लोगो!
जो बादशाही दुनिया की तख़लीक़ से तुम्हारे लिए तैयार है उसे मीरास में ले लो। 35 क्योंकि मैं भूका था और तुमने मुझे
खाना खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी पिलाया, मैं अजनबी था और तुमने मेरी मेहमान-नवाज़ी की, 36 मैं

नंगा था और तुमने मुझे कपड़े पहनाए, मैं बीमार था और तुमने मेरी देख-भाल की, मैं जेल में था और तुम मुझसे मिलने
आए।’
37 फिर यह रास्तबाज़ लोग जवाब में कहेंगे, ‘ख़ुदावंद, हमने आपको कब भूका देखकर खाना खिलाया, आपको
कब प्यासा देखकर पानी पिलाया? 38 हमने आपको कब अजनबी की हैसियत से देखकर आपकी मेहमान-नवाज़ी
की, आपको कब नंगा देखकर कपड़े पहनाए? 39 हम आपको कब बीमार हालत में या जेल में पड़ा देखकर आपसे
मिलने गए?’ 40 बादशाह जवाब देगा, ‘मैं तुम्हें सच बताता हूँ कि जो कुछ तुमने मेरे इन सबसे छोटे भाइयों में से एक
के लिए किया वह तुमने मेरे ही लिए किया।’
41 फिर वह बाएँ हाथवालों से कहेगा, ‘लानती लोगो, मुझसे दूर हो जाओ और उस अबदी आग में चले जाओ जो
इबलीस और उसके फ़रिश्तों के लिए तैयार है। 42 क्योंकि मैं भूका था और तुमने मुझे कुछ न खिलाया, मैं प्यासा था
और तुमने मुझे पानी न पिलाया, 43 मैं अजनबी था और तुमने मेरी मेहमान-नवाज़ी न की, मैं नंगा था और तुमने मुझे
कपड़े न पहनाए, मैं बीमार और जेल में था और तुम मुझसे मिलने न आए।’
44 फिर वह जवाब में पूछेंगे, ‘ख़ुदावंद, हमने आपको कब भूका, प्यासा, अजनबी, नंगा, बीमार या जेल में पड़ा
देखा और आपकी ख़िदमत न की?’ 45 वह जवाब देगा, ‘मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब कभी तुमने इन सबसे छोटों
में से एक की मदद करने से इनकार किया तो तुमने मेरी ख़िदमत करने से इनकार किया।’ 46 फिर यह अबदी सज़ा
भुगतने के लिए जाएंगे जबकि रास्तबाज़ अबदी ज़िंदगी में दाख़िल होंगे।”

26

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

1 यह बातें ख़त्म करने पर ईसा शागिर्दों से मुख़ातिब हुआ, 2 “तुम जानते हो कि दो दिन के बाद फ़सह की ईद शुरू
होगी। उस वक़्त इब्ने-आदम को दुश्मन के हवाले किया जाएगा ताकि उसे मसलूब किया जाए।”
3 फिर राहनुमा इमाम और क़ौम के बुज़ुर्ग कायफ़ा नामी इमामे-आज़म के महल में जमा हुए 4 और ईसा को किसी
चालाकी से गिरिफ़्तार करके क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे। 5 उन्होंने कहा, “लेकिन यह ईद के दौरान नहीं होना
चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम में हलचल मच जाए।”

ख़ातून ईसा पर ख़ुशबू उंडेलती है

6 इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक आदमी के घर में दाख़िल हुआ जो किसी वक़्त कोढ़ का मरीज़ था। उसका
नाम शमौन था। 7 ईसा खाना खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत आई जिसके पास निहायत क़ीमती इत्र का इत्रदान
था। उसने उसे ईसा के सर पर उंडेल दिया। 8 शागिर्द यह देखकर नाराज़ हुए। उन्होंने कहा, “इतना क़ीमती इत्र ज़ाया
करने की क्या ज़रूरत थी? 9 यह बहुत महँगी चीज़ है। अगर इसे बेचा जाता तो इसके पैसे ग़रीबों को दिए जा सकते
थे।”
10 लेकिन उनके ख़याल पहचानकर ईसा ने उनसे कहा, “तुम इसे क्यों तंग कर रहे हो? इसने तो मेरे लिए एक
नेक काम किया है। 11 ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तक तुम्हारे पास नहीं रहूँगा। 12 मुझ पर इत्र
उंडेलने से उसने मेरे बदन को दफ़न होने के लिए तैयार किया है। 13 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में जहाँ
भी अल्लाह की ख़ुशख़बरी का एलान किया जाएगा वहाँ लोग इस ख़ातून को याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इसने
किया है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

14 फिर यहूदाह इस्करियोती जो बारह शागिर्दों में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया। 15 उसने पूछा, “आप
मुझे ईसा को आपके हवाले करने के एवज़ कितने पैसे देने के लिए तैयार हैं?” उन्होंने उसके लिए चाँदी के 30 सिक्के
मुतैयिन किए। 16 उस वक़्त से यहूदा ईसा को उनके हवाले करने का मौक़ा ढूँडने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

17 बेख़मीरी रोटी की ईद आई। पहले दिन ईसा के शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा, “हम कहाँ आपके लिए
फ़सह का खाना तैयार करें?”
18 उसने जवाब दिया, “यरूशलम शहर में फ़ुलाँ आदमी के पास जाओ और उसे बताओ, ‘उस्ताद ने कहा है कि
मेरा मुक़र्ररा वक़्त क़रीब आ गया है। मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह की ईद का खाना आपके घर में खाऊँगा’।”
19 शागिर्दों ने वह कुछ किया जो ईसा ने उन्हें बताया था और फ़सह की ईद का खाना तैयार किया।

कौन ग़द्दार है?

20 शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों के साथ खाना खाने के लिए बैठ गया। 21 जब वह खाना खा रहे थे तो उसने
कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”
22 शागिर्द यह सुनकर निहायत ग़मगीन हुए। बारी बारी वह उससे पूछने लगे, “ख़ुदावंद, मैं तो नहीं हूँ?”
23 ईसा ने जवाब दिया, “जिसने मेरे साथ अपना हाथ सालन के बरतन में डाला है वही मुझे दुश्मन के हवाले करेगा।
24 इब्ने-आदम तो कूच कर जाएगा जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन उस शख़्स पर अफ़सोस जिसके
वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके लिए बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न होता।”
25 फिर यहूदा ने जो उसे दुश्मन के हवाले करने को था पूछा, “उस्ताद, मैं तो नहीं हूँ?”
ईसा ने जवाब दिया, “जी, तुमने ख़ुद कहा है।”

फ़सह का आख़िरी खाना

26 खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे दिया। उसने
कहा, “यह लो और खाओ। यह मेरा बदन है।”
27 फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे उन्हें देकर कहा, “तुम सब इसमें से पियो।
28 यह मेरा ख़ून है, नए अहद का वह ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है ताकि उनके गुनाहों को मुआफ़ कर दिया
जाए। 29 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का यह रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे तुम्हारे साथ
अपने बाप की बादशाही में ही पियूँगा।”
30 फिर एक ज़बूर गाकर वह निकले और ज़ैतून के पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

31 ईसा ने उन्हें बताया, “आज रात तुम सब मेरी बाबत बरगश्ता हो जाओगे, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में अल्लाह
फ़रमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार डालूँगा और रेवड़ की भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।’ 32 लेकिन अपने जी उठने के
बाद मैं तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।”
33 पतरस ने एतराज़ किया, “दूसरे बेशक सब आपकी बाबत बरगश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा।”
34 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, इसी रात मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से
इनकार कर चुका होगा।”
35 पतरस ने कहा, “हरगिज़ नहीं! मैं आपको जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे आपके साथ मरना भी
पड़े।”
दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ

36 ईसा अपने शागिर्दों के साथ एक बाग़ में पहुँचा जिसका नाम गत्समनी था। उसने उनसे कहा, “यहाँ बैठकर मेरा
इंतज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए आगे जाता हूँ।” 37 उसने पतरस और ज़बदी के दो बेटों याक़ूब और यूहन्ना को
साथ लिया। वहाँ वह ग़मगीन और बेक़रार होने लगा। 38 उसने उनसे कहा, “मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को
हूँ। यहाँ ठहरकर मेरे साथ जागते रहो।”
39 कुछ आगे जाकर वह औंधे मुँह ज़मीन पर गिरकर यों दुआ करने लगा, “ऐ मेरे बाप, अगर मुमकिन हो तो दुख
का यह प्याला मुझसे हट जाए। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।”
40 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से पूछा, “क्या तुम लोग एक
घंटा भी मेरे साथ नहीं जाग सके? 41 जागते और दुआ करते रहो ताकि आज़माइश में न पड़ो। क्योंकि रूह तो तैयार
है लेकिन जिस्म कमज़ोर।”
42 एक बार फिर उसने जाकर दुआ की, “मेरे बाप, अगर यह प्याला मेरे पिए बग़ैर हट नहीं सकता तो फिर तेरी
मरज़ी पूरी हो।” 43 जब वह वापस आया तो दुबारा देखा कि वह सो रहे हैं, क्योंकि नींद की बदौलत उनकी आँखें
बोझल थीं।
44 चुनाँचे वह उन्हें दुबारा छोड़कर चला गया और तीसरी बार यही दुआ करने लगा। 45 फिर ईसा शागिर्दों के
पास वापस आया और उनसे कहा, “अभी तक सो और आराम कर रहे हो? देखो, वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम
गुनाहगारों के हवाले किया जाए। 46 उठो! आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन के हवाले करनेवाला क़रीब आ चुका है।”

ईसा की गिरिफ़्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदा पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके साथ तलवारों
और लाठियों से लैस आदमियों का बड़ा हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों ने भेजा था। 48 इस
ग़द्दार यहूदा ने उन्हें एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको मैं बोसा दूँ वही ईसा है। उसे गिरिफ़्तार कर लेना।
49 ज्योंही वह पहुँचे यहूदा ईसा के पास गया और "उस्ताद, अस्सलामु अलैकुम!" कहकर उसे बोसा दिया।
50 ईसा ने कहा, "दोस्त, क्या तू इसी मक़सद से आया है?"
फिर उन्होंने उसे पकड़कर गिरिफ़्तार कर लिया। 51 इस पर ईसा के एक साथी ने अपनी तलवार मियान से निकाली
और इमामे-आज़म के ग़ुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया। 52 लेकिन ईसा ने कहा, "अपनी तलवार को मियान
में रख, क्योंकि जो भी तलवार चलाता है उसे तलवार से मारा जाएगा। 53 या क्या तू नहीं समझता कि मेरा बाप मुझे
हज़ारों फ़रिश्ते फ़ौरन भेज देगा अगर मैं उन्हें तलब करूँ? 54 लेकिन अगर मैं ऐसा करता तो फिर कलामे-मुक़द्दस की
पेशगोइयाँ किस तरह पूरी होतीं जिनके मुताबिक़ यह ऐसा ही होना है?"
55 उस वक़्त ईसा ने हुजूम से कहा, "क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मुझे गिरिफ़्तार करने
निकले हो? मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में बैठकर तालीम देता रहा, मगर तुमने मुझे गिरिफ़्तार नहीं किया। 56 लेकिन
यह सब कुछ इसलिए हो रहा है ताकि नबियों के सहीफ़ों में दर्ज पेशगोइयाँ पूरी हो जाएँ।"
फिर तमाम शागिर्द उसे छोड़कर भाग गए।

ईसा यहूदी अदालते-आलिया के सामने

57 जिन्होंने ईसा को गिरिफ़्तार किया था वह उसे कायफ़ा इमामे-आज़म के घर ले गए जहाँ शरीअत के तमाम उलमा
और क़ौम के बुज़ुर्ग जमा थे। 58 इतने में पतरस कुछ फ़ासले पर ईसा के पीछे पीछे इमामे-आज़म के सहन तक पहुँच
गया। उसमें दाख़िल होकर वह मुलाज़िमों के साथ आग के पास बैठ गया ताकि इस सिलसिले का अंजाम देख सके।
59 मकान के अंदर राहनुमा इमाम और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम अफ़राद ईसा के ख़िलाफ़ झूटी गवाहियाँ
ढूँड रहे थे ताकि उसे सज़ाए-मौत दिलवा सकें। 60 बहुत-से झूटे गवाह सामने आए, लेकिन कोई ऐसी गवाही न मिली।
आख़िरकार दो आदमियों ने सामने आकर 61 यह बात पेश की, "इसने कहा है कि मैं अल्लाह के बैतुल-मुक़द्दस को
ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर सकता हूँ।"
62 फिर इमामे-आज़म ने खड़े होकर ईसा से कहा, "क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या गवाहियाँ हैं जो यह
लोग तेरे ख़िलाफ़ दे रहे हैं?"
63 लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। इमामे-आज़म ने उससे एक और सवाल किया, "मैं तुझे ज़िंदा ख़ुदा की क़सम देकर
पूछता हूँ कि क्या तू अल्लाह का फ़रज़ंद मसीह है?"
64 ईसा ने कहा, "जी, तूने ख़ुद कह दिया है। और मैं तुम सबको बताता हूँ कि आइंदा तुम इब्ने-आदम को क़ादिरे-
मुतलक़ के दहने हाथ बैठे और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।"
65 इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, "इसने कुफ़्र बका है! हमें मज़ीद
गवाहों की क्या ज़रूरत रही! आपने ख़ुद सुन लिया है कि इसने कुफ़्र बका है। 66 आपका क्या फ़ैसला है?"
उन्होंने जवाब दिया, "यह सज़ाए-मौत के लायक़ है।"
67 फिर वह उस पर थूकने और उसके मुक्के मारने लगे। बाज़ ने उसके थप्पड़ मार मारकर 68 कहा, "ऐ मसीह,
नबुव्वत करके हमें बता कि तुझे किसने मारा।"

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

69 इस दौरान पतरस बाहर सहन में बैठा था। एक नौकरानी उसके पास आई। उसने कहा, "तुम भी गलील के उस
आदमी ईसा के साथ थे।"
70 लेकिन पतरस ने उन सबके सामने इनकार किया, "मैं नहीं जानता कि तू क्या बात कर रही है।" यह कहकर
71 वह बाहर गेट तक गया। वहाँ एक और नौकरानी ने उसे देखा और पास खड़े लोगों से कहा, "यह आदमी ईसा
नासरी के साथ था।"
72 दुबारा पतरस ने इनकार किया। इस दफ़ा उसने क़सम खाकर कहा, "मैं इस आदमी को नहीं जानता।"
73 थोड़ी देर के बाद वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पतरस के पास आकर कहा, "तुम ज़रूर उनमें से हो क्योंकि तुम्हारी
बोली से साफ़ पता चलता है।"
74 इस पर पतरस ने क़सम खाकर कहा, "मुझ पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं इस आदमी को नहीं जानता!"
फ़ौरन मुरग़ की बाँग सुनाई दी। 75 फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कही थी, "मुरग़ के बाँग देने से पहले
पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।" इस पर वह बाहर निकला और टूटे दिल से ख़ूब रोया।

27

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

1 सुबह-सवेरे तमाम राहनुमा इमाम और क़ौम के तमाम बुज़ुर्ग इस फ़ैसले तक पहुँच गए कि ईसा को सज़ाए-मौत दी
जाए। 2 वह उसे बाँधकर वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले कर दिया।

यहूदा की ख़ुदकुशी

3 जब यहूदा ने जिसने उसे दुश्मन के हवाले कर दिया था देखा कि उस पर सज़ाए-मौत का फ़तवा दे दिया गया है
तो उसने पछताकर चाँदी के 30 सिक्के राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों को वापस कर दिए। 4 उसने कहा, "मैंने
गुनाह किया है, क्योंकि एक बेक़ुसूर आदमी को सज़ाए-मौत दी गई है और मैं ही ने उसे आपके हवाले किया है।"

उन्होंने जवाब दिया, "हमें क्या! यह तेरा मसला है।" 5 यहूदा चाँदी के सिक्के बैतुल-मुक़द्दस में फेंककर चला
गया। फिर उसने जाकर फाँसी ले ली।

6 राहनुमा इमामों ने सिक्कों को जमा करके कहा, "शरीअत यह पैसे बैतुल-मुक़द्दस के ख़ज़ाने में डालने की इजाज़त
नहीं देती, क्योंकि यह ख़ूनरेज़ी का मुआवज़ा है।" 7 आपस में मशवरा करने के बाद उन्होंने कुम्हार का खेत ख़रीदने
का फ़ैसला किया ताकि परदेसियों को दफ़नाने के लिए जगह हो। 8 इसलिए यह खेत आज तक ख़ून का खेत कहलाता
है।

9 यों यरमियाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि "उन्होंने चाँदी के 30 सिक्के लिए यानी वह रक़म जो इसराईलियों
ने उसके लिए लगाई थी। 10 इनसे उन्होंने कुम्हार का खेत ख़रीद लिया, बिलकुल ऐसा जिस तरह रब ने मुझे हुक्म
दिया था।"

पीलातुस ईसा की पूछ-गछ करता है

11 इतने में ईसा को रोमी गवर्नर पीलातुस के सामने पेश किया गया। उसने उससे पूछा, "क्या तुम यहूदियों के
बादशाह हो?"

ईसा ने जवाब दिया, "जी, आप ख़ुद कहते हैं।" 12 लेकिन जब राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों ने उस पर
इलज़ाम लगाए तो ईसा ख़ामोश रहा।

13 चुनाँचे पीलातुस ने दुबारा उससे सवाल किया, "क्या तुम यह तमाम इलज़ामात नहीं सुन रहे जो तुम पर लगाए
जा रहे हैं?"

14 लेकिन ईसा ने एक इलज़ाम का भी जवाब न दिया, इसलिए गवर्नर निहायत हैरान हुआ।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

15 उन दिनों यह रिवाज था कि गवर्नर हर साल फ़सह की ईद पर एक क़ैदी को आज़ाद कर देता था। यह क़ैदी
हुजूम से मुंतख़ब किया जाता था। 16 उस वक़्त जेल में एक बदनाम क़ैदी था। उसका नाम बर-अब्बा था। 17 चुनाँचे
जब हुजूम जमा हुआ तो पीलातुस ने उससे पूछा, "तुम क्या चाहते हो? मैं बर-अब्बा को आज़ाद करूँ या ईसा को जो
मसीह कहलाता है?" 18 वह तो जानता था कि उन्होंने ईसा को सिर्फ़ हसद की बिना पर उसके हवाले किया है।

19 जब पीलातुस यों अदालत के तख़्त पर बैठा था तो उस की बीवी ने उसे पैग़ाम भेजा, "इस बेक़ुसूर आदमी को
हाथ न लगाएँ, क्योंकि मुझे पिछली रात इसके बाइस ख़ाब में शदीद तकलीफ़ हुई।"

20 लेकिन राहनुमा इमामों और क़ौम के बुज़ुर्गों ने हुजूम को उकसाया कि वह बर-अब्बा को माँगें और ईसा की मौत
तलब करें। गवर्नर ने दुबारा पूछा, 21 "मैं इन दोनों में से किस को तुम्हारे लिए आज़ाद करूँ?"

वह चिल्लाए, "बर-अब्बा को।"

22 पीलातुस ने पूछा, "फिर मैं ईसा के साथ क्या करूँ जो मसीह कहलाता है?"

वह चीख़े, "उसे मसलूब करें।"

23 पीलातुस ने पूछा, "क्यों? उसने क्या जुर्म किया है?"

लेकिन लोग मज़ीद शोर मचाकर चीख़ते रहे, "उसे मसलूब करें!"

24 पीलातुस ने देखा कि वह किसी नतीजे तक नहीं पहुँच रहा बल्कि हंगामा बरपा हो रहा है। इसलिए उसने पानी
लेकर हुजूम के सामने अपने हाथ धोए। उसने कहा, "अगर इस आदमी को क़त्ल किया जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ, तुम ही
उसके लिए जवाबदेह ठहरो।"

25 तमाम लोगों ने जवाब दिया, "हम और हमारी औलाद उसके ख़ून के जवाबदेह हैं।"

26 फिर उसने बर-अब्बा को आज़ाद करके उन्हें दे दिया। लेकिन ईसा को उसने कोड़े लगाने का हुक्म दिया, फिर
उसे मसलूब करने के लिए फ़ौजियों के हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

27 गवर्नर के फ़ौजी ईसा को महल बनाम प्रैटोरियुम के सहन में ले गए और पूरी पलटन को उसके इर्दगिर्द इकट्ठा
किया। 28 उसके कपड़े उतारकर उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का लिबास पहनाया, 29 फिर काँटेदार टहनियों का एक
ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। उसके दहने हाथ में छड़ी पकड़ाकर उन्होंने उसके सामने घुटने टेककर उसका
मज़ाक़ उड़ाया, "ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!" 30 वह उस पर थूकते रहे, छड़ी लेकर बार बार उसके सर को
मारा। 31 फिर उसका मज़ाक़ उड़ाने से थककर उन्होंने अरग़वानी लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े
पहनाए और उसे मसलूब करने के लिए ले गए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

32 शहर से निकलते वक़्त उन्होंने एक आदमी को देखा जो लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला था। उसका नाम
शमौन था। उसे उन्होंने सलीब उठाकर ले जाने पर मजबूर किया। 33 यों चलते चलते वह एक मक़ाम तक पहुँच गए
जिसका नाम गुलगुता (यानी खोपड़ी का मक़ाम) था। 34 वहाँ उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें कोई कड़वी चीज़ मिलाई
गई थी। लेकिन चखकर ईसा ने उसे पीने से इनकार कर दिया।

35 फिर फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए कि किस
को क्या क्या मिले उन्होंने क़ुरा डाला। 36 यों वह वहाँ बैठकर उस की पहरादारी करते रहे। 37 सलीब पर ईसा के सर
के ऊपर एक तख़्ती लगा दी गई जिस पर यह इलज़ाम लिखा था, "यह यहूदियों का बादशाह ईसा है।" 38 दो डाकुओं
को भी ईसा के साथ मसलूब किया गया, एक को उसके दहने हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ।

39 जो वहाँ से गुज़रे उन्होंने कुफ़र बककर उस की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी हिक़ारत का इज़हार
किया। 40 उन्होंने कहा, "तूने तो कहा था कि मैं बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर
कर दूँगा। अब अपने आपको बचा! अगर तू वाक़ई अल्लाह का फ़रज़ंद है तो सलीब पर से उतर आ।"

41 राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और क़ौम के बुज़ुर्गों ने भी ईसा का मज़ाक़ उड़ाया, 42 "इसने औरों को
बचाया, लेकिन अपने आपको नहीं बचा सकता। यह इसराईल का बादशाह है! अभी यह सलीब पर से उतर आए तो
हम इस पर ईमान ले आएँगे। 43 इसने अल्लाह पर भरोसा रखा है। अब अल्लाह इसे बचाए अगर वह इसे चाहता है,
क्योंकि इसने कहा, 'मैं अल्लाह का फ़रज़ंद हूँ'।"

44 और जिन डाकुओं को उसके साथ मसलूब किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

45 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 46 फिर तीन बजे ईसा ऊँची
आवाज़ से पुकार उठा, "एली, एली, लमा शबक़्तनी" जिसका मतलब है, "ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों
तर्क कर दिया है?"

47 यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे, "वह इलियास नबी को बुला रहा है।" 48 उनमें से एक ने फ़ौरन
दौड़कर एक इस्फ़ंज को मै के सिरके में डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश की।

49 दूसरों ने कहा, "आओ, हम देखें, शायद इलियास आकर उसे बचाए।"

50 लेकिन ईसा ने दुबारा बड़े ज़ोर से चिल्लाकर दम छोड़ दिया।

51 उसी वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो हिस्सों
में फट गया। ज़लज़ला आया, चटानें फट गईं 52 और क़ब्रें खुल गईं। कई मरहूम मुक़द्दसीन के जिस्मों को ज़िंदा कर
दिया गया। 53 वह ईसा के जी उठने के बाद क़ब्रों में से निकलकर मुक़द्दस शहर में दाख़िल हुए और बहुतों को नज़र
आए।

54 जब पास खड़े रोमी अफ़सर * और ईसा की पहरादारी करनेवाले फ़ौजियों ने ज़लज़ला और यह तमाम वाक़ियात
देखे तो वह निहायत दहशतज़दा हो गए। उन्होंने कहा, "यह वाक़ई अल्लाह का फ़रज़ंद था।"

55 बहुत-सी ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासले पर इसका मुशाहदा कर रही थीं। वह गलील में ईसा के पीछे
चलकर यहाँ तक उस की ख़िदमत करती आई थीं। 56 उनमें मरियम मग्दलीनी, याक़ूब और यूसुफ़ की माँ मरियम
और ज़बदी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना की माँ भी थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

57 जब शाम होने को थी तो अरिमतियाह का एक दौलतमंद आदमी बनाम यूसुफ़ आया। वह भी ईसा का शागिर्द था।
58 उसने पीलातुस के पास जाकर ईसा की लाश माँगी, और पीलातुस ने हुक्म दिया कि वह उसे दे दी जाए। 59 यूसुफ़

* **27:54** सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

ने लाश को लेकर उसे कतान के एक साफ़ कफ़न में लपेटा 60 और अपनी ज़ाती ग़ैरइस्तेमालशुदा क़ब्र में रख दिया
जो चटान में तराशी गई थी। आख़िर में उसने एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर क़ब्र का मुँह बंद कर दिया और चला गया।
61 उस वक़्त मरियम मग्दलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र के मुक़ाबिल बैठी थीं।

क़ब्र की पहरादारी

62 अगले दिन, जो सबत का दिन था, राहनुमा इमाम और फ़रीसी पीलातुस के पास आए। 63 "जनाब," उन्होंने
कहा, "हमें याद आया कि जब वह धोकेबाज़ अभी ज़िंदा था तो उसने कहा था, 'तीन दिन के बाद मैं जी उठूँगा।'
64 इसलिए हुक्म दें कि क़ब्र को तीसरे दिन तक महफ़ूज़ रखा जाए। ऐसा न हो कि उसके शागिर्द आकर उस की लाश
को चुरा ले जाएँ और लोगों को बताएँ कि वह मुरदों में से जी उठा है। अगर ऐसा हुआ तो यह आख़िरी धोका पहले
धोके से भी ज़्यादा बड़ा होगा।"
65 पीलातुस ने जवाब दिया, "पहरेदारों को लेकर क़ब्र को इतना महफ़ूज़ कर दो जितना तुम कर सकते हो।"
66 चुनाँचे उन्होंने जाकर क़ब्र को महफ़ूज़ कर लिया। क़ब्र के मुँह पर पड़े पत्थर पर मुहर लगाकर उन्होंने उस पर
पहरेदार मुक़र्रर कर दिए।

28

ईसा जी उठता है

1 इतवार को सुबह-सवेरे ही मरियम मग्दलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र को देखने के लिए निकलीं। सूरज तुलू हो
रहा था। 2 अचानक एक शदीद ज़लज़ला आया, क्योंकि रब का एक फ़रिश्ता आसमान से उतर आया और क़ब्र के
पास जाकर उस पर पड़े पत्थर को एक तरफ़ लुढ़का दिया। फिर वह उस पर बैठ गया। 3 उस की शक्लो-सूरत बिजली
की तरह चमक रही थी और उसका लिबास बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद था। 4 पहरेदार इतने डर गए कि वह लरज़ते लरज़ते
मुरदा से हो गए।
5 फ़रिश्ते ने ख़वातीन से कहा, "मत डरो। मुझे मालूम है कि तुम ईसा को ढूँड रही हो जो मसलूब हुआ था। 6 वह
यहाँ नहीं है। वह जी उठा है, जिस तरह उसने फ़रमाया था। आओ, उस जगह को ख़ुद देख लो जहाँ वह पड़ा था।
7 और अब जल्दी से जाकर उसके शागिर्दों को बता दो कि वह जी उठा है और तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा।
वहीं तुम उसे देखोगे। अब मैंने तुमको इससे आगाह किया है।"
8 ख़वातीन जल्दी से क़ब्र से चली गईं। वह सहमी हुई लेकिन बड़ी ख़ुश थीं और दौड़ी दौड़ी उसके शागिर्दों को
यह ख़बर सुनाने गईं।
9 अचानक ईसा उनसे मिला। उसने कहा, "सलाम।" वह उसके पास आईं, उसके पाँव पकड़े और उसे सिजदा
किया। 10 ईसा ने उनसे कहा, "मत डरो। जाओ, मेरे भाइयों को बता दो कि वह गलील को चले जाएँ। वहाँ वह मुझे
देखेंगे।"

पहरेदारों की रिपोर्ट

11 ख़वातीन अभी रास्ते में थीं कि पहरेदारों में से कुछ शहर में गए और राहनुमा इमामों को सब कुछ बता दिया।
12 राहनुमा इमामों ने क़ौम के बुज़ुर्गों के साथ एक मीटिंग मुनअक़िद की और पहरेदारों को रिश्वत की बड़ी रक़म देने
का फ़ैसला किया। 13 उन्होंने उन्हें बताया, "तुमको कहना है, 'जब हम रात के वक़्त सो रहे थे तो उसके शागिर्द आए
और उसे चुरा ले गए।' 14 अगर यह ख़बर गवर्नर तक पहुँचे तो हम उसे समझा लेंगे। तुमको फ़िकर करने की ज़रूरत
नहीं।"
15 चुनाँचे पहरेदारों ने रिश्वत लेकर वह कुछ किया जो उन्हें सिखाया गया था। उनकी यह कहानी यहूदियों के
दरमियान बहुत फैलाई गई और आज तक उनमें रायज है।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

16 फिर ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ के पास पहुँचे जहाँ ईसा ने उन्हें जाने को कहा था। 17 वहाँ उसे देखकर
उन्होंने उसे सिजदा किया। लेकिन कुछ शक में पड़ गए। 18 फिर ईसा ने उनके पास आकर कहा, "आसमान और
ज़मीन का कुल इख़्तियार मुझे दे दिया गया है। 19 इसलिए जाओ, तमाम क़ौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फ़रज़ंद
और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। 20 और उन्हें यह सिखाओ कि वह उन तमाम अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारें जो मैंने तुम्हें दिए हैं। और देखो, मैं दुनिया के इख़्तिताम तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।"

मरक़ुस

यहया बपतिस्मा देनेवाले की ख़िदमत
1 यह अल्लाह के फ़रज़ंद ईसा मसीह के बारे में ख़ुशख़बरी है, 2 जो यसायाह नबी की पेशगोई के मुताबिक़ यों शुरू
हुई :
'देख, मैं अपने पैग़ंबर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ
जो तेरे लिए रास्ता तैयार करेगा।
3 रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,
रब की राह तैयार करो!
उसके रास्ते सीधे बनाओ।'
4 यह पैग़ंबर यहया बपतिस्मा देनेवाला था। रेगिस्तान में रहकर उसने एलान किया कि लोग तौबा करके बपतिस्मा
लें ताकि उन्हें अपने गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाए। 5 यहूदिया के पूरे इलाक़े के लोग यरूशलम के तमाम बाशिंदों
समेत निकलकर उसके पास आए। और अपने गुनाहों को तसलीम करके उन्होंने दरियाए-यरदन में यहया से बपतिस्मा
लिया।
6 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था। ख़ुराक के तौर पर वह
टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था। 7 उसने एलान किया, "मेरे बाद एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं झुककर
उसके जूतों के तसमे खोलने के भी लायक़ नहीं। 8 मैं तुमको पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन वह तुम्हें रूहुल-क़ुदुस
से बपतिस्मा देगा।"

ईसा का बपतिस्मा और आज़माइश
9 उन दिनों में ईसा नासरत से आया और यहया ने उसे दरियाए-यरदन में बपतिस्मा दिया। 10 पानी से निकलते ही
ईसा ने देखा कि आसमान फट रहा है और रूहुल-क़ुदुस कबूतर की तरह मुझ पर उतर रहा है। 11 साथ साथ आसमान
से एक आवाज़ सुनाई दी, "तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं ख़ुश हूँ।"
12 इसके फ़ौरन बाद रूहुल-क़ुदुस ने उसे रेगिस्तान में भेज दिया। 13 वहाँ वह चालीस दिन रहा जिसके दौरान इबलीस
उस की आज़माइश करता रहा। वह जंगली जानवरों के दरमियान रहता और फ़रिश्ते उस की ख़िदमत करते थे।

ईसा चार मछेरों को बुलाता है
14 जब यहया को जेल में डाल दिया गया तो ईसा गलील के इलाक़े में आया और अल्लाह की ख़ुशख़बरी का
एलान करने लगा। 15 वह बोला, "मुक़र्ररा वक़्त आ गया है, अल्लाह की बादशाही क़रीब आ गई है। तौबा करो और
अल्लाह की ख़ुशख़बरी पर ईमान लाओ।"
16 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे किनारे चल रहा था तो उसने शमौन और उसके भाई अंदरियास
को देखा। वह झील में जाल डाल रहे थे क्योंकि वह माहीगीर थे। 17 उसने कहा, "आओ, मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको
आदमगीर बनाऊँगा।" 18 यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
19 थोड़ा-सा आगे जाकर ईसा ने ज़बदी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना को देखा। वह कश्ती में बैठे अपने जालों की
मरम्मत कर रहे थे। 20 उसने उन्हें फ़ौरन बुलाया तो वह अपने बाप को मज़दूरों समेत कश्ती में छोड़कर उसके पीछे हो
लिए।

आदमी की बदरूह के क़ब्ज़े से रिहाई
21 वह कफ़र्नहूम शहर में दाख़िल हुए। और सबत के दिन ईसा इबादतख़ाने में जाकर लोगों को सिखाने लगा। 22 वह
उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए क्योंकि वह उन्हें शरीअत के आलिमों की तरह नहीं बल्कि इख़्तियार
के साथ सिखाता था।
23 उनके इबादतख़ाने में एक आदमी था जो किसी नापाक रूह के क़ब्ज़े में था। ईसा को देखते ही वह चीख़ चीख़कर
बोलने लगा, 24 "ऐ नासरत के ईसा, हमारा आपके साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें हलाक करने आए हैं? मैं तो
जानता हूँ कि आप कौन हैं, आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।"
25 ईसा ने उसे डाँटकर कहा, "ख़ामोश! आदमी से निकल जा!" 26 इस पर बदरूह आदमी को झँझोड़कर और
चीख़ें मार मारकर उसमें से निकल गई।

27 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने लगे, "यह क्या है? एक नई तालीम जो इख़्तियार के साथ दी जा
रही है। और वह बदरूहों को हुक्म देता है तो वह उस की मानती हैं।"
28 और ईसा के बारे में चर्चा जल्दी से गलील के पूरे इलाक़े में फैल गया।

बहुत-से मरीज़ों की शफ़ा

29 इबादतख़ाने से निकलने के ऐन बाद वह याक़ूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अंदरियास के घर गए। 30 वहाँ
शमौन की सास बिस्तर पर पड़ी थी, क्योंकि उसे बुख़ार था। उन्होंने ईसा को बता दिया 31 तो वह उसके नज़दीक गया।
उसका हाथ पकड़कर उसने उठने में उस की मदद की। इस पर बुख़ार उतर गया और वह उनकी ख़िदमत करने लगी।
32 जब शाम हुई और सूरज ग़ुरूब हुआ तो लोग तमाम मरीज़ों और बदरूह-गिरिफ़्ता अशख़ास को ईसा के पास
लाए। 33 पूरा शहर दरवाज़े पर जमा हो गया 34 और ईसा ने बहुत-से मरीज़ों को मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बीमारियों से
शफ़ा दी। उसने बहुत-सी बदरूहें भी निकाल दीं, लेकिन उसने उन्हें बोलने न दिया, क्योंकि वह जानती थीं कि वह
कौन है।

गलील में मुनादी

35 अगले दिन सुबह-सवेरे जब अभी अंधेरा ही था तो ईसा उठकर दुआ करने के लिए किसी वीरान जगह चला
गया। 36 बाद में शमौन और उसके साथी उसे ढूँडने निकले। 37 जब मालूम हुआ कि वह कहाँ है तो उन्होंने उससे कहा,
"तमाम लोग आपको तलाश कर रहे हैं!"
38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "आओ, हम साथवाली आबादियों में जाएँ ताकि मैं वहाँ भी मुनादी करूँ। क्योंकि
मैं इसी मक़सद से निकल आया हूँ।"
39 चुनाँचे वह पूरे गलील में से गुज़रता हुआ इबादतख़ानों में मुनादी करता और बदरूहों को निकालता रहा।

कोढ़ से शफ़ा

40 एक आदमी ईसा के पास आया जो कोढ़ का मरीज़ था। घुटनों के बल झुककर उसने मिन्नत की, "अगर आप
चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।"
41 ईसा को तरस आया। उसने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।" 42 इस
पर बीमारी फ़ौरन दूर हो गई और वह पाक-साफ़ हो गया। 43 ईसा ने उसे फ़ौरन रुख़सत करके सख़्ती से समझाया,
44 "ख़बरदार! यह बात किसी को न बताना बल्कि बैतुल-मुक़द्दस में इमाम के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे।
अपने साथ वह क़ुरबानी ले जा जिसका तक़ाज़ा मूसा की शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा मिली हो। यों
अलानिया तसदीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-साफ़ हो गया है।"
45 आदमी चला गया, लेकिन वह हर जगह अपनी कहानी सुनाने लगा। उसने यह ख़बर इतनी फैलाई कि ईसा खुले
तौर पर किसी भी शहर में दाख़िल न हो सका बल्कि उसे वीरान जगहों में रहना पड़ा। लेकिन वहाँ भी लोग हर जगह
से उसके पास पहुँच गए।

2

मफ़लूज के लिए छत खोली जाती है

1 कुछ दिनों के बाद ईसा कफ़र्नहूम में वापस आया। जल्द ही ख़बर फैल गई कि वह घर में है। 2 इस पर इतने लोग
जमा हो गए कि पूरा घर भर गया बल्कि दरवाज़े के सामने भी जगह न रही। वह उन्हें कलामे-मुक़द्दस सुनाने लगा।
3 इतने में कुछ लोग पहुँचे। उनमें से चार आदमी एक मफ़लूज को उठाए ईसा के पास लाना चाहते थे। 4 मगर वह उसे
हुजूम की वजह से ईसा तक न पहुँचा सके, इसलिए उन्होंने छत खोल दी। ईसा के ऊपर का हिस्सा उधेड़कर उन्होंने
चारपाई को जिस पर मफ़लूज लेटा था उतार दिया। 5 जब ईसा ने उनका ईमान देखा तो उसने मफ़लूज से कहा, "बेटा,
तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।"
6 शरीअत के कुछ आलिम वहाँ बैठे थे। वह यह सुनकर सोच-बिचार में पड़ गए। 7 "यह किस तरह ऐसी बातें कर
सकता है? कुफ़र बक रहा है। सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।"
8 ईसा ने अपनी रूह में फ़ौरन जान लिया कि वह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा, "तुम दिल में इस तरह
की बातें क्यों सोच रहे हो? 9 क्या मफ़लूज से यह कहना आसान है कि 'तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं' या यह कि
'उठ, अपनी चारपाई उठाकर चल-फिर'? 10 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह
मुआफ़ करने का इख़्तियार है।" यह कहकर वह मफ़लूज से मुख़ातिब हुआ, 11 "मैं तुझसे कहता हूँ कि उठ, अपनी
चारपाई उठाकर घर चला जा।"

12 वह आदमी खड़ा हुआ और फ़ौरन अपनी चारपाई उठाकर उनके देखते देखते चला गया। सब सख़्त हैरतज़दा
हुए और अल्लाह की तमजीद करके कहने लगे, "ऐसा काम हमने कभी नहीं देखा!"

ईसा मत्ती को बुलाता है

13 फिर ईसा निकलकर दुबारा झील के किनारे गया। एक बड़ी भीड़ उसके पास आई तो वह उन्हें सिखाने लगा।
14 चलते चलते उसने हलफ़ई के बेटे लावी को देखा जो टैक्स लेने के लिए अपनी चौकी पर बैठा था। ईसा ने उससे
कहा, "मेरे पीछे हो ले।" और लावी उठकर उसके पीछे हो लिया।
15 बाद में ईसा लावी के घर में खाना खा रहा था। उसके साथ न सिर्फ़ उसके शागिर्द बल्कि बहुत-से टैक्स लेनेवाले
और गुनाहगार भी थे, क्योंकि उनमें से बहुतेरे उसके पैरोकार बन चुके थे। 16 शरीअत के कुछ फ़रीसी आलिमों ने
उसे यों टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ खाते देखा तो उसके शागिर्दों से पूछा, "यह टैक्स लेनेवालों और
गुनाहगारों के साथ क्यों खाता है?"
17 यह सुनकर ईसा ने जवाब दिया, "सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को। मैं रास्तबाज़ों
को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।"

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

18 यहया के शागिर्द और फ़रीसी रोज़ा रखा करते थे। एक मौक़े पर कुछ लोग ईसा के पास आए और पूछा, "आपके
शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते जबकि यहया और फ़रीसियों के शागिर्द रोज़ा रखते हैं?"
19 ईसा ने जवाब दिया, "शादी के मेहमान किस तरह रोज़ा रख सकते हैं जब दूल्हा उनके दरमियान है? जब तक
दूल्हा उनके साथ है वह रोज़ा नहीं रख सकते। 20 लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस
वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।
21 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया टुकड़ा बाद में
सुकड़कर पुराने लिबास से अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले की निसबत ज़्यादा ख़राब हो
जाएगी। 22 इसी तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं डालता। अगर वह ऐसा करे तो
पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मशकें दोनों ज़ाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर
का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं।"

सबत के बारे में सवाल

23 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा था। चलते चलते उसके शागिर्द खाने के लिए अनाज की बालें
तोड़ने लगे। सबत का दिन था। 24 यह देखकर फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, "देखो, यह क्यों ऐसा कर रहे हैं? सबत के
दिन ऐसा करना मना है।"
25 ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक
लगी और उनके पास ख़ुराक नहीं थी? 26 उस वक़्त अबियातर इमामे-आज़म था। दाऊद अल्लाह के घर में दाख़िल
हुआ और रब के लिए मख़सूसशुदा रोटियाँ लेकर खाईं, अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त है। और उसने
अपने साथियों को भी यह रोटियाँ खिलाईं।"
27 फिर उसने कहा, "इनसान को सबत के दिन के लिए नहीं बनाया गया बल्कि सबत का दिन इनसान के लिए।
28 चुनाँचे इब्ने-आदम सबत का भी मालिक है।"

3

सूखे हुए हाथ की शफ़ा

1 किसी और वक़्त जब ईसा इबादतख़ाने में गया तो वहाँ एक आदमी था जिसका हाथ सूखा हुआ था। 2 सबत का
दिन था और लोग बड़े ग़ौर से देख रहे थे कि क्या ईसा उस आदमी को आज भी शफ़ा देगा। क्योंकि वह इस पर इलज़ाम
लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे थे। 3 ईसा ने सूखे हाथवाले आदमी से कहा, "उठ, दरमियान में खड़ा हो।"
4 फिर ईसा ने उनसे पूछा, "मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की
या ग़लत काम करने की, किसी की जान बचाने की या उसे तबाह करने की?"
सब ख़ामोश रहे। 5 वह ग़ुस्से से अपने इर्दगिर्द के लोगों की तरफ़ देखने लगा। उनकी सख़्तदिली उसके लिए बड़े
दुख का बाइस बन रही थी। फिर उसने आदमी से कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ा।" उसने ऐसा किया तो उसका हाथ
बहाल हो गया। 6 इस पर फ़रीसी बाहर निकलकर सीधे हेरोदेस की पार्टी के अफ़राद के साथ मिलकर ईसा को क़त्ल
करने की साज़िशें करने लगे।

झील के किनारे पर हुजूम

7 लेकिन ईसा वहाँ से हटकर अपने शागिर्दों के साथ झील के पास गया। एक बड़ा हुजूम उसके पीछे हो लिया। लोग
न सिर्फ़ गलील के इलाक़े से आए बल्कि बहुत-सी और जगहों यानी यहूदिया, 8 यरूशलम, इदूमया, दरियाए-यरदन के
पार और सूर और सैदा के इलाक़े से भी। वजह यह थी कि ईसा के काम की ख़बर उन इलाक़ों तक भी पहुँच चुकी
थी और नतीजे में बहुत-से लोग वहाँ से भी आए। 9 ईसा ने शागिर्दों से कहा, "एहतियातन एक कश्ती उस वक़्त के
लिए तैयार कर रखो जब हुजूम मुझे हद से ज़्यादा दबाने लगेगा।" 10 क्योंकि उस दिन उसने बहुतों को शफ़ा दी थी,
इसलिए जिसे भी कोई तकलीफ़ थी वह धक्के दे देकर उसके पास आया ताकि उसे छू सके। 11 और जब भी नापाक
रूहों ने ईसा को देखा तो वह उसके सामने गिरकर चीख़ें मारने लगीं, "आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं।"
12 लेकिन ईसा ने उन्हें सख़्ती से डाँटकर कहा कि वह उसे ज़ाहिर न करें।

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

13 इसके बाद ईसा ने पहाड़ पर चढ़कर जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने पास बुला लिया। और वह उसके पास
आए। 14 उसने उनमें से बारह को चुन लिया। उन्हें उसने अपने रसूल मुक़र्रर कर लिया ताकि वह उसके साथ चलें और
वह उन्हें मुनादी करने के लिए भेज सके। 15 उसने उन्हें बदरूहें निकालने का इख़्तियार भी दिया।
16 जिन बारह को उसने मुक़र्रर किया उनके नाम यह हैं : शमौन जिसका लक़ब उसने पतरस रखा, 17 ज़बदी के
बेटे याक़ूब और यूहन्ना जिनका लक़ब ईसा ने 'बादल की गरज के बेटे' रखा, 18 अंदरियास, फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई,
मत्ती, तोमा, याक़ूब बिन हलफ़ई, तद्दी, शमौन मुजाहिद 19 और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे दुश्मन के हवाले
कर दिया।

ईसा और बदरूहों का सरदार

20 फिर ईसा किसी घर में दाख़िल हुआ। इस बार भी इतना हुजूम जमा हो गया कि ईसा को अपने शागिर्दों समेत
खाना खाने का मौक़ा भी न मिला। 21 जब उसके ख़ानदान के अफ़राद ने यह सुना तो वह उसे पकड़कर ले जाने के
लिए आए, क्योंकि उन्होंने कहा, "वह होश में नहीं है।"
22 लेकिन शरीअत के जो आलिम यरूशलम से आए थे उन्होंने कहा, "यह बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल के क़ब्ज़े
में है। उसी की मदद से बदरूहों को निकाल रहा है।"
23 फिर ईसा ने उन्हें अपने पास बुलाकर तमसीलों में जवाब दिया। "इबलीस किस तरह इबलीस को निकाल सकता
है? 24 जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह क़ायम नहीं रह सकती। 25 और जिस घराने की ऐसी हालत हो वह भी
क़ायम नहीं रह सकता। 26 इसी तरह अगर इबलीस अपने आपकी मुख़ालफ़त करे और यों उसमें फूट पड़ जाए तो
वह क़ायम नहीं रह सकता बल्कि ख़त्म हो चुका है।
27 किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुसकर उसका मालो-असबाब लूटना उस वक़्त तक मुमकिन नहीं है जब तक
उस आदमी को बाँधा न जाए। फिर ही उसे लूटा जा सकता है।
28 मैं तुमसे सच कहता हूँ कि लोगों के तमाम गुनाह और कुफ़र की बातें मुआफ़ की जा सकेंगी, ख़ाह वह कितना ही
कुफ़र क्यों न बकें। 29 लेकिन जो रूहुल-क़ुद्स के ख़िलाफ़ कुफ़र बके उसे अबद तक मुआफ़ी नहीं मिलेगी। वह एक
अबदी गुनाह का क़ुसूरवार ठहरेगा।" 30 ईसा ने यह इसलिए कहा क्योंकि आलिम कह रहे थे कि वह किसी बदरूह
की गिरिफ़्त में है।

ईसा की माँ और भाई

31 फिर ईसा की माँ और भाई पहुँच गए। बाहर खड़े होकर उन्होंने किसी को उसे बुलाने को भेज दिया। 32 उसके
इर्दगिर्द हुजूम बैठा था। उन्होंने कहा, "आपकी माँ और भाई बाहर आपको बुला रहे हैं।"
33 ईसा ने पूछा, "कौन मेरी माँ और कौन मेरे भाई हैं?" 34 और अपने गिर्द बैठे लोगों पर नज़र डालकर उसने
कहा, "देखो, यह मेरी माँ और मेरे भाई हैं। 35 जो भी अल्लाह की मरज़ी पूरी करता है वह मेरा भाई, मेरी बहन और
मेरी माँ है।"

4

बीज बोनेवाले की तमसील

1 फिर ईसा दुबारा झील के किनारे तालीम देने लगा। और इतनी बड़ी भीड़ उसके पास जमा हुई कि वह झील
में खड़ी एक कश्ती में बैठ गया। बाक़ी लोग झील के किनारे पर खड़े रहे। 2 उसने उन्हें बहुत-सी बातें तमसीलों में
सिखाईं। उनमें से एक यह थी :

3 “सुनो! एक किसान बीज बोने के लिए निकला। 4 जब बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर गिरे
और परिंदों ने आकर उन्हें चुग लिया। 5 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह जल्द उग आए
क्योंकि मिट्टी गहरी नहीं थी। 6 लेकिन जब सूरज निकला तो पौदे झुलस गए और चूँकि वह जड़ न पकड़ सके इसलिए
सूख गए। 7 कुछ दाने ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने साथ
साथ बढ़कर उन्हें फलने फूलने की जगह न दी। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो गए और फल न ला सके। 8 लेकिन ऐसे दाने
भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे। वहाँ वह फूट निकले और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल
लाए।”
9 फिर उसने कहा, “जो सुन सकता है वह सुन ले!”

तमसीलों का मक़सद

10 जब वह अकेला था तो जो लोग उसके इर्दगिर्द जमा थे उन्होंने बारह शागिर्दों समेत उससे पूछा कि इस तमसील
का क्या मतलब है? 11 उसने जवाब दिया, “तुमको तो अल्लाह की बादशाही का भेद समझने की लियाक़त दी गई है।
लेकिन मैं इस दायरे से बाहर के लोगों को हर बात समझाने के लिए तमसीलें इस्तेमाल करता हूँ 12 ताकि पाक कलाम
पूरा हो जाए कि

‘वह अपनी आँखों से देखेंगे मगर कुछ नहीं जानेंगे,
वह अपने कानों से सुनेंगे मगर कुछ नहीं समझेंगे,
ऐसा न हो कि वह मेरी तरफ़ रुजू करें
और उन्हें मुआफ़ कर दिया जाए’।”

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

13 फिर ईसा ने उनसे कहा, “क्या तुम यह तमसील नहीं समझते? तो फिर बाक़ी तमाम तमसीलें किस तरह समझ
पाओगे? 14 बीज बोनेवाला अल्लाह का कलाम बो देता है। 15 रास्ते पर गिरनेवाले दाने वह लोग हैं जो कलाम को
सुनते तो हैं, लेकिन फिर इबलीस फ़ौरन आकर वह कलाम छीन लेता है जो उनमें बोया गया है। 16 पथरीली ज़मीन पर
गिरनेवाले दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे ख़ुशी से क़बूल तो कर लेते हैं, 17 लेकिन वह जड़ नहीं पकड़ते और
इसलिए ज़्यादा देर तक क़ायम नहीं रहते। ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से
दोचार हो जाएँ, तो वह बरगश्ता हो जाते हैं। 18 ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम
सुनते तो हैं, 19 लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियाँ, दौलत का फ़रेब और दीगर चीज़ों का लालच कलाम को फलने
फूलने नहीं देते। नतीजे में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता। 20 इसके मुक़ाबले में ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह
लोग हैं जो कलाम सुनकर उसे क़बूल करते और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाते हैं।”

कोई चराग़ को बरतन के नीचे नहीं छुपाता

21 ईसा ने बात जारी रखी और कहा, “क्या चराग़ को इसलिए जलाकर लाया जाता है कि वह किसी बरतन या
चारपाई के नीचे रखा जाए? हरगिज़ नहीं! उसे शमादान पर रखा जाता है। 22 क्योंकि जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा
है उसे आख़िरकार ज़ाहिर हो जाना है और तमाम भेदों को एक दिन खुल जाना है। 23 अगर कोई सुन सके तो सुन ले।”
24 उसने उनसे यह भी कहा, “इस पर ध्यान दो कि तुम क्या सुनते हो। जिस हिसाब से तुम दूसरों को देते हो उसी
हिसाब से तुमको भी दिया जाएगा बल्कि तुमको उससे बढ़कर मिलेगा। 25 क्योंकि जिसे कुछ हासिल हुआ है उसे और
भी दिया जाएगा, जबकि जिसे कुछ हासिल नहीं हुआ उससे वह थोड़ा-बहुत भी छीन लिया जाएगा जो उसे हासिल
है।”

ख़ुद बख़ुद उगनेवाले बीज की तमसील

26 फिर ईसा ने कहा, “अल्लाह की बादशाही यों समझ लो : एक किसान ज़मीन में बीज बिखेर देता है। 27 यह
बीज फूटकर दिन-रात उगता रहता है, ख़ाह किसान सो रहा या जाग रहा हो। उसे मालूम नहीं कि यह क्योंकर होता
है। 28 ज़मीन ख़ुद बख़ुद अनाज की फ़सल पैदा करती है। पहले पत्ते निकलते हैं, फिर बालें नज़र आने लगती हैं और
आख़िर में दाने पैदा हो जाते हैं। 29 और ज्योंही अनाज की फ़सल पक जाती है किसान आकर दराँती से उसे काट लेता
है, क्योंकि फ़सल की कटाई का वक़्त आ चुका होता है।”

राई के दाने की तमसील

30 फिर ईसा ने कहा, “हम अल्लाह की बादशाही का मुवाज़ना किस चीज़ से करें? या हम कौन-सी तमसील से इसे
बयान करें? 31 वह राई के दाने की मानिंद है जो ज़मीन में डाला गया हो। राई बीजों में सबसे छोटा दाना है 32 लेकिन

बढ़ते बढ़ते सब्ज़ियों में सबसे बड़ा हो जाता है। उस की शाख़ें इतनी लंबी हो जाती हैं कि परिंदे उसके साये में अपने
घोंसले बना सकते हैं।"
33 ईसा इसी क़िस्म की बहुत-सी तमसीलों की मदद से उन्हें कलाम यों सुनाता था कि वह इसे समझ सकते थे।
34 हाँ, अवाम को वह सिर्फ़ तमसीलों के ज़रीए सिखाता था। लेकिन जब वह अपने शागिर्दों के साथ अकेला होता तो
वह हर बात की तशरीह करता था।

ईसा आँधी को थमा देता है

35 उस दिन जब शाम हुई तो ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "आओ, हम झील के पार चलें।" 36 चुनाँचे वह भीड़
को रुख़सत करके उसे लेकर चल पड़े। बाज़ और कश्तियाँ भी साथ गईं। 37 अचानक सख़्त आँधी आई। लहरें कश्ती
से टकराकर उसे पानी से भरने लगीं, 38 लेकिन ईसा अभी तक कश्ती के पिछले हिस्से में अपना सर गद्दी पर रखे सो
रहा था। शागिर्दों ने उसे जगाकर कहा, "उस्ताद, क्या आपको परवा नहीं कि हम तबाह हो रहे हैं?"
39 वह जाग उठा, आँधी को डाँटा और झील से कहा, "ख़ामोश! चुप कर!" इस पर आँधी थम गई और लहरें
बिलकुल साकित हो गईं। 40 फिर ईसा ने शागिर्दों से पूछा, "तुम क्यों घबराते हो? क्या तुम अभी तक ईमान नहीं
रखते?"
41 उन पर सख़्त ख़ौफ़ तारी हो गया और वह एक दूसरे से कहने लगे, "आख़िर यह कौन है? हवा और झील भी
उसका हुक्म मानती हैं।"

5

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरूहें निकाल देता है

1 फिर वह झील के पार गरासा के इलाक़े में पहुँचे। 2 जब ईसा कश्ती से उतरा तो एक आदमी जो नापाक रूह की
गिरिफ़्त में था क़ब्रों में से निकलकर ईसा को मिला। 3 यह आदमी क़ब्रों में रहता और इस नौबत तक पहुँच गया था कि
कोई भी उसे बाँध न सकता था, चाहे उसे ज़ंजीरों से भी बाँधा जाता। 4 उसे बहुत दफ़ा बेड़ियों और ज़ंजीरों से बाँधा
गया था, लेकिन जब भी ऐसा हुआ तो उसने ज़ंजीरों को तोड़कर बेड़ियों को टुकड़े टुकड़े कर दिया था। कोई भी उसे
कंट्रोल नहीं कर सकता था। 5 दिन-रात वह चीख़ें मार मारकर क़ब्रों और पहाड़ी इलाक़े में घुमता-फिरता और अपने
आपको पत्थरों से ज़ख़मी कर लेता था।
6 ईसा को दूर से देखकर वह दौड़ा और उसके सामने मुँह के बल गिरा। 7 वह ज़ोर से चीख़ा, "ऐ ईसा अल्लाह
तआला के फ़रज़ंद, मेरा आपके साथ क्या वास्ता है? अल्लाह के नाम में आपको क़सम देता हूँ कि मुझे अज़ाब में न
डालें।" 8 क्योंकि ईसा ने उसे कहा था, "ऐ नापाक रूह, आदमी में से निकल जा!"
9 फिर ईसा ने पूछा, "तेरा नाम क्या है?"
उसने जवाब दिया, "लशकर, क्योंकि हम बहुत-से हैं।" 10 और वह बार बार मिन्नत करता रहा कि ईसा उन्हें इस
इलाक़े से न निकाले।
11 उस वक़्त क़रीब की पहाड़ी पर सुअरों का बड़ा ग़ोल चर रहा था। 12 बदरूहों ने ईसा से इलतमास की, "हमें
सुअरों में भेज दें, हमें उनमें दाख़िल होने दें।" 13 उसने उन्हें इजाज़त दी तो बदरूहें उस आदमी में से निकलकर सुअरों
में जा घुसीं। इस पर पूरे ग़ोल के तक़रीबन 2,000 सुअर भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में
झपटकर डूब मरे।
14 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्होंने शहर और देहात में इस बात का चर्चा किया तो लोग यह
मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी जगहों से निकलकर ईसा के पास आए। 15 उसके पास पहुँचे तो वह
आदमी मिला जिसमें पहले बदरूहों का लशकर था। अब वह कपड़े पहने वहाँ बैठा था और उस की ज़हनी हालत ठीक
थी। यह देखकर वह डर गए। 16 जिन्होंने सब कुछ देखा था उन्होंने लोगों को बताया कि बदरूह-गिरिफ़्ता आदमी
और सुअरों के साथ क्या हुआ है।
17 फिर लोग ईसा की मिन्नत करने लगे कि वह उनके इलाक़े से चला जाए।
18 ईसा कश्ती पर सवार होने लगा तो बदरूहों से आज़ाद किए गए आदमी ने उससे इलतमास की, "मुझे भी अपने
साथ जाने दें।"
19 लेकिन ईसा ने उसे साथ जाने न दिया बल्कि कहा, "अपने घर वापस चला जा और अपने अज़ीज़ों को सब
कुछ बता जो रब ने तेरे लिए किया है, कि उसने तुझ पर कितना रहम किया है।"
20 चुनाँचे आदमी चला गया और दिकपुलिस के इलाक़े में लोगों को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ
किया है। और सब हैरतज़दा हुए।

याईर की बेटी और बीमार औरत

21 ईसा ने कश्ती में बैठे झील को दुबारा पार किया। जब दूसरे किनारे पहुँचा तो एक हुजूम उसके गिर्द जमा हो
गया। वह अभी झील के पास ही था 22 कि मक़ामी इबादतख़ाने का एक राहनुमा उसके पास आया। उसका नाम याईर
था। ईसा को देखकर वह उसके पाँवों में गिर गया 23 और बहुत मिन्नत करने लगा, “मेरी छोटी बेटी मरनेवाली है,
बराहे-करम आकर उस पर अपने हाथ रखें ताकि वह शफ़ा पाकर ज़िंदा रहे।”
24 चुनाँचे ईसा उसके साथ चल पड़ा। एक बड़ी भीड़ उसके पीछे लग गई और लोग उसे घेरकर हर तरफ़ से दबाने
लगे।
25 हुजूम में एक औरत थी जो बारह साल से ख़ून बहने के मरज़ से रिहाई न पा सकी थी। 26 बहुत डाक्टरों से
अपना इलाज करवा करवा कर उसे कई तरह की मुसीबत झेलनी पड़ी थी और इतने में उसके तमाम पैसे भी ख़र्च हो
गए थे। तो भी कोई फ़ायदा न हुआ था बल्कि उस की हालत मज़ीद ख़राब होती गई। 27 ईसा के बारे में सुनकर वह
भीड़ में शामिल हो गई थी। अब पीछे से आकर उसने उसके लिबास को छुआ, 28 क्योंकि उसने सोचा, “अगर मैं
सिर्फ़ उसके लिबास को ही छू लूँ तो मैं शफ़ा पा लूँगी।”
29 ख़ून बहना फ़ौरन बंद हो गया और उसने अपने जिस्म में महसूस किया कि मुझे इस अज़ियतनाक हालत से रिहाई
मिल गई है। 30 लेकिन उसी लमहे ईसा को ख़ुद महसूस हुआ कि मुझमें से तवानाई निकली है। उसने मुड़कर पूछा,
“किसने मेरे कपड़ों को छुआ है?”
31 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “आप ख़ुद देख रहे हैं कि हुजूम आपको घेरकर दबा रहा है। तो फिर आप किस
तरह पूछ सकते हैं कि किसने मुझे छुआ?”
32 लेकिन ईसा अपने चारों तरफ़ देखता रहा कि किसने यह किया है। 33 इस पर वह औरत यह जानकर कि मेरे साथ
क्या हुआ है ख़ौफ़ के मारे लरज़ती हुई उसके पास आई। वह उसके सामने गिर पड़ी और उसे पूरी हक़ीक़त खोलकर
बयान की। 34 ईसा ने उससे कहा, “बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से जा और अपनी अज़ियतनाक
हालत से बची रह।”
35 ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी कि इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर की तरफ़ से कुछ लोग पहुँचे
और कहा, “आपकी बेटी फ़ौत हो चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तकलीफ़ देने की क्या ज़रूरत?”
36 उनकी यह बात नज़रंदाज़ करके ईसा ने याईर से कहा, “मत घबराओ, फ़क़त ईमान रखो।” 37 फिर ईसा ने
हुजूम को रोक लिया और सिर्फ़ पतरस, याक़ूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने साथ जाने की इजाज़त दी। 38 जब
इबादतख़ाने के राहनुमा के घर पहुँचे तो वहाँ बड़ी अफ़रा-तफ़री नज़र आई। लोग ख़ूब गिर्याओ-ज़ारी कर रहे थे।
39 अंदर जाकर ईसा ने उनसे कहा, “यह कैसा शोर-शराबा है? क्यों रो रहे हो? लड़की मर नहीं गई बल्कि सो रही
है।”
40 लोग हँसकर उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे। लेकिन उसने सबको बाहर निकाल दिया। फिर सिर्फ़ लड़की के वालिदैन
और अपने तीन शागिर्दों को साथ लेकर वह उस कमरे में दाख़िल हुआ जिसमें लड़की पड़ी थी। 41 उसने उसका हाथ
पकड़कर कहा, “तलिथा क़ूम!” इसका मतलब है, “छोटी लड़की, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि जाग उठ!”
42 लड़की फ़ौरन उठकर चलने-फिरने लगी। उस की उम्र बारह साल थी। यह देखकर लोग घबराकर हैरान रह
गए। 43 ईसा ने उन्हें संजीदगी से समझाया कि वह किसी को भी इसके बारे में न बताएँ। फिर उसने उन्हें कहा कि उसे
खाने को कुछ दो।

6

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

1 फिर ईसा वहाँ से चला गया और अपने वतनी शहर नासरत में आया। उसके शागिर्द उसके साथ थे। 2 सबत के
दिन वह इबादतख़ाने में तालीम देने लगा। बेशतर लोग उस की बातें सुनकर हैरतज़दा हुए। उन्होंने पूछा, “इसे यह कहाँ
से हासिल हुआ है? यह हिकमत जो इसे मिली है, और यह मोजिज़े जो इसके हाथों से होते हैं, यह क्या है? 3 क्या
यह वह बढ़ई नहीं है जो मरियम का बेटा है और जिसके भाई याक़ूब, यूसुफ़, यहूदाह और शमौन हैं? और क्या इसकी
बहनें यहीं नहीं रहतीं?” यों उन्होंने उससे ठोकर खाकर उसे क़बूल न किया।
4 ईसा ने उनसे कहा, “नबी की हर जगह इज़्ज़त होती है सिवाए उसके वतनी शहर, उसके रिश्तेदारों और उसके
अपने ख़ानदान के।”
5 वहाँ वह कोई मोजिज़ा न कर सका। उसने सिर्फ़ चंद एक मरीज़ों पर हाथ रखकर उनको शफ़ा दी। 6 और वह
उनकी बेएतक़ादी के सबब से बहुत हैरान था।

ईसा बारह शागिर्दों को तबलीग़ करने भेजता है

इसके बाद ईसा ने इर्दगिर्द के इलाक़े में गाँव गाँव जाकर लोगों को तालीम दी। 7 बारह शागिर्दों को बुलाकर वह
उन्हें दो दो करके मुख़्तलिफ़ जगहों पर भेजने लगा। इसके लिए उसने उन्हें नापाक रूहों को निकालने का इख़्तियार
देकर 8 यह हिदायत की, "सफ़र पर अपने साथ कुछ न लेना सिवाए एक लाठी के। न रोटी, न सामान के लिए कोई
बैग, न कमरबंद में कोई पैसा, 9 न एक से ज़्यादा सूट। तुम जूते पहन सकते हो। 10 जिस घर में भी दाख़िल हो उसमें
उस मक़ाम से चले जाने तक ठहरो। 11 और अगर कोई मक़ाम तुमको क़बूल न करे या तुम्हारी न सुने तो फिर रवाना
होते वक़्त अपने पाँवों से गर्द झाड़ दो। यों तुम उनके ख़िलाफ़ गवाही दोगे।"

12 चुनाँचे शागिर्द वहाँ से निकलकर मुनादी करने लगे कि लोग तौबा करें। 13 उन्होंने बहुत-सी बदरूहें निकाल दीं
और बहुत-से मरीज़ों पर ज़ैतून का तेल मलकर उन्हें शफ़ा दी।

यहया बपतिस्मा देनेवाले का क़त्ल

14 बादशाह हेरोदेस अंतिपास ने ईसा के बारे में सुना, क्योंकि उसका नाम मशहूर हो गया था। कुछ कह रहे थे,
"यहया बपतिस्मा देनेवाला मुरदों में से जी उठा है, इसलिए इस क़िस्म की मोजिज़ाना ताक़तें उसमें नज़र आती हैं।"

औरों ने सोचा, "यह इलियास नबी है।"

15 यह ख़याल भी पेश किया जा रहा था कि वह क़दीम ज़माने के नबियों जैसा कोई नबी है।

16 लेकिन जब हेरोदेस ने उसके बारे में सुना तो उसने कहा, "यहया जिसका मैंने सर क़लम करवाया है मुरदों में
से जी उठा है।" 17 वजह यह थी कि हेरोदेस के हुक्म पर ही यहया को गिरिफ़्तार करके जेल में डाला गया था। यह
हेरोदियास की ख़ातिर हुआ था जो पहले हेरोदेस के भाई फ़िलिप्पुस की बीवी थी, लेकिन जिससे उसने अब ख़ुद शादी
कर ली थी। 18 यहया ने हेरोदेस को बताया था, "अपने भाई की बीवी से तेरी शादी नाजायज़ है।"

19 इस वजह से हेरोदियास उससे कीना रखती और उसे क़त्ल कराना चाहती थी। लेकिन इसमें वह नाकाम रही
20 क्योंकि हेरोदेस यहया से डरता था। वह जानता था कि यह आदमी रास्तबाज़ और मुक़द्दस है, इसलिए वह उस की
हिफ़ाज़त करता था। जब भी उससे बात होती तो हेरोदेस सुन सुनकर बड़ी उलझन में पड़ जाता। तो भी वह उस की बातें
सुनना पसंद करता था।

21 आख़िरकार हेरोदियास को हेरोदेस की सालगिरह पर अच्छा मौक़ा मिल गया। सालगिरह को मनाने के लिए
हेरोदेस ने अपने बडे सरकारी अफ़सरों, मिल्ट्री कमाँडरों और गलील के अव्वल दर्जे के शहरियों की ज़ियाफ़त की।
22 ज़ियाफ़त के दौरान हेरोदियास की बेटी अंदर आकर नाचने लगी। हेरोदेस और उसके मेहमानों को यह बहुत पसंद
आया और उसने लड़की से कहा, "जो जी चाहे मुझसे माँग तो मैं वह तुझे दूँगा।" 23 बल्कि उसने क़सम खाकर कहा,
"जो भी तू माँगेगी मैं तुझे दूँगा, ख़ाह बादशाही का आधा हिस्सा ही क्यों न हो।"

24 लड़की ने निकलकर अपनी माँ से पूछा, "मैं क्या माँगूँ?"

माँ ने जवाब दिया, "यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर।"

25 लड़की फुरती से अंदर जाकर बादशाह के पास वापस आई और कहा, "मैं चाहती हूँ कि आप मुझे अभी अभी
यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर ट्रे में मँगवा दें।"

26 यह सुनकर बादशाह को बहुत दुख हुआ। लेकिन अपनी क़समों और मेहमानों की मौजूदगी की वजह से वह
इनकार करने के लिए भी तैयार नहीं था। 27 चुनाँचे उसने फ़ौरन जल्लाद को भेजकर हुक्म दिया कि वह यहया का
सर ले आए। जल्लाद ने जेल में जाकर यहया का सर क़लम कर दिया। 28 फिर वह उसे ट्रे में रखकर ले आया और
लड़की को दे दिया। लड़की ने उसे अपनी माँ के सुपुर्द किया। 29 जब यहया के शागिर्दों को यह ख़बर पहुँची तो वह
आए और उस की लाश लेकर उसे क़ब्र में रख दिया।

ईसा *5000* अफ़राद को खाना खिलाता है

30 रसूल वापस आकर ईसा के पास जमा हुए और उसे सब कुछ सुनाने लगे जो उन्होंने किया और सिखाया था।
31 इस दौरान इतने लोग आ और जा रहे थे कि उन्हें खाना खाने का मौक़ा भी न मिला। इसलिए ईसा ने बारह शागिर्दों
से कहा, "आओ, हम लोगों से अलग होकर किसी ग़ैरआबाद जगह जाएँ और आराम करें।" 32 चुनाँचे वह कश्ती पर
सवार होकर किसी वीरान जगह चले गए।

33 लेकिन बहुत-से लोगों ने उन्हें जाते वक़्त पहचान लिया। वह पैदल चलकर तमाम शहरों से निकल आए और
दौड़ दौड़कर उनसे पहले मनज़िले-मक़सूद तक पहुँच गए। 34 जब ईसा ने कश्ती पर से उतरकर बड़े हुजूम को देखा तो
उसे लोगों पर तरस आया, क्योंकि वह उन भेड़ों की मानिंद थे जिनका कोई चरवाहा न हो। वहीं वह उन्हें बहुत-सी
बातें सिखाने लगा।

35 जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्द उसके पास आए और कहा, “यह जगह वीरान है और दिन ढलने लगा है।
36 इनको रुख़सत कर दें ताकि यह इर्दगिर्द की बस्तियों और देहातों में जाकर खाने के लिए कुछ ख़रीद लें।”
37 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, “तुम ख़ुद इन्हें कुछ खाने को दो।”
उन्होंने पूछा, “हम इसके लिए दरकार चाँदी के 200 सिक्के कहाँ से लेकर रोटी ख़रीदने जाएँ और इन्हें खिलाएँ?”
38 उसने कहा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? जाकर पता करो!”
उन्होंने मालूम किया। फिर दुबारा उसके पास आकर कहने लगे, “हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।”
39 इस पर ईसा ने उन्हें हिदायत दी, “तमाम लोगों को गुरोहों में हरी घास पर बिठा दो।” 40 चुनाँचे लोग सौ सौ
और पचास पचास की सूरत में बैठ गए। 41 फिर ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर आसमान की
तरफ़ देखा और शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसने रोटियों को तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया ताकि वह लोगों में
तक़सीम करें। उसने दो मछलियों को भी टुकड़े टुकड़े करके शागिर्दों के ज़रीए उनमें तक़सीम करवाया। 42 और सबने
जी भरकर खाया। 43 जब शागिर्दों ने रोटियों और मछलियों के बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे भर गए।
44 खानेवाले मर्दों की कुल तादाद 5,000 थी।

ईसा पानी पर चलता है

45 इसके ऐन बाद ईसा ने अपने शागिर्दों को मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें और झील
के पार के शहर बैत-सैदा जाएँ। इतने में वह हुजूम को रुख़सत करना चाहता था। 46 उन्हें ख़ैरबाद कहने के बाद वह
दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। 47 शाम के वक़्त शागिर्दों की कश्ती झील के बीच तक पहुँच गई थी जबकि
ईसा ख़ुद ख़ुश्की पर अकेला रह गया था। 48 वहाँ से उसने देखा कि शागिर्द कश्ती को खेने में बड़ी जिद्दो-जहद कर
रहे हैं, क्योंकि हवा उनके ख़िलाफ़ चल रही थी। तक़रीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके पास
आया। वह उनसे आगे निकलना चाहता था, 49 लेकिन जब उन्होंने उसे झील की सतह पर चलते हुए देखा तो सोचने
लगे, “यह कोई भूत है” और चीख़ें मारने लगे। 50 क्योंकि सबने उसे देखकर दहशत खाई।
लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुख़ातिब होकर बोला, “हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।” 51 फिर वह उनके पास
आया और कश्ती में बैठ गया। उसी वक़्त हवा थम गई। शागिर्द निहायत ही हैरतज़दा हुए। 52 क्योंकि जब रोटियों का
मोजिज़ा किया गया था तो वह इसका मतलब नहीं समझे थे बल्कि उनके दिल बेहिस हो गए थे।

गन्नेसरत में मरीज़ों की शफ़ा

53 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास पहुँच गए और लंगर डाल दिया। 54 ज्योंही वह कश्ती से उतरे
लोगों ने ईसा को पहचान लिया। 55 वह भाग भागकर उस पूरे इलाक़े में से गुज़रे और मरीज़ों को चारपाइयों पर उठा
उठाकर वहाँ ले आए जहाँ कहीं उन्हें ख़बर मिली कि वह ठहरा हुआ है। 56 जहाँ भी वह गया चाहे गाँव, शहर या
बस्ती में, वहाँ लोगों ने बीमारों को चौकों में रखकर उससे मिन्नत की कि वह कम अज़ कम उन्हें अपने लिबास के
दामन को छूने दे। और जिसने भी उसे छुआ उसे शफ़ा मिली।

7

बापदादा की तालीम

1 एक दिन फ़रीसी और शरीअत के कुछ आलिम यरूशलम से ईसा से मिलने आए। 2 जब वह वहाँ थे तो उन्होंने
देखा कि उसके कुछ शागिर्द अपने हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर यानी धोए बग़ैर खाना खा रहे हैं।
3 (क्योंकि यहूदी और ख़ासकर फ़रीसी फ़िरक़े के लोग इस मामले में अपने बापदादा की रिवायत को मानते हैं।
वह अपने हाथ अच्छी तरह धोए बग़ैर खाना नहीं खाते। 4 इसी तरह जब वह कभी बाज़ार से आते हैं तो वह ग़ुस्ल
करके ही खाना खाते हैं। वह बहुत-सी और रिवायतों पर भी अमल करते हैं, मसलन कप, जग और केतली को धोकर
पाक-साफ़ करने की रस्म पर।)
5 चुनाँचे फ़रीसियों और शरीअत के आलिमों ने ईसा से पूछा, “आपके शागिर्द बापदादा की रिवायतों के मुताबिक़
ज़िंदगी क्यों नहीं गुज़ारते बल्कि रोटी भी हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर खाते हैं?”
6 ईसा ने जवाब दिया, “यसायाह नबी ने तुम रियाकारों के बारे में ठीक कहा जब उसने यह नबुव्वत की,
‘यह क़ौम अपने होंटों से तो मेरा एहतराम करती है
लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है।
7 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफ़ायदा।
क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के अहकाम सिखाते हैं।’

8 तुम अल्लाह के अहकाम को छोड़कर इनसानी रिवायात की पैरवी करते हो।”
9 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, “तुम कितने सलीक़े से अल्लाह का हुक्म मनसूख़ करते हो ताकि अपनी रिवायात
को क़ायम रख सको। 10 मसलन मूसा ने फ़रमाया, ‘अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना’ और ‘जो अपने बाप
या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।’ 11 लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे, ‘मैं आपकी मदद नहीं कर
सकता, क्योंकि मैंने मन्नत मानी है कि जो मुझे आपको देना था वह अल्लाह के लिए क़ुरबानी है’ तो तुम इसे जायज़
क़रार देते हो। 12 यों तुम उसे अपने माँ-बाप की मदद करने से रोक लेते हो। 13 और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम
को अपनी उस रिवायत से मनसूख़ कर लेते हो जो तुमने नसल-दर-नसल मुंतक़िल की है। तुम इस क़िस्म की बहुत-सी
हरकतें करते हो।”

क्या कुछ इनसान को नापाक कर देता है?

14 फिर ईसा ने दुबारा हुजूम को अपने पास बुलाया और कहा, “सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की कोशिश
करो। 15 कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो इनसान में दाख़िल होकर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ इनसान के अंदर
से निकलता है वही उसे नापाक कर देता है।” 16 [अगर कोई सुन सकता है तो वह सुन ले।]
17 फिर वह हुजूम को छोड़कर किसी घर में दाख़िल हुआ। वहाँ उसके शागिर्दों ने पूछा, “इस तमसील का क्या
मतलब है?”
18 उसने कहा, “क्या तुम भी इतने नासमझ हो? क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ बाहर से इनसान में दाख़िल होता
है वह उसे नापाक नहीं कर सकता? 19 वह तो उसके दिल में नहीं जाता बल्कि उसके मेदे में और वहाँ से निकलकर
जाए-ज़रूरत में।” (यह कहकर ईसा ने हर क़िस्म का खाना पाक-साफ़ क़रार दिया।)
20 उसने यह भी कहा, “जो कुछ इनसान के अंदर से निकलता है वही उसे नापाक करता है। 21 क्योंकि लोगों के
अंदर से, उनके दिलों ही से बुरे ख़यालात, हरामकारी, चोरी, क़त्लो-ग़ारत, 22 ज़िनाकारी, लालच, बदकारी, धोका,
शहवतपरस्ती, हसद, बुहतान, ग़ुरूर और हमाक़त निकलते हैं। 23 यह तमाम बुराइयाँ अंदर ही से निकलकर इनसान को
नापाक कर देती हैं।”

ग़ैरयहूदी औरत का ईमान

24 फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल में सूर के इलाक़े में आया। वहाँ वह किसी घर में दाख़िल हुआ। वह
नहीं चाहता था कि किसी को पता चले, लेकिन वह पोशीदा न रह सका। 25 फ़ौरन एक औरत उसके पास आई जिसने
उसके बारे में सुन रखा था। वह उसके पाँवों में गिर गई। उस की छोटी बेटी किसी नापाक रूह के क़ब्ज़े में थी, 26 और
उसने ईसा से गुज़ारिश की, “बदरूह को मेरी बेटी में से निकाल दें।” लेकिन वह औरत यूनानी थी और सूरूफ़ेनीके के
इलाक़े में पैदा हुई थी, 27 इसलिए ईसा ने उसे बताया, “पहले बच्चों को जी भरकर खाने दे, क्योंकि यह मुनासिब
नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के सामने फेंक दिया जाए।”
28 उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, लेकिन मेज़ के नीचे के कुत्ते भी बच्चों के गिरे हुए टुकड़े खाते हैं।”
29 ईसा ने कहा, “तूने अच्छा जवाब दिया, इसलिए जा, बदरूह तेरी बेटी में से निकल गई है।”
30 औरत अपने घर वापस चली गई तो देखा कि लड़की बिस्तर पर पड़ी है और बदरूह उसमें से निकल चुकी है।

गूँगे-बहरे की शफ़ा

31 जब ईसा सूर से रवाना हुआ तो वह पहले शिमाल में वाक़े शहर सैदा को चला गया। फिर वहाँ से भी फ़ारिग़
होकर वह दुबारा गलील की झील के किनारे वाक़े दिकपुलिस के इलाक़े में पहुँच गया। 32 वहाँ उसके पास एक बहरा
आदमी लाया गया जो मुश्किल ही से बोल सकता था। उन्होंने मिन्नत की कि वह अपना हाथ उस पर रखे। 33 ईसा उसे
हुजूम से दूर ले गया। उसने अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डालीं और थूककर आदमी की ज़बान को छुआ। 34 फिर
आसमान की तरफ़ नज़र उठाकर उसने आह भरी और उससे कहा, “इफ़्फ़तह!” (इसका मतलब है “खुल जा!”)
35 फ़ौरन आदमी के कान खुल गए, ज़बान का बंधन टूट गया और वह ठीक ठीक बोलने लगा। 36 ईसा ने हाज़िरीन
को हुक्म दिया कि वह किसी को यह बात न बताएँ। लेकिन जितना वह मना करता था उतना ही लोग इसकी ख़बर
फैलाते थे। 37 वह निहायत ही हैरान हुए और कहने लगे, “इसने सब कुछ अच्छा किया है, यह बहरों को सुनने की
ताक़त देता है और गूँगों को बोलने की।”

8

ईसा *4000* अफ़राद को खाना खिलाता है

1 उन दिनों में एक और मरतबा ऐसा हुआ कि बहुत-से लोग जमा हुए जिनके पास खाने का बंदोबस्त नहीं था।
चुनाँचे ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर उनसे कहा, 2 “मुझे इन लोगों पर तरस आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन
दिन हो चुके हैं और इनके पास खाने की कोई चीज़ नहीं है। 3 लेकिन अगर मैं इन्हें रुख़सत कर दूँ और वह इस भूकी
हालत में अपने अपने घर चले जाएँ तो वह रास्ते में थककर चूर हो जाएंगे। और इनमें से कई दूर-दराज़ से आए हैं।”
4 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह खाकर सेर हो
जाएँ?”
5 ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?”
उन्होंने जवाब दिया, “सात।”
6 ईसा ने हुजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा। फिर सात रोटियों को लेकर उसने शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें
तोड़ तोड़कर अपने शागिर्दों को तक़सीम करने के लिए दे दिया। 7 उनके पास दो-चार छोटी मछलियाँ भी थीं। ईसा ने
उन पर भी शुक्रगुज़ारी की दुआ की और शागिर्दों को उन्हें बाँटने को कहा। 8 लोगों ने जी भरकर खाया। बाद में जब
खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर गए। 9 तक़रीबन 4,000 आदमी हाज़िर थे। खाने के
बाद ईसा ने उन्हें रुख़सत कर दिया 10 और फ़ौरन कश्ती पर सवार होकर अपने शागिर्दों के साथ दल्मनूता के इलाक़े में
पहुँच गया।

फ़रीसी इलाही निशान तलब करते हैं

11 इस पर फ़रीसी निकलकर ईसा के पास आए और उससे बहस करने लगे। उसे आज़माने के लिए उन्होंने मुतालबा
किया कि वह उन्हें आसमान की तरफ़ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उसका इख़्तियार साबित हो जाए। 12 लेकिन
उसने ठंडी आह भरकर कहा, “यह नसल क्यों इलाही निशान का मुतालबा करती है? मैं तुमको सच बताता हूँ कि इसे
कोई निशान नहीं दिया जाएगा।”
13 और उन्हें छोड़कर वह दुबारा कश्ती में बैठ गया और झील को पार करने लगा।

फ़रीसियों और हेरोदेस का ख़मीर

14 लेकिन शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल गए थे। कश्ती में उनके पास सिर्फ़ एक रोटी थी। 15 ईसा ने उन्हें
हिदायत की, “ख़बरदार, फ़रीसियों और हेरोदेस के ख़मीर से होशियार रहना।”
16 शागिर्द आपस में बहस करने लगे, “वह इसलिए कह रहे होंगे कि हमारे पास रोटी नहीं है।”
17 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने कहा, “तुम आपस में क्यों बहस कर रहे हो कि हमारे पास
रोटी नहीं है? क्या तुम अब तक न जानते, न समझते हो? क्या तुम्हारे दिल इतने बेहिस हो गए हैं? 18 तुम्हारी आँखें
तो हैं, क्या तुम देख नहीं सकते? तुम्हारे कान तो हैं, क्या तुम सुन नहीं सकते? और क्या तुम्हें याद नहीं 19 जब मैंने
5,000 आदमियों को पाँच रोटियों से सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे?”
उन्होंने जवाब दिया, “बारह”।
20 “और जब मैंने 4,000 आदमियों को सात रोटियों से सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे
उठाए थे?”
उन्होंने जवाब दिया, “सात।”
21 उसने पूछा, “क्या तुम अभी तक नहीं समझते?”

बैत-सैदा में अंधे की शफ़ा

22 वह बैत-सैदा पहुँचे तो लोग ईसा के पास एक अंधे आदमी को लाए। उन्होंने इलतमास की कि वह उसे छुए।
23 ईसा अंधे का हाथ पकड़कर उसे गाँव से बाहर ले गया। वहाँ उसने उस की आँखों पर थूककर अपने हाथ उस पर
रख दिए और पूछा, “क्या तू कुछ देख सकता है?”
24 आदमी ने नज़र उठाकर कहा, “हाँ, मैं लोगों को देख सकता हूँ। वह फिरते हुए दरख़्तों की मानिंद दिखाई दे रहे
हैं।”
25 ईसा ने दुबारा अपने हाथ उस की आँखों पर रखे। इस पर आदमी की आँखें पूरे तौर पर खुल गईं, उस की नज़र
बहाल हो गई और वह सब कुछ साफ़ साफ़ देख सकता था। 26 ईसा ने उसे रुख़सत करके कहा, “इस गाँव में वापस न
जाना बल्कि सीधा अपने घर चला जा।”

पतरस का इक़रार

27 फिर ईसा वहाँ से निकलकर अपने शागिर्दों के साथ क़ैसरिया-फ़िलिप्पी के क़रीब के देहातों में गया। चलते
चलते उसने उनसे पूछा, “मैं लोगों के नज़दीक कौन हूँ?”

28 उन्होंने जवाब दिया, "कुछ कहते हैं यहया बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास नबी हैं। कुछ यह
भी कहते हैं कि नबियों में से एक।"
29 उसने पूछा, "लेकिन तुम क्या कहते हो? तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?"
पतरस ने जवाब दिया, "आप मसीह हैं।"
30 यह सुनकर ईसा ने उन्हें किसी को भी यह बात बताने से मना किया।

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

31 फिर ईसा उन्हें तालीम देने लगा, "लाज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दुख उठाकर बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और
शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए। उसे क़त्ल भी किया जाएगा, लेकिन वह तीसरे दिन जी उठेगा।" 32 उसने उन्हें
यह बात साफ़ साफ़ बताई। इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जाकर समझाने लगा। 33 ईसा मुड़कर शागिर्दों की तरफ़
देखने लगा। उसने पतरस को डाँटा, "शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इनसान
की।"
34 फिर उसने शागिर्दों के अलावा हुजूम को भी अपने पास बुलाया। उसने कहा, "जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने
आपका इनकार करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। 35 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह
उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर अपनी जान खो दे वही उसे बचाएगा। 36 क्या
फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से महरूम हो जाए? 37 इनसान अपनी
जान के बदले क्या दे सकता है? 38 जो भी इस ज़िनाकार और गुनाहआलूदा नसल के सामने मेरे और मेरी बातों के
सबब से शरमाए उससे इब्ने-आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह अपने बाप के जलाल में मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ
आएगा।"

9

1 ईसा ने उन्हें यह भी बताया, "मैं तुमको सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही अल्लाह
की बादशाही को क़ुदरत के साथ आते हुए देखेंगे।"

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

2 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उस
की शक्लो-सूरत उनके सामने बदल गई। 3 उसके कपड़े चमकने लगे और निहायत सफ़ेद हो गए। दुनिया में कोई भी
धोबी कपड़े इतने सफ़ेद नहीं कर सकता। 4 फिर इलियास और मूसा ज़ाहिर हुए और ईसा से बात करने लगे। 5 पतरस
बोल उठा, "उस्ताद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आएँ, हम तीन झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आपके लिए, एक
मूसा के लिए और एक इलियास के लिए।" 6 उसने यह इसलिए कहा कि तीनों शागिर्द सहमे हुए थे और वह नहीं
जानता था कि क्या कहे।
7 इस पर एक बादल आकर उन पर छा गया और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, "यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है।
इसकी सुनो।" 8 अचानक मूसा और इलियास ग़ायब हो गए। शागिर्दों ने चारों तरफ़ देखा, लेकिन सिर्फ़ ईसा नज़र
आया।
9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, "जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक़्त तक किसी को न
बताना जब तक कि इब्ने-आदम मुरदों में से जी न उठे।"
10 चुनाँचे उन्होंने यह बात अपने तक महदूद रखी। लेकिन वह कई बार आपस में बहस करने लगे कि मुरदों में से
जी उठने से क्या मुराद हो सकती है। 11 फिर उन्होंने उससे पूछा, "शरीअत के उलमा क्यों कहते हैं कि मसीह की
आमद से पहले इलियास का आना ज़रूरी है?"
12 ईसा ने जवाब दिया, "इलियास तो ज़रूर पहले सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा। लेकिन कलामे-मुक़द्दस
में इब्ने-आदम के बारे में यह क्यों लिखा है कि उसे बहुत दुख उठाना और हक़ीर समझा जाना है? 13 लेकिन मैं तुमको
बताता हूँ, इलियास तो आ चुका है और उन्होंने उसके साथ जो चाहा किया। यह भी कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ ही
हुआ है।"

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

14 जब वह बाक़ी शागिर्दों के पास वापस पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनके गिर्द एक बड़ा हुजूम जमा है और शरीअत
के कुछ उलमा उनके साथ बहस कर रहे हैं। 15 ईसा को देखते ही लोगों ने बड़ी बेचैनी से उस की तरफ़ दौड़कर उसे
सलाम किया। 16 उसने शागिर्दों से सवाल किया, "तुम उनके साथ किसके बारे में बहस कर रहे हो?"

17 हुजूम में से एक आदमी ने जवाब दिया, “उस्ताद, मैं अपने बेटे को आपके पास लाया था। वह ऐसी बदरूह के
क़ब्ज़े में है जो उसे बोलने नहीं देती। 18 और जब भी वह उस पर ग़ालिब आती है वह उसे ज़मीन पर पटक देती है। बेटे
के मुँह से झाग निकलने लगता और वह दाँत पीसने लगता है। फिर उसका जिस्म अकड़ जाता है। मैंने आपके शागिर्दों
से कहा तो था कि वह बदरूह को निकाल दें, लेकिन वह न निकाल सके।”

19 ईसा ने उनसे कहा, “ईमान से ख़ाली नसल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें बरदाश्त करूँ? लड़के
को मेरे पास ले आओ।” 20 वह उसे ईसा के पास ले आए।

ईसा को देखते ही बदरूह लड़के को झँझोड़ने लगी। वह ज़मीन पर गिर गया और इधर उधर लुढ़कते हुए मुँह से
झाग निकालने लगा। 21 ईसा ने बाप से पूछा, “इसके साथ कब से ऐसा हो रहा है?”

उसने जवाब दिया, “बचपन से। 22 बहुत दफ़ा उसने इसे हलाक करने की ख़ातिर आग या पानी में गिराया है। अगर
आप कुछ कर सकते हैं तो तरस खाकर हमारी मदद करें।”

23 ईसा ने पूछा, “क्या मतलब, ‘अगर आप कुछ कर सकते हैं’? जो ईमान रखता है उसके लिए सब कुछ मुमकिन
है।”

24 लड़के का बाप फ़ौरन चिल्ला उठा, “मैं ईमान रखता हूँ। मेरी बेएतक़ादी का इलाज करें।”

25 ईसा ने देखा कि बहुत-से लोग दौड़ दौड़कर देखने आ रहे हैं, इसलिए उसने नापाक रूह को डाँटा, “ऐ गूँगी और
बहरी बदरूह, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि इसमें से निकल जा। कभी भी इसमें दुबारा दाख़िल न होना!”

26 इस पर बदरूह चीख़ उठी और लड़के को शिद्दत से झँझोड़कर निकल गई। लड़का लाश की तरह ज़मीन पर
पड़ा रहा, इसलिए सबने कहा, “वह मर गया है।” 27 लेकिन ईसा ने उसका हाथ पकड़कर उठने में उस की मदद की
और वह खड़ा हो गया।

28 बाद में जब ईसा किसी घर में जाकर अपने शागिर्दों के साथ अकेला था तो उन्होंने उससे पूछा, “हम बदरूह को
क्यों न निकाल सके?”

29 उसने जवाब दिया, “इस क़िस्म की बदरूह सिर्फ़ दुआ से निकाली जा सकती है।”

ईसा दूसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

30 वहाँ से निकलकर वह गलील में से गुज़रे। ईसा नहीं चाहता था कि किसी को पता चले कि वह कहाँ है,
31 क्योंकि वह अपने शागिर्दों को तालीम दे रहा था। उसने उनसे कहा, “इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर
दिया जाएगा। वह उसे क़त्ल करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

32 लेकिन शागिर्द इसका मतलब न समझे और वह ईसा से इसके बारे में पूछने से डरते भी थे।

कौन सबसे बड़ा है?

33 चलते चलते वह कफ़र्नहूम पहुँचे। जब वह किसी घर में थे तो ईसा ने शागिर्दों से सवाल किया, “रास्ते में तुम
किस बात पर बहस कर रहे थे?”

34 लेकिन वह ख़ामोश रहे, क्योंकि वह रास्ते में इस पर बहस कर रहे थे कि हममें से बड़ा कौन है? 35 ईसा बैठ गया
और बारह शागिर्दों को बुलाकर कहा, “जो अव्वल होना चाहता है वह सबसे आख़िर में आए और सबका ख़ादिम हो।”
36 फिर उसने एक छोटे बच्चे को लेकर उनके दरमियान खड़ा किया। उसे गले लगाकर उसने उनसे कहा, 37 “जो मेरे
नाम में इन बच्चों में से किसी को क़बूल करता है वह मुझे ही क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल करता है वह मुझे
नहीं बल्कि उसे क़बूल करता है जिसने मुझे भेजा है।”

जो हमारे ख़िलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है

38 यूहन्ना बोल उठा, “उस्ताद, हमने एक शख़्स को देखा जो आपका नाम लेकर बदरूहें निकाल रहा था। हमने
उसे मना किया, क्योंकि वह हमारी पैरवी नहीं करता।”

39 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना। जो भी मेरे नाम में मोजिज़ा करे वह अगले लमहे मेरे बारे में बुरी बातें
नहीं कह सकेगा। 40 क्योंकि जो हमारे ख़िलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है। 41 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी तुम्हें
इस वजह से पानी का गलास पिलाए कि तुम मसीह के पैरोकार हो उसे ज़रूर अज्र मिलेगा।

आज़माइशें

42 और जो कोई मुझ पर ईमान रखनेवाले इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए उसके लिए बेहतर
है कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधकर उसे समुंदर में फेंक दिया जाए। 43-44 अगर तेरा हाथ तुझे गुनाह
करने पर उकसाए तो उसे काट डालना। इससे पहले कि तू दो हाथों समेत जहन्नुम की कभी न बुझनेवाली आग में चला
जाए [यानी वहाँ जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक

हाथ से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाख़िल हो। 45-46 अगर तेरा पाँव तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काट
डालना। इससे पहले कि तुझे दो पाँवों समेत जहन्नुम में फेंका जाए [जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते
और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक पाँव से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाख़िल हो। 47-48 और
अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकाल देना। इससे पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम में
फेंका जाए जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती बेहतर यह है कि तू एक आँख
से महरूम होकर अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो।
49 क्योंकि हर एक को आग से नमकीन किया जाएगा [और हर एक क़ुरबानी नमक से नमकीन की जाएगी]।
50 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उसका ज़ायक़ा जाता रहे तो उसे क्योंकर दुबारा नमकीन किया जा सकता
है? अपने दरमियान नमक की खूबियाँ बरक़रार रखो और सुलह-सलामती से एक दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारो।"

10

तलाक़ के बारे में तालीम

1 फिर ईसा उस जगह को छोड़कर यहूदिया के इलाक़े में और दरियाए-यरदन के पार चला गया। वहाँ भी हुजूम
जमा हो गया। उसने उन्हें मामूल के मुताबिक़ तालीम दी।
2 कुछ फ़रीसी आए और उसे फँसाने की ग़रज़ से सवाल किया, "क्या जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को तलाक़
दे?"
3 ईसा ने उनसे पूछा, "मूसा ने शरीअत में तुमको क्या हिदायत की है?"
4 उन्होंने कहा, "उसने इजाज़त दी है कि आदमी तलाक़नामा लिखकर बीवी को रुख़सत कर दे।"
5 ईसा ने जवाब दिया, "मूसा ने तुम्हारी सख़्तदिली की वजह से तुम्हारे लिए यह हुक्म लिखा था। 6 लेकिन इब्तिदा
में ऐसा नहीं था। दुनिया की तख़लीक़ के वक़्त अल्लाह ने उन्हें मर्द और औरत बनाया। 7 'इसलिए मर्द अपने माँ-बाप
को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। 8 वह दोनों एक हो जाते हैं।' यों वह कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़
दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। 9 तो जिसे अल्लाह ने ख़ुद जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे।"
10 किसी घर में आकर शागिर्दों ने यह बात दुबारा छेड़कर ईसा से मज़ीद दरियाफ़्त किया। 11 उसने उन्हें बताया,
"जो अपनी बीवी को तलाक़ देकर किसी और से शादी करे वह उसके साथ ज़िना करता है। 12 और जो औरत अपने
ख़ाविंद को तलाक़ देकर किसी और से शादी करे वह भी ज़िना करती है।"

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को ईसा के पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। लेकिन शागिर्दों ने उनको मलामत
की। 14 यह देखकर ईसा नाराज़ हुआ। उसने उनसे कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि
अल्लाह की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है। 15 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो अल्लाह की बादशाही को बच्चे
की तरह क़बूल न करे वह उसमें दाख़िल नहीं होगा।" 16 यह कहकर उसने उन्हें गले लगाया और अपने हाथ उन पर
रखकर उन्हें बरकत दी।

अमीर मुश्किल से बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

17 जब ईसा रवाना होने लगा तो एक आदमी दौड़कर उसके पास आया और उसके सामने घुटने टेककर पूछा, "नेक
उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि अबदी ज़िंदगी मीरास में पाऊँ?"
18 ईसा ने पूछा, "तू मुझे नेक क्यों कहता है? कोई नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह। 19 तू शरीअत
के अहकाम से तो वाक़िफ़ है। क़त्ल न करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, धोका न देना, अपने
बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।"
20 आदमी ने जवाब दिया, "उस्ताद, मैंने जवानी से आज तक इन तमाम अहकाम की पैरवी की है।"
21 ईसा ने ग़ौर से उस की तरफ़ देखा। उसके दिल में उसके लिए प्यार उभर आया। वह बोला, "एक काम रह गया
है। जा, अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त करके पैसे ग़रीबों में तक़सीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो
जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।" 22 यह सुनकर आदमी का मुँह लटक गया और वह मायूस होकर चला
गया, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।
23 ईसा ने अपने इर्दगिर्द देखकर शागिर्दों से कहा, "दौलतमंदों के लिए अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होना
कितना मुश्किल है!"

24 शागिर्द उसके यह अलफ़ाज़ सुनकर हैरान हुए। लेकिन ईसा ने दुबारा कहा, “बच्चो! अल्लाह की बादशाही में
दाख़िल होना कितना मुश्किल है। 25 अमीर के अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होने की निसबत ज़्यादा आसान यह
है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।”
26 इस पर शागिर्द मज़ीद हैरतज़दा हुए और एक दूसरे से कहने लगे, “फिर किस को नजात मिल सकती है?”
27 ईसा ने ग़ौर से उनकी तरफ़ देखकर जवाब दिया, “यह इनसान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन अल्लाह के
लिए नहीं। उसके लिए सब कुछ मुमकिन है।”
28 फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं।”
29 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, जिसने भी मेरी और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर अपने
घर, भाइयों, बहनों, माँ, बाप, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है 30 उसे इस ज़माने में ईज़ारसानी के साथ साथ सौ
गुना ज़्यादा घर, भाई, बहनें, माएँ, बच्चे और खेत मिल जाएंगे। और आनेवाले ज़माने में उसे अबदी ज़िंदगी मिलेगी।
31 लेकिन बहुत-से लोग जो अब अव्वल हैं उस वक़्त आख़िर होंगे और जो अब आख़िर हैं वह अव्वल होंगे।”

ईसा तीसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

32 अब वह यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे थे और ईसा उनके आगे आगे चल रहा था। शागिर्द हैरतज़दा थे जबकि उनके
पीछे चलनेवाले लोग सहमे हुए थे। एक और दफ़ा बारह शागिर्दों को एक तरफ़ ले जाकर ईसा उन्हें वह कुछ बताने
लगा जो उसके साथ होने को था। 33 उसने कहा, “हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-आदम को राहनुमा
इमामों और शरीअत के उलमा के हवाले कर दिया जाएगा। वह उस पर सज़ाए-मौत का फ़तवा देकर उसे ग़ैरयहूदियों
के हवाले कर देंगे, 34 जो उसका मज़ाक़ उड़ाएँगे, उस पर थूकेंगे, उसको कोड़े मारेंगे और उसे क़त्ल करेंगे। लेकिन
तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

याक़ूब और यूहन्ना की गुज़ारिश

35 फिर ज़बदी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना उसके पास आए। वह कहने लगे, “उस्ताद, आपसे एक गुज़ारिश है।”
36 उसने पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?”
37 उन्होंने जवाब दिया, “जब आप अपने जलाली तख़्त पर बैठेंगे तो हममें से एक को अपने दाएँ हाथ बैठने दें और
दूसरे को बाएँ हाथ।”
38 ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने को हूँ या
वह बपतिस्मा ले सकते हो जो मैं लेने को हूँ?”
39 उन्होंने जवाब दिया, “जी, हम कर सकते हैं।” फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम ज़रूर वह प्याला पियोगे जो मैं
पीने को हूँ और वह बपतिस्मा लोगे जो मैं लेने को हूँ। 40 लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ
हाथ बैठेगा और कौन बाएँ हाथ। अल्लाह ने यह मक़ाम सिर्फ़ उन्हीं के लिए तैयार किया है जिनको उसने ख़ुद मुक़र्रर
किया है।”
41 जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें याक़ूब और यूहन्ना पर ग़ुस्सा आया। 42 इस पर ईसा ने उन सबको
बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि क़ौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब डालते हैं, और उनके बड़े अफ़सर उन पर
अपने इख़्तियार का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 43 लेकिन तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा होना चाहे वह
तुम्हारा ख़ादिम बने 44 और जो तुममें अव्वल होना चाहे वह सबका ग़ुलाम बने। 45 क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए
नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे और अपनी जान फ़िद्या के तौर पर देकर बहुतों को छुड़ाए।”

अंधे बरतिमाई की शफ़ा

46 वह यरीहू पहुँच गए। उसमें से गुज़रकर ईसा शागिर्दों और एक बड़े हुजूम के साथ बाहर निकलने लगा। वहाँ
एक अंधा भीक माँगनेवाला रास्ते के किनारे बैठा था। उसका नाम बरतिमाई (तिमाई का बेटा) था। 47 जब उसने सुना
कि ईसा नासरी क़रीब ही है तो वह चिल्लाने लगा, “ईसा इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”
48 बहुत-से लोगों ने उसे डाँटकर कहा, “ख़ामोश!” लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से पुकारता रहा, “इब्ने-दाऊद,
मुझ पर रहम करें!”
49 ईसा रुककर बोला, “उसे बुलाओ।”
चुनाँचे उन्होंने उसे बुलाकर कहा, “हौसला रख। उठ, वह तुझे बुला रहा है।”
50 बरतिमाई ने अपनी चादर ज़मीन पर फेंक दी और उछलकर ईसा के पास आया।
51 ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?”

उसने जवाब दिया, "उस्ताद, यह कि मैं देख सकूँ।"
52 ईसा ने कहा, "जा, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।"
ज्योंही ईसा ने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो गईं और वह ईसा के पीछे चलने लगा।

11

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

1 वह यरूशलम के क़रीब बैत-फ़गे और बैत-अनियाह पहुँचने लगे। यह गाँव ज़ैतून के पहाड़ पर वाक़े थे। ईसा ने
अपने शागिर्दों में से दो को भेजा 2 और कहा, "सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बँधा
हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है। उसे खोलकर यहाँ ले आओ। 3 अगर कोई पूछे कि यह
क्या कर रहे हो तो उसे बता देना, 'ख़ुदावंद को इसकी ज़रूरत है। वह जल्द ही इसे वापस भेज देंगे'।"
4 दोनों शागिर्द वहाँ गए तो एक जवान गधा देखा जो बाहर गली में किसी दरवाज़े के साथ बँधा हुआ था। जब वह
उस की रस्सी खोलने लगे 5 तो वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पूछा, "तुम यह क्या कर रहे हो? जवान गधे को क्यों खोल
रहे हो?"
6 उन्होंने जवाब में वह कुछ बता दिया जो ईसा ने उन्हें कहा था। इस पर लोगों ने उन्हें खोलने दिया। 7 वह जवान
गधे को ईसा के पास ले आए और अपने कपड़े उस पर रख दिए। फिर ईसा उस पर सवार हुआ। 8 जब वह चल पड़ा
तो बहुत-से लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने हरी शाख़ें भी उसके आगे बिछा दीं जो
उन्होंने खेतों के दरख़्तों से काट ली थीं। 9 लोग ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे और चिल्ला चिल्लाकर नारे लगा
रहे थे,

"होशाना! *
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। 10 मुबारक है हमारे बाप दाऊद की बादशाही जो आ रही है।
आसमान की बुलंदियों पर होशाना।" †

11 यों ईसा यरूशलम में दाख़िल हुआ। वह बैतुल-मुक़द्दस में गया और अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ाकर सब कुछ देखने
के बाद चला गया। चूँकि शाम का पिछला वक़्त था इसलिए वह बारह शागिर्दों समेत शहर से निकलकर बैत-अनियाह
वापस गया।

अंजीर के दरख़्त पर लानत

12 अगले दिन जब वह बैत-अनियाह से निकल रहे थे तो ईसा को भूक लगी। 13 उसने कुछ फ़ासले पर अंजीर का
एक दरख़्त देखा जिस पर पत्ते थे। इसलिए वह यह देखने के लिए उसके पास गया कि आया कोई फल लगा है या नहीं।
लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि पत्ते ही पत्ते हैं। वजह यह थी कि अंजीर का मौसम नहीं था। 14 इस पर ईसा
ने दरख़्त से कहा, "अब से हमेशा तक तुझसे फल खाया न जा सके!" उसके शागिर्दों ने उस की यह बात सुन ली।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

15 वह यरूशलम पहुँच गए। और ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उन्हें निकालने लगा जो वहाँ क़ुरबानियों के लिए
दरकार चीज़ों की ख़रीदो-फ़रोख़्त कर रहे थे। उसने सिक्कों का तबादला करनेवालों की मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों
की कुरसियाँ उलट दीं 16 और जो तिजारती माल लेकर बैतुल-मुक़द्दस के सहनों में से गुज़र रहे थे उन्हें रोक लिया।
17 तालीम देकर उसने कहा, "क्या कलामे-मुक़द्दस में नहीं लिखा है, 'मेरा घर तमाम क़ौमों के लिए दुआ का घर
कहलाएगा'? लेकिन तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।"
18 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने जब यह सुना तो उसे क़त्ल करने का मौक़ा ढूँडने लगे। क्योंकि वह
उससे डरते थे इसलिए कि पूरा हुजूम उस की तालीम से निहायत हैरान था।
19 जब शाम हुई तो ईसा और उसके शागिर्द शहर से निकल गए।

अंजीर के दरख़्त से सबक़

20 अगले दिन वह सुबह-सवेरे अंजीर के उस दरख़्त के पास से गुज़रे जिस पर ईसा ने लानत भेजी थी। जब उन्होंने
उस पर ग़ौर किया तो मालूम हुआ कि वह जड़ों तक सूख गया है। 21 तब पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कल
अंजीर के दरख़्त से की थी। उसने कहा, "उस्ताद, यह देखें! अंजीर के जिस दरख़्त पर आपने लानत भेजी थी वह
सूख गया है।"

---

* **11:9** होशाना (इबरानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है। † **11:10** होशाना (इबरानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

22 ईसा ने जवाब दिया, "अल्लाह पर ईमान रखो। 23 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अगर कोई इस पहाड़ से कहे,
'उठ, अपने आपको समुंदर में गिरा दे' तो यह हो जाएगा। शर्त सिर्फ़ यह है कि वह शक न करे बल्कि ईमान रखे कि
जो कुछ उसने कहा है वह उसके लिए हो जाएगा। 24 इसलिए मैं तुमको बताता हूँ, जब भी तुम दुआ करके कुछ माँगते
हो तो ईमान रखो कि तुमको मिल गया है। फिर वह तुम्हें ज़रूर मिल जाएगा। 25 और जब तुम खड़े होकर दुआ करते
हो तो अगर तुम्हें किसी से शिकायत हो तो पहले उसे मुआफ़ करो ताकि आसमान पर तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाहों को
मुआफ़ करे। 26 [और अगर तुम मुआफ़ न करो तो तुम्हारा आसमानी बाप तुम्हारे गुनाह भी मुआफ़ नहीं करेगा।]"

किसने ईसा को इख़्तियार दिया?

27 वह एक और दफ़ा यरूशलम पहुँच गए। और जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में फिर रहा था तो राहनुमा इमाम, शरीअत
के उलमा और बुज़ुर्ग उसके पास आए। 28 उन्होंने पूछा, "आप यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहे हैं? किसने
आपको यह करने का इख़्तियार दिया है?"
29 ईसा ने जवाब दिया, "मेरा भी तुमसे एक सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको बता दूँगा कि मैं यह किस
इख़्तियार से कर रहा हूँ। 30 मुझे बताओ, क्या यहया का बपतिस्मा आसमानी था या इनसानी?"
31 वह आपस में बहस करने लगे, "अगर हम कहें 'आसमानी' तो वह पूछेगा, 'तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न
लाए?' 32 लेकिन हम कैसे कह सकते हैं कि वह इनसानी था?" वजह यह थी कि वह आम लोगों से डरते थे, क्योंकि
सब मानते थे कि यहया वाक़ई नबी था। 33 चुनाँचे उन्होंने जवाब दिया, "हम नहीं जानते।"
ईसा ने कहा, "तो फिर मैं भी तुमको नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहा हूँ।"

12

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओं की बग़ावत

1 फिर वह तमसीलों में उनसे बात करने लगा। "किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़ लगाया। उसने उस की
चारदीवारी बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक गढ़े की खुदाई की और पहरेदारों के लिए बुर्ज तामीर किया।
फिर वह उसे मुज़ारेओं के सुपुर्द करके बैरूने-मुल्क चला गया। 2 जब अंगूर पक गए तो उसने अपने नौकर को मुज़ारेओं
के पास भेज दिया ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा वसूल करे। 3 लेकिन मुज़ारेओं ने उसे पकड़कर उस की पिटाई
की और उसे ख़ाली हाथ लौटा दिया। 4 फिर मालिक ने एक और नौकर को भेज दिया। लेकिन उन्होंने उस की भी
बेइज़्ज़ती करके उसका सर फोड़ दिया। 5 जब मालिक ने तीसरे नौकर को भेजा तो उन्होंने उसे मार डाला। यों उसने
कई एक को भेजा। बाज़ को उन्होंने मारा पीटा, बाज़ को क़त्ल किया। 6 आख़िरकार सिर्फ़ एक बाक़ी रह गया था। वह
था उसका प्यारा बेटा। अब उसने उसे भेजकर कहा, 'आख़िर मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।' 7 लेकिन मुज़ारे एक दूसरे
से कहने लगे, 'यह ज़मीन का वारिस है। आओ हम इसे मार डालें तो फिर इसकी मीरास हमारी ही होगी।' 8 उन्होंने
उसे पकड़कर क़त्ल किया और बाग़ से बाहर फेंक दिया।
9 अब बताओ, बाग़ का मालिक क्या करेगा? वह जाकर मुज़ारेओं को हलाक करेगा और बाग़ को दूसरों के सुपुर्द
कर देगा। 10 क्या तुमने कलामे-मुक़द्दस का यह हवाला नहीं पढ़ा,
'जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।
11 यह रब ने किया
और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है'।"
12 इस पर दीनी राहनुमाओं ने ईसा को गिरिफ़्तार करने की कोशिश की, क्योंकि वह समझ गए थे कि तमसील में
बयानशुदा मुज़ारे हम ही हैं। लेकिन वह हुजूम से डरते थे, इसलिए वह उसे छोड़कर चले गए।

क्या टैक्स देना जायज़ है?

13 बाद में उन्होंने कुछ फ़रीसियों और हेरोदेस के पैरोकारों को उसके पास भेज दिया ताकि वह उसे कोई ऐसी
बात करने पर उभारें जिससे उसे पकड़ा जा सके। 14 वह उसके पास आकर कहने लगे, "उस्ताद, हम जानते हैं कि
आप सच्चे हैं और किसी की परवा नहीं करते। आप जानिबदार नहीं होते बल्कि दियानतदारी से अल्लाह की राह की
तालीम देते हैं। अब हमें बताएँ कि क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़? क्या हम अदा करें या न
करें?"
15 लेकिन ईसा ने उनकी रियाकारी जानकर उनसे कहा, "मुझे क्यों फँसाना चाहते हो? चाँदी का एक रोमी सिक्का
मेरे पास ले आओ।"

16 वह एक सिक्का उसके पास ले आए तो उसने पूछा, “किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा है?” उन्होंने जवाब
दिया, “शहनशाह का।”
17 उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।”
उसका यह जवाब सुनकर उन्होंने बड़ा ताज्जुब किया।

क्या हम जी उठेंगे?

18 फिर कुछ सदूक़ी ईसा के पास आए। सदूक़ी नहीं मानते कि रोज़े-क़ियामत मुरदे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक
सवाल किया, 19 “उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका
भाई हो तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 20 अब फ़र्ज़ करें कि सात
भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। 21 इस पर दूसरे ने उससे शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद
मर गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी की। 22 यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद दीगरे हर भाई
बेवा से शादी करने के बाद मर गया। आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 23 अब बताएँ कि क़ियामत के दिन वह किसकी
बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।”
24 ईसा ने जवाब दिया, “तुम इसलिए ग़लती पर हो कि न तुम कलामे-मुक़द्दस से वाक़िफ़ हो, न अल्लाह की क़ुदरत
से। 25 क्योंकि जब मुरदे जी उठेंगे तो न वह शादी करेंगे न उनकी शादी कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फ़रिश्तों
की मानिंद होंगे। 26 रही यह बात कि मुरदे जी उठेंगे। क्या तुमने मूसा की किताब में नहीं पढ़ा कि अल्लाह जलती हुई
झाड़ी में से किस तरह मूसा से हमकलाम हुआ? उसने फ़रमाया, ‘मैं इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब
का ख़ुदा हूँ,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अरसे से मर चुके थे। 27 इसका मतलब है कि यह हक़ीक़त में ज़िंदा हैं,
क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं, बल्कि ज़िंदों का ख़ुदा है। तुमसे बड़ी ग़लती हुई है।”

अव्वल हुक्म

28 इतने में शरीअत का एक आलिम उनके पास आया। उसने उन्हें बहस करते हुए सुना था और जान लिया कि ईसा
ने अच्छा जवाब दिया, इसलिए उसने पूछा, “तमाम अहकाम में से कौन-सा हुक्म सबसे अहम है?”
29 ईसा ने जवाब दिया, “अव्वल हुक्म यह है : ‘सुन ऐ इसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब है। 30 रब अपने
ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपने पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना।’ 31 दूसरा हुक्म यह
है : ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ दीगर कोई भी हुक्म इन दो अहकाम से
अहम नहीं है।”
32 उस आलिम ने कहा, “शाबाश, उस्ताद! आपने सच कहा है कि अल्लाह सिर्फ़ एक ही है और उसके सिवा
कोई और नहीं है। 33 हमें उसे अपने पूरे दिल, अपने पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना चाहिए और साथ
साथ अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखनी चाहिए जैसी अपने आपसे रखते हैं। यह दो अहकाम भस्म होनेवाली तमाम
क़ुरबानियों और दीगर नज़रों से ज़्यादा अहमियत रखते हैं।”
34 जब ईसा ने उसका यह जवाब सुना तो उससे कहा, “तू अल्लाह की बादशाही से दूर नहीं है।”
इसके बाद किसी ने भी उससे सवाल पूछने की जुर्रत न की।

मसीह के बारे में सवाल

35 जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था तो उसने पूछा, “शरीअत के उलमा क्यों दावा करते हैं कि मसीह
दाऊद का फ़रज़ंद है? 36 क्योंकि दाऊद ने तो ख़ुद रूहुल-क़ुद्स की मारिफ़त यह फ़रमाया,
‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’
37 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह दाऊद का फ़रज़ंद हो सकता है?”

शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहना

एक बड़ा हुजूम मज़े से ईसा की बातें सुन रहा था। 38 उन्हें तालीम देते वक़्त उसने कहा, “उलमा से ख़बरदार रहो!
क्योंकि वह शानदार चोग़े पहनकर इधर उधर फिरना पसंद करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़्ज़त
करते हैं तो फिर वह ख़ुश हो जाते हैं। 39 उनकी बस एक ही ख़ाहिश होती है कि इबादतख़ानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त
की कुरसियों पर बैठ जाएँ। 40 यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लंबी लंबी
दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख़्त सज़ा मिलेगी।”

बेवा का चंदा

41 ईसा बैतुल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स के मुक़ाबिल बैठ गया और हुजूम को हदिये डालते हुए देखने लगा। कई
अमीर बड़ी बड़ी रक़में डाल रहे थे। 42 फिर एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-से सिक्के
डाल दिए। 43 ईसा ने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम
लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है। 44 क्योंकि इन सबने अपनी दौलत की कसरत से दे दिया जबकि उसने ज़रूरतमंद
होने के बावुजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।"

13

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

1 उस दिन जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस से निकल रहा था तो उसके शागिर्दों ने कहा, "उस्ताद, देखें कितने शानदार पत्थर
और इमारतें हैं!"
2 ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुमको यह बड़ी बड़ी इमारतें नज़र आती हैं? पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा। सब कुछ
ढा दिया जाएगा।"

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

3 बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैतुल-मुक़द्दस के मुक़ाबिल बैठ गया। पतरस, याक़ूब, यूहन्ना और अंदरियास
अकेले उसके पास आए। उन्होंने कहा, 4 "हमें ज़रा बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिससे मालूम होगा
कि यह अब पूरा होने को है?"
5 ईसा ने जवाब दिया, "ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। 6 बहुत-से लोग मेरा नाम लेकर आएँगे और
कहेंगे, 'मैं ही मसीह हूँ।' यों वह बहुतों को गुमराह कर देंगे। 7 जब जंगों की ख़बरें और अफ़वाहें तुम तक पहुँचेंगी तो
मत घबराना। क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी अभी आख़िरत नहीं होगी। 8 एक क़ौम दूसरी के
ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी और एक बादशाही दूसरी के ख़िलाफ़। जगह जगह ज़लज़ले आएँगे, काल पड़ेंगे। लेकिन यह
सिर्फ़ दर्दे-ज़ह की इब्तिदा ही होगी।
9 तुम ख़ुद ख़बरदार रहो। तुमको मक़ामी अदालतों के हवाले कर दिया जाएगा और लोग यहूदी इबादतख़ानों में
तुम्हें कोड़े लगवाएँगे। मेरी ख़ातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया जाएगा। यों तुम उन्हें मेरी गवाही
दोगे। 10 लाज़िम है कि आख़िरत से पहले अल्लाह की ख़ुशख़बरी तमाम अक़वाम को सुनाई जाए। 11 लेकिन जब
लोग तुमको गिरिफ़्तार करके अदालत में पेश करेंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ। बस वही
कुछ कहना जो अल्लाह तुम्हें उस वक़्त बताएगा। क्योंकि उस वक़्त तुम नहीं बल्कि रूहुल-क़ुदुस बोलनेवाला होगा।
12 भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले कर देगा। बच्चे अपने वालिदैन के ख़िलाफ़ खड़े होकर
उन्हें क़त्ल करवाएँगे। 13 सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आख़िर तक क़ायम
रहेगा उसे नजात मिलेगी।

बैतुल-मुक़द्दस की बेहुरमती

14 एक दिन आएगा जब तुम वहाँ जहाँ उसे नहीं होना चाहिए वह कुछ खड़ा देखोगे जो बेहुरमती और तबाही का
बाइस है।" (क़ारी इस पर ध्यान दे!) "उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। 15 जो
अपने घर की छत पर हो वह न उतरे, न कुछ साथ ले जाने के लिए घर में दाख़िल हो जाए। 16 जो खेत में हो वह अपनी
चादर साथ ले जाने के लिए वापस न जाए। 17 उन ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों
को दूध पिलाती हों। 18 दुआ करो कि यह वाक़िया सर्दियों के मौसम में पेश न आए। 19 क्योंकि उन दिनों में ऐसी
मुसीबत होगी कि दुनिया की तख़लीक़ से आज तक देखने में न आई होगी। इस क़िस्म की मुसीबत बाद में भी कभी
नहीं आएगी। 20 और अगर ख़ुदावंद इस मुसीबत का दौरानिया मुख़तसर न करता तो कोई न बचता। लेकिन उसने
अपने चुने हुओं की ख़ातिर उसका दौरानिया मुख़तसर कर दिया है।
21 उस वक़्त अगर कोई तुमको बताए, 'देखो, मसीह यहाँ है,' या 'वह वहाँ है' तो उस की बात न मानना। 22 क्योंकि
झूटे मसीह और झूटे नबी उठ खड़े होंगे जो अजीबो-ग़रीब निशान और मोजिज़े दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए
लोगों को ग़लत रास्ते पर डाल दें—अगर यह मुमकिन होता। 23 इसलिए ख़बरदार! मैंने तुमको पहले ही इन सब बातों
से आगाह कर दिया है।

इब्ने-आदम की आमद

24 मुसीबत के उन दिनों के बाद सूरज तारीक हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी। 25 सितारे आसमान
पर से गिर पड़ेंगे और आसमान की क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 26 उस वक़्त लोग इब्ने-आदम को बड़ी क़ुदरत और जलाल
के साथ बादलों में आते हुए देखेंगे। 27 और वह अपने फ़रिश्तों को भेज देगा ताकि उसके चुने हुओं को चारों तरफ़ से
जमा करें, दुनिया के कोने कोने से आसमान की इंतहा तक इकट्ठा करें।

अंजीर के दरख़्त से सबक़

28 अंजीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। ज्योंही उस की शाख़ें नरम और लचकदार हो जाती हैं और उनसे कोंपलें फूट
निकलती हैं तो तुमको मालूम हो जाता है कि गरमियों का मौसम क़रीब आ गया है। 29 इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात
देखोगे तो जान लोगे कि इब्ने-आदम की आमद क़रीब बल्कि दरवाज़े पर है। 30 मैं तुमको सच बताता हूँ, इस नसल
के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 31 आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक
क़ायम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

32 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन या कौन-सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के फ़रिश्तों और
फ़रज़ंद को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को। 33 चुनाँचे ख़बरदार और चौकन्ने रहो! क्योंकि तुमको नहीं मालूम
कि यह वक़्त कब आएगा। 34 इब्ने-आदम की आमद उस आदमी से मुताबिक़त रखती है जिसे किसी सफ़र पर जाना
था। घर छोड़ते वक़्त उसने अपने नौकरों को इंतज़ाम चलाने का इख़्तियार देकर हर एक को उस की अपनी ज़िम्मादारी
सौंप दी। दरबान को उसने हुक्म दिया कि वह चौकस रहे। 35 तुम भी इसी तरह चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते
कि घर का मालिक कब वापस आएगा, शाम को, आधी रात को, मुरग़ के बाँग देते या पौ फटते वक़्त। 36 ऐसा न हो
कि वह अचानक आकर तुमको सोते पाए। 37 यह बात मैं न सिर्फ़ तुमको बल्कि सबको बताता हूँ, चौकस रहो!"

14

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

1 फ़सह और बेख़मीरी रोटी की ईद क़रीब आ गई थी। सिर्फ़ दो दिन रह गए थे। राहनुमा इमाम और शरीअत के
उलमा ईसा को किसी चालाकी से गिरिफ़्तार करके क़त्ल करने की तलाश में थे। 2 उन्होंने कहा, "लेकिन यह ईद के
दौरान नहीं होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम में हलचल मच जाए।"

ख़ातून ईसा पर ख़ुशबू उंडेलती है

3 इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक आदमी के घर में दाख़िल हुआ जो किसी वक़्त कोढ़ का मरीज़ था। उसका
नाम शमौन था। ईसा खाना खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत आई। उसके पास ख़ालिस जटामासी के निहायत
क़ीमती इत्र का इत्रदान था। उसका सर तोड़कर उसने इत्र ईसा के सर पर उंडेल दिया। 4 हाज़िरीन में से कुछ नाराज़
हुए। "इतना क़ीमती इत्र ज़ाया करने की क्या ज़रूरत थी? 5 इसकी क़ीमत कम अज़ कम चाँदी के 300 सिक्के थी।
अगर इसे बेचा जाता तो इसके पैसे ग़रीबों को दिए जा सकते थे।" ऐसी बातें करते हुए उन्होंने उसे झिड़का।
6 लेकिन ईसा ने कहा, "इसे छोड़ दो, तुम इसे क्यों तंग कर रहे हो? इसने तो मेरे लिए एक नेक काम किया है।
7 ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, और तुम जब भी चाहो उनकी मदद कर सकोगे। लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं
रहूँगा। 8 जो कुछ वह कर सकती थी उसने किया है। मुझ पर इत्र उंडेलने से वह मुक़र्ररा वक़्त से पहले मेरे बदन को
दफ़नाने के लिए तैयार कर चुकी है। 9 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में जहाँ भी अल्लाह की ख़ुशख़बरी
का एलान किया जाएगा वहाँ लोग इस ख़ातून को याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इसने किया है।"

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

10 फिर यहूदाह इस्करियोती जो बारह शागिर्दों में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया ताकि ईसा को उनके
हवाले करने की बात करे। 11 उसके आने का मक़सद सुनकर वह ख़ुश हुए और उसे पैसे देने का वादा किया। चुनाँचे
वह ईसा को उनके हवाले करने का मौक़ा ढूँडने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

12 बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब लोग फ़सह के लेले को क़ुरबान करते थे। ईसा के शागिर्दों ने उससे पूछा, "हम
कहाँ आपके लिए फ़सह का खाना तैयार करें?"
13 चुनाँचे ईसा ने उनमें से दो को यह हिदायत देकर यरूशलम भेज दिया कि "जब तुम शहर में दाख़िल होगे तो
तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उसके पीछे हो लेना। 14 जिस घर में

वह दाख़िल हो उसके मालिक से कहना, 'उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ
फ़सह का खाना खाऊँ?' 15 वह तुम्हें दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। वह तैयार होगा।
हमारे लिए फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।"
16 दोनों चले गए तो शहर में दाख़िल होकर सब कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह
का खाना तैयार किया।

ग़द्दार कौन है?
17 शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों समेत वहाँ पहुँच गया। 18 जब वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे तो उसने कहा,
"मैं तुमको सच बताता हूँ, तुममें से एक जो मेरे साथ खाना खा रहा है मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।"
19 शागिर्द यह सुनकर ग़मगीन हुए। बारी बारी उन्होंने उससे पूछा, "मैं तो नहीं हूँ?"
20 ईसा ने जवाब दिया, "तुम बारह में से एक है। वह मेरे साथ अपनी रोटी सालन के बरतन में डाल रहा है।
21 इब्ने-आदम तो कूच कर जाएगा जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन उस शख़्स पर अफ़सोस जिसके
वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके लिए बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न होता।"

फ़सह का आख़िरी खाना
22 खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे दिया। उसने
कहा, "यह लो, यह मेरा बदन है।"
23 फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे उन्हें दे दिया। सबने उसमें से पी लिया। 24 उसने
उनसे कहा, "यह मेरा ख़ून है, नए अहद का वह ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है। 25 मैं तुमको सच बताता हूँ
कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे नए सिरे से अल्लाह की बादशाही में ही पियूँगा।"
26 फिर वह एक ज़बूर गाकर निकले और ज़ैतून के पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इनकार की पेशगोई
27 ईसा ने उन्हें बताया, "तुम सब बरगश्ता हो जाओगे, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में अल्लाह फ़रमाता है, 'मैं चरवाहे
को मार डालूँगा और भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।' 28 लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे आगे गलील
पहुँचूँगा।"
29 पतरस ने एतराज़ किया, "दूसरे बेशक सब बरगश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा।"
30 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ, इसी रात मुरग़ के दूसरी दफ़ा बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार
मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।"
31 पतरस ने इसरार किया, "हरगिज़ नहीं! मैं आपको जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे आपके साथ
मरना भी पड़े।"
दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ
32 वह एक बाग़ में पहुँचे जिसका नाम गत्समनी था। ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "यहाँ बैठकर मेरा इंतज़ार
करो। मैं दुआ करने के लिए आगे जाता हूँ।" 33 उसने पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को साथ लिया। वहाँ वह घबराकर
बेक़रार होने लगा। 34 उसने उनसे कहा, "मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर जागते रहो।"
35 कुछ आगे जाकर वह ज़मीन पर गिर गया और दुआ करने लगा कि अगर मुमकिन हो तो मुझे आनेवाली घड़ियों
की तकलीफ़ से गुज़रना न पड़े। 36 उसने कहा, "ऐ अब्बा, ऐ बाप! तेरे लिए सब कुछ मुमकिन है। दुख का यह प्याला
मुझसे हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।"
37 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से कहा, "शमौन, क्या तू सो
रहा है? क्या तू एक घंटा भी नहीं जाग सका? 38 जागते और दुआ करते रहो ताकि तुम आज़माइश में न पड़ो। क्योंकि
रूह तो तैयार है, लेकिन जिस्म कमज़ोर।"
39 एक बार फिर उसने जाकर वही दुआ की जो पहले की थी। 40 जब वापस आया तो दुबारा देखा कि वह सो रहे
हैं, क्योंकि नींद की बदौलत उनकी आँखें बोझल थीं। वह नहीं जानते थे कि क्या जवाब दें।
41 जब ईसा तीसरी बार वापस आया तो उसने उनसे कहा, "तुम अभी तक सो और आराम कर रहे हो? बस काफ़ी
है। वक़्त आ गया है। देखो, इब्ने-आदम को गुनाहगारों के हवाले किया जा रहा है। 42 उठो। आओ, चलें। देखो, मुझे
दुश्मन के हवाले करनेवाला क़रीब आ चुका है।"

ईसा की गिरिफ़्तारी

43 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदाह पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके साथ तलवारों
और लाठियों से लैस आदमियों का हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और बुज़ुर्गों ने भेजा था। 44 इस
ग़द्दार यहूदाह ने उन्हें एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको मैं बोसा दूँ वही ईसा है। उसे गिरिफ़्तार करके ले
जाएँ।

45 ज्योंही वह पहुँचे यहूदाह ईसा के पास गया और “उस्ताद!” कहकर उसे बोसा दिया। 46 इस पर उन्होंने उसे
पकड़कर गिरिफ़्तार कर लिया। 47 लेकिन ईसा के पास खड़े एक शख़्स ने अपनी तलवार मियान से निकाली और
इमामे-आज़म के ग़ुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया। 48 ईसा ने उनसे पूछा, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें
और लाठियाँ लिए मुझे गिरिफ़्तार करने निकले हो? 49 मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तुम्हारे पास था और तालीम
देता रहा, मगर तुमने मुझे गिरिफ़्तार नहीं किया। लेकिन यह इसलिए हो रहा है ताकि कलामे-मुक़द्दस की बातें पूरी हो
जाएँ।”

50 फिर सबके सब उसे छोड़कर भाग गए।

51 लेकिन एक नौजवान ईसा के पीछे पीछे चलता रहा जो सिर्फ़ चादर ओढ़े हुए था। लोगों ने उसे पकड़ने की
कोशिश की, 52 लेकिन वह चादर छोड़कर नंगी हालत में भाग गया।

यहूदी अदालते-आलिया के सामने

53 वह ईसा को इमामे-आज़म के पास ले गए जहाँ तमाम राहनुमा इमाम, बुज़ुर्ग और शरीअत के उलमा भी जमा थे।
54 इतने में पतरस कुछ फ़ासले पर ईसा के पीछे पीछे इमामे-आज़म के सहन तक पहुँच गया। वहाँ वह मुलाज़िमों के
साथ बैठकर आग तापने लगा। 55 मकान के अंदर राहनुमा इमाम और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम अफ़राद ईसा
के ख़िलाफ़ गवाहियाँ ढूँड रहे थे ताकि उसे सज़ाए-मौत दिलवा सकें। लेकिन कोई गवाही न मिली। 56 काफ़ी लोगों ने
उसके ख़िलाफ़ झूटी गवाही तो दी, लेकिन उनके बयान एक दूसरे के मुतज़ाद थे।

57 आख़िरकार बाज़ ने खड़े होकर यह झूटी गवाही दी, 58 “हमने इसे यह कहते सुना है कि मैं इनसान के हाथों के
बने इस बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर तीन दिन के अंदर अंदर नया मक़दिस तामीर कर दूँगा, एक ऐसा मक़दिस जो इनसान
के हाथ नहीं बनाएँगे।” 59 लेकिन उनकी गवाहियाँ भी एक दूसरी से मुतज़ाद थीं।

60 फिर इमामे-आज़म ने हाज़िरीन के सामने खड़े होकर ईसा से पूछा, “क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या
गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे ख़िलाफ़ दे रहे हैं?”

61 लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। उसने कोई जवाब न दिया। इमामे-आज़म ने उससे एक और सवाल किया, “क्या तू
अल-हमीद का फ़रज़ंद मसीह है?”

62 ईसा ने कहा, “जी, मैं हूँ। और आइंदा तुम इब्ने-आदम को क़ादिरे-मुतलक़ के दहने हाथ बैठे और आसमान के
बादलों पर आते हुए देखोगे।”

63 इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, “हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत
रही! 64 आपने ख़ुद सुन लिया है कि इसने कुफ़्र बका है। आपका क्या फ़ैसला है?”

सबने उसे सज़ाए-मौत के लायक़ क़रार दिया।

65 फिर कुछ उस पर थूकने लगे। उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँधी और उसे मुक्के मार मारकर कहने लगे,
“नबुव्वत कर!” मुलाज़िमों ने भी उसे थप्पड़ मारे।

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

66 इस दौरान पतरस नीचे सहन में था। इमामे-आज़म की एक नौकरानी वहाँ से गुज़री 67 और देखा कि पतरस वहाँ
आग ताप रहा है। उसने ग़ौर से उस पर नज़र की और कहा, “तुम भी नासरत के उस आदमी ईसा के साथ थे।”

68 लेकिन उसने इनकार किया, “मैं नहीं जानता या समझता कि तू क्या बात कर रही है।” यह कहकर वह गेट के
क़रीब चला गया। [उसी लमहे मुरग़ ने बाँग दी।]

69 जब नौकरानी ने उसे वहाँ देखा तो उसने दुबारा पास खड़े लोगों से कहा, “यह बंदा उनमें से है।” 70 दुबारा
पतरस ने इनकार किया।

थोड़ी देर के बाद पतरस के साथ खड़े लोगों ने भी उससे कहा, “तुम ज़रूर उनमें से हो क्योंकि तुम गलील के
रहनेवाले हो।”

71 इस पर पतरस ने क़सम खाकर कहा, “मुझ पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं उस आदमी को नहीं जानता
जिसका ज़िक्र तुम कर रहे हो।”

72 फ़ौरन मुरग़ की बाँग दूसरी मरतबा सुनाई दी। फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने उससे कही थी,
"मुरग़ के दूसरी दफ़ा बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।" इस पर वह रो पड़ा।

15

पीलातुस के सामने

1 सुबह-सवेरे ही राहनुमा इमाम बुज़ुर्गों, शरीअत के उलमा और पूरी यहूदी अदालते-आलिया के साथ मिलकर
फ़ैसले तक पहुँच गए। वह ईसा को बाँधकर वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले कर दिया। 2 पीलातुस
ने उससे पूछा, "क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?"

ईसा ने जवाब दिया, "जी, आप ख़ुद कहते हैं।"

3 राहनुमा इमामों ने उस पर बहुत इलज़ाम लगाए। 4 चुनाँचे पीलातुस ने दुबारा उससे सवाल किया, "क्या तुम कोई
जवाब नहीं दोगे? यह तो तुम पर बहुत-से इलज़ामात लगा रहे हैं।"

5 लेकिन ईसा ने इस पर भी कोई जवाब न दिया, और पीलातुस बड़ा हैरान हुआ।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

6 उन दिनों यह रिवाज था कि हर साल फ़सह की ईद पर एक क़ैदी को रिहा कर दिया जाता था। यह क़ैदी अवाम से
मुंतख़ब किया जाता था। 7 उस वक़्त कुछ आदमी जेल में थे जो हुकूमत के ख़िलाफ़ किसी इंकलाबी तहरीक में शरीक
हुए थे और जिन्होंने बग़ावत के मौक़े पर क़त्लो-ग़ारत की थी। उनमें से एक का नाम बर-अब्बा था। 8 अब हुजूम ने
पीलातुस के पास आकर उससे गुज़ारिश की कि वह मामूल के मुताबिक़ एक क़ैदी को आज़ाद कर दे। 9 पीलातुस ने
पूछा, "क्या तुम चाहते हो कि मैं यहूदियों के बादशाह को आज़ाद कर दूँ?" 10 वह जानता था कि राहनुमा इमामों ने
ईसा को सिर्फ़ हसद की बिना पर उसके हवाले किया है।

11 लेकिन राहनुमा इमामों ने हुजूम को उकसाया कि वह ईसा के बजाए बर-अब्बा को माँगें। 12 पीलातुस ने सवाल
किया, "फिर मैं इसके साथ क्या करूँ जिसका नाम तुमने यहूदियों का बादशाह रखा है?"

13 वह चीख़े, "उसे मसलूब करें।"

14 पीलातुस ने पूछा, "क्यों? उसने क्या जुर्म किया है?"

लेकिन लोग मज़ीद शोर मचाकर चीख़ते रहे, "उसे मसलूब करें!"

15 चुनाँचे पीलातुस ने हुजूम को मुतमइन करने की ख़ातिर बर-अब्बा को आज़ाद कर दिया। उसने ईसा को कोड़े
लगाने को कहा, फिर उसे मसलूब करने के लिए फ़ौजियों के हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

16 फ़ौजी ईसा को गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के सहन में ले गए और पूरी पलटन को इकट्ठा किया। 17 उन्होंने
उसे अरग़वानी रंग का लिबास पहनाया और काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। 18 फिर
वह उसे सलाम करने लगे, "ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!" 19 लाठी से उसके सर पर मार मारकर वह उस पर थूकते
रहे। घुटने टेककर उन्होंने उसे सिजदा किया। 20 फिर उसका मज़ाक़ उड़ाने से थककर उन्होंने अरग़वानी लिबास
उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े पहनाए। फिर वह उसे मसलूब करने के लिए बाहर ले गए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

21 उस वक़्त लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला एक आदमी बनाम शमौन देहात से शहर को आ रहा था। वह
सिकंदर और रूफ़ुस का बाप था। जब वह ईसा और फ़ौजियों के पास से गुज़रने लगा तो फ़ौजियों ने उसे सलीब उठाने
पर मजबूर किया। 22 यों चलते चलते वह ईसा को एक मक़ाम पर ले गए जिसका नाम गुलगुता (यानी खोपड़ी का
मक़ाम) था। 23 वहाँ उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें मुर मिलाया गया था, लेकिन उसने पीने से इनकार किया। 24 फिर
फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए कि किस को क्या क्या
मिलेगा उन्होंने क़ुरा डाला। 25 नौ बजे सुबह का वक़्त था जब उन्होंने उसे मसलूब किया। 26 एक तख़्ती सलीब पर
लगा दी गई जिस पर यह इलज़ाम लिखा था, "यहूदियों का बादशाह।" 27 दो डाकुओं को भी ईसा के साथ मसलूब
किया गया, एक को उसके दहने हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ। 28 [यों मुक़द्दस कलाम का वह हवाला पूरा हुआ
जिसमें लिखा है, 'उसे मुजरिमों में शुमार किया गया।']

29 जो वहाँ से गुज़रे उन्होंने कुफ़्र बककर उस की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी हिक़ारत का इज़हार
किया। उन्होंने कहा, "तूने तो कहा था कि मैं बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर
दूँगा। 30 अब सलीब पर से उतरकर अपने आपको बचा!"
31 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने भी ईसा का मज़ाक़ उड़ाकर कहा, "इसने औरों को बचाया, लेकिन
अपने आपको नहीं बचा सकता। 32 इसराईल का यह बादशाह मसीह अब सलीब पर से उतर आए ताकि हम यह
देखकर ईमान लाएँ।" और जिन आदमियों को उसके साथ मसलूब किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

33 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 34 फिर तीन बजे ईसा ऊँची
आवाज़ से पुकार उठा, "एली, एली, लमा शबक़्तनी?" जिसका मतलब है, "ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों
तर्क कर दिया है?"
35 यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे, "वह इलियास नबी को बुला रहा है।" 36 किसी ने दौड़कर मै के
सिरके में एक इस्फ़ंज डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश की। वह बोला, "आओ हम देखें,
शायद इलियास आकर उसे सलीब पर से उतार ले।"
37 लेकिन ईसा ने बड़े ज़ोर से चिल्लाकर दम छोड़ दिया।
38 उसी वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो हिस्सों
में फट गया। 39 जब ईसा के मुक़ाबिल खड़े रोमी अफ़सर * ने देखा कि वह किस तरह मरा तो उसने कहा, "यह
आदमी वाक़ई अल्लाह का फ़रज़ंद था!"
40 कुछ ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासले पर उसका मुशाहदा कर रही थीं। उनमें मरियम मग्दलीनी, छोटे
याक़ूब और योसेस की माँ मरियम और सलोमी भी थीं। 41 गलील में यह औरतें ईसा के पीछे चलकर इसकी ख़िदमत
करती रही थीं। कई और ख़वातीन भी वहाँ थीं जो उसके साथ यरूशलम आ गई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

42 यह सब कुछ जुमे को हुआ जो अगले दिन के सबत के लिए तैयारी का दिन था। जब शाम होने को थी 43 तो
अरिमतियाह का एक आदमी बनाम यूसुफ़ हिम्मत करके पीलातुस के पास गया और उससे ईसा की लाश माँगी। (यूसुफ़
यहूदी अदालते-आलिया का नामवर मेंबर था और अल्लाह की बादशाही के आने के इंतज़ार में था।) 44 पीलातुस यह
सुनकर हैरान हुआ कि ईसा मर चुका है। उसने रोमी अफ़सर को बुलाकर उससे पूछा कि क्या ईसा वाक़ई मर चुका है?
45 जब अफ़सर ने इसकी तसदीक़ की तो पीलातुस ने यूसुफ़ को लाश दे दी। 46 यूसुफ़ ने कफ़न ख़रीद लिया, फिर ईसा
की लाश उतारकर उसे कतान के कफ़न में लपेटा और एक क़ब्र में रख दिया जो चटान में तराशी गई थी। आख़िर में
उसने एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर क़ब्र का मुँह बंद कर दिया। 47 मरियम मग्दलीनी और योसेस की माँ मरियम ने देख
लिया कि ईसा की लाश कहाँ रखी गई है।

16

ईसा जी उठता है

1 हफ़्ते की शाम को जब सबत का दिन गुज़र गया तो मरियम मग्दलीनी, याक़ूब की माँ मरियम और सलोमी ने
ख़ुशबूदार मसाले ख़रीद लिए, क्योंकि वह क़ब्र के पास जाकर उन्हें ईसा की लाश पर लगाना चाहती थीं। 2 चुनाँचे
वह इतवार को सुबह-सवेरे ही क़ब्र पर गईं। सूरज तुलू हो रहा था। 3 रास्ते में वह एक दूसरे से पूछने लगीं, "कौन हमारे
लिए क़ब्र के मुँह से पत्थर को लुढ़काएगा?" 4 लेकिन जब वहाँ पहुँचीं और नज़र उठाकर क़ब्र पर ग़ौर किया तो देखा
कि पत्थर को एक तरफ़ लुढ़काया जा चुका है। यह पत्थर बहुत बड़ा था। 5 वह क़ब्र में दाख़िल हुईं। वहाँ एक जवान
आदमी नज़र आया जो सफ़ेद लिबास पहने हुए दाईं तरफ़ बैठा था। वह घबरा गईं।
6 उसने कहा, "मत घबराओ। तुम ईसा नासरी को ढूँड रही हो जो मसलूब हुआ था। वह जी उठा है, वह यहाँ नहीं
है। उस जगह को ख़ुद देख लो जहाँ उसे रखा गया था। 7 अब जाओ, उसके शागिर्दों और पतरस को बता दो कि वह
तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वहीं तुम उसे देखोगे, जिस तरह उसने तुमको बताया था।"
8 ख़वातीन लरज़ती और उलझी हुई हालत में क़ब्र से निकलकर भाग गईं। उन्होंने किसी को भी कुछ न बताया,
क्योंकि वह निहायत सहमी हुई थीं।

ईसा मरियम मग्दलीनी पर ज़ाहिर होता है

* **15:39** सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

9 जब ईसा इतवार को सुबह-सवेरे जी उठा तो पहला शख़्स जिस पर वह ज़ाहिर हुआ मरियम मग्दलीनी थी जिससे
उसने सात बदरूहें निकाली थीं। 10 मरियम ईसा के साथियों के पास गई जो मातम कर रहे और रो रहे थे। उसने उन्हें
जो कुछ हुआ था बताया। 11 लेकिन गो उन्होंने सुना कि ईसा ज़िंदा है और कि मरियम ने उसे देखा है तो भी उन्हें
यक़ीन न आया।

ईसा मज़ीद दो शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

12 इसके बाद ईसा दूसरी सूरत में उनमें से दो पर ज़ाहिर हुआ जब वह यरूशलम से देहात की तरफ़ पैदल चल रहे
थे। 13 दोनों ने वापस जाकर यह बात बाक़ी लोगों को बताई। लेकिन उन्हें इनका भी यक़ीन न आया।

ईसा ग्यारह रसूलों पर ज़ाहिर होता है

14 आख़िर में ईसा ग्यारह शागिर्दों पर भी ज़ाहिर हुआ। उस वक़्त वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे। उसने उन्हें
उनकी बेएतक़ादी और सख़्तदिली के सबब से डाँटा, कि उन्होंने उनका यक़ीन न किया जिन्होंने उसे ज़िंदा देखा था।
15 फिर उसने उनसे कहा, "पूरी दुनिया में जाकर तमाम मख़लूक़ात को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाओ। 16 जो भी
ईमान लाकर बपतिस्मा ले उसे नजात मिलेगी। लेकिन जो ईमान न लाए उसे मुजरिम क़रार दिया जाएगा। 17 और जहाँ
जहाँ लोग ईमान रखेंगे वहाँ यह इलाही निशान ज़ाहिर होंगे : वह मेरे नाम से बदरूहें निकाल देंगे, नई नई ज़बानें बोलेंगे
18 और साँपों को उठाकर महफ़ूज़ रहेंगे। मोहलक ज़हर पीने से उन्हें नुक़सान नहीं पहुँचेगा और जब वह अपने हाथ
मरीज़ों पर रखेंगे तो शफ़ा पाएँगे।"

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

19 उनसे बात करने के बाद ख़ुदावंद ईसा को आसमान पर उठा लिया गया और वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ
गया। 20 इस पर शागिर्दों ने निकलकर हर जगह मुनादी की। और ख़ुदावंद ने उनकी हिमायत करके इलाही निशानों से
कलाम की तसदीक़ की।

लूक़ा

पेशलफ़्ज़
1 मुहतरम थियुफ़िलुस, बहुत-से लोग वह सब कुछ लिख चुके हैं जो हमारे दरमियान वाक़े हुआ है। 2 उनकी कोशिश
यह थी कि वही कुछ बयान किया जाए जिसकी गवाही वह देते हैं जो शुरू ही से साथ थे और आज तक अल्लाह का
कलाम सुनाने की ख़िदमत सरंजाम दे रहे हैं। 3 मैंने भी हर मुमकिन कोशिश की है कि सब कुछ शुरू से और ऐन हक़ीक़त
के मुताबिक़ मालूम करूँ। अब मैं यह बातें तरतीब से आपके लिए लिखना चाहता हूँ। 4 आप यह पढ़कर जान लेंगे कि
जो बातें आपको सिखाई गई हैं वह सच और दुरुस्त हैं।

यहया के बारे में पेशगोई
5 यहूदिया के बादशाह हेरोदेस के ज़माने में एक इमाम था जिसका नाम ज़करियाह था। बैतुल-मुक़द्दस में इमामों
के मुख़्तलिफ़ गुरोह ख़िदमत सरंजाम देते थे, और ज़करियाह का ताल्लुक़ अबियाह के गुरोह से था। उस की बीवी
इमामे-आज़म हारून की नसल से थी और उसका नाम इलीशिबा था। 6 मियाँ-बीवी अल्लाह के नज़दीक रास्तबाज़
थे और रब के तमाम अहकाम और हिदायात के मुताबिक़ बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारते थे। 7 लेकिन वह बेऔलाद थे।
इलीशिबा के बच्चे पैदा नहीं हो सकते थे। अब वह दोनों बूढ़े हो चुके थे।
8 एक दिन बैतुल-मुक़द्दस में अबियाह के गुरोह की बारी थी और ज़करियाह अल्लाह के हुज़ूर अपनी ख़िदमत
सरंजाम दे रहा था। 9 दस्तूर के मुताबिक़ उन्होंने क़ुरा डाला ताकि मालूम करें कि रब के मक़दिस में जाकर बख़ूर की
क़ुरबानी कौन जलाए। ज़करियाह को चुना गया। 10 जब वह मुक़र्ररा वक़्त पर बख़ूर जलाने के लिए बैतुल-मुक़द्दस में
दाख़िल हुआ तो जमा होनेवाले तमाम परस्तार सहन में दुआ कर रहे थे।
11 अचानक रब का एक फ़रिश्ता ज़ाहिर हुआ जो बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह के दहनी तरफ़ खड़ा था। 12 उसे
देखकर ज़करियाह घबराया और बहुत डर गया। 13 लेकिन फ़रिश्ते ने उससे कहा, "ज़करियाह, मत डर! अल्लाह
ने तेरी दुआ सुन ली है। तेरी बीवी इलीशिबा के बेटा होगा। उसका नाम यहया रखना। 14 वह न सिर्फ़ तेरे लिए ख़ुशी
और मुसर्रत का बाइस होगा, बल्कि बहुत-से लोग उस की पैदाइश पर ख़ुशी मनाएँगे। 15 क्योंकि वह रब के नज़दीक
अज़ीम होगा। लाज़िम है कि वह मै और शराब से परहेज़ करे। वह पैदा होने से पहले ही रूहुल-क़ुद्स से मामूर होगा
16 और इसराईली क़ौम में से बहुतों को रब उनके ख़ुदा के पास वापस लाएगा। 17 वह इलियास की रूह और क़ुव्वत
से ख़ुदावंद के आगे आगे चलेगा। उस की ख़िदमत से वालिदों के दिल अपने बच्चों की तरफ़ मायल हो जाएंगे और
नाफ़रमान लोग रास्तबाज़ों की दानाई की तरफ़ रुजू करेंगे। यों वह इस क़ौम को रब के लिए तैयार करेगा।"
18 ज़करियाह ने फ़रिश्ते से पूछा, "मैं किस तरह जानूँ कि यह बात सच है? मैं ख़ुद बूढ़ा हूँ और मेरी बीवी भी
उम्ररसीदा है।"
19 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "मैं जिबराईल हूँ जो अल्लाह के हुज़ूर खड़ा रहता हूँ। मुझे इसी मक़सद के लिए भेजा
गया है कि तुझे यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ। 20 लेकिन चूँकि तूने मेरी बात का यक़ीन नहीं किया इसलिए तू ख़ामोश रहेगा
और उस वक़्त तक बोल नहीं सकेगा जब तक तेरे बेटा पैदा न हो। मेरी यह बातें मुक़र्ररा वक़्त पर ही पूरी होंगी।"
21 इस दौरान बाहर के लोग ज़करियाह के इंतज़ार में थे। वह हैरान होते जा रहे थे कि उसे वापस आने में क्यों इतनी
देर हो रही है। 22 आख़िरकार वह बाहर आया, लेकिन वह उनसे बात न कर सका। तब उन्होंने जान लिया कि उसने
बैतुल-मुक़द्दस में रोया देखी है। उसने हाथों से इशारे तो किए, लेकिन ख़ामोश रहा।
23 ज़करियाह मुक़र्ररा वक़्त तक बैतुल-मुक़द्दस में अपनी ख़िदमत अंजाम देता रहा, फिर अपने घर वापस चला
गया। 24 थोड़े दिनों के बाद उस की बीवी इलीशिबा हामिला हो गई और वह पाँच माह तक घर में छुपी रही। 25 उसने
कहा, "ख़ुदावंद ने मेरे लिए कितना बड़ा काम किया है, क्योंकि अब उसने मेरी फ़िकर की और लोगों के सामने से
मेरी रुसवाई दूर कर दी।"

ईसा की पैदाइश की पेशगोई
26-27 इलीशिबा छः माह से उम्मीद से थी जब अल्लाह ने जिबराईल फ़रिश्ते को एक कुँवारी के पास भेजा जो
नासरत में रहती थी। नासरत गलील का एक शहर है और कुँवारी का नाम मरियम था। उस की मँगनी एक मर्द के साथ
हो चुकी थी जो दाऊद बादशाह की नसल से था और जिसका नाम यूसुफ़ था। 28 फ़रिश्ते ने उसके पास आकर कहा,
"ऐ ख़ातून जिस पर रब का ख़ास फ़ज़ल हुआ है, सलाम! रब तेरे साथ है।"

29 मरियम यह सुनकर घबरा गई और सोचा, "यह किस तरह का सलाम है?" 30 लेकिन फ़रिश्ते ने अपनी बात
जारी रखी और कहा, "ऐ मरियम, मत डर, क्योंकि तुझ पर अल्लाह का फ़ज़ल हुआ है। 31 तू उम्मीद से होकर एक
बेटे को जन्म देगी। तुझे उसका नाम ईसा (नजात देनेवाला) रखना है। 32 वह अज़ीम होगा और अल्लाह तआला का
फ़रज़ंद कहलाएगा। रब हमारा ख़ुदा उसे उसके बाप दाऊद के तख़्त पर बिठाएगा 33 और वह हमेशा तक इसराईल पर
हुकूमत करेगा। उस की सलतनत कभी ख़त्म न होगी।"
34 मरियम ने फ़रिश्ते से कहा, "यह क्योंकर हो सकता है? अभी तो मैं कुँवारी हूँ।"
35 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "रूहुल-क़ुद्स तुझ पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया तुझ पर छा
जाएगा। इसलिए यह बच्चा क़ुद्दूस होगा और अल्लाह का फ़रज़ंद कहलाएगा। 36 और देख, तेरी रिश्तेदार इलीशिबा
के भी बेटा होगा हालाँकि वह उम्ररसीदा है। गो उसे बाँझ क़रार दिया गया था, लेकिन वह छः माह से उम्मीद से है।
37 क्योंकि अल्लाह के नज़दीक कोई काम नामुमकिन नहीं है।"
38 मरियम ने जवाब दिया, "मैं रब की ख़िदमत के लिए हाज़िर हूँ। मेरे साथ वैसा ही हो जैसा आपने कहा है।" इस
पर फ़रिश्ता चला गया।

मरियम इलीशिबा से मिलती है

39 उन दिनों में मरियम यहूदिया के पहाड़ी इलाक़े के एक शहर के लिए रवाना हुई। उसने जल्दी जल्दी सफ़र
किया। 40 वहाँ पहुँचकर वह ज़करियाह के घर में दाख़िल हुई और इलीशिबा को सलाम किया। 41 मरियम का यह
सलाम सुनकर इलीशिबा का बच्चा उसके पेट में उछल पड़ा और इलीशिबा ख़ुद रूहुल-क़ुद्स से भर गई। 42 उसने
बुलंद आवाज़ से कहा, "तू तमाम औरतों में मुबारक है और मुबारक है तेरा बच्चा! 43 मैं कौन हूँ कि मेरे ख़ुदावंद की
माँ मेरे पास आई! 44 ज्योंही मैंने तेरा सलाम सुना बच्चा मेरे पेट में ख़ुशी से उछल पड़ा। 45 तू कितनी मुबारक है,
क्योंकि तू ईमान लाई कि जो कुछ रब ने फ़रमाया है वह तकमील तक पहुँचेगा।"

मरियम का गीत

46 इस पर मरियम ने कहा,
"मेरी जान रब की ताज़ीम करती है
47 और मेरी रूह अपने नजातदहिंदा अल्लाह से निहायत ख़ुश है।
48 क्योंकि उसने अपनी ख़ादिमा की पस्ती पर नज़र की है।
हाँ, अब से तमाम नसलें मुझे मुबारक कहेंगी,
49 क्योंकि क़ादिरे-मुतलक़ ने मेरे लिए बड़े बड़े काम किए हैं।
उसका नाम क़ुद्दूस है।
50 जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं
उन पर वह पुश्त-दर-पुश्त अपनी रहमत ज़ाहिर करेगा।
51 उस की क़ुदरत ने अज़ीम काम कर दिखाए हैं,
और दिल से मग़रूर लोग तित्तर-बित्तर हो गए हैं।
52 उसने हुक्मरानों को उनके तख़्त से हटाकर
पस्तहाल लोगों को सरफ़राज़ कर दिया है।
53 भूकों को उसने अच्छी चीज़ों से मालामाल करके
अमीरों को ख़ाली हाथ लौटा दिया है।
54 वह अपने ख़ादिम इसराईल की मदद के लिए आ गया है।
हाँ, उसने अपनी रहमत को याद किया है,
55 यानी वह दायमी वादा जो उसने हमारे बुज़ुर्गों के साथ किया था,
इब्राहीम और उस की औलाद के साथ।"
56 मरियम तक़रीबन तीन माह इलीशिबा के हाँ ठहरी रही, फिर अपने घर लौट गई।

यहया बपतिस्मा देनेवाले की पैदाइश

57 फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का दिन आ पहुँचा और उसके बेटा हुआ। 58 जब उसके हमसायों और
रिश्तेदारों को इत्तला मिली कि रब की उस पर कितनी बड़ी रहमत हुई है तो उन्होंने उसके साथ ख़ुशी मनाई।
59 जब बच्चा आठ दिन का था तो वह उसका ख़तना करवाने की रस्म के लिए आए। वह बच्चे का नाम उसके
बाप के नाम पर ज़करियाह रखना चाहते थे, 60 लेकिन उस की माँ ने एतराज़ किया। उसने कहा, "नहीं, उसका नाम
यहया हो।"

61 उन्होंने कहा, "आपके रिश्तेदारों में तो ऐसा नाम कहीं भी नहीं पाया जाता।" 62 तब उन्होंने इशारों से बच्चे
के बाप से पूछा कि वह क्या नाम रखना चाहता है।
63 जवाब में ज़करियाह ने तख़्ती मँगवाकर उस पर लिखा, "इसका नाम यहया है।" यह देखकर सब हैरान हुए।
64 उसी लमहे ज़करियाह दुबारा बोलने के क़ाबिल हो गया, और वह अल्लाह की तमजीद करने लगा। 65 तमाम
हमसायों पर ख़ौफ़ छा गया और इस बात का चर्चा यहूदिया के पूरे इलाक़े में फैल गया। 66 जिसने भी सुना उसने
संजीदगी से इस पर ग़ौर किया और सोचा, "इस बच्चे का क्या बनेगा?" क्योंकि रब की क़ुदरत उसके साथ थी।

ज़करियाह की नबुव्वत

67 उसका बाप ज़करियाह रूहुल-क़ुद्स से मामूर हो गया और नबुव्वत करके कहा,
68 "रब इसराईल के अल्लाह की तमजीद हो!
क्योंकि वह अपनी क़ौम की मदद के लिए आया है,
उसने फ़िद्या देकर उसे छुड़ाया है।
69 उसने अपने ख़ादिम दाऊद के घराने में
हमारे लिए एक अज़ीम नजातदहिंदा खड़ा किया है।
70 ऐसा ही हुआ जिस तरह उसने क़दीम ज़मानों में
अपने मुक़द्दस नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था,
71 कि वह हमें हमारे दुश्मनों से नजात दिलाएगा,
उन सबके हाथ से
जो हमसे नफ़रत रखते हैं।
72 क्योंकि उसने फ़रमाया था कि वह हमारे बापदादा पर रहम करेगा
73 और अपने मुक़द्दस अहद को याद रखेगा,
उस वादे को जो उसने क़सम खा कर
इब्राहीम के साथ किया था।
74 अब उसका यह वादा पूरा हो जाएगा :
हम अपने दुश्मनों से मख़लसी पाकर
ख़ौफ़ के बग़ैर अल्लाह की ख़िदमत कर सकेंगे,
75 जीते-जी उसके हुज़ूर मुक़द्दस और रास्त ज़िंदगी गुज़ार सकेंगे।
76 और तू, मेरे बच्चे, अल्लाह तआला का नबी कहलाएगा।
क्योंकि तू ख़ुदावंद के आगे आगे
उसके रास्ते तैयार करेगा।
77 तू उस की क़ौम को नजात का रास्ता दिखाएगा,
कि वह किस तरह अपने गुनाहों की मुआफ़ी पाएगी।
78 हमारे अल्लाह की बड़ी रहमत की वजह से
हम पर इलाही नूर चमकेगा।
79 उस की रौशनी उन पर फैल जाएगी
जो अंधेरे और मौत के साये में बैठे हैं,
हाँ वह हमारे क़दमों को सलामती की राह पर पहुँचाएगी।"
80 यहया परवान चढ़ा और उस की रूह ने तक़वियत पाई। उसने उस वक़्त तक रेगिस्तान में ज़िंदगी गुज़ारी जब तक
उसे इसराईल की ख़िदमत करने के लिए बुलाया न गया।

2

ईसा की पैदाइश

1 उन ऐयाम में रोम के शहनशाह औगुस्तुस ने फ़रमान जारी किया कि पूरी सलतनत की मर्दुमशुमारी की जाए। 2 यह
पहली मर्दुमशुमारी उस वक़्त हुई जब कूरिनियुस शाम का गवर्नर था। 3 हर किसी को अपने वतनी शहर में जाना पड़ा
ताकि वहाँ रजिस्टर में अपना नाम दर्ज करवाए।
4 चुनाँचे यूसुफ़ गलील के शहर नासरत से रवाना होकर यहूदिया के शहर बैत-लहम पहुँचा। वजह यह थी कि वह
दाऊद बादशाह के घराने और नसल से था, और बैत-लहम दाऊद का शहर था। 5 चुनाँचे वह अपने नाम को रजिस्टर

में दर्ज करवाने के लिए वहाँ गया। उस की मंगेतर मरियम भी साथ थी। उस वक़्त वह उम्मीद से थी। 6 जब वह वहाँ
ठहरे हुए थे तो बच्चे को जन्म देने का वक़्त आ पहुँचा। 7 बेटा पैदा हुआ। यह मरियम का पहला बच्चा था। उसने उसे
कपड़ों * में लपेटकर एक चरनी में लिटा दिया, क्योंकि उन्हें सराय में रहने की जगह नहीं मिली थी।

चरवाहों को ख़ुशख़बरी

8 उस रात कुछ चरवाहे क़रीब के खुले मैदान में अपने रेवड़ों की पहरादारी कर रहे थे। 9 अचानक रब का एक
फ़रिश्ता उन पर ज़ाहिर हुआ, और उनके इर्दगिर्द रब का जलाल चमका। यह देखकर वह सख़्त डर गए। 10 लेकिन
फ़रिश्ते ने उनसे कहा, "डरो मत! देखो मैं तुमको बड़ी ख़ुशी की ख़बर देता हूँ जो तमाम लोगों के लिए होगी। 11 आज
ही दाऊद के शहर में तुम्हारे लिए नजातदहिंदा पैदा हुआ है यानी मसीह ख़ुदावंद। 12 और तुम उसे इस निशान से पहचान
लोगे, तुम एक शीरख़ार बच्चे को कपड़ों में लिपटा हुआ पाओगे। वह चरनी में पड़ा हुआ होगा।"
13 अचानक आसमानी लशकरों के बेशुमार फ़रिश्ते उस फ़रिश्ते के साथ ज़ाहिर हुए जो अल्लाह की हम्दो-सना
करके कह रहे थे,
14 "आसमान की बुलंदियों पर अल्लाह की इज़्ज़तो-जलाल, ज़मीन पर उन लोगों की सलामती जो उसे मंज़ूर हैं।"
15 फ़रिश्ते उन्हें छोड़कर आसमान पर वापस चले गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, "आओ, हम बैत-लहम
जाकर यह बात देखें जो हुई है और जो रब ने हम पर ज़ाहिर की है।"
16 वह भागकर बैत-लहम पहुँचे। वहाँ उन्हें मरियम और यूसुफ़ मिले और साथ ही छोटा बच्चा जो चरनी में पड़ा
हुआ था। 17 यह देखकर उन्होंने सब कुछ बयान किया जो उन्हें इस बच्चे के बारे में बताया गया था। 18 जिसने भी
उनकी बात सुनी वह हैरतज़दा हुआ। 19 लेकिन मरियम को यह तमाम बातें याद रहीं और वह अपने दिल में उन पर
ग़ौर करती रही।
20 फिर चरवाहे लौट गए और चलते चलते उन तमाम बातों के लिए अल्लाह की ताज़ीमो-तारीफ़ करते रहे जो
उन्होंने सुनी और देखी थीं, क्योंकि सब कुछ वैसा ही पाया था जैसा फ़रिश्ते ने उन्हें बताया था।

बच्चे का नाम ईसा रखा जाता है

21 आठ दिन के बाद बच्चे का ख़तना करवाने का वक़्त आ गया। उसका नाम ईसा रखा गया, यानी वही नाम जो
फ़रिश्ते ने मरियम को उसके हामिला होने से पहले बताया था।

ईसा को बैतुल-मुक़द्दस में पेश किया जाता है

22 जब मूसा की शरीअत के मुताबिक़ तहारत के दिन पूरे हुए तब वह बच्चे को यरूशलम ले गए ताकि उसे रब के
हुज़ूर पेश किया जाए, 23 जैसे रब की शरीअत में लिखा है, "हर पहलौठे को रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करना है।"
24 साथ ही उन्होंने मरियम की तहारत की रस्म के लिए वह क़ुरबानी पेश की जो रब की शरीअत बयान करती है,
यानी "दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर।"
25 उस वक़्त यरूशलम में एक आदमी बनाम शमौन रहता था। वह रास्तबाज़ और ख़ुदातरस था और इस इंतज़ार में
था कि मसीह आकर इसराईल को सुकून बख़्शे। रूहुल-क़ुद्स उस पर था, 26 और उसने उस पर यह बात ज़ाहिर की
थी कि वह जीते-जी रब के मसीह को देखेगा। 27 उस दिन रूहुल-क़ुद्स ने उसे तहरीक दी कि वह बैतुल-मुक़द्दस में
जाए। चुनाँचे जब मरियम और यूसुफ़ बच्चे को रब की शरीअत के मुताबिक़ पेश करने के लिए बैतुल-मुक़द्दस में आए
28 तो शमौन मौजूद था। उसने बच्चे को अपने बाज़ुओं में लेकर अल्लाह की हम्दो-सना करते हुए कहा,
29 "ऐ आक़ा, अब तू अपने बंदे को इजाज़त देता है
कि वह सलामती से रेहलत कर जाए, जिस तरह तूने फ़रमाया है।
30 क्योंकि मैंने अपनी आँखों से तेरी उस नजात का मुशाहदा कर लिया है
31 जो तूने तमाम क़ौमों की मौजूदगी में तैयार की है।
32 यह एक ऐसी रौशनी है जिससे ग़ैरयहूदियों की आँखें खुल जाएँगी
और तेरी क़ौम इसराईल को जलाल हासिल होगा।"
33 बच्चे के माँ-बाप अपने बेटे के बारे में इन अलफ़ाज़ पर हैरान हुए। 34 शमौन ने उन्हें बरकत दी और मरियम से
कहा, "यह बच्चा मुक़र्रर हुआ है कि इसराईल के बहुत-से लोग इससे ठोकर खाकर गिर जाएँ, लेकिन बहुत-से इससे
अपने पाँवों पर खड़े भी हो जाएंगे। गो यह अल्लाह की तरफ़ से एक इशारा है तो भी इसकी मुख़ालफ़त की जाएगी।
35 यों बहुतों के दिली ख़यालात ज़ाहिर हो जाएंगे। इस सिलसिले में तलवार तेरी जान में से भी गुज़र जाएगी।"

---

* **2:7** लफ़्ज़ी तरजुमा : पोतड़ों

36 वहाँ बैतुल-मुक़द्दस में एक उम्ररसीदा नबिया भी थी जिसका नाम हन्नाह था। वह फ़नुएल की बेटी और आशर
के क़बीले से थी। शादी के सात साल बाद उसका शौहर मर गया था। 37 अब वह बेवा की हैसियत से 84 साल की हो
चुकी थी। वह कभी बैतुल-मुक़द्दस को नहीं छोड़ती थी, बल्कि दिन-रात अल्लाह को सिजदा करती, रोज़ा रखती और
दुआ करती थी। 38 उस वक़्त वह मरियम और यूसुफ़ के पास आकर अल्लाह की तमजीद करने लगी। साथ साथ वह
हर एक को जो इस इंतज़ार में था कि अल्लाह फ़िद्या देकर यरूशलम को छुड़ाए, बच्चे के बारे में बताती रही।

वह नासरत वापस चले जाते हैं

39 जब ईसा के वालिदैन ने रब की शरीअत में दर्ज तमाम फ़रायज़ अदा कर लिए तो वह गलील में अपने शहर
नासरत को लौट गए। 40 वहाँ बच्चा परवान चढ़ा और तक़वियत पाता गया। वह हिकमतो-दानाई से मामूर था, और
अल्लाह का फ़ज़ल उस पर था।

बारह साल की उम्र में बैतुल-मुक़द्दस में

41 ईसा के वालिदैन हर साल फ़सह की ईद के लिए यरूशलम जाया करते थे। 42 उस साल भी वह मामूल के
मुताबिक़ ईद के लिए गए जब ईसा बारह साल का था। 43 ईद के इख़्तिताम पर वह नासरत वापस जाने लगे, लेकिन
ईसा यरूशलम में रह गया। पहले उसके वालिदैन को मालूम न था, 44 क्योंकि वह समझते थे कि वह क़ाफ़िले में कहीं
मौजूद है। लेकिन चलते चलते पहला दिन गुज़र गया और वह अब तक नज़र न आया था। इस पर वालिदैन उसे अपने
रिश्तेदारों और अज़ीज़ों में ढूँडने लगे। 45 जब वह वहाँ न मिला तो मरियम और यूसुफ़ यरूशलम वापस गए और वहाँ
ढूँडने लगे। 46 तीन दिन के बाद वह आख़िरकार बैतुल-मुक़द्दस में पहुँचे। वहाँ ईसा दीनी उस्तादों के दरमियान बैठा
उनकी बातें सुन रहा और उनसे सवालात पूछ रहा था। 47 जिसने भी उस की बातें सुनीं वह उस की समझ और जवाबों
से दंग रह गया। 48 उसे देखकर उसके वालिदैन घबरा गए। उस की माँ ने कहा, "बेटा, तूने हमारे साथ यह क्यों किया?
तेरा बाप और मैं तुझे ढूँडते ढूँडते शदीद कोफ़्त का शिकार हुए।"

49 ईसा ने जवाब दिया, "आपको मुझे तलाश करने की क्या ज़रूरत थी? क्या आपको मालूम न था कि मुझे अपने
बाप के घर में होना ज़रूर है?" 50 लेकिन वह उस की बात न समझे।

51 फिर वह उनके साथ रवाना होकर नासरत वापस आया और उनके ताबे रहा। लेकिन उस की माँ ने यह तमाम
बातें अपने दिल में महफ़ूज़ रखें। 52 यों ईसा जवान हुआ। उस की समझ और हिकमत बढ़ती गई, और उसे अल्लाह
और इनसान की मक़बूलियत हासिल थी।

3

यहया बपतिस्मा देनेवाले की ख़िदमत

1 फिर रोम के शहनशाह तिबरियुस की हुकूमत का पंद्रहवाँ साल आ गया। उस वक़्त पुंतियुस पीलातुस सूबा यहूदिया
का गवर्नर था, हेरोदेस अंतिपास गलील का हाकिम था, उसका भाई फ़िलिप्पुस इतूरिया और त्रख़ोनीतिस के इलाक़े
का, जबकि लिसानियास अबिलेने का। 2 हन्ना और कायफ़ा दोनों इमामे-आज़म थे। उन दिनों में अल्लाह यहया बिन
ज़करियाह से हमकलाम हुआ जब वह रेगिस्तान में था। 3 फिर वह दरियाए-यरदन के पूरे इलाक़े में से गुज़रा। हर जगह
उसने एलान किया कि तौबा करके बपतिस्मा लो ताकि तुम्हें अपने गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाए। 4 यों यसायाह नबी
के अलफ़ाज़ पूरे हुए जो उस की किताब में दर्ज हैं :

'रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,
रब की राह तैयार करो!
उसके रास्ते सीधे बनाओ।
5 लाज़िम है कि हर वादी भर दी जाए,
ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलंद जगह मैदान बन जाए।
जो टेढ़ा है उसे सीधा किया जाए,
जो नाहमवार है उसे हमवार किया जाए।
6 और तमाम इनसान अल्लाह की नजात देखेंगे।'

7 जब बहुत-से लोग यहया के पास आए ताकि उससे बपतिस्मा लें तो उसने उनसे कहा, "ऐ ज़हरीले साँप के बच्चो!
किसने तुमको आनेवाले ग़ज़ब से बचने की हिदायत की? 8 अपनी ज़िंदगी से ज़ाहिर करो कि तुमने वाक़ई तौबा की है।
यह ख़याल मत करो कि हम तो बच जाएंगे क्योंकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुमको बताता हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों
से भी इब्राहीम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। 9 अब तो अदालत की कुल्हाड़ी दरख़्तों की जड़ों पर रखी हुई है।
हर दरख़्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में झोंका जाएगा।"

10 लोगों ने उससे पूछा, “फिर हम क्या करें?”
11 उसने जवाब दिया, “जिसके पास दो कुरते हैं वह एक उसको दे दे जिसके पास कुछ न हो। और जिसके पास
खाना है वह उसे खिला दे जिसके पास कुछ न हो।”
12 टैक्स लेनेवाले भी बपतिस्मा लेने के लिए आए तो उन्होंने पूछा, “उस्ताद, हम क्या करें?”
13 उसने जवाब दिया, “सिर्फ़ उतने टैक्स लेना जितने हुकूमत ने मुक़र्रर किए हैं।”
14 कुछ फ़ौजियों ने पूछा, “हमें क्या करना चाहिए?”
उसने जवाब दिया, “किसी से जबरन या ग़लत इलज़ाम लगाकर पैसे न लेना बल्कि अपनी जायज़ आमदनी पर
इकतिफ़ा करना।”
15 लोगों की तवक़्क़ोआत बहुत बढ़ गईं। वह अपने दिलों में सोचने लगे कि क्या यह मसीह तो नहीं है? 16 इस
पर यहया उन सबसे मुख़ातिब होकर कहने लगा, “मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आनेवाला है जो
मुझसे बड़ा है। मैं उसके जूतों के तसमे खोलने के भी लायक़ नहीं। वह तुम्हें रूहुल-क़ुद्स और आग से बपतिस्मा
देगा। 17 वह हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तैयार खड़ा है। वह गाहने की जगह को
बिलकुल साफ़ करके अनाज को अपने गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में झोंकेगा जो बुझने की
नहीं।”
18 इस क़िस्म की बहुत-सी और बातों से उसने क़ौम को नसीहत की और उसे अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई।
19 लेकिन एक दिन यों हुआ कि यहया ने गलील के हाकिम हेरोदेस अंतिपास को डाँटा। वजह यह थी कि हेरोदेस
ने अपने भाई की बीवी हेरोदियास से शादी कर ली थी और इसके अलावा और बहुत-से ग़लत काम किए थे। 20 यह
मलामत सुनकर हेरोदेस ने अपने ग़लत कामों में और इज़ाफ़ा यह किया कि यहया को जेल में डाल दिया।

ईसा का बपतिस्मा

21 एक दिन जब बहुत-से लोगों को बपतिस्मा दिया जा रहा था तो ईसा ने भी बपतिस्मा लिया। जब वह दुआ कर
रहा था तो आसमान खुल गया 22 और रूहुल-क़ुद्स जिस्मानी सूरत में कबूतर की तरह उस पर उतर आया। साथ साथ
आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं ख़ुश हूँ।”

ईसा का नसबनामा

23 ईसा तक़रीबन तीस साल का था जब उसने ख़िदमत शुरू की। उसे यूसुफ़ का बेटा समझा जाता था। उसका
नसबनामा यह है : यूसुफ़ बिन एली 24 बिन मत्तात बिन लावी बिन मलकी बिन यन्ना बिन यूसुफ़ 25 बिन मत्तितियाह
बिन आमूस बिन नाहूम बिन असलियाह बिन नोगा 26 बिन माअत बिन मत्तितियाह बिन शमई बिन योसेख़ बिन यूदाह
27 बिन यूहन्नाह बिन रेसा बिन ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल बिन नेरी 28 बिन मलिकी बिन अद्दी बिन क़ोसाम बिन
इलमोदाम बिन एर 29 बिन यशुअ बिन इलियज़र बिन योरीम बिन मत्तात बिन लावी 30 बिन शमौन बिन यहूदाह बिन
यूसुफ़ बिन योनाम बिन इलियाक़ीम 31 बिन मलेआह बिन मिन्नाह बिन मत्तितियाह बिन नातन बिन दाऊद 32 बिन यस्सी
बिन ओबेद बिन बोअज़ बिन सलमोन बिन नहसोन 33 बिन अम्मीनदाब बिन अदमीन बिन अरनी बिन हसरोन बिन
फ़ारस बिन यहूदाह 34 बिन याक़ूब बिन इसहाक़ बिन इब्राहीम बिन तारह बिन नहूर 35 बिन सरूज बिन रऊ बिन फ़लज
बिन इबर बिन सिलह 36 बिन क़ीनान बिन अरफ़क्सद बिन सिम बिन नूह बिन लमक 37 बिन मतूसिलह बिन हनूक बिन
यारिद बिन महललेल बिन क़ीनान 38 बिन अनूस बिन सेत बिन आदम। आदम को अल्लाह ने पैदा किया था।

4

ईसा को आज़माया जाता है

1 ईसा दरियाए-यरदन से वापस आया। वह रूहुल-क़ुद्स से मामूर था जिसने उसे रेगिस्तान में लाकर उस की राहनुमाई
की। 2 वहाँ उसे चालीस दिन तक इबलीस से आज़माया गया। इस पूरे अरसे में उसने कुछ न खाया। आख़िरकार उसे
भूक लगी।
3 फिर इबलीस ने उससे कहा, “अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इस पत्थर को हुक्म दे कि रोटी बन जाए।”
4 लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, “हरगिज़ नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि इनसान की ज़िंदगी
सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती।”
5 इस पर इबलीस ने उसे किसी बुलंद जगह पर ले जाकर एक लमहे में दुनिया के तमाम ममालिक दिखाए। 6 वह
बोला, “मैं तुझे इन ममालिक की शानो-शौकत और इन पर तमाम इख़्तियार दूँगा। क्योंकि यह मेरे सुपुर्द किए गए हैं
और जिसे चाहूँ दे सकता हूँ। 7 लिहाज़ा यह सब कुछ तेरा ही होगा। शर्त यह है कि तू मुझे सिजदा करे।”

8 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "हरगिज़ नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, 'रब अपने अल्लाह को
सिजदा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर'।"
9 फिर इबलीस ने उसे यरूशलम ले जाकर बैतुल-मुक़द्दस की सबसे ऊँची जगह पर खड़ा किया और कहा, "अगर
तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो यहाँ से छलाँग लगा दे। 10 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, 'वह अपने फ़रिश्तों
को तेरी हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा, 11 और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न
लगे'।"
12 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया और कहा, "कलामे-मुक़द्दस यह भी फ़रमाता है, 'रब अपने अल्लाह
को न आज़माना'।"
13 इन आज़माइशों के बाद इबलीस ने ईसा को कुछ देर के लिए छोड़ दिया।

ख़िदमत का आग़ाज़

14 फिर ईसा वापस गलील में आया। उसमें रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत थी, और उस की शोहरत उस पूरे इलाक़े में
फैल गई। 15 वहाँ वह उनके इबादतख़ानों में तालीम देने लगा, और सबने उस की तारीफ़ की।

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

16 एक दिन वह नासरत पहुँचा जहाँ वह परवान चढ़ा था। वहाँ भी वह मामूल के मुताबिक़ सबत के दिन मक़ामी
इबादतख़ाने में जाकर कलामे-मुक़द्दस में से पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। 17 उसे यसायाह नबी की किताब दी गई तो
उसने तूमार को खोलकर यह हवाला ढूँड निकाला,
18 "रब का रूह मुझ पर है,
क्योंकि उसने मुझे तेल से मसह करके
ग़रीबों को ख़ुशख़बरी सुनाने का इख़्तियार दिया है।
उसने मुझे यह एलान करने के लिए भेजा है
कि क़ैदियों को रिहाई मिलेगी और अंधे देखेंगे।
उसने मुझे भेजा है
कि मैं कुचले हुओं को आज़ाद कराऊँ
19 और रब की तरफ़ से बहाली के साल का एलान करूँ।"
20 यह कहकर ईसा ने तूमार को लपेटकर इबादतख़ाने के मुलाज़िम को वापस कर दिया और बैठ गया। सारी जमात
की आँखें उस पर लगी थीं। 21 फिर वह बोल उठा, "आज अल्लाह का यह फ़रमान तुम्हारे सुनते ही पूरा हो गया है।"
22 सब ईसा के हक़ में बातें करने लगे। वह उन पुरफ़ज़ल बातों पर हैरतज़दा थे जो उसके मुँह से निकलीं, और वह
कहने लगे, "क्या यह यूसुफ़ का बेटा नहीं है?"
23 उसने उनसे कहा, "बेशक तुम मुझे यह कहावत बताओगे, 'ऐ डाक्टर, पहले अपने आपका इलाज कर।' यानी
सुनने में आया है कि आपने कफ़र्नहूम में मोजिज़े किए हैं। अब ऐसे मोजिज़े यहाँ अपने वतनी शहर में भी दिखाएँ।
24 लेकिन मैं तुमको सच बताता हूँ कि कोई भी नबी अपने वतनी शहर में मक़बूल नहीं होता।
25 यह हक़ीक़त है कि इलियास नबी के ज़माने में इसराईल में बहुत-सी ज़रूरतमंद बेवाएँ थीं, उस वक़्त जब साढ़े
तीन साल तक बारिश न हुई और पूरे मुल्क में सख़्त काल पड़ा। 26 इसके बावुजूद इलियास को उनमें से किसी के पास
नहीं भेजा गया बल्कि एक ग़ैरयहूदी बेवा के पास जो सैदा के शहर सारपत में रहती थी। 27 इसी तरह इलीशा नबी के
ज़माने में इसराईल में कोढ़ के बहुत-से मरीज़ थे। लेकिन उनमें से किसी को शफ़ा न मिली बल्कि सिर्फ़ नामान को जो
मुल्के-शाम का शहरी था।"
28 जब इबादतख़ाने में जमा लोगों ने यह बातें सुनीं तो वह बड़े तैश में आ गए। 29 वह उठे और उसे शहर से
निकालकर उस पहाड़ी के किनारे ले गए जिस पर शहर को तामीर किया गया था। वहाँ से वह उसे नीचे गिराना चाहते
थे, 30 लेकिन ईसा उनमें से गुज़रकर वहाँ से चला गया।

आदमी का बदरूह की गिरिफ़्त से रिहाई

31 इसके बाद वह गलील के शहर कफ़र्नहूम को गया और सबत के दिन इबादतख़ाने में लोगों को सिखाने लगा।
32 वह उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए, क्योंकि वह इख़्तियार के साथ तालीम देता था। 33 इबादतख़ाने
में एक आदमी था जो किसी नापाक रूह के क़ब्ज़े में था। अब वह चीख़ चीख़कर बोलने लगा, 34 "अरे नासरत के
ईसा, हमारा आपके साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि आप कौन हैं, आप
अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।"

35 ईसा ने उसे डाँटकर कहा, “ख़ामोश! आदमी में से निकल जा!” इस पर बदरूह आदमी को जमात के बीच में
फ़र्श पर पटककर उसमें से निकल गई। लेकिन वह आदमी ज़ख़मी न हुआ।
36 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने लगे, “उस आदमी के अलफ़ाज़ में क्या इख़्तियार और क़ुव्वत है
कि बदरूहें उसका हुक्म मानती और उसके कहने पर निकल जाती हैं?” 37 और ईसा के बारे में चर्चा उस पूरे इलाक़े
में फैल गया।

बहुत-से मरीज़ों की शफ़ायाबी

38 फिर ईसा इबादतख़ाने को छोड़कर शमौन के घर गया। वहाँ शमौन की सास शदीद बुख़ार में मुब्तला थी। उन्होंने
ईसा से गुज़ारिश की कि वह उस की मदद करे। 39 उसने उसके सिरहाने खड़े होकर बुख़ार को डाँटा तो वह उतर गया
और शमौन की सास उसी वक़्त उठकर उनकी ख़िदमत करने लगी।
40 जब दिन ढल गया तो सब मक़ामी लोग अपने मरीज़ों को ईसा के पास लाए। ख़ाह उनकी बीमारियाँ कुछ भी
क्यों न थीं, उसने हर एक पर अपने हाथ रखकर उसे शफ़ा दी। 41 बहुतों में बदरूहें भी थीं जिन्होंने निकलते वक़्त
चिल्लाकर कहा, “तू अल्लाह का फ़रज़ंद है।” लेकिन चूँकि वह जानती थीं कि वह मसीह है इसलिए उसने उन्हें
डाँटकर बोलने न दिया।

ख़ुशख़बरी हर एक के लिए है

42 जब अगला दिन चढ़ा तो ईसा शहर से निकलकर किसी वीरान जगह चला गया। लेकिन हुजूम उसे ढूँडते ढूँडते
आख़िरकार उसके पास पहुँचा। लोग उसे अपने पास से जाने नहीं देना चाहते थे। 43 लेकिन उसने उनसे कहा, “लाज़िम
है कि मैं दूसरे शहरों में भी जाकर अल्लाह की बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ, क्योंकि मुझे इसी मक़सद के लिए
भेजा गया है।”
44 चुनाँचे वह यहूदिया के इबादतख़ानों में मुनादी करता रहा।

5

पहले शागिर्दों की बुलाहट

1 एक दिन ईसा गलील की झील गन्नेसरत के किनारे पर खड़ा हुजूम को अल्लाह का कलाम सुना रहा था। लोग
सुनते सुनते इतने क़रीब आ गए कि उसके लिए जगह कम हो गई। 2 फिर उसे दो कश्तियाँ नज़र आईं जो झील के
किनारे लगी थीं। मछेरे उनमें से उतर चुके थे और अब अपने जालों को धो रहे थे। 3 ईसा एक कश्ती पर सवार हुआ।
उसने कश्ती के मालिक शमौन से दरख़ास्त की कि वह कश्ती को किनारे से थोड़ा-सा दूर ले चले। फिर वह कश्ती में
बैठा और हुजूम को तालीम देने लगा।
4 तालीम देने के इख़्तिताम पर उसने शमौन से कहा, “अब कश्ती को वहाँ ले जा जहाँ पानी गहरा है और अपने
जालों को मछलियाँ पकड़ने के लिए डाल दो।”
5 लेकिन शमौन ने एतराज़ किया, “उस्ताद, हमने तो पूरी रात बड़ी कोशिश की, लेकिन एक भी न पकड़ी। ताहम
आपके कहने पर मैं जालों को दुबारा डालूँगा।” 6 यह कहकर उन्होंने गहरे पानी में जाकर अपने जाल डाल दिए। और
वाक़ई, मछलियों का इतना बड़ा ग़ोल जालों में फँस गया कि वह फटने लगे। 7 यह देखकर उन्होंने अपने साथियों को
इशारा करके बुलाया ताकि वह दूसरी कश्ती में आकर उनकी मदद करें। वह आए और सबने मिलकर दोनों कश्तियों
को इतनी मछलियों से भर दिया कि आख़िरकार दोनों डूबने के ख़तरे में थीं। 8 जब शमौन पतरस ने यह सब कुछ देखा
तो उसने ईसा के सामने मुँह के बल गिरकर कहा, “ख़ुदावंद, मुझसे दूर चले जाएँ। मैं तो गुनाहगार हूँ।” 9 क्योंकि वह
और उसके साथी इतनी मछलियाँ पकड़ने की वजह से सख़्त हैरान थे। 10 और ज़बदी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना की
हालत भी यही थी जो शमौन के साथ मिलकर काम करते थे।
लेकिन ईसा ने शमौन से कहा, “मत डर। अब से तू आदमियों को पकड़ा करेगा।”
11 वह अपनी कश्तियों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर ईसा के पीछे हो लिए।

कोढ़ से शफ़ा

12 एक दिन ईसा किसी शहर में से गुज़र रहा था कि वहाँ एक मरीज़ मिला जिसका पूरा जिस्म कोढ़ से मुतअस्सिर
था। जब उसने ईसा को देखा तो वह मुँह के बल गिर पड़ा और इल्तिजा की, “ऐ ख़ुदावंद, अगर आप चाहें तो मुझे
पाक-साफ़ कर सकते हैं।”
13 ईसा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।” इस पर बीमारी फ़ौरन दूर
हो गई। 14 ईसा ने उसे हिदायत की कि वह किसी को न बताए कि क्या हुआ है। उसने कहा, “सीधा बैतुल-मुक़द्दस में

इमाम के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह क़ुरबानी ले जा जिसका तक़ाज़ा मूसा की शरीअत उनसे
करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा मिलती है। यों अलानिया तसदीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-साफ़ हो गया है।"
15 ताहम ईसा के बारे में ख़बर और ज़्यादा तेज़ी से फैलती गई। लोगों के बड़े गुरोह उसके पास आते रहे ताकि उस
की बातें सुनें और उसके हाथ से शफ़ा पाएँ। 16 फिर भी वह कई बार उन्हें छोड़कर दुआ करने के लिए वीरान जगहों
पर जाया करता था।

मफ़लूज के लिए छत खोली जाती है

17 एक दिन वह लोगों को तालीम दे रहा था। फ़रीसी और शरीअत के आलिम भी गलील और यहूदिया के हर गाँव
और यरूशलम से आकर उसके पास बैठे थे। और रब की क़ुदरत उसे शफ़ा देने के लिए तहरीक दे रही थी। 18 इतने
में कुछ आदमी एक मफ़लूज को चारपाई पर डालकर वहाँ पहुँचे। उन्होंने उसे घर के अंदर ईसा के सामने रखने की
कोशिश की, 19 लेकिन बेफ़ायदा। घर में इतने लोग थे कि अंदर जाना नामुमकिन था। इसलिए वह आख़िरकार छत
पर चढ़ गए और कुछ टायलें उधेड़कर छत का एक हिस्सा खोल दिया। फिर उन्होंने चारपाई को मफ़लूज समेत हुजूम
के दरमियान ईसा के सामने उतारा। 20 जब ईसा ने उनका ईमान देखा तो उसने मफ़लूज से कहा, "ऐ आदमी, तेरे गुनाह
मुआफ़ कर दिए गए हैं।"
21 यह सुनकर शरीअत के आलिम और फ़रीसी सोच-बिचार में पड़ गए, "यह किस तरह का बंदा है जो इस क़िस्म
का कुफ़र बकता है? सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।"
22 लेकिन ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने पूछा, "तुम दिल में इस तरह की बातें क्यों
सोच रहे हो? 23 क्या मफ़लूज से यह कहना ज़्यादा आसान है कि 'तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं' या यह कि
'उठकर चल-फिर'? 24 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का
इख़्तियार है।" यह कहकर वह मफ़लूज से मुख़ातिब हुआ, "उठ, अपनी चारपाई उठाकर अपने घर चला जा।"
25 लोगों के देखते देखते वह आदमी खड़ा हुआ और अपनी चारपाई उठाकर अल्लाह की हम्दो-सना करते हुए
अपने घर चला गया। 26 यह देखकर सब सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तमजीद करने लगे। उन पर ख़ौफ़ छा
गया और वह कह उठे, "आज हमने नाक़ाबिले-यक़ीन बातें देखी हैं।"

ईसा मत्ती को बुलाता है

27 इसके बाद ईसा निकलकर एक टैक्स लेनेवाले के पास से गुज़रा जो अपनी चौकी पर बैठा था। उसका नाम लावी
था। उसे देखकर ईसा ने कहा, "मेरे पीछे हो ले।" 28 वह उठा और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिया।
29 बाद में उसने अपने घर में ईसा की बड़ी ज़ियाफ़त की। बहुत-से टैक्स लेनेवाले और दीगर मेहमान इसमें शरीक
हुए। 30 यह देखकर कुछ फ़रीसियों और उनसे ताल्लुक़ रखनेवाले शरीअत के आलिमों ने ईसा के शागिर्दों से शिकायत
की। उन्होंने कहा, "तुम टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाते-पीते हो?"
31 ईसा ने जवाब दिया, "सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को। 32 मैं रास्तबाज़ों को
नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ ताकि वह तौबा करें।"

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

33 कुछ लोगों ने ईसा से एक और सवाल पूछा, "यहया के शागिर्द अकसर रोज़ा रखते हैं। और साथ साथ वह दुआ
भी करते रहते हैं। फ़रीसियों के शागिर्द भी इसी तरह करते हैं। लेकिन आपके शागिर्द खाने-पीने का सिलसिला जारी
रखते हैं।"
34 ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुम शादी के मेहमानों को रोज़ा रखने को कह सकते हो जब दूल्हा उनके दरमियान
है? हरगिज़ नहीं! 35 लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।"
36 उसने उन्हें यह मिसाल भी दी, "कौन किसी नए लिबास को फाड़कर उसका एक टुकड़ा किसी पुराने लिबास
में लगाएगा? कोई भी नहीं! अगर वह ऐसा करे तो न सिर्फ़ नया लिबास ख़राब होगा बल्कि उससे लिया गया टुकड़ा
पुराने लिबास को भी ख़राब कर देगा। 37 इसी तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं
डालेगा। अगर वह ऐसा करे तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मशकें दोनों
ज़ाया हो जाएँगी। 38 इसलिए अंगूर का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं। 39 लेकिन जो
भी पुरानी मै पीना पसंद करे वह अंगूर का नया और ताज़ा रस पसंद नहीं करेगा। वह कहेगा कि पुरानी ही बेहतर है।"

6

सबत के बारे में सवाल

1 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा था। चलते चलते उसके शागिर्द अनाज की बालें तोड़ने और अपने
हाथों से मलकर खाने लगे। सबत का दिन था। 2 यह देखकर कुछ फ़रीसियों ने कहा, "तुम यह क्यों कर रहे हो?
सबत के दिन ऐसा करना मना है।"
3 ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक
लगी थी? 4 वह अल्लाह के घर में दाख़िल हुआ और रब के लिए मख़सूसशुदा रोटियाँ लेकर खाईं, अगरचे सिर्फ़
इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त है। और उसने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ खिलाईं।" 5 फिर ईसा ने उनसे
कहा, "इब्ने-आदम सबत का मालिक है।"

सूखे हाथ की शफ़ा

6 सबत के एक और दिन ईसा इबादतख़ाने में जाकर सिखाने लगा। वहाँ एक आदमी था जिसका दहना हाथ सूखा
हुआ था। 7 शरीअत के आलिम और फ़रीसी बड़े ग़ौर से देख रहे थे कि क्या ईसा इस आदमी को आज भी शफ़ा देगा?
क्योंकि वह उस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना ढूँड रहे थे। 8 लेकिन ईसा ने उनकी सोच को जान लिया और उस
सूखे हाथवाले आदमी से कहा, "उठ, दरमियान में खड़ा हो।" चुनाँचे वह आदमी खड़ा हुआ। 9 फिर ईसा ने उनसे
पूछा, "मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की या ग़लत काम करने
की, किसी की जान बचाने की या उसे तबाह करने की?" 10 वह ख़ामोश होकर अपने इर्दगिर्द के तमाम लोगों की
तरफ़ देखने लगा। फिर उसने कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ा।" उसने ऐसा किया तो उसका हाथ बहाल हो गया।
11 लेकिन वह आपे में न रहे और एक दूसरे से बात करने लगे कि हम ईसा से किस तरह निपट सकते हैं?

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

12 उन्हीं दिनों में ईसा निकलकर दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। दुआ करते करते पूरी रात गुज़र गई।
13 फिर उसने अपने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर उनमें से बारह को चुन लिया, जिन्हें उसने अपने रसूल मुक़र्रर
किया। उनके नाम यह हैं : 14 शमौन जिसका लक़ब उसने पतरस रखा, उसका भाई अंदरियास, याक़ूब, यूहन्ना,
फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई, 15 मत्ती, तोमा, याक़ूब बिन हलफ़ई, शमौन मुजाहिद, 16 यहूदाह बिन याक़ूब और यहूदाह
इस्करियोती जिसने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

ईसा तालीम और शफ़ा देता है

17 फिर वह उनके साथ पहाड़ से उतरकर एक खुले और हमवार मैदान में खड़ा हुआ। वहाँ शागिर्दों की बड़ी तादाद
ने उसे घेर लिया। साथ ही बहुत-से लोग यहूदिया, यरूशलम और सूर और सैदा के साहिली इलाक़े से 18 उस की तालीम
सुनने और बीमारियों से शफ़ा पाने के लिए आए थे। और जिन्हें बदरूहें तंग कर रही थीं उन्हें भी शफ़ा मिली। 19 तमाम
लोग उसे छूने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि उसमें से क़ुव्वत निकलकर सबको शफ़ा दे रही थी।

कौन मुबारक है?

20 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों की तरफ़ देखकर कहा,
"मुबारक हो तुम जो ज़रूरतमंद हो,
क्योंकि अल्लाह की बादशाही तुमको ही हासिल है।
21 मुबारक हो तुम जो इस वक़्त भूके हो,
क्योंकि सेर हो जाओगे।
मुबारक हो तुम जो इस वक़्त रोते हो,
क्योंकि ख़ुशी से हँसोगे।
22 मुबारक हो तुम जब लोग इसलिए तुमसे नफ़रत करते और तुम्हारा हुक़्क़ा-पानी बंद करते हैं कि तुम इब्ने-आदम
के पैरोकार बन गए हो। हाँ, मुबारक हो तुम जब वह इसी वजह से तुम्हें लान-तान करते और तुम्हारी बदनामी करते
हैं। 23 जब वह ऐसा करते हैं तो शादमान होकर ख़ुशी से नाचो, क्योंकि आसमान पर तुमको बड़ा अज्र मिलेगा। उनके
बापदादा ने यही सुलूक नबियों के साथ किया था।
24 मगर तुम पर अफ़सोस जो अब दौलतमंद हो,
क्योंकि तुम्हारा सुकून यहीं ख़त्म हो जाएगा।
25 तुम पर अफ़सोस जो इस वक़्त ख़ूब सेर हो,
क्योंकि बाद में तुम भूके होगे।
तुम पर अफ़सोस जो अब हँस रहे हो,
क्योंकि एक वक़्त आएगा कि रो रोकर मातम करोगे।

26 तुम पर अफ़सोस जिनकी तमाम लोग तारीफ़ करते हैं, क्योंकि उनके बापदादा ने यही सुलूक झूटे नबियों के साथ किया था।

अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखना

27 लेकिन तुमको जो सुन रहे हो मैं यह बताता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो, और उनसे भलाई करो जो तुमसे
नफ़रत करते हैं। 28 जो तुम पर लानत करते हैं उन्हें बरकत दो, और जो तुमसे बुरा सुलूक करते हैं उनके लिए दुआ
करो। 29 अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश कर दो। इसी तरह अगर कोई तुम्हारी
चादर छीन ले तो उसे क़मीस लेने से भी न रोको। 30 जो भी तुमसे कुछ माँगता है उसे दो। और जिसने तुमसे कुछ लिया
है उससे उसे वापस देने का तक़ाज़ा न करो। 31 लोगों के साथ वैसा सुलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ
करें।

32 अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से मुहब्बत करो जो तुमसे करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या ख़ास मेहरबानी होगी? गुनाहगार
भी ऐसा ही करते हैं। 33 और अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से भलाई करो जो तुमसे भलाई करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या
ख़ास मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं। 34 इसी तरह अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं को उधार दो जिनके बारे
में तुम्हें अंदाज़ा है कि वह वापस कर देंगे तो इसमें तुम्हारी क्या ख़ास मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी गुनाहगारों को
उधार देते हैं जब उन्हें सब कुछ वापस मिलने का यक़ीन होता है। 35 नहीं, अपने दुश्मनों से मुहब्बत करो और उन्हीं
से भलाई करो। उन्हें उधार दो जिनके बारे में तुम्हें वापस मिलने की उम्मीद नहीं है। फिर तुमको बड़ा अज्र मिलेगा और
तुम अल्लाह तआला के फ़रज़ंद साबित होगे, क्योंकि वह भी नाशुक्रों और बुरे लोगों पर नेकी का इज़हार करता है।
36 लाज़िम है कि तुम रहमदिल हो क्योंकि तुम्हारा बाप भी रहमदिल है।

मुंसिफ़ न बनना

37 दूसरों की अदालत न करना तो तुम्हारी भी अदालत नहीं की जाएगी। दूसरों को मुजरिम क़रार न देना तो तुमको
भी मुजरिम क़रार नहीं दिया जाएगा। मुआफ़ करो तो तुमको भी मुआफ़ कर दिया जाएगा। 38 दो तो तुमको भी दिया
जाएगा। हाँ, जिस हिसाब से तुमने दिया उसी हिसाब से तुमको दिया जाएगा, बल्कि पैमाना दबा दबा और हिला हिलाकर
और लबरेज़ करके तुम्हारी झोली में डाल दिया जाएगा। क्योंकि जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा
जाएगा।"

39 फिर ईसा ने यह मिसाल पेश की। "क्या एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई कर सकता है? हरगिज़ नहीं! अगर
वह ऐसा करे तो दोनों गढे में गिर जाएंगे। 40 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता बल्कि जब उसे पूरी ट्रेनिंग मिली
हो तो वह अपने उस्ताद ही की मानिंद होगा।

41 तू क्यों ग़ौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं आता जो
तेरी अपनी आँख में है? 42 तू क्योंकर अपने भाई से कह सकता है, 'भाई, ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा तिनका
निकालने दो' जबकि तुझे अपनी आँख का शहतीर नज़र नहीं आता? रियाकार! पहले अपनी आँख के शहतीर को
निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से देखकर निकाल सकेगा।

दरख़्त उसके फल से पहचाना जाता है

43 न अच्छा दरख़्त ख़राब फल लाता है, न ख़राब दरख़्त अच्छा फल। 44 हर क़िस्म का दरख़्त उसके फल से
पहचाना जाता है। ख़ारदार झाड़ियों से अंजीर या अंगूर नहीं तोड़े जाते। 45 नेक शख़्स का अच्छा फल उसके दिल
के अच्छे ख़ज़ाने से निकलता है जबकि बुरे शख़्स का ख़राब फल उसके दिल की बुराई से निकलता है। क्योंकि जिस
चीज़ से दिल भरा होता है वही छलककर मुँह से निकलती है।

दो क़िस्म के मकान

46 तुम क्यों मुझे 'ख़ुदावंद, ख़ुदावंद' कहकर पुकारते हो? मेरी बात पर तो तुम अमल नहीं करते। 47 लेकिन मैं
तुमको बताता हूँ कि वह शख़्स किसकी मानिंद है जो मेरे पास आकर मेरी बात सुन लेता और उस पर अमल करता है।
48 वह उस आदमी की मानिंद है जिसने अपना मकान बनाने के लिए गहरी बुनियाद की खुदाई करवाई। खोद खोदकर
वह चटान तक पहुँच गया। उसी पर उसने मकान की बुनियाद रखी। मकान मुकम्मल हुआ तो एक दिन सैलाब आया।
ज़ोर से बहता हुआ पानी मकान से टकराया, लेकिन वह उसे हिला न सका क्योंकि वह मज़बूती से बनाया गया था।
49 लेकिन जो मेरी बात सुनता और उस पर अमल नहीं करता वह उस शख़्स की मानिंद है जिसने अपना मकान बुनियाद
के बग़ैर ज़मीन पर ही तामीर किया। ज्योंही ज़ोर से बहता हुआ पानी उससे टकराया तो वह गिर गया और सरासर तबाह
हो गया।"

7

रोमी अफ़सर के ग़ुलाम की शफ़ा

1 यह सब कुछ लोगों को सुनाने के बाद ईसा कफ़र्नहूम चला गया। 2 वहाँ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर एक अफ़सर
रहता था। उन दिनों में उसका एक ग़ुलाम जो उसे बहुत अज़ीज़ था बीमार पड़ गया। अब वह मरने को था। 3 चूँकि
अफ़सर ने ईसा के बारे में सुना था इसलिए उसने यहूदियों के कुछ बुज़ुर्ग यह दरख़ास्त करने के लिए उसके पास भेज
दिए कि वह आकर ग़ुलाम को शफ़ा दे। 4 वह ईसा के पास पहुँचकर बड़े ज़ोर से इल्तिजा करने लगे, "यह आदमी इस
लायक़ है कि आप उस की दरख़ास्त पूरी करें, 5 क्योंकि वह हमारी क़ौम से प्यार करता है, यहाँ तक कि उसने हमारे
लिए इबादतख़ाना भी तामीर करवाया है।"

6 चुनाँचे ईसा उनके साथ चल पड़ा। लेकिन जब वह घर के क़रीब पहुँच गया तो अफ़सर ने अपने कुछ दोस्त यह
कहकर उसके पास भेज दिए कि "ख़ुदावंद, मेरे घर में आने की तकलीफ़ न करें, क्योंकि मैं इस लायक़ नहीं हूँ।
7 इसलिए मैंने ख़ुद को आपके पास आने के लायक़ भी न समझा। बस वहीं से कह दें तो मेरा ग़ुलाम शफ़ा पा जाएगा।
8 क्योंकि मुझे ख़ुद आला अफ़सरों के हुक्म पर चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ,
'जा!' तो वह जाता है और दूसरे को 'आ!' तो वह आता है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, 'यह कर!'
तो वह करता है।"

9 यह सुनकर ईसा निहायत हैरान हुआ। उसने मुड़कर अपने पीछे आनेवाले हुजूम से कहा, "मैं तुमको सच बताता
हूँ, मैंने इसराईल में भी इस क़िस्म का ईमान नहीं पाया।"

10 जब अफ़सर का पैग़ाम पहुँचानेवाले घर वापस आए तो उन्होंने देखा कि ग़ुलाम की सेहत बहाल हो चुकी है।

बेवा का बेटा ज़िंदा किया जाता है

11 कुछ देर के बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ नायन शहर के लिए रवाना हुआ। एक बड़ा हुजूम भी साथ चल रहा
था। 12 जब वह शहर के दरवाज़े के क़रीब पहुँचा तो एक जनाज़ा निकला। जो नौजवान फ़ौत हुआ था उस की माँ बेवा
थी और वह उसका इकलौता बेटा था। माँ के साथ शहर के बहुत-से लोग चल रहे थे। 13 उसे देखकर ख़ुदावंद को उस
पर बड़ा तरस आया। उसने उससे कहा, "मत रो।" 14 फिर वह जनाज़े के पास गया और उसे छुआ। उसे उठानेवाले
रुक गए तो ईसा ने कहा, "ऐ नौजवान, मैं तुझे कहता हूँ कि उठ!" 15 मुरदा उठ बैठा और बोलने लगा। ईसा ने उसे
उस की माँ के सुपुर्द कर दिया।

16 यह देखकर तमाम लोगों पर ख़ौफ़ तारी हो गया और वह अल्लाह की तमजीद करके कहने लगे, "हमारे
दरमियान एक बड़ा नबी बरपा हुआ है। अल्लाह ने अपनी क़ौम पर नज़र की है।"

17 और ईसा के बारे में यह ख़बर पूरे यहूदिया और इर्दगिर्द के इलाक़े में फैल गई।

यहया का ईसा से सवाल

18 यहया को भी अपने शागिर्दों की मारिफ़त इन तमाम वाक़ियात के बारे में पता चला। इस पर उसने दो शागिर्दों
को बुलाकर 19 उन्हें यह पूछने के लिए ख़ुदावंद के पास भेजा, "क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और के
इंतज़ार में रहें?"

20 चुनाँचे यह शागिर्द ईसा के पास पहुँचकर कहने लगे, "यहया बपतिस्मा देनेवाले ने हमें यह पूछने के लिए भेजा
है कि क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और का इंतज़ार करें?"

21 ईसा ने उसी वक़्त बहुत-से लोगों को शफ़ा दी थी जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बीमारियों, मुसीबतों और बदरूहों
की गिरिफ़्त में थे। अंधों की आँखें भी बहाल हो गई थीं। 22 इसलिए उसने जवाब में यहया के क़ासिदों से कहा,
"यहया के पास वापस जाकर उसे सब कुछ बता देना जो तुमने देखा और सुना है। 'अंधे देखते, लँगड़े चलते-फिरते
हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुरदों को ज़िंदा किया जाता है और ग़रीबों को अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाई जाती है।' 23 यहया को बताओ, 'मुबारक है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर बरगश्ता नहीं
होता'।"

24 यहया के यह क़ासिद चले गए तो ईसा हुजूम से यहया के बारे में बात करने लगा, "तुम रेगिस्तान में क्या देखने
गए थे? एक सरकंडा जो हवा के हर झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 25 या क्या वहाँ जाकर ऐसे आदमी की तवक़्क़ो
कर रहे थे जो नफ़ीस और मुलायम लिबास पहने हुए है? नहीं, जो शानदार कपड़े पहनते और ऐशो-इशरत में ज़िंदगी
गुज़ारते हैं वह शाही महलों में पाए जाते हैं। 26 तो फिर तुम क्या देखने गए थे? एक नबी को? बिलकुल सहीह, बल्कि
मैं तुमको बताता हूँ कि वह नबी से भी बड़ा है। 27 उसी के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, 'देख मैं अपने पैग़ंबर को
तेरे आगे आगे भेज देता हूँ जो तेरे सामने रास्ता तैयार करेगा।' 28 मैं तुमको बताता हूँ कि इस दुनिया में पैदा होनेवाला

कोई भी शख़्स यहया से बड़ा नहीं है। तो भी अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होनेवाला सबसे छोटा शख़्स उससे बड़ा है।"

29 बात यह थी कि तमाम क़ौम बशमूल टैक्स लेनेवालों ने यहया का पैग़ाम सुनकर अल्लाह का इनसाफ़ मान लिया
और यहया से बपतिस्मा लिया था। 30 सिर्फ़ फ़रीसी और शरीअत के उलमा ने अपने बारे में अल्लाह की मरज़ी को रद्द
करके यहया का बपतिस्मा लेने से इनकार किया था।

31 ईसा ने बात जारी रखी, "चुनाँचे मैं इस नसल के लोगों को किससे तशबीह दूँ? वह किससे मुताबिक़त रखते हैं?
32 वह उन बच्चों की मानिंद हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उनमें से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत
कर रहे हैं, 'हमने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे। फिर हमने नोहा के गीत गाए, लेकिन तुम न रोए।' 33 देखो, यहया
बपतिस्मा देनेवाला आया और न रोटी खाई, न मै पी। यह देखकर तुम कहते हो कि उसमें बदरूह है। 34 फिर इब्ने-आदम
खाता और पीता हुआ आया। अब तुम कहते हो, 'देखो यह कैसा पेटू और शराबी है। और वह टैक्स लेनेवालों और
गुनाहगारों का दोस्त भी है।' 35 लेकिन हिकमत अपने तमाम बच्चों से ही सहीह साबित हुई है।"

ईसा शमौन फ़रीसी के घर में

36 एक फ़रीसी ने ईसा को खाना खाने की दावत दी। ईसा उसके घर जाकर खाना खाने के लिए बैठ गया। 37 उस
शहर में एक बदचलन औरत रहती थी। जब उसे पता चला कि ईसा उस फ़रीसी के घर में खाना खा रहा है तो वह इत्रदान
में बेशक़ीमत इत्र लाकर 38 पीछे से उसके पाँवों के पास खड़ी हो गई। वह रो पड़ी और उसके आँसू टपक टपककर
ईसा के पाँवों को तर करने लगे। फिर उसने उसके पाँवों को अपने बालों से पोंछकर उन्हें चूमा और उन पर इत्र डाला।
39 जब ईसा के फ़रीसी मेज़बान ने यह देखा तो उसने दिल में कहा, "अगर यह आदमी नबी होता तो उसे मालूम होता
कि यह किस क़िस्म की औरत है जो उसे छू रही है, कि यह गुनाहगार है।"

40 ईसा ने इन ख़यालात के जवाब में उससे कहा, "शमौन, मैं तुझे कुछ बताना चाहता हूँ।"

उसने कहा, "जी उस्ताद, बताएँ।"

41 ईसा ने कहा, "एक साहूकार के दो क़र्ज़दार थे। एक को उसने चाँदी के 500 सिक्के दिए थे और दूसरे को 50
सिक्के। 42 लेकिन दोनों अपना क़र्ज़ अदा न कर सके। यह देखकर उसने दोनों का क़र्ज़ मुआफ़ कर दिया। अब मुझे
बता, दोनों क़र्ज़दारों में से कौन उसे ज़्यादा अज़ीज़ रखेगा?"

43 शमौन ने जवाब दिया, "मेरे ख़याल में वह जिसे ज़्यादा मुआफ़ किया गया।"

ईसा ने कहा, "तूने ठीक अंदाज़ा लगाया है।" 44 और औरत की तरफ़ मुड़कर उसने शमौन से बात जारी रखी,
"क्या तू इस औरत को देखता है? 45 जब मैं इस घर में आया तो तूने मुझे पाँव धोने के लिए पानी न दिया। लेकिन
इसने मेरे पाँवों को अपने आँसुओं से तर करके अपने बालों से पोंछकर ख़ुश्क कर दिया है। तूने मुझे बोसा न दिया,
लेकिन यह मेरे अंदर आने से लेकर अब तक मेरे पाँवों को चूमने से बाज़ नहीं रही। 46 तूने मेरे सर पर ज़ैतून का तेल न
डाला, लेकिन इसने मेरे पाँवों पर इत्र डाला। 47 इसलिए मैं तुझे बताता हूँ कि इसके गुनाहों को गो वह बहुत हैं मुआफ़
कर दिया गया है, क्योंकि इसने बहुत मुहब्बत का इज़हार किया है। लेकिन जिसे कम मुआफ़ किया गया हो वह कम
मुहब्बत रखता है।"

48 फिर ईसा ने औरत से कहा, "तेरे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया गया है।"

49 यह सुनकर जो साथ बैठे थे आपस में कहने लगे, "यह किस क़िस्म का शख़्स है जो गुनाहों को भी मुआफ़ करता
है?"

50 लेकिन ईसा ने ख़ातून से कहा, "तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से चली जा।"

8

ख़िदमतगुज़ार ख़वातीन ईसा के साथ सफ़र करती हैं

1 इसके कुछ देर बाद ईसा मुख़्तलिफ़ शहरों और देहातों में से गुज़रकर सफ़र करने लगा। हर जगह उसने अल्लाह
की बादशाही के बारे में ख़ुशख़बरी सुनाई। उसके बारह शागिर्द उसके साथ थे, 2 नीज़ कुछ ख़वातीन भी जिन्हें उसने
बदरूहों से रिहाई और बीमारियों से शफ़ा दी थी। इनमें से एक मरियम थी जो मग्दलीनी कहलाती थी जिसमें से सात
बदरूहें निकाली गई थीं। 3 फिर युअन्ना जो ख़ूज़ा की बीवी थी (ख़ूज़ा हेरोदेस बादशाह का एक अफ़सर था)। सूसन्ना
और दीगर कई ख़वातीन भी थीं जो अपने माली वसायल से उनकी ख़िदमत करती थीं।

बीज बोनेवाले की तमसील

4 एक दिन ईसा ने एक बड़े हुजूम को एक तमसील सुनाई। लोग मुख़्तलिफ़ शहरों से उसे सुनने के लिए जमा हो गए
थे।
5 "एक किसान बीज बोने के लिए निकला। जब बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर गिरे। वहाँ उन्हें
पाँवों तले कुचला गया और परिंदों ने उन्हें चुग लिया। 6 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन
नमी की कमी थी, इसलिए पौदे कुछ देर के बाद सूख गए। 7 कुछ दाने ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ
वह उगने तो लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने फूलने की जगह न दी। चुनाँचे वह भी ख़त्म
हो गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रख़ेज़ ज़मीन पर गिरे। वहाँ वह उग सके और जब फ़सल पक गई तो सौ गुना
ज़्यादा फल पैदा हुआ।"
यह कहकर ईसा पुकार उठा, "जो सुन सकता है वह सुन ले!"

तमसीलों का मक़सद

9 उसके शागिर्दों ने उससे पूछा कि इस तमसील का क्या मतलब है? 10 जवाब में उसने कहा, "तुमको तो अल्लाह
की बादशाही के भेद समझने की लियाक़त दी गई है। लेकिन मैं दूसरों को समझाने के लिए तमसीलें इस्तेमाल करता
हूँ ताकि पाक कलाम पूरा हो जाए कि 'वह अपनी आँखों से देखेंगे मगर कुछ नहीं जानेंगे, वह अपने कानों से सुनेंगे
मगर कुछ नहीं समझेंगे।'

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

11 तमसील का मतलब यह है : बीज से मुराद अल्लाह का कलाम है। 12 राह पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो
कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर इबलीस आकर उसे उनके दिलों से छीन लेता है, ऐसा न हो कि वह ईमान लाकर नजात
पाएँ। 13 पथरीली ज़मीन पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनकर उसे ख़ुशी से क़बूल तो कर लेते हैं, लेकिन
जड़ नहीं पकड़ते। नतीजे में अगरचे वह कुछ देर के लिए ईमान रखते हैं तो भी जब किसी आज़माइश का सामना
करना पड़ता है तो वह बरगश्ता हो जाते हैं। 14 ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो सुनते
तो हैं, लेकिन जब वह चले जाते हैं तो रोज़मर्रा की परेशानियाँ, दौलत और ज़िंदगी की ऐशो-इशरत उन्हें फलने फूलने
नहीं देती। नतीजे में वह फल लाने तक नहीं पहुँचते। 15 इसके मुक़ाबले में ज़रख़ेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं
जिनका दिल दियानतदार और अच्छा है। जब वह कलाम सुनते हैं तो वह उसे अपनाते और साबितक़दमी से तरक़्क़ी
करते करते फल लाते हैं।

कोई चराग़ को बरतन के नीचे नहीं छुपाता

16 जब कोई चराग़ जलाता है तो वह उसे किसी बरतन या चारपाई के नीचे नहीं रखता, बल्कि उसे शमादान पर
रख देता है ताकि उस की रौशनी अंदर आनेवालों को नज़र आए।
17 जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है वह आख़िर में ज़ाहिर हो जाएगा, और जो कुछ भी छुपा हुआ है वह मालूम हो
जाएगा और रौशनी में लाया जाएगा।
18 चुनाँचे इस पर ध्यान दो कि तुम किस तरह सुनते हो। क्योंकि जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा, जबकि
जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जिसके बारे में वह ख़याल करता है कि उसका है।"

ईसा की माँ और भाई

19 एक दिन ईसा की माँ और भाई उसके पास आए, लेकिन वह हुजूम की वजह से उस तक न पहुँच सके। 20 चुनाँचे
ईसा को इत्तला दी गई, "आपकी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।"
21 उसने जवाब दिया, "मेरी माँ और भाई वह सब हैं जो अल्लाह का कलाम सुनकर उस पर अमल करते हैं।"

ईसा आँधी को थमा देता है

22 एक दिन ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "आओ, हम झील को पार करें।" चुनाँचे वह कश्ती पर सवार होकर
रवाना हुए। 23 जब कश्ती चली जा रही थी तो ईसा सो गया। अचानक झील पर आँधी आई। कश्ती पानी से भरने
लगी और डूबने का ख़तरा था। 24 फिर उन्होंने ईसा के पास जाकर उसे जगा दिया और कहा, "उस्ताद, उस्ताद, हम
तबाह हो रहे हैं।"
वह जाग उठा और आँधी और मौजों को डाँटा। आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 25 फिर उसने
शागिर्दों से पूछा, "तुम्हारा ईमान कहाँ है?"
उन पर ख़ौफ़ तारी हो गया और वह सख़्त हैरान होकर आपस में कहने लगे, "आख़िर यह कौन है? वह हवा और
पानी को भी हुक्म देता है, और वह उस की मानते हैं।"

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरूहें निकाल देता है

26 फिर वह सफ़र जारी रखते हुए गरासा के इलाक़े के किनारे पर पहुँचे जो झील के पार गलील के मुक़ाबिल है।
27 जब ईसा कश्ती से उतरा तो शहर का एक आदमी ईसा को मिला जो बदरूहों की गिरिफ़्त में था। वह काफ़ी देर
से कपड़े पहने बग़ैर चलता-फिरता था और अपने घर के बजाए क़ब्रों में रहता था। 28 ईसा को देखकर वह चिल्लाया
और उसके सामने गिर गया। ऊँची आवाज़ से उसने कहा, "ईसा अल्लाह तआला के फ़रज़ंद, मेरा आपके साथ क्या
वास्ता है? मैं मिन्नत करता हूँ, मुझे अज़ाब में न डालें।" 29 क्योंकि ईसा ने नापाक रूह को हुक्म दिया था, "आदमी
में से निकल जा!" इस बदरूह ने बड़ी देर से उस पर क़ब्ज़ा किया हुआ था, इसलिए लोगों ने उसके हाथ-पाँव ज़ंजीरों
से बाँधकर उस की पहरादारी करने की कोशिश की थी, लेकिन बेफ़ायदा। वह ज़ंजीरों को तोड़ डालता और बदरूह
उसे वीरान इलाक़ों में भगाए फिरती थी।

30 ईसा ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उसने जवाब दिया, "लशकर।" इस नाम की वजह यह थी कि उसमें
बहुत-सी बदरूहें घुसी हुई थीं। 31 अब यह मिन्नत करने लगीं, "हमें अथाह गढ़े में जाने को न कहें।"

32 उस वक़्त क़रीब की पहाड़ी पर सुअरों का बड़ा ग़ोल चर रहा था। बदरूहों ने ईसा से इलतमास की, "हमें उन
सुअरों में दाख़िल होने दें।" उसने इजाज़त दे दी। 33 चुनाँचे वह उस आदमी में से निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस
पर पूरे ग़ोल के सुअर भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में झपटकर डूब मरे।

34 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्होंने शहर और देहात में इस बात का चर्चा किया 35 तो लोग यह
मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी जगहों से निकलकर ईसा के पास आए। उसके पास पहुँचे तो वह आदमी
मिला जिससे बदरूहें निकल गई थीं। अब वह कपड़े पहने ईसा के पाँवों में बैठा था और उस की ज़हनी हालत ठीक
थी। यह देखकर वह डर गए। 36 जिन्होंने सब कुछ देखा था उन्होंने लोगों को बताया कि इस बदरूह-गिरिफ़्ता आदमी
को किस तरह रिहाई मिली है। 37 फिर उस इलाक़े के तमाम लोगों ने ईसा से दरख़ास्त की कि वह उन्हें छोड़कर चला
जाए, क्योंकि उन पर बड़ा ख़ौफ़ छा गया था। चुनाँचे ईसा कश्ती पर सवार होकर वापस चला गया। 38 जिस आदमी
से बदरूहें निकल गई थीं उसने उससे इलतमास की, "मुझे भी अपने साथ जाने दें।"

लेकिन ईसा ने उसे इजाज़त न दी बल्कि कहा, 39 "अपने घर वापस चला जा और दूसरों को वह सब कुछ बता जो
अल्लाह ने तेरे लिए किया है।"

चुनाँचे वह वापस चला गया और पूरे शहर में लोगों को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ किया है।

याईर की बेटी और बीमार ख़ातून

40 जब ईसा झील के दूसरे किनारे पर वापस पहुँचा तो लोगों ने उसका इस्तक़बाल किया, क्योंकि वह उसके इंतज़ार
में थे। 41 इतने में एक आदमी ईसा के पास आया जिसका नाम याईर था। वह मक़ामी इबादतख़ाने का राहनुमा था। वह
ईसा के पाँवों में गिरकर मिन्नत करने लगा, "मेरे घर चलें।" 42 क्योंकि उस की इकलौती बेटी जो तक़रीबन बारह
साल की थी मरने को थी।

ईसा चल पड़ा। हुजूम ने उसे यों घेरा हुआ था कि साँस लेना भी मुश्किल था। 43 हुजूम में एक ख़ातून थी जो बारह
साल से ख़ून बहने के मरज़ से रिहाई न पा सकी थी। कोई उसे शफ़ा न दे सका था। 44 अब उसने पीछे से आकर ईसा
के लिबास के किनारे को छुआ। ख़ून बहना फ़ौरन बंद हो गया। 45 लेकिन ईसा ने पूछा, "किसने मुझे छुआ है?"

सबने इनकार किया और पतरस ने कहा, "उस्ताद, यह तमाम लोग तो आपको घेरकर दबा रहे हैं।"

46 लेकिन ईसा ने इसरार किया, "किसी ने ज़रूर मुझे छुआ है, क्योंकि मुझे महसूस हुआ है कि मुझमें से तवानाई
निकली है।" 47 जब उस ख़ातून ने देखा कि भेद खुल गया तो वह लरज़ती हुई आई और उसके सामने गिर गई। पूरे
हुजूम की मौजूदगी में उसने बयान किया कि उसने ईसा को क्यों छुआ था और कि छूते ही उसे शफ़ा मिल गई थी।
48 ईसा ने कहा, "बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से चली जा।"

49 ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी कि इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर से कोई शख़्स आ पहुँचा।
उसने कहा, "आपकी बेटी फ़ौत हो चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तकलीफ़ न दें।"

50 लेकिन ईसा ने यह सुनकर कहा, "मत घबरा। फ़क़त ईमान रख तो वह बच जाएगी।"

51 वह घर पहुँच गए तो ईसा ने किसी को भी सिवाए पतरस, यूहन्ना, याक़ूब और बेटी के वालिदैन के अंदर आने
की इजाज़त न दी। 52 तमाम लोग रो रहे और छाती पीट पीटकर मातम कर रहे थे। ईसा ने कहा, "ख़ामोश! वह मर
नहीं गई बल्कि सो रही है।"

53 लोग हँसकर उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे, क्योंकि वह जानते थे कि लड़की मर गई है। 54 लेकिन ईसा ने लड़की
का हाथ पकड़कर ऊँची आवाज़ से कहा, "बेटी, जाग उठ!" 55 लड़की की जान वापस आ गई और वह फ़ौरन उठ

खड़ी हुई। फिर ईसा ने हुक्म दिया कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। 56 यह सब कुछ देखकर उसके वालिदैन हैरतज़दा
हुए। लेकिन उसने उन्हें कहा कि इसके बारे में किसी को भी न बताना।

9

ईसा बारह रसूलों को तबलीग़ करने भेज देता है

1 इसके बाद ईसा ने अपने बारह शागिर्दों को इकट्ठा करके उन्हें बदरूहों को निकालने और मरीज़ों को शफ़ा देने की
क़ुव्वत और इख़्तियार दिया। 2 फिर उसने उन्हें अल्लाह की बादशाही की मुनादी करने और शफ़ा देने के लिए भेज
दिया। 3 उसने कहा, "सफ़र पर कुछ साथ न लेना। न लाठी, न सामान के लिए बैग, न रोटी, न पैसे और न एक से
ज़्यादा सूट। 4 जिस घर में भी तुम जाते हो उसमें उस मक़ाम से चले जाने तक ठहरो। 5 और अगर मक़ामी लोग तुमको
क़बूल न करें तो फिर उस शहर से निकलते वक़्त उस की गर्द अपने पाँवों से झाड़ दो। यों तुम उनके ख़िलाफ़ गवाही
दोगे।"

6 चुनाँचे वह निकलकर गाँव गाँव जाकर अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने और मरीज़ों को शफ़ा देने लगे।

हेरोदेस अंतिपास परेशान हो जाता है

7 जब गलील के हुक्मरान हेरोदेस अंतिपास ने सब कुछ सुना जो ईसा कर रहा था तो वह उलझन में पड़ गया। बाज़
तो कह रहे थे कि यहया बपतिस्मा देनेवाला जी उठा है। 8 औरों का ख़याल था कि इलियास नबी ईसा में ज़ाहिर हुआ है
या कि क़दीम ज़माने का कोई और नबी जी उठा है। 9 लेकिन हेरोदेस ने कहा, "मैंने ख़ुद यहया का सर क़लम करवाया
था। तो फिर यह कौन है जिसके बारे में मैं इस क़िस्म की बातें सुनता हूँ?" और वह उससे मिलने की कोशिश करने
लगा।

ईसा *5000* अफ़राद को खाना खिलाता है

10 रसूल वापस आए तो उन्होंने ईसा को सब कुछ सुनाया जो उन्होंने किया था। फिर वह उन्हें अलग ले जाकर
बैत-सैदा नामी शहर में आया। 11 लेकिन जब लोगों को पता चला तो वह उनके पीछे वहाँ पहुँच गए। ईसा ने उन्हें आने
दिया और अल्लाह की बादशाही के बारे में तालीम दी। साथ साथ उसने मरीज़ों को शफ़ा भी दी। 12 जब दिन ढलने
लगा तो बारह शागिर्दों ने पास आकर उससे कहा, "लोगों को रुख़सत कर दें ताकि वह इर्दगिर्द के देहातों और बस्तियों
में जाकर रात ठहरने और खाने का बंदोबस्त कर सकें, क्योंकि इस वीरान जगह में कुछ नहीं मिलेगा।"

13 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, "तुम ख़ुद इन्हें कुछ खाने को दो।"

उन्होंने जवाब दिया, "हमारे पास सिर्फ़ पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। या क्या हम जाकर इन तमाम लोगों के
लिए खाना ख़रीद लाएँ?" 14 (वहाँ तक़रीबन 5,000 मर्द थे।)

ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "तमाम लोगों को गुरोहों में तक़सीम करके बिठा दो। हर गुरोह पचास अफ़राद पर
मुश्तमिल हो।"

15 शागिर्दों ने ऐसा ही किया और सबको बिठा दिया। 16 इस पर ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को
लेकर आसमान की तरफ़ नज़र उठाई और उनके लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसने उन्हें तोड़ तोड़कर शागिर्दों
को दिया ताकि वह लोगों में तक़सीम करें। 17 और सबने जी भरकर खाया। इसके बाद जब बचे हुए टुकड़े जमा किए
गए तो बारह टोकरे भर गए।

पतरस का इक़रार

18 एक दिन ईसा अकेला दुआ कर रहा था। सिर्फ़ शागिर्द उसके साथ थे। उसने उनसे पूछा, "मैं आम लोगों के
नज़दीक कौन हूँ?"

19 उन्होंने जवाब दिया, "कुछ कहते हैं यहया बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास नबी हैं। कुछ यह
भी कहते हैं कि क़दीम ज़माने का कोई नबी जी उठा है।"

20 उसने पूछा, "लेकिन तुम क्या कहते हो? तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?"

पतरस ने जवाब दिया, "आप अल्लाह के मसीह हैं।"

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

21 यह सुनकर ईसा ने उन्हें यह बात किसी को भी बताने से मना किया। 22 उसने कहा, "लाज़िम है कि इब्ने-आदम
बहुत दुख उठाकर बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए। उसे क़त्ल भी किया जाएगा,
लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।"

23 फिर उसने सबसे कहा, "जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और हर रोज़ अपनी सलीब
उठाकर मेरे पीछे हो ले। 24 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी ख़ातिर
अपनी जान खो दे वही उसे बचाएगा। 25 क्या फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए मगर वह अपनी
जान से महरूम हो जाए या उसे इसका नुक़सान उठाना पड़े? 26 जो भी मेरे और मेरी बातों के सबब से शरमाए उससे
इब्ने-आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह अपने और अपने बाप के और मुक़द्दस फ़रिश्तों के जलाल में आएगा।
27 मैं तुमको सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही अल्लाह की बादशाही को देखेंगे।"

ईसा की सूरत बदल जाती है

28 तक़रीबन आठ दिन गुज़र गए। फिर ईसा पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को साथ लेकर दुआ करने के लिए पहाड़
पर चढ़ गया। 29 वहाँ दुआ करते करते उसके चेहरे की सूरत बदल गई और उसके कपड़े सफ़ेद होकर बिजली की तरह
चमकने लगे। 30 अचानक दो मर्द ज़ाहिर होकर उससे मुख़ातिब हुए। एक मूसा और दूसरा इलियास था। 31 उनकी
शक्लो-सूरत पुरजलाल थी। वह ईसा से इसके बारे में बात करने लगे कि वह किस तरह अल्लाह का मक़सद पूरा करके
यरूशलम में इस दुनिया से कूच कर जाएगा। 32 पतरस और उसके साथियों को गहरी नींद आ गई थी, लेकिन जब
वह जाग उठे तो ईसा का जलाल देखा और यह कि दो आदमी उसके साथ खड़े हैं। 33 जब वह मर्द ईसा को छोड़कर
रवाना होने लगे तो पतरस ने कहा, "उस्ताद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आएँ, हम तीन झोंपड़ियाँ बनाएँ,
एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक इलियास के लिए।" लेकिन वह नहीं जानता था कि क्या कह रहा है।
34 यह कहते ही एक बादल आकर उन पर छा गया। जब वह उसमें दाख़िल हुए तो दहशतज़दा हो गए। 35 फिर
बादल से एक आवाज़ सुनाई दी, "यह मेरा चुना हुआ फ़रज़ंद है, इसकी सुनो।"
36 आवाज़ ख़त्म हुई तो ईसा अकेला ही था। और उन दिनों में शागिर्दों ने किसी को भी इस वाक़िये के बारे में न
बताया बल्कि ख़ामोश रहे।

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

37 अगले दिन वह पहाड़ से उतर आए तो एक बड़ा हुजूम ईसा से मिलने आया। 38 हुजूम में से एक आदमी ने ऊँची
आवाज़ से कहा, "उस्ताद, मेहरबानी करके मेरे बेटे पर नज़र करें। वह मेरा इकलौता बेटा है। 39 एक बदरूह उसे बार
बार अपनी गिरिफ़्त में ले लेती है। फिर वह अचानक चीख़ें मारने लगता है। बदरूह उसे झँझोड़कर इतना तंग करती है
कि उसके मुँह से झाग निकलने लगता है। वह उसे कुचल कुचलकर मुश्किल से छोड़ती है। 40 मैंने आपके शागिर्दों से
दरख़ास्त की थी कि वह उसे निकालें, लेकिन वह नाकाम रहे।"
41 ईसा ने कहा, "ईमान से ख़ाली और टेढ़ी नसल! मैं कब तक तुम्हारे पास रहूँ, कब तक तुम्हें बरदाश्त करूँ?"
फिर उसने आदमी से कहा, "अपने बेटे को ले आ।"
42 बेटा ईसा के पास आ रहा था तो बदरूह उसे ज़मीन पर पटख़कर झँझोड़ने लगी। लेकिन ईसा ने नापाक रूह को
डाँटकर बच्चे को शफ़ा दी। फिर उसने उसे वापस बाप के सुपुर्द कर दिया। 43 तमाम लोग अल्लाह की अज़ीम क़ुदरत
को देखकर हक्का-बक्का रह गए।

ईसा की मौत का दूसरा एलान

अभी सब उन तमाम कामों पर ताज्जुब कर रहे थे जो ईसा ने हाल ही में किए थे कि उसने अपने शागिर्दों से कहा,
44 "मेरी इस बात पर ख़ूब ध्यान दो, इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा।" 45 लेकिन शागिर्द इसका
मतलब न समझे। यह बात उनसे पोशीदा रही और वह इसे समझ न सके। नीज़, वह ईसा से इसके बारे में पूछने से डरते
भी थे।

कौन सबसे बड़ा है?

46 फिर शागिर्द बहस करने लगे कि हममें से कौन सबसे बड़ा है। 47 लेकिन ईसा जानता था कि वह क्या सोच रहे
हैं। उसने एक छोटे बच्चे को लेकर अपने पास खड़ा किया 48 और उनसे कहा, "जो मेरे नाम में इस बच्चे को क़बूल
करता है वह मुझे ही क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल करता है वह उसे क़बूल करता है जिसने मुझे भेजा है। चुनाँचे
तुममें से जो सबसे छोटा है वही बड़ा है।"

जो तुम्हारे ख़िलाफ़ नहीं वह तुम्हारे हक़ में है

49 यूहन्ना बोल उठा, "उस्ताद, हमने किसी को देखा जो आपका नाम लेकर बदरूहें निकाल रहा था। हमने उसे
मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ मिलकर आपकी पैरवी नहीं करता।"
50 लेकिन ईसा ने कहा, "उसे मना न करना, क्योंकि जो तुम्हारे ख़िलाफ़ नहीं वह तुम्हारे हक़ में है।"

एक सामरी गाँव ईसा को ठहरने नहीं देता

51 जब वह वक़्त क़रीब आया कि ईसा को आसमान पर उठा लिया जाए तो वह बड़े अज़म के साथ यरूशलम की
तरफ़ सफ़र करने लगा। 52 इस मक़सद के तहत उसने अपने आगे क़ासिद भेज दिए। चलते चलते वह सामरियों के
एक गाँव में पहुँचे जहाँ वह उसके लिए ठहरने की जगह तैयार करना चाहते थे। 53 लेकिन गाँव के लोगों ने ईसा को
टिकने न दिया, क्योंकि उस की मनज़िले-मक़सूद यरूशलम थी। 54 यह देखकर उसके शागिर्द याक़ूब और यूहन्ना ने
कहा, "ख़ुदावंद, क्या [इलियास की तरह] हम कहें कि आसमान पर से आग नाज़िल होकर इनको भस्म कर दे?"
55 लेकिन ईसा ने मुड़कर उन्हें डाँटा [और कहा, "तुम नहीं जानते कि तुम किस क़िस्म की रूह के हो। इब्ने-आदम
इसलिए नहीं आया कि लोगों को हलाक करे बल्कि इसलिए कि उन्हें बचाए।"] 56 चुनाँचे वह किसी और गाँव में
चले गए।

पैरवी की संजीदगी

57 सफ़र करते करते किसी ने रास्ते में ईसा से कहा, "जहाँ भी आप जाएँ मैं आपके पीछे चलता रहूँगा।"
58 ईसा ने जवाब दिया, "लोमड़ियाँ अपने भटों में और परिंदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं, लेकिन
इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम करने की कोई जगह नहीं।"
59 किसी और से उसने कहा, "मेरे पीछे हो ले।"

लेकिन उस आदमी ने कहा, "ख़ुदावंद, मुझे पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करने की इजाज़त दें।"

60 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "मुरदों को अपने मुरदे दफ़नाने दे। तू जाकर अल्लाह की बादशाही की मुनादी
कर।"
61 एक और आदमी ने यह माज़रत चाही, "ख़ुदावंद, मैं ज़रूर आपके पीछे हो लूँगा। लेकिन पहले मुझे अपने
घरवालों को ख़ैरबाद कहने दें।"
62 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "जो भी हल चलाते हुए पीछे की तरफ़ देखे वह अल्लाह की बादशाही के लायक़
नहीं है।"

10

ईसा 72 शागिर्दों को मुनादी के लिए भेजता है

1 इसके बाद ख़ुदावंद ने मज़ीद 72 शागिर्दों को मुक़र्रर किया और उन्हें दो दो करके अपने आगे हर उस शहर और
जगह भेज दिया जहाँ वह अभी जाने को था। 2 उसने उनसे कहा, "फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े। इसलिए फ़सल
के मालिक से दरख़ास्त करो कि वह फ़सल काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे। 3 अब रवाना हो जाओ, लेकिन
ज़हन में यह बात रखो कि तुम भेड़ के बच्चों की मानिंद हो जिन्हें मैं भेड़ियों के दरमियान भेज रहा हूँ। 4 अपने साथ
न बटवा ले जाना, न सामान के लिए बैग, न जूते। और रास्ते में किसी को भी सलाम न करना। 5 जब भी तुम किसी
के घर में दाख़िल हो तो पहले यह कहना, 'इस घर की सलामती हो।' 6 अगर उसमें सलामती का कोई बंदा होगा तो
तुम्हारी बरकत उस पर ठहरेगी, वरना वह तुम पर लौट आएगी। 7 सलामती के ऐसे घर में ठहरो और वह कुछ खाओ
पियो जो तुमको दिया जाए, क्योंकि मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है। मुख़्तलिफ़ घरों में घूमते न फिरो बल्कि
एक ही घर में रहो। 8 जब भी तुम किसी शहर में दाख़िल हो और लोग तुमको क़बूल करें तो जो कुछ वह तुमको खाने
को दें उसे खाओ। 9 वहाँ के मरीज़ों को शफ़ा देकर बताओ कि अल्लाह की बादशाही क़रीब आ गई है। 10 लेकिन
अगर तुम किसी शहर में जाओ और लोग तुमको क़बूल न करें तो फिर शहर की सड़कों पर खड़े होकर कहो, 11 'हम
अपने जूतों से तुम्हारे शहर की गर्द भी झाड़ देते हैं। यों हम तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देते हैं। लेकिन यह जान लो कि
अल्लाह की बादशाही क़रीब आ गई है।' 12 मैं तुमको बताता हूँ कि उस दिन उस शहर की निसबत सदूम का हाल
ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त होगा।

तौबा न करनेवाले शहरों पर अफ़सोस

13 ऐ ख़ुराज़ीन, तुझ पर अफ़सोस! बैत-सैदा, तुझ पर अफ़सोस! अगर सूर और सैदा में वह मोजिज़े किए गए
होते जो तुममें हुए तो वहाँ के लोग कब के टाट ओढ़कर और सर पर राख डालकर तौबा कर चुके होते। 14 जी हाँ,
अदालत के दिन तुम्हारी निसबत सूर और सैदा का हाल ज़्यादा क़ाबिले-बरदाश्त होगा। 15 और तू ऐ कफ़र्नहूम, क्या
तुझे आसमान तक सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा।
16 जिसने तुम्हारी सुनी उसने मेरी भी सुनी। और जिसने तुमको रद्द किया उसने मुझे भी रद्द किया। और मुझे रद्द
करनेवाले ने उसे भी रद्द किया जिसने मुझे भेजा है।"

72 शागिर्दों की वापसी

17 72 शागिर्द लौट आए। वह बहुत ख़ुश थे और कहने लगे, "ख़ुदावंद, जब हम आपका नाम लेते हैं तो बदरूहें
भी हमारे ताबे हो जाती हैं।"
18 ईसा ने जवाब दिया, "इबलीस मुझे नज़र आया और वह बिजली की तरह आसमान से गिर रहा था। 19 देखो,
मैंने तुमको साँपों और बिच्छुओं पर चलने का इख़्तियार दिया है। तुमको दुश्मन की पूरी ताक़त पर इख़्तियार हासिल है।
कुछ भी तुमको नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा। 20 लेकिन इस वजह से ख़ुशी न मनाओ कि बदरूहें तुम्हारे ताबे हैं, बल्कि
इस वजह से कि तुम्हारे नाम आसमान पर दर्ज किए गए हैं।"

बाप की तमजीद

21 उसी वक़्त ईसा रूहुल-क़ुद्स में ख़ुशी मनाने लगा। उसने कहा, "ऐ बाप, आसमानो-ज़मीन के मालिक! मैं तेरी
तमजीद करता हूँ कि तूने यह बात दानाओं और अक़्लमंदों से छुपाकर छोटे बच्चों पर ज़ाहिर कर दी है। हाँ मेरे बाप,
क्योंकि यही तुझे पसंद आया।
22 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है। कोई नहीं जानता कि फ़रज़ंद कौन है सिवाए बाप के। और कोई नहीं
जानता कि बाप कौन है सिवाए फ़रज़ंद के और उन लोगों के जिन पर फ़रज़ंद यह ज़ाहिर करना चाहता है।"
23 फिर ईसा शागिर्दों की तरफ़ मुड़ा और अलहदगी में उनसे कहने लगा, "मुबारक हैं वह आँखें जो वह कुछ देखती
हैं जो तुमने देखा है। 24 मैं तुमको बताता हूँ कि बहुत-से नबी और बादशाह यह देखना चाहते थे जो तुम देखते हो, लेकिन
उन्होंने न देखा। और वह यह सुनने के आरज़ूमंद थे जो तुम सुनते हो, लेकिन उन्होंने न सुना।"

नेक सामरी की तमसील

25 एक मौक़े पर शरीअत का एक आलिम ईसा को फँसाने की ख़ातिर खड़ा हुआ। उसने पूछा, "उस्ताद, मैं क्या
क्या करने से मीरास में अबदी ज़िंदगी पा सकता हूँ?"
26 ईसा ने उससे कहा, "शरीअत में क्या लिखा है? तू उसमें क्या पढ़ता है?"
27 आदमी ने जवाब दिया, " 'रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी ताक़त और अपने
पूरे ज़हन से प्यार करना।' और 'अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है'।"
28 ईसा ने कहा, "तूने ठीक जवाब दिया। ऐसा ही कर तो ज़िंदा रहेगा।"
29 लेकिन आलिम ने अपने आपको दुरुस्त साबित करने की ग़रज़ से पूछा, "तो मेरा पड़ोसी कौन है?"
30 ईसा ने जवाब में कहा, "एक आदमी यरूशलम से यरीहू की तरफ़ जा रहा था कि वह डाकुओं के हाथों में पड़
गया। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे ख़ूब मारा और अधमुआ छोड़कर चले गए। 31 इत्तफ़ाक़ से एक इमाम भी
उसी रास्ते पर यरीहू की तरफ़ चल रहा था। लेकिन जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो रास्ते की परली तरफ़ होकर
आगे निकल गया। 32 लावी क़बीले का एक ख़ादिम भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन वह भी रास्ते की परली तरफ़ से आगे
निकल गया। 33 फिर सामरिया का एक मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रा। जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो उसे उस पर
तरस आया। 34 वह उसके पास गया और उसके ज़ख़मों पर तेल और मै लगाकर उन पर पट्टियाँ बाँध दीं। फिर उसको
अपने गधे पर बिठाकर सराय तक ले गया। वहाँ उसने उस की मज़ीद देख-भाल की। 35 अगले दिन उसने चाँदी के दो
सिक्के निकालकर सराय के मालिक को दिए और कहा, 'इसकी देख-भाल करना। अगर ख़र्चा इससे बढ़कर हुआ तो
मैं वापसी पर अदा कर दूँगा'।"
36 फिर ईसा ने पूछा, "अब तेरा क्या ख़याल है, डाकुओं की ज़द में आनेवाले आदमी का पड़ोसी कौन था? इमाम,
लावी या सामरी?"
37 आलिम ने जवाब दिया, "वह जिसने उस पर रहम किया।"
ईसा ने कहा, "बिलकुल ठीक। अब तू भी जाकर ऐसा ही कर।"

ईसा मरियम और मर्था के घर जाता है

38 फिर ईसा शागिर्दों के साथ आगे निकला। चलते चलते वह एक गाँव में पहुँचा। वहाँ की एक औरत बनाम मर्था
ने उसे अपने घर में ख़ुशआमदीद कहा। 39 मर्था की एक बहन थी जिसका नाम मरियम था। वह ख़ुदावंद के पाँवों में
बैठकर उस की बातें सुनने लगी 40 जबकि मर्था मेहमानों की ख़िदमत करते करते थक गई। आख़िरकार वह ईसा के
पास आकर कहने लगी, "ख़ुदावंद, क्या आपको परवा नहीं कि मेरी बहन ने मेहमानों की ख़िदमत का पूरा इंतज़ाम
मुझ पर छोड़ दिया है? उससे कहें कि वह मेरी मदद करे।"
41 लेकिन ख़ुदावंद ईसा ने जवाब में कहा, "मर्था, मर्था, तू बहुत-सी फ़िकरों और परेशानियों में पड़ गई है। 42 लेकिन
एक बात ज़रूरी है। मरियम ने बेहतर हिस्सा चुन लिया है और यह उससे छीना नहीं जाएगा।"

11

दुआ किस तरह करनी है

1 एक दिन ईसा कहीं दुआ कर रहा था। जब वह फ़ारिग़ हुआ तो उसके किसी शागिर्द ने कहा, "ख़ुदावंद, हमें दुआ
करना सिखाएँ, जिस तरह यहया ने भी अपने शागिर्दों को दुआ करने की तालीम दी।"
2 ईसा ने कहा, "दुआ करते वक़्त यों कहना,
ऐ बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।
तेरी बादशाही आए।
3 हर रोज़ हमें हमारी रोज़ की रोटी दे।
4 हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।
क्योंकि हम भी हर एक को मुआफ़ करते हैं
जो हमारा गुनाह करता है। *
और हमें आज़माइश में न पड़ने दे।"

माँगते रहो

5 फिर उसने उनसे कहा, "अगर तुममें से कोई आधी रात के वक़्त अपने दोस्त के घर जाकर कहे, 'भाई, मुझे तीन
रोटियाँ दे, बाद में मैं यह वापस कर दूँगा। 6 क्योंकि मेरा दोस्त सफ़र करके मेरे पास आया है और मैं उसे खाने के लिए
कुछ नहीं दे सकता।' 7 अब फ़र्ज़ करो कि यह दोस्त अंदर से जवाब दे, 'मेहरबानी करके मुझे तंग न कर। दरवाज़े पर
ताला लगा है और मेरे बच्चे मेरे साथ बिस्तर पर हैं, इसलिए मैं तुझे देने के लिए उठ नहीं सकता।' 8 लेकिन मैं तुमको
यह बताता हूँ कि अगर वह दोस्ती की ख़ातिर न भी उठे, तो भी वह अपने दोस्त के बेजा इसरार की वजह से उस की
तमाम ज़रूरत पूरी करेगा।
9 चुनाँचे माँगते रहो तो तुमको दिया जाएगा, ढूँडते रहो तो तुमको मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिए
दरवाज़ा खोल दिया जाएगा। 10 क्योंकि जो भी माँगता है वह पाता है, जो ढूँडता है उसे मिलता है और जो खटखटाता
है उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया जाता है। 11 तुम बापों में से कौन अपने बेटे को साँप देगा अगर वह मछली माँगे?
12 या कौन उसे बिच्छू देगा अगर वह अंडा माँगे? कोई नहीं! 13 जब तुम बुरे होने के बावुजूद इतने समझदार हो कि
अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी ज़्यादा यक़ीनी बात है कि आसमानी बाप अपने माँगनेवालों
को रूहुल-क़ुद्स देगा।"

ईसा और बदरूहों का सरदार

14 एक दिन ईसा ने एक ऐसी बदरूह निकाल दी जो गूँगी थी। जब वह गूँगे आदमी में से निकली तो वह बोलने लगा।
वहाँ पर जमा लोग हक्का-बक्का रह गए। 15 लेकिन बाज़ ने कहा, "यह तो बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल की मदद
से बदरूहों को निकालता है।"
16 औरों ने उसे आज़माने के लिए किसी इलाही निशान का मुतालबा किया। 17 लेकिन ईसा ने उनके ख़यालात
जानकर कहा, "जिस बादशाही में भी फूट पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी, और जिस घराने की ऐसी हालत हो वह
भी ख़ाक में मिल जाएगा। 18 तुम कहते हो कि मैं बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ। लेकिन अगर
इबलीस में फूट पड़ गई है तो फिर उस की बादशाही किस तरह क़ायम रह सकती है? 19 दूसरा सवाल यह है, अगर
मैं बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे उन्हें किसके ज़रीए निकालते हैं? चुनाँचे वही इस
बात में तुम्हारे मुंसिफ़ होंगे। 20 लेकिन अगर मैं अल्लाह की क़ुदरत से बदरूहों को निकालता हूँ तो फिर अल्लाह की
बादशाही तुम्हारे पास पहुँच चुकी है।
21 जब तक कोई ज़ोरावर आदमी हथियारों से लैस अपने डेरे की पहरादारी करे उस वक़्त तक उस की मिलकियत
महफ़ूज़ रहती है। 22 लेकिन अगर कोई ज़्यादा ताक़तवर शख़्स हमला करके उस पर ग़ालिब आए तो वह उसके असला
पर क़ब्ज़ा करेगा जिस पर उसका भरोसा था, और लूटा हुआ माल अपने लोगों में तक़सीम कर देगा।
23 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे ख़िलाफ़ है और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है।

बदरूह की वापसी

24 जब कोई बदरूह किसी शख़्स में से निकलती है तो वह वीरान इलाक़ों में से गुज़रती हुई आराम की जगह तलाश
करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा मक़ाम नहीं मिलता तो वह कहती है, 'मैं अपने उस घर में वापस चली जाऊँगी

---

* **11:4** लफ़्ज़ी तरजुमा : जो हमारा क़र्ज़दार है।

जिसमें से निकली थी।’ 25 वह वापस आकर देखती है कि किसी ने झाड़ू देकर सब कुछ सलीक़े से रख दिया है।
26 फिर वह जाकर सात और बदरूहें ढूँड लाती है जो उससे बदतर होती हैं, और वह सब उस शख़्स में घुसकर रहने
लगती हैं। चुनाँचे अब उस आदमी की हालत पहले की निसबत ज़्यादा बुरी हो जाती है।”

कौन मुबारक है?

27 ईसा अभी यह बात कर ही रहा था कि एक औरत ने ऊँची आवाज़ से कहा, “आपकी माँ मुबारक है जिसने
आपको जन्म दिया और आपको दूध पिलाया।”

28 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “बात यह नहीं है। हक़ीक़त में वह मुबारक हैं जो अल्लाह का कलाम सुनकर उस
पर अमल करते हैं।”

इलाही निशान का तक़ाज़ा

29 सुननेवालों की तादाद बहुत बढ़ गई तो वह कहने लगा, “यह नसल शरीर है, क्योंकि यह मुझसे इलाही निशान
का तक़ाज़ा करती है। लेकिन इसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनुस के निशान के। 30 क्योंकि
जिस तरह यूनुस नीनवा शहर के बाशिंदों के लिए निशान था बिलकुल उसी तरह इब्ने-आदम इस नसल के लिए निशान
होगा। 31 क़ियामत के दिन जुनूबी मुल्क सबा की मलिका इस नसल के लोगों के साथ खड़ी होकर उन्हें मुजरिम क़रार
देगी। क्योंकि वह दूर-दराज़ मुल्क से सुलेमान की हिकमत सुनने के लिए आई थी जबकि यहाँ वह है जो सुलेमान से
भी बड़ा है। 32 उस दिन नीनवा के बाशिंदे भी इस नसल के लोगों के साथ खड़े होकर उन्हें मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि
यूनुस के एलान पर उन्होंने तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूनुस से भी बड़ा है।

बदन की रौशनी

33 जब कोई शख़्स चराग़ जलाता है तो न वह उसे छुपाता, न बरतन के नीचे रखता बल्कि उसे शमादान पर रख देता
है ताकि उस की रौशनी अंदर आनेवालों को नज़र आए। 34 तेरी आँख तेरे बदन का चराग़ है। अगर तेरी आँख ठीक हो
तो तेरा पूरा जिस्म रौशन होगा। लेकिन अगर आँख ख़राब हो तो पूरा जिस्म अंधेरा ही अंधेरा होगा। 35 ख़बरदार! ऐसा न
हो कि जो रौशनी तेरे अंदर है वह हक़ीक़त में तारीकी हो। 36 चुनाँचे अगर तेरा पूरा जिस्म रौशन हो और कोई भी हिस्सा
तारीक न हो तो फिर वह बिलकुल रौशन होगा, ऐसा जैसा उस वक़्त होता है जब चराग़ तुझे अपने चमकने-दमकने से
रौशन कर देता है।”

फ़रीसियों पर अफ़सोस

37 ईसा अभी बात कर रहा था कि किसी फ़रीसी ने उसे खाने की दावत दी। चुनाँचे वह उसके घर में जाकर खाने
के लिए बैठ गया। 38 मेज़बान बड़ा हैरान हुआ, क्योंकि उसने देखा कि ईसा हाथ धोए बग़ैर खाने के लिए बैठ गया है।
39 लेकिन ख़ुदावंद ने उससे कहा, “देखो, तुम फ़रीसी बाहर से हर प्याले और बरतन की सफ़ाई करते हो, लेकिन अंदर
से तुम लूट-मार और शरारत से भरे होते हो। 40 नादानो! अल्लाह ने बाहरवाले हिस्से को ख़लक़ किया, तो क्या उसने
अंदरवाले हिस्से को नहीं बनाया? 41 चुनाँचे जो कुछ बरतन के अंदर है उसे ग़रीबों को दे दो। फिर तुम्हारे लिए सब
कुछ पाक-साफ़ होगा।

42 फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि एक तरफ़ तुम पौदीना, सदाब और बाग़ की हर क़िस्म की तरकारी का
दसवाँ हिस्सा अल्लाह के लिए मख़सूस करते हो, लेकिन दूसरी तरफ़ तुम इनसाफ़ और अल्लाह की मुहब्बत को
नज़रंदाज़ करते हो। लाज़िम है कि तुम यह काम भी करो और पहला भी न छोड़ो।

43 फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम इबादतख़ानों की इज़्ज़त की कुरसियों पर बैठने के लिए बेचैन रहते
और बाज़ार में लोगों का सलाम सुनने के लिए तड़पते हो। 44 हाँ, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम पोशीदा क़ब्रों की
मानिंद हो जिन पर से लोग नादानिस्ता तौर पर गुज़रते हैं।”

45 शरीअत के एक आलिम ने एतराज़ किया, “उस्ताद, आप यह कहकर हमारी भी बेइज़्ज़ती करते हैं।”

46 ईसा ने जवाब दिया, “तुम शरीअत के आलिमों पर भी अफ़सोस! क्योंकि तुम लोगों पर भारी बोझ डाल देते
हो जो मुश्किल से उठाया जा सकता है। न सिर्फ़ यह बल्कि तुम ख़ुद इस बोझ को अपनी एक उँगली भी नहीं लगाते।
47 तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम नबियों के मज़ार बना देते हो, उनके जिन्हें तुम्हारे बापदादा ने मार डाला। 48 इससे
तुम गवाही देते हो कि तुम वह कुछ पसंद करते हो जो तुम्हारे बापदादा ने किया। उन्होंने नबियों को क़त्ल किया जबकि
तुम उनके मज़ार तामीर करते हो। 49 इसलिए अल्लाह की हिकमत ने कहा, ‘मैं उनमें नबी और रसूल भेज दूँगी। उनमें
से बाज़ को वह क़त्ल करेंगे और बाज़ को सताएँगे।’ 50 नतीजे में यह नसल तमाम नबियों के क़त्ल की ज़िम्मादार
ठहरेगी—दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक, 51 यानी हाबील के क़त्ल से लेकर ज़करियाह के क़त्ल तक,

जिसे बैतुल-मुक़द्दस के सहन में मौजूद क़ुरबानगाह और बैतुल-मुक़द्दस के दरवाज़े के दरमियान क़त्ल किया गया। हाँ,
मैं तुमको बताता हूँ कि यह नसल ज़रूर उनकी ज़िम्मादार ठहरेगी।
52 शरीअत के आलिमो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुमने इल्म की कुंजी को छीन लिया है। न सिर्फ़ यह कि तुम
ख़ुद दाख़िल नहीं हुए, बल्कि तुमने दाख़िल होनेवालों को भी रोक लिया।”
53 जब ईसा वहाँ से निकला तो आलिम और फ़रीसी उसके सख़्त मुख़ालिफ़ हो गए और बड़े ग़ौर से उस की पूछ-गछ
करने लगे। 54 वह इस ताक में रहे कि उसे मुँह से निकली किसी बात की वजह से पकड़ें।

12

रियाकारी से ख़बरदार रहो!

1 इतने में कई हज़ार लोग जमा हो गए थे। बड़ी तादाद की वजह से वह एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे। फिर ईसा अपने
शागिर्दों से यह बात करने लगा, “फ़रीसियों के ख़मीर यानी रियाकारी से ख़बरदार! 2 जो कुछ भी अभी छुपा हुआ
है उसे आख़िर में ज़ाहिर किया जाएगा और जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उसका राज़ आख़िर में खुल जाएगा।
3 इसलिए जो कुछ तुमने अंधेरे में कहा है वह रोज़े-रौशन में सुनाया जाएगा और जो कुछ तुमने अंदरूनी कमरों का
दरवाज़ा बंद करके आहिस्ता आहिस्ता कान में बयान किया है उसका छतों से एलान किया जाएगा।

किससे डरना चाहिए?

4 मेरे अज़ीज़ो, उनसे मत डरना जो सिर्फ़ जिस्म को क़त्ल करते हैं और मज़ीद नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। 5 मैं
तुमको बताता हूँ कि किससे डरना है। अल्लाह से डरो, जो तुम्हें हलाक करने के बाद जहन्नुम में फेंकने का इख़्तियार
भी रखता है। जी हाँ, उसी से ख़ौफ़ खाओ।
6 क्या पाँच चिड़ियाँ दो पैसों में नहीं बिकतीं? तो भी अल्लाह हर एक की फ़िकर करके एक को भी नहीं भूलता।
7 हाँ, बल्कि तुम्हारे सर के सब बाल भी गिने हुए हैं। लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी क़दरो-क़ीमत बहुत-सी चिड़ियों से
कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इक़रार या इनकार करने के नतीजे

8 मैं तुमको बताता हूँ, जो भी लोगों के सामने मेरा इक़रार करे उसका इक़रार इब्ने-आदम भी फ़रिश्तों के सामने
करेगा। 9 लेकिन जो लोगों के सामने मेरा इनकार करे उसका भी अल्लाह के फ़रिश्तों के सामने इनकार किया जाएगा।
10 और जो भी इब्ने-आदम के ख़िलाफ़ बात करे उसे मुआफ़ किया जा सकता है। लेकिन जो रूहुल-क़ुद्स के
ख़िलाफ़ कुफ़र बके उसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा।
11 जब लोग तुमको इबादतख़ानों में और हाकिमों और इख़्तियारवालों के सामने घसीटकर ले जाएंगे तो यह सोचते
सोचते परेशान न हो जाना कि मैं किस तरह अपना दिफ़ा करूँ या क्या कहूँ, 12 क्योंकि रूहुल-क़ुद्स तुमको उसी वक़्त
सिखा देगा कि तुमको क्या कहना है।”

नादान अमीर की तमसील

13 किसी ने भीड़ में से कहा, “उस्ताद, मेरे भाई से कहें कि मीरास का मेरा हिस्सा मुझे दे।”
14 ईसा ने जवाब दिया, “भई, किसने मुझे तुम पर जज या तक़सीम करनेवाला मुक़र्रर किया है?” 15 फिर उसने
उनसे मज़ीद कहा, “ख़बरदार! हर क़िस्म के लालच से बचे रहना, क्योंकि इनसान की ज़िंदगी उसके मालो-दौलत की
कसरत पर मुनहसिर नहीं।”
16 उसने उन्हें एक तमसील सुनाई। “किसी अमीर आदमी की ज़मीन में अच्छी फ़सल पैदा हुई। 17 चुनाँचे वह
सोचने लगा, ‘अब मैं क्या करूँ? मेरे पास तो इतनी जगह नहीं जहाँ मैं सब कुछ जमा करके रखूँ।’ 18 फिर उसने कहा,
‘मैं यह करूँगा कि अपने गोदामों को ढाकर इनसे बड़े तामीर करूँगा। उनमें अपना तमाम अनाज और बाक़ी पैदावार
जमा कर लूँगा। 19 फिर मैं अपने आपसे कहूँगा कि लो, इन अच्छी चीज़ों से तेरी ज़रूरियात बहुत सालों तक पूरी
होती रहेंगी। अब आराम कर। खा, पी और ख़ुशी मना।’ 20 लेकिन अल्लाह ने उससे कहा, ‘अहमक़! इसी रात तू मर
जाएगा। तो फिर जो चीज़ें तूने जमा की हैं वह किसकी होंगी?’
21 यही उस शख़्स का अंजाम है जो सिर्फ़ अपने लिए चीज़ें जमा करता है जबकि वह अल्लाह के सामने ग़रीब
है।”

अल्लाह पर भरोसा

22 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “इसलिए अपनी ज़िंदगी की ज़रूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो
कि हाय, मैं क्या खाऊँ। और जिस्म के लिए फ़िकरमंद न रहो कि हाय, मैं क्या पहनूँ। 23 ज़िंदगी तो खाने से ज़्यादा

अहम है और जिस्म पोशाक से ज़्यादा। 24 कौवों पर ग़ौर करो। न वह बीज बोते, न फ़सलें काटते हैं। उनके पास न स्टोर
होता है, न गोदाम। तो भी अल्लाह ख़ुद उन्हें खाना खिलाता है। और तुम्हारी क़दरो-क़ीमत तो परिंदों से कहीं ज़्यादा
है। 25 क्या तुममें से कोई फ़िकर करते करते अपनी ज़िंदगी में एक लमहे का भी इज़ाफ़ा कर सकता है? 26 अगर
तुम फ़िकर करने से इतनी छोटी-सी तबदीली भी नहीं ला सकते तो फिर तुम बाक़ी बातों के बारे में क्यों फ़िकरमंद
हो? 27 ग़ौर करो कि सोसन के फूल किस तरह उगते हैं। न वह मेहनत करते, न कातते हैं। लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ
कि सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के बावुजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलब्बस नहीं था जैसे उनमें से एक।
28 अगर अल्लाह उस घास को जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है
तो ऐ कमएतक़ादो, वह तुमको पहनाने के लिए क्या कुछ नहीं करेगा?

29 इसकी तलाश में न रहना कि क्या खाओगे या क्या पियोगे। ऐसी बातों की वजह से बेचैन न रहो। 30 क्योंकि
दुनिया में जो ईमान नहीं रखते वही इन तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं, जबकि तुम्हारे बाप को पहले से मालूम
है कि तुमको इनकी ज़रूरत है। 31 चुनाँचे उसी की बादशाही की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीज़ें भी तुमको मिल
जाएँगी।

आसमान पर दौलत जमा करना

32 ऐ छोटे गल्ले, मत डरना, क्योंकि तुम्हारे बाप ने तुमको बादशाही देना पसंद किया। 33 अपनी मिलकियत बेचकर
ग़रीबों को दे देना। अपने लिए ऐसे बटवे बनवाओ जो नहीं घिसते। अपने लिए आसमान पर ऐसा ख़ज़ाना जमा करो
जो कभी ख़त्म नहीं होगा और जहाँ न कोई चोर आएगा, न कोई कीड़ा उसे ख़राब करेगा। 34 क्योंकि जहाँ तुम्हारा
ख़ज़ाना है वहीं तुम्हारा दिल भी लगा रहेगा।

हर वक़्त तैयार नौकर

35 ख़िदमत के लिए तैयार खड़े रहो और इस पर ध्यान दो कि तुम्हारे चराग़ जलते रहें। 36 यानी ऐसे नौकरों की
मानिंद जिनका मालिक किसी शादी से वापस आनेवाला है और वह उसके लिए तैयार खड़े हैं। ज्योंही वह आकर
दस्तक दे वह दरवाज़े को खोल देंगे। 37 वह नौकर मुबारक हैं जिन्हें मालिक आकर जागते हुए और चौकस पाएगा। मैं
तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक अपने कपड़े बदलकर उन्हें बिठाएगा और मेज़ पर उनकी ख़िदमत करेगा।
38 हो सकता है मालिक आधी रात या इसके बाद आए। अगर वह इस सूरत में भी उन्हें मुस्तैद पाए तो वह मुबारक हैं।
39 यक़ीन जानो, अगर किसी घर के मालिक को पता होता कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर उसे घर में नक़ब लगाने
न देता। 40 तुम भी तैयार रहो, क्योंकि इब्ने-आदम ऐसे वक़्त आएगा जब तुम इसकी तवक़्क़ो नहीं करोगे।"

वफ़ादार नौकर

41 पतरस ने पूछा, "ख़ुदावंद, क्या यह तमसील सिर्फ़ हमारे लिए है या सबके लिए?"

42 ख़ुदावंद ने जवाब दिया, "कौन-सा नौकर वफ़ादार और समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर के मालिक ने किसी
नौकर को बाक़ी नौकरों पर मुक़र्रर किया हो। उस की एक ज़िम्मादारी यह भी है कि उन्हें वक़्त पर मुनासिब खाना
खिलाए। 43 वह नौकर मुबारक होगा जो मालिक की वापसी पर यह सब कुछ कर रहा होगा। 44 मैं तुमको सच बताता
हूँ कि यह देखकर मालिक उसे अपनी पूरी जायदाद पर मुक़र्रर करेगा। 45 लेकिन फ़र्ज़ करो कि नौकर अपने दिल में
सोचे, 'मालिक की वापसी में अभी देर है।' वह नौकरों और नौकरानियों को पीटने लगे और खाते-पीते वह नशे में रहे।
46 अगर वह ऐसा करे तो मालिक ऐसे दिन और वक़्त आएगा जिसकी तवक़्क़ो नौकर को नहीं होगी। इन हालात को
देखकर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और उसे ग़ैरईमानदारों में शामिल करेगा।

47 जो नौकर अपने मालिक की मरज़ी को जानता है, लेकिन उसके लिए तैयारियाँ नहीं करता, न उसे पूरी करने की
कोशिश करता है, उस की ख़ूब पिटाई की जाएगी। 48 इसके मुक़ाबले में वह जो मालिक की मरज़ी को नहीं जानता
और इस बिना पर कोई क़ाबिले-सज़ा काम करे उस की कम पिटाई की जाएगी। क्योंकि जिसे बहुत दिया गया हो उससे
बहुत तलब किया जाएगा। और जिसके सुपुर्द बहुत कुछ किया गया हो उससे कहीं ज़्यादा माँगा जाएगा।

ईसा की वजह से इख़्तिलाफ़ पैदा होगा

49 मैं ज़मीन पर आग लगाने आया हूँ, और काश वह पहले ही भड़क रही होती! 50 लेकिन अब तक मेरे सामने
एक बपतिस्मा है जिसे लेना ज़रूरी है। और मुझ पर कितना दबाव है जब तक उस की तकमील न हो जाए। 51 क्या
तुम समझते हो कि मैं दुनिया में सुलह-सलामती क़ायम करने आया हूँ? नहीं, मैं तुमको बताता हूँ कि इसकी बजाए मैं
इख़्तिलाफ़ पैदा करूँगा। 52 क्योंकि अब से एक घराने के पाँच अफ़राद में इख़्तिलाफ़ होगा। तीन दो के ख़िलाफ़ और

दो तीन के ख़िलाफ़ होंगे। 53 बाप बेटे के ख़िलाफ़ होगा और बेटा बाप के ख़िलाफ़, माँ बेटी के ख़िलाफ़ और बेटी माँ
के ख़िलाफ़, सास बहू के ख़िलाफ़ और बहू सास के ख़िलाफ़।"

मौजूदा हालात का सहीह नतीजा निकालना चाहिए

54 ईसा ने हुजूम से यह भी कहा, "ज्योंही कोई बादल मग़रिबी उफ़क़ से चढ़ता हुआ नज़र आए तो तुम कहते हो
कि बारिश होगी। और ऐसा ही होता है। 55 और जब जुनूबी लू चलती है तो तुम कहते हो कि सख़्त गरमी होगी। और
ऐसा ही होता है। 56 ऐ रियाकारो! तुम आसमानो-ज़मीन के हालात पर ग़ौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो। तो
फिर तुम मौजूदा ज़माने के हालात पर ग़ौर करके सहीह नतीजा क्यों नहीं निकाल सकते?

अपने मुख़ालिफ़ से समझौता करना

57 तुम ख़ुद सहीह फ़ैसला क्यों नहीं कर सकते? 58 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़दमा चलाया है। अगर ऐसा
हो तो पूरी कोशिश कर कि कचहरी में पहुँचने से पहले पहले मामला हल करके मुख़ालिफ़ से फ़ारिग़ हो जाए। ऐसा न
हो कि वह तुझको जज के सामने घसीटकर ले जाए, जज तुझे पुलिस अफ़सर के हवाले करे और पुलिस अफ़सर तुझे
जेल में डाल दे। 59 मैं तुझे बताता हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक नहीं निकल पाएगा जब तक जुर्माने की पूरी पूरी रक़म
अदा न कर दे।"

13

तौबा करो वरना हलाक हो जाओगे

1 उस वक़्त कुछ लोग ईसा के पास पहुँचे। उन्होंने उसे गलील के कुछ लोगों के बारे में बताया जिन्हें पीलातुस
ने उस वक़्त क़त्ल करवाया था जब वह बैतुल-मुक़द्दस में क़ुरबानियाँ पेश कर रहे थे। यों उनका ख़ून क़ुरबानियों के
ख़ून के साथ मिलाया गया था। 2 ईसा ने यह सुनकर पूछा, "क्या तुम्हारे ख़याल में यह लोग गलील के बाक़ी लोगों से
ज़्यादा गुनाहगार थे कि इन्हें इतना दुख उठाना पड़ा? 3 हरगिज़ नहीं! बल्कि मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम तौबा
न करो तो तुम भी इसी तरह तबाह हो जाओगे। 4 या उन 18 अफ़राद के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है जो मर गए
जब शिलोख़ का बुर्ज उन पर गिरा? क्या वह यरूशलम के बाक़ी बाशिंदों की निसबत ज़्यादा गुनाहगार थे? 5 हरगिज़
नहीं! मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम तौबा न करो तो तुम भी तबाह हो जाओगे।"

बेफल अंजीर का दरख़्त

6 फिर ईसा ने उन्हें यह तमसील सुनाई, "किसी ने अपने बाग़ में अंजीर का दरख़्त लगाया। जब वह उसका फल
तोड़ने के लिए आया तो कोई फल नहीं था। 7 यह देखकर उसने माली से कहा, 'मैं तीन साल से इसका फल तोड़ने
आता हूँ, लेकिन आज तक कुछ भी नहीं मिला। इसे काट डाल। यह ज़मीन की ताक़त क्यों ख़त्म करे?' 8 लेकिन
माली ने कहा, 'जनाब, इसे एक साल और रहने दें। मैं इसके इर्दगिर्द गोडी करके खाद डालूँगा। 9 फिर अगर यह अगले
साल फल लाया तो ठीक, वरना इसे कटवा डालना'।"

सबत के दिन कुबड़ी औरत की शफ़ा

10 सबत के दिन ईसा किसी इबादतख़ाने में तालीम दे रहा था। 11 वहाँ एक औरत थी जो 18 साल से बदरूह के
बाइस बीमार थी। वह कुबड़ी हो गई थी और सीधी खड़ी होने के बिलकुल क़ाबिल न थी। 12 जब ईसा ने उसे देखा
तो पुकारकर कहा, "ऐ औरत, तू अपनी बीमारी से छूट गई है!" 13 उसने अपने हाथ उस पर रखे तो वह फ़ौरन सीधी
खड़ी होकर अल्लाह की तमजीद करने लगी।

14 लेकिन इबादतख़ाने का राहनुमा नाराज़ हुआ क्योंकि ईसा ने सबत के दिन शफ़ा दी थी। उसने लोगों से कहा,
"हफ़्ते के छः दिन काम करने के लिए होते हैं। इसलिए इतवार से लेकर जुमे तक शफ़ा पाने के लिए आओ, न कि
सबत के दिन।"

15 ख़ुदावंद ने जवाब में उससे कहा, "तुम कितने रियाकार हो! क्या तुममें से हर कोई सबत के दिन अपने बैल या
गधे को खोलकर उसे थान से बाहर नहीं ले जाता ताकि उसे पानी पिलाए? 16 अब इस औरत को देखो जो इब्राहीम की
बेटी है और जो 18 साल से इबलीस के बंधन में थी। जब तुम सबत के दिन अपने जानवरों की मदद करते हो तो क्या
यह ठीक नहीं कि औरत को इस बंधन से रिहाई दिलाई जाती, चाहे यह काम सबत के दिन ही क्यों न किया जाए?"
17 ईसा के इस जवाब से उसके मुख़ालिफ़ शरमिंदा हो गए। लेकिन आम लोग उसके इन तमाम शानदार कामों से ख़ुश
हुए।

राई के दाने की तमसील

18 ईसा ने कहा, "अल्लाह की बादशाही किस चीज़ की मानिंद है? मैं इसका मुवाज़ना किससे करूँ? 19 वह राई
के एक दाने की मानिंद है जो किसी ने अपने बाग़ में बो दिया। बढ़ते बढ़ते वह दरख़्त-सा बन गया और परिंदों ने उस
की शाख़ों में अपने घोंसले बना लिए।"

ख़मीर की मिसाल

20 उसने दुबारा पूछा, "अल्लाह की बादशाही का किस चीज़ से मुवाज़ना करूँ? 21 वह उस ख़मीर की मानिंद है
जो किसी औरत ने लेकर तक़रीबन 27 किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो वह उसमें छुप गया तो भी होते होते पूरे गुंधे
हुए आटे को ख़मीर कर गया।"

तंग दरवाज़ा

22 ईसा तालीम देते देते मुख़्तलिफ़ शहरों और देहातों में से गुज़रा। अब उसका रुख़ यरूशलम ही की तरफ़ था।
23 इतने में किसी ने उससे पूछा, "ख़ुदावंद, क्या कम लोगों को नजात मिलेगी?"
उसने जवाब दिया, 24 "तंग दरवाज़े में से दाख़िल होने की सिर-तोड़ कोशिश करो। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ
कि बहुत-से लोग अंदर जाने की कोशिश करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। 25 एक वक़्त आएगा कि घर का मालिक उठकर
दरवाज़ा बंद कर देगा। फिर तुम बाहर खड़े रहोगे और खटखटाते खटखटाते इलतमास करोगे, 'ख़ुदावंद, हमारे लिए
दरवाज़ा खोल दें।' लेकिन वह जवाब देगा, 'न मैं तुमको जानता हूँ, न यह कि तुम कहाँ के हो।' 26 फिर तुम कहोगे,
'हमने तो आपके सामने ही खाया और पिया और आप ही हमारी सड़कों पर तालीम देते रहे।' 27 लेकिन वह जवाब
देगा, 'न मैं तुमको जानता हूँ, न यह कि तुम कहाँ के हो। ऐ तमाम बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ!' 28 वहाँ तुम रोते और
दाँत पीसते रहोगे। क्योंकि तुम देखोगे कि इब्राहीम, इसहाक़, याक़ूब और तमाम नबी अल्लाह की बादशाही में हैं जबकि
तुमको निकाल दिया गया है। 29 और लोग मशरिक़, मग़रिब, शिमाल और जुनूब से आकर अल्लाह की बादशाही की
ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 30 उस वक़्त कुछ ऐसे होंगे जो पहले आख़िर थे, लेकिन अब अव्वल होंगे। और कुछ ऐसे
भी होंगे जो पहले अव्वल थे, लेकिन अब आख़िर होंगे।"

यरूशलम पर अफ़सोस

31 उस वक़्त कुछ फ़रीसी ईसा के पास आकर उससे कहने लगे, "इस मक़ाम को छोड़कर कहीं और चले जाएँ,
क्योंकि हेरोदेस आपको क़त्ल करने का इरादा रखता है।"
32 ईसा ने जवाब दिया, "जाओ, उस लोमड़ी को बता दो, 'आज और कल मैं बदरूहें निकालता और मरीज़ों को
शफ़ा देता रहूँगा। फिर तीसरे दिन मैं पायाए-तकमील को पहुँचूँगा।' 33 इसलिए लाज़िम है कि मैं आज, कल और परसों
आगे चलता रहूँ। क्योंकि मुमकिन नहीं कि कोई नबी यरूशलम से बाहर हलाक हो।
34 हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों को क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़ंबरों को संगसार करती
है। मैंने कितनी ही बार तेरी औलाद को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मुरग़ी अपने बच्चों को अपने
परों तले जमा करके महफ़ूज़ कर लेती है। लेकिन तूने न चाहा। 35 अब तेरे घर को वीरानो-सुनसान छोड़ा जाएगा।
और मैं तुमको बताता हूँ, तुम मुझे उस वक़्त तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि मुबारक है वह जो रब के
नाम से आता है।"

14

सबत के दिन मरीज़ की शफ़ा

1 सबत के एक दिन ईसा खाने के लिए फ़रीसियों के किसी राहनुमा के घर आया। लोग उसे पकड़ने के लिए उस
की हर हरकत पर नज़र रखे हुए थे। 2 वहाँ एक आदमी ईसा के सामने था जिसके बाज़ू और टाँगें फूले हुए थे। 3 यह
देखकर वह फ़रीसियों और शरीअत के आलिमों से पूछने लगा, "क्या शरीअत सबत के दिन शफ़ा देने की इजाज़त
देती है?"
4 लेकिन वह ख़ामोश रहे। फिर उसने उस आदमी पर हाथ रखा और उसे शफ़ा देकर रुख़सत कर दिया। 5 हाज़िरीन
से वह कहने लगा, "अगर तुममें से किसी का बेटा या बैल सबत के दिन कुएँ में गिर जाए तो क्या तुम उसे फ़ौरन नहीं
निकालोगे?"
6 इस पर वह कोई जवाब न दे सके।

इज़्ज़त और अज्र हासिल करने का तरीक़ा

7 जब ईसा ने देखा कि मेहमान मेज़ पर इज़्ज़त की कुरसियाँ चुन रहे हैं तो उसने उन्हें यह तमसील सुनाई, 8 "जब
तुझे किसी शादी की ज़ियाफ़त में शरीक होने की दावत दी जाए तो वहाँ जाकर इज़्ज़त की कुरसी पर न बैठना। ऐसा न

हो कि किसी और को भी दावत दी गई हो जो तुझसे ज़्यादा इज़्ज़तदार है। 9 क्योंकि जब वह पहुँचेगा तो मेज़बान तेरे
पास आकर कहेगा, ‘ज़रा इस आदमी को यहाँ बैठने दे।’ यों तेरी बेइज़्ज़ती हो जाएगी और तुझे वहाँ से उठकर आख़िरी
कुरसी पर बैठना पड़ेगा। 10 इसलिए ऐसा मत करना बल्कि जब तुझे दावत दी जाए तो जाकर आख़िरी कुरसी पर बैठ
जा। फिर जब मेज़बान तुझे वहाँ बैठा हुआ देखेगा तो वह कहेगा, ‘दोस्त, सामनेवाली कुरसी पर बैठ।’ इस तरह तमाम
मेहमानों के सामने तेरी इज़्ज़त हो जाएगी। 11 क्योंकि जो भी अपने आपको सरफ़राज़ करे उसे पस्त किया जाएगा और
जो अपने आपको पस्त करे उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।”
12 फिर ईसा ने मेज़बान से बात की, “जब तू लोगों को दोपहर या शाम का खाना खाने की दावत देना चाहता है
तो अपने दोस्तों, भाइयों, रिश्तेदारों या अमीर हमसायों को न बुला। ऐसा न हो कि वह इसके एवज़ तुझे भी दावत
दें। क्योंकि अगर वह ऐसा करें तो यही तेरा मुआवज़ा होगा। 13 इसके बजाए ज़ियाफ़त करते वक़्त ग़रीबों, लँगड़ों,
मफ़लूजों और अंधों को दावत दे। 14 ऐसा करने से तुझे बरकत मिलेगी। क्योंकि वह तुझे इसके एवज़ कुछ नहीं दे
सकेंगे, बल्कि तुझे इसका मुआवज़ा उस वक़्त मिलेगा जब रास्तबाज़ जी उठेंगे।”

बड़ी ज़ियाफ़त की तमसील

15 यह सुनकर मेहमानों में से एक ने उससे कहा, “मुबारक है वह जो अल्लाह की बादशाही में खाना खाए।”
16 ईसा ने जवाब में कहा, “किसी आदमी ने एक बड़ी ज़ियाफ़त का इंतज़ाम किया। इसके लिए उसने बहुत-से
लोगों को दावत दी। 17 जब ज़ियाफ़त का वक़्त आया तो उसने अपने नौकर को मेहमानों को इत्तला देने के लिए भेजा
कि ‘आएँ, सब कुछ तैयार है।’ 18 लेकिन वह सबके सब माज़रत चाहने लगे। पहले ने कहा, ‘मैंने खेत ख़रीदा है और
अब ज़रूरी है कि निकलकर उसका मुआयना करूँ। मैं माज़रत चाहता हूँ।’ 19 दूसरे ने कहा, ‘मैंने बैलों के पाँच जोड़े
ख़रीदे हैं। अब मैं उन्हें आज़माने जा रहा हूँ। मैं माज़रत चाहता हूँ।’ 20 तीसरे ने कहा, ‘मैंने शादी की है, इसलिए नहीं
आ सकता।’
21 नौकर ने वापस आकर मालिक को सब कुछ बताया। वह ग़ुस्से होकर नौकर से कहने लगा, ‘जा, सीधे शहर की
सड़कों और गलियों में जाकर वहाँ के ग़रीबों, लँगड़ों, अंधों और मफ़लूजों को ले आ।’ नौकर ने ऐसा ही किया।
22 फिर वापस आकर उसने मालिक को इत्तला दी, ‘जनाब, जो कुछ आपने कहा था पूरा हो चुका है। लेकिन अब भी
मज़ीद लोगों के लिए गुंजाइश है।’ 23 मालिक ने उससे कहा, फिर शहर से निकलकर देहात की सड़कों पर और बाड़ों
के पास जा। जो भी मिल जाए उसे हमारी ख़ुशी में शरीक होने पर मजबूर कर ताकि मेरा घर भर जाए। 24 क्योंकि मैं
तुमको बताता हूँ कि जिनको पहले दावत दी गई थी उनमें से कोई भी मेरी ज़ियाफ़त में शरीक न होगा।”

शागिर्द होने की क़ीमत

25 एक बड़ा हुजूम ईसा के साथ चल रहा था। उनकी तरफ़ मुड़कर उसने कहा, 26 “अगर कोई मेरे पास आकर
अपने बाप, माँ, बीवी, बच्चों, भाइयों, बहनों बल्कि अपने आपसे भी दुश्मनी न रखे तो वह मेरा शागिर्द नहीं हो
सकता। 27 और जो अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न हो ले वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।
28 अगर तुममें से कोई बुर्ज तामीर करना चाहे तो क्या वह पहले बैठकर पूरे अख़राजात का अंदाज़ा नहीं लगाएगा
ताकि मालूम हो जाए कि वह उसे तकमील तक पहुँचा सकेगा या नहीं? 29 वरना ख़तरा है कि उस की बुनियाद
डालने के बाद पैसे ख़त्म हो जाएँ और वह आगे कुछ न बना सके। फिर जो कोई भी देखेगा वह उसका मज़ाक़ उड़ाकर
30 कहेगा, ‘उसने इमारत को शुरू तो किया, लेकिन अब उसे मुकम्मल नहीं कर पाया।’
31 या अगर कोई बादशाह किसी दूसरे बादशाह के साथ जंग के लिए निकले तो क्या वह पहले बैठकर अंदाज़ा नहीं
लगाएगा कि वह अपने दस हज़ार फ़ौजियों से उन बीस हज़ार फ़ौजियों पर ग़ालिब आ सकता है जो उससे लड़ने आ
रहे हैं? 32 अगर वह इस नतीजे पर पहुँचे कि ग़ालिब नहीं आ सकता तो वह सुलह करने के लिए अपने नुमाइंदे दुश्मन
के पास भेजेगा जब वह अभी दूर ही हो। 33 इसी तरह तुममें से जो भी अपना सब कुछ न छोड़े वह मेरा शागिर्द नहीं
हो सकता।

बेकार नमक

34 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उसका ज़ायक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर दुबारा नमकीन किया जा
सकता है? 35 न वह ज़मीन के लिए मुफ़ीद है, न खाद के लिए बल्कि उसे निकालकर बाहर फेंका जाएगा। जो सुन
सकता है वह सुन ले।”

15

खोई हुई भेड़

1 अब ऐसा था कि तमाम टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार ईसा की बातें सुनने के लिए उसके पास आते थे। 2 यह
देखकर फ़रीसी और शरीअत के आलिम बुड़बुड़ाने लगे, "यह आदमी गुनाहगारों को ख़ुशआमदीद कहकर उनके साथ
खाना खाता है।" 3 इस पर ईसा ने उन्हें यह तमसील सुनाई,

4 "फ़र्ज़ करो कि तुममें से किसी की सौ भेड़ें हैं। लेकिन एक गुम हो जाती है। अब मालिक क्या करेगा? क्या वह
बाक़ी 99 भेड़ें खुले मैदान में छोड़कर गुमशुदा भेड़ को ढूँडने नहीं जाएगा? ज़रूर जाएगा, बल्कि जब तक उसे वह
भेड़ मिल न जाए वह उस की तलाश में रहेगा। 5 फिर वह ख़ुश होकर उसे अपने कंधों पर उठा लेगा। 6 यों चलते चलते
वह अपने घर पहुँच जाएगा और वहाँ अपने दोस्तों और हमसायों को बुलाकर उनसे कहेगा, 'मेरे साथ ख़ुशी मनाओ!
क्योंकि मुझे अपनी खोई हुई भेड़ मिल गई है।' 7 मैं तुमको बताता हूँ कि आसमान पर बिलकुल इसी तरह ख़ुशी मनाई
जाएगी जब एक ही गुनाहगार तौबा करेगा। और यह ख़ुशी उस ख़ुशी की निसबत ज़्यादा होगी जो उन 99 अफ़राद के
बाइस मनाई जाएगी जिन्हें तौबा करने की ज़रूरत ही नहीं थी।

गुमशुदा सिक्का

8 या फ़र्ज़ करो कि किसी औरत के पास दस सिक्के हों लेकिन एक सिक्का गुम हो जाए। अब औरत क्या करेगी?
क्या वह चराग़ जलाकर और घर में झाड़ू दे देकर बड़ी एहतियात से सिक्के को तलाश नहीं करेगी? ज़रूर करेगी,
बल्कि वह उस वक़्त तक ढूँडती रहेगी जब तक उसे सिक्का मिल न जाए। 9 जब उसे सिक्का मिल जाएगा तो वह
अपनी सहेलियों और हमसायों को बुलाकर उनसे कहेगी, 'मेरे साथ ख़ुशी मनाओ! क्योंकि मुझे अपना गुमशुदा सिक्का
मिल गया है।' 10 मैं तुमको बताता हूँ कि बिलकुल इसी तरह अल्लाह के फ़रिश्तों के सामने ख़ुशी मनाई जाती है जब
एक भी गुनाहगार तौबा करता है।"

गुमशुदा बेटा

11 ईसा ने अपनी बात जारी रखी। "किसी आदमी के दो बेटे थे। 12 इनमें से छोटे ने बाप से कहा, 'ऐ बाप, मीरास
का मेरा हिस्सा दे दें।' इस पर बाप ने दोनों में अपनी मिलकियत तक़सीम कर दी। 13 थोड़े दिनों के बाद छोटा बेटा
अपना सारा सामान समेटकर अपने साथ किसी दूर-दराज़ मुल्क में ले गया। वहाँ उसने ऐयाशी में अपना पूरा मालो-मता
उड़ा दिया। 14 सब कुछ ज़ाया हो गया तो उस मुल्क में सख़्त काल पड़ा। अब वह ज़रूरतमंद होने लगा। 15 नतीजे में
वह उस मुल्क के किसी बाशिंदे के हाँ जा पड़ा जिसने उसे सुअरों को चराने के लिए अपने खेतों में भेज दिया। 16 वहाँ
वह अपना पेट उन फलियों से भरने की शदीद ख़ाहिश रखता था जो सुअर खाते थे, लेकिन उसे इसकी भी इजाज़त न
मिली। 17 फिर वह होश में आया। वह कहने लगा, मेरे बाप के कितने मज़दूरों को कसरत से खाना मिलता है जबकि मैं
यहाँ भूका मर रहा हूँ। 18 मैं उठकर अपने बाप के पास वापस चला जाऊँगा और उससे कहूँगा, 'ऐ बाप, मैंने आसमान
का और आपका गुनाह किया है। 19 अब मैं इस लायक़ नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ। मेहरबानी करके मुझे
अपने मज़दूरों में रख लें।' 20 फिर वह उठकर अपने बाप के पास वापस चला गया।

लेकिन वह घर से अभी दूर ही था कि उसके बाप ने उसे देख लिया। उसे तरस आया और वह भागकर बेटे के पास
आया और गले लगाकर उसे बोसा दिया। 21 बेटे ने कहा, 'ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब
मैं इस लायक़ नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ।' 22 लेकिन बाप ने अपने नौकरों को बुलाया और कहा, 'जल्दी
करो, बेहतरीन सूट लाकर इसे पहनाओ। इसके हाथ में अंगूठी और पाँवों में जूते पहना दो। 23 फिर मोटा-ताज़ा बछड़ा
लाकर उसे ज़बह करो ताकि हम खाएँ और ख़ुशी मनाएँ, 24 क्योंकि यह मेरा बेटा मुरदा था अब ज़िंदा हो गया है, गुम
हो गया था अब मिल गया है।' इस पर वह ख़ुशी मनाने लगे।

25 इस दौरान बाप का बड़ा बेटा खेत में था। अब वह घर लौटा। जब वह घर के क़रीब पहुँचा तो अंदर से मौसीक़ी
और नाचने की आवाज़ें सुनाई दीं। 26 उसने किसी नौकर को बुलाकर पूछा, 'यह क्या हो रहा है?' 27 नौकर ने जवाब
दिया, 'आपका भाई आ गया है और आपके बाप ने मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह करवाया है, क्योंकि उसे अपना बेटा
सहीह-सलामत वापस मिल गया है।'

28 यह सुनकर बड़ा बेटा ग़ुस्से हुआ और अंदर जाने से इनकार कर दिया। फिर बाप घर से निकलकर उसे समझाने
लगा। 29 लेकिन उसने जवाब में अपने बाप से कहा, 'देखें, मैंने इतने साल आपकी ख़िदमत में सख़्त मेहनत-मशक़्क़त
की है और एक दफ़ा भी आपकी मरज़ी की ख़िलाफ़वरज़ी नहीं की। तो भी आपने मुझे इस पूरे अरसे में एक छोटा
बकरा भी नहीं दिया कि उसे ज़बह करके अपने दोस्तों के साथ ज़ियाफ़त करता। 30 लेकिन ज्योंही आपका यह बेटा
आया जिसने आपकी दौलत कसबियों में उड़ा दी, आपने उसके लिए मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह करवाया।' 31 बाप ने
जवाब दिया, 'बेटा, आप तो हर वक़्त मेरे पास रहे हैं, और जो कुछ मेरा है वह आप ही का है। 32 लेकिन अब ज़रूरी

था कि हम जशन मनाएँ और ख़ुश हों। क्योंकि आपका यह भाई जो मुरदा था अब ज़िंदा हो गया है, जो गुम हो गया था
अब मिल गया है'।"

16

चालाक मुलाज़िम

1 ईसा ने शागिर्दों से कहा, "किसी अमीर आदमी ने एक मुलाज़िम रखा था जो उस की जायदाद की देख-भाल
करता था। ऐसा हुआ कि एक दिन उस पर इलज़ाम लगाया गया कि वह अपने मालिक की दौलत ज़ाया कर रहा है।
2 मालिक ने उसे बुलाकर कहा, 'यह क्या है जो मैं तेरे बारे में सुनता हूँ? अपनी तमाम ज़िम्मादारियों का हिसाब दे,
क्योंकि मैं तुझे बरख़ास्त कर दूँगा।' 3 मुलाज़िम ने दिल में कहा, 'अब मैं क्या करूँ जबकि मेरा मालिक यह ज़िम्मादारी
मुझसे छीन लेगा? खुदाई जैसा सख़्त काम मुझसे नहीं होता और भीक माँगने से शर्म आती है। 4 हाँ, मैं जानता हूँ कि
क्या करूँ ताकि लोग मुझे बरख़ास्त किए जाने के बाद अपने घरों में ख़ुशआमदीद कहें।'

5 यह कहकर उसने अपने मालिक के तमाम क़र्ज़दारों को बुलाया। पहले से उसने पूछा, 'तुम्हारा क़र्ज़ा कितना है?'
6 उसने जवाब दिया, 'मुझे मालिक को ज़ैतून के तेल के सौ कनस्तर वापस करने हैं।' मुलाज़िम ने कहा, 'अपना बिल
ले लो और बैठकर जल्दी से सौ कनस्तर पचास में बदल लो।' 7 दूसरे से उसने पूछा, 'तुम्हारा कितना क़र्ज़ा है?' उसने
जवाब दिया, 'मुझे गंदुम की हज़ार बोरियाँ वापस करनी हैं।' मुलाज़िम ने कहा, 'अपना बिल ले लो और हज़ार के
बदले आठ सौ लिख लो।'

8 यह देखकर मालिक ने बेईमान मुलाज़िम की तारीफ़ की कि उसने अक़्ल से काम लिया है। क्योंकि इस दुनिया
के फ़रज़ंद अपनी नसल के लोगों से निपटने में नूर के फ़रज़ंदों से ज़्यादा होशियार होते हैं।

9 मैं तुमको बताता हूँ कि दुनिया की नारास्त दौलत से अपने लिए दोस्त बना लो ताकि जब यह ख़त्म हो जाए तो लोग
तुमको अबदी रिहाइशगाहों में ख़ुशआमदीद कहें। 10 जो थोड़े में वफ़ादार है वह ज़्यादा में भी वफ़ादार होगा। और जो
थोड़े में बेईमान है वह ज़्यादा में भी बेईमानी करेगा। 11 अगर तुम दुनिया की नारास्त दौलत को सँभालने में वफ़ादार न
रहे तो फिर कौन हक़ीक़ी दौलत तुम्हारे सुपुर्द करेगा? 12 और अगर तुमने दूसरों की दौलत सँभालने में बेईमानी दिखाई
है तो फिर कौन तुमको तुम्हारे ज़ाती इस्तेमाल के लिए कुछ देगा?

13 कोई भी ग़ुलाम दो मालिकों की ख़िदमत नहीं कर सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके दूसरे से मुहब्बत
रखेगा, या एक से लिपटकर दूसरे को हक़ीर जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और दौलत की ख़िदमत नहीं कर
सकते।"

ईसा की चंद कहावतें

14 फ़रीसियों ने यह सब कुछ सुना तो वह उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे, क्योंकि वह लालची थे। 15 उसने उनसे कहा,
"तुम ही वह हो जो अपने आपको लोगों के सामने रास्तबाज़ क़रार देते हो, लेकिन अल्लाह तुम्हारे दिलों से वाक़िफ़
है। क्योंकि लोग जिस चीज़ की बहुत क़दर करते हैं वह अल्लाह के नज़दीक मकरूह है।

16 यहया के आने तक तुम्हारे राहनुमा मूसा की शरीअत और नबियों के पैग़ामात थे। लेकिन अब अल्लाह की
बादशाही की ख़ुशख़बरी का एलान किया जा रहा है और तमाम लोग ज़बरदस्ती इसमें दाख़िल हो रहे हैं। 17 लेकिन
इसका यह मतलब नहीं कि शरीअत मनसूख़ हो गई है बल्कि आसमानो-ज़मीन जाते रहेंगे, लेकिन शरीअत की ज़ेर
ज़बर तक कोई भी बात नहीं बदलेगी।

18 चुनाँचे जो आदमी अपनी बीवी को तलाक़ देकर किसी और से शादी करे वह ज़िना करता है। इसी तरह जो
किसी तलाक़शुदा औरत से शादी करे वह भी ज़िना करता है।

अमीर आदमी और लाज़र

19 एक अमीर आदमी का ज़िक्र है जो अरग़वानी रंग के कपडे और नफ़ीस कतान पहनता और हर रोज़ ऐशो-इशरत
में गुज़ारता था। 20 अमीर के गेट पर एक ग़रीब आदमी पड़ा था जिसके पूरे जिस्म पर नासूर थे। उसका नाम लाज़र
था 21 और उस की बस एक ही ख़ाहिश थी कि वह अमीर की मेज़ से गिरे हुए टुकड़े खाकर सेर हो जाए। कुत्ते उसके
पास आकर उसके नासूर चाटते थे।

22 फिर ऐसा हुआ कि ग़रीब आदमी मर गया। फ़रिश्तों ने उसे उठाकर इब्राहीम की गोद में बिठा दिया। अमीर
आदमी भी फ़ौत हुआ और दफ़नाया गया। 23 वह जहन्नुम में पहुँचा। अज़ाब की हालत में उसने अपनी नज़र उठाई
तो दूर से इब्राहीम और उस की गोद में लाज़र को देखा। 24 वह पुकार उठा, 'ऐ मेरे बाप इब्राहीम, मुझ पर रहम करें।

मेहरबानी करके लाज़र को मेरे पास भेज दें ताकि वह अपनी उँगली को पानी में डुबोकर मेरी ज़बान को ठंडा करे,
क्योंकि मैं इस आग में तड़पता हूँ।'
25 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, 'बेटा, याद रख कि तुझे अपनी ज़िंदगी में बेहतरीन चीज़ें मिल चुकी हैं जबकि
लाज़र को बदतरीन चीज़ें। लेकिन अब उसे आराम और तसल्ली मिल गई है जबकि तुझे अज़ियत। 26 नीज़, हमारे
और तुम्हारे दरमियान एक वसी ख़लीज क़ायम है। अगर कोई चाहे भी तो उसे पार करके यहाँ से तुम्हारे पास नहीं
जा सकता, न वहाँ से कोई यहाँ आ सकता है।' 27 अमीर आदमी ने कहा, 'मेरे बाप, फिर मेरी एक और गुज़ारिश है,
मेहरबानी करके लाज़र को मेरे वालिद के घर भेज दें। 28 मेरे पाँच भाई हैं। वह वहाँ जाकर उन्हें आगाह करे, ऐसा न
हो कि उनका अंजाम भी यह अज़ियतनाक मक़ाम हो।'
29 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, 'उनके पास मूसा की तौरेत और नबियों के सहीफ़े तो हैं। वह उनकी सुनें।'
30 अमीर ने अर्ज़ की, 'नहीं, मेरे बाप इब्राहीम, अगर कोई मुरदों में से उनके पास जाए तो फिर वह ज़रूर तौबा करेंगे।'
31 इब्राहीम ने कहा, 'अगर वह मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो वह उस वक़्त भी क़ायल नहीं होंगे जब कोई मुरदों
में से जी उठकर उनके पास जाएगा'।"

17

गुनाह

1 ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "आज़माइशों को तो आना ही आना है, लेकिन उस पर अफ़सोस जिसकी मारिफ़त
वह आएँ। 2 अगर वह इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए तो उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में
बड़ी चक्की का पाट बाँधा जाए और उसे समुंदर में फेंक दिया जाए। 3 ख़बरदार रहो!
अगर तुम्हारा भाई गुनाह करे तो उसे समझाओ। अगर वह इस पर तौबा करे तो उसे मुआफ़ कर दो। 4 अब फ़र्ज़
करो कि वह एक दिन के अंदर सात बार तुम्हारा गुनाह करे, लेकिन हर दफ़ा वापस आकर तौबा का इज़हार करे, तो भी
उसे हर दफ़ा मुआफ़ कर दो।"

ईमान

5 रसूलों ने ख़ुदावंद से कहा, "हमारे ईमान को बढ़ा दें।"
6 ख़ुदावंद ने जवाब दिया, "अगर तुम्हारा ईमान राई के दाने जैसा छोटा भी हो तो तुम शहतूत के इस दरख़्त को कह
सकते हो, 'उखड़कर समुंदर में जा लग' तो वह तुम्हारी बात पर अमल करेगा।

ग़ुलाम का फ़र्ज़

7 फ़र्ज़ करो कि तुममें से किसी ने हल चलाने या जानवर चराने के लिए एक ग़ुलाम रखा है। जब यह ग़ुलाम खेत से
घर आएगा तो क्या उसका मालिक कहेगा, 'इधर आओ, खाने के लिए बैठ जाओ?' 8 हरगिज़ नहीं, बल्कि वह यह
कहेगा, 'मेरा खाना तैयार करो, ड्यूटी के कपड़े पहनकर मेरी ख़िदमत करो जब तक मैं खा-पी न लूँ। इसके बाद तुम
भी खा और पी सकोगे।' 9 और क्या वह अपने ग़ुलाम की उस ख़िदमत का शुक्रिया अदा करेगा जो उसने उसे करने
को कहा था? हरगिज़ नहीं! 10 इसी तरह जब तुम सब कुछ जो तुम्हें करने को कहा गया है कर चुको तब तुमको यह
कहना चाहिए, 'हम नालायक़ नौकर हैं। हमने सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ अदा किया है'।"

कोढ़ के दस मरीज़ों की शफ़ा

11 ऐसा हुआ कि यरूशलम की तरफ़ सफ़र करते करते ईसा सामरिया और गलील में से गुज़रा। 12 एक दिन वह
किसी गाँव में दाख़िल हो रहा था कि कोढ़ के दस मरीज़ उसको मिलने आए। वह कुछ फ़ासले पर खड़े होकर 13 ऊँची
आवाज़ से कहने लगे, "ऐ ईसा, उस्ताद, हम पर रहम करें।"
14 उसने उन्हें देखा तो कहा, "जाओ, अपने आपको इमामों को दिखाओ ताकि वह तुम्हारा मुआयना करें।"
और ऐसा हुआ कि वह चलते चलते अपनी बीमारी से पाक-साफ़ हो गए। 15 उनमें से एक ने जब देखा कि शफ़ा
मिल गई है तो वह मुड़कर ऊँची आवाज़ से अल्लाह की तमजीद करने लगा, 16 और ईसा के सामने मुँह के बल गिरकर
शुक्रिया अदा किया। यह आदमी सामरिया का बाशिंदा था। 17 ईसा ने पूछा, "क्या दस के दस आदमी अपनी बीमारी
से पाक-साफ़ नहीं हुए? बाक़ी नौ कहाँ हैं? 18 क्या इस ग़ैरमुल्की के अलावा कोई और वापस आकर अल्लाह की
तमजीद करने के लिए तैयार नहीं था?" 19 फिर उसने उससे कहा, "उठकर चला जा। तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया
है।"

अल्लाह की बादशाही कब आएगी

20 कुछ फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, "अल्लाह की बादशाही कब आएगी?" उसने जवाब दिया, "अल्लाह की
बादशाही यों नहीं आ रही कि उसे ज़ाहिरी निशानों से पहचाना जाए। 21 लोग यह भी नहीं कह सकेंगे, 'वह यहाँ है'
या 'वह वहाँ है' क्योंकि अल्लाह की बादशाही तुम्हारे दरमियान है।"
22 फिर उसने अपने शागिर्दों से कहा, "ऐसे दिन आएँगे कि तुम इब्ने-आदम का कम अज़ कम एक दिन देखने की
तमन्ना करोगे, लेकिन नहीं देखोगे। 23 लोग तुमको बताएँगे, 'वह वहाँ है' या 'वह यहाँ है।' लेकिन मत जाना और उनके
पीछे न लगना। 24 क्योंकि जब इब्ने-आदम का दिन आएगा तो वह बिजली की मानिंद होगा जिसकी चमक आसमान
को एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक रौशन कर देती है। 25 लेकिन पहले लाज़िम है कि वह बहुत दुख उठाए और
इस नसल के हाथों रद्द किया जाए। 26 जब इब्ने-आदम का वक़्त आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे। 27 लोग
उस दिन तक खाने-पीने और शादी करने करवाने में लगे रहे जब तक नूह कश्ती में दाख़िल न हो गया। फिर सैलाब ने
आकर उन सबको तबाह कर दिया। 28 बिलकुल यहीं कुछ लूत के ऐयाम में हुआ। लोग खाने-पीने, ख़रीदो-फ़रोख़्त,
काश्तकारी और तामीर के काम में लगे रहे। 29 लेकिन जब लूत सदूम को छोड़कर निकला तो आग और गंधक ने
आसमान से बरसकर उन सबको तबाह कर दिया। 30 इब्ने-आदम के ज़ुहूर के वक़्त ऐसे ही हालात होंगे।
31 जो शख़्स उस दिन छत पर हो वह घर का सामान साथ ले जाने के लिए नीचे न उतरे। इसी तरह जो खेत में हो
वह अपने पीछे पड़ी चीज़ों को साथ ले जाने के लिए घर न लौटे। 32 लूत की बीवी को याद रखो। 33 जो अपनी जान
बचाने की कोशिश करेगा वह उसे खो देगा, और जो अपनी जान खो देगा वही उसे बचाए रखेगा। 34 मैं तुमको बताता
हूँ कि उस रात दो अफ़राद एक बिस्तर में सोए होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया
जाएगा। 35 दो ख़वातीन चक्की पर गंदुम पीस रही होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़
दिया जाएगा। 36 [दो अफ़राद खेत में होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा।]"
37 उन्होंने पूछा, "ख़ुदावंद, यह कहाँ होगा?"
उसने जवाब दिया, "जहाँ लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो जाएंगे।"

18

बेवा और जज की तमसील

1 फिर ईसा ने उन्हें एक तमसील सुनाई जो मुसलसल दुआ करने और हिम्मत न हारने की ज़रूरत को ज़ाहिर करती
है। 2 उसने कहा, "किसी शहर में एक जज रहता था जो न ख़ुदा का ख़ौफ़ मानता, न किसी इनसान का लिहाज़ करता
था। 3 अब उस शहर में एक बेवा भी थी जो यह कहकर उसके पास आती रही कि 'मेरे मुख़ालिफ़ को जीतने न दें
बल्कि मेरा इनसाफ़ करें।' 4 कुछ देर के लिए जज ने इनकार किया। लेकिन फिर वह दिल में कहने लगा, 'बेशक मैं
ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं मानता, न लोगों की परवा करता हूँ, 5 लेकिन यह बेवा मुझे बार बार तंग कर रही है। इसलिए मैं
उसका इनसाफ़ करूँगा। ऐसा न हो कि आख़िरकार वह आकर मेरे मुँह पर थप्पड़ मारे'।"
6 ख़ुदावंद ने बात जारी रखी। "इस पर ध्यान दो जो बेइनसाफ़ जज ने कहा। 7 अगर उसने आख़िरकार इनसाफ़
किया तो क्या अल्लाह अपने चुने हुए लोगों का इनसाफ़ नहीं करेगा जो दिन-रात उसे मदद के लिए पुकारते हैं? क्या
वह उनकी बात मुलतवी करता रहेगा? 8 हरगिज़ नहीं! मैं तुमको बताता हूँ कि वह जल्दी से उनका इनसाफ़ करेगा।
लेकिन क्या इब्ने-आदम जब दुनिया में आएगा तो ईमान देख पाएगा?"

फ़रीसी और टैक्स लेनेवाले की तमसील

9 बाज़ लोग मौजूद थे जो अपनी रास्तबाज़ी पर भरोसा रखते और दूसरों को हक़ीर जानते थे। उन्हें ईसा ने यह
तमसील सुनाई, 10 "दो आदमी बैतुल-मुक़द्दस में दुआ करने आए। एक फ़रीसी था और दूसरा टैक्स लेनेवाला।
11 फ़रीसी खड़ा होकर यह दुआ करने लगा, 'ऐ ख़ुदा, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मैं बाक़ी लोगों की तरह नहीं हूँ।
न मैं डाकू हूँ, न बेइनसाफ़, न ज़िनाकार। मैं इस टैक्स लेनेवाले की मानिंद भी नहीं हूँ। 12 मैं हफ़्ते में दो मरतबा रोज़ा
रखता हूँ और तमाम आमदनी का दसवाँ हिस्सा तेरे लिए मख़सूस करता हूँ।'
13 लेकिन टैक्स लेनेवाला दूर ही खड़ा रहा। उसने अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाने तक की जुर्रत न की
बल्कि अपनी छाती पीट पीटकर कहने लगा, 'ऐ ख़ुदा, मुझ गुनाहगार पर रहम कर!' 14 मैं तुमको बताता हूँ कि जब
दोनों अपने अपने घर लौटे तो फ़रीसी नहीं बल्कि यह आदमी अल्लाह के नज़दीक रास्तबाज़ ठहरा। क्योंकि जो भी
अपने आपको सरफ़राज़ करे उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आपको पस्त करे उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।"

ईसा छोटे बच्चों को प्यार करता है

15 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को भी ईसा के पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। यह देखकर शागिर्दों ने उनको
मलामत की। 16 लेकिन ईसा ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि
अल्लाह की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है। 17 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो अल्लाह की बादशाही को बच्चे
की तरह क़बूल न करे वह उसमें दाख़िल नहीं होगा।"

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकते हैं

18 किसी राहनुमा ने उससे पूछा, "नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि मीरास में अबदी ज़िंदगी पाऊँ?"
19 ईसा ने जवाब दिया, "तू मुझे नेक क्यों कहता है? कोई नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह। 20 तू
शरीअत के अहकाम से तो वाक़िफ़ है कि ज़िना न करना, क़त्ल न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, अपने
बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।"
21 आदमी ने जवाब दिया, "मैंने जवानी से आज तक इन तमाम अहकाम की पैरवी की है।"
22 यह सुनकर ईसा ने कहा, "एक काम अब तक रह गया है। अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त करके पैसे ग़रीबों में
तक़सीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।" 23 यह
सुनकर आदमी को बहुत दुख हुआ, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।
24 यह देखकर ईसा ने कहा, "दौलतमंदों के लिए अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होना कितना मुश्किल है!
25 अमीर के अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होने की निसबत यह ज़्यादा आसान है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र
जाए।"
26 यह बात सुनकर सुननेवालों ने पूछा, "फिर किस को नजात मिल सकती है?"
27 ईसा ने जवाब दिया, "जो इनसान के लिए नामुमकिन है वह अल्लाह के लिए मुमकिन है।"
28 पतरस ने उससे कहा, "हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं।"
29 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि जिसने भी अल्लाह की बादशाही की ख़ातिर अपने घर, बीवी,
भाइयों, वालिदैन या बच्चों को छोड़ दिया है 30 उसे इस ज़माने में कई गुना ज़्यादा और आनेवाले ज़माने में अबदी
ज़िंदगी मिलेगी।"

ईसा की मौत की तीसरी पेशगोई

31 ईसा शागिर्दों को एक तरफ़ ले जाकर उनसे कहने लगा, "सुनो, हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वहाँ सब
कुछ पूरा हो जाएगा जो नबियों की मारिफ़त इब्ने-आदम के बारे में लिखा गया है। 32 उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर
दिया जाएगा जो उसका मज़ाक़ उड़ाएँगे, उस की बेइज़्ज़ती करेंगे, उस पर थूकेंगे, 33 उसको कोड़े मारेंगे और उसे क़त्ल
करेंगे। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।"
34 लेकिन शागिर्दों की समझ में कुछ न आया। इस बात का मतलब उनसे छुपा रहा और वह न समझे कि वह क्या
कह रहा है।

अंधे की शफ़ा

35 ईसा यरीहू के क़रीब पहुँचा। वहाँ रास्ते के किनारे एक अंधा बैठा भीक माँग रहा था। 36 बहुत-से लोग उसके
सामने से गुज़रने लगे तो उसने यह सुनकर पूछा कि क्या हो रहा है।
37 उन्होंने कहा, "ईसा नासरी यहाँ से गुज़र रहा है।"
38 अंधा चिल्लाने लगा, "ऐ ईसा इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें।"
39 आगे चलनेवालों ने उसे डाँटकर कहा, "ख़ामोश!" लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से पुकारता रहा, "ऐ
इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें।"
40 ईसा रुक गया और हुक्म दिया, "उसे मेरे पास लाओ।" जब वह क़रीब आया तो ईसा ने उससे पूछा, 41 "तू क्या
चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?"
उसने जवाब दिया, "ख़ुदावंद, यह कि मैं देख सकूँ।"
42 ईसा ने उससे कहा, "तो फिर देख! तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।"
43 ज्योंही उसने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो गईं और वह अल्लाह की तमजीद करते हुए उसके पीछे हो
लिया। यह देखकर पूरे हुजूम ने अल्लाह को जलाल दिया।

19

ईसा और ज़क्काई

1 फिर ईसा यरीहू में दाख़िल हुआ और उसमें से गुज़रने लगा। 2 उस शहर में एक अमीर आदमी बनाम ज़क्काई
रहता था जो टैक्स लेनेवालों का अफ़सर था। 3 वह जानना चाहता था कि यह ईसा कौन है, लेकिन पूरी कोशिश करने
के बावुजूद उसे देख न सका, क्योंकि ईसा के इर्दगिर्द बड़ा हुजूम था और ज़क्काई का क़द छोटा था। 4 इसलिए वह
दौड़कर आगे निकला और उसे देखने के लिए अंजीर-तूत * के दरख़्त पर चढ़ गया जो रास्ते में था। 5 जब ईसा वहाँ
पहुँचा तो उसने नज़र उठाकर कहा, "ज़क्काई, जल्दी से उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में ठहरना है।"
6 ज़क्काई फ़ौरन उतर आया और ख़ुशी से उस की मेहमान-नवाज़ी की। 7 यह देखकर बाक़ी तमाम लोग बुडबुडाने
लगे, "इसके घर में जाकर वह एक गुनाहगार के मेहमान बन गए हैं।"
8 लेकिन ज़क्काई ने ख़ुदावंद के सामने खड़े होकर कहा, "ख़ुदावंद, मैं अपने माल का आधा हिस्सा ग़रीबों को दे
देता हूँ। और जिससे मैंने नाजायज़ तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना वापस करता हूँ।"
9 ईसा ने उससे कहा, "आज इस घराने को नजात मिल गई है, इसलिए कि यह भी इब्राहीम का बेटा है। 10 क्योंकि
इब्ने-आदम गुमशुदा को ढूँडने और नजात देने के लिए आया है।"

पैसों में इज़ाफ़ा

11 अब ईसा यरूशलम के क़रीब आ चुका था, इसलिए लोग अंदाज़ा लगाने लगे कि अल्लाह की बादशाही ज़ाहिर
होनेवाली है। इसके पेशे-नज़र ईसा ने अपनी यह बातें सुननेवालों को एक तमसील सुनाई। 12 उसने कहा, "एक नवाब
किसी दूर-दराज़ मुल्क को चला गया ताकि उसे बादशाह मुक़र्रर किया जाए। फिर उसे वापस आना था। 13 रवाना होने
से पहले उसने अपने नौकरों में से दस को बुलाकर उन्हें सोने का एक एक सिक्का दिया। साथ साथ उसने कहा, 'यह
पैसे लेकर उस वक़्त तक कारोबार में लगाओ जब तक मैं वापस न आऊँ।' 14 लेकिन उस की रिआया उससे नफ़रत
रखती थी, इसलिए उसने उसके पीछे वफ़द भेजकर इत्तला दी, 'हम नहीं चाहते कि यह आदमी हमारा बादशाह बने।'
15 तो भी उसे बादशाह मुक़र्रर किया गया। इसके बाद जब वापस आया तो उसने उन नौकरों को बुलाया जिन्हें उसने
पैसे दिए थे ताकि मालूम करे कि उन्होंने यह पैसे कारोबार में लगाकर कितना इज़ाफ़ा किया है। 16 पहला नौकर आया।
उसने कहा, 'जनाब, आपके एक सिक्के से दस हो गए हैं।' 17 मालिक ने कहा, 'शाबाश, अच्छे नौकर। तू थोड़े में
वफ़ादार रहा, इसलिए अब तुझे दस शहरों पर इख़्तियार मिलेगा।' 18 फिर दूसरा नौकर आया। उसने कहा, 'जनाब,
आपके एक सिक्के से पाँच हो गए हैं।' 19 मालिक ने उससे कहा, 'तुझे पाँच शहरों पर इख़्तियार मिलेगा।'
20 फिर एक और नौकर आकर कहने लगा, 'जनाब, यह आपका सिक्का है। मैंने इसे कपड़े में लपेटकर महफ़ूज़
रखा, 21 क्योंकि मैं आपसे डरता था, इसलिए कि आप सख़्त आदमी हैं। जो पैसे आपने नहीं लगाए उन्हें ले लेते हैं
और जो बीज आपने नहीं बोया उस की फ़सल काटते हैं।' 22 मालिक ने कहा, 'शरीर नौकर! मैं तेरे अपने अलफ़ाज़
के मुताबिक़ तेरी अदालत करूँगा। जब तू जानता था कि मैं सख़्त आदमी हूँ, कि वह पैसे ले लेता हूँ जो ख़ुद नहीं लगाए
और वह फ़सल काटता हूँ जिसका बीज नहीं बोया, 23 तो फिर तूने मेरे पैसे बैंक में क्यों न जमा कराए? अगर तू ऐसा
करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।'
24 यह कहकर वह हाज़िरीन से मुख़ातिब हुआ, 'यह सिक्का इससे लेकर उस नौकर को दे दो जिसके पास दस
सिक्के हैं।' 25 उन्होंने एतराज़ किया, 'जनाब, उसके पास तो पहले ही दस सिक्के हैं।' 26 उसने जवाब दिया, 'मैं तुम्हें
बताता हूँ कि हर शख़्स जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा, लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन
लिया जाएगा जो उसके पास है। 27 अब उन दुश्मनों को ले आओ जो नहीं चाहते थे कि मैं उनका बादशाह बनूँ। उन्हें
मेरे सामने फाँसी दे दो'।"

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

28 इन बातों के बाद ईसा दूसरों के आगे आगे यरूशलम की तरफ़ बढ़ने लगा। 29 जब वह बैत-फ़गे और बैत-अनियाह
के क़रीब पहुँचा जो ज़ैतून के पहाड़ पर थे तो उसने दो शागिर्दों को अपने आगे भेजकर 30 कहा, "सामनेवाले गाँव में
जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बँधा हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है। उसे
खोलकर ले आओ। 31 अगर कोई पूछे कि गधे को क्यों खोल रहे हो तो उसे बता देना कि ख़ुदावंद को इसकी ज़रूरत
है।"
32 दोनों शागिर्द गए तो देखा कि सब कुछ वैसा ही है जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 33 जब वह जवान गधे को
खोलने लगे तो उसके मालिकों ने पूछा, "तुम गधे को क्यों खोल रहे हो?"

* **19:4** एक सायादार दरख़्त जिसमें अंजीर की तरह का खुरदनी फल लगता है। इसके फूल ज़रद और आराइशी होते हैं। मिसरी तूत। जमीज़। ficus sycomorus।

34 उन्होंने जवाब दिया, “ख़ुदावंद को इसकी ज़रूरत है।” 35 वह उसे ईसा के पास ले आए, और अपने कपड़े गधे
पर रखकर उसको उस पर सवार किया। 36 जब वह चल पड़ा तो लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा
दिए।
37 चलते चलते वह उस जगह के क़रीब पहुँचा जहाँ रास्ता ज़ैतून के पहाड़ पर से उतरने लगता है। इस पर शागिर्दों
का पूरा हुजूम ख़ुशी के मारे ऊँची आवाज़ से उन मोजिज़ों के लिए अल्लाह की तमजीद करने लगा जो उन्होंने देखे थे,
38 “मुबारक है वह बादशाह
जो रब के नाम से आता है।
आसमान पर सलामती हो और बुलंदियों पर इज़्ज़तो-जलाल।”
39 कुछ फ़रीसी भीड़ में थे। उन्होंने ईसा से कहा, “उस्ताद, अपने शागिर्दों को समझाएँ।”
40 उसने जवाब दिया, “मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर यह चुप हो जाएँ तो पत्थर पुकार उठेंगे।”

ईसा शहर को देखकर रो पड़ता है

41 जब वह यरूशलम के क़रीब पहुँचा तो शहर को देखकर रो पड़ा 42 और कहा, “काश तू भी इस दिन जान लेती
कि तेरी सलामती किसमें है। लेकिन अब यह बात तेरी आँखों से छुपी हुई है। 43 क्योंकि तुझ पर ऐसा वक़्त आएगा
कि तेरे दुश्मन तेरे इर्दगिर्द बंद बाँधकर तेरा मुहासरा करेंगे और यों तुझे चारों तरफ़ से घेरकर तंग करेंगे। 44 वह तुझे तेरे
बच्चों समेत ज़मीन पर पटकेंगे और तेरे अंदर एक भी पत्थर दूसरे पर नहीं छोड़ेंगे। और वजह यही होगी कि तूने वह
वक़्त नहीं पहचाना जब अल्लाह ने तेरी नजात के लिए तुझ पर नज़र की।”

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

45 फिर ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उन्हें निकालने लगा जो वहाँ क़ुरबानियों के लिए दरकार चीज़ें बेच रहे थे।
उसने कहा, 46 “कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘मेरा घर दुआ का घर होगा’ जबकि तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल
दिया है।”
47 और वह रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा। लेकिन बैतुल-मुक़द्दस के राहनुमा इमाम, शरीअत के आलिम
और अवामी राहनुमा उसे क़त्ल करने के लिए कोशाँ रहे, 48 अलबत्ता उन्हें कोई मौक़ा न मिला, क्योंकि तमाम लोग
ईसा की हर बात सुन सुनकर उससे लिपटे रहते थे।

20

ईसा का इख़्तियार

1 एक दिन जब वह बैतुल-मुक़द्दस में लोगों को तालीम दे रहा और अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुना रहा था तो राहनुमा
इमाम, शरीअत के उलमा और बुज़ुर्ग उसके पास आए। 2 उन्होंने कहा, “हमें बताएँ, आप यह किस इख़्तियार से कर
रहे हैं? किसने आपको यह इख़्तियार दिया है?”
3 ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक सवाल है। तुम मुझे बताओ कि 4 क्या यहया का बपतिस्मा आसमानी था
या इनसानी?”
5 वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आसमानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न
लाए?’ 6 लेकिन अगर हम कहें ‘इनसानी’ तो तमाम लोग हमें संगसार करेंगे, क्योंकि वह तो यक़ीन रखते हैं कि यहया
नबी था।” 7 इसलिए उन्होंने जवाब दिया, “हम नहीं जानते कि वह कहाँ से था।”
8 ईसा ने कहा, “तो फिर मैं भी तुमको नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहा हूँ।”

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओं की बग़ावत

9 फिर ईसा लोगों को यह तमसील सुनाने लगा, “किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़ लगाया। फिर वह उसे मुज़ारेओं
के सुपुर्द करके बहुत देर के लिए बैरूने-मुल्क चला गया। 10 जब अंगूर पक गए तो उसने अपने नौकर को उनके पास
भेज दिया ताकि वह मालिक का हिस्सा वसूल करे। लेकिन मुज़ारेओं ने उस की पिटाई करके उसे ख़ाली हाथ लौटा
दिया। 11 इस पर मालिक ने एक और नौकर को उनके पास भेजा। लेकिन मुज़ारेओं ने उसे भी मार मारकर उस की
बेइज़्ज़ती की और ख़ाली हाथ निकाल दिया। 12 फिर मालिक ने तीसरे नौकर को भेज दिया। उसे भी उन्होंने मारकर
ज़ख़मी कर दिया और निकाल दिया। 13 बाग़ के मालिक ने कहा, ‘अब मैं क्या करूँ? मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा,
शायद वह उसका लिहाज़ करें।’ 14 लेकिन मालिक के बेटे को देखकर मुज़ारे आपस में कहने लगे, ‘यह ज़मीन का
वारिस है। आओ, हम इसे मार डालें। फिर इसकी मीरास हमारी ही होगी।’ 15 उन्होंने उसे बाग़ से बाहर फेंककर क़त्ल
किया।”

ईसा ने पूछा, "अब बताओ, बाग़ का मालिक क्या करेगा? 16 वह वहाँ जाकर मुज़ारेओं को हलाक करेगा और
बाग़ को दूसरों के सुपुर्द कर देगा।"
यह सुनकर लोगों ने कहा, "ख़ुदा ऐसा कभी न करे।"
17 ईसा ने उन पर नज़र डालकर पूछा, "तो फिर कलामे-मुक़द्दस के इस हवाले का क्या मतलब है कि
'जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया,
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया'?
18 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो जाएगा, जबकि जिस पर वह ख़ुद गिरेगा उसे पीस डालेगा।"

क्या टैक्स देना जायज़ है?

19 शरीअत के उलमा और राहनुमा इमामों ने उसी वक़्त उसे पकड़ने की कोशिश की, क्योंकि वह समझ गए थे
कि तमसील में बयानशुदा मुज़ारे हम ही हैं। लेकिन वह अवाम से डरते थे। 20 चुनाँचे वह उसे पकड़ने का मौक़ा ढूँडते
रहे। इस मक़सद के तहत उन्होंने उसके पास जासूस भेज दिए। यह लोग अपने आपको दियानतदार ज़ाहिर करके ईसा
के पास आए ताकि उस की कोई बात पकड़कर उसे रोमी गवर्नर के हवाले कर सकें। 21 इन जासूसों ने उससे पूछा,
"उस्ताद, हम जानते हैं कि आप वही कुछ बयान करते और सिखाते हैं जो सहीह है। आप जानिबदार नहीं होते बल्कि
दियानतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। 22 अब हमें बताएँ कि क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़
है या नाजायज़?"
23 लेकिन ईसा ने उनकी चालाकी भाँप ली और कहा, 24 "मुझे चाँदी का एक रोमी सिक्का दिखाओ। किसकी
सूरत और नाम इस पर कंदा है?"
उन्होंने जवाब दिया, "शहनशाह का।"
25 उसने कहा, "तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।"
26 यों वह अवाम के सामने उस की कोई बात पकड़ने में नाकाम रहे। उसका जवाब सुनकर वह हक्का-बक्का रह
गए और मज़ीद कोई बात न कर सके।

क्या हम जी उठेंगे?

27 फिर कुछ सदूक़ी उसके पास आए। सदूक़ी नहीं मानते कि रोज़े-क़ियामत मुरदे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक
सवाल किया, 28 "उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका
भाई हो तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 29 अब फ़र्ज़ करें कि सात
भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। 30 इस पर दूसरे ने उससे शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद
मर गया। 31 फिर तीसरे ने उससे शादी की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद दीगरे हर भाई बेवा
से शादी करने के बाद मर गया। 32 आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 33 अब बताएँ कि क़ियामत के दिन वह किसकी
बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।"
34 ईसा ने जवाब दिया, "इस ज़माने में लोग ब्याह-शादी करते और कराते हैं। 35 लेकिन जिन्हें अल्लाह आनेवाले
ज़माने में शरीक होने और मुरदों में से जी उठने के लायक़ समझता है वह उस वक़्त शादी नहीं करेंगे, न उनकी शादी
किसी से कराई जाएगी। 36 वह मर भी नहीं सकेंगे, क्योंकि वह फ़रिश्तों की मानिंद होंगे और क़ियामत के फ़रज़ंद
होने के बाइस अल्लाह के फ़रज़ंद होंगे। 37 और यह बात कि मुरदे जी उठेंगे मूसा से भी ज़ाहिर की गई है। क्योंकि जब
वह काँटेदार झाड़ी के पास आया तो उसने रब को यह नाम दिया, 'इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का
ख़ुदा,' हालाँकि उस वक़्त तीनों बहुत पहले मर चुके थे। इसका मतलब है कि यह हक़ीक़त में ज़िंदा हैं। 38 क्योंकि
अल्लाह मुरदों का नहीं बल्कि ज़िंदों का ख़ुदा है। उसके नज़दीक यह सब ज़िंदा हैं।"
39 यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा ने कहा, "शाबाश उस्ताद, आपने अच्छा कहा है।" 40 इसके बाद उन्होंने
उससे कोई भी सवाल करने की जुर्रत न की।

मसीह के बारे में सवाल

41 फिर ईसा ने उनसे पूछा, "मसीह के बारे में क्यों कहा जाता है कि वह दाऊद का फ़रज़ंद है? 42 क्योंकि दाऊद
ख़ुद ज़बूर की किताब में फ़रमाता है,
'रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
43 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।'
44 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह दाऊद का फ़रज़ंद हो सकता है?"

शरीअत के उलमा से ख़बरदार

45 जब लोग सुन रहे थे तो उसने अपने शागिर्दों से कहा, 46 "शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहो! क्योंकि वह
शानदार चोग़े पहनकर इधर उधर फिरना पसंद करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़्ज़त करते हैं तो
फिर वह ख़ुश हो जाते हैं। उनकी बस एक ही ख़ाहिश होती है कि इबादतख़ानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त की कुरसियों
पर बैठ जाएँ। 47 यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लंबी लंबी दुआएँ माँगते हैं।
ऐसे लोगों को निहायत सख़्त सज़ा मिलेगी।"

21

बेवा का चंदा

1 ईसा ने नज़र उठाकर देखा कि अमीर लोग अपने हदिये बैतुल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स में डाल रहे हैं। 2 एक ग़रीब
बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-से सिक्के डाल दिए। 3 ईसा ने कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ
कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है। 4 क्योंकि इन सबने तो अपनी दौलत की कसरत से
कुछ डाला जबकि इसने ज़रूरतमंद होने के बावुजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।"

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

5 उस वक़्त कुछ लोग बैतुल-मुक़द्दस की तारीफ़ में कहने लगे कि वह कितने ख़ूबसूरत पत्थरों और मन्नत के तोहफ़ों
से सजी हुई है। यह सुनकर ईसा ने कहा, 6 "जो कुछ तुमको यहाँ नज़र आता है उसका पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा।
आनेवाले दिनों में सब कुछ ढा दिया जाएगा।"

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

7 उन्होंने पूछा, "उस्ताद, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिससे मालूम हो कि यह अब होने को है?"

8 ईसा ने जवाब दिया, "ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। क्योंकि बहुत-से लोग मेरा नाम लेकर आएँगे
और कहेंगे, 'मैं ही मसीह हूँ' और कि 'वक़्त क़रीब आ चुका है।' लेकिन उनके पीछे न लगना। 9 और जब जंगों और
फ़ितनों की ख़बरें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पहले पेश आए। तो भी अभी
आख़िरत न होगी।"

10 उसने अपनी बात जारी रखी, "एक क़ौम दूसरी के ख़िलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही दूसरी के
ख़िलाफ़। 11 शदीद ज़लज़ले आएँगे, जगह जगह काल पड़ेंगे और वबाई बीमारियाँ फैल जाएँगी। हैबतनाक वाक़ियात
और आसमान पर बड़े निशान देखने में आएँगे। 12 लेकिन इन तमाम वाक़ियात से पहले लोग तुमको पकड़कर सताएँगे।
वह तुमको यहूदी इबादतख़ानों के हवाले करेंगे, क़ैदख़ानों में डलवाएँगे और बादशाहों और हुक्मरानों के सामने पेश
करेंगे। और यह इसलिए होगा कि तुम मेरे पैरोकार हो। 13 नतीजे में तुम्हें मेरी गवाही देने का मौक़ा मिलेगा। 14 लेकिन
ठान लो कि तुम पहले से अपना दिफ़ा करने की तैयारी न करो, 15 क्योंकि मैं तुमको ऐसे अलफ़ाज़ और हिकमत अता
करूँगा कि तुम्हारे तमाम मुख़ालिफ़ न उसका मुक़ाबला और न उस की तरदीद कर सकेंगे। 16 तुम्हारे वालिदैन, भाई,
रिश्तेदार और दोस्त भी तुमको दुश्मन के हवाले कर देंगे, बल्कि तुममें से बाज़ को क़त्ल किया जाएगा। 17 सब तुमसे
नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार हो। 18 तो भी तुम्हारा एक बाल भी बीका नहीं होगा। 19 साबितक़दम रहने
से ही तुम अपनी जान बचा लोगे।

यरूशलम की तबाही

20 जब तुम यरूशलम को फ़ौजों से घिरा हुआ देखो तो जान लो कि उस की तबाही क़रीब आ चुकी है। 21 उस वक़्त
यहूदिया के बाशिंदे भागकर पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। शहर के रहनेवाले उससे निकल जाएँ और देहात में आबाद लोग
शहर में दाख़िल न हों। 22 क्योंकि यह इलाही ग़ज़ब के दिन होंगे जिनमें वह सब कुछ पूरा हो जाएगा जो कलामे-मुक़द्दस
में लिखा है। 23 उन ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों, क्योंकि
मुल्क में बहुत मुसीबत होगी और इस क़ौम पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा। 24 लोग उन्हें तलवार से क़त्ल करेंगे
और क़ैद करके तमाम ग़ैरयहूदी ममालिक में ले जाएंगे। ग़ैरयहूदी यरूशलम को पाँवों तले कुचल डालेंगे। यह सिलसिला
उस वक़्त तक जारी रहेगा जब तक ग़ैरयहूदियों का दौर पूरा न हो जाए।

इब्ने-आदम की आमद

25 सूरज, चाँद और सितारों में अजीबो-ग़रीब निशान ज़ाहिर होंगे। क़ौमें समुंदर के शोर और ठाठें मारने से हैरानो-
परेशान होंगी। 26 लोग इस अंदेशे से कि क्या क्या मुसीबत दुनिया पर आएगी इस क़दर ख़ौफ़ खाएँगे कि उनकी जान

में जान न रहेगी, क्योंकि आसमान की क़ुव्वतें हिलाई जाएँगी। 27 और फिर वह इब्ने-आदम को बड़ी क़ुदरत और
जलाल के साथ बादल में आते हुए देखेंगे। 28 चुनाँचे जब यह कुछ पेश आने लगे तो सीधे खड़े होकर अपनी नज़र
उठाओ, क्योंकि तुम्हारी नजात नज़दीक होगी।”

अंजीर के दरख़्त की तमसील

29 इस सिलसिले में ईसा ने उन्हें एक तमसील सुनाई। “अंजीर के दरख़्त और बाक़ी दरख़्तों पर ग़ौर करो। 30 ज्योंही
कोंपलें निकलने लगती हैं तुम जान लेते हो कि गरमियों का मौसम नज़दीक है। 31 इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात
देखोगे तो जान लोगे कि अल्लाह की बादशाही क़रीब ही है।
32 मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस नसल के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 33 आसमानो-ज़मीन
तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक क़ायम रहेंगी।

ख़बरदार रहना

34 ख़बरदार रहो ताकि तुम्हारे दिल ऐयाशी, नशाबाज़ी और रोज़ाना की फ़िकरों तले दब न जाएँ। वरना यह दिन
अचानक तुम पर आन पड़ेगा, 35 और फंदे की तरह तुम्हें जकड़ लेगा। क्योंकि वह दुनिया के तमाम बाशिंदों पर
आएगा। 36 हर वक़्त चौकस रहो और दुआ करते रहो कि तुमको आनेवाली इन सब बातों से बच निकलने की तौफ़ीक़
मिल जाए और तुम इब्ने-आदम के सामने खड़े हो सको।”
37 हर रोज़ ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा और हर शाम वह निकलकर उस पहाड़ पर रात गुज़ारता था
जिसका नाम ज़ैतून का पहाड़ है। 38 और तमाम लोग उस की बातें सुनने के लिए सुबह-सवेरे बैतुल-मुक़द्दस में उसके
पास आते थे।

22

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

1 बेख़मीरी रोटी की ईद यानी फ़सह की ईद क़रीब आ गई थी। 2 राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा ईसा को
क़त्ल करने का कोई मौज़ूँ मौक़ा ढूँड रहे थे, क्योंकि वह अवाम के रद्दे-अमल से डरते थे।

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

3 उस वक़्त इबलीस यहूदाह इस्करियोती में समा गया जो बारह रसूलों में से था। 4 अब वह राहनुमा इमामों और
बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों के अफ़सरों से मिला और उनसे बात करने लगा कि वह ईसा को किस तरह उनके हवाले
कर सकेगा। 5 वह ख़ुश हुए और उसे पैसे देने पर मुत्तफ़िक़ हुए। 6 यहूदाह रज़ामंद हुआ। अब से वह इस तलाश में रहा
कि ईसा को ऐसे मौक़े पर उनके हवाले करे जब हुजूम उसके पास न हो।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

7 बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब फ़सह के लेले को क़ुरबान करना था। 8 ईसा ने पतरस और यूहन्ना को आगे
भेजकर हिदायत की, “जाओ, हमारे लिए फ़सह का खाना तैयार करो ताकि हम जाकर उसे खा सकें।”
9 उन्होंने पूछा, “हम उसे कहाँ तैयार करें?”
10 उसने जवाब दिया, “जब तुम शहर में दाख़िल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा
उठाए चल रहा होगा। उसके पीछे चलकर उस घर में दाख़िल हो जाओ जिसमें वह जाएगा। 11 वहाँ के मालिक से
कहना, ‘उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?’ 12 वह
तुमको दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।”
13 दोनों चले गए तो सब कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया।

फ़सह का आख़िरी खाना

14 मुक़र्ररा वक़्त पर ईसा अपने शागिर्दों के साथ खाने के लिए बैठ गया। 15 उसने उनसे कहा, “मेरी शदीद आरज़ू
थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ मिलकर फ़सह का यह खाना खाऊँ। 16 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि उस
वक़्त तक इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इसका मक़सद अल्लाह की बादशाही में पूरा न हो गया हो।”
17 फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और कहा, “इसको लेकर आपस में बाँट लो। 18 मैं
तुमको बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे अल्लाह की बादशाही के आने पर
पियूँगा।”

19 फिर उसने रोटी लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके उन्हें दे दिया। उसने कहा, “यह मेरा बदन
है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।” 20 इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला
लेकर कहा, “मै का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ायम किया जाता है, वह ख़ून जो तुम्हारे लिए
बहाया जाता है।

21 लेकिन जिस शख़्स का हाथ मेरे साथ खाना खाने में शरीक है वह मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा। 22 इब्ने-आदम
तो अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ कूच कर जाएगा, लेकिन उस शख़्स पर अफ़सोस जिसके वसीले से उसे दुश्मन के
हवाले कर दिया जाएगा।”

23 यह सुनकर शागिर्द एक दूसरे से बहस करने लगे कि हममें से यह कौन हो सकता है जो इस क़िस्म की हरकत
करेगा।

कौन बड़ा है?

24 फिर एक और बात भी छिड़ गई। वह एक दूसरे से बहस करने लगे कि हममें से कौन सबसे बड़ा समझा जाए।
25 लेकिन ईसा ने उनसे कहा, “ग़ैरयहूदी क़ौमों में बादशाह वही हैं जो दूसरों पर हुकूमत करते हैं, और इख़्तियारवाले
वही हैं जिन्हें ‘मोहसिन’ का लक़ब दिया जाता है। 26 लेकिन तुमको ऐसा नहीं होना चाहिए। इसके बजाए जो सबसे
बड़ा है वह सबसे छोटे लड़के की मानिंद हो और जो राहनुमाई करता है वह नौकर जैसा हो। 27 क्योंकि आम तौर पर
कौन ज़्यादा बड़ा होता है, वह जो खाने के लिए बैठा है या वह जो लोगों की ख़िदमत के लिए हाज़िर होता है? क्या
वह नहीं जो खाने के लिए बैठा है? बेशक। लेकिन मैं ख़िदमत करनेवाले की हैसियत से ही तुम्हारे दरमियान हूँ।

28 देखो, तुम वही हो जो मेरी तमाम आज़माइशों के दौरान मेरे साथ रहे हो। 29 चुनाँचे मैं तुमको बादशाही अता
करता हूँ जिस तरह बाप ने मुझे भी बादशाही अता की है। 30 तुम मेरी बादशाही में मेरी मेज़ पर बैठकर मेरे साथ खाओ
और पियोगे, और तख़्तों पर बैठकर इसराईल के बारह क़बीलों का इनसाफ़ करोगे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

31 शमौन, शमौन! इबलीस ने तुम लोगों को गंदुम की तरह फटकने का मुतालबा किया है। 32 लेकिन मैंने तेरे
लिए दुआ की है ताकि तेरा ईमान जाता न रहे। और जब तू मुड़कर वापस आए तो उस वक़्त अपने भाइयों को मज़बूत
करना।”

33 पतरस ने जवाब दिया, “ख़ुदावंद, मैं तो आपके साथ जेल में भी जाने बल्कि मरने को तैयार हूँ।”

34 ईसा ने कहा, “पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि कल सुबह मुरग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने
से इनकार कर चुका होगा।”

अब बटवे, बैग और तलवार की ज़रूरत है

35 फिर उसने उनसे पूछा, “जब मैंने तुमको बटवे, सामान के लिए बैग और जूतों के बग़ैर भेज दिया तो क्या तुम
किसी भी चीज़ से महरूम रहे?”

उन्होंने जवाब दिया, “किसी से नहीं।”

36 उसने कहा, “लेकिन अब जिसके पास बटवा या बैग हो वह उसे साथ ले जाए, बल्कि जिसके पास तलवार न
हो वह अपनी चादर बेचकर तलवार ख़रीद ले। 37 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘उसे मुजरिमों में शुमार किया गया’
और मैं तुमको बताता हूँ, लाज़िम है कि यह बात मुझमें पूरी हो जाए। क्योंकि जो कुछ मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा ही
होना है।”

38 उन्होंने कहा, “ख़ुदावंद, यहाँ दो तलवारें हैं।” उसने कहा, “बस! काफ़ी है!”

ज़ैतून के पहाड़ पर ईसा की दुआ

39 फिर वह शहर से निकलकर मामूल के मुताबिक़ ज़ैतून के पहाड़ की तरफ़ चल दिया। उसके शागिर्द उसके पीछे
हो लिए। 40 वहाँ पहुँचकर उसने उनसे कहा, “दुआ करो ताकि आज़माइश में न पड़ो।”

41 फिर वह उन्हें छोड़कर कुछ आगे निकला, तक़रीबन इतने फ़ासले पर जितनी दूर तक पत्थर फेंका जा सकता है।
वहाँ वह झुककर दुआ करने लगा, 42 “ऐ बाप, अगर तू चाहे तो यह प्याला मुझसे हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि
तेरी मरज़ी पूरी हो।” 43 उस वक़्त एक फ़रिश्ते ने आसमान पर से उस पर ज़ाहिर होकर उसको तक़वियत दी। 44 वह
सख़्त परेशान होकर ज़्यादा दिलसोज़ी से दुआ करने लगा। साथ साथ उसका पसीना ख़ून की बूँदों की तरह ज़मीन पर
टपकने लगा।

45 जब वह दुआ से फ़ारिग़ होकर खड़ा हुआ और शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह ग़म के मारे सो गए
हैं। 46 उसने उनसे कहा, “तुम क्यों सो रहे हो? उठकर दुआ करते रहो ताकि आज़माइश में न पड़ो।”

ईसा की गिरिफ़्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि एक हुजूम आ पहुँचा जिसके आगे आगे यहूदाह चल रहा था। वह ईसा
को बोसा देने के लिए उसके पास आया। 48 लेकिन उसने कहा, “यहूदाह, क्या तू इब्ने-आदम को बोसा देकर दुश्मन
के हवाले कर रहा है?”
49 जब उसके साथियों ने भाँप लिया कि अब क्या होनेवाला है तो उन्होंने कहा, “ख़ुदावंद, क्या हम तलवार
चलाएँ?” 50 और उनमें से एक ने अपनी तलवार से इमामे-आज़म के ग़ुलाम का दहना कान उड़ा दिया।
51 लेकिन ईसा ने कहा, “बस कर!” उसने ग़ुलाम का कान छूकर उसे शफ़ा दी। 52 फिर वह उन राहनुमा इमामों,
बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों के अफ़सरों और बुज़ुर्गों से मुख़ातिब हुआ जो उसके पास आए थे, “क्या मैं डाकू हूँ कि
तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मेरे ख़िलाफ़ निकले हो? 53 मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तुम्हारे पास था, मगर तुमने
वहाँ मुझे हाथ नहीं लगाया। लेकिन अब यह तुम्हारा वक़्त है, वह वक़्त जब तारीकी हुकूमत करती है।”

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

54 फिर वह उसे गिरिफ़्तार करके इमामे-आज़म के घर ले गए। पतरस कुछ फ़ासले पर उनके पीछे पीछे वहाँ पहुँच
गया। 55 लोग सहन में आग जलाकर उसके इर्दगिर्द बैठ गए। पतरस भी उनके दरमियान बैठ गया। 56 किसी नौकरानी
ने उसे वहाँ आग के पास बैठे हुए देखा। उसने उसे घूरकर कहा, “यह भी उसके साथ था।”
57 लेकिन उसने इनकार किया, “ख़ातून, मैं उसे नहीं जानता।”
58 थोड़ी देर के बाद किसी आदमी ने उसे देखा और कहा, “तुम भी उनमें से हो।”
लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “नहीं भई! मैं नहीं हूँ।”
59 तक़रीबन एक घंटा गुज़र गया तो किसी और ने इसरार करके कहा, “यह आदमी यक़ीनन उसके साथ था,
क्योंकि यह भी गलील का रहनेवाला है।”
60 लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “यार, मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो!”
वह अभी बात कर ही रहा था कि अचानक मुरग़ की बाँग सुनाई दी। 61 ख़ुदावंद ने मुड़कर पतरस पर नज़र डाली।
फिर पतरस को ख़ुदावंद की वह बात याद आई जो उसने उससे कही थी कि “कल सुबह मुरग़ के बाँग देने से पहले
पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।” 62 पतरस वहाँ से निकलकर टूटे दिल से ख़ूब रोया।

लान-तान और पिटाई

63 पहरेदार ईसा का मज़ाक़ उड़ाने और उस की पिटाई करने लगे। 64 उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँधकर
पूछा, “नबुव्वत कर कि किसने तुझे मारा?” 65 इस तरह की और बहुत-सी बातों से वह उस की बेइज़्ज़ती करते रहे।

यहूदी अदालते-आलिया के सामने पेशी

66 जब दिन चढ़ा तो राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा पर मुश्तमिल क़ौम की मजलिस ने जमा होकर उसे
यहूदी अदालते-आलिया में पेश किया। 67 उन्होंने कहा, “अगर तू मसीह है तो हमें बता!”
ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं तुमको बताऊँ तो तुम मेरी बात नहीं मानोगे, 68 और अगर तुमसे पूछूँ तो तुम जवाब
नहीं दोगे। 69 लेकिन अब से इब्ने-आदम अल्लाह तआला के दहने हाथ बैठा होगा।”
70 सबने पूछा, “तो फिर क्या तू अल्लाह का फ़रज़ंद है?”
उसने जवाब दिया, “जी, तुम ख़ुद कहते हो।”
71 इस पर उन्होंने कहा, “अब हमें किसी और गवाही की क्या ज़रूरत रही? क्योंकि हमने यह बात उसके अपने
मुँह से सुन ली है।”

23

पीलातुस के सामने

1 फिर पूरी मजलिस उठी और उसे पीलातुस के पास ले आई। 2 वहाँ वह उस पर इलज़ाम लगाकर कहने लगे,
“हमने मालूम किया है कि यह आदमी हमारी क़ौम को गुमराह कर रहा है। यह शहनशाह को टैक्स देने से मना करता
और दावा करता है कि मैं मसीह और बादशाह हूँ।”
3 पीलातुस ने उससे पूछा, “अच्छा, तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, "जी, आप ख़ुद कहते हैं।"
4 फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों और हुजूम से कहा, "मुझे इस आदमी पर इलज़ाम लगाने की कोई वजह नज़र नहीं आती।"
5 लेकिन वह अड़े रहे। उन्होंने कहा, "वह पूरे यहूदिया में तालीम देते हुए क़ौम को उकसाता है। वह गलील से शुरू करके यहाँ तक आ पहुँचा है।"

हेरोदेस के सामने

6 यह सुनकर पीलातुस ने पूछा, "क्या यह शख़्स गलील का है?" 7 जब उसे मालूम हुआ कि ईसा गलील यानी
उस इलाक़े से है जिस पर हेरोदेस अंतिपास की हुकूमत है तो उसने उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि वह भी उस
वक़्त यरूशलम में था। 8 हेरोदेस ईसा को देखकर बहुत ख़ुश हुआ, क्योंकि उसने उसके बारे में बहुत कुछ सुना था और
इसलिए काफ़ी देर से उससे मिलना चाहता था। अब उस की बड़ी ख़ाहिश थी कि ईसा को कोई मोजिज़ा करते हुए देख
सके। 9 उसने उससे बहुत सारे सवाल किए, लेकिन ईसा ने एक का भी जवाब न दिया। 10 राहनुमा इमाम और शरीअत
के उलमा साथ खड़े बड़े जोश से उस पर इलज़ाम लगाते रहे। 11 फिर हेरोदेस और उसके फ़ौजियों ने उस की तहक़ीर
करते हुए उसका मज़ाक़ उड़ाया और उसे चमकदार लिबास पहनाकर पीलातुस के पास वापस भेज दिया। 12 उसी दिन
हेरोदेस और पीलातुस दोस्त बन गए, क्योंकि इससे पहले उनकी दुश्मनी चल रही थी।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

13 फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों, सरदारों और अवाम को जमा करके 14 उनसे कहा, "तुमने इस शख़्स को मेरे
पास लाकर इस पर इलज़ाम लगाया है कि यह क़ौम को उकसा रहा है। मैंने तुम्हारी मौजूदगी में इसका जायज़ा लेकर
ऐसा कुछ नहीं पाया जो तुम्हारे इलज़ामात की तसदीक़ करे। 15 हेरोदेस भी कुछ नहीं मालूम कर सका, इसलिए उसने
इसे हमारे पास वापस भेज दिया है। इस आदमी से कोई भी ऐसा क़ुसूर नहीं हुआ कि यह सज़ाए-मौत के लायक़ है।
16 इसलिए मैं इसे कोड़ों की सज़ा देकर रिहा कर देता हूँ।"
17 [असल में यह उसका फ़र्ज़ था कि वह ईद के मौक़े पर उनकी ख़ातिर एक क़ैदी को रिहा कर दे।]
18 लेकिन सब मिलकर शोर मचाकर कहने लगे, "इसे ले जाएँ! इसे नहीं बल्कि बर-अब्बा को रिहा करके हमें
दें।" 19 (बर-अब्बा को इसलिए जेल में डाला गया था कि वह क़ातिल था और उसने शहर में हुकूमत के ख़िलाफ़
बग़ावत की थी।)
20 पीलातुस ईसा को रिहा करना चाहता था, इसलिए वह दुबारा उनसे मुख़ातिब हुआ। 21 लेकिन वह चिल्लाते रहे,
"इसे मसलूब करें, इसे मसलूब करें।"
22 फिर पीलातुस ने तीसरी दफ़ा उनसे कहा, "क्यों? उसने क्या जुर्म किया है? मुझे इसे सज़ाए-मौत देने की कोई वजह नज़र नहीं आती। इसलिए मैं इसे कोड़े लगवाकर रिहा कर देता हूँ।"
23 लेकिन वह बड़ा शोर मचाकर उसे मसलूब करने का तक़ाज़ा करते रहे, और आख़िरकार उनकी आवाज़ें ग़ालिब
आ गईं। 24 फिर पीलातुस ने फ़ैसला किया कि उनका मुतालबा पूरा किया जाए। 25 उसने उस आदमी को रिहा कर
दिया जो अपनी बाग़ियाना हरकतों और क़त्ल की वजह से जेल में डाल दिया गया था जबकि ईसा को उसने उनकी
मरज़ी के मुताबिक़ उनके हवाले कर दिया।

ईसा को मसलूब किया जाता है

26 जब फ़ौजी ईसा को ले जा रहे थे तो उन्होंने एक आदमी को पकड़ लिया जो लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला था। उसका नाम शमौन था। उस वक़्त वह देहात से शहर में दाख़िल हो रहा था। उन्होंने सलीब को उसके कंधों पर रखकर उसे ईसा के पीछे चलने का हुक्म दिया।
27 एक बड़ा हुजूम उसके पीछे हो लिया जिसमें कुछ ऐसी औरतें भी शामिल थीं जो सीना पीट पीटकर उसका
मातम कर रही थीं। 28 ईसा ने मुड़कर उनसे कहा, "यरूशलम की बेटियो! मेरे वास्ते न रोओ बल्कि अपने और अपने
बच्चों के वास्ते रोओ। 29 क्योंकि ऐसे दिन आएँगे जब लोग कहेंगे, 'मुबारक हैं वह जो बाँझ हैं, जिन्होंने न तो बच्चों
को जन्म दिया, न दूध पिलाया।' 30 फिर लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे, 'हम पर गिर पड़ो,' और पहाड़ियों से कि 'हमें
छुपा लो।' 31 क्योंकि अगर हरी लकड़ी से ऐसा सुलूक किया जाता है तो फिर सूखी लकड़ी का क्या बनेगा?"
32 दो और मर्दों को भी फाँसी देने के लिए बाहर ले जाया जा रहा था। दोनों मुजरिम थे। 33 चलते चलते वह
उस जगह पहुँचे जिसका नाम खोपड़ी था। वहाँ उन्होंने ईसा को दोनों मुजरिमों समेत मसलूब किया। एक मुजरिम को
उसके दाएँ हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ लटका दिया गया। 34 ईसा ने कहा, "ऐ बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्योंकि
यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।"

उन्होंने क़ुरा डालकर उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। 35 हुजूम वहाँ खड़ा तमाशा देखता रहा जबकि क़ौम के
सरदारों ने उसका मज़ाक़ भी उड़ाया। उन्होंने कहा, "उसने औरों को बचाया है। अगर यह अल्लाह का चुना हुआ
और मसीह है तो अपने आपको बचाए।"
36 फ़ौजियों ने भी उसे लान-तान की। उसके पास आकर उन्होंने उसे मै का सिरका पेश किया 37 और कहा, "अगर
तू यहूदियों का बादशाह है तो अपने आपको बचा ले।"
38 उसके सर के ऊपर एक तख़्ती लगाई गई थी जिस पर लिखा था, "यह यहूदियों का बादशाह है।"
39 जो मुजरिम उसके साथ मसलूब हुए थे उनमें से एक ने कुफ़्र बकते हुए कहा, "क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर
अपने आपको और हमें भी बचा ले।"
40 लेकिन दूसरे ने यह सुनकर उसे डाँटा, "क्या तू अल्लाह से भी नहीं डरता? जो सज़ा उसे दी गई है वह तुझे भी
मिली है। 41 हमारी सज़ा तो वाजिबी है, क्योंकि हमें अपने कामों का बदला मिल रहा है, लेकिन इसने कोई बुरा काम
नहीं किया।" 42 फिर उसने ईसा से कहा, "जब आप अपनी बादशाही में आएँ तो मुझे याद करें।"
43 ईसा ने उससे कहा, "मैं तुझे सच बताता हूँ कि तू आज ही मेरे साथ फ़िरदौस में होगा।"

ईसा की मौत

44 बारह बजे से दोपहर तीन बजे तक पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। 45 सूरज तारीक हो गया और बैतुल-मुक़द्दस के
मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा दो हिस्सों में फट गया। 46 ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, "ऐ बाप,
मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ।" यह कहकर उसने दम छोड़ दिया।
47 यह देखकर वहाँ खड़े फ़ौजी अफ़सर * ने अल्लाह की तमजीद करके कहा, "यह आदमी वाक़ई रास्तबाज़
था।"
48 और हुजूम के तमाम लोग जो यह तमाशा देखने के लिए जमा हुए थे यह सब कुछ देखकर छाती पीटने लगे और
शहर में वापस चले गए। 49 लेकिन ईसा के जाननेवाले कुछ फ़ासले पर खड़े देखते रहे। उनमें वह ख़वातीन भी शामिल
थीं जो गलील में उसके पीछे चलकर यहाँ तक उसके साथ आई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

50 वहाँ एक नेक और रास्तबाज़ आदमी बनाम यूसुफ़ था। वह यहूदी अदालते-आलिया का रुकन था 51 लेकिन
दूसरों के फ़ैसले और हरकतों पर रज़ामंद नहीं हुआ था। यह आदमी यहूदिया के शहर अरिमतियाह का रहनेवाला था
और इस इंतज़ार में था कि अल्लाह की बादशाही आए। 52 अब उसने पीलातुस के पास जाकर उससे ईसा की लाश ले
जाने की इजाज़त माँगी। 53 फिर लाश को उतारकर उसने उसे कतान के कफ़न में लपेटकर चटान में तराशी हुई एक
क़ब्र में रख दिया जिसमें अब तक किसी को दफ़नाया नहीं गया था। 54 यह तैयारी का दिन यानी जुमा था, लेकिन
सबत का दिन शुरू होने को था। † 55 जो औरतें ईसा के साथ गलील से आई थीं वह यूसुफ़ के पीछे हो लीं। उन्होंने
क़ब्र को देखा और यह भी कि ईसा की लाश किस तरह उसमें रखी गई है। 56 फिर वह शहर में वापस चली गईं और
उस की लाश के लिए ख़ुशबूदार मसाले तैयार करने लगीं। लेकिन बीच में सबत का दिन शुरू हुआ, इसलिए उन्होंने
शरीअत के मुताबिक़ आराम किया।

24

ईसा जी उठता है

1 इतवार के दिन यह औरतें अपने तैयारशुदा मसाले लेकर सुबह-सवेरे क़ब्र पर गईं। 2 वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा
कि क़ब्र पर का पत्थर एक तरफ़ लुढ़का हुआ है। 3 लेकिन जब वह क़ब्र में गईं तो वहाँ ख़ुदावंद ईसा की लाश न पाई।
4 वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थीं कि अचानक दो मर्द उनके पास आ खड़े हुए जिनके लिबास बिजली की तरह
चमक रहे थे। 5 औरतें दहशत खाकर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन मर्दों ने कहा, "तुम क्यों ज़िंदा को मुरदों में
ढूँड रही हो? 6 वह यहाँ नहीं है, वह तो जी उठा है। वह बात याद करो जो उसने तुमसे उस वक़्त कही जब वह गलील
में था। 7 'लाज़िम है कि इब्ने-आदम को गुनाहगारों के हवाले कर दिया जाए, मसलूब किया जाए और कि वह तीसरे
दिन जी उठे'।"
8 फिर उन्हें यह बात याद आई। 9 और क़ब्र से वापस आकर उन्होंने यह सब कुछ ग्यारह रसूलों और बाक़ी शागिर्दों
को सुना दिया। 10 मरियम मग्दलीनी, युअन्ना, याक़ूब की माँ मरियम और चंद एक और औरतें उनमें शामिल थीं
जिन्होंने यह बातें रसूलों को बताईं। 11 लेकिन उनको यह बातें बेतुकी-सी लग रही थीं, इसलिए उन्हें यक़ीन न आया।

---

* **23:47** सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर। † **23:54** यहूदी दिन सूरज के ग़ुरूब होने से शुरू होता है।

12 तो भी पतरस उठा और भागकर क़ब्र के पास आया। जब पहुँचा तो झुककर अंदर झाँका, लेकिन सिर्फ़ कफ़न [*] ही
नज़र आया। यह हालात देखकर वह हैरान हुआ और चला गया।

इम्माउस के रास्ते में ईसा से मुलाक़ात

13 उसी दिन ईसा के दो पैरोकार एक गाँव बनाम इम्माउस की तरफ़ चल रहे थे। यह गाँव यरूशलम से तक़रीबन दस
किलोमीटर दूर था। 14 चलते चलते वह आपस में उन वाक़ियात का ज़िक्र कर रहे थे जो हुए थे। 15 और ऐसा हुआ
कि जब वह बातें और एक दूसरे के साथ बहस-मुबाहसा कर रहे थे तो ईसा ख़ुद क़रीब आकर उनके साथ चलने लगा।
16 लेकिन उनकी आँखों पर परदा डाला गया था, इसलिए वह उसे पहचान न सके। 17 ईसा ने कहा, "यह कैसी बातें
हैं जिनके बारे में तुम चलते चलते तबादलाए-ख़याल कर रहे हो?"
यह सुनकर वह ग़मगीन से खड़े हो गए। 18 उनमें से एक बनाम क्लियुपास ने उससे पूछा, "क्या आप यरूशलम में
वाहिद शख़्स हैं जिसे मालूम नहीं कि इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?"
19 उसने कहा, "क्या हुआ है?"
उन्होंने जवाब दिया, "वह जो ईसा नासरी के साथ हुआ है। वह नबी था जिसे कलाम और काम में अल्लाह और
तमाम क़ौम के सामने ज़बरदस्त क़ुव्वत हासिल थी। 20 लेकिन हमारे राहनुमा इमामों और सरदारों ने उसे हुक्मरानों
के हवाले कर दिया ताकि उसे सज़ाए-मौत दी जाए, और उन्होंने उसे मसलूब किया। 21 लेकिन हमें तो उम्मीद थी कि
वही इसराईल को नजात देगा। इन वाक़ियात को तीन दिन हो गए हैं। 22 लेकिन हममें से कुछ ख़वातीन ने भी हमें हैरान
कर दिया है। वह आज सुबह-सवेरे क़ब्र पर गईं 23 तो देखा कि लाश वहाँ नहीं है। उन्होंने लौटकर हमें बताया कि हम
पर फ़रिश्ते ज़ाहिर हुए जिन्होंने कहा कि ईसा ज़िंदा है। 24 हममें से कुछ क़ब्र पर गए और उसे वैसा ही पाया जिस तरह
उन औरतों ने कहा था। लेकिन उसे ख़ुद उन्होंने नहीं देखा।"
25 फिर ईसा ने उनसे कहा, "अरे नादानो! तुम कितने कुंदज़हन हो कि तुम्हें उन तमाम बातों पर यक़ीन नहीं आया
जो नबियों ने फ़रमाई हैं। 26 क्या लाज़िम नहीं था कि मसीह यह सब कुछ झेलकर अपने जलाल में दाख़िल हो जाए?"
27 फिर मूसा और तमाम नबियों से शुरू करके ईसा ने कलामे-मुक़द्दस की हर बात की तशरीह की जहाँ जहाँ उसका
ज़िक्र है।
28 चलते चलते वह उस गाँव के क़रीब पहुँचे जहाँ उन्हें जाना था। ईसा ने ऐसा किया गोया कि वह आगे बढ़ना
चाहता है, 29 लेकिन उन्होंने उसे मजबूर करके कहा, "हमारे पास ठहरें, क्योंकि शाम होने को है और दिन ढल गया
है।" चुनाँचे वह उनके साथ ठहरने के लिए अंदर गया। 30 और ऐसा हुआ कि जब वह खाने के लिए बैठ गए तो उसने
रोटी लेकर उसके लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसने उसे टुकड़े करके उन्हें दिया। 31 अचानक उनकी आँखें
खुल गईं और उन्होंने उसे पहचान लिया। लेकिन उसी लमहे वह ओझल हो गया। 32 फिर वह एक दूसरे से कहने लगे,
"क्या हमारे दिल जोश से न भर गए थे जब वह रास्ते में हमसे बातें करते करते हमें सहीफ़ों का मतलब समझा रहा
था?"
33 और वह उसी वक़्त उठकर यरूशलम वापस चले गए। जब वह वहाँ पहुँचे तो ग्यारह रसूल अपने साथियों समेत
पहले से जमा थे 34 और यह कह रहे थे, "ख़ुदावंद वाक़ई जी उठा है! वह शमौन पर ज़ाहिर हुआ है।"
35 फिर इम्माउस के दो शागिर्दों ने उन्हें बताया कि गाँव की तरफ़ जाते हुए क्या हुआ था और कि ईसा के रोटी
तोड़ते वक़्त उन्होंने उसे कैसे पहचाना।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

36 वह अभी यह बातें सुना रहे थे कि ईसा ख़ुद उनके दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, "तुम्हारी सलामती हो।"
37 वह घबराकर बहुत डर गए, क्योंकि उनका ख़याल था कि कोई भूत-प्रेत देख रहे हैं। 38 उसने उनसे कहा, "तुम
क्यों परेशान हो गए हो? क्या वजह है कि तुम्हारे दिलों में शक उभर आया है? 39 मेरे हाथों और पाँवों को देखो कि
मैं ही हूँ। मुझे टटोलकर देखो, क्योंकि भूत के गोश्त और हड्डियाँ नहीं होतीं जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिस्म है।"
40 यह कहकर उसने उन्हें अपने हाथ और पाँव दिखाए। 41 जब उन्हें ख़ुशी के मारे यक़ीन नहीं आ रहा था और
ताज्जुब कर रहे थे तो ईसा ने पूछा, "क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?" 42 उन्होंने उसे भुनी हुई मछली
का एक टुकड़ा दिया। 43 उसने उसे लेकर उनके सामने ही खा लिया।
44 फिर उसने उनसे कहा, "यही है जो मैंने तुमको उस वक़्त बताया था जब तुम्हारे साथ था कि जो कुछ भी मूसा
की शरीअत, नबियों के सहीफ़ों और ज़बूर की किताब में मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा होना है।"

---

[*] **24:12** लफ़्ज़ी तरजुमा : कतान की पट्टियाँ जो कफ़न के लिए इस्तेमाल होती थीं।

45 फिर उसने उनके ज़हन को खोल दिया ताकि वह अल्लाह का कलाम समझ सकें। 46 उसने उनसे कहा, “कलामे-
मुक़द्दस में यों लिखा है, मसीह दुख उठाकर तीसरे दिन मुरदों में से जी उठेगा। 47 फिर यरूशलम से शुरू करके उसके
नाम में यह पैग़ाम तमाम क़ौमों को सुनाया जाएगा कि वह तौबा करके गुनाहों की मुआफ़ी पाएँ। 48 तुम इन बातों के
गवाह हो। 49 और मैं तुम्हारे पास उसे भेज दूँगा जिसका वादा मेरे बाप ने किया है। फिर तुमको आसमान की क़ुव्वत से
मुलब्बस किया जाएगा। उस वक़्त तक शहर से बाहर न निकलना।”

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

50 फिर वह शहर से निकलकर उन्हें बैत-अनियाह तक ले गया। वहाँ उसने अपने हाथ उठाकर उन्हें बरकत दी।
51 और ऐसा हुआ कि बरकत देते हुए वह उनसे जुदा होकर आसमान पर उठा लिया गया। 52 उन्होंने उसे सिजदा किया
और फिर बड़ी ख़ुशी से यरूशलम वापस चले गए। 53 वहाँ वह अपना पूरा वक़्त बैतुल-मुक़द्दस में गुज़ारकर अल्लाह
की तमजीद करते रहे।

यूहन्ना

ज़िंदगी का कलाम

1 इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ था और कलाम अल्लाह था। 2 यही इब्तिदा में अल्लाह के
साथ था। 3 सब कुछ कलाम के वसीले से पैदा हुआ। मख़लूक़ात की एक भी चीज़ उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई। 4 उसमें
ज़िंदगी थी, और यह ज़िंदगी इनसानों का नूर थी। 5 यह नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उस पर क़ाबू न
पाया।

6 एक दिन अल्लाह ने अपना पैग़ंबर भेज दिया, एक आदमी जिसका नाम यहया था। 7 वह नूर की गवाही देने के
लिए आया। मक़सद यह था कि लोग उस की गवाही की बिना पर ईमान लाएँ। 8 वह ख़ुद तो नूर न था बल्कि उसे सिर्फ़
नूर की गवाही देनी थी। 9 हक़ीक़ी नूर जो हर शख़्स को रौशन करता है दुनिया में आने को था।

10 गो कलाम दुनिया में था और दुनिया उसके वसीले से पैदा हुई तो भी दुनिया ने उसे न पहचाना। 11 वह उसमें
आया जो उसका अपना था, लेकिन उसके अपनों ने उसे क़बूल न किया। 12 तो भी कुछ उसे क़बूल करके उसके नाम
पर ईमान लाए। उन्हें उसने अल्लाह के फ़रज़ंद बनने का हक़ बख़्श दिया, 13 ऐसे फ़रज़ंद जो न फ़ितरी तौर पर, न
किसी इनसान के मनसूबे के तहत पैदा हुए बल्कि अल्लाह से।

14 कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइशपज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का मुशाहदा किया। वह
फ़ज़्ल और सच्चाई से मामूर था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़ंद का-सा था।

15 यहया उसके बारे में गवाही देकर पुकार उठा, "यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, एक मेरे बाद आनेवाला है
जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।"

16 उस की कसरत से हम सबने फ़ज़्ल पर फ़ज़्ल पाया। 17 क्योंकि शरीअत मूसा की मारिफ़त दी गई, लेकिन
अल्लाह का फ़ज़्ल और सच्चाई ईसा मसीह के वसीले से क़ायम हुई। 18 किसी ने कभी भी अल्लाह को नहीं देखा।
लेकिन इकलौता फ़रज़ंद जो अल्लाह की गोद में है उसी ने अल्लाह को हम पर ज़ाहिर किया है।

यहया बपतिस्मा देनेवाले का पैग़ाम

19 यह यहया की गवाही है जब यरूशलम के यहूदियों ने इमामों और लावियों को उसके पास भेजकर पूछा, "आप
कौन हैं?"

20 उसने इनकार न किया बल्कि साफ़ तसलीम किया, "मैं मसीह नहीं हूँ।"

21 उन्होंने पूछा, "तो फिर आप कौन हैं? क्या आप इलियास हैं?"

उसने जवाब दिया, "नहीं, मैं वह नहीं हूँ।"

उन्होंने सवाल किया, "क्या आप आनेवाला नबी हैं?"

उसने कहा, "नहीं।"

22 "तो फिर हमें बताएँ कि आप कौन हैं? जिन्होंने हमें भेजा है उन्हें हमें कोई न कोई जवाब देना है। आप ख़ुद
अपने बारे में क्या कहते हैं?"

23 यहया ने यसायाह नबी का हवाला देकर जवाब दिया, "मैं रेगिस्तान में वह आवाज़ हूँ जो पुकार रही है, रब का
रास्ता सीधा बनाओ।"

24 भेजे गए लोग फ़रीसी फ़िरक़े से ताल्लुक़ रखते थे। 25 उन्होंने पूछा, "अगर आप न मसीह हैं, न इलियास या
आनेवाला नबी तो फिर आप बपतिस्मा क्यों दे रहे हैं?"

26 यहया ने जवाब दिया, "मैं तो पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन तुम्हारे दरमियान ही एक खड़ा है जिसको तुम
नहीं जानते। 27 वही मेरे बाद आनेवाला है और मैं उसके जूतों के तसमे भी खोलने के लायक़ नहीं।"

28 यह यरदन के पार बैत-अनियाह में हुआ जहाँ यहया बपतिस्मा दे रहा था।

अल्लाह का लेला

29 अगले दिन यहया ने ईसा को अपने पास आते देखा। उसने कहा, "देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का
गुनाह उठा ले जाता है। 30 यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, 'एक मेरे बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि
वह मुझसे पहले था।' 31 मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन मैं इसलिए आकर पानी से बपतिस्मा देने लगा ताकि वह
इसराईल पर ज़ाहिर हो जाए।"

32 और यहया ने यह गवाही दी, "मैंने देखा कि रूहुल-क़ुद्स कबूतर की तरह आसमान पर से उतरकर उस पर ठहर
गया। 33 मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए भेजा तो उसने मुझे बताया, 'तू
देखेगा कि रूहुल-क़ुद्स उतरकर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही होगा जो रूहुल-क़ुद्स से बपतिस्मा देगा।' 34 अब
मैंने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़रज़ंद है।"

ईसा के पहले शागिर्द

35 अगले दिन यहया दुबारा वहीं खड़ा था। उसके दो शागिर्द साथ थे। 36 उसने ईसा को वहाँ से गुज़रते हुए देखा
तो कहा, "देखो, यह अल्लाह का लेला है!"
37 उस की यह बात सुनकर उसके दो शागिर्द ईसा के पीछे हो लिए। 38 ईसा ने मुड़कर देखा कि यह मेरे पीछे चल
रहे हैं तो उसने पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"
उन्होंने कहा, "उस्ताद, आप कहाँ ठहरे हुए हैं?"
39 उसने जवाब दिया, "आओ, ख़ुद देख लो।" चुनाँचे वह उसके साथ गए। उन्होंने वह जगह देखी जहाँ वह ठहरा
हुआ था और दिन के बाक़ी वक़्त उसके पास रहे। शाम के तक़रीबन चार बज गए थे।
40 शमौन पतरस का भाई अंदरियास उन दो शागिर्दों में से एक था जो यहया की बात सुनकर ईसा के पीछे हो लिए
थे। 41 अब उस की पहली मुलाक़ात उसके अपने भाई शमौन से हुई। उसने उसे बताया, "हमें मसीह मिल गया है।"
(मसीह का मतलब 'मसह किया हुआ शख़्स' है।) 42 फिर वह उसे ईसा के पास ले गया।
उसे देखकर ईसा ने कहा, "तू यूहन्ना का बेटा शमौन है। तू कैफ़ा कहलाएगा।" (इसका यूनानी तरजुमा पतरस यानी
पत्थर है।)

ईसा फ़िलिप्पुस और नतनेल को बुलाता है

43 अगले दिन ईसा ने गलील जाने का इरादा किया। फ़िलिप्पुस से मिला तो उससे कहा, "मेरे पीछे हो ले।"
44 अंदरियास और पतरस की तरह फ़िलिप्पुस का वतनी शहर बैत-सैदा था। 45 फ़िलिप्पुस नतनेल से मिला, और उसने
उससे कहा, "हमें वही शख़्स मिल गया जिसका ज़िक्र मूसा ने तौरेत और नबियों ने अपने सहीफ़ों में किया है। उसका
नाम ईसा बिन यूसुफ़ है और वह नासरत का रहनेवाला है।"
46 नतनेल ने कहा, "नासरत? क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है?"
फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, "आ और ख़ुद देख ले।"
47 जब ईसा ने नतनेल को आते देखा तो उसने कहा, "लो, यह सच्चा इसराईली है जिसमें मकर नहीं।"
48 नतनेल ने पूछा, "आप मुझे कहाँ से जानते हैं?"
ईसा ने जवाब दिया, "इससे पहले कि फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया मैंने तुझे देखा। तू अंजीर के दरख़्त के साये में था।"
49 नतनेल ने कहा, "उस्ताद, आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, आप इसराईल के बादशाह हैं।"
50 ईसा ने उससे पूछा, "अच्छा, मेरी यह बात सुनकर कि मैंने तुझे अंजीर के दरख़्त के साये में देखा तू ईमान लाया
है? तू इससे कहीं बड़ी बातें देखेगा।" 51 उसने बात जारी रखी, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम आसमान को खुला
और अल्लाह के फ़रिश्तों को ऊपर चढ़ते और इब्ने-आदम पर उतरते देखोगे।"

2

क़ाना में शादी

1 तीसरे दिन गलील के गाँव क़ाना में एक शादी हुई। ईसा की माँ वहाँ थी 2 और ईसा और उसके शागिर्दों को भी
दावत दी गई थी। 3 मै ख़त्म हो गई तो ईसा की माँ ने उससे कहा, "उनके पास मै नहीं रही।"
4 ईसा ने जवाब दिया, "ऐ ख़ातून, मेरा आपसे क्या वास्ता? मेरा वक़्त अभी नहीं आया।"
5 लेकिन उस की माँ ने नौकरों को बताया, "जो कुछ वह तुमको बताए वह करो।" 6 वहाँ पत्थर के छः मटके
पड़े थे जिन्हें यहूदी दीनी ग़ुस्ल के लिए इस्तेमाल करते थे। हर एक में तक़रीबन 100 लिटर की गुंजाइश थी। 7 ईसा
ने नौकरों से कहा, "मटकों को पानी से भर दो।" चुनाँचे उन्होंने उन्हें लबालब भर दिया। 8 फिर उसने कहा, "अब
कुछ निकालकर ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाओ।" उन्होंने ऐसा ही किया। 9 ज्योंही ज़ियाफ़त का
इंतज़ाम चलानेवाले ने वह पानी चखा जो मै में बदल गया था तो उसने दूल्हे को बुलाया। (उसे मालूम न था कि यह कहाँ
से आई है, अगरचे उन नौकरों को पता था जो उसे निकालकर लाए थे।) 10 उसने कहा, "हर मेज़बान पहले अच्छी
क़िस्म की मै पीने के लिए पेश करता है। फिर जब लोगों को नशा चढ़ने लगे तो वह निसबतन घटिया क़िस्म की मै
पिलाने लगता है। लेकिन आपने अच्छी मै अब तक रख छोड़ी है।"

11 यों ईसा ने गलील के क़ाना में यह पहला इलाही निशान दिखाकर अपने जलाल का इज़हार किया। यह देखकर
उसके शागिर्द उस पर ईमान लाए।
12 इसके बाद वह अपनी माँ, अपने भाइयों और अपने शागिर्दों के साथ कफ़र्नहूम को चला गया। वहाँ वह थोड़े
दिन रहे।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

13 जब यहूदी ईदे-फ़सह क़रीब आ गई तो ईसा यरूशलम चला गया। 14 बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उसने देखा कि कई
लोग उसमें गाय-बैल, भेड़ें और कबूतर बेच रहे हैं। दूसरे मेज़ पर बैठे ग़ैरमुल्की सिक्के बैतुल-मुक़द्दस के सिक्कों में बदल
रहे हैं। 15 फिर ईसा ने रस्सियों का कोड़ा बनाकर सबको बैतुल-मुक़द्दस से निकाल दिया। उसने भेड़ों और गाय-बैलों
को बाहर हाँक दिया, पैसे बदलनेवालों के सिक्के बिखेर दिए और उनकी मेज़ें उलट दीं। 16 कबूतर बेचनेवालों को
उसने कहा, "इसे ले जाओ। मेरे बाप के घर को मंडी में मत बदलो।" 17 यह देखकर ईसा के शागिर्दों को कलामे-मुक़द्दस
का यह हवाला याद आया कि "तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा जाएगी।"
18 यहूदियों ने जवाब में पूछा, "आप हमें क्या इलाही निशान दिखा सकते हैं ताकि हमें यक़ीन आए कि आपको
यह करने का इख़्तियार है?"
19 ईसा ने जवाब दिया, "इस मक़दिस को ढा दो तो मैं इसे तीन दिन के अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा।"
20 यहूदियों ने कहा, "बैतुल-मुक़द्दस को तामीर करने में 46 साल लग गए थे और आप उसे तीन दिन में तामीर
करना चाहते हैं?"
21 लेकिन जब ईसा ने "इस मक़दिस" के अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए तो इसका मतलब उसका अपना बदन था।
22 उसके मुरदों में से जी उठने के बाद उसके शागिर्दों को उस की यह बात याद आई। फिर वह कलामे-मुक़द्दस और
उन बातों पर ईमान लाए जो ईसा ने की थीं।

ईसा इनसानी फ़ितरत से वाक़िफ़ है

23 जब ईसा फ़सह की ईद के लिए यरूशलम में था तो बहुत-से लोग उसके पेशकरदा इलाही निशानों को देखकर
उसके नाम पर ईमान लाने लगे। 24 लेकिन उसको उन पर एतमाद नहीं था, क्योंकि वह सबको जानता था। 25 और
उसे इनसान के बारे में किसी की गवाही की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि इनसान के अंदर क्या कुछ है।

3

नीकुदेमुस के साथ मुलाक़ात

1 फ़रीसी फ़िरक़े का एक आदमी बनाम नीकुदेमुस था जो यहूदी अदालते-आलिया का रुकन था। 2 वह रात के वक़्त
ईसा के पास आया और कहा, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप ऐसे उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं, क्योंकि
जो इलाही निशान आप दिखाते हैं वह सिर्फ़ ऐसा शख़्स ही दिखा सकता है जिसके साथ अल्लाह हो।"
3 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही को देख सकता है जो नए सिरे
से पैदा हुआ हो।"
4 नीकुदेमुस ने एतराज़ किया, "क्या मतलब? बूढ़ा आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता है? क्या वह दुबारा
अपनी माँ के पेट में जाकर पैदा हो सकता है?"
5 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकता है जो
पानी और रूह से पैदा हुआ हो। 6 जो कुछ जिस्म से पैदा होता है वह जिस्मानी है, लेकिन जो रूह से पैदा होता है वह
रूहानी है। 7 इसलिए तू ताज्जुब न कर कि मैं कहता हूँ, 'तुम्हें नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है।' 8 हवा जहाँ चाहे चलती
है। तू उस की आवाज़ तो सुनता है, लेकिन यह नहीं जानता कि कहाँ से आती और कहाँ को जाती है। यही हालत हर
उस शख़्स की है जो रूह से पैदा हुआ है।"
9 नीकुदेमुस ने पूछा, "यह किस तरह हो सकता है?"
10 ईसा ने जवाब दिया, "तू तो इसराईल का उस्ताद है। क्या इसके बावुजूद भी यह बातें नहीं समझता? 11 मैं
तुझको सच बताता हूँ, हम वह कुछ बयान करते हैं जो हम जानते हैं और उस की गवाही देते हैं जो हमने ख़ुद देखा है।
तो भी तुम लोग हमारी गवाही क़बूल नहीं करते। 12 मैंने तुमको दुनियावी बातें सुनाई हैं और तुम उन पर ईमान नहीं
रखते। तो फिर तुम क्योंकर ईमान लाओगे अगर तुम्हें आसमानी बातों के बारे में बताऊँ? 13 आसमान पर कोई नहीं
चढ़ा सिवाए इब्ने-आदम के, जो आसमान से उतरा है।

14 और जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को लकड़ी पर लटकाकर ऊँचा कर दिया उसी तरह ज़रूर है कि
इब्ने-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए, 15 ताकि हर एक को जो उस पर ईमान लाएगा अबदी ज़िंदगी मिल जाए।
16 क्योंकि अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी
उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। 17 क्योंकि अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को इसलिए दुनिया
में नहीं भेजा कि वह दुनिया को मुजरिम ठहराए बल्कि इसलिए कि वह उसे नजात दे।

18 जो भी उस पर ईमान लाया है उसे मुजरिम नहीं क़रार दिया जाएगा, लेकिन जो ईमान नहीं रखता उसे मुजरिम
ठहराया जा चुका है। वजह यह है कि वह अल्लाह के इकलौते फ़रज़ंद के नाम पर ईमान नहीं लाया। 19 और लोगों
को मुजरिम ठहराने का सबब यह है कि गो अल्लाह का नूर इस दुनिया में आया, लेकिन लोगों ने नूर की निसबत अंधेरे
को ज़्यादा प्यार किया, क्योंकि उनके काम बुरे थे। 20 जो भी ग़लत काम करता है वह नूर से दुश्मनी रखता है और
उसके क़रीब नहीं आता ताकि उसके बुरे कामों का पोल न खुल जाए। 21 लेकिन जो सच्चा काम करता है वह नूर के
पास आता है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि उसके काम अल्लाह के वसीले से हुए हैं।"

ईसा और यहया

22 इसके बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ यहूदिया के इलाक़े में गया। वहाँ वह कुछ देर के लिए उनके साथ ठहरा
और लोगों को बपतिस्मा देने लगा। 23 उस वक़्त यहया भी शालेम के क़रीब वाक़े मक़ाम ऐनोन में बपतिस्मा दे रहा
था, क्योंकि वहाँ पानी बहुत था। उस जगह पर लोग बपतिस्मा लेने के लिए आते रहे। 24 (यहया को अब तक जेल में
नहीं डाला गया था।)

25 एक दिन यहया के शागिर्दों का किसी यहूदी के साथ मुबाहसा छिड़ गया। ज़ेरे-ग़ौर मज़मून दीनी ग़ुस्ल था।
26 वह यहया के पास आए और कहने लगे, "उस्ताद, जिस आदमी से आपकी दरियाए-यरदन के पार मुलाक़ात हुई
और जिसके बारे में आपने गवाही दी कि वह मसीह है, वह भी लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। अब सब लोग उसी के
पास जा रहे हैं।"

27 यहया ने जवाब दिया, "हर एक को सिर्फ़ वह कुछ मिलता है जो उसे आसमान से दिया जाता है। 28 तुम ख़ुद
इसके गवाह हो कि मैंने कहा, 'मैं मसीह नहीं हूँ बल्कि मुझे उसके आगे आगे भेजा गया है।' 29 दूल्हा ही दुलहन से
शादी करता है, और दुलहन उसी की है। उसका दोस्त सिर्फ़ साथ खड़ा होता है। और दूल्हे की आवाज़ सुन सुनकर
दोस्त की ख़ुशी की इंतहा नहीं होती। मैं भी ऐसा ही दोस्त हूँ जिसकी ख़ुशी पूरी हो गई है। 30 लाज़िम है कि वह बढ़ता
जाए जबकि मैं घटता जाऊँ।

आसमान से आनेवाला

31 जो आसमान पर से आया है उसका इख़्तियार सब पर है। जो दुनिया से है उसका ताल्लुक़ दुनिया से ही है और
वह दुनियावी बातें करता है। लेकिन जो आसमान पर से आया है उसका इख़्तियार सब पर है। 32 जो कुछ उसने ख़ुद
देखा और सुना है उसी की गवाही देता है। तो भी कोई उस की गवाही को क़बूल नहीं करता। 33 लेकिन जिसने उसे
क़बूल किया उसने इसकी तसदीक़ की है कि अल्लाह सच्चा है। 34 जिसे अल्लाह ने भेजा है वह अल्लाह की बातें
सुनाता है, क्योंकि अल्लाह अपना रूह नाप-तोलकर नहीं देता। 35 बाप अपने फ़रज़ंद को प्यार करता है, और उसने
सब कुछ उसके सुपुर्द कर दिया है। 36 चुनाँचे जो अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान लाता है अबदी ज़िंदगी उस की है।
लेकिन जो फ़रज़ंद को रद्द करे वह इस ज़िंदगी को नहीं देखेगा बल्कि अल्लाह का ग़ज़ब उस पर ठहरा रहेगा।"

4

ईसा और सामरी औरत

1 फ़रीसियों को इत्तला मिली कि ईसा यहया की निसबत ज़्यादा शागिर्द बना रहा और लोगों को बपतिस्मा दे रहा
है, 2 हालाँकि वह ख़ुद बपतिस्मा नहीं देता था बल्कि उसके शागिर्द। 3 जब ख़ुदावंद ईसा को यह बात मालूम हुई तो
वह यहूदिया को छोड़कर गलील को वापस चला गया। 4 वहाँ पहुँचने के लिए उसे सामरिया में से गुज़रना था।

5 चलते चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया जिसका नाम सूख़ार था। यह उस ज़मीन के क़रीब था जो याक़ूब ने
अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी। 6 वहाँ याक़ूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक गया था, इसलिए वह कुएँ पर बैठ गया।
दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे।

7 एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, "मुझे ज़रा पानी पिला।" 8 (उसके शागिर्द खाना ख़रीदने
के लिए शहर गए हुए थे।)

9 सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक़ रखने से इनकार करते हैं। उसने कहा,
“आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी पिलाने की दरख़ास्त कर सकते हैं?”

10 ईसा ने जवाब दिया, “अगर तू उस बख़्शिश से वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता है और तू उसे
जानती जो तुझसे पानी माँग रहा है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का पानी देता।”

11 ख़ातून ने कहा, “ख़ुदावंद, आपके पास तो बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको ज़िंदगी का यह पानी
कहाँ से मिला? 12 क्या आप हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिसने हमें यह कुआँ दिया और जो ख़ुद भी अपने बेटों और
रेवड़ों समेत उसके पानी से लुत्फ़अंदोज़ हुआ?”

13 ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। 14 लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे
बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर
अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।”

15 औरत ने उससे कहा, “ख़ुदावंद, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार
यहाँ आकर पानी भरना नहीं पड़ेगा।”

16 ईसा ने कहा, “जा, अपने ख़ाविंद को बुला ला।”

17 औरत ने जवाब दिया, “मेरा कोई ख़ाविंद नहीं है।”

ईसा ने कहा, “तूने सहीह कहा कि मेरा ख़ाविंद नहीं है, 18 क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस
आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।”

19 औरत ने कहा, “ख़ुदावंद, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं। 20 हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे
जबकि आप यहूदी लोग इसरार करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।”

21 ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, यक़ीन जान कि वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत
करोगे, न यरूशलम में। 22 तुम सामरी उस की परस्तिश करते हो जिसे नहीं जानते। इसके मुक़ाबले में हम उस की
परस्तिश करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि नजात यहूदियों में से है। 23 लेकिन वह वक़्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है
जब हक़ीक़ी परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे, क्योंकि बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। 24 अल्लाह
रूह है, इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और सच्चाई से उस की परस्तिश करें।”

25 औरत ने उससे कहा, “मुझे मालूम है कि मसीह यानी मसह किया हुआ शख़्स आ रहा है। जब वह आएगा तो
हमें सब कुछ बता देगा।”

26 इस पर ईसा ने उसे बताया, “मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”

27 उसी लमहे शागिर्द पहुँच गए। उन्होंने जब देखा कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो ताज्जुब किया। लेकिन
किसी ने पूछने की जुर्रत न की कि “आप क्या चाहते हैं?” या “आप इस औरत से क्यों बातें कर रहे हैं?”

28 औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली गई और वहाँ लोगों से कहने लगी, 29 “आओ, एक आदमी को देखो
जिसने मुझे सब कुछ बता दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?” 30 चुनाँचे वह शहर से निकलकर ईसा के
पास आए।

31 इतने में शागिर्द ज़ोर देकर ईसा से कहने लगे, “उस्ताद, कुछ खाना खा लें।”

32 लेकिन उसने जवाब दिया, “मेरे पास खाने की ऐसी चीज़ है जिससे तुम वाक़िफ़ नहीं हो।”

33 शागिर्द आपस में कहने लगे, “क्या कोई उसके पास खाना लेकर आया?”

34 लेकिन ईसा ने उनसे कहा, “मेरा खाना यह है कि उस की मरज़ी पूरी करूँ जिसने मुझे भेजा है और उसका काम
तकमील तक पहुँचाऊँ। 35 तुम तो ख़ुद कहते हो, ‘मज़ीद चार महीने तक फ़सल पक जाएगी।’ लेकिन मैं तुमको बताता
हूँ, अपनी नज़र उठाकर खेतों पर ग़ौर करो। फ़सल पक गई है और कटाई के लिए तैयार है। 36 फ़सल की कटाई शुरू
हो चुकी है। कटाई करनेवाले को मज़दूरी मिल रही है और वह फ़सल को अबदी ज़िंदगी के लिए जमा कर रहा है ताकि
बीज बोनेवाला और कटाई करनेवाला दोनों मिलकर ख़ुशी मना सकें। 37 यों यह कहावत दुरुस्त साबित हो जाती है कि
‘एक बीज बोता और दूसरा फ़सल काटता है।’ 38 मैंने तुमको उस फ़सल की कटाई करने के लिए भेज दिया है जिसे
तैयार करने के लिए तुमने मेहनत नहीं की। औरों ने ख़ूब मेहनत की है और तुम इससे फ़ायदा उठाकर फ़सल जमा कर
सकते हो।”

39 उस शहर के बहुत-से सामरी ईसा पर ईमान लाए। वजह यह थी कि उस औरत ने उसके बारे में यह गवाही दी
थी, “उसने मुझे सब कुछ बता दिया जो मैंने किया है।” 40 जब वह उसके पास आए तो उन्होंने मिन्नत की, “हमारे
पास ठहरें।” चुनाँचे वह दो दिन वहाँ रहा।

41 और उस की बातें सुनकर मज़ीद बहुत-से लोग ईमान लाए। 42 उन्होंने औरत से कहा, "अब हम तेरी बातों की
बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इसलिए कि हमने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही
है।"

अफ़सर के बेटे की शफ़ा

43 वहाँ दो दिन गुज़ारने के बाद ईसा गलील को चला गया। 44 उसने ख़ुद गवाही देकर कहा था कि नबी की उसके
अपने वतन में इज़्ज़त नहीं होती। 45 अब जब वह गलील पहुँचा तो मक़ामी लोगों ने उसे ख़ुशआमदीद कहा, क्योंकि
वह फ़सह की ईद मनाने के लिए यरूशलम आए थे और उन्होंने सब कुछ देखा जो ईसा ने वहाँ किया था।
46 फिर वह दुबारा क़ाना में आया जहाँ उसने पानी को मै में बदल दिया था। उस इलाक़े में एक शाही अफ़सर था
जिसका बेटा कफ़र्नहूम में बीमार पड़ा था। 47 जब उसे इत्तला मिली कि ईसा यहूदिया से गलील पहुँच गया है तो वह
उसके पास गया और गुज़ारिश की, "क़ाना से मेरे पास आकर मेरे बेटे को शफ़ा दें, क्योंकि वह मरने को है।" 48 ईसा
ने उससे कहा, "जब तक तुम लोग इलाही निशान और मोजिज़े नहीं देखते ईमान नहीं लाते।"
49 शाही अफ़सर ने कहा, "ख़ुदावंद आएँ, इससे पहले कि मेरा लड़का मर जाए।"
50 ईसा ने जवाब दिया, "जा, तेरा बेटा ज़िंदा रहेगा।"
आदमी ईसा की बात पर ईमान लाया और अपने घर चला गया। 51 वह अभी रास्ते में था कि उसके नौकर उससे
मिले। उन्होंने उसे इत्तला दी कि बेटा ज़िंदा है।
52 उसने उनसे पूछ-गछ की कि उस की तबियत किस वक़्त से बेहतर होने लगी थी। उन्होंने जवाब दिया, "बुख़ार
कल दोपहर एक बजे उतर गया।" 53 फिर बाप ने जान लिया कि उसी वक़्त ईसा ने उसे बताया था, "तुम्हारा बेटा ज़िंदा
रहेगा।" और वह अपने पूरे घराने समेत उस पर ईमान लाया।
54 यों ईसा ने अपना दूसरा इलाही निशान उस वक़्त दिखाया जब वह यहूदिया से गलील में आया था।

5

बैतुल-मुक़द्दस के हौज़ पर शफ़ा

1 कुछ देर के बाद ईसा किसी यहूदी ईद के मौक़े पर यरूशलम गया। 2 शहर में एक हौज़ था जिसका नाम अरामी
ज़बान में बैत-हसदा था। उसके पाँच बड़े बरामदे थे और वह शहर के उस दरवाज़े के क़रीब था जिसका नाम 'भेड़ों
का दरवाज़ा' है। 3 इन बरामदों में बेशुमार माज़ूर लोग पड़े रहते थे। यह अंधे, लँगड़े और मफ़लूज पानी के हिलने के
इंतज़ार में रहते थे। 4 [क्योंकि गाहे बगाहे रब का फ़रिश्ता उतरकर पानी को हिला देता था। जो भी उस वक़्त उसमें
पहले दाख़िल हो जाता उसे शफ़ा मिल जाती थी ख़ाह उस की बीमारी कोई भी क्यों न होती।] 5 मरीज़ों में से एक
आदमी 38 साल से माज़ूर था। 6 जब ईसा ने उसे वहाँ पड़ा देखा और उसे मालूम हुआ कि यह इतनी देर से इस हालत
में है तो उसने पूछा, "क्या तू तनदुरुस्त होना चाहता है?"
7 उसने जवाब दिया, "ख़ुदावंद, यह मुश्किल है। मेरा कोई साथी नहीं जो मुझे उठाकर पानी में जब उसे हिलाया
जाता है ले जाए। इसलिए मेरे वहाँ पहुँचने में इतनी देर लग जाती है कि कोई और मुझसे पहले पानी में उतर जाता है।"
8 ईसा ने कहा, "उठ, अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर!" 9 वह आदमी फ़ौरन बहाल हो गया। उसने अपना बिस्तर
उठाया और चलने-फिरने लगा।
यह वाक़िया सबत के दिन हुआ। 10 इसलिए यहूदियों ने शफ़ायाब आदमी को बताया, "आज सबत का दिन है।
आज बिस्तर उठाना मना है।"
11 लेकिन उसने जवाब दिया, "जिस आदमी ने मुझे शफ़ा दी उसने मुझे बताया, 'अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर'।"
12 उन्होंने सवाल किया, "वह कौन है जिसने तुझे यह कुछ बताया?" 13 लेकिन शफ़ायाब आदमी को मालूम न
था, क्योंकि ईसा हुजूम के सबब से चुपके से वहाँ से चला गया था।
14 बाद में ईसा उसे बैतुल-मुक़द्दस में मिला। उसने कहा, "अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो
कि तेरा हाल पहले से भी बदतर हो जाए।"
15 उस आदमी ने उसे छोड़कर यहूदियों को इत्तला दी, "ईसा ने मुझे शफ़ा दी।" 16 इस पर यहूदी उसको सताने
लगे, क्योंकि उसने उस आदमी को सबत के दिन बहाल किया था। 17 लेकिन ईसा ने उन्हें जवाब दिया, "मेरा बाप
आज तक काम करता आया है, और मैं भी ऐसा करता हूँ।"
18 यह सुनकर यहूदी उसे क़त्ल करने की मज़ीद कोशिश करने लगे, क्योंकि उसने न सिर्फ़ सबत के दिन को मनसूख़
क़रार दिया था बल्कि अल्लाह को अपना बाप कहकर अपने आपको अल्लाह के बराबर ठहराया था।

फ़रज़ंद का इख़्तियार

19 ईसा ने उन्हें जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि फ़रज़ंद अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता। वह सिर्फ़
वह कुछ करता है जो वह बाप को करते देखता है। जो कुछ बाप करता है वही फ़रज़ंद भी करता है, 20 क्योंकि बाप
फ़रज़ंद को प्यार करता और उसे सब कुछ दिखाता है जो वह ख़ुद करता है। हाँ, वह फ़रज़ंद को इनसे भी अज़ीम काम
दिखाएगा। फिर तुम और भी ज़्यादा हैरतज़दा होगे। 21 क्योंकि जिस तरह बाप मुरदों को ज़िंदा करता है उसी तरह
फ़रज़ंद भी जिन्हें चाहता है ज़िंदा कर देता है। 22 और बाप किसी की भी अदालत नहीं करता बल्कि उसने अदालत
का पूरा इंतज़ाम फ़रज़ंद के सुपुर्द कर दिया है 23 ताकि सब उसी तरह फ़रज़ंद की इज़्ज़त करें जिस तरह वह बाप की
इज़्ज़त करते हैं। जो फ़रज़ंद की इज़्ज़त नहीं करता वह बाप की भी इज़्ज़त नहीं करता जिसने उसे भेजा है।
24 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी मेरी बात सुनकर उस पर ईमान लाता है जिसने मुझे भेजा है अबदी ज़िंदगी उस की
है। उसे मुजरिम नहीं ठहराया जाएगा बल्कि वह मौत की गिरिफ़्त से निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गया है। 25 मैं
तुमको सच बताता हूँ कि एक वक़्त आनेवाला है बल्कि आ चुका है जब मुरदे अल्लाह के फ़रज़ंद की आवाज़ सुनेंगे।
और जितने सुनेंगे वह ज़िंदा हो जाएंगे। 26 क्योंकि जिस तरह बाप ज़िंदगी का मंबा है उसी तरह उसने अपने फ़रज़ंद
को ज़िंदगी का मंबा बना दिया है। 27 साथ साथ उसने उसे अदालत करने का इख़्तियार भी दे दिया है, क्योंकि वह
इब्ने-आदम है। 28 यह सुनकर ताज्जुब न करो क्योंकि एक वक़्त आ रहा है जब तमाम मुरदे उस की आवाज़ सुनकर
29 क़ब्रों में से निकल आएँगे। जिन्होंने नेक काम किया वह जी उठकर ज़िंदगी पाएँगे जबकि जिन्होंने बुरा काम किया
वह जी तो उठेंगे लेकिन उनकी अदालत की जाएगी।

ईसा के गवाह

30 मैं अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता बल्कि जो कुछ बाप से सुनता हूँ उसके मुताबिक़ अदालत करता हूँ।
और मेरी अदालत रास्त है क्योंकि मैं अपनी मरज़ी करने की कोशिश नहीं करता बल्कि उसी की जिसने मुझे भेजा है।
31 अगर मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता तो मेरी गवाही मोतबर न होती। 32 लेकिन एक और है जो मेरे बारे में
गवाही दे रहा है और मैं जानता हूँ कि मेरे बारे में उस की गवाही सच्ची और मोतबर है। 33 तुमने पता करने के लिए
अपने लोगों को यहया के पास भेजा है और उसने हक़ीक़त की तसदीक़ की है। 34 बेशक मुझे किसी इनसानी गवाह
की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं यह इसलिए बता रहा हूँ ताकि तुमको नजात मिल जाए। 35 यहया एक जलता हुआ चराग़
था जो रौशनी देता था, और कुछ देर के लिए तुमने उस की रौशनी में ख़ुशी मनाना पसंद किया। 36 लेकिन मेरे पास एक
और गवाह है जो यहया की निसबत ज़्यादा अहम है यानी वह काम जो बाप ने मुझे मुकम्मल करने के लिए दे दिया।
यही काम जो मैं कर रहा हूँ मेरे बारे में गवाही देता है कि बाप ने मुझे भेजा है। 37 इसके अलावा बाप ने ख़ुद जिसने
मुझे भेजा है मेरे बारे में गवाही दी है। अफ़सोस, तुमने कभी उस की आवाज़ नहीं सुनी, न उस की शक्लो-सूरत देखी,
38 और उसका कलाम तुम्हारे अंदर नहीं रहता, क्योंकि तुम उस पर ईमान नहीं रखते जिसे उसने भेजा है। 39 तुम
अपने सहीफ़ों में ढूँडते रहते हो क्योंकि समझते हो कि उनसे तुम्हें अबदी ज़िंदगी हासिल है। लेकिन यही मेरे बारे में
गवाही देते हैं! 40 तो भी तुम ज़िंदगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते।
41 मैं इनसानों से इज़्ज़त नहीं चाहता, 42 लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुममें अल्लाह की मुहब्बत नहीं। 43 अगरचे
मैं अपने बाप के नाम में आया हूँ तो भी तुम मुझे क़बूल नहीं करते। इसके मुक़ाबले में अगर कोई अपने नाम में आएगा
तो तुम उसे क़बूल करोगे। 44 कोई अजब नहीं कि तुम ईमान नहीं ला सकते। क्योंकि तुम एक दूसरे से इज़्ज़त चाहते
हो जबकि तुम वह इज़्ज़त पाने की कोशिश ही नहीं करते जो वाहिद ख़ुदा से मिलती है। 45 लेकिन यह न समझो कि मैं
बाप के सामने तुम पर इलज़ाम लगाऊँगा। एक और है जो तुम पर इलज़ाम लगा रहा है यानी मूसा, जिससे तुम उम्मीद
रखते हो। 46 अगर तुम वाक़ई मूसा पर ईमान रखते तो ज़रूर मुझ पर भी ईमान रखते, क्योंकि उसने मेरे ही बारे में
लिखा। 47 लेकिन चूँकि तुम वह कुछ नहीं मानते जो उसने लिखा है तो मेरी बातें क्योंकर मान सकते हो!”

6

ईसा बड़े हुजूम को खाना खिलाता है

1 इसके बाद ईसा ने गलील की झील को पार किया। (झील का दूसरा नाम तिबरियास था।) 2 एक बड़ा हुजूम
उसके पीछे लग गया था, क्योंकि उसने इलाही निशान दिखाकर मरीज़ों को शफ़ा दी थी और लोगों ने इसका मुशाहदा
किया था। 3 फिर ईसा पहाड़ पर चढ़कर अपने शागिर्दों के साथ बैठ गया। 4 (यहूदी ईदे-फ़सह क़रीब आ गई थी।)
5 वहाँ बैठे ईसा ने अपनी नज़र उठाई तो देखा कि एक बड़ा हुजूम पहुँच रहा है। उसने फ़िलिप्पुस से पूछा, “हम कहाँ
से खाना ख़रीदें ताकि उन्हें खिलाएँ?” 6 (यह उसने फ़िलिप्पुस को आज़माने के लिए कहा। ख़ुद तो वह जानता था कि
क्या करेगा।)

7 फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, “अगर हर एक को सिर्फ़ थोड़ा-सा मिले तो भी चाँदी के 200 सिक्के काफ़ी नहीं
होंगे।”
8 फिर शमौन पतरस का भाई अंदरियास बोल उठा, 9 “यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और
दो मछलियाँ हैं। मगर इतने लोगों में यह क्या हैं!”
10 ईसा ने कहा, “लोगों को बिठा दो।” उस जगह बहुत घास थी। चुनाँचे सब बैठ गए। (सिर्फ़ मर्दों की तादाद
5,000 थी।) 11 ईसा ने रोटियाँ लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें बैठे हुए लोगों में तक़सीम करवाया। यही
कुछ उसने मछलियों के साथ भी किया। और सबने जी भरकर रोटी खाई। 12 जब सब सेर हो गए तो ईसा ने शागिर्दों
को बताया, “अब बचे हुए टुकड़े जमा करो ताकि कुछ ज़ाया न हो जाए।” 13 जब उन्होंने बचा हुआ खाना इकट्ठा
किया तो जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से बारह टोकरे भर गए।
14 जब लोगों ने ईसा को यह इलाही निशान दिखाते देखा तो उन्होंने कहा, “यक़ीनन यह वही नबी है जिसे दुनिया
में आना था।” 15 ईसा को मालूम हुआ कि वह आकर उसे ज़बरदस्ती बादशाह बनाना चाहते हैं, इसलिए वह दुबारा
उनसे अलग होकर अकेला ही किसी पहाड़ पर चढ़ गया।

ईसा पानी पर चलता है

16 शाम को शागिर्द झील के पास गए 17 और कश्ती पर सवार होकर झील के पार शहर कफ़र्नहूम के लिए रवाना
हुए। अंधेरा हो चुका था और ईसा अब तक उनके पास वापस नहीं आया था। 18 तेज़ हवा के बाइस झील में लहरें
उठने लगीं। 19 कश्ती को खेते खेते शागिर्द चार या पाँच किलोमीटर का सफ़र तय कर चुके थे कि अचानक ईसा नज़र
आया। वह पानी पर चलता हुआ कश्ती की तरफ़ बढ़ रहा था। शागिर्द दहशतज़दा हो गए। 20 लेकिन उसने उनसे कहा,
“मैं ही हूँ। ख़ौफ़ न करो।” 21 वह उसे कश्ती में बिठाने पर आमादा हुए। और कश्ती उसी लमहे उस जगह पहुँच गई
जहाँ वह जाना चाहते थे।

लोग ईसा को ढूँडते हैं

22 हुजूम तो झील के पार रह गया था। अगले दिन लोगों को पता चला कि शागिर्द एक ही कश्ती लेकर चले गए
हैं और कि उस वक़्त ईसा कश्ती में नहीं था। 23 फिर कुछ कश्तियाँ तिबरियास से उस मक़ाम के क़रीब पहुँचीं जहाँ
ख़ुदावंद ईसा ने रोटी के लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ करके उसे लोगों को खिलाया था। 24 जब लोगों ने देखा कि न ईसा
और न उसके शागिर्द वहाँ हैं तो वह कश्तियों पर सवार होकर ईसा को ढूँडते ढूँडते कफ़र्नहूम पहुँचे।

ईसा ज़िंदगी की रोटी है

25 जब उन्होंने उसे झील के पार पाया तो पूछा, “उस्ताद, आप किस तरह यहाँ पहुँच गए?”
26 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँड रहे कि इलाही निशान देखे हैं बल्कि
इसलिए कि तुमने जी भरकर रोटी खाई है। 27 ऐसी ख़ुराक के लिए जिद्दो-जहद न करो जो गल-सड़ जाती है, बल्कि
ऐसी के लिए जो अबदी ज़िंदगी तक क़ायम रहती है और जो इब्ने-आदम तुमको देगा, क्योंकि ख़ुदा बाप ने उस पर
अपनी तसदीक़ की मुहर लगाई है।”
28 इस पर उन्होंने पूछा, “हमें क्या करना चाहिए ताकि अल्लाह का मतलूबा काम करें?”
29 ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह का काम यह है कि तुम उस पर ईमान लाओ जिसे उसने भेजा है।”
30 उन्होंने कहा, “तो फिर आप क्या इलाही निशान दिखाएँगे जिसे देखकर हम आप पर ईमान लाएँ? आप क्या
काम सरंजाम देंगे? 31 हमारे बापदादा ने तो रेगिस्तान में मन खाया। चुनाँचे कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि मूसा ने उन्हें
आसमान से रोटी खिलाई।”
32 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि ख़ुद मूसा ने तुमको आसमान से रोटी नहीं खिलाई बल्कि मेरे
बाप ने। वही तुमको आसमान से हक़ीक़ी रोटी देता है। 33 क्योंकि अल्लाह की रोटी वह शख़्स है जो आसमान पर से
उतरकर दुनिया को ज़िंदगी बख़्शता है।”
34 उन्होंने कहा, “ख़ुदावंद, हमें यह रोटी हर वक़्त दिया करें।”
35 जवाब में ईसा ने कहा, “मैं ही ज़िंदगी की रोटी हूँ। जो मेरे पास आए उसे फिर कभी भूक नहीं लगेगी। और जो
मुझ पर ईमान लाए उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी। 36 लेकिन जिस तरह मैं तुमको बता चुका हूँ, तुमने मुझे देखा
और फिर भी ईमान नहीं लाए। 37 जितने भी बाप ने मुझे दिए हैं वह मेरे पास आएँगे और जो भी मेरे पास आएगा उसे मैं
हरगिज़ निकाल न दूँगा। 38 क्योंकि मैं अपनी मरज़ी पूरी करने के लिए आसमान से नहीं उतरा बल्कि उस की जिसने
मुझे भेजा है। 39 और जिसने मुझे भेजा उस की मरज़ी यह है कि जितने भी उसने मुझे दिए हैं उनमें से मैं एक को भी
खो न दूँ बल्कि सबको क़ियामत के दिन मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँ। 40 क्योंकि मेरे बाप की मरज़ी यही है कि जो भी

फ़रज़ंद को देखकर उस पर ईमान लाए उसे अबदी ज़िंदगी हासिल हो। ऐसे शख़्स को मैं क़ियामत के दिन मुरदों में से
फिर ज़िंदा करूँगा।”

41 यह सुनकर यहूदी इसलिए बुडबुड़ाने लगे कि उसने कहा था, “मैं ही वह रोटी हूँ जो आसमान पर से उतर आई
है।” 42 उन्होंने एतराज़ किया, “क्या यह ईसा बिन यूसुफ़ नहीं, जिसके बाप और माँ से हम वाक़िफ़ हैं? वह क्योंकर
कह सकता है कि ‘मैं आसमान से उतरा हूँ’?”

43 ईसा ने जवाब में कहा, “आपस में मत बुड़बुड़ाओ। 44 सिर्फ़ वह शख़्स मेरे पास आ सकता है जिसे बाप जिसने
मुझे भेजा है मेरे पास खींच लाया है। ऐसे शख़्स को मैं क़ियामत के दिन मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँगा। 45 नबियों
के सहीफ़ों में लिखा है, ‘सब अल्लाह से तालीम पाएँगे।’ जो भी अल्लाह की सुनकर उससे सीखता है वह मेरे पास
आ जाता है। 46 इसका मतलब यह नहीं कि किसी ने कभी बाप को देखा। सिर्फ़ एक ही ने बाप को देखा है, वही जो
अल्लाह की तरफ़ से है। 47 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो ईमान रखता है उसे अबदी ज़िंदगी हासिल है। 48 ज़िंदगी की
रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे बापदादा रेगिस्तान में मन खाते रहे, तो भी वह मर गए। 50 लेकिन यहाँ आसमान से उतरनेवाली
ऐसी रोटी है जिसे खाकर इनसान नहीं मरता। 51 मैं ही ज़िंदगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से उतर आई है। जो इस
रोटी से खाए वह अबद तक ज़िंदा रहेगा। और यह रोटी मेरा गोश्त है जो मैं दुनिया को ज़िंदगी मुहैया करने की ख़ातिर
पेश करूँगा।”

52 यहूदी बड़ी सरगरमी से एक दूसरे से बहस करने लगे, “यह आदमी हमें किस तरह अपना गोश्त खिला सकता
है?”

53 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि सिर्फ़ इब्ने-आदम का गोश्त खाने और उसका ख़ून पीने ही से
तुममें ज़िंदगी होगी। 54 जो मेरा गोश्त खाए और मेरा ख़ून पिए अबदी ज़िंदगी उस की है और मैं उसे क़ियामत के दिन
मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँगा। 55 क्योंकि मेरा गोश्त हक़ीक़ी ख़ुराक और मेरा ख़ून हक़ीक़ी पीने की चीज़ है। 56 जो
मेरा गोश्त खाता और मेरा ख़ून पीता है वह मुझमें क़ायम रहता है और मैं उसमें। 57 मैं उस ज़िंदा बाप की वजह से ज़िंदा
हूँ जिसने मुझे भेजा। इसी तरह जो मुझे खाता है वह मेरी ही वजह से ज़िंदा रहेगा। 58 यही वह रोटी है जो आसमान से
उतरी है। तुम्हारे बापदादा मन खाने के बावुजूद मर गए, लेकिन जो यह रोटी खाएगा वह अबद तक ज़िंदा रहेगा।”

59 ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह कफ़र्नहूम में यहूदी इबादतख़ाने में तालीम दे रहा था।

अबदी ज़िंदगी की बातें

60 यह सुनकर उसके बहुत-से शागिर्दों ने कहा, “यह बातें ना-गवार हैं। कौन इन्हें सुन सकता है!”

61 ईसा को मालूम था कि मेरे शागिर्द मेरे बारे में बुड़बुड़ा रहे हैं, इसलिए उसने कहा, “क्या तुमको इन बातों से ठेस
लगी है? 62 तो फिर तुम क्या सोचोगे जब इब्ने-आदम को ऊपर जाते देखोगे जहाँ वह पहले था? 63 अल्लाह का
रूह ही ज़िंदा करता है जबकि जिस्मानी ताक़त का कोई फ़ायदा नहीं होता। जो बातें मैंने तुमको बताई हैं वह रूह और
ज़िंदगी हैं। 64 लेकिन तुममें से कुछ हैं जो ईमान नहीं रखते।” (ईसा तो शुरू से ही जानता था कि कौन कौन ईमान नहीं
रखते और कौन मुझे दुश्मन के हवाले करेगा।) 65 फिर उसने कहा, “इसलिए मैंने तुमको बताया कि सिर्फ़ वह शख़्स
मेरे पास आ सकता है जिसे बाप की तरफ़ से यह तौफ़ीक़ मिले।”

66 उस वक़्त से उसके बहुत-से शागिर्द उलटे पाँव फिर गए और आइंदा को उसके साथ न चले। 67 तब ईसा ने बारह
शागिर्दों से पूछा, “क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?”

68 शमौन पतरस ने जवाब दिया, “ख़ुदावंद, हम किसके पास जाएँ? अबदी ज़िंदगी की बातें तो आप ही के पास हैं।
69 और हमने ईमान लाकर जान लिया है कि आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।”

70 जवाब में ईसा ने कहा, “क्या मैंने तुम बारह को नहीं चुना? तो भी तुममें से एक शख़्स शैतान है।” 71 (वह
शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह की तरफ़ इशारा कर रहा था जो बारह शागिर्दों में से एक था और जिसने बाद में उसे
दुश्मन के हवाले कर दिया।)

7

ईसा और उसके भाई

1 इसके बाद ईसा ने गलील के इलाक़े में इधर उधर सफ़र किया। वह यहूदिया में फिरना नहीं चाहता था क्योंकि
वहाँ के यहूदी उसे क़त्ल करने का मौक़ा ढूँड रहे थे। 2 लेकिन जब यहूदी ईद बनाम झोंपड़ियों की ईद क़रीब आई
3 तो उसके भाइयों ने उससे कहा, “यह जगह छोड़कर यहूदिया चला जा ताकि तेरे पैरोकार भी वह मोजिज़े देख लें
जो तू करता है। 4 जो शख़्स चाहता है कि अवाम उसे जाने वह पोशीदगी में काम नहीं करता। अगर तू इस क़िस्म का

मोजिज़ाना काम करता है तो अपने आपको दुनिया पर ज़ाहिर कर।” 5 (असल में ईसा के भाई भी उस पर ईमान नहीं
रखते थे।)
6 ईसा ने उन्हें बताया, “अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है। लेकिन तुम जा सकते हो, तुम्हारे लिए
हर वक़्त मौज़ूँ है। 7 दुनिया तुमसे दुश्मनी नहीं रख सकती। लेकिन मुझसे वह दुश्मनी रखती है, क्योंकि मैं उसके बारे
में यह गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं। 8 तुम ख़ुद ईद पर जाओ। मैं नहीं जाऊँगा, क्योंकि अभी वह वक़्त नहीं
आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है।” 9 यह कहकर वह गलील में ठहरा रहा।

ईसा झोंपड़ियों की ईद पर

10 लेकिन बाद में, जब उसके भाई ईद पर जा चुके थे तो वह भी गया, अगरचे अलानिया नहीं बल्कि ख़ुफ़िया तौर
पर। 11 यहूदी ईद के मौक़े पर उसे तलाश कर रहे थे। वह पूछते रहे, “वह आदमी कहाँ है?”
12 हुजूम में से कई लोग ईसा के बारे में बुड़बुड़ा रहे थे। बाज़ ने कहा, “वह अच्छा बंदा है।” लेकिन दूसरों ने
एतराज़ किया, “नहीं, वह अवाम को बहकाता है।” 13 लेकिन किसी ने भी उसके बारे में खुलकर बात न की, क्योंकि
वह यहूदियों से डरते थे।
14 ईद का आधा हिस्सा गुज़र चुका था जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगा। 15 उसे सुनकर यहूदी
हैरतज़दा हुए और कहा, “यह आदमी किस तरह इतना इल्म रखता है हालाँकि इसने कहीं से भी तालीम हासिल नहीं
की!”
16 ईसा ने जवाब दिया, “जो तालीम मैं देता हूँ वह मेरी अपनी नहीं बल्कि उस की है जिसने मुझे भेजा। 17 जो उस
की मरज़ी पूरी करने के लिए तैयार है वह जान लेगा कि मेरी तालीम अल्लाह की तरफ़ से है या कि मेरी अपनी तरफ़
से। 18 जो अपनी तरफ़ से बोलता है वह अपनी ही इज़्ज़त चाहता है। लेकिन जो अपने भेजनेवाले की इज़्ज़तो-जलाल
बढ़ाने की कोशिश करता है वह सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं है। 19 क्या मूसा ने तुमको शरीअत नहीं दी? तो
फिर तुम मुझे क़त्ल करने की कोशिश क्यों कर रहे हो?”
20 हुजूम ने जवाब दिया, “तुम किसी बदरूह की गिरिफ़्त में हो। कौन तुम्हें क़त्ल करने की कोशिश कर रहा है?”
21 ईसा ने उनसे कहा, “मैंने सबत के दिन एक ही मोजिज़ा किया और तुम सब हैरतज़दा हुए। 22 लेकिन तुम भी
सबत के दिन काम करते हो। तुम उस दिन अपने बच्चों का ख़तना करवाते हो। और यह रस्म मूसा की शरीअत के
मुताबिक़ ही है, अगरचे यह मूसा से नहीं बल्कि हमारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से शुरू हुई। 23 क्योंकि
शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि बच्चे का ख़तना आठवें दिन करवाया जाए, और अगर यह दिन सबत हो तो तुम
फिर भी अपने बच्चे का ख़तना करवाते हो ताकि शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझसे क्यों नाराज़
हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी के पूरे जिस्म को शफ़ा दी? 24 ज़ाहिरी सूरत की बिना पर फ़ैसला न करो बल्कि
बातिनी हालत पहचानकर मुंसिफ़ाना फ़ैसला करो।”

क्या ईसा ही मसीह है?

25 उस वक़्त यरूशलम के कुछ रहनेवाले कहने लगे, “क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे लोग क़त्ल करने की
कोशिश कर रहे हैं? 26 ताहम वह यहाँ खुलकर बात कर रहा है और कोई भी उसे रोकने की कोशिश नहीं कर रहा।
क्या हमारे राहनुमाओं ने हक़ीक़त में जान लिया है कि यह मसीह है? 27 लेकिन जब मसीह आएगा तो किसी को भी
मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से है। यह आदमी फ़रक़ है। हम तो जानते हैं कि यह कहाँ से है।”
28 ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था। अब वह पुकार उठा, “तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं
कहाँ से हूँ। लेकिन मैं अपनी तरफ़ से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है और उसे तुम नहीं जानते। 29 लेकिन
मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं उस की तरफ़ से हूँ और उसने मुझे भेजा है।”
30 तब उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश की। लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका, क्योंकि अभी
उसका वक़्त नहीं आया था। 31 तो भी हुजूम के कई लोग उस पर ईमान लाए, क्योंकि उन्होंने कहा, “जब मसीह
आएगा तो क्या वह इस आदमी से ज़्यादा इलाही निशान दिखाएगा?”

पहरेदार उसे गिरिफ़्तार करने आते हैं

32 फ़रीसियों ने देखा कि हुजूम में इस क़िस्म की बातें धीमी धीमी आवाज़ के साथ फैल रही हैं। चुनाँचे उन्होंने
राहनुमा इमामों के साथ मिलकर बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार ईसा को गिरिफ़्तार करने के लिए भेजे। 33 लेकिन ईसा ने
कहा, “मैं सिर्फ़ थोड़ी देर और तुम्हारे साथ रहूँगा, फिर मैं उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। 34 उस
वक़्त तुम मुझे ढूँडोगे, मगर नहीं पाओगे, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।”

35 यहूदी आपस में कहने लगे, “यह कहाँ जाना चाहता है जहाँ हम उसे नहीं पा सकेंगे? क्या वह बैरूने-मुल्क जाना
चाहता है, वहाँ जहाँ हमारे लोग यूनानियों में बिखरी हालत में रहते हैं? क्या वह यूनानियों को तालीम देना चाहता है?
36 मतलब क्या है जब वह कहता है, ‘तुम मुझे ढूँडोगे मगर नहीं पाओगे’ और ‘जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते’।”

ज़िंदगी के पानी की नहरें

37 ईद के आख़िरी दिन जो सबसे अहम है ईसा खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “जो प्यासा हो वह मेरे
पास आए, 38 और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए। कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ ‘उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की
नहरें बह निकलेंगी’।” 39 (‘ज़िंदगी के पानी’ से वह रूहुल-क़ुद्स की तरफ़ इशारा कर रहा था जो उनको हासिल होता
है जो ईसा पर ईमान लाते हैं। लेकिन वह उस वक़्त तक नाज़िल नहीं हुआ था, क्योंकि ईसा अब तक अपने जलाल
को न पहुँचा था।)

सुननेवालों में नाइत्तफ़ाक़ी

40 ईसा की यह बातें सुनकर हुजूम के कुछ लोगों ने कहा, “यह आदमी वाक़ई वह नबी है जिसके इंतज़ार में हम
हैं।”

41 दूसरों ने कहा, “यह मसीह है।”

लेकिन बाज़ ने एतराज़ किया, “मसीह गलील से किस तरह आ सकता है! 42 पाक कलाम तो बयान करता है कि
मसीह दाऊद के ख़ानदान और बैत-लहम से आएगा, उस गाँव से जहाँ दाऊद बादशाह पैदा हुआ।” 43 यों ईसा की
वजह से लोगों में फूट पड़ गई। 44 कुछ तो उसे गिरिफ़्तार करना चाहते थे, लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका।

यहूदी राहनुमा ईसा पर ईमान नहीं रखते

45 इतने में बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार राहनुमा इमामों और फ़रीसियों के पास वापस आए। वह ईसा को लेकर नहीं
आए थे, इसलिए राहनुमाओं ने पूछा, “तुम उसे क्यों नहीं लाए?”

46 पहरेदारों ने जवाब दिया, “किसी ने कभी इस आदमी की तरह बात नहीं की।”

47 फ़रीसियों ने तंज़न कहा, “क्या तुमको भी बहका दिया गया है? 48 क्या राहनुमाओं या फ़रीसियों में कोई है जो
उस पर ईमान लाया हो? कोई भी नहीं! 49 लेकिन शरीअत से नावाक़िफ़ यह हुजूम लानती है!”

50 इन राहनुमाओं में नीकुदेमुस भी शामिल था जो कुछ देर पहले ईसा के पास गया था। अब वह बोल उठा, 51 “क्या
हमारी शरीअत किसी पर यों फ़ैसला देने की इजाज़त देती है? नहीं, लाज़िम है कि उसे पहले अदालत में पेश किया
जाए ताकि मालूम हो जाए कि उससे क्या कुछ सरज़द हुआ है।”

52 दूसरों ने एतराज़ किया, “क्या तुम भी गलील के रहनेवाले हो? कलामे-मुक़द्दस में तफ़तीश करके ख़ुद देख लो
कि गलील से कोई नबी नहीं आएगा।” 53 यह कहकर हर एक अपने अपने घर चला गया।

8

ज़िनाकार औरत पर पहला पत्थर

1 ईसा ख़ुद ज़ैतून के पहाड़ पर चला गया। 2 अगले दिन पौ फटते वक़्त वह दुबारा बैतुल-मुक़द्दस में आया। वहाँ
सब लोग उसके गिर्द जमा हुए और वह बैठकर उन्हें तालीम देने लगा। 3 इस दौरान शरीअत के उलमा और फ़रीसी
एक औरत को लेकर आए जिसे ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया था। उसे बीच में खड़ा करके 4 उन्होंने ईसा से कहा,
“उस्ताद, इस औरत को ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया है। 5 मूसा ने शरीअत में हमें हुक्म दिया है कि ऐसे लोगों को
संगसार करना है। आप क्या कहते हैं?” 6 इस सवाल से वह उसे फँसाना चाहते थे ताकि उस पर इलज़ाम लगाने का
कोई बहाना उनके हाथ आ जाए। लेकिन ईसा झुक गया और अपनी उँगली से ज़मीन पर लिखने लगा।

7 जब वह उससे जवाब का तक़ाज़ा करते रहे तो वह खड़ा होकर उनसे मुख़ातिब हुआ, “तुममें से जिसने कभी गुनाह
नहीं किया, वह पहला पत्थर मारे।” 8 फिर वह दुबारा झुककर ज़मीन पर लिखने लगा। 9 यह जवाब सुनकर इलज़ाम
लगानेवाले यके बाद दीगरे वहाँ से खिसक गए, पहले बुज़ुर्ग, फिर बाक़ी सब। आख़िरकार ईसा और दरमियान में खड़ी
वह औरत अकेले रह गए। 10 फिर उसने खड़े होकर कहा, “ऐ औरत, वह सब कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर फ़तवा
नहीं लगाया?”

11 औरत ने जवाब दिया, “नहीं ख़ुदावंद।”

ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर फ़तवा नहीं लगाता। जा, आइंदा गुनाह न करना।”

ईसा दुनिया का नूर है

12 फिर ईसा दुबारा लोगों से मुख़ातिब हुआ, "दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह तारीकी में नहीं चलेगा,
क्योंकि उसे ज़िंदगी का नूर हासिल होगा।"
13 फ़रीसियों ने एतराज़ किया, "आप तो अपने बारे में गवाही दे रहे हैं। ऐसी गवाही मोतबर नहीं होती।"
14 ईसा ने जवाब दिया, "अगरचे मैं अपने बारे में ही गवाही दे रहा हूँ तो भी वह मोतबर है। क्योंकि मैं जानता हूँ
कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जा रहा हूँ। लेकिन तुमको तो मालूम नहीं कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा
रहा हूँ। 15 तुम इनसानी सोच के मुताबिक़ लोगों का फ़ैसला करते हो, लेकिन मैं किसी का भी फ़ैसला नहीं करता।
16 और अगर फ़ैसला करूँ भी तो मेरा फ़ैसला दुरुस्त है, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ। बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे साथ
है। 17 तुम्हारी शरीअत में लिखा है कि दो आदमियों की गवाही मोतबर है। 18 मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता हूँ
जबकि दूसरा गवाह बाप है जिसने मुझे भेजा।"
19 उन्होंने पूछा, "आपका बाप कहाँ है?" ईसा ने जवाब दिया, "तुम न मुझे जानते हो, न मेरे बाप को। अगर तुम
मुझे जानते तो फिर मेरे बाप को भी जानते।"
20 ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह उस जगह के क़रीब तालीम दे रहा था जहाँ लोग अपना हदिया डालते
थे। लेकिन किसी ने उसे गिरिफ़्तार न किया क्योंकि अभी उसका वक़्त नहीं आया था।

जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ नहीं जा सकते

21 एक और बार ईसा उनसे मुख़ातिब हुआ, "मैं जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँड ढूँडकर अपने गुनाहों में मर जाओगे।
जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते।"
22 यहूदियों ने पूछा, "क्या वह ख़ुदकुशी करना चाहता है? क्या वह इसी वजह से कहता है, 'जहाँ मैं जा रहा हूँ
वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते'?"
23 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, "तुम नीचे से हो जबकि मैं ऊपर से हूँ। तुम इस दुनिया के हो जबकि मैं इस दुनिया
का नहीं हूँ। 24 मैं तुमको बता चुका हूँ कि तुम अपने गुनाहों में मर जाओगे। क्योंकि अगर तुम ईमान नहीं लाते कि मैं
वही हूँ तो तुम यक़ीनन अपने गुनाहों में मर जाओगे।"
25 उन्होंने सवाल किया, "आप कौन हैं?"
ईसा ने जवाब दिया, "मैं वही हूँ जो मैं शुरू से ही बताता आया हूँ। 26 मैं तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कह सकता हूँ।
बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनकी बिना पर मैं तुमको मुजरिम ठहरा सकता हूँ। लेकिन जिसने मुझे भेजा है वही सच्चा और
मोतबर है और मैं दुनिया को सिर्फ़ वह कुछ सुनाता हूँ जो मैंने उससे सुना है।"
27 सुननेवाले न समझे कि ईसा बाप का ज़िक्र कर रहा है। 28 चुनाँचे उसने कहा, "जब तुम इब्ने-आदम को ऊँचे
पर चढ़ाओगे तब ही तुम जान लोगे कि मैं वही हूँ, कि मैं अपनी तरफ़ से कुछ नहीं करता बल्कि सिर्फ़ वही सुनाता हूँ
जो बाप ने मुझे सिखाया है। 29 और जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं हर
वक़्त वही कुछ करता हूँ जो उसे पसंद आता है।"
30 यह बातें सुनकर बहुत-से लोग उस पर ईमान लाए।

सच्चाई तुमको आज़ाद करेगी

31 जो यहूदी उसका यक़ीन करते थे ईसा अब उनसे हमकलाम हुआ, "अगर तुम मेरी तालीम के ताबे रहोगे तब ही
तुम मेरे सच्चे शागिर्द होगे। 32 फिर तुम सच्चाई को जान लोगे और सच्चाई तुमको आज़ाद कर देगी।"
33 उन्होंने एतराज़ किया, "हम तो इब्राहीम की औलाद हैं, हम कभी भी किसी के ग़ुलाम नहीं रहे। फिर आप किस
तरह कह सकते हैं कि हम आज़ाद हो जाएंगे?"
34 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो भी गुनाह करता है वह गुनाह का ग़ुलाम है। 35 ग़ुलाम तो
आरिज़ी तौर पर घर में रहता है, लेकिन मालिक का बेटा हमेशा तक। 36 इसलिए अगर फ़रज़ंद तुमको आज़ाद करे तो
तुम हक़ीक़तन आज़ाद होगे। 37 मुझे मालूम है कि तुम इब्राहीम की औलाद हो। लेकिन तुम मुझे क़त्ल करने के दरपै
हो, क्योंकि तुम्हारे अंदर मेरे पैग़ाम के लिए गुंजाइश नहीं है। 38 मैं तुमको वही कुछ बताता हूँ जो मैंने बाप के हाँ देखा
है, जबकि तुम वही कुछ सुनाते हो जो तुमने अपने बाप से सुना है।"
39 उन्होंने कहा, "हमारा बाप इब्राहीम है।" ईसा ने जवाब दिया, "अगर तुम इब्राहीम की औलाद होते तो तुम उसके
नमूने पर चलते। 40 इसके बजाए तुम मुझे क़त्ल करने की तलाश में हो, इसलिए कि मैंने तुमको वही सच्चाई सुनाई है
जो मैंने अल्लाह के हुज़ूर सुनी है। इब्राहीम ने कभी भी इस क़िस्म का काम न किया। 41 नहीं, तुम अपने बाप का काम
कर रहे हो।"
उन्होंने एतराज़ किया, "हम हरामज़ादे नहीं हैं। अल्लाह ही हमारा वाहिद बाप है।"

42 ईसा ने उनसे कहा, “अगर अल्लाह तुम्हारा बाप होता तो तुम मुझसे मुहब्बत रखते, क्योंकि मैं अल्लाह में से
निकल आया हूँ। मैं अपनी तरफ़ से नहीं आया बल्कि उसी ने मुझे भेजा है। 43 तुम मेरी ज़बान क्यों नहीं समझते?
इसलिए कि तुम मेरी बात सुन नहीं सकते। 44 तुम अपने बाप इबलीस से हो और अपने बाप की ख़ाहिशों पर अमल
करने के ख़ाहाँ रहते हो। वह शुरू ही से क़ातिल है और सच्चाई पर क़ायम न रहा, क्योंकि उसमें सच्चाई है नहीं। जब
वह झूट बोलता है तो यह फ़ितरी बात है, क्योंकि वह झूट बोलनेवाला और झूट का बाप है। 45 लेकिन मैं सच्ची बातें
सुनाता हूँ और यही वजह है कि तुमको मुझ पर यक़ीन नहीं आता। 46 क्या तुममें से कोई साबित कर सकता है कि
मुझसे कोई गुनाह सरज़द हुआ है? मैं तो तुमको हक़ीक़त बता रहा हूँ। फिर तुमको मुझ पर यक़ीन क्यों नहीं आता?
47 जो अल्लाह से है वह अल्लाह की बातें सुनता है। तुम यह इसलिए नहीं सुनते कि तुम अल्लाह से नहीं हो।”

ईसा और इब्राहीम

48 यहूदियों ने जवाब दिया, “क्या हमने ठीक नहीं कहा कि तुम सामरी हो और किसी बदरूह के क़ब्ज़े में हो?”
49 ईसा ने कहा, “मैं बदरूह के क़ब्ज़े में नहीं हूँ बल्कि अपने बाप की इज़्ज़त करता हूँ जबकि तुम मेरी बेइज़्ज़ती
करते हो। 50 मैं ख़ुद अपनी इज़्ज़त का ख़ाहाँ नहीं हूँ। लेकिन एक है जो मेरी इज़्ज़त और जलाल का ख़याल रखता
और इनसाफ़ करता है। 51 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह मौत को कभी नहीं
देखेगा।”
52 यह सुनकर लोगों ने कहा, “अब हमें पता चल गया है कि तुम किसी बदरूह के क़ब्ज़े में हो। इब्राहीम और नबी
सब इंतक़ाल कर गए जबकि तुम दावा करते हो, ‘जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह मौत का मज़ा कभी नहीं
चखेगा।’ 53 क्या तुम हमारे बाप इब्राहीम से बड़े हो? वह मर गया, और नबी भी मर गए। तुम अपने आपको क्या
समझते हो?”
54 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं अपनी इज़्ज़त और जलाल बढ़ाता तो मेरा जलाल बातिल होता। लेकिन मेरा बाप
ही मेरी इज़्ज़तो-जलाल बढ़ाता है, वही जिसके बारे में तुम दावा करते हो कि ‘वह हमारा ख़ुदा है।’ 55 लेकिन हक़ीक़त
में तुमने उसे नहीं जाना जबकि मैं उसे जानता हूँ। अगर मैं कहता कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारी तरह झूटा होता।
लेकिन मैं उसे जानता और उसके कलाम पर अमल करता हूँ। 56 तुम्हारे बाप इब्राहीम ने ख़ुशी मनाई जब उसे मालूम
हुआ कि वह मेरी आमद का दिन देखेगा, और वह उसे देखकर मसरूर हुआ।”
57 यहूदियों ने एतराज़ किया, “तुम्हारी उम्र तो अभी पचास साल भी नहीं, तो फिर तुम किस तरह कह सकते हो
कि तुमने इब्राहीम को देखा है?”
58 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर ‘मैं हूँ’।”
59 इस पर लोग उसे संगसार करने के लिए पत्थर उठाने लगे। लेकिन ईसा ग़ायब होकर बैतुल-मुक़द्दस से निकल
गया।

9

अंधे की शफ़ा

1 चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा जो पैदाइश का अंधा था। 2 उसके शागिर्दों ने उससे पूछा, “उस्ताद,
यह आदमी अंधा क्यों पैदा हुआ? क्या इसका कोई गुनाह है या इसके वालिदैन का?”
3 ईसा ने जवाब दिया, “न इसका कोई गुनाह है और न इसके वालिदैन का। यह इसलिए हुआ कि इसकी ज़िंदगी में
अल्लाह का काम ज़ाहिर हो जाए। 4 अभी दिन है। लाज़िम है कि हम जितनी देर तक दिन है उसका काम करते रहें
जिसने मुझे भेजा है। क्योंकि रात आनेवाली है, उस वक़्त कोई काम नहीं कर सकेगा। 5 लेकिन जितनी देर तक मैं
दुनिया में हूँ उतनी देर तक मैं दुनिया का नूर हूँ।”
6 यह कहकर उसने ज़मीन पर थूककर मिट्टी सानी और उस की आँखों पर लगा दी। 7 उसने उससे कहा, “जा,
शिलोख़ के हौज़ में नहा ले।” (शिलोख़ का मतलब ‘भेजा हुआ’ है।) अंधे ने जाकर नहा लिया। जब वापस आया तो
वह देख सकता था।
8 उसके हमसाये और वह जिन्होंने पहले उसे भीक माँगते देखा था पूछने लगे, “क्या यह वही नहीं जो बैठा भीक
माँगा करता था?”
9 बाज़ ने कहा, “हाँ, वही है।”
औरों ने इनकार किया, “नहीं, यह सिर्फ़ उसका हमशक्ल है।”
लेकिन आदमी ने ख़ुद इसरार किया, “मैं वही हूँ।”
10 उन्होंने उससे सवाल किया, “तेरी आँखें किस तरह बहाल हुईं?”

11 उसने जवाब दिया, "वह आदमी जो ईसा कहलाता है उसने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उसने
मुझे कहा, 'शिलोख़ के हौज़ पर जा और नहा ले।' मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें बहाल हो गईं।"
12 उन्होंने पूछा, "वह कहाँ है?"
उसने जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम।"

फ़रीसी शफ़ा की तफ़तीश करते हैं

13 तब वह शफ़ायाब अंधे को फ़रीसियों के पास ले गए। 14 जिस दिन ईसा ने मिट्टी सानकर उस की आँखों को
बहाल किया था वह सबत का दिन था। 15 इसलिए फ़रीसियों ने भी उससे पूछ-गछ की कि उसे किस तरह बसारत
मिल गई। आदमी ने जवाब दिया, "उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैंने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।"
16 फ़रीसियों में से बाज़ ने कहा, "यह शख़्स अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।"
दूसरों ने एतराज़ किया, "गुनाहगार इस क़िस्म के इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?" यों उनमें फूट पड़
गई।
17 फिर वह दुबारा उस आदमी से मुख़ातिब हुए जो पहले अंधा था, "तू ख़ुद इसके बारे में क्या कहता है? उसने तो
तेरी ही आँखों को बहाल किया है।"
उसने जवाब दिया, "वह नबी है।"
18 यहूदियों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि वह वाक़ई अंधा था और फिर बहाल हो गया है। इसलिए उन्होंने उसके
वालिदैन को बुलाया। 19 उन्होंने उनसे पूछा, "क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा
पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता है?"
20 उसके वालिदैन ने जवाब दिया, "हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त अंधा था।
21 लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख सकता है या कि किसने इसकी आँखों को बहाल किया है।
इससे ख़ुद पता करें, यह बालिग़ है। यह ख़ुद अपने बारे में बता सकता है।" 22 उसके वालिदैन ने यह इसलिए कहा
कि वह यहूदियों से डरते थे। क्योंकि वह फ़ैसला कर चुके थे कि जो भी ईसा को मसीह क़रार दे उसे यहूदी जमात से
निकाल दिया जाए। 23 यही वजह थी कि उसके वालिदैन ने कहा था, "यह बालिग़ है, इससे ख़ुद पूछ लें।"
24 एक बार फिर उन्होंने शफ़ायाब अंधे को बुलाया, "अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी
गुनाहगार है।"
25 आदमी ने जवाब दिया, "मुझे क्या पता है कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, पहले मैं
अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ!"
26 फिर उन्होंने उससे सवाल किया, "उसने तेरे साथ क्या किया? उसने किस तरह तेरी आँखों को बहाल कर
दिया?"
27 उसने जवाब दिया, "मैं पहले भी आपको बता चुका हूँ और आपने सुना नहीं। क्या आप भी उसके शागिर्द बनना
चाहते हैं?"
28 इस पर उन्होंने उसे बुरा-भला कहा, "तू ही उसका शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं। 29 हम तो जानते हैं कि
अल्लाह ने मूसा से बात की है, लेकिन इसके बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।"
30 आदमी ने जवाब दिया, "अजीब बात है, उसने मेरी आँखों को शफ़ा दी है और फिर भी आप नहीं जानते कि
वह कहाँ से है। 31 हम जानते हैं कि अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उस की सुनता है जो उसका ख़ौफ़
मानता और उस की मरज़ी के मुताबिक़ चलता है। 32 इब्तिदा ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी
अंधे की आँखों को बहाल कर दिया हो। 33 अगर यह आदमी अल्लाह की तरफ़ से न होता तो कुछ न कर सकता।"
34 जवाब में उन्होंने उसे बताया, "तू जो गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा उस्ताद बनना चाहता
है?" यह कहकर उन्होंने उसे जमात में से निकाल दिया।

रूहानी अंधापन

35 जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल दिया गया है तो वह उसको मिला और पूछा, "क्या तू इब्ने-आदम पर
ईमान रखता है?"
36 उसने कहा, "ख़ुदावंद, वह कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।"
37 ईसा ने जवाब दिया, "तूने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझसे बात कर रहा है।"
38 उसने कहा, "ख़ुदावंद, मैं ईमान रखता हूँ" और उसे सिजदा किया।
39 ईसा ने कहा, "मैं अदालत करने के लिए इस दुनिया में आया हूँ, इसलिए कि अंधे देखें और देखनेवाले अंधे हो
जाएँ।"

40 कुछ फ़रीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुनकर पूछने लगे, "अच्छा, हम भी अंधे हैं?"
41 ईसा ने उनसे कहा, "अगर तुम अंधे होते तो तुम क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम दावा करते हो कि
हम देख सकते हैं इसलिए तुम्हारा गुनाह क़ायम रहता है।

10

चरवाहे की तमसील
1 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो दरवाज़े से भेड़ों के बाड़े में दाख़िल नहीं होता बल्कि फलाँगकर अंदर घुस आता
है वह चोर और डाकू है। 2 लेकिन जो दरवाज़े से दाख़िल होता है वह भेड़ों का चरवाहा है। 3 चौकीदार उसके लिए
दरवाज़ा खोल देता है और भेड़ें उस की आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम लेकर उन्हें बुलाता और
बाहर ले जाता है। 4 अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने के बाद वह उनके आगे आगे चलने लगता है और भेड़ें उसके
पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्योंकि वह उस की आवाज़ पहचानती हैं। 5 लेकिन वह किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी
बल्कि उससे भाग जाएँगी, क्योंकि वह उस की आवाज़ नहीं पहचानतीं।"
6 ईसा ने उन्हें यह तमसील पेश की, लेकिन वह न समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है।

अच्छा चरवाहा
7 इसलिए ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए दरवाज़ा मैं हूँ। 8 जितने
भी मुझसे पहले आए वह चोर और डाकू हैं। लेकिन भेड़ों ने उनकी न सुनी। 9 मैं ही दरवाज़ा हूँ। जो भी मेरे ज़रीए अंदर
आए उसे नजात मिलेगी। वह आता जाता और हरी चरागाहें पाता रहेगा। 10 चोर तो सिर्फ़ चोरी करने, ज़बह करने और
तबाह करने आता है। लेकिन मैं इसलिए आया हूँ कि वह ज़िंदगी पाएँ, बल्कि कसरत की ज़िंदगी पाएँ।
11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। 12 मज़दूर चरवाहे का किरदार
अदा नहीं करता, क्योंकि भेड़ें उस की अपनी नहीं होतीं। इसलिए ज्योंही कोई भेड़िया आता है तो मज़दूर उसे देखते
ही भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है। नतीजे में भेड़िया कुछ भेड़ें पकड़ लेता और बाक़ियों को मुंतशिर कर देता है।
13 वजह यह है कि वह मज़दूर ही है और भेड़ों की फ़िकर नहीं करता। 14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को
जानता हूँ और वह मुझे जानती हैं, 15 बिलकुल उसी तरह जिस तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ।
और मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ। 16 मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। लाज़िम है कि उन्हें भी ले
आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर एक ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा।
17 मेरा बाप मुझे इसलिए प्यार करता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ। 18 कोई मेरी जान मुझसे
छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी मरज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इख़्तियार है और उसे वापस लेने का भी।
यह हुक्म मुझे अपने बाप की तरफ़ से मिला है।"
19 इन बातों पर यहूदियों में दुबारा फूट पड़ गई। 20 बहुतों ने कहा, "यह बदरूह की गिरिफ़्त में है, यह दीवाना है।
इसकी क्यों सुनें!"
21 लेकिन औरों ने कहा, "यह ऐसी बातें नहीं हैं जो बदरूह-गिरिफ़्ता शख़्स कर सके। क्या बदरूहें अंधों की आँखें
बहाल कर सकती हैं?"

ईसा को रद्द किया जाता है
22 सर्दियों का मौसम था और ईसा बैतुल-मुक़द्दस की मख़सूसियत की ईद बनाम हनूका के दौरान यरूशलम में था।
23 वह बैतुल-मुक़द्दस के उस बरामदे में फिर रहा था जिसका नाम सुलेमान का बरामदा था। 24 यहूदी उसे घेरकर कहने
लगे, "आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।"
25 ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुमको बता चुका हूँ, लेकिन तुमको यक़ीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम
से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं। 26 लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो। 27 मेरी भेड़ें मेरी आवाज़
सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं। 28 मैं उन्हें अबदी ज़िंदगी देता हूँ, इसलिए वह कभी हलाक
नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा, 29 क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सुपुर्द किया है और वही सबसे बड़ा
है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता। 30 मैं और बाप एक हैं।"
31 यह सुनकर यहूदी दुबारा पत्थर उठाने लगे ताकि ईसा को संगसार करें। 32 उसने उनसे कहा, "मैंने तुम्हें बाप की
तरफ़ से कई इलाही निशान दिखाए हैं। तुम मुझे इनमें से किस निशान की वजह से संगसार कर रहे हो?"
33 यहूदियों ने जवाब दिया, "हम तुमको किसी अच्छे काम की वजह से संगसार नहीं कर रहे बल्कि कुफ़र बकने
की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इनसान हो अल्लाह होने का दावा करते हो।"

34 ईसा ने कहा, “क्या यह तुम्हारी शरीअत में नहीं लिखा है कि अल्लाह ने फ़रमाया, ‘तुम ख़ुदा हो’? 35 उन्हें
‘ख़ुदा’ कहा गया जिन तक अल्लाह का यह पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलामे-मुक़द्दस को मनसूख़
नहीं किया जा सकता। 36 तो फिर तुम कुफ़र बकने की बात क्यों करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं अल्लाह का फ़रज़ंद
हूँ? आख़िर बाप ने ख़ुद मुझे मख़सूस करके दुनिया में भेजा है। 37 अगर मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न
मानो। 38 लेकिन अगर उसके काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो, लेकिन कम अज़ कम उन कामों की गवाही तो
मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि बाप मुझमें है और मैं बाप में हूँ।”

39 एक बार फिर उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश की, लेकिन वह उनके हाथ से निकल गया।

40 फिर ईसा दुबारा दरियाए-यरदन के पार उस जगह चला गया जहाँ यहया शुरू में बपतिस्मा दिया करता था।
वहाँ वह कुछ देर ठहरा। 41 बहुत-से लोग उसके पास आते रहे। उन्होंने कहा, “यहया ने कभी कोई इलाही निशान न
दिखाया, लेकिन जो कुछ उसने इसके बारे में बयान किया, वह बिलकुल सहीह निकला।” 42 और वहाँ बहुत-से लोग
ईसा पर ईमान लाए।

11

लाज़र की मौत

1 उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिसका नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ
बैत-अनियाह में रहता था। 2 यह वही मरियम थी जिसने बाद में ख़ुदावंद पर ख़ुशबू उंडेलकर उसके पाँव अपने बालों
से ख़ुश्क किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। 3 चुनाँचे बहनों ने ईसा को इत्तला दी, “ख़ुदावंद, जिसे आप प्यार
करते हैं वह बीमार है।”

4 जब ईसा को यह ख़बर मिली तो उसने कहा, “इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के जलाल
के वास्ते हुआ है, ताकि इससे अल्लाह के फ़रज़ंद को जलाल मिले।”

5 ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था। 6 तो भी वह लाज़र के बारे में इत्तला मिलने के बाद दो दिन
और वहीं ठहरा। 7 फिर उसने अपने शागिर्दों से बात की, “आओ, हम दुबारा यहूदिया चले जाएँ।”

8 शागिर्दों ने एतराज़ किया, “उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहूदी आपको संगसार करने की कोशिश कर रहे थे, फिर
भी आप वापस जाना चाहते हैं?”

9 ईसा ने जवाब दिया, “क्या दिन में रौशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शख़्स दिन के वक़्त चलता-फिरता है वह
किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्योंकि वह इस दुनिया की रौशनी के ज़रीए देख सकता है। 10 लेकिन जो रात के
वक़्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्योंकि उसके पास रौशनी नहीं है।” 11 फिर उसने कहा, “हमारा दोस्त
लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जाकर उसे जगा दूँगा।”

12 शागिर्दों ने कहा, “ख़ुदावंद, अगर वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।”

13 उनका ख़याल था कि ईसा लाज़र की फ़ितरी नींद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हक़ीक़त में वह उस की मौत की
तरफ़ इशारा कर रहा था। 14 इसलिए उसने उन्हें साफ़ बता दिया, “लाज़र वफ़ात पा गया है। 15 और तुम्हारी ख़ातिर
मैं ख़ुश हूँ कि मैं उसके मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उसके पास जाएँ।”

16 तोमा ने जिसका लक़ब जुड़वाँ था अपने साथी शागिर्दों से कहा, “चलो, हम भी वहाँ जाकर उसके साथ मर
जाएँ।”

ईसा क़ियामत और ज़िंदगी है

17 वहाँ पहुँचकर ईसा को मालूम हुआ कि लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। 18 बैत-अनियाह का यरूशलम
से फ़ासला तीन किलोमीटर से कम था, 19 और बहुत-से यहूदी मर्था और मरियम को उनके भाई के बारे में तसल्ली देने
के लिए आए हुए थे।

20 यह सुनकर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। 21 मर्था ने कहा, “ख़ुदावंद,
अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। 22 लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह आपको जो भी माँगेंगे देगा।”

23 ईसा ने उसे बताया, “तेरा भाई जी उठेगा।”

24 मर्था ने जवाब दिया, “जी, मुझे मालूम है कि वह क़ियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।”

25 ईसा ने उसे बताया, “क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा, चाहे वह मर भी
जाए। 26 और जो ज़िंदा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?”

27 मर्था ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, मैं ईमान रखती हूँ कि आप ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं, जिसे दुनिया में आना
था।”

ईसा रोता है

28 यह कहकर मर्था वापस चली गई और चुपके से मरियम को बुलाया, "उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे
हैं।" 29 यह सुनते ही मरियम उठकर ईसा के पास गई। 30 वह अभी गाँव के बाहर उसी जगह ठहरा था जहाँ उस की
मुलाक़ात मर्था से हुई थी। 31 जो यहूदी घर में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि वह
जल्दी से उठकर निकल गई है तो वह उसके पीछे हो लिए। क्योंकि वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए
अपने भाई की क़ब्र पर जा रही है।

32 मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते ही वह उसके पाँवों में गिर गई और कहने लगी, "ख़ुदावंद, अगर
आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।"

33 जब ईसा ने मरियम और उसके साथियों को रोते देखा तो उसे बड़ी रंजिश हुई। मुज़तरिब हालत में 34 उसने
पूछा, "तुमने उसे कहाँ रखा है?"

उन्होंने जवाब दिया, "आएँ ख़ुदावंद, और देख लें।"

35 ईसा रो पड़ा। 36 यहूदियों ने कहा, "देखो, वह उसे कितना अज़ीज़ था।"

37 लेकिन उनमें से बाज़ ने कहा, "इस आदमी ने अंधे को शफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता
था?"

लाज़र को ज़िंदा कर दिया जाता है

38 फिर ईसा दुबारा निहायत रंजीदा होकर क़ब्र पर आया। क़ब्र एक ग़ार थी जिसके मुँह पर पत्थर रखा गया था।
39 ईसा ने कहा, "पत्थर को हटा दो।"

लेकिन मरहूम की बहन मर्था ने एतराज़ किया, "ख़ुदावंद, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।"

40 ईसा ने उससे कहा, "क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का जलाल देखेगी?"
41 चुनाँचे उन्होंने पत्थर को हटा दिया। फिर ईसा ने अपनी नज़र उठाकर कहा, "ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने
मेरी सुन ली है। 42 मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैंने यह बात पास खड़े लोगों की ख़ातिर की,
ताकि वह ईमान लाएँ कि तूने मुझे भेजा है।" 43 फिर ईसा ज़ोर से पुकार उठा, "लाज़र, निकल आ!" 44 और मुरदा
निकल आया। अभी तक उसके हाथ और पाँव पट्टियों से बँधे हुए थे जबकि उसका चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था।
ईसा ने उनसे कहा, "इसके कफ़न को खोलकर इसे जाने दो।"

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदी

45 उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आए थे बहुत-से ईसा पर ईमान लाए जब उन्होंने वह देखा जो उसने
किया। 46 लेकिन बाज़ फ़रीसियों के पास गए और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या किया है। 47 तब राहनुमा इमामों और
फ़रीसियों ने यहूदी अदालते-आलिया का इजलास मुनअक़िद किया। उन्होंने एक दूसरे से पूछा, "हम क्या कर रहे हैं?
यह आदमी बहुत-से इलाही निशान दिखा रहा है। 48 अगर हम उसे खुला छोड़ें तो आख़िरकार सब उस पर ईमान ले
आएँगे। फिर रोमी आकर हमारे बैतुल-मुक़द्दस और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।"

49 उनमें से एक कायफ़ा था जो उस साल इमामे-आज़म था। उसने कहा, "आप कुछ नहीं समझते 50 और इसका
ख़याल भी नहीं करते कि इससे पहले कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर
जाए।" 51 उसने यह बात अपनी तरफ़ से नहीं की थी। उस साल के इमामे-आज़म की हैसियत से ही उसने यह पेशगोई
की कि ईसा यहूदी क़ौम के लिए मरेगा। 52 और न सिर्फ़ इसके लिए बल्कि अल्लाह के बिखरे हुए फ़रज़ंदों को जमा
करके एक करने के लिए भी।

53 उस दिन से उन्होंने ईसा को क़त्ल करने का इरादा कर लिया। 54 इसलिए उसने अब से अलानिया यहूदियों
के दरमियान वक़्त न गुज़ारा, बल्कि उस जगह को छोड़कर रेगिस्तान के क़रीब एक इलाक़े में गया। वहाँ वह अपने
शागिर्दों समेत एक गाँव बनाम इफ़राईम में रहने लगा।

55 फिर यहूदियों की ईदे-फ़सह क़रीब आ गई। देहात से बहुत-से लोग अपने आपको पाक करवाने के लिए ईद से
पहले पहले यरूशलम पहुँचे। 56 वहाँ वह ईसा का पता करते और बैतुल-मुक़द्दस में खड़े आपस में बात करते रहे, "क्या
ख़याल है? क्या वह तहवार पर नहीं आएगा?" 57 लेकिन राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने हुक्म दिया था, "अगर
किसी को मालूम हो जाए कि ईसा कहाँ है तो वह इत्तला दे ताकि हम उसे गिरिफ़्तार कर लें।"

12

ईसा को बैत-अनियाह में मसह किया जाता है

1 फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी थे कि ईसा बैत-अनियाह पहुँचा। यह वह जगह थी जहाँ उस लाज़र का
घर था जिसे ईसा ने मुरदों में से ज़िंदा किया था। 2 वहाँ उसके लिए एक ख़ास खाना बनाया गया। मर्था खानेवालों की
ख़िदमत कर रही थी जबकि लाज़र ईसा और बाक़ी मेहमानों के साथ खाने में शरीक था। 3 फिर मरियम ने आधा लिटर
ख़ालिस जटामासी का निहायत क़ीमती इत्र लेकर ईसा के पाँवों पर उंडेल दिया और उन्हें अपने बालों से पोंछकर
ख़ुश्क किया। ख़ुशबू पूरे घर में फैल गई। 4 लेकिन ईसा के शागिर्द यहूदाह इस्करियोती ने एतराज़ किया (बाद में उसी
ने ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया)। उसने कहा, 5 "इस इत्र की क़ीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यों नहीं
बेचा गया ताकि इसके पैसे ग़रीबों को दिए जाते?" 6 उसने यह बात इसलिए नहीं की कि उसे ग़रीबों की फ़िकर थी।
असल में वह चोर था। वह शागिर्दों का ख़ज़ानची था और जमाशुदा पैसों में से बददियानती करता रहता था।
7 लेकिन ईसा ने कहा, "उसे छोड़ दे! उसने मेरी तदफ़ीन की तैयारी के लिए यह किया है। 8 ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे
पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।"

लाज़र के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदी

9 इतने में यहूदियों की बड़ी तादाद को मालूम हुआ कि ईसा वहाँ है। वह न सिर्फ़ ईसा से मिलने के लिए आए बल्कि
लाज़र से भी जिसे उसने मुरदों में से ज़िंदा किया था। 10 इसलिए राहनुमा इमामों ने लाज़र को भी क़त्ल करने का
मनसूबा बनाया। 11 क्योंकि उस की वजह से बहुत-से यहूदी उनमें से चले गए और ईसा पर ईमान ले आए थे।

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

12 अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पता चला कि ईसा यरूशलम आ रहा है। एक बड़ा हुजूम 13 खजूर
की डालियाँ पकड़े शहर से निकलकर उससे मिलने आया। चलते चलते वह चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,
"होशाना! *
मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!
इसराईल का बादशाह मुबारक है!"
14 ईसा को कहीं से एक जवान गधा मिल गया और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
15 "ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!
देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।"
16 उस वक़्त उसके शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने जलाल को पहुँचा तो
उन्हें याद आया कि लोगों ने उसके साथ यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलामे-मुक़द्दस में इसका ज़िक्र भी
है।
17 जो हुजूम उस वक़्त ईसा के साथ था जब उसने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था, वह दूसरों को इसके बारे
में बताता रहा था। 18 इसी वजह से इतने लोग ईसा से मिलने के लिए आए थे, उन्होंने उसके इस इलाही निशान के बारे
में सुना था। 19 यह देखकर फ़रीसी आपस में कहने लगे, "आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनिया
उसके पीछे हो ली है।"

कुछ यूनानी ईसा को तलाश करते हैं

20 कुछ यूनानी भी उनमें थे जो फ़सह की ईद के मौक़े पर परस्तिश करने के लिए आए हुए थे। 21 अब वह फ़िलिप्पुस
से मिलने आए जो गलील के बैत-सैदा से था। उन्होंने कहा, "जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।"
22 फ़िलिप्पुस ने अंदरियास को यह बात बताई और फिर वह मिलकर ईसा के पास गए और उसे यह ख़बर पहुँचाई।
23 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "अब वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम को जलाल मिले। 24 मैं तुमको सच बताता
हूँ कि जब तक गंदुम का दाना ज़मीन में गिरकर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो
बहुत-सा फल लाता है। 25 जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनिया में अपनी जान से
दुश्मनी रखता है वह उसे अबद तक महफ़ूज़ रखेगा। 26 अगर कोई मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले,
क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा। और जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उस की इज़्ज़त करेगा।

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

27 अब मेरा दिल मुज़तरिब है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, 'ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख'? नहीं, मैं तो
इसी लिए आया हूँ। 28 ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।"
तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, "मैं उसे जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल दूँगा।"

---

* **12:13** होशाना (इबरानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

29 हुजूम के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने यह सुनकर कहा, "बादल गरज रहे हैं।" औरों ने ख़याल पेश किया,
"कोई फ़रिश्ता उससे हमकलाम हुआ है।"
30 ईसा ने उन्हें बताया, "यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। 31 अब दुनिया की अदालत करने
का वक़्त आ गया है, अब दुनिया के हुक्मरान को निकाल दिया जाएगा। 32 और मैं ख़ुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने
के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा।" 33 इन अलफ़ाज़ से उसने इस तरफ़ इशारा किया कि वह किस तरह की मौत
मरेगा।
34 हुजूम बोल उठा, "कलामे-मुक़द्दस से हमने सुना है कि मसीह अबद तक क़ायम रहेगा। तो फिर आपकी यह
कैसी बात है कि इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आख़िर इब्ने-आदम है कौन?"
35 ईसा ने जवाब दिया, "नूर थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस नूर में चलते रहो ताकि
तारीकी तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। 36 नूर के तुम्हारे पास से
चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम नूर के फ़रज़ंद बन जाओ।"

लोग ईमान नहीं रखते

यह कहने के बाद ईसा चला गया और ग़ायब हो गया। 37 अगरचे ईसा ने यह तमाम इलाही निशान उनके सामने ही
दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न लाए। 38 यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,
"ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया?
और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई?"
39 चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह नबी ने कहीं और फ़रमाया है,
40 "अल्लाह ने उनकी आँखों को अंधा
और उनके दिल को बेहिस कर दिया है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।"
41 यसायाह ने यह इसलिए फ़रमाया क्योंकि उसने ईसा का जलाल देखकर उसके बारे में बात की।
42 तो भी बहुत-से लोग ईसा पर ईमान रखते थे। उनमें कुछ राहनुमा भी शामिल थे। लेकिन वह इसका अलानिया
इक़रार नहीं करते थे, क्योंकि वह डरते थे कि फ़रीसी हमें यहूदी जमात से ख़ारिज कर देंगे। 43 असल में वह अल्लाह
की इज़्ज़त की निसबत इनसान की इज़्ज़त को ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे।

ईसा का कलाम लोगों की अदालत करेगा

44 फिर ईसा पुकार उठा, "जो मुझ पर ईमान रखता है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता है जिसने
मुझे भेजा है। 45 और जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। 46 मैं नूर की हैसियत से इस दुनिया
में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह तारीकी में न रहे। 47 जो मेरी बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता
मैं उस की अदालत नहीं करूँगा, क्योंकि मैं दुनिया की अदालत करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के
लिए। 48 तो भी एक है जो उस की अदालत करता है। जो मुझे रद्द करके मेरी बातें क़बूल नहीं करता मेरा पेश किया
गया कलाम ही क़ियामत के दिन उस की अदालत करेगा। 49 क्योंकि जो कुछ मैंने बयान किया है वह मेरी तरफ़ से
नहीं है। मेरे भेजनेवाले बाप ही ने मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनाना है। 50 और मैं जानता हूँ कि उसका
हुक्म अबदी ज़िंदगी तक पहुँचाता है। चुनाँचे जो कुछ मैं सुनाता हूँ वही कुछ है जो बाप ने मुझे बताया है।"

13

ईसा अपने शागिर्दों के पाँव धोता है

1 फ़सह की ईद अब शुरू होनेवाली थी। ईसा जानता था कि वह वक़्त आ गया है कि मुझे इस दुनिया को छोड़कर
बाप के पास जाना है। गो उसने हमेशा दुनिया में अपने लोगों से मुहब्बत रखी थी, लेकिन अब उसने आख़िरी हद तक
उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया।
2 फिर शाम का खाना तैयार हुआ। उस वक़्त इबलीस शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह के दिल में ईसा को दुश्मन
के हवाले करने का इरादा डाल चुका था। 3 ईसा जानता था कि बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है और कि मैं
अल्लाह में से निकल आया और अब उसके पास वापस जा रहा हूँ। 4 चुनाँचे उसने दस्तरख़ान से उठकर अपना लिबास

उतार दिया और कमर पर तौलिया बाँध लिया। 5 फिर वह बासन में पानी डालकर शागिर्दों के पाँव धोने और बँधे हुए
तौलिये से पोंछकर ख़ुश्क करने लगा। 6 जब पतरस की बारी आई तो उसने कहा, "ख़ुदावंद, आप मेरे पाँव धोना चाहते
हैं?"

7 ईसा ने जवाब दिया, "इस वक़्त तू नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में यह तेरी समझ में आ
जाएगा।"

8 पतरस ने एतराज़ किया, "मैं कभी भी आपको मेरे पाँव धोने नहीं दूँगा!"

ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरा कोई हिस्सा नहीं होगा।"

9 यह सुनकर पतरस ने कहा, "तो फिर ख़ुदावंद, न सिर्फ़ मेरे पाँवों बल्कि मेरे हाथों और सर को भी धोएँ!"

10 ईसा ने जवाब दिया, "जिस शख़्स ने नहा लिया है उसे सिर्फ़ अपने पाँवों को धोने की ज़रूरत होती है, क्योंकि
वह पूरे तौर पर पाक-साफ़ है। तुम पाक-साफ़ हो, लेकिन सबके सब नहीं।" 11 (ईसा को मालूम था कि कौन उसे
दुश्मन के हवाले करेगा। इसलिए उसने कहा कि सबके सब पाक-साफ़ नहीं हैं।)

12 उन सबके पाँव धोने के बाद ईसा दुबारा अपना लिबास पहनकर बैठ गया। उसने सवाल किया, "क्या तुम समझते
हो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या किया है? 13 तुम मुझे 'उस्ताद' और 'ख़ुदावंद' कहकर मुख़ातिब करते हो और यह सहीह
है, क्योंकि मैं यही कुछ हूँ। 14 मैं, तुम्हारे ख़ुदावंद और उस्ताद ने तुम्हारे पाँव धोए। इसलिए अब तुम्हारा फ़र्ज़ भी है
कि एक दूसरे के पाँव धोया करो। 15 मैंने तुमको एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैंने तुम्हारे साथ किया
है। 16 मैं तुमको सच बताता हूँ कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैग़ंबर अपने भेजनेवाले से। 17 अगर
तुम यह जानते हो तो इस पर अमल भी करो, फिर ही तुम मुबारक होगे।

18 मैं तुम सबकी बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलामे-मुक़द्दस की उस
बात का पूरा होना ज़रूर है, 'जो मेरी रोटी खाता है उसने मुझ पर लात उठाई है।' 19 मैं तुमको इससे पहले कि वह पेश
आए यह अभी बता रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो तुम ईमान लाओ कि मैं वही हूँ। 20 मैं तुमको सच बताता हूँ कि
जो शख़्स उसे क़बूल करता है जिसे मैंने भेजा है वह मुझे क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल करता है वह उसे क़बूल
करता है जिसने मुझे भेजा है।"

ईसा को दुश्मन के हवाले किया जाता है

21 इन अलफ़ाज़ के बाद ईसा निहायत मुज़तरिब हुआ और कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुममें से एक मुझे
दुश्मन के हवाले कर देगा।"

22 शागिर्द उलझन में एक दूसरे को देखकर सोचने लगे कि ईसा किसकी बात कर रहा है। 23 एक शागिर्द जिसे ईसा
प्यार करता था उसके क़रीबतरीन बैठा था। 24 पतरस ने उसे इशारा किया कि वह उससे दरियाफ़्त करे कि वह किसकी
बात कर रहा है।

25 उस शागिर्द ने ईसा की तरफ़ सर झुकाकर पूछा, "ख़ुदावंद, यह कौन है?"

26 ईसा ने जवाब दिया, "जिसे मैं रोटी का लुक़मा शोर्बे में डुबोकर दूँ, वही है।" फिर लुक़मे को डुबोकर उसने
शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह को दे दिया। 27 ज्योंही यहूदाह ने यह लुक़मा ले लिया इबलीस उसमें समा गया।
ईसा ने उसे बताया, "जो कुछ करना है वह जल्दी से कर ले।" 28 लेकिन मेज़ पर बैठे लोगों में से किसी को मालूम न
हुआ कि ईसा ने यह क्यों कहा। 29 बाज़ का ख़याल था कि चूँकि यहूदाह ख़ज़ानची था इसलिए वह उसे बता रहा है
कि ईद के लिए दरकार चीज़ें ख़रीद ले या ग़रीबों में कुछ तक़सीम कर दे।

30 चुनाँचे ईसा से यह लुक़मा लेते ही यहूदाह बाहर निकल गया। रात का वक़्त था।

ईसा का नया हुक्म

31 यहूदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा, "अब इब्ने-आदम ने जलाल पाया और अल्लाह ने उसमें जलाल पाया
है। 32 हाँ, चूँकि अल्लाह को उसमें जलाल मिल गया है इसलिए अल्लाह अपने में फ़रज़ंद को जलाल देगा। और वह
यह जलाल फ़ौरन देगा। 33 मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास ठहरूँगा। तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं
यहूदियों को बता चुका हूँ वह अब तुमको भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते। 34 मैं तुमको एक
नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैंने तुमसे मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक दूसरे
से मुहब्बत करो। 35 अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो।"

पतरस के इनकार की पेशगोई

36 पतरस ने पूछा, "ख़ुदावंद, आप कहाँ जा रहे हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, “जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तू मेरे पीछे नहीं आ सकता। लेकिन बाद में तू मेरे पीछे आ जाएगा।”
37 पतरस ने सवाल किया, “ख़ुदावंद, मैं आपके पीछे अभी क्यों नहीं जा सकता? मैं आपके लिए अपनी जान
तक देने को तैयार हूँ।”
38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “तू मेरे लिए अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुरग़ के बाँग
देने से पहले पहले तू तीन मरतबा मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।

14

ईसा बाप के पास जाने की राह है

1 तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो। 2 मेरे बाप के घर में बेशुमार
मकान हैं। अगर ऐसा न होता तो क्या मैं तुमको बताता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ?
3 और अगर मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ तो वापस आकर तुमको अपने साथ ले जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ
वहाँ तुम भी हो। 4 और जहाँ मैं जा रहा हूँ उस की राह तुम जानते हो।”
5 तोमा बोल उठा, “ख़ुदावंद, हमें मालूम नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उस की राह किस तरह जानें?”
6 ईसा ने जवाब दिया, “राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता।
7 अगर तुमने मुझे जान लिया है तो इसका मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और अब से ऐसा है भी। तुम
उसे जानते हो और तुमने उसको देख लिया है।”
8 फ़िलिप्पुस ने कहा, “ऐ ख़ुदावंद, बाप को हमें दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।”
9 ईसा ने जवाब दिया, “फ़िलिप्पुस, मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इसके बावुजूद तू मुझे नहीं जानता? जिसने
मुझे देखा उसने बाप को देखा है। तो फिर तू क्योंकर कहता है, ‘बाप को हमें दिखाएँ’? 10 क्या तू ईमान नहीं रखता
कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है? जो बातें मैं तुमको बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझमें रहनेवाले बाप की तरफ़ से
हैं। वही अपना काम कर रहा है। 11 मेरी बात का यक़ीन करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है। या कम अज़ कम
उन कामों की बिना पर यक़ीन करो जो मैंने किए हैं। 12 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे वह वही
कुछ करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ़ यह बल्कि वह इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ।
13 और जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को फ़रज़ंद में जलाल मिल जाए। 14 जो कुछ तुम मेरे नाम में
मुझसे चाहो वह मैं करूँगा।

रूहुल-क़ुद्स देने का वादा

15 अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारोगे। 16 और मैं बाप से गुज़ारिश करूँगा
तो वह तुमको एक और मददगार देगा जो अबद तक तुम्हारे साथ रहेगा 17 यानी सच्चाई का रूह, जिसे दुनिया पा नहीं
सकती, क्योंकि वह न तो उसे देखती न जानती है। लेकिन तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और
आइंदा तुम्हारे अंदर रहेगा।
18 मैं तुमको यतीम छोड़कर नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 19 थोड़ी देर के बाद दुनिया मुझे नहीं
देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे। चूँकि मैं ज़िंदा हूँ इसलिए तुम भी ज़िंदा रहोगे। 20 जब वह दिन आएगा तो तुम
जान लोगे कि मैं अपने बाप में हूँ, तुम मुझमें हो और मैं तुममें।
21 जिसके पास मेरे अहकाम हैं और जो उनके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता है, वही मुझे प्यार करता है। और जो मुझे
प्यार करता है उसे मेरा बाप प्यार करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने आपको उस पर ज़ाहिर करूँगा।”
22 यहूदाह (यहूदाह इस्करियोती नहीं) ने पूछा, “ख़ुदावंद, क्या वजह है कि आप अपने आपको सिर्फ़ हम पर
ज़ाहिर करेंगे और दुनिया पर नहीं?”
23 ईसा ने जवाब दिया, “अगर कोई मुझे प्यार करे तो वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा। मेरा बाप ऐसे
शख़्स को प्यार करेगा और हम उसके पास आकर उसके साथ सुकूनत करेंगे। 24 जो मुझसे मुहब्बत नहीं करता वह
मेरी बातों के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारता। और जो कलाम तुम मुझसे सुनते हो वह मेरा अपना कलाम नहीं है बल्कि
बाप का है जिसने मुझे भेजा है।
25 यह सब कुछ मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुमको बताया है। 26 लेकिन बाद में रूहुल-क़ुद्स, जिसे बाप मेरे नाम से
भेजेगा तुमको सब कुछ सिखाएगा। यह मददगार तुमको हर बात की याद दिलाएगा जो मैंने तुमको बताई है।
27 मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी ही सलामती तुमको दे देता हूँ। और मैं इसे यों नहीं देता जिस तरह
दुनिया देती है। तुम्हारा दिल न घबराए और न डरे। 28 तुमने मुझसे सुन लिया है कि ‘मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास

वापस आऊँगा।’ अगर तुम मुझसे मुहब्बत रखते तो तुम इस बात पर ख़ुश होते कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ, क्योंकि
बाप मुझसे बड़ा है। 29 मैंने तुमको पहले से बता दिया है, इससे पेशतर कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम ईमान
लाओ। 30 अब से मैं तुमसे ज़्यादा बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस दुनिया का हुक्मरान आ रहा है। उसे मुझ पर कोई
क़ाबू नहीं है, 31 लेकिन दुनिया यह जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही कुछ करता हूँ जिसका हुक्म वह
मुझे देता है।

अब उठो, हम यहाँ से चलें।

15

ईसा अंगूर की हक़ीक़ी बेल है

1 मैं अंगूर की हक़ीक़ी बेल हूँ और मेरा बाप माली है। 2 वह मेरी हर शाख़ को जो फल नहीं लाती काटकर फेंक
देता है। लेकिन जो शाख़ फल लाती है उस की वह काँट-छाँट करता है ताकि ज़्यादा फल लाए। 3 उस कलाम के ज़रीए
जो मैंने तुमको सुनाया है तुम तो पाक-साफ़ हो चुके हो। 4 मुझमें क़ायम रहो तो मैं भी तुममें क़ायम रहूँगा। जो शाख़ बेल
से कट गई है वह फल नहीं ला सकती। बिलकुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझमें क़ायम नहीं रहते फल नहीं ला
सकते।

5 मैं ही अंगूर की बेल हूँ, और तुम उस की शाख़ें हो। जो मुझमें क़ायम रहता है और मैं उसमें वह बहुत-सा फल लाता
है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते। 6 जो मुझमें क़ायम नहीं रहता और न मैं उसमें उसे बेफ़ायदा
शाख़ की तरह बाहर फेंक दिया जाता है। ऐसी शाख़ें सूख जाती हैं और लोग उनका ढेर लगाकर उन्हें आग में झोंक देते
हैं जहाँ वह जल जाती हैं। 7 अगर तुम मुझमें क़ायम रहो और मैं तुममें तो जो जी चाहे माँगो, वह तुमको दिया जाएगा।
8 जब तुम बहुत-सा फल लाते और यों मेरे शागिर्द साबित होते हो तो इससे मेरे बाप को जलाल मिलता है। 9 जिस तरह
बाप ने मुझसे मुहब्बत रखी है उसी तरह मैंने तुमसे भी मुहब्बत रखी है। अब मेरी मुहब्बत में क़ायम रहो। 10 जब तुम
मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हो तो तुम मेरी मुहब्बत में क़ायम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप के
अहकाम के मुताबिक़ चलता हूँ और यों उस की मुहब्बत में क़ायम रहता हूँ।

11 मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि मेरी ख़ुशी तुममें हो बल्कि तुम्हारा दिल ख़ुशी से भरकर छलक उठे।
12 मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे प्यार करो जैसे मैंने तुमको प्यार किया है। 13 इससे बड़ी मुहब्बत है नहीं
कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे। 14 तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुमको बताता
हूँ। 15 अब से मैं नहीं कहता कि तुम ग़ुलाम हो, क्योंकि ग़ुलाम नहीं जानता कि उसका मालिक क्या करता है। इसके
बजाए मैंने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्योंकि मैंने तुमको सब कुछ बताया है जो मैंने अपने बाप से सुना है। 16 तुमने मुझे
नहीं चुना बल्कि मैंने तुमको चुन लिया है। मैंने तुमको मुक़र्रर किया कि जाकर फल लाओ, ऐसा फल जो क़ायम रहे।
फिर बाप तुमको वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम में माँगोगे। 17 मेरा हुक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।

दुनिया की दुश्मनी

18 अगर दुनिया तुमसे दुश्मनी रखे तो यह बात ज़हन में रखो कि उसने तुमसे पहले मुझसे दुश्मनी रखी है। 19 अगर
तुम दुनिया के होते तो दुनिया तुमको अपना समझकर प्यार करती। लेकिन तुम दुनिया के नहीं हो। मैंने तुमको दुनिया
से अलग करके चुन लिया है। इसलिए दुनिया तुमसे दुश्मनी रखती है। 20 वह बात याद करो जो मैंने तुमको बताई
कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। अगर उन्होंने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे। और अगर उन्होंने
मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी तो वह तुम्हारी बातों पर भी अमल करेंगे। 21 लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी
करेंगे, मेरे नाम की वजह से करेंगे, क्योंकि वह उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। 22 अगर मैं आया न होता और
उनसे बात न की होती तो वह क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उनके गुनाह का कोई भी उज़्र बाक़ी नहीं रहा। 23 जो
मुझसे दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी दुश्मनी रखता है। 24 अगर मैंने उनके दरमियान ऐसा काम न किया होता जो
किसी और ने नहीं किया तो वह क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उन्होंने सब कुछ देखा है और फिर भी मुझसे और
मेरे बाप से दुश्मनी रखी है। 25 और ऐसा होना भी था ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए कि ‘उन्होंने
बिलावजह मुझसे कीना रखा है।’

26 जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की तरफ़ से तुम्हारे पास भेजूँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा। वह सच्चाई
का रूह है जो बाप में से निकलता है। 27 तुमको भी मेरे बारे में गवाही देना है, क्योंकि तुम इब्तिदा से मेरे साथ रहे हो।

16

1 मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ। 2 वह तुमको यहूदी जमातों से निकाल देंगे, बल्कि
वह वक़्त भी आनेवाला है कि जो भी तुमको मार डालेगा वह समझेगा, 'मैंने अल्लाह की ख़िदमत की है।' 3 वह इस
क़िस्म की हरकतें इसलिए करेंगे कि उन्होंने न बाप को जाना है, न मुझे। 4 मैंने तुमको यह बातें इसलिए बताई हैं कि
जब उनका वक़्त आ जाए तो तुमको याद आए कि मैंने तुम्हें आगाह कर दिया था।

रूहुल-क़ुद्स की ख़िदमत

मैंने अब तक तुमको यह नहीं बताया क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। 5 लेकिन अब मैं उसके पास जा रहा हूँ जिसने
मुझे भेजा है। तो भी तुममें से कोई मुझसे नहीं पूछता, 'आप कहाँ जा रहे हैं?' 6 इसके बजाए तुम्हारे दिल ग़मज़दा हैं
कि मैंने तुमको ऐसी बातें बताई हैं। 7 लेकिन मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम्हारे लिए फ़ायदामंद है कि मैं जा रहा हूँ।
अगर मैं न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। 8 और
जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में दुनिया की ग़लती को बेनिक़ाब करके यह ज़ाहिर करेगा
: 9 गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ पर ईमान नहीं रखते, 10 रास्तबाज़ी के बारे में यह कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ
और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे, 11 और अदालत के बारे में यह कि इस दुनिया के हुक्मरान की अदालत हो चुकी है।
12 मुझे तुमको मज़ीद बहुत कुछ बताना है, लेकिन इस वक़्त तुम उसे बरदाश्त नहीं कर सकते। 13 जब सच्चाई का
रूह आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगा। वह अपनी मरज़ी से बात नहीं करेगा बल्कि सिर्फ़
वही कुछ कहेगा जो वह ख़ुद सुनेगा। वही तुमको मुस्तक़बिल के बारे में भी बताएगा। 14 और वह इसमें मुझे जलाल
देगा कि वह तुमको वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला होगा। 15 जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इसलिए मैंने
कहा, 'रूह तुमको वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला होगा।'

अब दुख फिर सुख

16 थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।"
17 उसके कुछ शागिर्द आपस में बात करने लगे, "ईसा के यह कहने से क्या मुराद है कि 'थोड़ी देर के बाद तुम
मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे'? और इसका क्या मतलब है, 'मैं बाप के पास जा रहा
हूँ'?" 18 और वह सोचते रहे, "यह किस क़िस्म की 'थोड़ी देर' है जिसका ज़िक्र वह कर रहे हैं? हम उनकी बात
नहीं समझते।"
19 ईसा ने जान लिया कि वह मुझसे इसके बारे में सवाल करना चाहते हैं। इसलिए उसने कहा, "क्या तुम एक दूसरे
से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात का क्या मतलब है कि 'थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद
मुझे दुबारा देख लोगे'? 20 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम रो रोकर मातम करोगे जबकि दुनिया ख़ुश होगी। तुम ग़म
करोगे, लेकिन तुम्हारा ग़म ख़ुशी में बदल जाएगा। 21 जब किसी औरत के बच्चा पैदा होनेवाला होता है तो उसे ग़म
और तकलीफ़ होती है क्योंकि उसका वक़्त आ गया है। लेकिन ज्योंही बच्चा पैदा हो जाता है तो माँ ख़ुशी के मारे
कि एक इनसान दुनिया में आ गया है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। 22 यही तुम्हारी हालत है। क्योंकि अब तुम
ग़मज़दा हो, लेकिन मैं तुमसे दुबारा मिलूँगा। उस वक़्त तुमको ख़ुशी होगी, ऐसी ख़ुशी जो तुमसे कोई छीन न लेगा।
23 उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह
तुमको देगा। 24 अब तक तुमने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुमको मिलेगा। फिर तुम्हारी ख़ुशी पूरी हो जाएगी।

दुनिया पर फ़तह

25 मैंने तुमको यह तमसीलों में बताया है। लेकिन एक दिन आएगा जब मैं ऐसा नहीं करूँगा। उस वक़्त मैं तमसीलों
में बात नहीं करूँगा बल्कि तुमको बाप के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा। 26 उस दिन तुम मेरा नाम लेकर माँगोगे। मेरे
कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी ख़ातिर बाप से दरख़ास्त करूँगा। 27 क्योंकि बाप ख़ुद तुमको प्यार करता
है, इसलिए कि तुमने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो कि मैं अल्लाह में से निकल आया हूँ। 28 मैं बाप में से
निकलकर दुनिया में आया हूँ। और अब मैं दुनिया को छोड़कर बाप के पास वापस जाता हूँ।"
29 इस पर उसके शागिर्दों ने कहा, "अब आप तमसीलों में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे हैं। 30 अब हमें
समझ आई है कि आप सब कुछ जानते हैं और कि इसकी ज़रूरत नहीं कि कोई आपकी पूछ-गछ करे। इसलिए हम
ईमान रखते हैं कि आप अल्लाह में से निकलकर आए हैं।"
31 ईसा ने जवाब दिया, "अब तुम ईमान रखते हो? 32 देखो, वह वक़्त आ रहा है बल्कि आ चुका है जब तुम
तित्तर-बित्तर हो जाओगे। मुझे अकेला छोड़कर हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला नहीं हूँगा क्योंकि

बाप मेरे साथ है। 33 मैंने तुमको इसलिए यह बात बताई ताकि तुम मुझमें सलामती पाओ। दुनिया में तुम मुसीबत में फँसे
रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनिया पर ग़ालिब आया हूँ।”

17

ईसा अपने शागिर्दों के लिए दुआ करता है

1 यह कहकर ईसा ने अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाई और दुआ की, “ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने
फ़रज़ंद को जलाल दे ताकि फ़रज़ंद तुझे जलाल दे। 2 क्योंकि तूने उसे तमाम इनसानों पर इख़्तियार दिया है ताकि वह
उन सबको अबदी ज़िंदगी दे जो तूने उसे दिए हैं। 3 और अबदी ज़िंदगी यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और
सच्चा ख़ुदा है और ईसा मसीह को भी जान लें जिसे तूने भेजा है। 4 मैंने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और उस काम की
तकमील की जिसकी ज़िम्मादारी तूने मुझे दी थी। 5 और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे, ऐ बाप, वही जलाल जो मैं
दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर तेरे हुज़ूर रखता था।

6 मैंने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें तूने दुनिया से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तूने उन्हें
मुझे दिया और उन्होंने तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है। 7 अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तूने मुझे
दिया है वह तेरी तरफ़ से है। 8 क्योंकि जो बातें तूने मुझे दीं मैंने उन्हें दी हैं। नतीजे में उन्होंने यह बातें क़बूल करके
हक़ीक़ी तौर पर जान लिया कि मैं तुझमें से निकलकर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तूने मुझे भेजा है।

9 मैं उनके लिए दुआ करता हूँ, दुनिया के लिए नहीं बल्कि उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वह तेरे ही
हैं। 10 जो भी मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उनमें जलाल मिला है। 11 अब से मैं दुनिया
में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनिया में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। क़ुद्दूस बाप, अपने नाम में उन्हें महफ़ूज़
रख, उस नाम में जो तूने मुझे दिया है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं। 12 जितनी देर मैं उनके साथ रहा मैंने उन्हें
तेरे नाम में महफ़ूज़ रखा, उसी नाम में जो तूने मुझे दिया था। मैंने यों उनकी निगहबानी की कि उनमें से एक भी हलाक
नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़रज़ंद के। यों कलाम की पेशगोई पूरी हुई। 13 अब तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ। लेकिन
मैं दुनिया में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ ताकि उनके दिल मेरी ख़ुशी से भरकर छलक उठें। 14 मैंने उन्हें तेरा कलाम
दिया है और दुनिया ने उनसे दुश्मनी रखी, क्योंकि यह दुनिया के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 15 मेरी
दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनिया से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इबलीस से महफ़ूज़ रखे। 16 वह दुनिया के नहीं हैं
जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 17 उन्हें सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है।
18 जिस तरह तूने मुझे दुनिया में भेजा है उसी तरह मैंने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। 19 उनकी ख़ातिर मैं अपने आपको
मख़सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।

20 मेरी दुआ न सिर्फ़ इन्हीं के लिए है, बल्कि उन सबके लिए भी जो इनका पैग़ाम सुनकर मुझ पर ईमान लाएँगे
21 ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझमें है और मैं तुझमें हूँ उसी तरह वह भी हममें हों ताकि दुनिया यक़ीन
करे कि तूने मुझे भेजा है। 22 मैंने उन्हें वह जलाल दिया है जो तूने मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक
हैं, 23 मैं उनमें और तू मुझमें। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनिया जान ले कि तूने मुझे भेजा और कि तूने उनसे
मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझसे रखी है।

24 ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तूने मुझे दिए हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें,
वह जलाल जो तूने इसलिए मुझे दिया है कि तूने मुझे दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर प्यार किया है। 25 ऐ रास्त बाप,
दुनिया तुझे नहीं जानती, लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शागिर्द जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। 26 मैंने तेरा नाम उन
पर ज़ाहिर किया और इसे ज़ाहिर करता रहूँगा ताकि तेरी मुझसे मुहब्बत उनमें हो और मैं उनमें हूँ।”

18

ईसा की गिरिफ़्तारी

1 यह कहकर ईसा अपने शागिर्दों के साथ निकला और वादीए-क़िदरोन को पार करके एक बाग़ में दाख़िल हुआ।
2 यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करनेवाला था वह भी इस जगह से वाक़िफ़ था, क्योंकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के
साथ जाया करता था। 3 राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदाह को रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैतुल-मुक़द्दस के
कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशालें, लालटैन और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। 4 ईसा को मालूम था कि उसे क्या
पेश आएगा। चुनाँचे उसने निकलकर उनसे पूछा, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”

5 उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”
ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।”
यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था, वह भी उनके साथ खड़ा था। 6 जब ईसा ने एलान किया, “मैं
ही हूँ,” तो सब पीछे हटकर ज़मीन पर गिर पड़े। 7 एक और बार ईसा ने उनसे सवाल किया, “तुम किस को ढूँड रहे
हो?”
उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”
8 उसने कहा, “मैं तुमको बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इनको जाने दो।” 9 यों उस की
यह बात पूरी हुई, “मैंने उनमें से जो तूने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।”
10 शमौन पतरस के पास तलवार थी। अब उसने उसे मियान से निकालकर इमामे-आज़म के ग़ुलाम का दहना कान
उड़ा दिया (ग़ुलाम का नाम मलख़ुस था)। 11 लेकिन ईसा ने पतरस से कहा, “तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह
प्याला न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?”

ईसा हन्ना के सामने

12 फिर फ़ौजी दस्ते, उनके अफ़सर और बैतुल-मुक़द्दस के यहूदी पहरेदारों ने ईसा को गिरिफ़्तार करके बाँध लिया।
13 पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमामे-आज़म कायफ़ा का सुसर था। 14 कायफ़ा ही ने
यहूदियों को यह मशवरा दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्मत के लिए मर जाए।

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

15 शमौन पतरस किसी और शागिर्द के साथ ईसा के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द इमामे-आज़म का
जाननेवाला था, इसलिए वह ईसा के साथ इमामे-आज़म के सहन में दाख़िल हुआ। 16 पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा
रहा। फिर इमामे-आज़म का जाननेवाला शागिर्द दुबारा निकल आया। उसने गेट की निगरानी करनेवाली औरत से बात
की तो उसे पतरस को अपने साथ अंदर ले जाने की इजाज़त मिली। 17 उस औरत ने पतरस से पूछा, “तुम भी इस
आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?”
उसने जवाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”
18 ठंड थी, इसलिए ग़ुलामों और पहरेदारों ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उसके पास खड़े ताप
रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा ताप रहा था।

इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ करता है

19 इतने में इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ करके उसके शागिर्दों और तालीम के बारे में तफ़तीश करने लगा। 20 ईसा
ने जवाब में कहा, “मैंने दुनिया में खुलकर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतख़ानों और बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता
रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैंने कुछ नहीं कहा। 21 आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं?
उनसे दरियाफ़्त करें जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उनको मालूम है कि मैंने क्या कुछ कहा है।”
22 इस पर साथ खड़े बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मारकर कहा, “क्या यह
इमामे-आज़म से बात करने का तरीक़ा है जब वह तुमसे कुछ पूछे?”
23 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैंने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तूने मुझे क्यों
मारा?”
24 फिर हन्ना ने ईसा को बँधी हुई हालत में इमामे-आज़म कायफ़ा के पास भेज दिया।

पतरस दुबारा ईसा को जानने से इनकार करता है

25 शमौन पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उससे पूछने लगे, “तुम भी उसके शागिर्द
हो कि नहीं?”
लेकिन पतरस ने इनकार किया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”
26 फिर इमामे-आज़म का एक ग़ुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने उड़ा दिया
था, “क्या मैंने तुमको बाग़ में उसके साथ नहीं देखा था?”
27 पतरस ने एक बार फिर इनकार किया, और इनकार करते ही मुरग़ की बाँग सुनाई दी।

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

28 फिर यहूदी ईसा को कायफ़ा से लेकर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच गए। अब सुबह हो
चुकी थी और चूँकि यहूदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इसलिए वह महल में दाख़िल न हुए, वरना

वह नापाक हो जाते। 29 चुनाँचे पीलातुस निकलकर उनके पास आया और पूछा, “तुम इस आदमी पर क्या इलज़ाम
लगा रहे हो?”
30 उन्होंने जवाब दिया, “अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आपके हवाले न करते।”
31 पीलातुस ने कहा, “फिर इसे ले जाओ और अपनी शरई अदालतों में पेश करो।”
लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया, “हमें किसी को सज़ाए-मौत देने की इजाज़त नहीं।” 32 ईसा ने इस तरफ़ इशारा
किया था कि वह किस तरह मरेगा और अब उस की यह बात पूरी हुई।
33 तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उसने ईसा को बुलाया और उससे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के
बादशाह हो?”
34 ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आपको मेरे बारे में बताया है?”
35 पीलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले
किया है। तुमसे क्या कुछ सरज़द हुआ है?”
36 ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम सख़्त
जिद्दो-जहद करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं
है।”
37 पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाक़ई बादशाह हो?”
ईसा ने जवाब दिया, “आप सहीह कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मक़सद के लिए पैदा होकर दुनिया में आया कि
सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।”
38 पीलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?”

ईसा को सज़ाए-मौत सुनाई जाती है

फिर वह दुबारा निकलकर यहूदियों के पास गया। उसने एलान किया, “मुझे उसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह
नहीं मिली। 39 लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिसके मुताबिक़ मुझे ईदे-फ़सह के मौक़े पर तुम्हारे लिए एक क़ैदी को
रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं ‘यहूदियों के बादशाह’ को रिहा कर दूँ?”
40 लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, “नहीं, इसको नहीं बल्कि बर-अब्बा को।” (बर-अब्बा डाकू था।)

19

1 फिर पीलातुस ने ईसा को कोड़े लगवाए। 2 फ़ौजियों ने काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर
रख दिया। उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का लिबास भी पहनाया। 3 फिर उसके सामने आकर वह कहते, “ऐ यहूदियों के
बादशाह, आदाब!” और उसे थप्पड़ मारते थे।
4 एक बार फिर पीलातुस निकल आया और यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर ला रहा हूँ
ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।” 5 फिर ईसा काँटेदार ताज और अरग़वानी
रंग का लिबास पहने बाहर आया। पीलातुस ने उनसे कहा, “लो यह है वह आदमी।”
6 उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उनके मुलाज़िम चीख़ने लगे, “इसे मसलूब करें, इसे मसलूब करें!”
पीलातुस ने उनसे कहा, “तुम ही इसे ले जाकर मसलूब करो। क्योंकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं
मिली।”
7 यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि वह मारा जाए।
क्योंकि इसने अपने आपको अल्लाह का फ़रज़ंद क़रार दिया है।”
8 यह सुनकर पीलातुस मज़ीद डर गया। 9 दुबारा महल में जाकर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?”
लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। 10 पीलातुस ने उससे कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम
नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मसलूब करने का इख़्तियार है?”
11 ईसा ने जवाब दिया, “आपको मुझ पर इख़्तियार न होता अगर वह आपको ऊपर से न दिया गया होता। इस
वजह से उस शख़्स से ज़्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिसने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।”
12 इसके बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़कर कहने लगे, “अगर
आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहनशाह क़ैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह
शहनशाह की मुख़ालफ़त करता है।”
13 इस तरह की बातें सुनकर पीलातुस ईसा को बाहर ले आया। फिर वह जज की कुरसी पर बैठ गया। उस जगह
का नाम “पच्चीकारी” था। (अरामी ज़बान में वह गब्बता कहलाती थी।) 14 अब दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए

थे। उस दिन ईद के लिए तैयारियाँ की जाती थीं, क्योंकि अगले दिन ईद का आग़ाज़ था। पीलातुस बोल उठा, "लो,
तुम्हारा बादशाह!"

15 लेकिन वह चिल्लाते रहे, "ले जाएँ इसे, ले जाएँ! इसे मसलूब करें!"

पीलातुस ने सवाल किया, "क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब पर चढ़ाऊँ?"

राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, "सिवाए शहनशाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।"

16 फिर पीलातुस ने ईसा को उनके हवाले कर दिया ताकि उसे मसलूब किया जाए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

चुनाँचे वह ईसा को लेकर चले गए। 17 वह अपनी सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा जिसका
नाम खोपड़ी (अरामी ज़बान में गुलगुता) था। 18 वहाँ उन्होंने उसे सलीब पर चढ़ा दिया। साथ साथ उन्होंने उसके
बाएँ और दाएँ हाथ दो और आदमियों को मसलूब किया। 19 पीलातुस ने एक तख़्ती बनवाकर उसे ईसा की सलीब
पर लगवा दिया। तख़्ती पर लिखा था, 'ईसा नासरी, यहूदियों का बादशाह।' 20 बहुत-से यहूदियों ने यह पढ़ लिया,
क्योंकि मसलूबियत का मक़ाम शहर के क़रीब था और यह जुमला अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों में लिखा था।
21 यह देखकर यहूदियों के राहनुमा इमामों ने एतराज़ किया, " 'यहूदियों का बादशाह' न लिखें बल्कि यह कि 'इस
आदमी ने यहूदियों का बादशाह होने का दावा किया'।"

22 पीलातुस ने जवाब दिया, "जो कुछ मैंने लिख दिया सो लिख दिया।"

23 ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों ने उसके कपड़े लेकर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर फ़ौजी के लिए एक
हिस्सा। लेकिन चोग़ा बेजोड़ था। वह ऊपर से लेकर नीचे तक बुना हुआ एक ही टुकड़े का था। 24 इसलिए फ़ौजियों
ने कहा, "आओ, इसे फाड़कर तक़सीम न करें बल्कि इस पर क़ुरा डालें।" यों कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी
हुई, "उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और मेरे लिबास पर क़ुरा डाला।" फ़ौजियों ने यही कुछ किया।

25 कुछ ख़वातीन भी ईसा की सलीब के क़रीब खड़ी थीं : उस की माँ, उस की ख़ाला, क्लोपास की बीवी मरियम
और मरियम मग्दलीनी। 26 जब ईसा ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे प्यारा था तो उसने कहा,
"ऐ ख़ातून, देखें आपका बेटा यह है।"

27 और उस शागिर्द से उसने कहा, "देख, तेरी माँ यह है।" उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की माँ को अपने घर
रखा।

ईसा की मौत

28 इसके बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा मिशन तकमील तक पहुँच चुका है तो उसने कहा, "मुझे प्यास लगी
है।" (इससे भी कलामे-मुक़द्दस की एक पेशगोई पूरी हुई।)

29 क़रीब मै के सिरके से भरा बरतन पड़ा था। उन्होंने एक इस्पंज सिरके में डुबोकर उसे ज़ूफ़े की शाख़ पर लगा
दिया और उठाकर ईसा के मुँह तक पहुँचाया। 30 यह सिरका पीने के बाद ईसा बोल उठा, "काम मुकम्मल हो गया
है।" और सर झुकाकर उसने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर दी।

ईसा का पहलू छेदा जाता है

31 फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आग़ाज़ और एक ख़ास सबत था। इसलिए यहूदी नहीं
चाहते थे कि मसलूब हुई लाशें अगले दिन तक सलीबों पर लटकी रहें। चुनाँचे उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि
वह उनकी टाँगें तुड़वाकर उन्हें सलीबों से उतारने दे। 32 तब फ़ौजियों ने आकर ईसा के साथ मसलूब किए जानेवाले
आदमियों की टाँगें तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की। 33 जब वह ईसा के पास आए तो उन्होंने देखा कि वह फ़ौत
हो चुका है, इसलिए उन्होंने उस की टाँगें न तोड़ीं। 34 इसके बजाए एक ने नेज़े से ईसा का पहलू छेद दिया। ज़ख़्म से
फ़ौरन ख़ून और पानी बह निकला। 35 (जिसने यह देखा है उसने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची है। वह जानता
है कि वह हक़ीक़त बयान कर रहा है और उस की गवाही का मक़सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ।) 36 यह यों हुआ
ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए, "उस की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।" 37 कलामे-मुक़द्दस में
यह भी लिखा है, "वह उस पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है।"

ईसा को दफ़नाया जाता है

38 बाद में अरिमतियाह के रहनेवाले यूसुफ़ ने पीलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाज़त माँगी। (यूसुफ़ ईसा
का ख़ुफ़िया शागिर्द था, क्योंकि वह यहूदियों से डरता था।) इसकी इजाज़त मिलने पर वह आया और लाश को उतार
लिया। 39 नीकुदेमुस भी साथ था, वह आदमी जो गुज़रे दिनों में रात के वक़्त ईसा से मिलने आया था। नीकुदेमुस
अपने साथ मुर और ऊद की तक़रीबन 34 किलोग्राम ख़ुशबू लेकर आया था। 40 यहूदी जनाज़े की रस्मूमात के मुताबिक़

उन्होंने लाश पर ख़ुशबू लगाकर उसे पट्टियों से लपेट दिया। 41 सलीबों के क़रीब एक बाग़ था और बाग़ में एक नई
क़ब्र थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं की गई थी। 42 उसके क़रीब होने के सबब से उन्होंने ईसा को उसमें रख दिया,
क्योंकि फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आग़ाज़ था।

20

ख़ाली क़ब्र

1 हफ़्ते का दिन गुज़र गया तो इतवार को मरियम मग्दलीनी सुबह-सवेरे क़ब्र के पास आई। अभी अंधेरा था। वहाँ
पहुँचकर उसने देखा कि क़ब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़ हटाया गया है। 2 मरियम दौड़कर शमौन पतरस और ईसा
को प्यारे शागिर्द के पास आई। उसने इत्तला दी, "वह ख़ुदावंद को क़ब्र से ले गए हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने
उसे कहाँ रख दिया है।"

3 तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत क़ब्र की तरफ़ चल पड़ा। 4 दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द ज़्यादा तेज़रफ़्तार
था। वह पहले क़ब्र पर पहुँच गया। 5 उसने झुककर अंदर झाँका तो कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह
अंदर न गया। 6 फिर शमौन पतरस उसके पीछे पहुँचकर क़ब्र में दाख़िल हुआ। उसने भी देखा कि कफ़न की पट्टियाँ
वहाँ पड़ी हैं 7 और साथ वह कपड़ा भी जिसमें ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह किया गया था और पट्टियों
से अलग पड़ा था। 8 फिर दूसरा शागिर्द जो पहले पहुँच गया था, वह भी दाख़िल हुआ। जब उसने यह देखा तो वह
ईमान लाया। 9 (लेकिन अब भी वह कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई नहीं समझते थे कि उसे मुरदों में से जी उठना है।)
10 फिर दोनों शागिर्द घर वापस चले गए।

ईसा मरियम मग्दलीनी पर ज़ाहिर होता है

11 लेकिन मरियम रो रोकर क़ब्र के सामने खड़ी रही। और रोते हुए उसने झुककर क़ब्र में झाँका 12 तो क्या देखती
है कि दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी थी, एक उसके सिरहाने और दूसरा
वहाँ जहाँ पहले उसके पाँव थे। 13 उन्होंने मरियम से पूछा, "ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है?"

उसने कहा, "वह मेरे ख़ुदावंद को ले गए हैं, और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।"

14 फिर उसने पीछे मुड़कर ईसा को वहाँ खड़े देखा, लेकिन उसने उसे न पहचाना। 15 ईसा ने पूछा, "ऐ ख़ातून, तू
क्यों रो रही है, किस को ढूँड रही है?"

यह सोचकर कि वह माली है उसने कहा, "जनाब, अगर आप उसे ले गए हैं तो मुझे बता दें कि उसे कहाँ रख दिया
है ताकि उसे ले जाऊँ।"

16 ईसा ने उससे कहा, "मरियम!"

वह उस की तरफ़ मुड़ी और बोल उठी, "रब्बूनी!" (इसका मतलब अरामी ज़बान में उस्ताद है।)

17 ईसा ने कहा, "मेरे साथ चिमटी न रह, क्योंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों के पास
जा और उन्हें बता, 'मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास'।"

18 चुनाँचे मरियम मग्दलीनी शागिर्दों के पास गई और उन्हें इत्तला दी, "मैंने ख़ुदावंद को देखा है और उसने मुझसे
यह बातें कहीं।"

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

19 उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्होंने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्योंकि वह यहूदियों से डरते
थे। अचानक ईसा उनके दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, "तुम्हारी सलामती हो," 20 और उन्हें अपने हाथों और
पहलू को दिखाया। ख़ुदावंद को देखकर वह निहायत ख़ुश हुए। 21 ईसा ने दुबारा कहा, "तुम्हारी सलामती हो! जिस
तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह मैं तुमको भेज रहा हूँ।" 22 फिर उन पर फूँककर उसने फ़रमाया, "रूहुल-क़ुद्स को
पा लो। 23 अगर तुम किसी के गुनाहों को मुआफ़ करो तो वह मुआफ़ किए जाएंगे। और अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो
तो वह मुआफ़ नहीं किए जाएंगे।"

तोमा शक करता है

24 बारह शागिर्दों में से तोमा जिसका लक़ब जुड़वाँ था ईसा के आने पर मौजूद न था। 25 चुनाँचे दूसरे शागिर्दों ने
उसे बताया, "हमने ख़ुदावंद को देखा है!" लेकिन तोमा ने कहा, "मुझे यक़ीन नहीं आता। पहले मुझे उसके हाथों में
कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उनमें अपनी उँगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उसके पहलू के ज़ख़म में डालूँ।
फिर ही मुझे यक़ीन आएगा।"

[26] एक हफ़्ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान में जमा थे। इस मरतबा तोमा भी साथ था। अगरचे दरवाज़ों पर
ताले लगे थे फिर भी ईसा उनके दरमियान आकर खड़ा हुआ। उसने कहा, "तुम्हारी सलामती हो!" [27] फिर वह तोमा
से मुख़ातिब हुआ, "अपनी उँगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू के ज़ख़म में डाल और बेएतक़ाद न हो
बल्कि ईमान रख।"

[28] तोमा ने जवाब में उससे कहा, "ऐ मेरे ख़ुदावंद! ऐ मेरे ख़ुदा!"

[29] फिर ईसा ने उसे बताया, "क्या तू इसलिए ईमान लाया है कि तूने मुझे देखा है? मुबारक हैं वह जो मुझे देखे बग़ैर
मुझ पर ईमान लाते हैं।"

इस किताब का मक़सद

[30] ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद बहुत-से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो इस किताब में दर्ज नहीं हैं।
[31] लेकिन जितने दर्ज हैं उनका मक़सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी अल्लाह का फ़रज़ंद है और
आपको इस ईमान के वसीले से उसके नाम से ज़िंदगी हासिल हो।

21

ईसा झील पर शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

[1] इसके बाद ईसा एक बार फिर अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ जब वह तिबरियास यानी गलील की झील पर थे।
यह यों हुआ। [2] कुछ शागिर्द शमौन पतरस के साथ जमा थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतनेल जो गलील के क़ाना
से था, ज़बदी के दो बेटे और मज़ीद दो शागिर्द।

[3] शमौन पतरस ने कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।"

दूसरों ने कहा, "हम भी साथ जाएँगे।" चुनाँचे वह निकलकर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी रात एक भी
मछली हाथ न आई। [4] सुबह-सवेरे ईसा झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों को मालूम नहीं था कि
वह ईसा ही है। [5] उसने उनसे पूछा, "बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?"

उन्होंने जवाब दिया, "नहीं।"

[6] उसने कहा, "अपना जाल कश्ती के दाएँ हाथ डालो, फिर तुमको कुछ मिलेगा।" उन्होंने ऐसा किया तो मछलियों
की इतनी बड़ी तादाद थी कि वह जाल कश्ती तक न ला सके।

[7] इस पर ख़ुदावंद के प्यारे शागिर्द ने पतरस से कहा, "यह तो ख़ुदावंद है।" यह सुनते ही कि ख़ुदावंद है शमौन
पतरस अपनी चादर ओढ़कर पानी में कूद पड़ा (उसने चादर को काम करने के लिए उतार लिया था।) [8] दूसरे शागिर्द
कश्ती पर सवार उसके पीछे आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर नहीं थे, तक़रीबन सौ मीटर के फ़ासले पर थे। इसलिए वह
मछलियों से भरे जाल को पानी में खींच खींचकर ख़ुश्की तक लाए। [9] जब वह कश्ती से उतरे तो देखा कि लकड़ी
के कोयलों की आग पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी है। [10] ईसा ने उनसे कहा, "उन मछलियों में से
कुछ ले आओ जो तुमने अभी पकड़ी हैं।"

[11] शमौन पतरस कश्ती पर गया और जाल को ख़ुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी मछलियों से भरा
हुआ था, तो भी वह न फटा। [12] ईसा ने उनसे कहा, "आओ, नाश्ता कर लो।" किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की
जुर्रत न की कि "आप कौन हैं?" क्योंकि वह तो जानते थे कि यह ख़ुदावंद ही है। [13] फिर ईसा आया और रोटी लेकर
उन्हें दी और इसी तरह मछली भी उन्हें खिलाई।

[14] ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार थी कि वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ।

ईसा का पतरस से सवाल

[15] नाश्ते के बाद ईसा शमौन पतरस से मुख़ातिब हुआ, "यूहन्ना के बेटे शमौन, क्या तू इनकी निसबत मुझसे ज़्यादा
मुहब्बत करता है?"

उसने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा बोला, "फिर मेरे लेलों को चरा।" [16] तब ईसा ने एक और मरतबा पूछा, "शमौन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझसे
मुहब्बत करता है?"

उसने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा बोला, "फिर मेरी भेड़ों की गल्लाबानी कर।" [17] तीसरी बार ईसा ने उससे पूछा, "शमौन यूहन्ना के बेटे, क्या
तू मुझे प्यार करता है?"

तीसरी दफ़ा यह सवाल सुनने से पतरस को बड़ा दुख हुआ। उसने कहा, "ख़ुदावंद, आपको सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा ने उससे कहा, "मेरी भेड़ों को चरा।

18 मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू ख़ुद अपनी कमर बाँधकर जहाँ जी चाहता घुमता-फिरता था।
लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँधकर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा
दिल नहीं करेगा।" 19 (ईसा की यह बात इस तरफ़ इशारा था कि पतरस किस क़िस्म की मौत से अल्लाह को जलाल
देगा।) फिर उसने उसे बताया, "मेरे पीछे चल।"

ईसा और दूसरा शागिर्द

20 पतरस ने मुड़कर देखा कि जो शागिर्द ईसा को प्यारा था वह उनके पीछे चल रहा है। यह वही शागिर्द था जिसने
शाम के खाने के दौरान ईसा की तरफ़ सर झुकाकर पूछा था, "ख़ुदावंद, कौन आपको दुश्मन के हवाले करेगा?"
21 अब उसे देखकर पतरस ने सवाल किया, "ख़ुदावंद, इसके साथ क्या होगा?"

22 ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे पीछे चलता रह।"

23 नतीजे में भाइयों में यह ख़याल फैल गया कि यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह बात नहीं की थी। उसने सिर्फ़ यह कहा था, "अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या?"

24 यह वह शागिर्द है जिसने इन बातों की गवाही देकर इन्हें क़लमबंद कर दिया है। और हम जानते हैं कि उस की गवाही सच्ची है।

ख़ुलासा

25 ईसा ने इसके अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उसका हर काम क़लमबंद किया जाता तो मेरे ख़याल में पूरी दुनिया में यह किताबें रखने की गुंजाइश न होती।

आमाल

1 मुअज़्ज़ज़ थियुफ़िलुस, पहली किताब में मैंने सब कुछ बयान किया जो ईसा ने शुरू से लेकर 2 उस दिन तक
किया और सिखाया, जब उसे आसमान पर उठाया गया। जाने से पहले उसने अपने चुने हुए रसूलों को रूहुल-क़ुद्स
की मारिफ़त मज़ीद हिदायात दीं। 3 अपने दुख उठाने और मौत सहने के बाद उसने अपने आपको ज़ाहिर करके उन्हें
बहुत-सी दलीलों से क़ायल किया कि वह वाक़ई ज़िंदा है। वह चालीस दिन के दौरान उन पर ज़ाहिर होता और उन्हें
अल्लाह की बादशाही के बारे में बताता रहा। 4 जब वह अभी उनके साथ था उसने उन्हें हुक्म दिया, "यरूशलम को
न छोड़ना बल्कि इस इंतज़ार में यहीं ठहरो कि बाप का वादा पूरा हो जाए, वह वादा जिसके बारे में मैंने तुमको आगाह
किया है। 5 क्योंकि यहया ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन तुमको थोड़े दिनों के बाद रूहुल-क़ुद्स से बपतिस्मा
दिया जाएगा।"

ईसा को उठाया जाता है

6 जो वहाँ जमा थे उन्होंने उससे पूछा, "ख़ुदावंद, क्या आप इसी वक़्त इसराईल के लिए उस की बादशाही दुबारा
क़ायम करेंगे?"
7 ईसा ने जवाब दिया, "यह जानना तुम्हारा काम नहीं है बल्कि सिर्फ़ बाप का जो ऐसे औक़ात और तारीख़ें मुक़र्रर
करने का इख़्तियार रखता है। 8 लेकिन तुम्हें रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत मिलेगी जो तुम पर नाज़िल होगा। फिर तुम
यरूशलम, पूरे यहूदिया और सामरिया बल्कि दुनिया की इंतहा तक मेरे गवाह होगे।" 9 यह कहकर वह उनके देखते
देखते उठा लिया गया। और एक बादल ने उसे उनकी नज़रों से ओझल कर दिया।
10 वह अभी आसमान की तरफ़ देख ही रहे थे कि अचानक दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। दोनों सफ़ेद
लिबास पहने हुए थे। 11 उन्होंने कहा, "गलील के मर्दो, आप क्यों खड़े आसमान की तरफ़ देख रहे हैं? यही ईसा
जिसे आपके पास से आसमान पर उठाया गया है उसी तरह वापस आएगा जिस तरह आपने उसे ऊपर जाते हुए देखा
है।"

यहूदाह का जा-नशीन

12 फिर वह ज़ैतून के पहाड़ से यरूशलम शहर वापस चले गए। (यह पहाड़ शहर से तक़रीबन एक किलोमीटर दूर
है।) 13 वहाँ पहुँचकर वह उस बालाख़ाने में दाख़िल हुए जिसमें वह ठहरे हुए थे, यानी पतरस, यूहन्ना, याक़ूब और
अंदरियास, फ़िलिप्पुस और तोमा, बरतुलमाई और मत्ती, याक़ूब बिन हलफ़ई, शमौन मुजाहिद और यहूदाह बिन याक़ूब।
14 यह सब यकदिल होकर दुआ में लगे रहे। कुछ औरतें, ईसा की माँ मरियम और उसके भाई भी साथ थे।
15 उन दिनों में पतरस भाइयों में खड़ा हुआ। उस वक़्त तक़रीबन 120 लोग जमा थे। उसने कहा, 16 "भाइयो,
लाज़िम था कि कलामे-मुक़द्दस की वह पेशगोई पूरी हो जो रूहुल-क़ुद्स ने दाऊद की मारिफ़त यहूदाह के बारे में की।
यहूदाह उनका राहनुमा बन गया जिन्होंने ईसा को गिरिफ़्तार किया, 17 गो उसे हममें शुमार किया जाता था और वह
इसी ख़िदमत में हमारे साथ शरीक था।"
18 (जो पैसे यहूदाह को उसके ग़लत काम के लिए मिल गए थे उनसे उसने एक खेत ख़रीद लिया था। वहाँ वह सर
के बल गिर गया, उसका पेट फट गया और उस की तमाम अंतड़ियाँ बाहर निकल पड़ीं। 19 इसका चर्चा यरूशलम
के तमाम बाशिंदों में फैल गया, इसलिए यह खेत उनकी मादरी ज़बान में हक़ल-दमा के नाम से मशहूर हुआ जिसका
मतलब है ख़ून का खेत।)
20 पतरस ने अपनी बात जारी रखी, "यही बात ज़बूर की किताब में लिखी है, 'उस की रिहाइशगाह सुनसान हो
जाए, कोई उसमें आबाद न हो।' यह भी लिखा है, 'कोई और उस की ज़िम्मादारी उठाए।' 21 चुनाँचे अब ज़रूरी है कि
हम यहूदाह की जगह किसी और को चुन लें। यह शख़्स उन मर्दों में से एक हो जो उस पूरे वक़्त के दौरान हमारे साथ
सफ़र करते रहे जब ख़ुदावंद ईसा हमारे साथ था, 22 यानी उसके यहया के हाथ से बपतिस्मा लेने से लेकर उस वक़्त
तक जब उसे हमारे पास से उठाया गया। लाज़िम है कि उनमें से एक हमारे साथ ईसा के जी उठने का गवाह हो।"
23 चुनाँचे उन्होंने दो आदमी पेश किए, यूसुफ़ जो बरसब्बा कहलाता था (उसका दूसरा नाम यूसतुस था) और
मत्तियाह। 24 फिर उन्होंने दुआ की, "ऐ ख़ुदावंद, तू हर एक के दिल से वाक़िफ़ है। हम पर ज़ाहिर कर कि तूने इन
दोनों में से किस को चुना है 25 ताकि वह उस ख़िदमत की ज़िम्मादारी उठाए जो यहूदाह छोड़कर वहाँ चला गया जहाँ

उसे जाना ही था।” 26 यह कहकर उन्होंने दोनों का नाम लेकर क़ुरा डाला तो मत्तियाह का नाम निकला। लिहाज़ा उसे
भी ग्यारह रसूलों में शामिल कर लिया गया।

2

रूहुल-क़ुद्स की आमद

1 फिर ईदे-पंतिकुस्त का दिन आया। सब एक जगह जमा थे 2 कि अचानक आसमान से ऐसी आवाज़ आई जैसे
शदीद आँधी चल रही हो। पूरा मकान जिसमें वह बैठे थे इस आवाज़ से गूँज उठा। 3 और उन्हें शोले की लौएँ जैसी नज़र
आईं जो अलग अलग होकर उनमें से हर एक पर उतरकर ठहर गईं। 4 सब रूहुल-क़ुद्स से भर गए और मुख़्तलिफ़
ग़ैरमुल्की ज़बानों में बोलने लगे, हर एक उस ज़बान में जो बोलने की रूहुल-क़ुद्स ने उसे तौफ़ीक़ दी।

5 उस वक़्त यरूशलम में ऐसे ख़ुदातरस यहूदी ठहरे हुए थे जो आसमान तले की हर क़ौम में से थे। 6 जब यह आवाज़
सुनाई दी तो एक बड़ा हुजूम जमा हुआ। सब घबरा गए क्योंकि हर एक ने ईमानदारों को अपनी मादरी ज़बान में बोलते
सुना। 7 सख़्त हैरतज़दा होकर वह कहने लगे, “क्या यह सब गलील के रहनेवाले नहीं हैं? 8 तो फिर यह किस तरह
हो सकता है कि हममें से हर एक उन्हें अपनी मादरी ज़बान में बातें करते सुन रहा है 9 जबकि हमारे ममालिक यह हैं :
पारथिया, मादिया, ऐलाम, मसोपुतामिया, यहूदिया, कप्पदुकिया, पुंतुस, आसिया, 10 फ़रूगिया, पंफ़ीलिया, मिसर और
लिबिया का वह इलाक़ा जो कुरेन के इर्दगिर्द है। रोम से भी लोग मौजूद हैं। 11 यहाँ यहूदी भी हैं और ग़ैरयहूदी नौमुरीद
भी, क्रेते के लोग और अरब के बाशिंदे भी। और अब हम सबके सब इनको अपनी अपनी ज़बान में अल्लाह के अज़ीम
कामों का ज़िक्र करते सुन रहे हैं।” 12 सब दंग रह गए। उलझन में पड़कर वह एक दूसरे से पूछने लगे, “इसका क्या
मतलब है?”

13 लेकिन कुछ लोग उनका मज़ाक़ उड़ाकर कहने लगे, “यह बस नई मै पीकर नशे में धुत हो गए हैं।”

पतरस का पैग़ाम

14 फिर पतरस बाक़ी ग्यारह रसूलों समेत खड़ा होकर ऊँची आवाज़ से उनसे मुख़ातिब हुआ, “सुनें, यहूदी भाइयो
और यरूशलम के तमाम रहनेवालो! जान लें और ग़ौर से मेरी बात सुन लें! 15 आपका ख़याल है कि यह लोग नशे
में हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। देखें, अभी तो सुबह के नौ बजे का वक़्त है। 16 अब वह कुछ हो रहा है जिसकी पेशगोई
योएल नबी ने की थी,

17 ‘अल्लाह फ़रमाता है कि आख़िरी दिनों में
मैं अपने रूह को तमाम इनसानों पर उंडेल दूँगा।
तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे,
तुम्हारे नौजवान रोयाएँ और तुम्हारे बुज़ुर्ग ख़ाब देखेंगे।
18 उन दिनों में
मैं अपने रूह को अपने ख़ादिमों और ख़ादिमाओं पर भी उंडेल दूँगा,
और वह नबुव्वत करेंगे।
19 मैं ऊपर आसमान पर मोजिज़े दिखाऊँगा
और नीचे ज़मीन पर इलाही निशान ज़ाहिर करूँगा,
ख़ून, आग और धुएँ के बादल।
20 सूरज तारीक हो जाएगा,
चाँद का रंग ख़ून-सा हो जाएगा,
और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन आएगा।
21 उस वक़्त जो भी रब का नाम लेगा
नजात पाएगा।’

22 इसराईल के मर्दो, मेरी बात सुनें! अल्लाह ने आपके सामने ही ईसा नासरी की तसदीक़ की, क्योंकि उसने उसके
वसीले से आपके दरमियान अजूबे, मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए। आप ख़ुद इस बात से वाक़िफ़ हैं। 23 लेकिन
अल्लाह को पहले ही इल्म था कि क्या होना है, क्योंकि उसने ख़ुद अपनी मरज़ी से मुक़र्रर किया था कि ईसा को
दुश्मन के हवाले कर दिया जाए। चुनाँचे आपने बेदीन लोगों के ज़रीए उसे सलीब पर चढ़वाकर क़त्ल किया। 24 लेकिन
अल्लाह ने उसे मौत की अज़ियतनाक गिरिफ़्त से आज़ाद करके ज़िंदा कर दिया, क्योंकि मुमकिन ही नहीं था कि मौत
उसे अपने क़ब्ज़े में रखे। 25 चुनाँचे दाऊद ने उसके बारे में कहा,

‘रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहा।

वह मेरे दहने हाथ रहता है
ताकि मैं न डगमगाऊँ।
26 इसलिए मेरा दिल शादमान है,
और मेरी ज़बान ख़ुशी के नारे लगाती है।
हाँ, मेरा बदन पुरउम्मीद ज़िंदगी गुज़ारेगा।
27 क्योंकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा,
और न अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा।
28 तूने मुझे ज़िंदगी की राहों से आगाह कर दिया है,
और तू अपने हुज़ूर मुझे ख़ुशी से सरशार करेगा।’

29 मेरे भाइयो, अगर इजाज़त हो तो मैं आपको दिलेरी से अपने बुज़ुर्ग दाऊद के बारे में कुछ बताऊँ। वह तो फ़ौत
होकर दफ़नाया गया और उस की क़ब्र आज तक हमारे दरमियान मौजूद है। 30 लेकिन वह नबी था और जानता था कि
अल्लाह ने क़सम खाकर मुझसे वादा किया है कि वह मेरी औलाद में से एक को मेरे तख़्त पर बिठाएगा। 31 मज़कूरा
आयात में दाऊद मुस्तक़बिल में देखकर मसीह के जी उठने का ज़िक्र कर रहा है, यानी कि न उसे पाताल में छोड़ा गया,
न उसका बदन गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचा। 32 अल्लाह ने इसी ईसा को ज़िंदा कर दिया है और हम सब इसके
गवाह हैं। 33 अब उसे सरफ़राज़ करके ख़ुदा के दहने हाथ बिठाया गया और बाप की तरफ़ से उसे मौऊदा रूहुल-क़ुद्स
मिल गया है। इसी को उसने हम पर उंडेल दिया, जिस तरह आप देख और सुन रहे हैं। 34 दाऊद ख़ुद तो आसमान पर
नहीं चढ़ा, तो भी उसने फ़रमाया,

‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ
35 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।’

36 चुनाँचे पूरा इसराईल यक़ीन जाने कि जिस ईसा को आपने मसलूब किया है उसे ही अल्लाह ने ख़ुदावंद और
मसीह बना दिया है।”

37 पतरस की यह बातें सुनकर लोगों के दिल छिद गए। उन्होंने पतरस और बाक़ी रसूलों से पूछा, “भाइयो, फिर
हम क्या करें?”

38 पतरस ने जवाब दिया, “आपमें से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह मुआफ़
कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। 39 क्योंकि यह देने का वादा आपसे और आपके
बच्चों से किया गया है, बल्कि उनसे भी जो दूर के हैं, उन सबसे जिन्हें रब हमारा ख़ुदा अपने पास बुलाएगा।”

40 पतरस ने मज़ीद बहुत-सी बातों से उन्हें नसीहत की और समझाया कि “इस टेढ़ी नसल से निकलकर नजात
पाएँ।” 41 जिन्होंने पतरस की बात क़बूल की उनका बपतिस्मा हुआ। यों उस दिन जमात में तक़रीबन 3,000 अफ़राद
का इज़ाफ़ा हुआ। 42 यह ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफ़ाक़त रखने और रिफ़ाक़ती खानों और दुआओं में शरीक
होते रहे।

ईमानदारों की हैरतअंगेज़ ज़िंदगी

43 सब पर ख़ौफ़ छा गया और रसूलों की तरफ़ से बहुत-से मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए गए। 44 जो भी ईमान
लाते थे वह एक जगह जमा होते थे। उनकी हर चीज़ मुश्तरका होती थी। 45 अपनी मिलकियत और माल फ़रोख़्त
करके उन्होंने हर एक को उस की ज़रूरत के मुताबिक़ दिया। 46 रोज़ाना वह यकदिली से बैतुल-मुक़द्दस में जमा होते
रहे। साथ साथ वह मसीह की याद में अपने घरों में रोटी तोड़ते, बड़ी ख़ुशी और सादगी से रिफ़ाक़ती खाना खाते
47 और अल्लाह की तमजीद करते रहे। उस वक़्त वह तमाम लोगों के मंज़ूरे-नज़र थे। और ख़ुदावंद रोज़ बरोज़ जमात
में नजातयाफ़्ता लोगों का इज़ाफ़ा करता रहा।

3

लँगड़े आदमी की शफ़ा

1 एक दोपहर पतरस और यूहन्ना दुआ करने के लिए बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ चल पड़े। तीन बज गए थे। 2 उस
वक़्त लोग एक पैदाइशी लँगड़े को उठाकर वहाँ ला रहे थे। रोज़ाना उसे सहन के उस दरवाज़े के पास लाया जाता था जो
‘ख़ूबसूरत दरवाज़ा’ कहलाता था ताकि वह बैतुल-मुक़द्दस के सहनों में दाख़िल होनेवालों से भीक माँग सके। 3 पतरस
और यूहन्ना बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल होनेवाले थे तो लँगड़ा उनसे भीक माँगने लगा। 4 पतरस और यूहन्ना ग़ौर से उस

की तरफ़ देखने लगे। फिर पतरस ने कहा, "हमारी तरफ़ देखें।" 5 इस तवक़्क़ो से कि उसे कुछ मिलेगा लँगड़ा उनकी
तरफ़ मुतवज्जिह हुआ। 6 लेकिन पतरस ने कहा, "मेरे पास न तो चाँदी है, न सोना, लेकिन जो कुछ है वह आपको दे
देता हूँ। नासरत के ईसा मसीह के नाम से उठें और चलें-फिरें!" 7 उसने उसका दहना हाथ पकड़कर उसे खड़ा किया।
उसी वक़्त लँगड़े के पाँव और टख़ने मज़बूत हो गए। 8 वह उछलकर खड़ा हुआ और चलने-फिरने लगा। फिर वह
चलते, कूदते और अल्लाह की तमजीद करते हुए उनके साथ बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल हुआ। 9 और तमाम लोगों ने
उसे चलते-फिरते और अल्लाह की तमजीद करते हुए देखा। 10 जब उन्होंने जान लिया कि यह वही आदमी है जो
ख़ूबसूरत नामी दरवाज़े पर बैठा भीक माँगा करता था तो वह उस की तबदीली देखकर दंग रह गए।

बैतुल-मुक़द्दस में पतरस का पैग़ाम

11 वह सब दौड़कर सुलेमान के बरामदे में आए जहाँ भीक माँगनेवाला अब तक पतरस और यूहन्ना से लिपटा हुआ
था। 12 यह देखकर पतरस उनसे मुख़ातिब हुआ, "इसराईल के हज़रात, आप यह देखकर क्यों हैरान हैं? आप क्यों
घूर घूरकर हमारी तरफ़ देख रहे हैं गोया हमने अपनी ज़ाती ताक़त या दीनदारी के बाइस यह किया है कि यह आदमी
चल-फिर सके? 13 यह हमारे बापदादा के ख़ुदा, इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के ख़ुदा की तरफ़ से है जिसने अपने
बंदे ईसा को जलाल दिया है। यह वही ईसा है जिसे आपने दुश्मन के हवाले करके पीलातुस के सामने रद्द किया, अगरचे
वह उसे रिहा करने का फ़ैसला कर चुका था। 14 आपने उस क़ुद्दूस और रास्तबाज़ को रद्द करके तक़ाज़ा किया कि
पीलातुस उसके एवज़ एक क़ातिल को रिहा करके आपको दे दे। 15 आपने ज़िंदगी के सरदार को क़त्ल किया, लेकिन
अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। हम इस बात के गवाह हैं। 16 आप तो इस आदमी से वाक़िफ़ हैं जिसे देख
रहे हैं। अब वह ईसा के नाम पर ईमान लाने से बहाल हो गया है, क्योंकि जो ईमान ईसा के ज़रीए मिलता है उसी ने इस
आदमी को आपके सामने पूरी सेहतमंदी अता की।

17 मेरे भाइयो, मैं जानता हूँ कि आप और आपके राहनुमाओं को सहीह इल्म नहीं था, इसलिए आपने ऐसा किया।
18 लेकिन अल्लाह ने वह कुछ पूरा किया जिसकी पेशगोई उसने तमाम नबियों की मारिफ़त की थी, यानी यह कि
उसका मसीह दुख उठाएगा। 19 अब तौबा करें और अल्लाह की तरफ़ रुजू लाएँ ताकि आपके गुनाहों को मिटाया जाए।
20 फिर आपको रब के हुज़ूर से ताज़गी के दिन मुयस्सर आएँगे और वह दुबारा ईसा यानी मसीह को भेज देगा जिसे
आपके लिए मुक़र्रर किया गया है। 21 लाज़िम है कि वह उस वक़्त तक आसमान पर रहे जब तक अल्लाह सब कुछ
बहाल न कर दे, जिस तरह वह इब्तिदा से अपने मुक़द्दस नबियों की ज़बानी फ़रमाता आया है। 22 क्योंकि मूसा ने
कहा, 'रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। जो भी बात वह कहे उस की
सुनना। 23 जो नहीं सुनेगा उसे मिटाकर क़ौम से निकाल दिया जाएगा।' 24 और समुएल से लेकर हर नबी ने इन दिनों
की पेशगोई की है। 25 आप तो इन नबियों की औलाद और उस अहद के वारिस हैं जो अल्लाह ने आपके बापदादा से
क़ायम किया था, क्योंकि उसने इब्राहीम से कहा था, 'तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।' 26 जब
अल्लाह ने अपने बंदे ईसा को बरपा किया तो पहले उसे आपके पास भेज दिया ताकि वह आपमें से हर एक को उस
की बुरी राहों से फेरकर बरकत दे।"

4

पतरस और यूहन्ना यहूदी अदालते-आलिया के सामने

1 पतरस और यूहन्ना लोगों से बात कर ही रहे थे कि इमाम, बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान और सदूक़ी
उनके पास पहुँचे। 2 वह नाराज़ थे कि रसूल ईसा के जी उठने की मुनादी करके लोगों को मुरदों में से जी उठने की
तालीम दे रहे हैं। 3 उन्होंने उन्हें गिरिफ़्तार करके अगले दिन तक जेल में डाल दिया, क्योंकि शाम हो चुकी थी।
4 लेकिन जिन्होंने उनका पैग़ाम सुन लिया था उनमें से बहुत-से लोग ईमान लाए। यों ईमानदारों में मर्दों की तादाद
बढ़कर तक़रीबन 5,000 तक पहुँच गई।

5 अगले दिन यरूशलम में यहूदी अदालते-आलिया के सरदारों, बुज़ुर्गों और शरीअत के उलमा का इजलास
मुनअक़िद हुआ। 6 इमामे-आज़म हन्ना और इसी तरह कायफ़ा, यूहन्ना, सिकंदर और इमामे-आज़म के ख़ानदान
के दीगर मर्द भी शामिल थे। 7 उन्होंने दोनों को अपने दरमियान खड़ा करके पूछा, "तुमने यह काम किस क़ुव्वत और
नाम से किया?"

8 पतरस ने रूहुल-क़ुद्स से मामूर होकर उनसे कहा, "क़ौम के राहनुमाओ और बुज़ुर्गो, 9 आज हमारी पूछ-गछ
की जा रही है कि हमने माज़ूर आदमी पर रहम का इज़हार किसके वसीले से किया कि उसे शफ़ा मिल गई है। 10 तो
फिर आप सब और पूरी क़ौम इसराईल जान ले कि यह नासरत के ईसा मसीह के नाम से हुआ है, जिसे आपने मसलूब

किया और जिसे अल्लाह ने मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। यह आदमी उसी के वसीले से सेहत पाकर यहाँ आपके सामने
खड़ा है। 11 ईसा वह पत्थर है जिसके बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, 'जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द
किया वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।' और आप ही ने उसे रद्द कर दिया है। 12 किसी दूसरे के वसीले से नजात
हासिल नहीं होती, क्योंकि आसमान के तले हम इनसानों को कोई और नाम नहीं बख़्शा गया जिसके वसीले से हम
नजात पा सकें।"

13 पतरस और यूहन्ना की बातें सुनकर लोग हैरान हुए क्योंकि वह दिलेरी से बात कर रहे थे अगरचे वह न तो
आलिम थे, न उन्होंने शरीअत की ख़ास तालीम पाई थीं। साथ साथ सुननेवालों ने यह भी जान लिया कि दोनों ईसा
के साथी हैं। 14 लेकिन चूँकि वह अपनी आँखों से उस आदमी को देख रहे थे जो शफ़ा पाकर उनके साथ खड़ा था
इसलिए वह इसके ख़िलाफ़ कोई बात न कर सके। 15 चुनाँचे उन्होंने उन दोनों को इजलास में से बाहर जाने को कहा
और आपस में सलाह-मशवरा करने लगे, 16 "हम इन लोगों के साथ क्या सुलूक करें? बात वाज़िह है कि उनके ज़रीए
एक इलाही निशान दिखाया गया है। इसका यरूशलम के तमाम बाशिंदों को इल्म हुआ है। हम इसका इनकार नहीं कर
सकते। 17 लेकिन लाज़िम है कि उन्हें धमकी देकर हुक्म दें कि वह किसी भी शख़्स से यह नाम लेकर बात न करें,
वरना यह मामला क़ौम में मज़ीद फैल जाएगा।"

18 चुनाँचे उन्होंने दोनों को बुलाकर हुक्म दिया कि वह आइंदा ईसा के नाम से न कभी बोलें और न तालीम दें।

19 लेकिन पतरस और यूहन्ना ने जवाब में कहा, "आप ख़ुद फ़ैसला कर लें, क्या यह अल्लाह के नज़दीक ठीक है
कि हम उस की निसबत आपकी बात मानें? 20 मुमकिन ही नहीं कि जो कुछ हमने देख और सुन लिया है उसे दूसरों
को सुनाने से बाज़ रहें।"

21 तब इजलास के मेंबरान ने दोनों को मज़ीद धमकियाँ देकर छोड़ दिया। वह फ़ैसला न कर सके कि क्या सज़ा दें,
क्योंकि तमाम लोग पतरस और यूहन्ना के इस काम की वजह से अल्लाह की तमजीद कर रहे थे। 22 क्योंकि जिस
आदमी को मोजिज़ाना तौर पर शफ़ा मिली थी वह चालीस साल से ज़्यादा लँगड़ा रहा था।

दिलेरी के लिए दुआ

23 उनकी रिहाई के बाद पतरस और यूहन्ना अपने साथियों के पास वापस गए और सब कुछ सुनाया जो राहनुमा
इमामों और बुज़ुर्गों ने उन्हें बताया था। 24 यह सुनकर तमाम ईमानदारों ने मिलकर ऊँची आवाज़ से दुआ की, "ऐ
आक़ा, तूने आसमानो-ज़मीन और समुंदर को और जो कुछ उनमें है ख़लक़ किया है। 25 और तूने अपने ख़ादिम हमारे
बाप दाऊद के मुँह से रूहुल-क़ुद्स की मारिफ़त कहा,

'अक़वाम क्यों तैश में आ गई हैं?
उम्मतें क्यों बेकार साज़िशें कर रही हैं?
26 दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए,
हुक्मरान रब और उसके मसीह के ख़िलाफ़ जमा हो गए हैं।'

27 और वाक़ई यही कुछ इस शहर में हुआ। हेरोदेस अंतिपास, पुंतियुस पीलातुस, ग़ैरयहूदी और यहूदी सब तेरे
मुक़द्दस ख़ादिम ईसा के ख़िलाफ़ जमा हुए जिसे तूने मसह किया था। 28 लेकिन जो कुछ उन्होंने किया वह तूने अपनी
क़ुदरत और मरज़ी से पहले ही से मुक़र्रर किया था। 29 ऐ रब, अब उनकी धमकियों पर ग़ौर कर। अपने ख़ादिमों को
अपना कलाम सुनाने की बड़ी दिलेरी अता फ़रमा। 30 अपनी क़ुदरत का इज़हार कर ताकि हम तेरे मुक़द्दस ख़ादिम ईसा
के नाम से शफ़ा, इलाही निशान और मोजिज़े दिखा सकें।"

31 दुआ के इख़्तिताम पर वह जगह हिल गई जहाँ वह जमा थे। सब रूहुल-क़ुद्स से मामूर हो गए और दिलेरी से
अल्लाह का कलाम सुनाने लगे।

ईमानदारों की मुश्तरका मिलकियत

32 ईमानदारों की पूरी जमात यकदिल थी। किसी ने भी अपनी मिलकियत की किसी चीज़ के बारे में नहीं कहा कि
यह मेरी है बल्कि उनकी हर चीज़ मुश्तरका थी। 33 और रसूल बड़े इख़्तियार के साथ ख़ुदावंद ईसा के जी उठने की
गवाही देते रहे। अल्लाह की बड़ी मेहरबानी उन सब पर थी। 34 उनमें से कोई भी ज़रूरतमंद नहीं था, क्योंकि जिसके
पास भी ज़मीनें या मकान थे उसने उन्हें फ़रोख़्त करके रक़म 35 रसूलों के पाँवों में रख दी। यों जमाशुदा पैसों में से हर
एक को उतने दिए जाते जितनों की उसे ज़रूरत होती थी।

36 मसलन यूसुफ़ नामी एक आदमी था जिसका नाम रसूलों ने बरनबास (हौसलाअफ़्ज़ाई का बेटा) रखा था। वह
लावी क़बीले से और जज़ीराए-क़ुबरुस का रहनेवाला था। 37 उसने अपना एक खेत फ़रोख़्त करके पैसे रसूलों के पाँवों
में रख दिए।

5

हननियाह और सफ़ीरा

1 एक और आदमी था जिसने अपनी बीवी के साथ मिलकर अपनी कोई ज़मीन बेच दी। उनके नाम हननियाह और
सफ़ीरा थे। 2 लेकिन हननियाह पूरी रक़म रसूलों के पास न लाया बल्कि उसमें से कुछ अपने लिए रख छोड़ा और
बाक़ी रसूलों के पाँवों में रख दिया। उस की बीवी भी इस बात से वाक़िफ़ थी। 3 लेकिन पतरस ने कहा, "हननियाह,
इबलीस ने आपके दिल को यों क्यों भर दिया है कि आपने रूहुल-क़ुद्स से झूट बोला है? क्योंकि आपने ज़मीन की
रक़म के कुछ पैसे अपने पास रख लिए हैं। 4 क्या यह ज़मीन फ़रोख़्त करने से पहले आपकी नहीं थी? और उसे
बेचकर क्या आप पैसे जैसे चाहते इस्तेमाल नहीं कर सकते थे? आपने क्यों अपने दिल में यह ठान लिया? आपने हमें
नहीं बल्कि अल्लाह को धोका दिया है।"

5 यह सुनते ही हननियाह फ़र्श पर गिरकर मर गया। और तमाम सुननेवालों पर बड़ी दहशत तारी हो गई। 6 जमात
के नौजवानों ने उठकर लाश को कफ़न में लपेट दिया और उसे बाहर ले जाकर दफ़न कर दिया।

7 तक़रीबन तीन घंटे गुज़र गए तो उस की बीवी अंदर आई। उसे मालूम न था कि शौहर को क्या हुआ है।

8 पतरस ने उससे पूछा, "मुझे बताएँ, क्या आपको अपनी ज़मीन के लिए इतनी ही रक़म मिली थी?"

सफ़ीरा ने जवाब दिया, "जी, इतनी ही रक़म थी।"

9 पतरस ने कहा, "क्यों आप दोनों रब के रूह को आज़माने पर मुत्तफ़िक़ हुए? देखो, जिन्होंने आपके ख़ाविंद को
दफ़नाया है वह दरवाज़े पर खड़े हैं और आपको भी उठाकर बाहर ले जाएंगे।" 10 उसी लमहे सफ़ीरा पतरस के पाँवों
में गिरकर मर गई। नौजवान अंदर आए तो उस की लाश देखकर उसे भी बाहर ले गए और उसके शौहर के पास दफ़न
कर दिया। 11 पूरी जमात बल्कि हर सुननेवाले पर बड़ा ख़ौफ़ तारी हो गया।

मोजिज़े

12 रसूलों की मारिफ़त अवाम में बहुत-से इलाही निशान और मोजिज़े ज़ाहिर हुए। उस वक़्त तमाम ईमानदार
यकदिली से बैतुल-मुक़द्दस में सुलेमान के बरामदे में जमा हुआ करते थे। 13 बाक़ी लोग उनसे क़रीबी ताल्लुक़ रखने की
जुर्रत नहीं करते थे, अगरचे अवाम उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे। 14 तो भी ख़ुदावंद पर ईमान रखनेवाले मर्दो-ख़वातीन
की तादाद बढ़ती गई। 15 लोग अपने मरीज़ों को चारपाइयों और चटाइयों पर रखकर सड़कों पर लाते थे ताकि जब
पतरस वहाँ से गुज़रे तो कम अज़ कम उसका साया किसी न किसी पर पड़ जाए। 16 बहुत-से लोग यरूशलम के इर्दगिर्द
की आबादियों से भी अपने मरीज़ों और बदरूह-गिरिफ़्ता अज़ीज़ों को लाते, और सब शफ़ा पाते थे।

रसूलों की ईज़ारसानी

17 फिर इमामे-आज़म सदूक़ी फ़िरक़े के तमाम साथियों के साथ हरकत में आया। हसद से जलकर 18 उन्होंने
रसूलों को गिरिफ़्तार करके अवामी जेल में डाल दिया। 19 लेकिन रात को रब का एक फ़रिश्ता क़ैदख़ाने के दरवाज़ों
को खोलकर उन्हें बाहर लाया। उसने कहा, 20 "जाओ, बैतुल-मुक़द्दस में खड़े होकर लोगों को इस नई ज़िंदगी से
मुताल्लिक़ सब बातें सुनाओ।" 21 फ़रिश्ते की सुनकर रसूल सुबह-सवेरे बैतुल-मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगे।

अब ऐसा हुआ कि इमामे-आज़म अपने साथियों समेत पहुँचा और यहूदी अदालते-आलिया का इजलास मुनअक़िद
किया। इसमें इसराईल के तमाम बुज़ुर्ग शरीक हुए। फिर उन्होंने अपने मुलाज़िमों को क़ैदख़ाने में भेज दिया ताकि रसूलों
को लाकर उनके सामने पेश किया जाए। 22 लेकिन जब वह वहाँ पहुँचे तो पता चला कि रसूल जेल में नहीं हैं। वह
वापस आए और कहने लगे, 23 "जब हम पहुँचे तो जेल बड़ी एहतियात से बंद थी और दरवाज़ों पर पहरेदार खड़े थे।
लेकिन जब हम दरवाज़ों को खोलकर अंदर गए तो वहाँ कोई नहीं था!" 24 यह सुनकर बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों
का कप्तान और राहनुमा इमाम बड़ी उलझन में पड़ गए और सोचने लगे कि अब क्या होगा? 25 इतने में कोई आकर
कहने लगा, "बात सुनें, जिन आदमियों को आपने जेल में डाला था वह बैतुल-मुक़द्दस में खड़े लोगों को तालीम दे
रहे हैं।" 26 तब बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान अपने मुलाज़िमों के साथ रसूलों के पास गया और उन्हें लाया,
लेकिन ज़बरदस्ती नहीं, क्योंकि वह डरते थे कि जमाशुदा लोग उन्हें संगसार न कर दें।

27 चुनाँचे उन्होंने रसूलों को लाकर इजलास के सामने खड़ा किया। इमामे-आज़म उनसे मुख़ातिब हुआ, 28 "हमने
तो तुमको सख़्ती से मना किया था कि इस आदमी का नाम लेकर तालीम न दो। इसके बरअक्स तुमने न सिर्फ़ अपनी
तालीम यरूशलम की हर जगह तक पहुँचा दी है बल्कि हमें इस आदमी की मौत के ज़िम्मादार भी ठहराना चाहते हो।"

29 पतरस और बाक़ी रसूलों ने जवाब दिया, "लाज़िम है कि हम पहले अल्लाह की सुनें, फिर इनसान की।
30 हमारे बापदादा के ख़ुदा ने ईसा को ज़िंदा कर दिया, उसी शख़्स को जिसे आपने सलीब पर चढ़वाकर मार डाला
था। 31 अल्लाह ने उसी को हुक्मरान और नजातदहिंदा की हैसियत से सरफ़राज़ करके अपने दहने हाथ बिठा लिया

ताकि वह इसराईल को तौबा और गुनाहों की मुआफ़ी का मौक़ा फ़राहम करे। 32 हम ख़ुद इन बातों के गवाह हैं और
रूहुल-क़ुद्स भी, जिसे अल्लाह ने अपने फ़रमाँबरदारों को दे दिया है।"

33 यह सुनकर अदालत के लोग तैश में आकर उन्हें क़त्ल करना चाहते थे। 34 लेकिन एक फ़रीसी आलिम इजलास
में खड़ा हुआ जिसका नाम जमलियेल था। पूरी क़ौम में वह इज़्ज़तदार था। उसने हुक्म दिया कि रसूलों को थोड़ी देर के
लिए इजलास से निकाल दिया जाए। 35 फिर उसने कहा, "मेरे इसराईली भाइयो, ग़ौर से सोचें कि आप इन आदमियों
के साथ क्या करेंगे। 36 क्योंकि कुछ देर हुई थियूदास उठकर कहने लगा कि मैं कोई ख़ास शख़्स हूँ। तक़रीबन 400
आदमी उसके पीछे लग गए। लेकिन उसे क़त्ल किया गया और उसके पैरोकार बिखर गए। उनकी सरगरमियों से कुछ
न हुआ। 37 इसके बाद मर्दुमशुमारी के दिनों में यहूदाह गलीली उठा। उसने भी काफ़ी लोगों को अपने पैरोकार बनाकर
बग़ावत करने पर उकसाया। लेकिन उसे भी मार दिया गया और उसके पैरोकार मुंतशिर हुए। 38 यह पेशे-नज़र रखकर
मेरा मशवरा यह है कि इन लोगों को छोड़ दें, इन्हें जाने दें। अगर इनका इरादा या सरगरमियाँ इनसानी हैं तो सब कुछ
ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाएगा। 39 लेकिन अगर यह अल्लाह की तरफ़ से है तो आप इन्हें ख़त्म नहीं कर सकेंगे। ऐसा न
हो कि आख़िरकार आप अल्लाह ही के ख़िलाफ़ लड़ रहे हों।"

हाज़िरीन ने उस की बात मान ली। 40 उन्होंने रसूलों को बुलाकर उनको कोड़े लगवाए। फिर उन्होंने उन्हें ईसा का
नाम लेकर बोलने से मना किया और फिर जाने दिया। 41 रसूल यहूदी अदालते-आलिया से निकलकर चले गए। यह
बात उनके लिए बड़ी ख़ुशी का बाइस थी कि अल्लाह ने हमें इस लायक़ समझा है कि ईसा के नाम की ख़ातिर बेइज़्ज़त
हो जाएँ। 42 इसके बाद भी वह रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस और मुख़्तलिफ़ घरों में जा जाकर सिखाते और इस ख़ुशख़बरी
की मुनादी करते रहे कि ईसा ही मसीह है।

6

रसूलों के सात मददगार

1 उन दिनों में जब ईसा के शागिर्दों की तादाद बढ़ती गई तो यूनानी ज़बान बोलनेवाले ईमानदार इबरानी बोलनेवाले
ईमानदारों के बारे में बुड़बुड़ाने लगे। उन्होंने कहा, "जब रोज़मर्रा का खाना तक़सीम होता है तो हमारी बेवाओं को
नज़रंदाज़ किया जाता है।" 2 तब बारह रसूलों ने शागिर्दों की पूरी जमात को इकट्ठा करके कहा, "यह ठीक नहीं
कि हम अल्लाह का कलाम सिखाने की ख़िदमत को छोड़कर खाना तक़सीम करने में मसरूफ़ रहें। 3 भाइयो, यह
बात पेशे-नज़र रखकर अपने में से सात आदमी चुन लें, जिनके नेक किरदार की आप तसदीक़ कर सकते हैं और जो
रूहुल-क़ुद्स और हिकमत से मामूर हैं। फिर हम उन्हें खाना तक़सीम करने की यह ज़िम्मादारी देकर 4 अपना पूरा वक़्त
दुआ और कलाम की ख़िदमत में सर्फ़ कर सकेंगे।"

5 यह बात पूरी जमात को पसंद आई और उन्होंने सात आदमी चुन लिए : स्तिफ़नुस (जो ईमान और रूहुल-क़ुद्स से
मामूर था), फ़िलिप्पुस, प्रुख़ुरुस, नीकानोर, तीमोन, परमिनास और अंताकिया का नीकुलाउस। (नीकुलाओस ग़ैरयहूदी
था जिसने ईसा पर ईमान लाने से पहले यहूदी मज़हब को अपना लिया था।) 6 इन सात आदमियों को रसूलों के सामने
पेश किया गया तो उन्होंने इन पर हाथ रखकर दुआ की।

7 यों अल्लाह का पैग़ाम फैलता गया। यरूशलम में ईमानदारों की तादाद निहायत बढ़ती गई और बैतुल-मुक़द्दस के
बहुत-से इमाम भी ईमान ले आए।

स्तिफ़नुस की गिरिफ़्तारी

8 स्तिफ़नुस अल्लाह के फ़ज़ल और क़ुव्वत से मामूर था और लोगों के दरमियान बड़े बड़े मोजिज़े और इलाही निशान
दिखाता था। 9 एक दिन कुछ यहूदी स्तिफ़नुस से बहस करने लगे। (वह कुरेन, इस्कंदरिया, किलिकिया और सूबा
आसिया के रहनेवाले थे और उनके इबादतख़ाने का नाम लिबरतीनियों यानी आज़ाद किए गए ग़ुलामों का इबादतख़ाना
था।) 10 लेकिन वह न उस की हिकमत का सामना कर सके, न उस रूह का जो कलाम करते वक़्त उस की मदद करता
था। 11 इसलिए उन्होंने बाज़ आदमियों को यह कहने को उकसाया कि "इसने मूसा और अल्लाह के बारे में कुफ़र बका
है। हम ख़ुद इसके गवाह हैं।" 12 यों आम लोगों, बुज़ुर्गों और शरीअत के उलमा में हलचल मच गई। वह स्तिफ़नुस
पर चढ़ आए और उसे घसीटकर यहूदी अदालते-आलिया के पास लाए। 13 वहाँ उन्होंने झूटे गवाह खड़े किए जिन्होंने
कहा, "यह आदमी बैतुल-मुक़द्दस और शरीअत के ख़िलाफ़ बातें करने से बाज़ नहीं आता। 14 हमने इसके मुँह से सुना
है कि ईसा नासरी यह मक़ाम तबाह करेगा और वह रस्मो-रिवाज बदल देगा जो मूसा ने हमारे सुपुर्द किए हैं।" 15 जब
इजलास में बैठे तमाम लोग घूर घूरकर स्तिफ़नुस की तरफ़ देखने लगे तो उसका चेहरा फ़रिश्ते का-सा नज़र आया।

7

स्तिफ़नुस की तक़रीर

1 इमामे-आज़म ने पूछा, "क्या यह सच है?"

2 स्तिफ़नुस ने जवाब दिया, "भाइयो और बुज़ुर्गो, मेरी बात सुनें। जलाल का ख़ुदा हमारे बाप इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ जब वह अभी मसोपुतामिया में आबाद था। उस वक़्त वह हारान में मुंतक़िल नहीं हुआ था। 3 अल्लाह ने उससे कहा, 'अपने वतन और अपनी क़ौम को छोड़कर इस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।' 4 चुनाँचे वह कसदियों के मुल्क को छोड़कर हारान में रहने लगा। वहाँ उसका बाप फ़ौत हुआ तो अल्लाह ने उसे इस मुल्क में मुंतक़िल किया जिसमें आप आज तक आबाद हैं। 5 उस वक़्त अल्लाह ने उसे इस मुल्क में कोई भी मौरूसी ज़मीन न दी थी, एक मुरब्बा फ़ुट तक भी नहीं। लेकिन उसने उससे वादा किया, 'मैं इस मुल्क को तेरे और तेरी औलाद के क़ब्ज़े में कर दूँगा,' अगरचे उस वक़्त इब्राहीम के हाँ कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ था। 6 अल्लाह ने उसे यह भी बताया, 'तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उसका नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और ग़ुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म किया जाएगा। 7 लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत करूँगा जिसने उसे ग़ुलाम बनाया होगा। इसके बाद वह उस मुल्क में से निकलकर इस मक़ाम पर मेरी इबादत करेंगे।' 8 फिर अल्लाह ने इब्राहीम को ख़तना का अहद दिया। चुनाँचे जब इब्राहीम का बेटा इसहाक़ पैदा हुआ तो बाप ने आठवें दिन उसका ख़तना किया। यह सिलसिला जारी रहा जब इसहाक़ का बेटा याक़ूब पैदा हुआ और याक़ूब के बारह बेटे, हमारे बारह क़बीलों के सरदार।

9 यह सरदार अपने भाई यूसुफ़ से हसद करने लगे और इसलिए उसे बेच दिया। यों वह ग़ुलाम बनकर मिसर पहुँचा। लेकिन अल्लाह उसके साथ रहा 10 और उसे उस की तमाम मुसीबतों से रिहाई दी। उसने उसे दानाई अता करके इस क़ाबिल बना दिया कि वह मिसर के बादशाह फ़िरौन का मंज़ूरे-नज़र हो जाए। यों फ़िरौन ने उसे मिसर और अपने पूरे घराने पर हुक्मरान मुक़र्रर किया। 11 फिर तमाम मिसर और कनान में काल पड़ा। लोग बड़ी मुसीबत में पड़ गए और हमारे बापदादा के पास भी ख़ुराक ख़त्म हो गई। 12 याक़ूब को पता चला कि मिसर में अब तक अनाज है, इसलिए उसने अपने बेटों को अनाज ख़रीदने को वहाँ भेज दिया। 13 जब उन्हें दूसरी बार वहाँ जाना पड़ा तो यूसुफ़ ने अपने आपको अपने भाइयों पर ज़ाहिर किया, और फ़िरौन को यूसुफ़ के ख़ानदान के बारे में आगाह किया गया। 14 इसके बाद यूसुफ़ ने अपने बाप याक़ूब और तमाम रिश्तेदारों को बुला लिया। कुल 75 अफ़राद आए। 15 यों याक़ूब मिसर पहुँचा। वहाँ वह और हमारे बापदादा मर गए। 16 उन्हें सिकम में लाकर उस क़ब्र में दफ़नाया गया जो इब्राहीम ने हमोर की औलाद से पैसे देकर ख़रीदी थी।

17 फिर वह वक़्त क़रीब आ गया जिसका वादा अल्लाह ने इब्राहीम से किया था। मिसर में हमारी क़ौम की तादाद बहुत बढ़ चुकी थी। 18 लेकिन होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। 19 उसने हमारी क़ौम का इस्तेहसाल करके उनसे बदसुलूकी की और उन्हें अपने शीरख़ार बच्चों को ज़ाया करने पर मजबूर किया। 20 उस वक़्त मूसा पैदा हुआ। वह अल्लाह के नज़दीक ख़ूबसूरत बच्चा था और तीन माह तक अपने बाप के घर में पाला गया। 21 इसके बाद वालिदैन को उसे छोड़ना पड़ा, लेकिन फ़िरौन की बेटी ने उसे लेपालक बनाकर अपने बेटे के तौर पर पाला। 22 और मूसा को मिसरियों की हिकमत के हर शोबे में तरबियत मिली। उसे बोलने और अमल करने की ज़बरदस्त क़ाबिलियत हासिल थी।

23 जब वह चालीस साल का था तो उसे अपनी क़ौम इसराईल के लोगों से मिलने का ख़याल आया। 24 जब उसने उनके पास जाकर देखा कि एक मिसरी किसी इसराईली पर तशद्दुद कर रहा है तो उसने इसराईली की हिमायत करके मज़लूम का बदला लिया और मिसरी को मार डाला। 25 उसका ख़याल तो यह था कि मेरे भाइयों को समझ आएगी कि अल्लाह मेरे वसीले से उन्हें रिहाई देगा, लेकिन ऐसा नहीं था। 26 अगले दिन वह दो इसराईलियों के पास से गुज़रा जो आपस में लड़ रहे थे। उसने सुलह कराने की कोशिश में कहा, 'मर्दो, आप तो भाई हैं। आप क्यों एक दूसरे से ग़लत सुलूक कर रहे हैं?' 27 लेकिन जो आदमी दूसरे से बदसुलूकी कर रहा था उसने मूसा को एक तरफ़ धकेलकर कहा, 'किसने आपको हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया है? 28 क्या आप मुझे भी क़त्ल करना चाहते हैं जिस तरह कल मिसरी को मार डाला था?' 29 यह सुनकर मूसा फ़रार होकर मुल्के-मिदियान में अजनबी के तौर पर रहने लगा। वहाँ उसके दो बेटे पैदा हुए।

30 चालीस साल के बाद एक फ़रिश्ता जलती हुई काँटेदार झाड़ी के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। उस वक़्त मूसा सीना पहाड़ के क़रीब रेगिस्तान में था। 31 यह मंज़र देखकर मूसा हैरान हुआ। जब वह उसका मुआयना करने के लिए क़रीब पहुँचा तो रब की आवाज़ सुनाई दी, 32 'मैं तेरे बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।' मूसा थरथराने लगा और उस तरफ़ देखने की जुर्रत न की। 33 फिर रब ने उससे कहा, 'अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू

मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है। 34 मैंने मिसर में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और उनकी आहें सुनी हैं, इसलिए उन्हें
बचाने के लिए उतर आया हूँ। अब जा, मैं तुझे मिसर भेजता हूँ।'

35 यों अल्लाह ने उस शख़्स को उनके पास भेज दिया जिसे वह यह कहकर रद्द कर चुके थे कि 'किसने आपको
हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया है?' जलती हुई काँटेदार झाड़ी में मौजूद फ़रिश्ते की मारिफ़त अल्लाह ने
मूसा को उनके पास भेज दिया ताकि वह उनका हुक्मरान और नजातदहिंदा बन जाए। 36 और वह मोजिज़े और इलाही
निशान दिखाकर उन्हें मिसर से निकाल लाया, फिर बहरे-क़ुलज़ुम से गुज़रकर 40 साल के दौरान रेगिस्तान में उनकी
राहनुमाई की। 37 मूसा ने ख़ुद इसराईलियों को बताया, 'अल्लाह तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को
बरपा करेगा।' 38 मूसा रेगिस्तान में क़ौम की जमात में शरीक था। एक तरफ़ वह उस फ़रिश्ते के साथ था जो सीना
पहाड़ पर उससे बातें करता था, दूसरी तरफ़ हमारे बापदादा के साथ। फ़रिश्ते से उसे ज़िंदगीबख़्श बातें मिल गईं जो उसे
हमारे सुपुर्द करनी थीं।

39 लेकिन हमारे बापदादा ने उस की सुनने से इनकार करके उसे रद्द कर दिया। दिल ही दिल में वह मिसर की तरफ़
रुजू कर चुके थे। 40 वह हारून से कहने लगे, 'आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी
राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।' 41 उसी वक़्त
उन्होंने बछड़े का बुत बनाकर उसे क़ुरबानियाँ पेश कीं और अपने हाथों के काम की ख़ुशी मनाई। 42 इस पर अल्लाह
ने अपना मुँह फेर लिया और उन्हें सितारों की पूजा की गिरिफ़्त में छोड़ दिया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह नबियों
के सहीफ़े में लिखा है,

'ऐ इसराईल के घराने,
जब तुम रेगिस्तान में घुमते-फिरते थे
तो क्या तुमने उन 40 सालों के दौरान
कभी मुझे ज़बह और ग़ल्ला की क़ुरबानियाँ पेश कीं?
43 नहीं, उस वक़्त भी तुम मलिक देवता का ताबूत
और रिफ़ान देवता का सितारा उठाए फिरते थे,
गो तुमने अपने हाथों से यह बुत
पूजा करने के लिए बना लिए थे।
इसलिए मैं तुम्हें जिलावतन करके
बाबल के पार बसा दूँगा।'

44 रेगिस्तान में हमारे बापदादा के पास मुलाक़ात का ख़ैमा था। उसे उस नमूने के मुताबिक़ बनाया गया था जो
अल्लाह ने मूसा को दिखाया था। 45 मूसा की मौत के बाद हमारे बापदादा ने उसे विरसे में पाकर अपने साथ ले लिया
जब उन्होंने यशुअ की राहनुमाई में इस मुल्क में दाख़िल होकर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। उस वक़्त अल्लाह उसमें
आबाद क़ौमों को उनके आगे आगे निकालता गया। यों मुलाक़ात का ख़ैमा दाऊद बादशाह के ज़माने तक मुल्क में
रहा। 46 दाऊद अल्लाह का मंज़ूरे-नज़र था। उसने याक़ूब के ख़ुदा को एक सुकूनतगाह मुहैया करने की इजाज़त माँगी।
47 लेकिन सुलेमान को उसके लिए मकान बनाने का एज़ाज़ हासिल हुआ।

48 हक़ीक़त में अल्लाह तआला इनसान के हाथ के बनाए हुए मकानों में नहीं रहता। नबी रब का फ़रमान यों बयान
करता है,

49 'आसमान मेरा तख़्त है
और ज़मीन मेरे पाँवों की चौकी,
तो फिर तुम मेरे लिए किस क़िस्म का घर बनाओगे?
वह जगह कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?
50 क्या मेरे हाथ ने यह सब कुछ नहीं बनाया?'

51 ऐ गरदनकश लोगो! बेशक आपका ख़तना हुआ है जो अल्लाह की क़ौम का ज़ाहिरी निशान है। लेकिन उसका
आपके दिलों और कानों पर कुछ भी असर नहीं हुआ। आप अपने बापदादा की तरह हमेशा रूहुल-क़ुद्स की मुख़ालफ़त
करते रहते हैं। 52 क्या कभी कोई नबी था जिसे आपके बापदादा ने न सताया? उन्होंने उन्हें भी क़त्ल किया जिन्होंने
रास्तबाज़ मसीह की पेशगोई की, उस शख़्स की जिसे आपने दुश्मनों के हवाले करके मार डाला। 53 आप ही को
फ़रिश्तों के हाथ से अल्लाह की शरीअत हासिल हुई मगर उस पर अमल नहीं किया।"

स्तिफ़नुस को संगसार किया जाता है

54 स्तिफ़नुस की यह बातें सुनकर इजलास के लोग तैश में आकर दाँत पीसने लगे। 55 लेकिन स्तिफ़नुस रूहुल-क़ुद्स
से मामूर अपनी नज़र उठाकर आसमान की तरफ़ तकने लगा। वहाँ उसे अल्लाह का जलाल नज़र आया, और ईसा
अल्लाह के दहने हाथ खड़ा था। 56 उसने कहा, "देखो, मुझे आसमान खुला हुआ दिखाई दे रहा है और इब्ने-आदम
अल्लाह के दहने हाथ खड़ा है!"

57 यह सुनते ही उन्होंने चीख़ चीख़कर हाथों से अपने कानों को बंद कर लिया और मिलकर उस पर झपट पड़े।
58 फिर वह उसे शहर से निकालकर संगसार करने लगे। और जिन लोगों ने उसके ख़िलाफ़ गवाही दी थी उन्होंने
अपनी चादरें उतारकर एक जवान आदमी के पाँवों में रख दीं। उस आदमी का नाम साऊल था। 59 जब वह स्तिफ़नुस
को संगसार कर रहे थे तो उसने दुआ करके कहा, "ऐ ख़ुदावंद ईसा, मेरी रूह को क़बूल कर।" 60 फिर घुटने टेककर
उसने ऊँची आवाज़ से कहा, "ऐ ख़ुदावंद, उन्हें इस गुनाह के ज़िम्मादार न ठहरा।" यह कहकर वह इंतक़ाल कर गया।

8

1 और साऊल को भी स्तिफ़नुस का क़त्ल मंज़ूर था।

साऊल जमात को सताता है

उस दिन यरूशलम में मौजूद जमात सख़्त ईज़ारसानी की ज़द में आ गई। इसलिए सिवाए रसूलों के तमाम ईमानदार
यहूदिया और सामरिया के इलाक़ों में तित्तर-बित्तर हो गए। 2 कुछ ख़ुदातरस आदमियों ने स्तिफ़नुस को दफ़न करके रो
रोकर उसका मातम किया।

3 लेकिन साऊल ईसा की जमात को तबाह करने पर तुला हुआ था। उसने घर घर जाकर ईमानदार मर्दो-ख़वातीन
को निकाल दिया और उन्हें घसीटकर क़ैदख़ाने में डलवा दिया।

ख़ुशख़बरी सामरिया में फैल जाती है

4 जो ईमानदार बिखर गए थे वह जगह जगह जाकर अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते फिरे। 5 इस तरह फ़िलिप्पुस
सामरिया के किसी शहर को गया और वहाँ के लोगों को मसीह के बारे में बताया। 6 जो कुछ भी फ़िलिप्पुस ने कहा
और जो भी इलाही निशान उसने दिखाए, उस पर सुननेवाले हुजूम ने यकदिल होकर तवज्जुह दी। 7 बहुत-से लोगों में
से बदरूहें ज़ोरदार चीख़ें मार मारकर निकल गईं, और बहुत-से मफ़लूजों और लँगड़ों को शफ़ा मिल गई। 8 यों उस
शहर में बड़ी शादमानी फैल गई।

9 वहाँ काफ़ी अरसे से एक आदमी रहता था जिसका नाम शमौन था। वह जादूगर था और उसके हैरतअंगेज़ काम
से सामरिया के लोग बहुत मुतअस्सिर थे। उसका अपना दावा था कि मैं कोई ख़ास शख़्स हूँ। 10 इसलिए सब लोग
छोटे से लेकर बड़े तक उस पर ख़ास तवज्जुह देते थे। उनका कहना था, 'यह आदमी वह इलाही क़ुव्वत है जो अज़ीम
कहलाती है।' 11 वह इसलिए उसके पीछे लग गए थे कि उसने उन्हें बड़ी देर से अपने हैरतअंगेज़ कामों से मुतअस्सिर
कर रखा था। 12 लेकिन अब लोग फ़िलिप्पुस की अल्लाह की बादशाही और ईसा के नाम के बारे में ख़ुशख़बरी
पर ईमान ले आए, और मर्दो-ख़वातीन ने बपतिस्मा लिया। 13 ख़ुद शमौन ने भी ईमान लाकर बपतिस्मा लिया और
फ़िलिप्पुस के साथ रहा। जब उसने वह बड़े इलाही निशान और मोजिज़े देखे जो फ़िलिप्पुस के हाथ से ज़ाहिर हुए तो
वह हक्का-बक्का रह गया।

14 जब यरूशलम में रसूलों ने सुना कि सामरिया ने अल्लाह का कलाम क़बूल कर लिया है तो उन्होंने पतरस और
यूहन्ना को उनके पास भेज दिया। 15 वहाँ पहुँचकर उन्होंने उनके लिए दुआ की कि उन्हें रूहुल-क़ुद्स मिल जाए,
16 क्योंकि अभी रूहुल-क़ुद्स उन पर नाज़िल नहीं हुआ था बल्कि उन्हें सिर्फ़ ख़ुदावंद ईसा के नाम में बपतिस्मा दिया
गया था। 17 अब जब पतरस और यूहन्ना ने अपने हाथ उन पर रखे तो उन्हें रूहुल-क़ुद्स मिल गया।

18 शमौन ने देखा कि जब रसूल लोगों पर हाथ रखते हैं तो उनको रूहुल-क़ुद्स मिलता है। इसलिए उसने उन्हें पैसे
पेश करके 19 कहा, "मुझे भी यह इख़्तियार दे दें कि जिस पर मैं हाथ रखूँ उसे रूहुल-क़ुद्स मिल जाए।"

20 लेकिन पतरस ने जवाब दिया, "आपके पैसे आपके साथ ग़ारत हो जाएँ, क्योंकि आपने सोचा कि अल्लाह की
नेमत पैसों से ख़रीदी जा सकती है। 21 इस ख़िदमत में आपका कोई हिस्सा नहीं है, क्योंकि आपका दिल अल्लाह
के सामने ख़ालिस नहीं है। 22 अपनी इस शरारत से तौबा करके ख़ुदावंद से दुआ करें। शायद वह आपको इस इरादे
की मुआफ़ी दे जो आपने दिल में रखा है। 23 क्योंकि मैं देखता हूँ कि आप कड़वे पित से भरे और नारास्ती के बंधन में
जकड़े हुए हैं।"

24 शमौन ने कहा, "फिर ख़ुदावंद से मेरे लिए दुआ करें कि आपकी मज़कूरा मुसीबतों में से मुझ पर कोई न आए।"

25 ख़ुदावंद के कलाम की गवाही देने और उस की मुनादी करने के बाद पतरस और यूहन्ना वापस यरूशलम के
लिए रवाना हुए। रास्ते में उन्होंने सामरिया के बहुत-से देहातों में अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई।

फ़िलिप्पुस और एथोपिया का अफ़सर

26 एक दिन रब के फ़रिश्ते ने फ़िलिप्पुस से कहा, "उठकर जुनूब की तरफ़ उस राह पर जा जो रेगिस्तान में से
गुज़रकर यरूशलम से ग़ज़्ज़ा को जाती है।" 27 फ़िलिप्पुस उठकर रवाना हुआ। चलते चलते उस की मुलाक़ात एथोपिया
की मलिका कंदाके के एक ख़्वाजासरा से हुई। मलिका के पूरे ख़ज़ाने पर मुक़र्रर यह दरबारी इबादत करने के लिए
यरूशलम गया था 28 और अब अपने मुल्क में वापस जा रहा था। उस वक़्त वह रथ में सवार यसायाह नबी की
किताब की तिलावत कर रहा था। 29 रूहुल-क़ुद्स ने फ़िलिप्पुस से कहा, "उसके पास जाकर रथ के साथ हो ले।"
30 फ़िलिप्पुस दौड़कर रथ के पास पहुँचा तो सुना कि वह यसायाह नबी की किताब की तिलावत कर रहा है। उसने
पूछा, "क्या आपको उस सबकी समझ आती है जो आप पढ़ रहे हैं?"

31 दरबारी ने जवाब दिया, "मैं क्योंकर समझूँ जब तक कोई मेरी राहनुमाई न करे?" और उसने फ़िलिप्पुस को
रथ में सवार होने की दावत दी। 32 कलामे-मुक़द्दस का जो हवाला वह पढ़ रहा था यह था,

'उसे भेड़ की तरह ज़बह करने के लिए ले गए।
जिस तरह लेला बाल कतरनेवाले के सामने ख़ामोश रहता है,
उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।
33 उस की तज़लील की गई और उसे इनसाफ़ न मिला।
कौन उस की नसल बयान कर सकता है?
क्योंकि उस की जान दुनिया से छीन ली गई।'

34 दरबारी ने फ़िलिप्पुस से पूछा, "मेहरबानी करके मुझे बता दीजिए कि नबी यहाँ किसका ज़िक्र कर रहा है, अपना
या किसी और का?" 35 जवाब में फ़िलिप्पुस ने कलामे-मुक़द्दस के इसी हवाले से शुरू करके उसे ईसा के बारे में
ख़ुशख़बरी सुनाई। 36 सड़क पर सफ़र करते करते वह एक जगह से गुज़रे जहाँ पानी था। ख़्वाजासरा ने कहा, "देखें,
यहाँ पानी है। अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन-सी चीज़ रोक सकती है?" 37 [फ़िलिप्पुस ने कहा, "अगर आप पूरे
दिल से ईमान लाएँ तो ले सकते हैं।" उसने जवाब दिया, "मैं ईमान रखता हूँ कि ईसा मसीह अल्लाह का फ़रज़ंद है।"]

38 उसने रथ को रोकने का हुक्म दिया। दोनों पानी में उतर गए और फ़िलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। 39 जब वह
पानी से निकल आए तो ख़ुदावंद का रूह फ़िलिप्पुस को उठा ले गया। इसके बाद ख़्वाजासरा ने उसे फिर कभी न देखा,
लेकिन उसने ख़ुशी मनाते हुए अपना सफ़र जारी रखा। 40 इतने में फ़िलिप्पुस को अशदूद शहर में पाया गया। वह वहाँ
और क़ैसरिया तक के तमाम शहरों में से गुज़रकर अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाता गया।

9

पौलुस की तबदीली

1 अब तक साऊल ख़ुदावंद के शागिर्दों को धमकाने और क़त्ल करने के दरपै था। उसने इमामे-आज़म के पास
जाकर 2 उससे गुज़ारिश की कि "मुझे दमिश्क़ में यहूदी इबादतख़ानों के लिए सिफ़ारिशी ख़त लिखकर दें ताकि वह
मेरे साथ तावुन करें। क्योंकि मैं वहाँ मसीह की राह पर चलनेवालों को ख़ाह वह मर्द हों या ख़वातीन ढूँडकर और
बाँधकर यरूशलम लाना चाहता हूँ।"

3 वह इस मक़सद से सफ़र करके दमिश्क़ के क़रीब पहुँचा ही था कि अचानक आसमान की तरफ़ से एक तेज़
रौशनी उसके गिर्द चमकी। 4 वह ज़मीन पर गिर पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, "साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता
है?"

5 उसने पूछा, "ख़ुदावंद, आप कौन हैं?"

आवाज़ ने जवाब दिया, "मैं ईसा हूँ जिसे तू सताता है। 6 अब उठकर शहर में जा। वहाँ तुझे बताया जाएगा कि तुझे
क्या करना है।"

7 साऊल के पास खड़े हमसफ़र दम बख़ुद रह गए। आवाज़ तो वह सुन रहे थे, लेकिन उन्हें कोई नज़र न आया।
8 साऊल ज़मीन पर से उठा, लेकिन जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो मालूम हुआ कि वह अंधा है। चुनाँचे उसके
साथी उसका हाथ पकड़कर उसे दमिश्क़ ले गए। 9 वहाँ तीन दिन के दौरान वह अंधा रहा। इतने में उसने न कुछ खाया,
न पिया।

10 उस वक़्त दमिश्क़ में ईसा का एक शागिर्द रहता था जिसका नाम हननियाह था। अब ख़ुदावंद रोया में उससे
हमकलाम हुआ, "हननियाह!"

उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, मैं हाज़िर हूँ।”
11 ख़ुदावंद ने फ़रमाया, “उठ, उस गली में जा जो ‘सीधी’ कहलाती है। वहाँ यहूदाह के घर में तरसुस के एक
आदमी का पता करना जिसका नाम साऊल है। क्योंकि देख, वह दुआ कर रहा है। 12 और रोया में उसने देख लिया
है कि एक आदमी बनाम हननियाह मेरे पास आकर अपने हाथ मुझ पर रखेगा। इससे मेरी आँखें बहाल हो जाएँगी।”
13 हननियाह ने एतराज़ किया, “ऐ ख़ुदावंद, मैंने बहुत-से लोगों से उस शख़्स की शरीर हरकतों के बारे में सुना है।
यरूशलम में उसने तेरे मुक़द्दसों के साथ बहुत ज़्यादती की है। 14 अब उसे राहनुमा इमामों से इख़्तियार मिल गया है कि
यहाँ भी हर एक को गिरिफ़्तार करे जो तेरी इबादत करता है।”
15 लेकिन ख़ुदावंद ने कहा, “जा, यह आदमी मेरा चुना हुआ वसीला है जो मेरा नाम ग़ैरयहूदियों, बादशाहों और
इसराईलियों तक पहुँचाएगा। 16 और मैं उसे दिखा दूँगा कि उसे मेरे नाम की ख़ातिर कितना दुख उठाना पड़ेगा।”
17 चुनाँचे हननियाह मज़कूरा घर के पास गया, उसमें दाख़िल हुआ और अपने हाथ साऊल पर रख दिए। उसने
कहा, “साऊल भाई, ख़ुदावंद ईसा जो आप पर ज़ाहिर हुआ जब आप यहाँ आ रहे थे उसी ने मुझे भेजा है ताकि आप
दुबारा देख पाएँ और रूहुल-क़ुद्स से मामूर हो जाएँ।” 18 यह कहते ही छिलकों जैसी कोई चीज़ साऊल की आँखों
पर से गिरी और वह दुबारा देखने लगा। उसने उठकर बपतिस्मा लिया, 19 फिर कुछ खाना खाकर नए सिरे से तक़वियत
पाई।

साऊल दमिश्क़ में अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाता है

साऊल कई दिन शागिर्दों के साथ दमिश्क़ में रहा। 20 उसी वक़्त वह सीधा यहूदी इबादतख़ानों में जाकर एलान
करने लगा कि ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद है।
21 और जिसने भी उसे सुना वह हैरान रह गया और पूछा, “क्या यह वह आदमी नहीं जो यरूशलम में ईसा की
इबादत करनेवालों को हलाक कर रहा था? और क्या वह इस मक़सद से यहाँ नहीं आया कि ऐसे लोगों को बाँधकर
राहनुमा इमामों के पास ले जाए?”
22 लेकिन साऊल रोज़ बरोज़ ज़ोर पकड़ता गया, और चूँकि उसने साबित किया कि ईसा वादा किया हुआ मसीह है
इसलिए दमिश्क़ में आबाद यहूदी उलझन में पड़ गए।
23 चुनाँचे काफ़ी दिनों के बाद उन्होंने मिलकर उसे क़त्ल करने का मनसूबा बनाया। 24 लेकिन साऊल को पता
चल गया। यहूदी दिन-रात शहर के दरवाज़ों की पहरादारी करते रहे ताकि उसे क़त्ल करें, 25 इसलिए उसके शागिर्दों
ने उसे रात के वक़्त टोकरे में बिठाकर शहर की चारदीवारी के एक सूराख़ में से उतार दिया।

साऊल यरूशलम में

26 साऊल यरूशलम वापस चला गया। वहाँ उसने शागिर्दों से राबिता करने की कोशिश की, लेकिन सब उससे डरते
थे, क्योंकि उन्हें यक़ीन नहीं आया था कि वह वाक़ई ईसा का शागिर्द बन गया है। 27 फिर बरनबास उसे रसूलों के
पास ले आया। उसने उन्हें साऊल के बारे में सब कुछ बताया, कि उसने दमिश्क़ की तरफ़ सफ़र करते वक़्त रास्ते में
ख़ुदावंद को देखा, कि ख़ुदावंद उससे हमकलाम हुआ था और उसने दमिश्क़ में दिलेरी से ईसा के नाम से बात की थी।
28 चुनाँचे साऊल उनके साथ रहकर आज़ादी से यरूशलम में फिरने और दिलेरी से ख़ुदावंद ईसा के नाम से कलाम
करने लगा। 29 उसने यूनानी ज़बान बोलनेवाले यहूदियों से भी मुख़ातिब होकर बहस की, लेकिन जवाब में वह उसे
क़त्ल करने की कोशिश करने लगे। 30 जब भाइयों को मालूम हुआ तो उन्होंने उसे क़ैसरिया पहुँचा दिया और जहाज़
में बिठाकर तरसुस के लिए रवाना कर दिया।
31 इस पर यहूदिया, गलील और सामरिया के पूरे इलाक़े में फैली हुई जमात को अमनो-अमान हासिल हुआ।
रूहुल-क़ुद्स की हिमायत से उस की तामीरो-तक़वियत हुई, वह ख़ुदा का ख़ौफ़ मानकर चलती रही और तादाद में भी
बढ़ती गई।

पतरस लुद्दा और याफ़ा में

32 एक दिन जब पतरस जगह जगह सफ़र कर रहा था तो वह लुद्दा में आबाद मुक़द्दसों के पास भी आया। 33 वहाँ
उस की मुलाक़ात एक आदमी बनाम ऐनियास से हुई। ऐनियास मफ़लूज था। वह आठ साल से बिस्तर से उठ न सका
था। 34 पतरस ने उससे कहा, “ऐनियास, ईसा मसीह आपको शफ़ा देता है। उठकर अपना बिस्तर समेट लें।” ऐनियास
फ़ौरन उठ खड़ा हुआ। 35 जब लुद्दा और मैदानी इलाक़े शारून के तमाम रहनेवालों ने उसे देखा तो उन्होंने ख़ुदावंद की
तरफ़ रुजू किया।
36 याफ़ा में एक औरत थी जो शागिर्द थी और नेक काम करने और ख़ैरात देने में बहुत आगे थी। उसका नाम तबीता
(ग़ज़ाला) था। 37 उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर फ़ौत हो गई। लोगों ने उसे ग़ुस्ल देकर बालाख़ाने में रख दिया।

38 लुद्दा याफ़ा के क़रीब है, इसलिए जब शागिर्दों ने सुना कि पतरस लुद्दा में है तो उन्होंने उसके पास दो आदमियों को भेजकर इलतमास की, "सीधे हमारे पास आएँ और देर न करें।" 39 पतरस उठकर उनके साथ चला गया। वहाँ पहुँचकर लोग उसे बालाख़ाने में ले गए। तमाम बेवाओं ने उसे घेर लिया और रोते चिल्लाते वह सारी क़मीसें और बाक़ी लिबास दिखाने लगीं जो तबीता ने उनके लिए बनाए थे जब वह अभी ज़िंदा थी। 40 लेकिन पतरस ने उन सबको कमरे से निकाल दिया और घुटने टेककर दुआ की। फिर लाश की तरफ़ मुड़कर उसने कहा, "तबीता, उठें!" औरत ने अपनी आँखें खोल दीं। पतरस को देखकर वह बैठ गई। 41 पतरस ने उसका हाथ पकड़ लिया और उठने में उस की मदद की। फिर उसने मुक़द्दसों और बेवाओं को बुलाकर तबीता को ज़िंदा उनके सुपुर्द किया। 42 यह वाक़िया पूरे याफ़ा में मशहूर हुआ, और बहुत-से लोग ख़ुदावंद ईसा पर ईमान लाए। 43 पतरस काफ़ी दिनों तक याफ़ा में रहा। वहाँ वह चमड़ा रंगनेवाले एक आदमी के घर ठहरा जिसका नाम शमौन था।

10

पतरस और कुरनेलियुस

1 क़ैसरिया में एक रोमी अफ़सर * रहता था जिसका नाम कुरनेलियुस था। वह उस पलटन के सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर था जो इतालवी कहलाती थी। 2 कुरनेलियुस अपने पूरे घराने समेत दीनदार और ख़ुदातरस था। वह फ़ैयाज़ी से ख़ैरात देता और मुतवातिर दुआ में लगा रहता था। 3 एक दिन उसने तीन बजे दोपहर के वक़्त रोया देखी। उसमें उसने साफ़ तौर पर अल्लाह का एक फ़रिश्ता देखा जो उसके पास आया और कहा, "कुरनेलियुस!"

4 वह घबरा गया और उसे ग़ौर से देखते हुए कहा, "मेरे आक़ा, फ़रमाएँ।"

फ़रिश्ते ने कहा, "तुम्हारी दुआओं और ख़ैरात की क़ुरबानी अल्लाह के हुज़ूर पहुँच गई है और मंज़ूर है। 5 अब कुछ आदमी याफ़ा भेज दो। वहाँ एक आदमी बनाम शमौन है जो पतरस कहलाता है। उसे बुलाकर ले आओ। 6 पतरस एक चमड़ा रंगनेवाले का मेहमान है जिसका नाम शमौन है। उसका घर समुंदर के क़रीब वाक़े है।"

7 ज्योंही फ़रिश्ता चला गया कुरनेलियुस ने दो नौकरों और अपने ख़िदमतगार फ़ौजियों में से एक ख़ुदातरस आदमी को बुलाया। 8 सब कुछ सुनाकर उसने उन्हें याफ़ा भेज दिया।

9 अगले दिन पतरस दोपहर तक़रीबन बारह बजे दुआ करने के लिए छत पर चढ़ गया। उस वक़्त कुरनेलियुस के भेजे हुए आदमी याफ़ा शहर के क़रीब पहुँच गए थे। 10 पतरस को भूक लगी और वह कुछ खाना चाहता था। जब उसके लिए खाना तैयार किया जा रहा था तो वह वज्द की हालत में आ गया। 11 उसने देखा कि आसमान खुल गया है और एक चीज़ ज़मीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर जैसी जो अपने चार कोनों से नीचे उतारी जा रही है। 12 चादर में तमाम क़िस्म के जानवर हैं : चार पाँव रखनेवाले, रेंगनेवाले और परिंदे। 13 फिर एक आवाज़ उससे मुख़ातिब हुई, "उठ, पतरस। कुछ ज़बह करके खा!"

14 पतरस ने एतराज़ किया, "हरगिज़ नहीं ख़ुदावंद, मैंने कभी भी हराम या नापाक खाना नहीं खाया।"

15 लेकिन यह आवाज़ दुबारा उससे हमकलाम हुई, "जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया है उसे नापाक क़रार न दे।" 16 यही कुछ तीन मरतबा हुआ, फिर चादर को अचानक आसमान पर वापस उठा लिया गया।

17 पतरस बड़ी उलझन में पड़ गया। वह अभी सोच रहा था कि इस रोया का क्या मतलब है तो कुरनेलियुस के भेजे हुए आदमी शमौन के घर का पता करके उसके गेट पर पहुँच गए। 18 आवाज़ देकर उन्होंने पूछा, "क्या शमौन जो पतरस कहलाता है आपके मेहमान हैं?"

19 पतरस अभी रोया पर ग़ौर कर ही रहा था कि रूहुल-क़ुद्स उससे हमकलाम हुआ, "शमौन, तीन मर्द तेरी तलाश में हैं। 20 उठ और छत से उतरकर उनके साथ चला जा। मत झिजकना, क्योंकि मैं ही ने उन्हें तेरे पास भेजा है।"
21 चुनाँचे पतरस उन आदमियों के पास गया और उनसे कहा, "मैं वही हूँ जिसे आप ढूँड रहे हैं। आप क्यों मेरे पास आए हैं?"

22 उन्होंने जवाब दिया, "हम सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सर कुरनेलियुस के घर से आए हैं। वह इनसाफ़परवर और ख़ुदातरस आदमी हैं। पूरी यहूदी क़ौम इसकी तसदीक़ कर सकती है। एक मुक़द्दस फ़रिश्ते ने उन्हें हिदायत दी कि वह आपको अपने घर बुलाकर आपका पैग़ाम सुनें।" 23 यह सुनकर पतरस उन्हें अंदर ले गया और उनकी मेहमान-नवाज़ी की। अगले दिन वह उठकर उनके साथ रवाना हुआ। याफ़ा के कुछ भाई भी साथ गए। 24 एक दिन के बाद वह क़ैसरिया पहुँच गया। कुरनेलियुस उनके इंतज़ार में था। उसने अपने रिश्तेदारों और क़रीबी दोस्तों को भी अपने घर जमा कर रखा था। 25 जब पतरस घर में दाख़िल हुआ तो कुरनेलियुस ने उसके सामने गिरकर उसे सिजदा किया। 26 लेकिन पतरस ने उसे उठाकर कहा, "उठें। मैं भी इनसान ही हूँ।" 27 और उससे बातें करते करते वह अंदर गया और देखा

* **10:1** सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

कि बहुत-से लोग जमा हो गए हैं। 28 उसने उनसे कहा, "आप जानते हैं कि किसी यहूदी के लिए किसी ग़ैरयहूदी से
रिफ़ाक़त रखना या उसके घर में जाना मना है। लेकिन अल्लाह ने मुझे दिखाया है कि मैं किसी को भी हराम या नापाक
क़रार न दूँ। 29 इस वजह से जब मुझे बुलाया गया तो मैं एतराज़ किए बग़ैर चला आया। अब मुझे बता दीजिए कि आपने
मुझे क्यों बुलाया है?"
30 कुरनेलियुस ने जवाब दिया, "चार दिन की बात है कि मैं इसी वक़्त दोपहर तीन बजे दुआ कर रहा था। अचानक
एक आदमी मेरे सामने आ खड़ा हुआ। उसके कपड़े चमक रहे थे। 31 उसने कहा, 'कुरनेलियुस, अल्लाह ने तुम्हारी
दुआ सुन ली और तुम्हारी ख़ैरात का ख़याल किया है। 32 अब किसी को याफ़ा भेजकर शमौन को बुला लो जो पतरस
कहलाता है। वह चमड़ा रंगनेवाले शमौन का मेहमान है। शमौन का घर समुंदर के क़रीब वाक़े है।' 33 यह सुनते ही मैंने
अपने लोगों को आपको बुलाने के लिए भेज दिया। अच्छा हुआ कि आप आ गए हैं। अब हम सब अल्लाह के हुज़ूर
हाज़िर हैं ताकि वह कुछ सुनें जो रब ने आपको हमें बताने को कहा है।"

पतरस की तक़रीर

34 फिर पतरस बोल उठा, "अब मैं समझ गया हूँ कि अल्लाह वाक़ई जानिबदार नहीं, 35 बल्कि हर किसी को
क़बूल करता है जो उसका ख़ौफ़ मानता और रास्त काम करता है। 36 आप अल्लाह की उस ख़ुशख़बरी से वाक़िफ़
हैं जो उसने इसराईलियों को भेजी, यह ख़ुशख़बरी कि ईसा मसीह के वसीले से सलामती आई है। ईसा मसीह सबका
ख़ुदावंद है। 37 आपको वह कुछ मालूम है जो गलील से शुरू होकर यहूदिया के पूरे इलाक़े में हुआ यानी उस बपतिस्मे
के बाद जिसकी मुनादी यहया ने की। 38 और आप जानते हैं कि अल्लाह ने ईसा नासरी को रूहुल-क़ुदुस और क़ुव्वत
से मसह किया और कि इस पर उसने जगह जगह जाकर नेक काम किया और इबलीस के दबे हुए तमाम लोगों को शफ़ा
दी, क्योंकि अल्लाह उसके साथ था। 39 जो कुछ भी उसने मुल्के-यहूद और यरूशलम में किया, उसके गवाह हम
ख़ुद हैं। गो लोगों ने उसे लकड़ी पर लटकाकर क़त्ल कर दिया 40 लेकिन अल्लाह ने तीसरे दिन उसे मुरदों में से ज़िंदा
किया और उसे लोगों पर ज़ाहिर किया। 41 वह पूरी क़ौम पर तो ज़ाहिर नहीं हुआ बल्कि हम पर जिनको अल्लाह ने
पहले से चुन लिया था ताकि हम उसके गवाह हों। हमने उसके जी उठने के बाद उसके साथ खाने-पीने की रिफ़ाक़त
भी रखी। 42 उस वक़्त उसने हमें हुक्म दिया कि मुनादी करके क़ौम को गवाही दो कि ईसा वही है जिसे अल्लाह ने
ज़िंदों और मुरदों पर मुंसिफ़ मुक़र्रर किया है। 43 तमाम नबी उस की गवाही देते हैं कि जो भी उस पर ईमान लाए उसे
उसके नाम के वसीले से गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाएगी।"

रूहुल-क़ुदुस ग़ैरयहूदियों पर नाज़िल होता है

44 पतरस अभी यह बात कर ही रहा था कि तमाम सुननेवालों पर रूहुल-क़ुदस नाज़िल हुआ। 45 जो यहूदी ईमानदार
पतरस के साथ आए थे वह हक्का-बक्का रह गए कि रूहुल-क़ुदुस की नेमत ग़ैरयहूदियों पर भी उंडेली गई है, 46 क्योंकि
उन्होंने देखा कि वह ग़ैरज़बानें बोल रहे और अल्लाह की तमजीद कर रहे हैं। तब पतरस ने कहा, 47 "अब कौन इनको
बपतिस्मा लेने से रोक सकता है? इन्हें तो हमारी तरह रूहुल-क़ुदुस हासिल हुआ है।" 48 और उसने हुक्म दिया कि
उन्हें ईसा मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया जाए। इसके बाद उन्होंने पतरस से गुज़ारिश की कि कुछ दिन हमारे पास
ठहरें।

11

यरूशलम की जमात में पतरस की रिपोर्ट

1 यह ख़बर रसूलों और यहूदिया के बाक़ी भाइयों तक पहुँची कि ग़ैरयहूदियों ने भी अल्लाह का कलाम क़बूल किया
है। 2 चुनाँचे जब पतरस यरूशलम वापस आया तो यहूदी ईमानदार उस पर एतराज़ करने लगे, 3 "आप ग़ैरयहूदियों के
घर में गए और उनके साथ खाना भी खाया।" 4 फिर पतरस ने उनके सामने तरतीब से सब कुछ बयान किया जो हुआ
था।
5 "मैं याफ़ा शहर में दुआ कर रहा था कि वज्द की हालत में आकर रोया देखी। आसमान से एक चीज़ ज़मीन पर
उतर रही है, कतान की बड़ी चादर जैसी जो अपने चारों कोनों से उतारी जा रही है। उतरती उतरती वह मुझ तक पहुँच
गई। 6 जब मैंने ग़ौर से देखा तो पता चला कि उसमें तमाम क़िस्म के जानवर हैं : चार पाँववाले, रेंगनेवाले और परिंदे।
7 फिर एक आवाज़ मुझसे मुख़ातिब हुई, 'पतरस, उठ! कुछ ज़बह करके खा!' 8 मैंने एतराज़ किया, 'हरगिज़ नहीं,
ख़ुदावंद, मैंने कभी भी हराम या नापाक खाना नहीं खाया।' 9 लेकिन यह आवाज़ दुबारा मुझसे हमकलाम हुई, 'जो
कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया है उसे नापाक क़रार न दे।' 10 तीन मरतबा ऐसा हुआ, फिर चादर को जानवरों समेत
वापस आसमान पर उठा लिया गया। 11 उसी वक़्त तीन आदमी उस घर के सामने रुक गए जहाँ मैं ठहरा हुआ था। उन्हें

क़ैसरिया से मेरे पास भेजा गया था। 12 रूहुल-क़ुद्स ने मुझे बताया कि मैं बग़ैर झिजके उनके साथ चला जाऊँ। यह
मेरे छः भाई भी मेरे साथ गए। हम रवाना होकर उस आदमी के घर में दाख़िल हुए जिसने मुझे बुलाया था। 13 उसने
हमें बताया कि एक फ़रिश्ता घर में उस पर ज़ाहिर हुआ था जिसने उसे कहा था, 'किसी को याफ़ा भेजकर शमौन को
बुला लो जो पतरस कहलाता है। 14 उसके पास वह पैग़ाम है जिसके ज़रीए तुम अपने पूरे घराने समेत नजात पाओगे।'
15 जब मैं वहाँ बोलने लगा तो रूहुल-क़ुद्स उन पर नाज़िल हुआ, बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह शुरू में हम पर
हुआ था। 16 फिर मुझे वह बात याद आई जो ख़ुदावंद ने कही थी, 'यहया ने तुमको पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन
तुम्हें रूहुल-क़ुद्स से बपतिस्मा दिया जाएगा।' 17 अल्लाह ने उन्हें वही नेमत दी जो उसने हमें भी दी थी जो ख़ुदावंद
ईसा मसीह पर ईमान लाए थे। तो फिर मैं कौन था कि अल्लाह को रोकता?"
18 पतरस की यह बातें सुनकर यरूशलम के ईमानदार एतराज़ करने से बाज़ आए और अल्लाह की तमजीद करने
लगे। उन्होंने कहा, "तो इसका मतलब है कि अल्लाह ने ग़ैरयहूदियों को भी तौबा करने और अबदी ज़िंदगी पाने का
मौक़ा दिया है।"

अंताकिया में जमात

19 जो ईमानदार स्तिफ़नुस की मौत के बाद की ईज़ारसानी से बिखर गए थे वह फ़ेनीके, क़ुबरुस और अंताकिया तक
पहुँच गए। जहाँ भी वह जाते वहाँ अल्लाह का पैग़ाम सुनाते अलबत्ता सिर्फ़ यहूदियों को। 20 लेकिन उनमें से कुरेन
और क़ुबरुस के कुछ आदमी अंताकिया शहर जाकर यूनानियों को भी ख़ुदावंद ईसा के बारे में ख़ुशख़बरी सुनाने लगे।
21 ख़ुदावंद की क़ुदरत उनके साथ थी, और बहुत-से लोगों ने ईमान लाकर ख़ुदावंद की तरफ़ रुजू किया। 22 इसकी
ख़बर यरूशलम की जमात तक पहुँच गई तो उन्होंने बरनबास को अंताकिया भेज दिया। 23 जब वह वहाँ पहुँचा और
देखा कि अल्लाह के फ़ज़ल से क्या कुछ हुआ है तो वह ख़ुश हुआ। उसने उन सबकी हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह पूरी
लगन से ख़ुदावंद के साथ लिपटे रहें। 24 बरनबास नेक आदमी था जो रूहुल-क़ुद्स और ईमान से मामूर था। चुनाँचे उस
वक़्त बहुत-से लोग ख़ुदावंद की जमात में शामिल हुए।
25 इसके बाद वह साऊल की तलाश में तरसुस चला गया। 26 जब उसे मिला तो वह उसे अंताकिया ले आया। वहाँ
वह दोनों एक पूरे साल तक जमात में शामिल होते और बहुत-से लोगों को सिखाते रहे। अंताकिया पहला मक़ाम था
जहाँ ईमानदार मसीही कहलाने लगे।
27 उन दिनों कुछ नबी यरूशलम से आकर अंताकिया पहुँच गए। 28 एक का नाम अगबुस था। वह खड़ा हुआ
और रूहुल-क़ुद्स की मारिफ़त पेशगोई की कि रोम की पूरी ममलकत में सख़्त काल पड़ेगा। (यह बात उस वक़्त पूरी
हुई जब शहनशाह क्लौदियुस की हुकूमत थी।) 29 अगबुस की बात सुनकर अंताकिया के शागिर्दों ने फ़ैसला किया कि
हममें से हर एक अपनी माली गुंजाइश के मुताबिक़ कुछ दे ताकि उसे यहूदिया में रहनेवाले भाइयों की इमदाद के लिए
भेजा जा सके। 30 उन्होंने अपने इस हदिये को बरनबास और साऊल के सुपुर्द करके वहाँ के बुज़ुर्गों को भेज दिया।

12

मज़ीद ईज़ारसानी

1 उन दिनों में बादशाह हेरोदेस अग्रिप्पा जमात के कुछ ईमानदारों को गिरिफ़्तार करके उनसे बदसुलूकी करने लगा।
2 इस सिलसिले में उसने याक़ूब रसूल (यूहन्ना के भाई) को तलवार से क़त्ल करवाया। 3 जब उसने देखा कि यह हरकत
यहूदियों को पसंद आई है तो उसने पतरस को भी गिरिफ़्तार कर लिया। उस वक़्त बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई जा रही
थी। 4 उसने उसे जेल में डालकर चार दस्तों के हवाले कर दिया कि उस की पहरादारी करें (हर दस्ते में चार फ़ौजी
थे)। ख़याल था कि ईद के बाद ही पतरस को अवाम के सामने खड़ा करके उस की अदालत की जाए। 5 यों पतरस
क़ैदख़ाने में रहा। लेकिन ईमानदारों की जमात लगातार उसके लिए दुआ करती रही।

पतरस की रिहाई

6 फिर अदालत का दिन क़रीब आ गया। पतरस रात के वक़्त सो रहा था। अगले दिन हेरोदेस उसे पेश करना चाहता
था। पतरस दो फ़ौजियों के दरमियान लेटा हुआ था जो दो ज़ंजीरों से उसके साथ बँधे हुए थे। दीगर फ़ौजी दरवाज़े के
सामने पहरा दे रहे थे। 7 अचानक एक तेज़ रौशनी कोठड़ी में चमक उठी और रब का एक फ़रिश्ता पतरस के सामने
आ खड़ा हुआ। उसने उसके पहलू को झटका देकर उसे जगा दिया और कहा, "जल्दी करो! उठो!" तब पतरस की
कलाइयों पर की ज़ंजीरें गिर गईं। 8 फिर फ़रिश्ते ने उसे बताया, "अपने कपड़े और जूते पहन लो।" पतरस ने ऐसा ही
किया। फ़रिश्ते ने कहा, "अब अपनी चादर ओढ़कर मेरे पीछे हो लो।" 9 चुनाँचे पतरस कोठड़ी से निकलकर फ़रिश्ते
के पीछे हो लिया अगरचे उसे अब तक समझ नहीं आई थी कि जो कुछ हो रहा है हक़ीक़ी है। उसका ख़याल था कि

मैं रोया देख रहा हूँ। 10 दोनों पहले पहरे से गुज़र गए, फिर दूसरे से और यों शहर में पहुँचानेवाले लोहे के गेट के पास
आए। यह ख़ुद बख़ुद खुल गया और वह दोनों निकलकर एक गली में चलने लगे। चलते चलते फ़रिश्ते ने अचानक
पतरस को छोड़ दिया।
11 फिर पतरस होश में आ गया। उसने कहा, "वाक़ई, ख़ुदावंद ने अपने फ़रिश्ते को मेरे पास भेजकर मुझे हेरोदेस
के हाथ से बचाया है। अब यहूदी क़ौम की तवक़्क़ो पूरी नहीं होगी।"
12 जब यह बात उसे समझ आई तो वह यूहन्ना मरक़ुस की माँ मरियम के घर चला गया। वहाँ बहुत-से अफ़राद
जमा होकर दुआ कर रहे थे। 13 पतरस ने गेट खटखटाया तो एक नौकरानी देखने के लिए आई। उसका नाम रुदी था।
14 जब उसने पतरस की आवाज़ पहचान ली तो वह ख़ुशी के मारे गेट को खोलने के बजाए दौड़कर अंदर चली गई
और बताया, "पतरस गेट पर खड़े हैं!" 15 हाज़िरीन ने कहा, "होश में आओ!" लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी
रही। फिर उन्होंने कहा, "यह उसका फ़रिश्ता होगा।"
16 अब तक पतरस बाहर खड़ा खटखटा रहा था। चुनाँचे उन्होंने गेट को खोल दिया। पतरस को देखकर वह हैरान
रह गए। 17 लेकिन उसने अपने हाथ से ख़ामोश रहने का इशारा किया और उन्हें सारा वाक़िया सुनाया कि ख़ुदावंद मुझे
किस तरह जेल से निकाल लाया है। "याक़ूब और बाक़ी भाइयों को भी यह बताना," यह कहकर वह कहीं और चला
गया।
18 अगली सुबह जेल के फ़ौजियों में बड़ी हलचल मच गई कि पतरस का क्या हुआ है। 19 जब हेरोदेस ने उसे ढूँडा
और न पाया तो उसने पहरेदारों का बयान लेकर उन्हें सज़ाए-मौत दे दी।
इसके बाद वह यहूदिया से चला गया और क़ैसरिया में रहने लगा।

हेरोदेस अग्रिप्पा की मौत

20 उस वक़्त वह सूर और सैदा के बाशिंदों से निहायत नाराज़ था। इसलिए दोनों शहरों के नुमाइंदे मिलकर सुलह
की दरख़ास्त करने के लिए उसके पास आए। वजह यह थी कि उनकी ख़ुराक हेरोदेस के मुल्क से हासिल होती थी।
उन्होंने बादशाह के महल के इंचार्ज ब्लस्तुस को इस पर आमादा किया कि वह उनकी मदद करे 21 और बादशाह से
मिलने का दिन मुक़र्रर किया। जब वह दिन आया तो हेरोदेस अपना शाही लिबास पहनकर तख़्त पर बैठ गया और एक
अलानिया तक़रीर की। 22 अवाम ने नारे लगा लगाकर पुकारा, "यह अल्लाह की आवाज़ है, इनसान की नहीं।"
23 वह अभी यह कह रहे थे कि रब के फ़रिश्ते ने हेरोदेस को मारा, क्योंकि उसने लोगों की परस्तिश क़बूल करके
अल्लाह को जलाल नहीं दिया था। वह बीमार हुआ और कीड़ों ने उसके जिस्म को खा खाकर ख़त्म कर दिया। इसी
हालत में वह मर गया।
24 लेकिन अल्लाह का कलाम बढ़ता और फैलता गया।
25 इतने में बरनबास और साऊल अंताकिया का हदिया लेकर यरूशलम पहुँच चुके थे। उन्होंने पैसे वहाँ के बुज़ुर्गों
के सुपुर्द कर दिए और फिर यूहन्ना मरक़ुस को साथ लेकर वापस चले गए।

13

बरनबास और साऊल को तबलीग़ी ख़िदमत के लिए चुना जाता है

1 अंताकिया की जमात में कई नबी और उस्ताद थे : बरनबास, शमौन जो काला कहलाता था, लूकियुस कुरेनी,
मनाहेम जिसने बादशाह हेरोदेस अंतिपास के साथ परवरिश पाई थी और साऊल। 2 एक दिन जब वह रोज़ा रखकर
ख़ुदावंद की परस्तिश कर रहे थे तो रूहुल-क़ुद्स उनसे हमकलाम हुआ, "बरनबास और साऊल को उस ख़ास काम के
लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।"
3 इस पर उन्होंने मज़ीद रोज़े रखे और दुआ की, फिर उन पर अपने हाथ रखकर उन्हें रुख़सत कर दिया।

क़ुबरुस में

4 यों बरनबास और साऊल को रूहुल-क़ुद्स की तरफ़ से भेजा गया। पहले वह साहिली शहर सलूकिया गए और
वहाँ जहाज़ में बैठकर जज़ीराए-क़ुबरुस के लिए रवाना हुए। 5 जब वह सलमीस शहर पहुँचे तो उन्होंने यहूदियों के
इबादतख़ानों में जाकर अल्लाह का कलाम सुनाया। यूहन्ना मरक़ुस मददगार के तौर पर उनके साथ था।
6 पूरे जज़ीरे में से सफ़र करते करते वह पाफ़ुस शहर तक पहुँच गए। वहाँ उनकी मुलाक़ात एक यहूदी जादूगर से हुई
जिसका नाम बर-ईसा था। वह झूटा नबी था 7 और जज़ीरे के गवर्नर सिरगियुस पौलुस की ख़िदमत के लिए हाज़िर रहता
था। सिरगियुस एक समझदार आदमी था। उसने बरनबास और साऊल को अपने पास बुला लिया क्योंकि वह अल्लाह
का कलाम सुनने का ख़ाहिशमंद था। 8 लेकिन जादूगर इलीमास (बर-ईसा का दूसरा नाम) ने उनकी मुख़ालफ़त करके

गवर्नर को ईमान से बाज़ रखने की कोशिश की। 9 फिर साऊल जो पौलुस भी कहलाता है रूहुल-क़ुद्स से मामूर हुआ
और ग़ौर से उस की तरफ़ देखने लगा। 10 उसने कहा, "इबलीस के फ़रज़ंद! तू हर क़िस्म के धोके और बदी से भरा
हुआ है और हर इनसाफ़ का दुश्मन है। क्या तू ख़ुदावंद की सीधी राहों को बिगाड़ने की कोशिश से बाज़ न आएगा?
11 अब ख़ुदावंद तुझे सज़ा देगा। तू अंधा होकर कुछ देर के लिए सूरज की रौशनी नहीं देखेगा।"

उसी लमहे धुंध और तारीकी जादूगर पर छा गई और वह टटोल टटोलकर किसी को तलाश करने लगा जो उस की
राहनुमाई करे। 12 यह माजरा देखकर गवर्नर ईमान लाया, क्योंकि ख़ुदावंद की तालीम ने उसे हैरतज़दा कर दिया था।

पिसिदिया के शहर अंताकिया में मुनादी

13 फिर पौलुस और उसके साथी जहाज़ पर सवार हुए और पाफ़ुस से रवाना होकर पिरगा शहर पहुँच गए जो
पंफ़ीलिया में है। वहाँ यूहन्ना मरक़ुस उन्हें छोड़कर यरूशलम वापस चला गया। 14 लेकिन पौलुस और बरनबास आगे
निकलकर पिसिदिया में वाक़े शहर अंताकिया पहुँचे जहाँ वह सबत के दिन यहूदी इबादतख़ाने में जाकर बैठ गए।
15 तौरेत और नबियों के सहीफ़ों की तिलावत के बाद इबादतख़ाने के राहनुमाओं ने उन्हें कहला भेजा, "भाइयो, अगर
आपके पास लोगों के लिए कोई नसीहत की बात है तो उसे पेश करें।" 16 पौलुस खड़ा हुआ और हाथ का इशारा करके
बोलने लगा,

"इसराईल के मर्दो और ख़ुदातरस ग़ैरयहूदियो, मेरी बात सुनें! 17 इस क़ौम इसराईल के ख़ुदा ने हमारे बापदादा को
चुनकर उन्हें मिसर में ही ताक़तवर बना दिया जहाँ वह अजनबी थे। फिर वह उन्हें बड़ी क़ुदरत के साथ वहाँ से निकाल
लाया। 18 जब वह रेगिस्तान में फिर रहे थे तो वह चालीस साल तक उन्हें बरदाश्त करता रहा। 19 इसके बाद उसने
मुल्के-कनान में सात क़ौमों को तबाह करके उनकी ज़मीन इसराईल को विरसे में दी। 20 इतने में तक़रीबन 450 साल
गुज़र गए।

यशुअ की मौत पर अल्लाह ने उन्हें समुएल नबी के दौर तक क़ाज़ी दिए ताकि उनकी राहनुमाई करें। 21 फिर इनसे
तंग आकर उन्होंने बादशाह माँगा, इसलिए उसने उन्हें साऊल बिन क़ीस दे दिया जो बिनयमीन के क़बीले का था।
साऊल चालीस साल तक उनका बादशाह रहा, 22 फिर अल्लाह ने उसे हटाकर दाऊद को तख़्त पर बिठा दिया। दाऊद
वही आदमी है जिसके बारे में अल्लाह ने गवाही दी, 'मैंने दाऊद बिन यस्सी में एक ऐसा आदमी पाया है जो मेरी सोच
रखता है। जो कुछ भी मैं चाहता हूँ उसे वह करेगा।' 23 इसी बादशाह की औलाद में से ईसा निकला जिसका वादा
अल्लाह कर चुका था और जिसे उसने इसराईल को नजात देने के लिए भेज दिया। 24 उसके आने से पेशतर यहया
बपतिस्मा देनेवाले ने एलान किया कि इसराईल की पूरी क़ौम को तौबा करके बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है। 25 अपनी
ख़िदमत के इख़्तिताम पर उसने कहा, 'तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ? मैं वह नहीं हूँ जो तुम समझते हो। लेकिन मेरे बाद
वह आ रहा है जिसके जूतों के तसमे मैं खोलने के लायक़ भी नहीं हूँ।'

26 भाइयो, इब्राहीम के फ़रज़ंदो और ख़ुदा का ख़ौफ़ माननेवाले ग़ैरयहूदियो! नजात का पैग़ाम हमें ही भेज दिया
गया है। 27 यरूशलम के रहनेवालों और उनके राहनुमाओं ने ईसा को न पहचाना बल्कि उसे मुजरिम ठहराया। यों
उनकी मारिफ़त नबियों की वह पेशगोइयाँ पूरी हुईं जिनकी तिलावत हर सबत को की जाती है। 28 और अगरचे उन्हें
सज़ाए-मौत देने की वजह न मिली तो भी उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह उसे सज़ाए-मौत दे। 29 जब उनकी
मारिफ़त ईसा के बारे में तमाम पेशगोइयाँ पूरी हुईं तो उन्होंने उसे सलीब से उतारकर क़ब्र में रख दिया। 30 लेकिन
अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया 31 और वह बहुत दिनों तक अपने उन पैरोकारों पर ज़ाहिर होता रहा जो
उसके साथ गलील से यरूशलम आए थे। यह अब हमारी क़ौम के सामने उसके गवाह हैं। 32 और अब हम आपको यह
ख़ुशख़बरी सुनाने आए हैं कि जो वादा अल्लाह ने हमारे बापदादा के साथ किया, 33 उसे उसने ईसा को ज़िंदा करके
हमारे लिए जो उनकी औलाद हैं पूरा कर दिया है। यों दूसरे ज़बूर में लिखा है, 'तू मेरा फ़रज़ंद है, आज मैं तेरा बाप बन
गया हूँ।' 34 इस हक़ीक़त का ज़िक्र भी कलामे-मुक़द्दस में किया गया है कि अल्लाह उसे मुरदों में से ज़िंदा करके कभी
गलने-सड़ने नहीं देगा : 'मैं तुम्हें उन मुक़द्दस और अनमिट मेहरबानियों से नवाज़ूँगा जिनका वादा दाऊद से किया था।'
35 यह बात एक और हवाले में पेश की गई है, 'तू अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने नहीं देगा।'
36 इस हवाले का ताल्लुक़ दाऊद के साथ नहीं है, क्योंकि दाऊद अपने ज़माने में अल्लाह की मरज़ी की ख़िदमत
करने के बाद फ़ौत होकर अपने बापदादा से जा मिला। उस की लाश गलकर ख़त्म हो गई। 37 बल्कि यह हवाला किसी
और का ज़िक्र करता है, उसका जिसे अल्लाह ने ज़िंदा कर दिया और जिसका जिस्म गलने-सड़ने से दोचार न हुआ।
38 भाइयो, अब मेरी यह बात जान लें, हम इसकी मुनादी करने आए हैं कि आपको इस शख़्स ईसा के वसीले से अपने
गुनाहों की मुआफ़ी मिलती है। मूसा की शरीअत आपको किसी तरह भी रास्तबाज़ क़रार नहीं दे सकती थी, 39 लेकिन

अब जो भी ईसा पर ईमान लाए उसे हर लिहाज़ से रास्तबाज़ क़रार दिया जाता है। 40 इसलिए ख़बरदार! ऐसा न हो कि
वह बात आप पर पूरी उतरे जो नबियों के सहीफ़ों में लिखी है,

41 'ग़ौर करो, मज़ाक़ उड़ानेवालो!
हैरतज़दा होकर हलाक हो जाओ।
क्योंकि मैं तुम्हारे जीते-जी एक ऐसा काम करूँगा
जिसकी जब ख़बर सुनोगे
तो तुम्हें यक़ीन नहीं आएगा'।"

42 जब पौलुस और बरनबास इबादतख़ाने से निकलने लगे तो लोगों ने उनसे गुज़ारिश की, "अगले सबत हमें इन
बातों के बारे में मज़ीद कुछ बताएँ।" 43 इबादत के बाद बहुत-से यहूदी और यहूदी ईमान के नौमुरीद पौलुस और
बरनबास के पीछे हो लिए, और दोनों ने उनसे बात करके उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की कि अल्लाह के फ़ज़ल पर क़ायम
रहें।

44 अगले सबत के दिन तक़रीबन तमाम शहर ख़ुदावंद का कलाम सुनने को जमा हुआ। 45 लेकिन जब यहूदियों ने
हुजूम को देखा तो वह हसद से जल गए और पौलुस की बातों की तरदीद करके कुफ़्र बकने लगे। 46 इस पर पौलुस
और बरनबास ने उनसे साफ़ साफ़ कह दिया, "लाज़िम था कि अल्लाह का कलाम पहले आपको सुनाया जाए। लेकिन
चूँकि आप उसे मुस्तरद करके अपने आपको अबदी ज़िंदगी के लायक़ नहीं समझते इसलिए हम अब ग़ैरयहूदियों की
तरफ़ रुख़ करते हैं। 47 क्योंकि ख़ुदावंद ने हमें यही हुक्म दिया जब उसने फ़रमाया, 'मैंने तुझे दीगर अक़वाम की रौशनी
बना दी है ताकि तू मेरी नजात को दुनिया की इंतहा तक पहुँचाए'।"

48 यह सुनकर ग़ैरयहूदी ख़ुश हुए और ख़ुदावंद के कलाम की तमजीद करने लगे। और जितने अबदी ज़िंदगी के
लिए मुक़र्रर किए गए थे वह ईमान लाए।

49 यों ख़ुदावंद का कलाम पूरे इलाक़े में फैल गया। 50 फिर यहूदियों ने शहर के लीडरों और यहूदी ईमान रखनेवाली
कुछ बारसूख़ ग़ैरयहूदी ख़वातीन को उकसाकर लोगों को पौलुस और बरनबास को सताने पर उभारा। आख़िरकार उन्हें
शहर की सरहद्दों से निकाल दिया गया। 51 इस पर वह उनके ख़िलाफ़ गवाही के तौर पर अपने जूतों से गर्द झाड़कर
आगे बढ़े और इकुनियुम शहर पहुँच गए। 52 और अंताकिया के शागिर्द ख़ुशी और रूहुल-क़ुद्स से भरे रहे।

14

इकुनियुम में

1 इकुनियुम में पौलुस और बरनबास यहूदी इबादतख़ाने में जाकर इतने इख़्तियार से बोले कि यहूदियों और ग़ैरयहूदियों
की बड़ी तादाद ईमान ले आई। 2 लेकिन जिन यहूदियों ने ईमान लाने से इनकार किया उन्होंने ग़ैरयहूदियों को उकसाकर
भाइयों के बारे में उनके ख़यालात ख़राब कर दिए। 3 तो भी रसूल काफ़ी देर तक वहाँ ठहरे। उन्होंने दिलेरी से ख़ुदावंद
के बारे में तालीम दी और ख़ुदावंद ने अपने फ़ज़ल के पैग़ाम की तसदीक़ की। उसने उनके हाथों इलाही निशान और
मोजिज़े रूनुमा होने दिए। 4 लेकिन शहर में आबाद लोग दो गुरोहों में बट गए। कुछ यहूदियों के हक़ में थे और कुछ
रसूलों के हक़ में।

5 फिर कुछ ग़ैरयहूदियों और यहूदियों में जोश आ गया। उन्होंने अपने लीडरों समेत फ़ैसला किया कि हम पौलुस
और बरनबास की तज़लील करके उन्हें संगसार करेंगे। 6 लेकिन जब रसूलों को पता चला तो वह हिजरत करके
लुकाउनिया के शहरों लुस्तरा, दिरबे और इर्दगिर्द के इलाक़े में 7 अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते रहे।

लुस्तरा और दिरबे

8 लुस्तरा में पौलुस और बरनबास की मुलाक़ात एक आदमी से हुई जिसके पाँवों में ताक़त नहीं थी। वह पैदाइश ही
से लँगड़ा था और कभी भी चल-फिर न सका था। वह वहाँ बैठा 9 उनकी बातें सुन रहा था कि पौलुस ने ग़ौर से उस
की तरफ़ देखा। उसने जान लिया कि उस आदमी में रिहाई पाने के लायक़ ईमान है। 10 इसलिए वह ऊँची आवाज़ से
बोला, "अपने पाँवों पर खड़े हो जाएँ!" वह उछलकर खड़ा हुआ और चलने-फिरने लगा। 11 पौलुस का यह काम
देखकर हुजूम अपनी मक़ामी ज़बान में चिल्ला उठा, "इन आदमियों की शक्ल में देवता हमारे पास उतर आए हैं।"
12 उन्होंने बरनबास को यूनानी देवता ज़ियूस क़रार दिया और पौलुस को देवता हिरमेस, क्योंकि कलाम सुनाने की
ख़िदमत ज़्यादातर वह अंजाम देता था। 13 इस पर शहर से बाहर वाक़े ज़ियूस के मंदिर का पुजारी शहर के दरवाज़े पर
बैल और फूलों के हार ले आया और हुजूम के साथ क़ुरबानियाँ चढ़ाने की तैयारियाँ करने लगा।

14 यह सुनकर बरनबास और साऊल रसूल अपने कपड़ों को फाड़कर हुजूम में जा घुसे और चिल्लाने लगे,
15 “मर्दो, यह आप क्या कर रहे हैं? हम भी आप जैसे इनसान हैं। हम तो आपको अल्लाह की यह ख़ुशख़बरी सुनाने
आए हैं कि आप इन बेकार चीज़ों को छोड़कर ज़िंदा ख़ुदा की तरफ़ रुजू फ़रमाएँ जिसने आसमानो-ज़मीन, समुंदर और
जो कुछ उनमें है पैदा किया है। 16 माज़ी में उसने तमाम ग़ैरयहूदी क़ौमों को खुला छोड़ दिया था कि वह अपनी अपनी
राह पर चलें। 17 तो भी उसने ऐसी चीज़ें आपके पास रहने दी हैं जो उस की गवाही देती हैं। उस की मेहरबानी इससे
ज़ाहिर होती है कि वह आपको बारिश भेजकर हर मौसम की फ़सलें मुहैया करता है और आप सेर होकर ख़ुशी से भर
जाते हैं।” 18 इन अलफ़ाज़ के बावुजूद पौलुस और बरनबास ने बड़ी मुश्किल से हुजूम को उन्हें क़ुरबानियाँ चढ़ाने से
रोका।

19 फिर कुछ यहूदी पिसिदिया के अंताकिया और इकुनियुम से वहाँ आए और हुजूम को अपनी तरफ़ मायल किया।
उन्होंने पौलुस को संगसार किया और शहर से बाहर घसीटकर ले गए। उनका ख़याल था कि वह मर गया है, 20 लेकिन
जब शागिर्द उसके गिर्द जमा हुए तो वह उठकर शहर की तरफ़ वापस चल पड़ा। अगले दिन वह बरनबास समेत दिरबे
चला गया।

शाम के अंताकिया में वापसी

21 दिरबे में उन्होंने अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाकर बहुत-से शागिर्द बनाए। फिर वह मुड़कर लुस्तरा, इकुनियुम
और पिसिदिया के अंताकिया वापस आए। 22 हर जगह उन्होंने शागिर्दों के दिल मज़बूत करके उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई
की कि वह ईमान में साबितक़दम रहें। उन्होंने कहा, “लाज़िम है कि हम बहुत-सी मुसीबतों में से गुज़रकर अल्लाह की
बादशाही में दाख़िल हों।” 23 पौलुस और बरनबास ने हर जमात में बुज़ुर्ग भी मुक़र्रर किए। उन्होंने रोज़े रखकर दुआ
की और उन्हें उस ख़ुदावंद के सुपुर्द किया जिस पर वह ईमान लाए थे।

24 यों पिसिदिया के इलाक़े में से सफ़र करते करते वह पंफ़ीलिया पहुँचे। 25 उन्होंने पिरगा में कलामे-मुक़द्दस सुनाया
और फिर उतरकर अत्तलिया पहुँचे। 26 वहाँ से वह जहाज़ में बैठकर शाम के शहर अंताकिया के लिए रवाना हुए, उस
शहर के लिए जहाँ ईमानदारों ने उन्हें इस तबलीग़ी सफ़र के लिए अल्लाह के फ़ज़ल के सुपुर्द किया था। यों उन्होंने
अपनी इस ख़िदमत को पूरा किया।

27 अंताकिया पहुँचकर उन्होंने ईमानदारों को जमा करके उन तमाम कामों का बयान किया जो अल्लाह ने उनके
वसीले से किए थे। साथ साथ उन्होंने यह भी बताया कि अल्लाह ने किस तरह ग़ैरयहूदियों के लिए भी ईमान का
दरवाज़ा खोल दिया है। 28 और वह काफ़ी देर तक वहाँ के शागिर्दों के पास ठहरे रहे।

15

यरूशलम में मुशावरती इजतिमा

1 उस वक़्त कुछ आदमी यहूदिया से आकर शाम के अंताकिया में भाइयों को यह तालीम देने लगे, “लाज़िम है
कि आपका मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ख़तना किया जाए, वरना आप नजात नहीं पा सकेंगे।” 2 इससे उनके
और बरनबास और पौलुस के दरमियान नाइत्तफ़ाक़ी पैदा हो गई और दोनों उनके साथ ख़ूब बहस-मुबाहसा करने लगे।
आख़िरकार जमात ने पौलुस और बरनबास को मुक़र्रर किया कि वह चंद एक और मक़ामी ईमानदारों के साथ यरूशलम
जाएँ और वहाँ के रसूलों और बुज़ुर्गों को यह मामला पेश करें।

3 चुनाँचे जमात ने उन्हें रवाना किया और वह फ़ेनीके और सामरिया में से गुज़रे। रास्ते में उन्होंने मक़ामी ईमानदारों
को तफ़सील से बताया कि ग़ैरयहूदी किस तरह ख़ुदावंद की तरफ़ रुजू ला रहे हैं। यह सुनकर तमाम भाई निहायत ख़ुश
हुए। 4 जब वह यरूशलम पहुँच गए तो जमात ने अपने रसूलों और बुज़ुर्गों समेत उनका इस्तक़बाल किया। फिर पौलुस
और बरनबास ने सब कुछ बयान किया जो उनकी मारिफ़त हुआ था। 5 यह सुनकर कुछ ईमानदार खड़े हुए जो फ़रीसी
फ़िरक़े में से थे। उन्होंने कहा, “लाज़िम है कि ग़ैरयहूदियों का ख़तना किया जाए और उन्हें हुक्म दिया जाए कि वह
मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें।”

6 रसूल और बुज़ुर्ग इस मामले पर ग़ौर करने के लिए जमा हुए। 7 बहुत बहस-मुबाहसा के बाद पतरस खड़ा हुआ
और कहा, “भाइयो, आप जानते हैं कि अल्लाह ने बहुत देर हुई आपमें से मुझे चुन लिया कि ग़ैरयहूदियों को अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ ताकि वह ईमान लाएँ। 8 और अल्लाह ने जो दिलों को जानता है इस बात की तसदीक़ की है,
क्योंकि उसने उन्हें वही रूहुल-क़ुद्स बख़्शा है जो उसने हमें भी दिया था। 9 उसने हममें और उनमें कोई भी फ़रक़ न
रखा बल्कि ईमान से उनके दिलों को भी पाक कर दिया। 10 चुनाँचे आप अल्लाह को इसमें क्यों आज़मा रहे हैं कि
आप ग़ैरयहूदी शागिर्दों की गरदन पर एक ऐसा जुआ रखना चाहते हैं जो न हम और न हमारे बापदादा उठा सकते थे?
11 देखें, हम तो ईमान रखते हैं कि हम सब एक ही तरीक़े यानी ख़ुदावंद ईसा के फ़ज़ल ही से नजात पाते हैं।”

12 तमाम लोग चुप रहे तो पौलुस और बरनबास उन्हें उन इलाही निशानों और मोजिज़ों के बारे में बताने लगे जो
अल्लाह ने उनकी मारिफ़त ग़ैरयहूदियों के दरमियान किए थे। 13 जब उनकी बात ख़त्म हुई तो याक़ूब ने कहा, "भाइयो,
मेरी बात सुनें! 14 शमौन ने बयान किया है कि अल्लाह ने किस तरह पहला क़दम उठाकर ग़ैरयहूदियों पर अपनी
फ़िकरमंदी का इज़हार किया और उनमें से अपने लिए एक क़ौम चुन ली। 15 और यह बात नबियों की पेशगोइयों के
भी मुताबिक़ है। चुनाँचे लिखा है,

16 'इसके बाद मैं वापस आकर
दाऊद के तबाहशुदा घर को नए सिरे से तामीर करूँगा,
मैं उसके खंडरात दुबारा तामीर करके बहाल करूँगा
17 ताकि लोगों का बचा-खुचा हिस्सा और वह तमाम क़ौमें
मुझे ढूँडें जिन पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है।
यह रब का फ़रमान है, और वह यह करेगा भी'
18 बल्कि यह उसे अज़ल से मालूम है।

19 यही पेशे-नज़र रखकर मेरी राय यह है कि हम उन ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह की तरफ़ रुजू कर रहे हैं ग़ैरज़रूरी
तकलीफ़ न दें। 20 इसके बजाए बेहतर यह है कि हम उन्हें लिखकर हिदायत दें कि वह इन चीज़ों से परहेज़ करें : ऐसे
खानों से जो बुतों को पेश किए जाने से नापाक हैं, ज़िनाकारी से, ऐसे जानवरों का गोश्त खाने से जिन्हें गला घूँटकर
मार दिया गया हो और ख़ून खाने से। 21 क्योंकि मूसवी शरीअत की मुनादी करनेवाले कई नसलों से हर शहर में रह
रहे हैं। जिस शहर में भी जाएँ हर सबत के दिन शरीअत की तिलावत की जाती है।"

ग़ैरयहूदी ईमानदारों के नाम ख़त

22 फिर रसूलों और बुज़ुर्गों ने पूरी जमात समेत फ़ैसला किया कि हम अपने में से कुछ आदमी चुनकर पौलुस और
बरनबास के हमराह शाम के शहर अंताकिया भेज दें। दो को चुना गया जो भाइयों में राहनुमा थे, यहूदाह बरसब्बा और
सीलास। 23 उनके हाथ उन्होंने यह ख़त भेजा,

"यरूशलम के रसूलों और बुज़ुर्गों की तरफ़ से जो आपके भाई हैं।
अज़ीज़ ग़ैरयहूदी भाइयो जो अंताकिया, शाम और किलिकिया में रहते हैं, अस्सलामु अलैकुम!

24 सुना है कि हममें से कुछ लोगों ने आपके पास आकर आपको परेशान करके बेचैन कर दिया है, हालाँकि हमने
उन्हें नहीं भेजा था। 25 इसलिए हम सब इस पर मुत्तफ़िक़ हुए कि कुछ आदमियों को चुनकर अपने प्यारे भाइयों
बरनबास और पौलुस के हमराह आपके पास भेजें। 26 बरनबास और पौलुस ऐसे लोग हैं जिन्होंने हमारे ख़ुदावंद ईसा
मसीह की ख़ातिर अपनी जान ख़तरे में डाल दी है। 27 उनके साथी यहूदाह और सीलास हैं जिनको हमने इसलिए भेजा
कि वह ज़बानी भी उन बातों की तसदीक़ करें जो हमने लिखी हैं।

28 हम और रूहुल-क़ुद्स इस पर मुत्तफ़िक़ हुए हैं कि आप पर सिवाए इन ज़रूरी बातों के कोई बोझ न डालें :
29 बुतों को पेश किया गया खाना मत खाना, ख़ून मत खाना, ऐसे जानवरों का गोश्त मत खाना जो गला घूँटकर मार
दिए गए हों। इसके अलावा ज़िनाकारी न करें। इन चीज़ों से बाज़ रहेंगे तो अच्छा करेंगे। ख़ुदा हाफ़िज़।"

30 पौलुस, बरनबास और उनके साथी रुख़सत होकर अंताकिया चले गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने जमात इकट्ठी करके
उसे ख़त दे दिया। 31 उसे पढ़कर ईमानदार उसके हौसलाअफ़्ज़ा पैग़ाम पर ख़ुश हुए। 32 यहूदाह और सीलास ने भी
जो ख़ुद नबी थे भाइयों की हौसलाअफ़्ज़ाई और मज़बूती के लिए काफ़ी बातें कीं। 33 वह कुछ देर के लिए वहाँ ठहरे,
फिर मक़ामी भाइयों ने उन्हें सलामती से अलविदा कहा ताकि वह भेजनेवालों के पास वापस जा सकें। 34 [लेकिन
सीलास को वहाँ ठहरना अच्छा लगा।]

35 पौलुस और बरनबास ख़ुद कुछ और देर अंताकिया में रहे। वहाँ वह बहुत-से और लोगों के साथ ख़ुदावंद के
कलाम की तालीम देते और उस की मुनादी करते रहे।

पौलुस और बरनबास जुदा हो जाते हैं

36 कुछ दिनों के बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, "आओ, हम मुड़कर उन तमाम शहरों में जाएँ जहाँ हमने ख़ुदावंद
के कलाम की मुनादी की है और वहाँ के भाइयों से मुलाक़ात करके उनका हाल मालूम करें।" 37 बरनबास मुत्तफ़िक़
होकर यूहन्ना मरक़ुस को साथ ले जाना चाहता था, 38 लेकिन पौलुस ने इसरार किया कि वह साथ न जाए, क्योंकि
यूहन्ना मरक़ुस पहले दौरे के दौरान ही पंफ़ीलिया में उन्हें छोड़कर उनके साथ ख़िदमत करने से बाज़ आया था। 39 इससे
उनमें इतना सख़्त इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ कि वह एक दूसरे से जुदा हो गए। बरनबास यूहन्ना मरक़ुस को साथ लेकर जहाज़
में बैठ गया और क़ुबरुस चला गया, 40 जबकि पौलुस ने सीलास को ख़िदमत के लिए चुन लिया। मक़ामी भाइयों ने

उन्हें ख़ुदावंद के फ़ज़ल के सुपुर्द किया और वह रवाना हुए। 41 यों पौलुस जमातों को मज़बूत करते करते शाम और
किलिकिया में से गुज़रा।

16

तीमुथियुस का चुनाव

1 चलते चलते वह दिरबे पहुँचा, फिर लुस्तरा। वहाँ एक शागिर्द बनाम तीमुथियुस रहता था। उस की यहूदी माँ ईमान
लाई थी जबकि बाप यूनानी था। 2 लुस्तरा और इकुनियुम के भाइयों ने उस की अच्छी रिपोर्ट दी, 3 इसलिए पौलुस
उसे सफ़र पर अपने साथ ले जाना चाहता था। उस इलाक़े के यहूदियों का लिहाज़ करके उसने तीमुथियुस का ख़तना
करवाया, क्योंकि सब लोग इससे वाक़िफ़ थे कि उसका बाप यूनानी है। 4 फिर शहर बशहर जाकर उन्होंने मक़ामी
जमातों को यरूशलम के रसूलों और बुज़ुर्गों के वह फ़ैसले पहुँचाए जिनके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारनी थी। 5 यों जमातें
ईमान में मज़बूत हुईं और तादाद में रोज़ बरोज़ बढ़ती गईं।

त्रोआस में पौलुस की रोया

6 रूहुल-क़ुद्स ने उन्हें सूबा आसिया में कलामे-मुक़द्दस की मुनादी करने से रोक लिया, इसलिए वह फ़रूगिया और
गलतिया के इलाक़े में से गुज़रे। 7 मूसिया के क़रीब आकर उन्होंने शिमाल की तरफ़ सूबा बिथुनिया में दाख़िल होने की
कोशिश की। लेकिन ईसा के रूह ने उन्हें वहाँ भी जाने न दिया, 8 इसलिए वह मूसिया में से गुज़रकर बंदरगाह त्रोआस
पहुँचे। 9 वहाँ पौलुस ने रात के वक़्त रोया देखी जिसमें शिमाली यूनान में वाक़े सूबा मकिदुनिया का एक आदमी खड़ा
उससे इलतमास कर रहा था, "समुंदर को पार करके मकिदुनिया आएँ और हमारी मदद करें!" 10 ज्योंही उसने यह
रोया देखी हम मकिदुनिया जाने की तैयारियाँ करने लगे। क्योंकि हमने रोया से यह नतीजा निकाला कि अल्लाह ने हमें
उस इलाक़े के लोगों को ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए बुलाया है।

फ़िलिप्पी में लुदिया की तबदीली

11 हम त्रोआस में जहाज़ पर सवार होकर सीधे जज़ीराए-समुतराके के लिए रवाना हुए। फिर अगले दिन आगे
निकलकर नयापुलिस पहुँचे। 12 वहाँ जहाज़ से उतरकर हम फ़िलिप्पी चले गए, जो सूबा मकिदुनिया के उस ज़िले
का सदर शहर था और रोमी नौआबादी था। इस शहर में हम कुछ दिन ठहरे। 13 सबत के दिन हम शहर से निकलकर
दरिया के किनारे गए, जहाँ हमारी तवक़्क़ो थी कि यहूदी दुआ के लिए जमा होंगे। वहाँ हम बैठकर कुछ ख़वातीन से
बात करने लगे जो इकट्ठी हुई थीं। 14 उनमें से थुआतीरा शहर की एक औरत थी जिसका नाम लुदिया था। उसका पेशा
क़ीमती अरग़वानी रंग के कपड़े की तिजारत था और वह अल्लाह की परस्तिश करनेवाली ग़ैरयहूदी थी। ख़ुदावंद ने
उसके दिल को खोल दिया, और उसने पौलुस की बातों पर तवज्जुह दी। 15 उसके और उसके घरवालों के बपतिस्मा
लेने के बाद उसने हमें अपने घर में ठहरने की दावत दी। उसने कहा, "अगर आप समझते हैं कि मैं वाक़ई ख़ुदावंद पर
ईमान लाई हूँ तो मेरे घर आकर ठहरें।" यों उसने हमें मजबूर किया।

फ़िलिप्पी की जेल में

16 एक दिन हम दुआ की जगह की तरफ़ जा रहे थे कि हमारी मुलाक़ात एक लौंडी से हुई जो एक बदरूह के ज़रीए
लोगों की क़िस्मत का हाल बताती थी। इससे वह अपने मालिकों के लिए बहुत-से पैसे कमाती थी। 17 वह पौलुस और
हमारे पीछे पड़कर चीख़ चीख़कर कहने लगी, "यह आदमी अल्लाह तआला के ख़ादिम हैं जो आपको नजात की राह
बताने आए हैं।" 18 यह सिलसिला रोज़ बरोज़ जारी रहा। आख़िरकार पौलुस तंग आकर मुड़ा और बदरूह से कहा,
"मैं तुझे ईसा मसीह के नाम से हुक्म देता हूँ कि लड़की में से निकल जा!" उसी लमहे वह निकल गई।

19 उसके मालिकों को मालूम हुआ कि पैसे कमाने की उम्मीद जाती रही तो वह पौलुस और सीलास को पकड़कर
चौक में बैठे इक़तिदार रखनेवालों के सामने घसीट ले गए। 20 उन्हें मजिस्ट्रेटों के सामने पेश करके वह चिल्लाने लगे,
"यह आदमी हमारे शहर में हलचल पैदा कर रहे हैं। यह यहूदी हैं 21 और ऐसे रस्मो-रिवाज का प्रचार कर रहे हैं जिन्हें
क़बूल करना और अदा करना हम रोमियों के लिए जायज़ नहीं।" 22 हुजूम भी आ मिला और पौलुस और सीलास के
ख़िलाफ़ बातें करने लगा।

इस पर मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया कि उनके कपड़े उतारे और उन्हें लाठी से मारा जाए। 23 उन्होंने उनकी ख़ूब पिटाई
करवाकर उन्हें क़ैदख़ाने में डाल दिया और दारोग़े से कहा कि एहतियात से उनकी पहरादारी करो। 24 चुनाँचे उसने
उन्हें जेल के सबसे अंदरूनी हिस्से में ले जाकर उनके पाँव काठ में डाल दिए।

25 अब ऐसा हुआ कि पौलुस और सीलास आधी रात के क़रीब दुआ कर रहे और अल्लाह की तमजीद के गीत गा
रहे थे और बाक़ी क़ैदी सुन रहे थे। 26 अचानक बड़ा ज़लज़ला आया और क़ैदख़ाने की पूरी इमारत बुनियादों तक हिल
गई। फ़ौरन तमाम दरवाज़े खुल गए और तमाम क़ैदियों की ज़ंजीरें खुल गईं। 27 दारोग़ा जाग उठा। जब उसने देखा कि
जेल के दरवाज़े खुले हैं तो वह अपनी तलवार निकालकर ख़ुदकुशी करने लगा, क्योंकि ऐसा लग रहा था कि क़ैदी
फ़रार हो गए हैं। 28 लेकिन पौलुस चिल्ला उठा, "मत करें! अपने आपको नुक़सान न पहुँचाएँ। हम सब यहीं हैं।"
29 दारोग़े ने चराग़ मँगवा लिया और भागकर अंदर आया। लरज़ते लरज़ते वह पौलुस और सीलास के सामने गिर
गया। 30 फिर उन्हें बाहर ले जाकर उसने पूछा, "साहबो, मुझे नजात पाने के लिए क्या करना है?"
31 उन्होंने जवाब दिया, "ख़ुदावंद ईसा पर ईमान लाएँ तो आप और आपके घराने को नजात मिलेगी।" 32 फिर
उन्होंने उसे और उसके तमाम घरवालों को ख़ुदावंद का कलाम सुनाया। 33 और रात की उसी घड़ी दारोग़े ने उन्हें ले
जाकर उनके ज़ख़मों को धोया। इसके बाद उसका और उसके सारे घरवालों का बपतिस्मा हुआ। 34 फिर उसने उन्हें
अपने घर में लाकर खाना खिलाया। अल्लाह पर ईमान लाने के बाइस उसने और उसके तमाम घरवालों ने बड़ी ख़ुशी
मनाई।
35 जब दिन चढ़ा तो मजिस्ट्रेटों ने अपने अफ़सरों को दारोग़े के पास भिजवा दिया कि वह पौलुस और सीलास को
रिहा करे।
36 चुनाँचे दारोग़े ने पौलुस को उनका पैग़ाम पहुँचा दिया, "मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया है कि आप और सीलास को
रिहा कर दिया जाए। अब निकलकर सलामती से चले जाएँ।"
37 लेकिन पौलुस ने एतराज़ किया। उसने उनसे कहा, "उन्होंने हमें अवाम के सामने ही और अदालत में पेश किए
बग़ैर मारकर जेल में डाल दिया है हालाँकि हम रोमी शहरी हैं। और अब वह हमें चुपके से निकालना चाहते हैं? हरगिज़
नहीं! अब वह ख़ुद आएँ और हमें बाहर ले जाएँ।"
38 अफ़सरों ने मजिस्ट्रेटों को यह ख़बर पहुँचाई। जब उन्हें मालूम हुआ कि पौलुस और सीलास रोमी शहरी हैं तो
वह घबरा गए। 39 वह ख़ुद उन्हें समझाने के लिए आए और जेल से बाहर लाकर गुज़ारिश की कि शहर को छोड़ दें।
40 चुनाँचे पौलुस और सीलास जेल से निकल आए। लेकिन पहले वह लुदिया के घर गए जहाँ वह भाइयों से मिले और
उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की। फिर वह चले गए।

17

थिस्सलुनीके में

1 अंफ़िपुलिस और अपुल्लोनिया से होकर पौलुस और सीलास थिस्सलुनीके शहर पहुँच गए जहाँ यहूदी इबादतख़ाना
था। 2 अपनी आदत के मुताबिक़ पौलुस उसमें गया और लगातार तीन सबतों के दौरान कलामे-मुक़द्दस से दलायल दे
देकर यहूदियों को क़ायल करने की कोशिश करता रहा। 3 उसने कलामे-मुक़द्दस की तशरीह करके साबित किया कि
मसीह का दुख उठाना और मुरदों में से जी उठना लाज़िम था। उसने कहा, "जिस ईसा की मैं ख़बर दे रहा हूँ, वही
मसीह है।" 4 यहूदियों में से कुछ क़ायल होकर पौलुस और सीलास से वाबस्ता हो गए, जिनमें ख़ुदातरस यूनानियों की
बड़ी तादाद और बारसूख़ ख़वातीन भी शरीक थीं।
5 यह देखकर बाक़ी यहूदी हसद करने लगे। उन्होंने गलियों में आवारा फिरनेवाले कुछ शरीर आदमी इकट्ठे करके
जुलूस निकाला और शहर में हलचल मचा दी। फिर यासोन के घर पर हमला करके उन्होंने पौलुस और सीलास को
ढूँडा ताकि उन्हें अवामी इजलास के सामने पेश करें। 6 लेकिन वह वहाँ नहीं थे, इसलिए वह यासोन और चंद एक और
ईमानदार भाइयों को शहर के मजिस्ट्रेटों के सामने लाए। उन्होंने चीख़कर कहा, "यह लोग पूरी दुनिया में गड़बड़ पैदा
कर रहे हैं और अब यहाँ भी आ गए हैं। 7 यासोन ने उन्हें अपने घर में ठहराया है। यह सब शहनशाह के अहकाम की
ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हैं, क्योंकि यह किसी और को बादशाह मानते हैं जिसका नाम ईसा है।" 8 इस तरह की बातों से
उन्होंने हुजूम और मजिस्ट्रेटों में बड़ा हंगामा पैदा किया। 9 चुनाँचे मजिस्ट्रेटों ने यासोन और दूसरों से ज़मानत ली और
फिर उन्हें छोड़ दिया।

बेरिया में

10 उसी रात भाइयों ने पौलुस और सीलास को बेरिया भेज दिया। वहाँ पहुँचकर वह यहूदी इबादतख़ाने में गए।
11 यह लोग थिस्सलुनीके के यहूदियों की निसबत ज़्यादा खुले ज़हन के थे। यह बड़े शौक़ से पौलुस और सीलास
की बातें सुनते और रोज़ बरोज़ कलामे-मुक़द्दस की तफ़तीश करते रहे कि क्या वाक़ई ऐसा है जैसा हमें बताया जा रहा
है? 12 नतीजे में इनमें से बहुत-से यहूदी ईमान लाए और साथ साथ बहुत-सी बारसूख़ यूनानी ख़वातीन और मर्द भी।

13 लेकिन फिर थिस्सलुनीके के यहूदियों को यह ख़बर मिली कि पौलुस बेरिया में अल्लाह का कलाम सुना रहा है।
वह वहाँ भी पहुँचे और लोगों को उकसाकर हलचल मचा दी। 14 इस पर भाइयों ने पौलुस को फ़ौरन साहिल पर भेज
दिया, लेकिन सीलास और तीमुथियुस बेरिया में पीछे रह गए। 15 जो आदमी पौलुस को साहिल तक पहुँचाने आए थे
वह उसके साथ अथेने तक गए। वहाँ वह उसे छोड़कर वापस चले गए। उनके हाथ पौलुस ने सीलास और तीमुथियुस
को ख़बर भेजी कि जितनी जल्दी हो सके बेरिया को छोड़कर मेरे पास आ जाएँ।

अथेने में

16 अथेने शहर में सीलास और तीमुथियुस का इंतज़ार करते करते पौलुस बड़े जोश में आ गया, क्योंकि उसने देखा
कि पूरा शहर बुतों से भरा हुआ है। 17 वह यहूदी इबादतख़ाने में जाकर यहूदियों और ख़ुदातरस ग़ैरयहूदियों से बहस
करने लगा। साथ साथ वह रोज़ाना चौक में भी जाकर वहाँ पर मौजूद लोगों से गुफ़्तगू करता रहा। 18 इपिकूरी और
स्तोयकी फ़लसफ़ी * भी उससे बहस करने लगे। जब पौलुस ने उन्हें ईसा और उसके जी उठने की ख़ुशख़बरी सुनाई तो
बाज़ ने पूछा, "यह बकवासी इन बातों से क्या कहना चाहता है जो इसने इधर उधर से चुनकर जोड़ दी हैं?"

दूसरों ने कहा, "लगता है कि वह अजनबी देवताओं की ख़बर दे रहा है।" 19 वह उसे साथ लेकर शहर की
मजलिसे-शूरा में गए जो अरियोपगुस नामी पहाड़ी पर मुनअक़िद होती थी। उन्होंने दरख़ास्त की, "क्या हमें मालूम
हो सकता है कि आप कौन-सी नई तालीम पेश कर रहे हैं? 20 आप तो हमें अजीबो-ग़रीब बातें सुना रहे हैं। अब हम
उनका सहीह मतलब जानना चाहते हैं।" 21 (बात यह थी कि अथेने के तमाम बाशिंदे शहर में रहनेवाले परदेसियों समेत
अपना पूरा वक़्त इसमें सर्फ़ करते थे कि ताज़ा ताज़ा ख़यालात सुनें या सुनाएँ।)

22 पौलुस मजलिस में खड़ा हुआ और कहा, "अथेने के हज़रात, मैं देखता हूँ कि आप हर लिहाज़ से बहुत मज़हबी
लोग हैं। 23 क्योंकि जब मैं शहर में से गुज़र रहा था तो उन चीज़ों पर ग़ौर किया जिनकी पूजा आप करते हैं। चलते
चलते मैंने एक ऐसी क़ुरबानगाह भी देखी जिस पर लिखा था, 'नामालूम ख़ुदा की क़ुरबानगाह।' अब मैं आपको उस
ख़ुदा की ख़बर देता हूँ जिसकी पूजा आप करते तो हैं मगर आप उसे जानते नहीं। 24 यह वह ख़ुदा है जिसने दुनिया
और उसमें मौजूद हर चीज़ की तख़लीक़ की। वह आसमानो-ज़मीन का मालिक है, इसलिए वह इनसानी हाथों के
बनाए हुए मंदिरों में सुकूनत नहीं करता। 25 और इनसानी हाथ उस की ख़िदमत नहीं कर सकते, क्योंकि उसे कोई भी
चीज़ दरकार नहीं होती। इसके बजाए वही सबको ज़िंदगी और साँस मुहैया करके उनकी तमाम ज़रूरियात पूरी करता
है। 26 उसी ने एक शख़्स को ख़लक़ किया ताकि दुनिया की तमाम क़ौमें उससे निकलकर पूरी दुनिया में फैल जाएँ।
उसने हर क़ौम के औक़ात और सरहद्दें भी मुक़र्रर कीं। 27 मक़सद यह था कि वह ख़ुदा को तलाश करें। उम्मीद यह थी
कि वह टटोल टटोलकर उसे पाएँ, अगरचे वह हममें से किसी से दूर नहीं होता। 28 क्योंकि उसमें हम जीते, हरकत
करते और वुजूद रखते हैं। आपके अपने कुछ शायरों ने भी फ़रमाया है, 'हम भी उसके फ़रज़ंद हैं।' 29 अब चूँकि हम
अल्लाह के फ़रज़ंद हैं इसलिए हमारा उसके बारे में तसव्वुर यह नहीं होना चाहिए कि वह सोने, चाँदी या पत्थर का
कोई मुजस्समा हो जो इनसान की महारत और डिज़ायन से बनाया गया हो। 30 माज़ी में ख़ुदा ने इस क़िस्म की जहालत
को नज़रंदाज़ किया, लेकिन अब वह हर जगह के लोगों को तौबा का हुक्म देता है। 31 क्योंकि उसने एक दिन मुक़र्रर
किया है जब वह इनसाफ़ से दुनिया की अदालत करेगा। और वह यह अदालत एक शख़्स की मारिफ़त करेगा जिसको
वह मुतैयिन कर चुका है और जिसकी तसदीक़ उसने इससे की है कि उसने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया है।"

32 मुरदों की क़ियामत का ज़िक्र सुनकर बाज़ ने पौलुस का मज़ाक़ उड़ाया। लेकिन बाज़ ने कहा, "हम किसी और
वक़्त इसके बारे में आपसे मज़ीद सुनना चाहते हैं।" 33 फिर पौलुस मजलिस से निकलकर चला गया। 34 कुछ लोग
उससे वाबस्ता होकर ईमान ले आए। उनमें से मजलिसे-शूरा का मेंबर दियोनीसियुस था और एक औरत बनाम दमरिस।
कुछ और भी थे।

18

कुरिंथुस में

1 इसके बाद पौलुस अथेने को छोड़कर कुरिंथुस शहर आया। 2 वहाँ उस की मुलाक़ात एक यहूदी से हुई जिसका
नाम अकविला था। वह पुंतुस का रहनेवाला था और थोड़ी देर पहले अपनी बीवी प्रिसकिल्ला समेत इटली से आया
था। वजह यह थी कि शहनशाह क्लौदियुस ने हुक्म सादिर किया था कि तमाम यहूदी रोम को छोड़कर चले जाएँ। उन
लोगों के पास पौलुस गया 3 और चूँकि उनका पेशा भी ख़ैमे सिलाई करना था इसलिए वह उनके घर ठहरकर रोज़ी

* **17:18** यानी रवाक़ियत के फ़लसफ़ी।

कमाने लगा। 4 साथ साथ उसने हर सबत को यहूदी इबादतख़ाने में तालीम देकर यहूदियों और यूनानियों को क़ायल
करने की कोशिश की।
5 जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए तो पौलुस अपना पूरा वक़्त कलाम सुनाने में सर्फ़ करने लगा। उसने
यहूदियों को गवाही दी कि ईसा कलामे-मुक़द्दस में बयान किया गया मसीह है। 6 लेकिन जब वह उस की मुख़ालफ़त
करके उस की तज़लील करने लगे तो उसने एहतजाज में अपने कपड़ों से गर्द झाड़कर कहा, “आप ख़ुद अपनी हलाकत
के ज़िम्मादार हैं, मैं बेक़ुसूर हूँ। अब से मैं ग़ैरयहूदियों के पास जाया करूँगा।” 7 फिर वह वहाँ से निकलकर इबादतख़ाने
के साथवाले घर में गया। वहाँ तितुस यूसतुस रहता था जो यहूदी नहीं था, लेकिन ख़ुदा का ख़ौफ़ मानता था। 8 और
क्रिसपुस जो इबादतख़ाने का राहनुमा था अपने घराने समेत ख़ुदावंद पर ईमान लाया। कुरिंथुस के बहुत सारे और लोगों
ने भी जब पौलुस की बातें सुनीं तो ईमान लाए और बपतिस्मा लिया।
9 एक रात ख़ुदावंद रोया में पौलुस से हमकलाम हुआ, “मत डर! कलाम करता जा और ख़ामोश न हो, 10 क्योंकि
मैं तेरे साथ हूँ। कोई हमला करके तुझे नुक़सान नहीं पहुँचाएगा, क्योंकि इस शहर में मेरे बहुत-से लोग हैं।” 11 फिर
पौलुस मज़ीद डेढ़ साल वहाँ ठहरकर लोगों को अल्लाह का कलाम सिखाता रहा।
12 उन दिनों में जब गल्लियो सूबा अख़या का गवर्नर था तो यहूदी मुत्तहिद होकर पौलुस के ख़िलाफ़ जमा हुए और
उसे अदालत में गल्लियो के सामने लाए। 13 उन्होंने कहा, “यह आदमी लोगों को ऐसे तरीक़े से अल्लाह की इबादत
करने पर उकसा रहा है जो हमारी शरीअत के ख़िलाफ़ है।”
14 पौलुस जवाब में कुछ कहने को था कि गल्लियो ख़ुद यहूदियों से मुख़ातिब हुआ, “सुनें, यहूदी मर्दो! अगर
आपका इलज़ाम कोई नाइनसाफ़ी या संगीन जुर्म होता तो आपकी बात क़ाबिले-बरदाश्त होती। 15 लेकिन आपका
झगड़ा मज़हबी तालीम, नामों और आपकी यहूदी शरीअत से ताल्लुक़ रखता है, इसलिए उसे ख़ुद हल करें। मैं इस
मामले में फ़ैसला करने के लिए तैयार नहीं हूँ।” 16 यह कहकर उसने उन्हें अदालत से भगा दिया। 17 इस पर हुजूम
ने यहूदी इबादतख़ाने के राहनुमा सोसथिनेस को पकड़कर अदालत के सामने उस की पिटाई की। लेकिन गल्लियो ने
परवा न की।

अंताकिया तक वापसी का सफ़र

18 इसके बाद भी पौलुस बहुत दिन कुरिंथुस में रहा। फिर भाइयों को ख़ैरबाद कहकर वह क़रीब के शहर किंख़रिया
गया जहाँ उसने किसी मन्नत के पूरे होने पर अपने सर के बाल मुँडवा दिए। इसके बाद वह प्रिसकिल्ला और अकविला
के साथ जहाज़ पर सवार होकर मुल्के-शाम के लिए रवाना हुआ। 19 पहले वह इफ़िसुस पहुँचे जहाँ पौलुस ने प्रिसकिल्ला
और अकविला को छोड़ दिया। वहाँ भी उसने यहूदी इबादतख़ाने में जाकर यहूदियों से बहस की। 20 उन्होंने उससे
दरख़ास्त की कि मज़ीद वक़्त उनके साथ गुज़ारे, लेकिन उसने इनकार किया 21 और उन्हें ख़ैरबाद कहकर कहा,
“अगर अल्लाह की मरज़ी हो तो मैं आपके पास वापस आऊँगा।” फिर वह जहाज़ पर सवार होकर इफ़िसुस से रवाना
हुआ।
22 सफ़र करते करते वह क़ैसरिया पहुँच गया, जहाँ से वह यरूशलम जाकर मक़ामी जमात से मिला। इसके बाद वह
अंताकिया वापस चला गया 23 जहाँ वह कुछ देर ठहरा। फिर आगे निकलकर वह गलतिया और फ़रूगिया के इलाक़े
में से गुज़रते हुए वहाँ के तमाम ईमानदारों को मज़बूत करता गया।

अपुल्लोस इफ़िसुस और कुरिंथुस में

24 इतने में एक फ़सीह यहूदी जिसे कलामे-मुक़द्दस का ज़बरदस्त इल्म था इफ़िसुस पहुँच गया था। उसका नाम
अपुल्लोस था। वह मिसर के शहर इस्कंदरिया का रहनेवाला था। 25 उसे ख़ुदावंद की राह के बारे में तालीम दी गई थी
और वह बड़ी सरगरमी से लोगों को ईसा के बारे में सिखाता रहा। उस की यह तालीम सहीह थी अगरचे वह अभी तक
सिर्फ़ यहया का बपतिस्मा जानता था। 26 इफ़िसुस के यहूदी इबादतख़ाने में वह बड़ी दिलेरी से कलाम करने लगा। यह
सुनकर प्रिसकिल्ला और अकविला ने उसे एक तरफ़ ले जाकर उसके सामने अल्लाह की राह को मज़ीद तफ़सील से
बयान किया। 27 अपुल्लोस सूबा अख़या जाने का ख़याल रखता था तो इफ़िसुस के भाइयों ने उस की हौसलाअफ़्ज़ाई
की। उन्होंने वहाँ के शागिर्दों को ख़त लिखा कि वह उसका इस्तक़बाल करें। जब वह वहाँ पहुँचा तो उनके लिए बड़ी
मदद का बाइस बना जो अल्लाह के फ़ज़ल से ईमान लाए थे, 28 क्योंकि वह अलानिया मुबाहसों में ज़बरदस्त दलायल
से यहूदियों पर ग़ालिब आया और कलामे-मुक़द्दस से साबित किया कि ईसा मसीह है।

19

पौलुस इफ़िसुस में

1 जब अपुल्लोस कुरिंथुस में ठहरा हुआ था तो पौलुस एशियाए-कूचक के अंदरूनी इलाक़े में से सफ़र करते करते
साहिली शहर इफ़िसुस में आया। वहाँ उसे कुछ शागिर्द मिले 2 जिनसे उसने पूछा, “क्या आपको ईमान लाते वक़्त
रूहुल-क़ुद्स मिला?”

उन्होंने जवाब दिया, “नहीं, हमने तो रूहुल-क़ुद्स का ज़िक्र तक नहीं सुना।”

3 उसने पूछा, “तो आपको कौन-सा बपतिस्मा दिया गया?”

उन्होंने जवाब दिया, “यहया का।”

4 पौलुस ने कहा, “यहया ने बपतिस्मा दिया जब लोगों ने तौबा की। लेकिन उसने ख़ुद उन्हें बताया, ‘मेरे बाद
आनेवाले पर ईमान लाओ, यानी ईसा पर’।”

5 यह सुनकर उन्होंने ख़ुदावंद ईसा के नाम पर बपतिस्मा लिया। 6 और जब पौलुस ने अपने हाथ उन पर रखे तो
उन पर रूहुल-क़ुदस नाज़िल हुआ, और वह ग़ैरज़बानें बोलने और नबुव्वत करने लगे। 7 इन आदमियों की कुल तादाद
तक़रीबन बारह थी।

8 पौलुस यहूदी इबादतख़ाने में गया और तीन महीने के दौरान यहूदियों से दिलेरी से बात करता रहा। उनके साथ
बहस करके उसने उन्हें अल्लाह की बादशाही के बारे में क़ायल करने की कोशिश की। 9 लेकिन कुछ अड़ गए। वह
अल्लाह के ताबे न हुए बल्कि अवाम के सामने ही अल्लाह की राह को बुरा-भला कहने लगे। इस पर पौलुस ने उन्हें
छोड़ दिया। शागिर्दों को भी अलग करके वह उनके साथ तुरन्नुस के लैक्चर हाल में जमा हुआ करता था जहाँ वह
रोज़ाना उन्हें तालीम देता रहा। 10 यह सिलसिला दो साल तक जारी रहा। यों सूबा आसिया के तमाम लोगों को ख़ुदावंद
का कलाम सुनने का मौक़ा मिला, ख़ाह वह यहूदी थे या यूनानी।

राहनुमा इमाम स्किवा के सात बेटे

11 अल्लाह ने पौलुस की मारिफ़त ग़ैरमामूली मोजिज़े किए, 12 यहाँ तक कि जब रूमाल या एप्रन उसके बदन से
लगाने के बाद मरीज़ों पर रखे जाते तो उनकी बीमारियाँ जाती रहतीं और बदरूहें निकल जातीं। 13 वहाँ कुछ ऐसे
यहूदी भी थे जो जगह जगह जाकर बदरूहें निकालते थे। अब वह बदरूहों के बंधन में फँसे लोगों पर ख़ुदावंद ईसा
का नाम इस्तेमाल करने की कोशिश करके कहने लगे, “मैं तुझे उस ईसा के नाम से निकलने का हुक्म देता हूँ जिसकी
मुनादी पौलुस करता है।” 14 एक यहूदी राहनुमा इमाम बनाम स्किवा के सात बेटे ऐसा करते थे।

15 लेकिन एक दफ़ा जब यही कोशिश कर रहे थे तो बदरूह ने जवाब दिया, “ईसा को तो मैं जानती हूँ और पौलुस
को भी, लेकिन तुम कौन हो?”

16 फिर वह आदमी जिसमें बदरूह थी उन पर झपटकर सब पर ग़ालिब आ गया। उसका उन पर इतना सख़्त हमला
हुआ कि वह नंगे और ज़ख़मी हालत में भागकर उस घर से निकल गए। 17 इस वाक़िए की ख़बर इफ़िसुस के तमाम
रहनेवाले यहूदियों और यूनानियों में फैल गई। उन पर ख़ौफ़ तारी हुआ और ख़ुदावंद ईसा के नाम की ताज़ीम हुई।
18 जो ईमान लाए थे उनमें से बहुतेरों ने आकर अलानिया अपने गुनाहों का इक़रार किया। 19 जादूगरी करनेवालों की
बड़ी तादाद ने अपनी जादूमंत्र की किताबें इकट्ठी करके अवाम के सामने जला दीं। पूरी किताबों का हिसाब किया गया
तो उनकी कुल रक़म चाँदी के पचास हज़ार सिक्के थी। 20 यों ख़ुदावंद का कलाम ज़बरदस्त तरीक़े से बढ़ता और ज़ोर
पकड़ता गया।

इफ़िसुस में हंगामा

21 इन वाक़ियात के बाद पौलुस ने मकिदुनिया और अख़या में से गुज़रकर यरूशलम जाने का फ़ैसला किया। उसने
कहा, “इसके बाद लाज़िम है कि मैं रोम भी जाऊँ।” 22 उसने अपने दो मददगारों तीमुथियुस और इरास्तुस को आगे
मकिदुनिया भेज दिया जबकि वह ख़ुद मज़ीद कुछ देर के लिए सूबा आसिया में ठहरा रहा।

23 तक़रीबन उस वक़्त अल्लाह की राह एक शदीद हंगामे का बाइस हो गई। 24 यह यों हुआ, इफ़िसुस में एक चाँदी
की अशया बनानेवाला रहता था जिसका नाम देमेतरियुस था। वह चाँदी से अरतमिस देवी के मंदिर बनवाता था, और
उसके काम से दस्तकारों का कारोबार ख़ूब चलता था। 25 अब उसने इस काम से ताल्लुक़ रखनेवाले दीगर दस्तकारों
को जमा करके उनसे कहा, “हज़रात, आपको मालूम है कि हमारी दौलत इस कारोबार पर मुनहसिर है। 26 आपने यह
भी देख और सुन लिया है कि इस आदमी पौलुस ने न सिर्फ़ इफ़िसुस बल्कि तक़रीबन पूरे सूबा आसिया में बहुत-से लोगों
को भटकाकर क़ायल कर लिया है कि हाथों के बने देवता हक़ीक़त में देवता नहीं होते। 27 न सिर्फ़ यह ख़तरा है कि
हमारे कारोबार की बदनामी हो बल्कि यह भी कि अज़ीम देवी अरतमिस के मंदिर का असरो-रसूख़ जाता रहेगा, कि
अरतमिस ख़ुद जिसकी पूजा सूबा आसिया और पूरी दुनिया में की जाती है अपनी अज़मत खो बैठे।”

28 यह सुनकर वह तैश में आकर चीख़ने-चिल्लाने लगे, “इफ़िसियों की अरतमिस देवी अज़ीम है!” 29 पूरे शहर
में हलचल मच गई। लोगों ने पौलुस के मकिदुनी हमसफ़र गयुस और अरिस्तरख़ुस को पकड़ लिया और मिलकर
तमाशागाह में दौड़े आए। 30 यह देखकर पौलुस भी अवाम के इस इजलास में जाना चाहता था, लेकिन शागिर्दों ने उसे
रोक लिया। 31 इसी तरह उसके कुछ दोस्तों ने भी जो सूबा आसिया के अफ़सर थे उसे ख़बर भेजकर मिन्नत की कि
वह न जाए। 32 इजलास में बड़ी अफ़रा-तफ़री थी। कुछ यह चीख़ रहे थे, कुछ वह। ज़्यादातर लोग जमा होने की
वजह जानते भी न थे। 33 यहूदियों ने सिकंदर को आगे कर दिया। साथ साथ हुजूम के कुछ लोग उसे हिदायात देते रहे।
उसने हाथ से ख़ामोश हो जाने का इशारा किया ताकि वह इजलास के सामने अपना दिफ़ा करे। 34 लेकिन जब उन्होंने
जान लिया कि वह यहूदी है तो वह तक़रीबन दो घंटों तक चिल्लाकर नारा लगाते रहे, “इफ़िसुस की अरतमिस देवी
अज़ीम है!”
35 आख़िरकार बलदिया का चीफ़ सैक्रटरी उन्हें ख़ामोश कराने में कामयाब हुआ। फिर उसने कहा, “इफ़िसुस
के हज़रात, किस को मालूम नहीं कि इफ़िसुस अज़ीम अरतमिस देवी के मंदिर का मुहाफ़िज़ है! पूरी दुनिया जानती
है कि हम उसके उस मुजस्समे के निगरान हैं जो आसमान से गिरकर हमारे पास पहुँच गया। 36 यह हक़ीक़त तो
नाक़ाबिले-इनकार है। चुनाँचे लाज़िम है कि आप चुप-चाप रहें और जल्दबाज़ी न करें। 37 आप यह आदमी यहाँ लाए
हैं हालाँकि न तो वह मंदिरों को लूटनेवाले हैं, न उन्होंने देवी की बेहुरमती की है। 38 अगर देमेतरियुस और उसके
साथवाले दस्तकारों का किसी पर इलज़ाम है तो इसके लिए कचहरियाँ और गवर्नर होते हैं। वहाँ जाकर वह एक दूसरे
से मुक़दमा लड़ें। 39 अगर आप मज़ीद कोई मामला पेश करना चाहते हैं तो उसे हल करने के लिए क़ानूनी मजलिस
होती है। 40 अब हम इस ख़तरे में हैं कि आज के वाक़ियात के बाइस हम पर फ़साद का इलज़ाम लगाया जाएगा।
क्योंकि जब हमसे पूछा जाएगा तो हम इस क़िस्म के बेतरतीब और नाजायज़ इजतिमा का कोई जवाज़ पेश नहीं कर
सकेंगे।” 41 यह कहकर उसने इजलास को बरख़ास्त कर दिया।

20

मकिदुनिया और अख़या में

1 जब शहर में अफ़रा-तफ़री ख़त्म हुई तो पौलुस ने शागिर्दों को बुलाकर उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की। फिर वह
उन्हें ख़ैरबाद कहकर मकिदुनिया के लिए रवाना हुआ। 2 वहाँ पहुँचकर उसने जगह बजगह जाकर बहुत-सी बातों
से ईमानदारों की हौसलाअफ़्ज़ाई की। यों चलते चलते वह यूनान पहुँच गया 3 जहाँ वह तीन माह तक ठहरा। वह
मुल्के-शाम के लिए जहाज़ पर सवार होनेवाला था कि पता चला कि यहूदियों ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की है। इस पर
उसने मकिदुनिया से होकर वापस जाने का फ़ैसला किया। 4 उसके कई हमसफ़र थे : बेरिया से पुर्रुस का बेटा सोपतरुस,
थिस्सलुनीके से अरिस्तरख़ुस और सिकुंदुस, दिरबे से गयुस, तीमुथियुस और सूबा आसिया से तुख़िकुस और त्रुफ़िमुस।
5 यह आदमी आगे निकलकर त्रोआस चले गए जहाँ उन्होंने हमारा इंतज़ार किया। 6 बेख़मीरी रोटी की ईद के बाद हम
फ़िलिप्पी के क़रीब जहाज़ पर सवार हुए और पाँच दिन के बाद उनके पास त्रोआस पहुँच गए। वहाँ हम सात दिन रहे।

त्रोआस में पौलुस की अलविदाई मीटिंग

7 इतवार को हम अशाए-रब्बानी मनाने के लिए जमा हुए। पौलुस लोगों से बात करने लगा और चूँकि वह अगले
दिन रवाना होनेवाला था इसलिए वह आधी रात तक बोलता रहा। 8 ऊपर की मनज़िल में जिस कमरे में हम जमा थे
वहाँ बहुत-से चराग़ जल रहे थे। 9 एक जवान खिड़की की दहलीज़ पर बैठा था। उसका नाम यूतिख़ुस था। ज्यों-ज्यों
पौलुस की बातें लंबी होती जा रही थीं उस पर नींद ग़ालिब आती जा रही थी। आख़िरकार वह गहरी नींद में तीसरी
मनज़िल से ज़मीन पर गिर गया। जब लोगों ने नीचे पहुँचकर उसे ज़मीन पर से उठाया तो वह जान-बहक़ हो चुका था।
10 लेकिन पौलुस उतरकर उस पर झुक गया और उसे अपने बाज़ुओं में ले लिया। उसने कहा, “मत घबराएँ, वह ज़िंदा
है।” 11 फिर वह वापस ऊपर आ गया, अशाए-रब्बानी मनाई और खाना खाया। उसने अपनी बातें पौ फटने तक जारी
रखीं, फिर रवाना हुआ। 12 और उन्होंने जवान को ज़िंदा हालत में वहाँ से लेकर बहुत तसल्ली पाई।

त्रोआस से मीलेतुस तक

13 हम आगे निकलकर अस्सुस के लिए जहाज़ पर सवार हुए। ख़ुद पौलुस ने इंतज़ाम करवाया था कि वह पैदल
जाकर अस्सुस में हमारे जहाज़ पर आएगा। 14 वहाँ वह हमसे मिला और हम उसे जहाज़ पर लाकर मतुलेने पहुँचे।
15 अगले दिन हम ख़ियुस के जज़ीरे से गुज़रे। उससे अगले दिन हम सामुस के जज़ीरे के क़रीब आए। इसके बाद के
दिन हम मीलेतुस पहुँच गए। 16 पौलुस पहले से फ़ैसला कर चुका था कि मैं इफ़िसुस में नहीं ठहरूँगा बल्कि आगे

निकलूँगा, क्योंकि वह जल्दी में था। वह जहाँ तक मुमकिन था पंतिकुस्त की ईद से पहले पहले यरूशलम पहुँचना चाहता था।

इफ़िसुस के बुज़ुर्गों के लिए पौलुस की अलविदाई तक़रीर

17 मीलेतुस से पौलुस ने इफ़िसुस की जमात के बुज़ुर्गों को बुला लिया। 18 जब वह पहुँचे तो उसने उनसे कहा,
"आप जानते हैं कि मैं सूबा आसिया में पहला क़दम उठाने से लेकर पूरा वक़्त आपके साथ किस तरह रहा। 19 मैंने
बड़ी इंकिसारी से ख़ुदावंद की ख़िदमत की है। मुझे बहुत आँसू बहाने पड़े और यहूदियों की साज़िशों से मुझ पर बहुत
आज़माइशें आईं। 20 मैंने आपके फ़ायदे की कोई भी बात आपसे छुपाए न रखी बल्कि आपको अलानिया और घर घर
जाकर तालीम देता रहा। 21 मैंने यहूदियों को यूनानियों समेत गवाही दी कि उन्हें तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रुजू
करने और हमारे ख़ुदावंद ईसा पर ईमान लाने की ज़रूरत है। 22 और अब मैं रूहुल-क़ुद्स से बँधा हुआ यरूशलम जा
रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या कुछ होगा, 23 लेकिन इतना मुझे मालूम है कि रूहुल-क़ुद्स मुझे शहर बशहर
इस बात से आगाह कर रहा है कि मुझे क़ैद और मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। 24 ख़ैर, मैं अपनी ज़िंदगी को किसी
तरह भी अहम नहीं समझता। अहम बात सिर्फ़ यह है कि मैं अपना वह मिशन और ज़िम्मादारी पूरी करूँ जो ख़ुदावंद
ईसा ने मेरे सुपुर्द की है। और वह ज़िम्मादारी यह है कि मैं लोगों को गवाही देकर यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ कि अल्लाह
ने अपने फ़ज़ल से उनके लिए क्या कुछ किया है।

25 और अब मैं जानता हूँ कि आप सब जिन्हें मैंने अल्लाह की बादशाही का पैग़ाम सुना दिया है मुझे इसके बाद
कभी नहीं देखेंगे। 26 इसलिए मैं आज ही आपको बताता हूँ कि अगर आपमें से कोई भी हलाक हो जाए तो मैं बेक़ुसूर
हूँ, 27 क्योंकि मैं आपको अल्लाह की पूरी मरज़ी बताने से न झिजका। 28 चुनाँचे ख़बरदार रहकर अपना और उस
पूरे गल्ले का ख़याल रखना जिस पर रूहुल-क़ुदस ने आपको मुक़र्रर किया है। निगरानों और चरवाहों की हैसियत से
अल्लाह की जमात की ख़िदमत करें, उस जमात की जिसे उसने अपने ही फ़रज़ंद के ख़ून से हासिल किया है। 29 मुझे
मालूम है कि मेरे जाने के बाद वहशी भेड़िये आपमें घुस आएँगे जो गल्ले को नहीं छोड़ेंगे। 30 आपके दरमियान से भी
आदमी उठकर सच्चाई को तोड़-मरोड़कर बयान करेंगे ताकि शागिर्दों को अपने पीछे लगा लें। 31 इसलिए जागते रहें!
यह बात ज़हन में रखें कि मैं तीन साल के दौरान दिन-रात हर एक को समझाने से बाज़ न आया। मेरे आँसुओं को याद
रखें जो मैंने आपके लिए बहाए हैं।

32 और अब मैं आपको अल्लाह और उसके फ़ज़ल के कलाम के सुपुर्द करता हूँ। यही कलाम आपकी तामीर करके
आपको वह मीरास मुहैया करने के क़ाबिल है जो अल्लाह तमाम मुक़द्दस किए गए लोगों को देता है। 33 मैंने किसी के
भी सोने, चाँदी या कपड़ों का लालच न किया। 34 आप ख़ुद जानते हैं कि मैंने अपने इन हाथों से काम करके न सिर्फ़
अपनी बल्कि अपने साथियों की ज़रूरियात भी पूरी कीं। 35 अपने हर काम में मैं आपको दिखाता रहा कि लाज़िम है
कि हम इस क़िस्म की मेहनत करके कमज़ोरों की मदद करें। क्योंकि हमारे सामने ख़ुदावंद ईसा के यह अलफ़ाज़ होने
चाहिएँ कि देना लेने से मुबारक है।"

36 यह सब कुछ कहकर पौलुस ने घुटने टेककर उन सबके साथ दुआ की। 37 सब ख़ूब रोए और उसको गले लगा
लगाकर बोसे दिए। 38 उन्हें ख़ासकर पौलुस की इस बात से तकलीफ़ हुई कि 'आप इसके बाद मुझे कभी नहीं देखेंगे।'
फिर वह उसके साथ जहाज़ तक गए।

21

पौलुस यरूशलम जाता है

1 मुश्किल से इफ़िसुस के बुज़ुर्गों से अलग होकर हम रवाना हुए और सीधे जज़ीराए-कोस पहुँच गए। अगले दिन
हम रुदुस आए और वहाँ से पतरा पहुँचे। 2 पतरा में फ़ेनीके के लिए जहाज़ मिल गया तो हम उस पर सवार होकर रवाना
हुए। 3 जब क़ुबरुस दूर से नज़र आया तो हम उसके जुनूब में से गुज़रकर शाम के शहर सूर पहुँच गए जहाँ जहाज़ को
अपना सामान उतारना था। 4 जहाज़ से उतरकर हमने मक़ामी शागिर्दों को तलाश किया और सात दिन उनके साथ ठहरे।
उन ईमानदारों ने रूहुल-क़ुद्स की हिदायत से पौलुस को समझाने की कोशिश की कि वह यरूशलम न जाए। 5 जब हम
एक हफ़्ते के बाद जहाज़ पर वापस चले गए तो पूरी जमात बाल-बच्चों समेत हमारे साथ शहर से निकलकर साहिल
तक आई। वहीं हमने घुटने टेककर दुआ की 6 और एक दूसरे को अलविदा कहा। फिर हम दुबारा जहाज़ पर सवार
हुए जबकि वह अपने घरों को लौट गए।

7 सूर से अपना सफ़र जारी रखकर हम पतुलिमयिस पहुँचे जहाँ हमने मक़ामी ईमानदारों को सलाम किया और एक
दिन उनके साथ गुज़ारा। 8 अगले दिन हम रवाना होकर क़ैसरिया पहुँच गए। वहाँ हम फ़िलिप्पुस के घर ठहरे। यह

वही फ़िलिप्पुस था जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी का मुनाद था और जिसे इब्तिदाई दिनों में यरूशलम में खाना तक़सीम
करने के लिए छः और आदमियों के साथ मुक़र्रर किया गया था। 9 उस की चार ग़ैरशादीशुदा बेटियाँ थीं जो नबुव्वत
की नेमत रखती थीं। 10 कई दिन गुज़र गए तो यहूदिया से एक नबी आया जिसका नाम अगबुस था। 11 जब वह हमसे
मिलने आया तो उसने पौलुस की पेटी लेकर अपने पाँवों और हाथों को बाँध लिया और कहा, "रूहुल-क़ुद्स फ़रमाता
है कि यरूशलम में यहूदी इस पेटी के मालिक को यों बाँधकर ग़ैरयहूदियों के हवाले करेंगे।"
12 यह सुनकर हमने मक़ामी ईमानदारों समेत पौलुस को समझाने की ख़ूब कोशिश की कि वह यरूशलम न जाए।
13 लेकिन उसने जवाब दिया, "आप क्यों रोते और मेरा दिल तोड़ते हैं? देखें, मैं ख़ुदावंद ईसा के नाम की ख़ातिर
यरूशलम में न सिर्फ़ बाँधे जाने बल्कि उसके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।"
14 हम उसे क़ायल न कर सके, इसलिए हम यह कहते हुए ख़ामोश हो गए कि "ख़ुदावंद की मरज़ी पूरी हो।"
15 इसके बाद हम तैयारियाँ करके यरूशलम चले गए। 16 क़ैसरिया के कुछ शागिर्द भी हमारे साथ चले और हमें
मनासोन के घर पहुँचा दिया जहाँ हमें ठहरना था। मनासोन क़ुबरुस का था और जमात के इब्तिदाई दिनों में ईमान लाया
था।

पौलुस याक़ूब से मिलता है

17 जब हम यरूशलम पहुँचे तो मक़ामी भाइयों ने गरमजोशी से हमारा इस्तक़बाल किया। 18 अगले दिन पौलुस हमारे
साथ याक़ूब से मिलने गया। तमाम मक़ामी बुज़ुर्ग भी हाज़िर हुए। 19 उन्हें सलाम करके पौलुस ने तफ़सील से बयान
किया कि अल्लाह ने उस की ख़िदमत की मारिफ़त ग़ैरयहूदियों में क्या किया था। 20 यह सुनकर उन्होंने अल्लाह की
तमजीद की। फिर उन्होंने कहा, "भाई, आपको मालूम है कि हज़ारों यहूदी ईमान लाए हैं। और सब बड़ी सरगरमी से
शरीअत पर अमल करते हैं। 21 उन्हें आपके बारे में ख़बर दी गई है कि आप ग़ैरयहूदियों के दरमियान रहनेवाले यहूदियों
को तालीम देते हैं कि वह मूसा की शरीअत को छोड़कर न अपने बच्चों का ख़तना करवाएँ और न हमारे रस्मो-रिवाज
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें। 22 अब हम क्या करें? वह तो ज़रूर सुनेंगे कि आप यहाँ आ गए हैं। 23 इसलिए हम चाहते
हैं कि आप यह करें : हमारे पास चार मर्द हैं जिन्होंने मन्नत मानकर उसे पूरा कर लिया है। 24 अब उन्हें साथ लेकर
उनकी तहारत की रुसूमात में शरीक हो जाएँ। उनके अख़राजात भी आप बरदाश्त करें ताकि वह अपने सरों को मुँडवा
सकें। फिर सब जान लेंगे कि जो कुछ आपके बारे में कहा जाता है वह झूट है और कि आप भी शरीअत के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। 25 जहाँ तक ग़ैरयहूदी ईमानदारों की बात है हम उन्हें अपना फ़ैसला ख़त के ज़रीए भेज चुके हैं
कि वह इन चीज़ों से परहेज़ करें : बुतों को पेश किया गया खाना, ख़ून, ऐसे जानवरों का गोश्त जिन्हें गला घूँटकर
मार दिया गया हो और ज़िनाकारी।"
26 चुनाँचे अगले दिन पौलुस उन आदमियों को साथ लेकर उनकी तहारत की रुसूमात में शरीक हुआ। फिर वह
बैतुल-मुक़द्दस में उस दिन का एलान करने गया जब तहारत के दिन पूरे हो जाएंगे और उन सबके लिए क़ुरबानी पेश की
जाएगी।

बैतुल-मुक़द्दस में पौलुस की गिरिफ़्तारी

27 इस रस्म के लिए मुक़र्ररा सात दिन ख़त्म होने को थे कि सूबा आसिया के कुछ यहूदियों ने पौलुस को बैतुल-मुक़द्दस
में देखा। उन्होंने पूरे हुजूम में हलचल मचाकर उसे पकड़ लिया 28 और चीख़ने लगे, "इसराईल के हज़रात, हमारी
मदद करें! यह वही आदमी है जो हर जगह तमाम लोगों को हमारी क़ौम, हमारी शरीअत और इस मक़ाम के ख़िलाफ़
तालीम देता है। न सिर्फ़ यह बल्कि इसने बैतुल-मुक़द्दस में ग़ैरयहूदियों को लाकर इस मुक़द्दस जगह की बेहुरमती भी
की है।" 29 (यह आख़िरी बात उन्होंने इसलिए की क्योंकि उन्होंने शहर में इफ़िसुस के ग़ैरयहूदी त्रुफ़िमुस को पौलुस
के साथ देखा और ख़याल किया था कि वह उसे बैतुल-मुक़द्दस में लाया है।)
30 पूरे शहर में हंगामा बरपा हुआ और लोग चारों तरफ़ से दौड़कर आए। पौलुस को पकड़कर उन्होंने उसे बैतुल-
मुक़द्दस से बाहर घसीट लिया। ज्योंही वह निकल गए बैतुल-मुक़द्दस के सहन के दरवाज़ों को बंद कर दिया गया।
31 वह उसे मार डालने की कोशिश कर रहे थे कि रोमी पलटन के कमाँडर को ख़बर मिल गई, "पूरे यरूशलम में
हलचल मच गई है।" 32 यह सुनते ही उसने अपने फ़ौजियों और अफ़सरों को इकट्ठा किया और दौड़कर उनके साथ
हुजूम के पास उतर गया। जब हुजूम ने कमाँडर और उसके फ़ौजियों को देखा तो वह पौलुस की पिटाई करने से रुक
गया। 33 कमाँडर ने नज़दीक आकर उसे गिरिफ़्तार किया और दो ज़ंजीरों से बाँधने का हुक्म दिया। फिर उसने पूछा,
"यह कौन है? इसने क्या किया है?" 34 हुजूम में से बाज़ कुछ चिल्लाए और बाज़ कुछ। कमाँडर कोई यक़ीनी बात
मालूम न कर सका, क्योंकि अफ़रा-तफ़री और शोर-शराबा बहुत था। इसलिए उसने हुक्म दिया कि पौलुस को क़िले में
ले जाया जाए। 35 वह क़िले की सीढ़ी तक पहुँच तो गए, लेकिन फिर हुजूम इतना बेक़ाबू हो गया कि फ़ौजियों को उसे

अपने कंधों पर उठाकर चलना पड़ा। 36 लोग उनके पीछे पीछे चलते और चीख़ते-चिल्लाते रहे, "उसे मार डालो!
उसे मार डालो!"

पौलुस अपना दिफ़ा करता है

37 वह पौलुस को क़िले में ले जा रहे थे कि उसने कमाँडर से पूछा, "क्या आपसे एक बात करने की इजाज़त है?"
कमाँडर ने कहा, "अच्छा, आप यूनानी बोल लेते हैं? 38 तो क्या आप वही मिसरी नहीं हैं जो कुछ देर पहले
हुकूमत के ख़िलाफ़ उठकर चार हज़ार दहशतगरदों को रेगिस्तान में लाया था?"
39 पौलुस ने जवाब दिया, "मैं यहूदी और किलिकिया के मरकज़ी शहर तरसुस का शहरी हूँ। मेहरबानी करके मुझे
लोगों से बात करने दें।"
40 कमाँडर मान गया और पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर हाथ से इशारा किया। जब सब ख़ामोश हो गए तो पौलुस
अरामी ज़बान में उनसे मुख़ातिब हुआ,

22

1 "भाइयो और बुज़ुर्गो, मेरी बात सुनें कि मैं अपने दिफ़ा में कुछ बताऊँ।" 2 जब उन्होंने सुना कि वह अरामी ज़बान
में बोल रहा है तो वह मज़ीद ख़ामोश हो गए। पौलुस ने अपनी बात जारी रखी।
3 "मैं यहूदी हूँ और किलिकिया के शहर तरसुस में पैदा हुआ। लेकिन मैंने इसी शहर यरूशलम में परवरिश पाई और
जमलियेल के ज़ेरे-निगरानी तालीम हासिल की। उन्होंने मुझे तफ़सील और एहतियात से हमारे बापदादा की शरीअत
सिखाई। उस वक़्त मैं भी आपकी तरह अल्लाह के लिए सरगरम था। 4 इसलिए मैंने इस नई राह के पैरोकारों का पीछा
किया और मर्दों और ख़वातीन को गिरिफ़्तार करके जेल में डलवा दिया यहाँ तक कि मरवा भी दिया। 5 इमामे-आज़म
और यहूदी अदालते-आलिया के मेंबरान इस बात की तसदीक़ कर सकते हैं। उन्हीं से मुझे दमिश्क़ में रहनेवाले यहूदी
भाइयों के लिए सिफ़ारिशी ख़त मिल गए ताकि मैं वहाँ भी जाकर इस नए फ़िरक़े के लोगों को गिरिफ़्तार करके सज़ा
देने के लिए यरूशलम लाऊँ।

पौलुस की तबदीली का बयान

6 मैं इस मक़सद के लिए दमिश्क़ के क़रीब पहुँच गया था कि अचानक आसमान की तरफ़ से एक तेज़ रौशनी मेरे
गिर्द चमकी। 7 मैं ज़मीन पर गिर पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, 'साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?' 8 मैंने
पूछा, 'ख़ुदावंद, आप कौन हैं?' आवाज़ ने जवाब दिया, 'मैं ईसा नासरी हूँ जिसे तू सताता है।' 9 मेरे हमसफ़रों ने रौशनी
को तो देखा, लेकिन मुझसे मुख़ातिब होनेवाले की आवाज़ न सुनी। 10 मैंने पूछा, 'ख़ुदावंद, मैं क्या करूँ?' ख़ुदावंद ने
जवाब दिया, 'उठकर दमिश्क़ में जा। वहाँ तुझे वह सारा काम बताया जाएगा जो अल्लाह तेरे ज़िम्मे लगाने का इरादा
रखता है।' 11 रौशनी की तेज़ी ने मुझे अंधा कर दिया था, इसलिए मेरे साथी मेरा हाथ पकड़कर मुझे दमिश्क़ ले गए।
12 वहाँ एक आदमी रहता था जिसका नाम हननियाह था। वह शरीअत का कटर पैरोकार था और वहाँ के रहनेवाले
यहूदियों में नेकनाम। 13 वह आया और मेरे पास खड़े होकर कहा, 'साऊल भाई, दुबारा बीना हो जाएँ!' उसी लमहे
मैं उसे देख सका। 14 फिर उसने कहा, 'हमारे बापदादा के ख़ुदा ने आपको इस मक़सद के लिए चुन लिया है कि आप
उस की मरज़ी जानकर उसके रास्त ख़ादिम को देखें और उसके अपने मुँह से उस की आवाज़ सुनें। 15 जो कुछ आपने
देख और सुन लिया है उस की गवाही आप तमाम लोगों को देंगे। 16 चुनाँचे आप क्यों देर कर रहे हैं? उठें और उसके
नाम में बपतिस्मा लें ताकि आपके गुनाह धुल जाएँ।'

पौलुस की ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत का बुलावा

17 जब मैं यरूशलम वापस आया तो मैं एक दिन बैतुल-मुक़द्दस में गया। वहाँ दुआ करते करते मैं वज्द की हालत
में आ गया 18 और ख़ुदावंद को देखा। उसने फ़रमाया, 'जल्दी कर! यरूशलम को फ़ौरन छोड़ दे क्योंकि लोग मेरे
बारे में तेरी गवाही को क़बूल नहीं करेंगे।' 19 मैंने एतराज़ किया, 'ऐ ख़ुदावंद, वह तो जानते हैं कि मैंने जगह बजगह
इबादतख़ाने में जाकर तुझ पर ईमान रखनेवालों को गिरिफ़्तार किया और उनकी पिटाई करवाई। 20 और उस वक़्त
भी जब तेरे शहीद स्तिफ़नुस को क़त्ल किया जा रहा था मैं साथ खड़ा था। मैं राज़ी था और उन लोगों के कपड़ों की
निगरानी कर रहा था जो उसे संगसार कर रहे थे।' 21 लेकिन ख़ुदावंद ने कहा, 'जा, क्योंकि मैं तुझे दूर-दराज़ इलाक़ों
में ग़ैरयहूदियों के पास भेज दूँगा'।"
22 यहाँ तक हुजूम पौलुस की बातें सुनता रहा। लेकिन अब वह चिल्ला उठे, "इसे हटा दो! इसे जान से मार दो!
यह ज़िंदा रहने के लायक़ नहीं!" 23 वह चीख़ें मार मारकर अपनी चादरें उतारने और हवा में गर्द उड़ाने लगे। 24 इस
पर कमाँडर ने हुक्म दिया कि पौलुस को क़िले में ले जाया जाए और कोड़े लगाकर उस की पूछ-गछ की जाए। क्योंकि

वह मालूम करना चाहता था कि लोग किस वजह से पौलुस के ख़िलाफ़ यों चीख़ें मार रहे हैं। 25 जब वह उसे कोड़े
लगाने के लिए लेकर जा रहे थे तो पौलुस ने साथ खड़े अफ़सर * से कहा, "क्या आपके लिए जायज़ है कि एक रोमी
शहरी के कोड़े लगवाएँ और वह भी अदालत में पेश किए बग़ैर?"
26 अफ़सर ने जब यह सुना तो कमाँडर के पास जाकर उसे इत्तला दी, "आप क्या करने को हैं? यह आदमी तो
रोमी शहरी है!"
27 कमाँडर पौलुस के पास आया और पूछा, "मुझे सहीह बताएँ, क्या आप रोमी शहरी हैं?"
पौलुस ने जवाब दिया, "जी हाँ।"
28 कमाँडर ने कहा, "मैं तो बड़ी रक़म देकर शहरी बना हूँ।"
पौलुस ने जवाब दिया, "लेकिन मैं तो पैदाइशी शहरी हूँ।"
29 यह सुनते ही वह फ़ौजी जो उस की पूछ-गछ करने को थे पीछे हट गए। कमाँडर ख़ुद घबरा गया कि मैंने एक
रोमी शहरी को ज़ंजीरों में जकड़ रखा है।

पौलुस यहूदी अदालते-आलिया के सामने

30 अगले दिन कमाँडर साफ़ मालूम करना चाहता था कि यहूदी पौलुस पर क्यों इलज़ाम लगा रहे हैं। इसलिए
उसने राहनुमा इमामों और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम मेंबरान का इजलास मुनअक़िद करने का हुक्म दिया।
फिर पौलुस को आज़ाद करके क़िले से नीचे लाया और उनके सामने खड़ा किया।

23

1 पौलुस ने ग़ौर से अदालते-आलिया के मेंबरान की तरफ़ देखकर कहा, "भाइयो, आज तक मैंने साफ़ ज़मीर के
साथ अल्लाह के सामने ज़िंदगी गुज़ारी है।" 2 इस पर इमामे-आज़म हननियाह ने पौलुस के क़रीब खड़े लोगों से कहा
कि वह उसके मुँह पर थप्पड़ मारें। 3 पौलुस ने उससे कहा, "मक्कार! * अल्लाह तुमको ही मारेगा, क्योंकि तुम यहाँ
बैठे शरीअत के मुताबिक़ मेरा फ़ैसला करना चाहते हो जबकि मुझे मारने का हुक्म देकर ख़ुद शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी
कर रहे हो!"
4 पौलुस के क़रीब खड़े आदमियों ने कहा, "तुम अल्लाह के इमामे-आज़म को बुरा कहने की जुर्रत क्योंकर करते
हो?"
5 पौलुस ने जवाब दिया, "भाइयो, मुझे मालूम न था कि वह इमामे-आज़म हैं, वरना ऐसे अलफ़ाज़ इस्तेमाल न
करता। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि अपनी क़ौम के हाकिमों को बुरा-भला मत कहना।"
6 पौलुस को इल्म था कि अदालते-आलिया के कुछ लोग सदूक़ी हैं जबकि दीगर फ़रीसी हैं। इसलिए वह इजलास
में पुकार उठा, "भाइयो, मैं फ़रीसी बल्कि फ़रीसी का बेटा भी हूँ। मुझे इसलिए अदालत में पेश किया गया है कि मैं
मुरदों में से जी उठने की उम्मीद रखता हूँ।"
7 इस बात से फ़रीसी और सदूक़ी एक दूसरे से झगड़ने लगे और इजलास के अफ़राद दो गुरोहों में बट गए। 8 वजह
यह थी कि सदूक़ी नहीं मानते कि हम जी उठेंगे। वह फ़रिश्तों और रूहों का भी इनकार करते हैं। इसके मुक़ाबले में
फ़रीसी यह सब कुछ मानते हैं। 9 होते होते बड़ा शोर मच गया। फ़रीसी फ़िरक़े के कुछ आलिम खड़े होकर जोश से
बहस करने लगे, "हमें इस आदमी में कोई ग़लती नज़र नहीं आती, शायद कोई रूह या फ़रिश्ता इससे हमकलाम हुआ
हो।"
10 झगड़े ने इतना ज़ोर पकड़ा कि कमाँडर डर गया, क्योंकि ख़तरा था कि वह पौलुस के टुकड़े कर डालें। इसलिए
उसने अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया कि वह उतरें और पौलुस को यहूदियों के बीच में से छीनकर क़िले में वापस लाएँ।
11 उसी रात ख़ुदावंद पौलुस के पास आ खड़ा हुआ और कहा, "हौसला रख, क्योंकि जिस तरह तूने यरूशलम में
मेरे बारे में गवाही दी है लाज़िम है कि इसी तरह रोम शहर में भी गवाही दे।"

पौलुस के ख़िलाफ़ साज़िश

12 अगले दिन कुछ यहूदियों ने साज़िश करके क़सम खाई, "हम न तो कुछ खाएँगे, न पिएँगे जब तक पौलुस को
क़त्ल न कर लें।" 13 चालीस से ज़्यादा मर्दों ने इस साज़िश में हिस्सा लिया। 14 वह राहनुमा इमामों और बुज़ुर्गों के
पास गए और कहा, "हमने पक्की क़सम खाई है कि कुछ नहीं खाएँगे जब तक पौलुस को क़त्ल न कर लें। 15 अब
ज़रा यहूदी अदालते-आलिया के साथ मिलकर कमाँडर से गुज़ारिश करें कि वह उसे दुबारा आपके पास लाएँ। बहाना

* **22:25** सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर। * **23:3** लफ़्ज़ी तरजुमा : सफ़ेदी की हुई दीवार।

यह पेश करें कि आप मज़ीद तफ़सील से उसके मामले का जायज़ा लेना चाहते हैं। जब उसे लाया जाएगा तो हम उसके
यहाँ पहुँचने से पहले पहले उसे मार डालने के लिए तैयार होंगे।”
16 लेकिन पौलुस के भानजे को इस बात का पता चल गया। उसने क़िले में जाकर पौलुस को इत्तला दी। 17 इस पर
पौलुस ने रोमी अफ़सरों † में से एक को बुलाकर कहा, “इस जवान को कमाँडर के पास ले जाएँ। इसके पास उनके लिए
ख़बर है।” 18 अफ़सर भानजे को कमाँडर के पास ले गया और कहा, “क़ैदी पौलुस ने मुझे बुलाकर मुझसे गुज़ारिश
की कि इस नौजवान को आपके पास ले आऊँ। उसके पास आपके लिए ख़बर है।”
19 कमाँडर नौजवान का हाथ पकड़कर दूसरों से अलग हो गया। फिर उसने पूछा, “क्या ख़बर है जो आप मुझे
बताना चाहते हैं?”
20 उसने जवाब दिया, “यहूदी आपसे दरख़ास्त करने पर मुत्तफ़िक़ हो गए हैं कि आप कल पौलुस को दुबारा यहूदी
अदालते-आलिया के सामने लाएँ। बहाना यह होगा कि वह और ज़्यादा तफ़सील से उसके बारे में मालूमात हासिल
करना चाहते हैं। 21 लेकिन उनकी बात न मानें, क्योंकि उनमें से चालीस से ज़्यादा आदमी उस की ताक में बैठे हैं।
उन्होंने क़सम खाई है कि हम न कुछ खाएँगे न पिएँगे जब तक उसे क़त्ल न कर लें। वह अभी तैयार बैठे हैं और सिर्फ़
इस इंतज़ार में हैं कि आप उनकी बात मानें।”
22 कमाँडर ने नौजवान को रुख़सत करके कहा, “जो कुछ आपने मुझे बता दिया है उसका किसी से ज़िक्र न करना।”

पौलुस को गवर्नर फ़ेलिक्स के पास भेजा जाता है

23 फिर कमाँडर ने अपने अफ़सरों में से दो को बुलाया जो सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर थे। उसने हुक्म दिया, “दो
सौ फ़ौजी, सत्तर घुड़सवार और दो सौ नेज़ाबाज़ तैयार करें। उन्हें आज रात को नौ बजे क़ैसरिया जाना है। 24 पौलुस
के लिए भी घोड़े तैयार रखना ताकि वह सहीह-सलामत गवर्नर के पास पहुँचे।” 25 फिर उसने यह ख़त लिखा,
26 “अज़ : क्लौदियुस लूसियास
मुअज़्ज़ज़ गवर्नर फ़ेलिक्स को सलाम। 27 यहूदी इस आदमी को पकड़कर क़त्ल करने को थे। मुझे पता चला कि
यह रोमी शहरी है, इसलिए मैंने अपने दस्तों के साथ आकर इसे निकालकर बचा लिया। 28 मैं मालूम करना चाहता था
कि वह क्यों इस पर इलज़ाम लगा रहे हैं, इसलिए मैं उतरकर इसे उनकी अदालते-आलिया के सामने लाया। 29 मुझे
मालूम हुआ कि उनका इलज़ाम उनकी शरीअत से ताल्लुक़ रखता है। लेकिन इसने ऐसा कुछ नहीं किया जिसकी बिना
पर यह जेल में डालने या सज़ाए-मौत के लायक़ हो। 30 फिर मुझे इत्तला दी गई कि इस आदमी को क़त्ल करने की
साज़िश की गई है, इसलिए मैंने इसे फ़ौरन आपके पास भेज दिया। मैंने इलज़ाम लगानेवालों को भी हुक्म दिया कि वह
इस पर अपना इलज़ाम आपको ही पेश करें।”
31 फ़ौजियों ने उसी रात कमाँडर का हुक्म पूरा किया। पौलुस को साथ लेकर वह अंतीपतरिस तक पहुँच गए।
32 अगले दिन प्यादे क़िले को वापस चले जबकि घुड़सवारों ने पौलुस को लेकर सफ़र जारी रखा। 33 क़ैसरिया
पहुँचकर उन्होंने पौलुस को ख़त समेत गवर्नर फ़ेलिक्स के सामने पेश किया। 34 उसने ख़त पढ़ लिया और फिर पौलुस
से पूछा, “आप किस सूबे के हैं?” पौलुस ने कहा, “किलिकिया का।” 35 इस पर गवर्नर ने कहा, “मैं आपकी समाअत
उस वक़्त करूँगा जब आप पर इलज़ाम लगानेवाले पहुँचेंगे।” और उसने हुक्म दिया कि हेरोदेस के महल में पौलुस की
पहरादारी की जाए।

24

पौलुस पर मुक़दमा

1 पाँच दिन के बाद इमामे-आज़म हननियाह, कुछ यहूदी बुज़ुर्ग और एक वकील बनाम तिरतुल्लुस क़ैसरिया आए
ताकि गवर्नर के सामने पौलुस पर अपना इलज़ाम पेश करें। 2 पौलुस को बुलाया गया तो तिरतुल्लुस ने फ़ेलिक्स को
यहूदियों का इलज़ाम पेश किया,
“आपके ज़ेरे-हुकूमत हमें बड़ा अमनो-अमान हासिल है, और आपकी दूरअंदेशी से इस मुल्क में बहुत तरक़्क़ी हुई
है। 3 मुअज़्ज़ज़ फ़ेलिक्स, इन तमाम बातों के लिए हम आपके ख़ास ममनून हैं। 4 लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप मेरी
बातों से हद से ज़्यादा थक जाएँ। अर्ज़ सिर्फ़ यह है कि आप हम पर मेहरबानी का इज़हार करके एक लमहे के लिए हमारे
मामले पर तवज्जुह दें। 5 हमने इस आदमी को अवाम दुश्मन पाया है जो पूरी दुनिया के यहूदियों में फ़साद पैदा करता
रहता है। यह नासरी फ़िरक़े का एक सरग़ना है 6 और हमारे बैतुल-मुक़द्दस की बेहुरमती करने की कोशिश कर रहा था
जब हमने इसे पकड़ा [ताकि अपनी शरीअत के मुताबिक़ इस पर मुक़दमा चलाएँ। 7 मगर लूसियास कमाँडर आकर इसे

† **23:17** सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

ज़बरदस्ती हमसे छीनकर ले गया और हुक्म दिया कि इसके मुद्दई आपके पास हाज़िर हों।] 8 इसकी पूछ-गछ करके
आप ख़ुद हमारे इलज़ामात की तसदीक़ करा सकते हैं।" 9 फिर बाक़ी यहूदियों ने उस की हाँ में हाँ मिलाकर कहा कि
यह वाक़ई ऐसा ही है।

पौलुस का दिफ़ा

10 गवर्नर ने इशारा किया कि पौलुस अपनी बात पेश करे। उसने जवाब में कहा,
"मैं जानता हूँ कि आप कई सालों से इस क़ौम के जज मुक़र्रर हैं, इसलिए ख़ुशी से आपको अपना दिफ़ा पेश करता
हूँ। 11 आप ख़ुद मालूम कर सकते हैं कि मुझे यरूशलम गए सिर्फ़ बारह दिन हुए हैं। जाने का मक़सद इबादत में शरीक
होना था। 12 वहाँ न मैंने बैतुल-मुक़द्दस में किसी से बहस-मुबाहसा किया, न शहर के किसी इबादतख़ाने में या किसी
और जगह हलचल मचाई। इन लोगों ने भी मेरी कोई ऐसी हरकत नहीं देखी। 13 जो इलज़ाम यह मुझ पर लगा रहे
हैं उसका कोई भी सबूत पेश नहीं कर सकते। 14 बेशक मैं तसलीम करता हूँ कि मैं उसी राह पर चलता हूँ जिसे यह
बिदअत क़रार देते हैं। लेकिन मैं अपने बापदादा के ख़ुदा की परस्तिश करता हूँ। जो कुछ भी शरीअत और नबियों के
सहीफ़ों में लिखा है उसे मैं मानता हूँ। 15 और मैं अल्लाह पर वही उम्मीद रखता हूँ जो यह भी रखते हैं, कि क़ियामत
का एक दिन होगा जब वह रास्तबाज़ों और नारास्तों को मुरदों में से ज़िंदा कर देगा। 16 इसलिए मेरी पूरी कोशिश यही
होती है कि हर वक़्त मेरा ज़मीर अल्लाह और इनसान के सामने साफ़ हो।
17 कई सालों के बाद मैं यरूशलम वापस आया। मेरे पास क़ौम के ग़रीबों के लिए ख़ैरात थी और मैं बैतुल-मुक़द्दस
में क़ुरबानियाँ भी पेश करना चाहता था। 18 मुझ पर इलज़ाम लगानेवालों ने मुझे बैतुल-मुक़द्दस में देखा जब मैं तहारत
की रस्मूमात अदा कर रहा था। उस वक़्त न कोई हुजूम था, न फ़साद। 19 लेकिन सूबा आसिया के कुछ यहूदी वहाँ
थे। अगर उन्हें मेरे ख़िलाफ़ कोई शिकायत है तो उन्हें ही यहाँ हाज़िर होकर मुझ पर इलज़ाम लगाना चाहिए। 20 या
यह लोग ख़ुद बताएँ कि जब मैं यहूदी अदालते-आलिया के सामने खड़ा था तो उन्होंने मेरा क्या जुर्म मालूम किया।
21 सिर्फ़ यह एक जुर्म हो सकता है कि मैंने उस वक़्त उनके हुज़ूर पुकारकर यह बात बयान की, 'आज मुझ पर इसलिए
इलज़ाम लगाया जा रहा है कि मैं ईमान रखता हूँ कि मुरदे जी उठेंगे'।"
22 फ़ेलिक्स ने जो ईसा की राह से ख़ूब वाक़िफ़ था मुक़दमा मुलतवी कर दिया। उसने कहा, "जब कमाँडर लूसियास
आएँगे फिर मैं फ़ैसला दूँगा।" 23 उसने पौलुस पर मुक़र्रर अफ़सर * को हुक्म दिया कि वह उस की पहरादारी तो करे
लेकिन उसे कुछ सहूलियात भी दे और उसके अज़ीज़ों को उससे मिलने और उस की ख़िदमत करने से न रोके।

पौलुस फ़ेलिक्स और दूसिल्ला के सामने

24 कुछ दिनों के बाद फ़ेलिक्स अपनी अहलिया दूसिल्ला के हमराह वापस आया। दूसिल्ला यहूदी थी। पौलुस को
बुलाकर उन्होंने ईसा पर ईमान के बारे में उस की बातें सुनीं। 25 लेकिन जब रास्तबाज़ी, ज़ब्ते-नफ़स और आनेवाली
अदालत के मज़ामीन छिड़ गए तो फ़ेलिक्स ने घबराकर उस की बात काटी, "फ़िलहाल काफ़ी है। अब इजाज़त है,
जब मेरे पास वक़्त होगा मैं आपको बुला लूँगा।" 26 साथ साथ वह यह उम्मीद भी रखता था कि पौलुस रिश्वत देगा,
इसलिए वह कई बार उसे बुलाकर उससे बात करता रहा।
27 दो साल गुज़र गए तो फ़ेलिक्स की जगह पुरकियुस फ़ेस्तुस आ गया। ताहम उसने पौलुस को क़ैदख़ाने में छोड़
दिया, क्योंकि वह यहूदियों के साथ रिआयत बरतना चाहता था।

25

पौलुस शहनशाह से अपील करता है

1 क़ैसरिया पहुँचने के तीन दिन बाद फ़ेस्तुस यरूशलम चला गया। 2 वहाँ राहनुमा इमामों और बाक़ी यहूदी राहनुमाओं
ने उसके सामने पौलुस पर अपने इलज़ामात पेश किए। उन्होंने बड़े ज़ोर से 3 मिन्नत की कि वह उनकी रिआयत करके
पौलुस को यरूशलम मुंतक़िल करे। वजह यह थी कि वह घात में बैठकर रास्ते में पौलुस को क़त्ल करना चाहते थे।
4 लेकिन फ़ेस्तुस ने जवाब दिया, "पौलुस को क़ैसरिया में रखा गया है और मैं ख़ुद वहाँ जाने को हूँ। 5 अगर उससे
कोई जुर्म सरज़द हुआ है तो आपके कुछ राहनुमा मेरे साथ वहाँ जाकर उस पर इलज़ाम लगाएँ।"
6 फ़ेस्तुस ने मज़ीद आठ दस दिन उनके साथ गुज़ारे, फिर क़ैसरिया चला गया। अगले दिन वह अदालत करने के
लिए बैठा और पौलुस को लाने का हुक्म दिया। 7 जब पौलुस पहुँचा तो यरूशलम से आए हुए यहूदी उसके इर्दगिर्द खड़े

* **24:23** सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

हुए और उस पर कई संजीदा इलज़ामात लगाए, लेकिन वह कोई भी बात साबित न कर सके। 8 पौलुस ने अपना दिफ़ा
करके कहा, "मुझसे न यहूदी शरीअत, न बैतुल-मुक़द्दस और न शहनशाह के ख़िलाफ़ जुर्म सरज़द हुआ है।"
9 लेकिन फ़ेस्तुस यहूदियों के साथ रिआयत बरतना चाहता था, इसलिए उसने पूछा, "क्या आप यरूशलम जाकर
वहाँ की अदालत में मेरे सामने पेश किए जाने के लिए तैयार हैं?"
10 पौलुस ने जवाब दिया, "मैं शहनशाह की रोमी अदालत में खड़ा हूँ और लाज़िम है कि यहीं मेरा फ़ैसला किया
जाए। आप भी इससे ख़ूब वाक़िफ़ हैं कि मैंने यहूदियों से कोई नाइनसाफ़ी नहीं की। 11 अगर मुझसे कोई ऐसा काम
सरज़द हुआ हो जो सज़ाए-मौत के लायक़ हो तो मैं मरने से इनकार नहीं करूँगा। लेकिन अगर बेक़ुसूर हूँ तो किसी को
भी मुझे इन आदमियों के हवाले करने का हक़ नहीं है। मैं शहनशाह से अपील करता हूँ!"
12 यह सुनकर फ़ेस्तुस ने अपनी कौंसल से मशवरा करके कहा, "आपने शहनशाह से अपील की है, इसलिए आप
शहनशाह ही के पास जाएंगे।"

पौलुस अग्रिप्पा और बिरनीके के सामने

13 कुछ दिन गुज़र गए तो अग्रिप्पा बादशाह अपनी बहन बिरनीके के साथ फ़ेस्तुस से मिलने आया। 14 वह कई दिन
वहाँ ठहरे रहे। इतने में फ़ेस्तुस ने पौलुस के मामले पर बादशाह के साथ बात की। उसने कहा, "यहाँ एक क़ैदी है जिसे
फ़ेलिक्स छोड़कर चला गया है। 15 जब मैं यरूशलम गया तो राहनुमा इमामों और यहूदी बुज़ुर्गों ने उस पर इलज़ामात
लगाकर उसे मुजरिम क़रार देने का तक़ाज़ा किया। 16 मैंने उन्हें जवाब दिया, 'रोमी क़ानून किसी को अदालत में पेश
किए बग़ैर मुजरिम क़रार नहीं देता। लाज़िम है कि उसे पहले इलज़ाम लगानेवालों का सामना करने का मौक़ा दिया
जाए ताकि अपना दिफ़ा कर सके।' 17 जब उस पर इलज़ाम लगानेवाले यहाँ पहुँचे तो मैंने ताख़ीर न की। मैंने अगले ही
दिन अदालत मुनअक़िद करके पौलुस को पेश करने का हुक्म दिया। 18 लेकिन जब उसके मुख़ालिफ़ इलज़ाम लगाने
के लिए खड़े हुए तो वह ऐसे जुर्म नहीं थे जिनकी तवक़्क़ो मैं कर रहा था। 19 उनका उसके साथ कोई और झगड़ा था
जो उनके अपने मज़हब और एक मुरदा आदमी बनाम ईसा से ताल्लुक़ रखता है। इस ईसा के बारे में पौलुस दावा करता
है कि वह ज़िंदा है। 20 मैं उलझन में पड़ गया क्योंकि मुझे मालूम नहीं था कि किस तरह इस मामले का सहीह जायज़ा
लूँ। चुनाँचे मैंने पूछा, 'क्या आप यरूशलम जाकर वहाँ अदालत में पेश किए जाने के लिए तैयार हैं?' 21 लेकिन पौलुस
ने अपील की, 'शहनशाह ही मेरा फ़ैसला करे।' फिर मैंने हुक्म दिया कि उसे उस वक़्त तक क़ैद में रखा जाए जब तक
उसे शहनशाह के पास भेजने का इंतज़ाम न करवा सकूँ।"
22 अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, "मैं भी उस शख़्स को सुनना चाहता हूँ।"
उसने जवाब दिया, "कल ही आप उसको सुन लेंगे।"
23 अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम के साथ आए और बड़े फ़ौजी अफ़सरों और शहर के नामवर
आदमियों के साथ दीवाने-आम में दाख़िल हुए। फ़ेस्तुस के हुक्म पर पौलुस को अंदर लाया गया। 24 फ़ेस्तुस ने कहा,
"अग्रिप्पा बादशाह और तमाम ख़वातीनो-हज़रात! आप यहाँ एक आदमी को देखते हैं जिसके बारे में तमाम यहूदी ख़ाह
वह यरूशलम के रहनेवाले हों, ख़ाह यहाँ के, शोर मचाकर सज़ाए-मौत का तक़ाज़ा कर रहे हैं। 25 मेरी दानिस्त में तो
इसने कोई ऐसा काम नहीं किया जो सज़ाए-मौत के लायक़ हो। लेकिन इसने शहनशाह से अपील की है, इसलिए मैंने
इसे रोम भेजने का फ़ैसला किया है। 26 लेकिन मैं शहनशाह को क्या लिख दूँ? क्योंकि इस पर कोई साफ़ इलज़ाम
नहीं लगाया गया। इसलिए मैं इसे आप सबके सामने लाया हूँ, ख़ासकर अग्रिप्पा बादशाह आपके सामने, ताकि आप
इसकी तफ़तीश करें और मैं कुछ लिख सकूँ। 27 क्योंकि मुझे बेतुकी-सी बात लग रही है कि हम एक क़ैदी को रोम
भेजें जिस पर अब तक साफ़ इलज़ामात नहीं लगाए गए हैं।"

26

पौलुस का अग्रिप्पा के सामने दिफ़ा

1 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "आपको अपने दिफ़ा में बोलने की इजाज़त है।" पौलुस ने हाथ से इशारा करके अपने
दिफ़ा में बोलने का आग़ाज़ किया,
2 "अग्रिप्पा बादशाह, मैं अपने आपको ख़ुशनसीब समझता हूँ कि आज आप ही मेरा यह दिफ़ाई बयान सुन रहे हैं जो
मुझे यहूदियों के तमाम इलज़ामात के जवाब में देना पड़ रहा है। 3 ख़ासकर इसलिए कि आप यहूदियों के रस्मो-रिवाज
और तनाज़ों से वाक़िफ़ हैं। मेरी अर्ज़ है कि आप सब्र से मेरी बात सुनें।
4 तमाम यहूदी जानते हैं कि मैंने जवानी से लेकर अब तक अपनी क़ौम बल्कि यरूशलम में किस तरह ज़िंदगी
गुज़ारी। 5 वह मुझे बड़ी देर से जानते हैं और अगर चाहें तो इसकी गवाही भी दे सकते हैं कि मैं फ़रीसी की ज़िंदगी

गुज़ारता था, हमारे मज़हब के उसी फ़िरक़े की जो सबसे कटर है। 6 और आज मेरी अदालत इस वजह से की जा रही है
कि मैं उस वादे पर उम्मीद रखता हूँ जो अल्लाह ने हमारे बापदादा से किया। 7 हक़ीक़त में यह वही उम्मीद है जिसकी
वजह से हमारे बारह क़बीले दिन-रात और बड़ी लग्न से अल्लाह की इबादत करते रहते हैं और जिसकी तकमील के
लिए वह तड़पते हैं। तो भी ऐ बादशाह, यह लोग मुझ पर यह उम्मीद रखने का इलज़ाम लगा रहे हैं। 8 लेकिन आप
सबको यह ख़याल क्यों नाक़ाबिले-यक़ीन लगता है कि अल्लाह मुरदों को ज़िंदा कर देता है?

9 पहले मैं भी समझता था कि हर मुमकिन तरीक़े से ईसा नासरी की मुख़ालफ़त करना मेरा फ़र्ज़ है। 10 और यह मैंने
यरूशलम में किया भी। राहनुमा इमामों से इख़्तियार लेकर मैंने वहाँ के बहुत-से मुक़द्दसों को जेल में डलवा दिया। और
जब कभी उन्हें सज़ाए-मौत देने का फ़ैसला करना था तो मैंने भी इस हक़ में वोट दिया। 11 मैं तमाम इबादतख़ानों में
गया और बहुत दफ़ा उन्हें सज़ा दिलाकर ईसा के बारे में कुफ़र बकने पर मजबूर करने की कोशिश करता रहा। मैं इतने
तैश में आ गया था कि उनकी ईज़ारसानी की ग़रज़ से बैरूने-मुल्क भी गया।

पौलुस अपनी तबदीली का ज़िक्र करता है

12 एक दिन मैं राहनुमा इमामों से इख़्तियार और इजाज़तनामा लेकर दमिश्क़ जा रहा था। 13 दोपहर तक़रीबन बारह
बजे मैं सड़क पर चल रहा था कि एक रौशनी देखी जो सूरज से ज़्यादा तेज़ थी। वह आसमान से आकर मेरे और मेरे
हमसफ़रों के गिर्दागिर्द चमकी। 14 हम सब ज़मीन पर गिर गए और मैंने अरामी ज़बान में एक आवाज़ सुनी, 'साऊल,
साऊल, तू मुझे क्यों सताता है? यों मेरे आँकुस के ख़िलाफ़ पाँव मारना तेरे लिए ही दुश्वारी का बाइस है।' 15 मैंने
पूछा, 'ख़ुदावंद, आप कौन हैं?' ख़ुदावंद ने जवाब दिया, 'मैं ईसा हूँ, वही जिसे तू सताता है। 16 लेकिन अब उठकर
खड़ा हो जा, क्योंकि मैं तुझे अपना ख़ादिम और गवाह मुक़र्रर करने के लिए तुझ पर ज़ाहिर हुआ हूँ। जो कुछ तूने
देखा है उस की तुझे गवाही देनी है और उस की भी जो मैं आइंदा तुझ पर ज़ाहिर करूँगा। 17 मैं तुझे तेरी अपनी क़ौम
से बचाए रखूँगा और उन ग़ैरयहूदी क़ौमों से भी जिनके पास तुझे भेजूँगा। 18 तू उनकी आँखों को खोल देगा ताकि वह
तारीकी और इबलीस के इख़्तियार से नूर और अल्लाह की तरफ़ रुजू करें। फिर उनके गुनाहों को मुआफ़ कर दिया
जाएगा और वह उनके साथ आसमानी मीरास में शरीक होंगे जो मुझ पर ईमान लाने से मुक़द्दस किए गए हैं।'

पौलुस अपनी ख़िदमत का बयान करता है

19 ऐ अग्रिप्पा बादशाह, जब मैंने यह सुना तो मैंने इस आसमानी रोया की नाफ़रमानी न की 20 बल्कि इस बात की
मुनादी की कि लोग तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रुजू करें और अपने अमल से अपनी तबदीली का इज़हार भी करें।
मैंने इसकी तबलीग़ पहले दमिश्क़ में की, फिर यरूशलम और पूरे यहूदिया में और इसके बाद ग़ैरयहूदी क़ौमों में भी।
21 इसी वजह से यहूदियों ने मुझे बैतुल-मुक़द्दस में पकड़कर क़त्ल करने की कोशिश की। 22 लेकिन अल्लाह ने आज
तक मेरी मदद की है, इसलिए मैं यहाँ खड़ा होकर छोटों और बड़ों को अपनी गवाही दे सकता हूँ। जो कुछ मैं सुनाता
हूँ वह वही कुछ है जो मूसा और नबियों ने कहा है, 23 कि मसीह दुख उठाकर पहला शख़्स होगा जो मुरदों में से जी
उठेगा और कि वह यों अपनी क़ौम और ग़ैरयहूदियों के सामने अल्लाह के नूर का प्रचार करेगा।"

24 अचानक फ़ेस्तुस पौलुस की बात काटकर चिल्ला उठा, "पौलुस, होश में आओ! इल्म की ज़्यादती ने तुम्हें
दीवाना कर दिया है।"

25 पौलुस ने जवाब दिया, "मुअज़्ज़ज़ फ़ेस्तुस, मैं दीवाना नहीं हूँ। मेरी यह बातें हक़ीक़ी और माक़ूल हैं। 26 बादशाह
सलामत इनसे वाक़िफ़ हैं, इसलिए मैं उनसे खुलकर बात कर सकता हूँ। मुझे यक़ीन है कि यह सब कुछ उनसे छुपा
नहीं रहा, क्योंकि यह पोशीदगी में या किसी कोने में नहीं हुआ। 27 ऐ अग्रिप्पा बादशाह, क्या आप नबियों पर ईमान
रखते हैं? बल्कि मैं जानता हूँ कि आप उन पर ईमान रखते हैं।"

28 अग्रिप्पा ने कहा, "आप तो बड़ी जल्दी से मुझे क़ायल करके मसीही बनाना चाहते हैं।"

29 पौलुस ने जवाब दिया, "जल्द या बदेर मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि न सिर्फ़ आप बल्कि तमाम हाज़िरीन
मेरी मानिंद बन जाएँ, सिवाए मेरी ज़ंजीरों के।"

30 फिर बादशाह, गवर्नर, बिरनीके और बाक़ी सब उठकर चले गए। 31 वहाँ से निकलकर वह एक दूसरे से बात
करने लगे। सब इस पर मुत्तफ़िक़ थे कि "इस आदमी ने कुछ नहीं किया जो सज़ाए-मौत या क़ैद के लायक़ हो।"
32 और अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, "अगर इसने शहनशाह से अपील न की होती तो इसे रिहा किया जा सकता था।"

27

पौलुस का रोम की तरफ़ सफ़र

[1] जब हमारा इटली के लिए सफ़र मुतैयिन किया गया तो पौलुस को चंद एक और क़ैदियों समेत एक रोमी अफ़सर * के हवाले किया गया जिसका नाम यूलियुस था जो शाही पलटन पर मुक़र्रर था। [2] अरिस्तरख़ुस भी हमारे साथ था। वह थिस्सलुनीके शहर का मकिदुनी आदमी था। हम अद्रमित्तियुम शहर के एक जहाज़ पर सवार हुए जिसे सूबा आसिया की चंद बंदरगाहों को जाना था। [3] अगले दिन हम सैदा पहुँचे तो यूलियुस ने मेहरबानी करके पौलुस को शहर में उसके दोस्तों के पास जाने की इजाज़त दी ताकि वह उस की ज़रूरियात पूरी कर सकें। [4] जब हम वहाँ से रवाना हुए तो मुख़ालिफ़ हवाओं की वजह से जज़ीराए-क़ुबरुस और सूबा आसिया के दरमियान से गुज़रे। [5] फिर खुले समुंदर पर चलते चलते हम किलिकिया और पंफ़ीलिया के समुंदर से गुज़रकर सूबा लूकिया के शहर मूरा पहुँचे। [6] वहाँ क़ैदियों पर मुक़र्रर अफ़सर को पता चला कि इस्कंदरिया का एक मिसरी जहाज़ इटली जा रहा है। उस पर उसने हमें सवार किया।

[7] कई दिन हम आहिस्ता आहिस्ता चले और बड़ी मुश्किल से कनिदुस के क़रीब पहुँचे। लेकिन मुख़ालिफ़ हवा की वजह से हमने जज़ीराए-क्रेते की तरफ़ रुख़ किया और सलमोने शहर के क़रीब से गुज़रकर क्रेते की आड़ में सफ़र किया। [8] लेकिन वहाँ हम साहिल के साथ साथ चलते हुए बड़ी मुश्किल से एक जगह पहुँचे जिसका नाम 'हसीन-बंदर' था। शहर लसया उसके क़रीब वाक़े था।

[9] बहुत वक़्त ज़ाया हो गया था और अब बहरी सफ़र ख़तरनाक भी हो चुका था, क्योंकि कफ़्फ़ारा का दिन (तक़रीबन नवंबर के शुरू में) गुज़र चुका था। इसलिए पौलुस ने उन्हें आगाह किया, [10] "हज़रात, मुझे पता है कि आगे जाकर हम पर बड़ी मुसीबत आएगी। हमें जहाज़, मालो-असबाब और जानों का नुक़सान उठाना पड़ेगा।" [11] लेकिन क़ैदियों पर मुक़र्रर रोमी अफ़सर ने उस की बात नज़रंदाज़ करके जहाज़ के नाख़ुदा और मालिक की बात मानी। [12] चूँकि 'हसीन-बंदर' में जहाज़ को सर्दियों के मौसम के लिए रखना मुश्किल था इसलिए अकसर लोग आगे फ़ेनिक्स तक पहुँचकर सर्दियों का मौसम गुज़ारना चाहते थे। क्योंकि फ़ेनिक्स जज़ीराए-क्रेते की अच्छी बंदरगाह थी जो सिर्फ़ जुनूब-मग़रिब और शिमाल-मग़रिब की तरफ़ खुली थी।

समुंदर पर तूफ़ान

[13] चुनाँचे एक दिन जब जुनूब की सिम्त से हलकी-सी हवा चलने लगी तो मल्लाहों ने सोचा कि हमारा इरादा पूरा हो गया है। वह लंगर उठाकर क्रेते के साहिल के साथ साथ चलने लगे। [14] लेकिन थोड़ी ही देर के बाद मौसम बदल गया और उन पर जज़ीरे की तरफ़ से एक तूफ़ानी हवा टूट पड़ी जो बादे-शिमाल-मशरिक़ी कहलाती है। [15] जहाज़ हवा के क़ाबू में आ गया और हवा की तरफ़ रुख़ न कर सका, इसलिए हमने हार मानकर जहाज़ को हवा के साथ साथ चलने दिया। [16] जब हम एक छोटे जज़ीरा बनाम कौदा की आड़ में से गुज़रने लगे तो हमने बड़ी मुश्किल से बचाव-कश्ती को जहाज़ पर उठाकर महफ़ूज़ रखा। (अब तक वह रस्से से जहाज़ के साथ खींची जा रही थी।) [17] फिर मल्लाहों ने जहाज़ के ढाँचे को ज़्यादा मज़बूत बनाने की ख़ातिर उसके इर्दगिर्द रस्से बाँधे। ख़ौफ़ यह था कि जहाज़ शिमाली अफ़्रीक़ा के क़रीब पड़े चोरबालू में धँस जाए। (इन रेतों का नाम सूरतिस था।) इससे बचने के लिए उन्होंने लंगर डाल दिया † ताकि जहाज़ कुछ आहिस्ता चले। यों जहाज़ हवा के साथ चलते चलते आगे बढ़ा। [18] अगले दिन भी तूफ़ान जहाज़ को इतनी शिद्दत से झँझोड़ रहा था कि मल्लाह मालो-असबाब को समुंदर में फेंकने लगे। [19] तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों से जहाज़ चलाने का कुछ सामान समुंदर में फेंक दिया। [20] तूफ़ान की शिद्दत बहुत दिनों के बाद भी ख़त्म न हुई। न सूरज और न सितारे नज़र आए यहाँ तक कि आख़िरकार हमारे बचने की हर उम्मीद जाती रही।

[21] काफ़ी देर से दिल नहीं चाहता था कि खाना खाया जाए। आख़िरकार पौलुस ने लोगों के बीच में खड़े होकर कहा, "हज़रात, बेहतर होता कि आप मेरी बात मानकर क्रेते से रवाना न होते। फिर आप इस मुसीबत और ख़सारे से बच जाते। [22] लेकिन अब मैं आपको नसीहत करता हूँ कि हौसला रखें। आपमें से एक भी नहीं मरेगा। सिर्फ़ जहाज़ तबाह हो जाएगा। [23] क्योंकि पिछली रात एक फ़रिश्ता मेरे पास आ खड़ा हुआ, उसी ख़ुदा का फ़रिश्ता जिसका मैं बंदा हूँ और जिसकी इबादत मैं करता हूँ। [24] उसने कहा, 'पौलुस, मत डर। लाज़िम है कि तुझे शहनशाह के सामने पेश किया जाए। और अल्लाह अपनी मेहरबानी से तेरे वास्ते तमाम हमसफ़रों की जानें भी बचाए रखेगा।' [25] इसलिए हौसला रखें, क्योंकि मेरा अल्लाह पर ईमान है कि ऐसा ही होगा जिस तरह उसने फ़रमाया है। [26] लेकिन जहाज़ को किसी जज़ीरे के साहिल पर चढ़ जाना है।"

[27] तूफ़ान की चौधवीं रात जहाज़ बहीराए-अदरिया पर बहे चला जा रहा था कि तक़रीबन आधी रात को मल्लाहों ने महसूस किया कि साहिल नज़दीक आ रहा है। [28] पानी की गहराई की पैमाइश करके उन्हें मालूम हुआ कि वह 120 फ़ुट थी। थोड़ी देर के बाद उस की गहराई 90 फ़ुट हो चुकी थी। [29] वह डर गए, क्योंकि उन्होंने अंदाज़ा लगाया

* **27:1** सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर। † **27:17** लंगर यानी छोटा लंगर जिसकी मदद से जहाज़ का रुख़ एक ही सिम्त में रखा जाता है।

कि ख़तरा है कि हम साहिल पर पड़ी चटानों से टकरा जाएँ। इसलिए उन्होंने जहाज़ के पिछले हिस्से से चार लंगर
डालकर दुआ की कि दिन जल्दी से चढ़ जाए। 30 उस वक़्त मल्लाहों ने जहाज़ से फ़रार होने की कोशिश की। उन्होंने
यह बहाना बनाकर कि हम जहाज़ के सामने से भी लंगर डालना चाहते हैं बचाव-कश्ती पानी में उतरने दी। 31 इस
पर पौलुस ने क़ैदियों पर मुक़र्रर अफ़सर और फ़ौजियों से कहा, “अगर यह आदमी जहाज़ पर न रहें तो आप सब मर
जाएंगे।” 32 चुनाँचे उन्होंने बचाव-कश्ती के रस्से को काटकर उसे खुला छोड़ दिया।
33 पौ फटनेवाली थी कि पौलुस ने सबको समझाया कि वह कुछ खा लें। उसने कहा, “आपने चौदह दिन से
इज़तिराब की हालत में रहकर कुछ नहीं खाया। 34 अब मेहरबानी करके कुछ खा लें। यह आपके बचाव के लिए
ज़रूरी है, क्योंकि आप न सिर्फ़ बच जाएंगे बल्कि आपका एक बाल भी बीका नहीं होगा।” 35 यह कहकर उसने कुछ
रोटी ली और उन सबके सामने अल्लाह से शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसे तोड़कर खाने लगा। 36 इससे दूसरों की
हौसलाअफ़्ज़ाई हुई और उन्होंने भी कुछ खाना खाया। 37 जहाज़ पर हम 276 अफ़राद थे। 38 जब सब सेर हो गए
तो गंदुम को भी समुंदर में फेंका गया ताकि जहाज़ और हलका हो जाए।

जहाज़ टुकड़े टुकड़े हो जाता है

39 जब दिन चढ़ गया तो मल्लाहों ने साहिली इलाक़े को न पहचाना। लेकिन एक ख़लीज नज़र आई जिसका
साहिल अच्छा था। उन्हें ख़याल आया कि शायद हम जहाज़ को वहाँ ख़ुश्की पर चढ़ा सकें। 40 चुनाँचे उन्होंने लंगरों
के रस्से काटकर उन्हें समुंदर में छोड़ दिया। फिर उन्होंने वह रस्से खोल दिए जिनसे पतवार बँधे होते थे और सामनेवाले
बादबान को चढ़ाकर हवा के ज़ोर से साहिल की तरफ़ रुख़ किया। 41 लेकिन चलते चलते जहाज़ एक चोरबालू से
टकराकर उस पर चढ़ गया। जहाज़ का माथा धँस गया यहाँ तक कि वह हिल भी न सका जबकि उसका पिछला हिस्सा
मौजों की टक्करों से टुकड़े टुकड़े होने लगा।
42 फ़ौजी क़ैदियों को क़त्ल करना चाहते थे ताकि वह जहाज़ से तैरकर फ़रार न हो सकें। 43 लेकिन उन पर मुक़र्रर
अफ़सर पौलुस को बचाना चाहता था, इसलिए उसने उन्हें ऐसा करने न दिया। उसने हुक्म दिया कि पहले वह सब जो
तैर सकते हैं पानी में छलाँग लगाकर किनारे तक पहुँचें। 44 बाक़ियों को तख़्तों या जहाज़ के किसी टुकड़े को पकड़कर
पहुँचना था। यों सब सहीह-सलामत साहिल तक पहुँचे।

28

जज़ीराए-मिलिते में

1 तूफ़ान से बचने पर हमें मालूम हुआ कि जज़ीरे का नाम मिलिते है। 2 मक़ामी लोगों ने हमें ग़ैरमामूली मेहरबानी
दिखाई। उन्होंने आग जलाकर हमारा इस्तक़बाल किया, क्योंकि बारिश शुरू हो चुकी थी और ठंड थी। 3 पौलुस ने
भी लकड़ी का ढेर जमा किया। लेकिन ज्योंही उसने उसे आग में फेंका एक ज़हरीला साँप आग की तपिश से भागकर
निकल आया और पौलुस के हाथ से चिमटकर उसे डस लिया। 4 मक़ामी लोगों ने साँप को पौलुस के हाथ से लगे देखा
तो एक दूसरे से कहने लगे, “यह आदमी ज़रूर क़ातिल होगा। गो यह समुंदर से बच गया, लेकिन इनसाफ़ की देवी इसे
जीने नहीं देती।” 5 लेकिन पौलुस ने साँप को झटककर आग में फेंक दिया, और साँप का कोई बुरा असर उस पर न
हुआ। 6 लोग इस इंतज़ार में रहे कि वह सूज जाए या अचानक गिर पड़े, लेकिन काफ़ी देर के बाद भी कुछ न हुआ।
इस पर उन्होंने अपना ख़याल बदलकर उसे देवता क़रार दिया।
7 क़रीब ही जज़ीरे के सबसे बड़े आदमी की ज़मीनें थीं। उसका नाम पुबलियुस था। उसने अपने घर में हमारा
इस्तक़बाल किया और तीन दिन तक हमारी ख़ूब मेहमान-नवाज़ी की। 8 उसका बाप बीमार पड़ा था, वह बुख़ार और
पेचिश के मरज़ में मुब्तला था। पौलुस उसके कमरे में गया, उसके लिए दुआ की और अपने हाथ उस पर रख दिए।
इस पर मरीज़ को शफ़ा मिली। 9 जब यह हुआ तो जज़ीरे के बाक़ी तमाम मरीज़ों ने पौलुस के पास आकर शफ़ा पाई।
10 नतीजे में उन्होंने कई तरह से हमारी इज़्ज़त की। और जब रवाना होने का वक़्त आ गया तो उन्होंने हमें वह सब
कुछ मुहैया किया जो सफ़र के लिए दरकार था।

जज़ीराए-मिलिते से रोम तक

11 जज़ीरे पर तीन माह गुज़र गए। फिर हम एक जहाज़ पर सवार हुए जो सर्दियों के मौसम के लिए वहाँ ठहर गया
था। यह जहाज़ इस्कंदरिया का था और उसके माथे पर जुड़वाँ देवताओं ‘कास्टर’ और ‘पोल्लुक्स’ की मूरत नसब
थी। हम वहाँ से रुख़सत होकर 12 सुरकूसा शहर पहुँचे। तीन दिन के बाद 13 हम वहाँ से रेगियुम शहर गए जहाँ हम
सिर्फ़ एक दिन ठहरे। फिर जुनूब से हवा उठी, इसलिए हम अगले दिन पुतियोली पहुँचे। 14 इस शहर में हमारी मुलाक़ात
कुछ भाइयों से हुई। उन्होंने हमें अपने पास एक हफ़ता रहने की दावत दी। यों हम रोम पहुँच गए। 15 रोम के भाइयों

ने हमारे बारे में सुन रखा था, और कुछ हमारा इस्तक़बाल करने के लिए क़सबा बनाम अप्पियुस के चौक तक आए
जबकि कुछ सिर्फ़ 'तीन-सराय' तक आ सके। उन्हें देखकर पौलुस ने अल्लाह का शुक्र किया और नया हौसला पाया।

रोम में

16 हमारे रोम में पहुँचने पर पौलुस को अपने किराए के मकान में रहने की इजाज़त मिली, गो एक फ़ौजी उस की
पहरादारी करने के लिए उसके साथ रहा।
17 तीन दिन गुज़र गए तो पौलुस ने यहूदी राहनुमाओं को बुलाया। जब वह जमा हुए तो उसने उनसे कहा, "भाइयो,
मुझे यरूशलम में गिरिफ़्तार करके रोमियों के हवाले कर दिया गया हालाँकि मैंने अपनी क़ौम या अपने बापदादा के
रस्मो-रिवाज के ख़िलाफ़ कुछ नहीं किया था। 18 रोमी मेरा जायज़ा लेकर मुझे रिहा करना चाहते थे, क्योंकि उन्हें
मुझे सज़ाए-मौत देने का कोई सबब न मिला था। 19 लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया और यों मुझे शहनशाह से अपील
करने पर मजबूर कर दिया गया, गो मेरा यह इरादा नहीं है कि मैं अपनी क़ौम पर कोई इलज़ाम लगाऊँ। 20 मैंने इसलिए
आपको बुलाया ताकि आपसे मिलूँ और गुफ़्तगू करूँ। मैं उस शख़्स की ख़ातिर इन ज़ंजीरों से जकड़ा हुआ हूँ जिसके
आने की उम्मीद इसराईल रखता है।"
21 यहूदियों ने उसे जवाब दिया, "हमें यहूदिया से आपके बारे में कोई भी ख़त नहीं मिला। और जितने भाई वहाँ से
आए हैं उनमें से एक ने भी आपके बारे में न तो कोई मनफ़ी रिपोर्ट दी न कोई बुरी बात बताई। 22 लेकिन हम आपसे
सुनना चाहते हैं कि आपके ख़यालात क्या हैं, क्योंकि हम इतना जानते हैं कि हर जगह लोग इस फ़िरक़े के ख़िलाफ़
बातें कर रहे हैं।"
23 चुनाँचे उन्होंने मिलने का एक दिन मुक़र्रर किया। जब यहूदी दुबारा उस जगह आए जहाँ पौलुस रहता था तो
उनकी तादाद बहुत ज़्यादा थी। सुबह से लेकर शाम तक उसने अल्लाह की बादशाही बयान की और उस की गवाही
दी। उसने उन्हें मूसा की शरीअत और नबियों के हवालाजात पेश कर करके ईसा के बारे में क़ायल करने की कोशिश
की। 24 कुछ तो क़ायल हो गए, लेकिन बाक़ी ईमान न लाए। 25 उनमें नाइत्तफ़ाक़ी पैदा हुई तो वह चले गए। जब वह
जाने लगे तो पौलुस ने उनसे कहा, "रूहुल-क़ुदुस ने यसायाह नबी की मारिफ़त आपके बापदादा से ठीक कहा कि

26 जा, इस क़ौम को बता,
'तुम अपने कानों से सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।
27 क्योंकि इस क़ौम का दिल बेहिस हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्होंने अपनी आँखों को बंद कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रुजू करें
और मैं उन्हें शफ़ा दूँ'।"

28 पौलुस ने अपनी बात इन अलफ़ाज़ से ख़त्म की, "अब जान लें कि अल्लाह की तरफ़ से यह नजात ग़ैरयहूदियों
को भी पेश की गई है और वह सुनेंगे भी!"
29 [जब उसने यह कहा तो यहूदी आपस में बहस-मुबाहसा करते हुए चले गए।]
30 पौलुस पूरे दो साल अपने किराए के घर में रहा। जो भी उसके पास आया उसका उसने इस्तक़बाल करके
31 दिलेरी से अल्लाह की बादशाही की मुनादी की और ख़ुदावंद ईसा मसीह की तालीम दी। और किसी ने मुदाख़लत
न की।

रोमियों

सलाम

1 यह ख़त मसीह ईसा के ग़ुलाम पौलुस की तरफ़ से है जिसे रसूल होने के लिए बुलाया और अल्लाह की ख़ुशख़बरी
की मुनादी करने के लिए अलग किया गया है।
2 पाक नविश्तों में दर्ज इस ख़ुशख़बरी का वादा अल्लाह ने पहले ही अपने नबियों से कर रखा था। 3 और यह
पैग़ाम उसके फ़रज़ंद ईसा के बारे में है। इनसानी लिहाज़ से वह दाऊद की नसल से पैदा हुआ, 4 जबकि रूहुल-क़ुद्स
के लिहाज़ से वह क़ुदरत के साथ अल्लाह का फ़रज़ंद ठहरा जब वह मुरदों में से जी उठा। यह है हमारे ख़ुदावंद ईसा
मसीह के बारे में अल्लाह की ख़ुशख़बरी। 5 मसीह से हमें रसूली इख़्तियार का यह फ़ज़ल हासिल हुआ है कि हम
तमाम ग़ैरयहूदियों में मुनादी करें ताकि वह ईमान लाकर उसके ताबे हो जाएँ और यों मसीह के नाम को जलाल मिले।
6 आप भी उन ग़ैरयहूदियों में से हैं, जो ईसा मसीह के बुलाए हुए हैं।
7 मैं आप सबको लिख रहा हूँ जो रोम में अल्लाह के प्यारे हैं और मख़सूसो-मुक़द्दस होने के लिए बुलाए गए हैं।
ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

रोम जाने की आरज़ू

8 अव्वल, मैं आप सबके लिए ईसा मसीह के वसीले से अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ, क्योंकि पूरी दुनिया में आपके
ईमान का चर्चा हो रहा है। 9 ख़ुदा ही मेरा गवाह है जिसकी ख़िदमत मैं अपनी रूह में करता हूँ जब मैं उसके फ़रज़ंद के
बारे में ख़ुशख़बरी फैलाता हूँ, मैं लगातार आपको याद करता रहता हूँ 10 और हर वक़्त अपनी दुआओं में मिन्नत करता
हूँ कि अल्लाह मुझे आख़िरकार आपके पास आने की कामयाबी अता करे। 11 क्योंकि मैं आपसे मिलने का आरज़ूमंद
हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे ज़रीए आपको कुछ रूहानी बरकत मिल जाए और यों आप मज़बूत हो जाएँ। 12 यानी आने का
मक़सद यह है कि मेरे ईमान से आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई की जाए और इसी तरह आपके ईमान से मेरा हौसला भी बढ़
जाए।
13 भाइयो, आपके इल्म में हो कि मैंने बहुत दफ़ा आपके पास आने का इरादा किया। क्योंकि जिस तरह दीगर
ग़ैरयहूदी अक़वाम में मेरी ख़िदमत से फल पैदा हुआ है उसी तरह आपमें भी फल देखना चाहता हूँ। लेकिन आज तक
मुझे रोका गया है। 14 बात यह है कि यह ख़िदमत सरंजाम देना मेरा फ़र्ज़ है, ख़ाह यूनानियों में हो या ग़ैरयूनानियों में,
ख़ाह दानाओं में हो या नादानों में। 15 यही वजह है कि मैं आपको भी जो रोम में रहते हैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने
का मुश्ताक़ हूँ।

अल्लाह की ख़ुशख़बरी की क़ुदरत

16 मैं तो ख़ुशख़बरी के सबब से शर्माता नहीं, क्योंकि यह अल्लाह की क़ुदरत है जो हर एक को जो ईमान लाता
है नजात देती है, पहले यहूदियों को, फिर ग़ैरयहूदियों को। 17 क्योंकि इस ख़ुशख़बरी में अल्लाह की ही रास्तबाज़ी
ज़ाहिर होती है, वह रास्तबाज़ी जो शुरू से आख़िर तक ईमान पर मबनी है। यही बात कलामे-मुक़द्दस में दर्ज है जब
लिखा है, "रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा।"

इनसान पर अल्लाह का ग़ज़ब

18 लेकिन अल्लाह का ग़ज़ब आसमान पर से उन तमाम बेदीन और नारास्त लोगों पर नाज़िल होता है जो सच्चाई
को अपनी नारास्ती से दबाए रखते हैं। 19 जो कुछ अल्लाह के बारे में मालूम हो सकता है वह तो उन पर ज़ाहिर है,
हाँ अल्लाह ने ख़ुद यह उन पर ज़ाहिर किया है। 20 क्योंकि दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक इनसान अल्लाह
की अनदेखी फ़ितरत यानी उस की अज़ली क़ुदरत और उलूहियत मख़लूक़ात का मुशाहदा करने से पहचान सकता है।
इसलिए उनके पास कोई उज़्र नहीं। 21 अल्लाह को जानने के बावुजूद उन्होंने उसे वह जलाल न दिया जो उसका हक़
है, न उसका शुक्र अदा किया बल्कि वह बातिल ख़यालात में पड़ गए और उनके बेसमझ दिलों पर तारीकी छा गई।
22 वह दावा तो करते थे कि हम दाना हैं, लेकिन अहमक़ साबित हुए। 23 यों उन्होंने ग़ैरफ़ानी ख़ुदा को जलाल देने के
बजाए ऐसे बुतों की पूजा की जो फ़ानी इनसान, परिंदों, चौपाइयों और रेंगनेवाले जानवरों की सूरत में बनाए गए थे।
24 इसलिए अल्लाह ने उन्हें उन नजिस कामों में छोड़ दिया जो उनके दिल करना चाहते थे। नतीजे में उनके जिस्म
एक दूसरे से बेहुर्मत होते रहे। 25 हाँ, उन्होंने अल्लाह के बारे में सच्चाई को रद्द करके झूट को अपना लिया और
मख़लूक़ात की परस्तिश और ख़िदमत की, न कि ख़ालिक़ की, जिसकी तारीफ़ अबद तक होती रहे, आमीन।

26 यही वजह है कि अल्लाह ने उन्हें उनकी शर्मनाक शहवतों में छोड़ दिया। उनकी ख़वातीन ने फ़ितरती जिंसी
ताल्लुक़ात के बजाए ग़ैरफ़ितरती ताल्लुक़ात रखे। 27 इसी तरह मर्द ख़वातीन के साथ फ़ितरती ताल्लुक़ात छोड़कर
एक दूसरे की शहवत में मस्त हो गए। मर्दों ने मर्दों के साथ बेहया हरकतें करके अपने बदनों में अपनी इस गुमराही का
मुनासिब बदला पाया।

28 और चूँकि उन्होंने अल्लाह को जानने से इनकार कर दिया इसलिए उसने उन्हें उनकी मकरूह सोच में छोड़
दिया। और इसलिए वह ऐसी हरकतें करते रहते हैं जो कभी नहीं करनी चाहिएँ। 29 वह हर तरह की नारास्ती, शर,
लालच और बुराई से भरे हुए हैं। वह हसद, ख़ूनरेज़ी, झगड़े, फ़रेब और कीनावरी से लबरेज़ हैं। वह चुग़ली खानेवाले,
30 तोहमत लगानेवाले, अल्लाह से नफ़रत करनेवाले, सरकश, मग़रूर, शेख़ीबाज़, बदी को ईजाद करनेवाले, माँ-बाप
के नाफ़रमान, 31 बेसमझ, बेवफ़ा, संगदिल और बेरहम हैं। 32 अगरचे वह अल्लाह का फ़रमान जानते हैं कि ऐसा
करनेवाले सज़ाए-मौत के मुस्तहिक़ हैं तो भी वह ऐसा करते हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि वह ऐसा करनेवाले दीगर लोगों को
शाबाश भी देते हैं।

2

अल्लाह की रास्त अदालत

1 ऐ इनसान, क्या तू दूसरों को मुजरिम ठहराता है? तू जो कोई भी हो तेरा कोई उज़्र नहीं। क्योंकि तू ख़ुद भी वही
कुछ करता है जिसमें तू दूसरों को मुजरिम ठहराता है और यों अपने आपको भी मुजरिम क़रार देता है। 2 अब हम
जानते हैं कि ऐसे काम करनेवालों पर अल्लाह का फ़ैसला मुंसिफ़ाना है। 3 ताहम तू वही कुछ करता है जिसमें तू दूसरों
को मुजरिम ठहराता है। क्या तू समझता है कि ख़ुद अल्लाह की अदालत से बच जाएगा? 4 या क्या तू उस की वसी
मेहरबानी, तहम्मुल और सब्र को हक़ीर जानता है? क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह की मेहरबानी तुझे तौबा तक
ले जाना चाहती है? 5 लेकिन तू हटधर्म है, तू तौबा करने के लिए तैयार नहीं और यों अपनी सज़ा में इज़ाफ़ा करता
जा रहा है, वह सज़ा जो उस दिन दी जाएगी जब अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा, जब उस की रास्त अदालत ज़ाहिर
होगी। 6 अल्लाह हर एक को उसके कामों का बदला देगा। 7 कुछ लोग साबितक़दमी से नेक काम करते और जलाल,
इज़्ज़त और बक़ा के तालिब रहते हैं। उन्हें अल्लाह अबदी ज़िंदगी अता करेगा। 8 लेकिन कुछ लोग ख़ुदग़रज़ हैं और
सच्चाई की नहीं बल्कि नारास्ती की पैरवी करते हैं। उन पर अल्लाह का ग़ज़ब और क़हर नाज़िल होगा। 9 मुसीबत
और परेशानी हर उस इनसान पर आएगी जो बुराई करता है, पहले यहूदी पर, फिर यूनानी पर। 10 लेकिन जलाल,
इज़्ज़त और सलामती हर उस इनसान को हासिल होगी जो नेकी करता है, पहले यहूदी को, फिर यूनानी को। 11 क्योंकि
अल्लाह किसी का भी तरफ़दार नहीं।

12 ग़ैरयहूदियों के पास मूसवी शरीअत नहीं है, इसलिए वह शरीअत के बग़ैर ही गुनाह करके हलाक हो जाते हैं।
यहूदियों के पास शरीअत है, लेकिन वह भी नहीं बचेंगे। क्योंकि जब वह गुनाह करते हैं तो शरीअत ही उन्हें मुजरिम
ठहराती है। 13 क्योंकि अल्लाह के नज़दीक यह काफ़ी नहीं कि हम शरीअत की बातें सुनें बल्कि वह हमें उस वक़्त
ही रास्तबाज़ क़रार देता है जब शरीअत पर अमल भी करते हैं। 14 और गो ग़ैरयहूदियों के पास शरीअत नहीं होती
लेकिन जब भी वह फ़ितरती तौर पर वह कुछ करते हैं जो शरीअत फ़रमाती है तो ज़ाहिर करते हैं कि गो हमारे पास
शरीअत नहीं तो भी हम अपने आपके लिए ख़ुद शरीअत हैं। 15 इसमें वह साबित करते हैं कि शरीअत के तक़ाज़े उनके
दिल पर लिखे हुए हैं। उनका ज़मीर भी इसकी गवाही देता है, क्योंकि उनके ख़यालात कभी एक दूसरे की मज़म्मत
और कभी एक दूसरे का दिफ़ा भी करते हैं। 16 ग़रज़, मेरी ख़ुशख़बरी के मुताबिक़ हर एक को उस दिन अपना अज्र
मिलेगा जब अल्लाह ईसा मसीह की मारिफ़त इनसानों की पोशीदा बातों की अदालत करेगा।

यहूदी और शरीअत

17 अच्छा, तू अपने आपको यहूदी कहता है। तू शरीअत पर इनहिसार करता और अल्लाह के साथ अपने ताल्लुक़
पर फ़ख़र करता है। 18 तू उस की मरज़ी को जानता है और शरीअत की तालीम पाने के बाइस सहीह राह की पहचान
रखता है। 19 तुझे पूरा यक़ीन है, 'मैं अंधों का क़ायद, तारीकी में बसनेवालों की रौशनी, 20 बेसमझों का मुअल्लिम
और बच्चों का उस्ताद हूँ।' एक लिहाज़ से यह दुरुस्त भी है, क्योंकि शरीअत की सूरत में तेरे पास इल्मो-इरफ़ान और
सच्चाई मौजूद है। 21 अब बता, तू जो औरों को सिखाता है अपने आपको क्यों नहीं सिखाता? तू जो चोरी न करने
की मुनादी करता है, ख़ुद चोरी क्यों करता है? 22 तू जो औरों को ज़िना करने से मना करता है, ख़ुद ज़िना क्यों करता
है? तू जो बुतों से घिन खाता है, ख़ुद मंदिरों को क्यों लूटता है? 23 तू जो शरीअत पर फ़ख़र करता है, क्यों इसकी

ख़िलाफ़वरज़ी करके अल्लाह की बेइज़्ज़ती करता है? 24 यह वही बात है जो कलामे-मुक़द्दस में लिखी है, "तुम्हारे
सबब से ग़ैरयहूदियों में अल्लाह के नाम पर कुफ़र बका जाता है।"
25 ख़तने का फ़ायदा तो उस वक़्त होता है जब तू शरीअत पर अमल करता है। लेकिन अगर तू उस की हुक्मअदूली
करता है तो तू नामख़तून जैसा है। 26 इसके बरअक्स अगर नामख़तून ग़ैरयहूदी शरीअत के तक़ाज़ों को पूरा करता है
तो क्या अल्लाह उसे मख़तून यहूदी के बराबर नहीं ठहराएगा? 27 चुनाँचे जो नामख़तून ग़ैरयहूदी शरीअत पर अमल
करते हैं वह आप यहूदियों को मुजरिम ठहराएँगे जिनका ख़तना हुआ है और जिनके पास शरीअत है, क्योंकि आप
शरीअत पर अमल नहीं करते। 28 आप इस बिना पर हक़ीक़ी यहूदी नहीं हैं कि आपके वालिदैन यहूदी थे या आपके
बदन का ख़तना ज़ाहिरी तौर पर हुआ है। 29 बल्कि हक़ीक़ी यहूदी वह है जो बातिन में यहूदी है। और हक़ीक़ी ख़तना
उस वक़्त होता है जब दिल का ख़तना हुआ है। ऐसा ख़तना शरीअत से नहीं बल्कि रूहुल-क़ुद्स के वसीले से किया
जाता है। और ऐसे यहूदी को इनसान की तरफ़ से नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से तारीफ़ मिलती है।

3

1 तो क्या यहूदी होने का या ख़तना का कोई फ़ायदा है? 2 जी हाँ, हर तरह का! अव्वल तो यह कि अल्लाह का
कलाम उनके सुपुर्द किया गया है। 3 अगर उनमें से बाज़ बेवफ़ा निकले तो क्या हुआ? क्या इससे अल्लाह की वफ़ादारी
भी ख़त्म हो जाएगी? 4 कभी नहीं! लाज़िम है कि अल्लाह सच्चा ठहरे गो हर इनसान झूटा है। यों कलामे-मुक़द्दस
में लिखा है, "लाज़िम है कि तू बोलते वक़्त रास्त ठहरे और अदालत करते वक़्त ग़ालिब आए।"
5 कोई कह सकता है, "हमारी नारास्ती का एक अच्छा मक़सद होता है, क्योंकि इससे लोगों पर अल्लाह की रास्ती
ज़ाहिर होती है। तो क्या अल्लाह बेइनसाफ़ नहीं होगा अगर वह अपना ग़ज़ब हम पर नाज़िल करे?" (मैं इनसानी
ख़याल पेश कर रहा हूँ)। 6 हरगिज़ नहीं! अगर अल्लाह रास्त न होता तो फिर वह दुनिया की अदालत किस तरह कर
सकता?
7 शायद कोई और एतराज़ करे, "अगर मेरा झूट अल्लाह की सच्चाई को कसरत से नुमायाँ करता है और यों उसका
जलाल बढ़ता है तो वह मुझे क्योंकर गुनाहगार क़रार दे सकता है?" 8 कुछ लोग हम पर यह कुफ़र भी बकते हैं कि
हम कहते हैं, "आओ, हम बुराई करें ताकि भलाई निकले।" इनसाफ़ का तक़ाज़ा है कि ऐसे लोगों को मुजरिम ठहराया
जाए।

कोई रास्तबाज़ नहीं

9 अब हम क्या कहें? क्या हम यहूदी दूसरों से बरतर हैं? बिलकुल नहीं। हम तो पहले ही यह इलज़ाम लगा चुके
हैं कि यहूदी और यूनानी सब ही गुनाह के क़ब्ज़े में हैं। 10 कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है,
"कोई नहीं जो रास्तबाज़ है, एक भी नहीं।
11 कोई नहीं जो समझदार है,
कोई नहीं जो अल्लाह का तालिब है।
12 अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए,
सबके सब बिगड़ गए हैं।
कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।
13 उनका गला खुली क़ब्र है,
उनकी ज़बान फ़रेब देती है।
उनके होंटों में साँप का ज़हर है।
14 उनका मुँह लानत और कड़वाहट से भरा है।
15 उनके पाँव ख़ून बहाने के लिए जल्दी करते हैं।
16 अपने पीछे वह तबाहीओ-बरबादी छोड़ जाते हैं,
17 और वह सलामती की राह नहीं जानते।
18 उनकी आँखों के सामने ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं होता।"
19 अब हम जानते हैं कि शरीअत जो कुछ फ़रमाती है उन्हें फ़रमाती है जिनके सुपुर्द वह की गई है। मक़सद यह है
कि हर इनसान के बहाने ख़त्म किए जाएँ और तमाम दुनिया अल्लाह के सामने मुजरिम ठहरे। 20 क्योंकि शरीअत के
तक़ाज़े पूरे करने से कोई भी उसके सामने रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता, बल्कि शरीअत का काम यह है कि हमारे अंदर
गुनाहगार होने का एहसास पैदा करे।

रास्तबाज़ होने के लिए ईमान ज़रूरी है

21 लेकिन अब अल्लाह ने हम पर एक राह का इनकिशाफ़ किया है जिससे हम शरीअत के बग़ैर ही उसके सामने
रास्तबाज़ ठहर सकते हैं। तौरेत और नबियों के सहीफ़े भी इसकी तसदीक़ करते हैं। 22 राह यह है कि जब हम ईसा
मसीह पर ईमान लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है। और यह राह सबके लिए है। क्योंकि कोई भी
फ़रक़ नहीं, 23 सबने गुनाह किया, सब अल्लाह के उस जलाल से महरूम हैं जिसका वह तक़ाज़ा करता है, 24 और
सब मुफ़्त में अल्लाह के फ़ज़ल ही से रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं, उस फ़िदिये के वसीले से जो मसीह ईसा ने दिया।
25 क्योंकि अल्लाह ने ईसा को उसके ख़ून के बाइस कफ़्फ़ारा का वसीला बनाकर पेश किया, ऐसा कफ़्फ़ारा जिससे
ईमान लानेवालों को गुनाहों की मुआफ़ी मिलती है। यों अल्लाह ने अपनी रास्ती ज़ाहिर की, पहले माज़ी में जब वह
अपने सब्रो-तहम्मुल में गुनाहों की सज़ा देने से बाज़ रहा 26 और अब मौजूदा ज़माने में भी। इससे वह ज़ाहिर करता है
कि वह रास्त है और हर एक को रास्तबाज़ ठहराता है जो ईसा पर ईमान लाया है।
27 अब हमारा फ़ख़र कहाँ रहा? उसे तो ख़त्म कर दिया गया है। किस शरीअत से? क्या आमाल की शरीअत
से? नहीं, बल्कि ईमान की शरीअत से। 28 क्योंकि हम कहते हैं कि इनसान को ईमान से रास्तबाज़ ठहराया जाता है,
न कि आमाल से। 29 क्या अल्लाह सिर्फ़ यहूदियों का ख़ुदा है? ग़ैरयहूदियों का नहीं? हाँ, ग़ैरयहूदियों का भी है।
30 क्योंकि अल्लाह एक ही है जो मख़तून और नामख़तून दोनों को ईमान ही से रास्तबाज़ ठहराएगा। 31 फिर क्या हम
शरीअत को ईमान से मनसूख़ करते हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि हम शरीअत को क़ायम रखते हैं।

4

इब्राहीम ईमान से रास्तबाज़ ठहरा

1 इब्राहीम जिस्मानी लिहाज़ से हमारा बाप था। तो रास्तबाज़ ठहरने के सिलसिले में उसका क्या तजरबा था? 2 हम
कह सकते हैं कि अगर वह शरीअत पर अमल करने से रास्तबाज़ ठहरता तो वह अपने आप पर फ़ख़र कर सकता था।
लेकिन अल्लाह के नज़दीक उसके पास अपने आप पर फ़ख़र करने का कोई सबब न था। 3 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस
में लिखा है, "इब्राहीम ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।" 4 जब लोग
काम करते हैं तो उनकी मज़दूरी कोई ख़ास मेहरबानी क़रार नहीं दी जाती, बल्कि यह तो उनका हक़ बनता है। 5 लेकिन
जब लोग काम नहीं करते बल्कि अल्लाह पर ईमान रखते हैं जो बेदीनों को रास्तबाज़ क़रार देता है तो उनका कोई हक़
नहीं बनता। वह उनके ईमान ही की बिना पर रास्तबाज़ क़रार दिए जाते हैं। 6 दाऊद यही बात बयान करता है जब वह
उस शख़्स को मुबारक कहता है जिसे अल्लाह बग़ैर आमाल के रास्तबाज़ ठहराता है,
7 "मुबारक हैं वह जिनके जरायम मुआफ़ किए गए,
जिनके गुनाह ढाँपे गए हैं।
8 मुबारक है वह जिसका गुनाह रब हिसाब में नहीं लाएगा।"
9 क्या यह मुबारकबादी सिर्फ़ मख़तूनों के लिए है या नामख़तूनों के लिए भी? हम तो बयान कर चुके हैं कि इब्राहीम
ईमान की बिना पर रास्तबाज़ ठहरा। 10 उसे किस हालत में रास्तबाज़ ठहराया गया? ख़तना कराने के बाद या पहले?
ख़तने के बाद नहीं बल्कि पहले। 11 और ख़तना का जो निशान उसे मिला वह उस की रास्तबाज़ी की मुहर थी, वह
रास्तबाज़ी जो उसे ख़तना कराने से पेशतर मिली, उस वक़्त जब वह ईमान लाया। यों वह उन सबका बाप है जो बग़ैर
ख़तना कराए ईमान लाए हैं और इस बिना पर रास्तबाज़ ठहरते हैं। 12 साथ ही वह ख़तना करानेवालों का बाप भी है,
लेकिन उनका जिनका न सिर्फ़ ख़तना हुआ है बल्कि जो हमारे बाप इब्राहीम के उस ईमान के नक़्शे-क़दम पर चलते हैं
जो वह ख़तना कराने से पेशतर रखता था।

अल्लाह का वादा ईमान से हासिल होता है

13 जब अल्लाह ने इब्राहीम और उस की औलाद से वादा किया कि वह दुनिया का वारिस होगा तो उसने यह इसलिए
नहीं किया कि इब्राहीम ने शरीअत की पैरवी की बल्कि इसलिए कि वह ईमान लाया और यों रास्तबाज़ ठहराया गया।
14 क्योंकि अगर वह वारिस हैं जो शरीअत के पैरोकार हैं तो फिर ईमान बेअसर ठहरा और अल्लाह का वादा मिट
गया। 15 शरीअत अल्लाह का ग़ज़ब ही पैदा करती है। लेकिन जहाँ कोई शरीअत नहीं वहाँ उस की ख़िलाफ़वरज़ी
भी नहीं।
16 चुनाँचे यह मीरास ईमान से मिलती है ताकि इसकी बुनियाद अल्लाह का फ़ज़ल हो और इसका वादा इब्राहीम
की तमाम नसल के लिए हो, न सिर्फ़ शरीअत के पैरोकारों के लिए बल्कि उनके लिए भी जो इब्राहीम का-सा ईमान
रखते हैं। यही हम सबका बाप है। 17 यों अल्लाह कलामे-मुक़द्दस में उससे वादा करता है, "मैंने तुझे बहुत क़ौमों का
बाप बना दिया है।" अल्लाह ही के नज़दीक इब्राहीम हम सबका बाप है। क्योंकि उसका ईमान उस ख़ुदा पर था जो
मुरदों को ज़िंदा करता और जिसके हुक्म पर वह कुछ पैदा होता है जो पहले नहीं था। 18 उम्मीद की कोई किरण

दिखाई नहीं देती थी, फिर भी इब्राहीम उम्मीद के साथ ईमान रखता रहा कि मैं ज़रूर बहुत क़ौमों का बाप बनूँगा। और
आख़िरकार ऐसा ही हुआ, जैसा कलामे-मुक़द्दस में वादा किया गया था कि “तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।”
19 और इब्राहीम का ईमान कमज़ोर न पड़ा, हालाँकि उसे मालूम था कि मैं तक़रीबन सौ साल का हूँ और मेरा और सारा
के बदन गोया मुरदा हैं, अब बच्चे पैदा करने की उम्र सारा के लिए गुज़र चुकी है। 20 तो भी इब्राहीम का ईमान ख़त्म
न हुआ, न उसने अल्लाह के वादे पर शक किया बल्कि ईमान में वह मज़ीद मज़बूत हुआ और अल्लाह को जलाल
देता रहा। 21 उसे पुख़्ता यक़ीन था कि अल्लाह अपने वादे को पूरा करने की क़ुदरत रखता है। 22 उसके इस ईमान
की वजह से अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया। 23 कलामे-मुक़द्दस में यह बात कि अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार
दिया न सिर्फ़ उस की ख़ातिर लिखी गई 24 बल्कि हमारी ख़ातिर भी। क्योंकि अल्लाह हमें भी रास्तबाज़ क़रार देगा
अगर हम उस पर ईमान रखें जिसने हमारे ख़ुदावंद ईसा को मुरदों में से ज़िंदा किया। 25 हमारी ही ख़ताओं की वजह से
उसे मौत के हवाले किया गया, और हमें ही रास्तबाज़ क़रार देने के लिए उसे ज़िंदा किया गया।

5

रास्तबाज़ी का अंजाम

1 अब चूँकि हमें ईमान से रास्तबाज़ क़रार दिया गया है इसलिए अल्लाह के साथ हमारी सुलह है। इस सुलह का
वसीला हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह है। 2 हमारे ईमान लाने पर उसने हमें फ़ज़ल के उस मक़ाम तक पहुँचाया जहाँ हम
आज क़ायम हैं। और यों हम इस उम्मीद पर फ़ख़र करते हैं कि हम अल्लाह के जलाल में शरीक होंगे। 3 न सिर्फ़
यह बल्कि हम उस वक़्त भी फ़ख़र करते हैं जब हम मुसीबतों में फँसे होते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि मुसीबत से
साबितक़दमी पैदा होती है, 4 साबितक़दमी से पुख़्तगी और पुख़्तगी से उम्मीद। 5 और उम्मीद हमें शरमिंदा होने नहीं
देती, क्योंकि अल्लाह ने हमें रूहुल-क़ुदुस देकर उसके वसीले से हमारे दिलों में अपनी मुहब्बत उंडेली है।

6 क्योंकि हम अभी कमज़ोर ही थे तो मसीह ने हम बेदीनों की ख़ातिर अपनी जान दे दी। 7 मुश्किल से ही कोई
किसी रास्तबाज़ की ख़ातिर अपनी जान देगा। हाँ, मुमकिन है कि कोई किसी नेकोकार के लिए अपनी जान देने की
जुर्रत करे। 8 लेकिन अल्लाह ने हमसे अपनी मुहब्बत का इज़हार यों किया कि मसीह ने उस वक़्त हमारी ख़ातिर अपनी
जान दी जब हम गुनाहगार ही थे। 9 हमें मसीह के ख़ून से रास्तबाज़ ठहराया गया है। तो यह बात कितनी यक़ीनी है कि
हम उसके वसीले से अल्लाह के ग़ज़ब से बचेंगे। 10 हम अभी अल्लाह के दुश्मन ही थे जब उसके फ़रज़ंद की मौत
के वसीले से हमारी उसके साथ सुलह हो गई। तो फिर यह बात कितनी यक़ीनी है कि हम उस की ज़िंदगी के वसीले से
नजात भी पाएँगे। 11 न सिर्फ़ यह बल्कि अब हम अल्लाह पर फ़ख़र करते हैं और यह हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के
वसीले से है, जिसने हमारी सुलह कराई है।

आदम और मसीह

12 जब आदम ने गुनाह किया तो उस एक ही शख़्स से गुनाह दुनिया में आया। इस गुनाह के साथ साथ मौत भी
आकर सब आदमियों में फैल गई, क्योंकि सबने गुनाह किया। 13 शरीअत के इनकिशाफ़ से पहले गुनाह तो दुनिया में
था, लेकिन जहाँ शरीअत नहीं होती वहाँ गुनाह का हिसाब नहीं किया जाता। 14 ताहम आदम से लेकर मूसा तक मौत
की हुकूमत जारी रही, उन पर भी जिन्होंने आदम की-सी हुक्मअदूली न की।

अब आदम आनेवाले ईसा मसीह की तरफ़ इशारा था। 15 लेकिन इन दोनों में बड़ा फ़रक़ है। जो नेमत अल्लाह
मुफ़्त में देता है वह आदम के गुनाह से मुताबिक़त नहीं रखती। क्योंकि इस एक शख़्स आदम की ख़िलाफ़वरज़ी से
बहुत-से लोग मौत की ज़द में आ गए, लेकिन अल्लाह का फ़ज़ल कहीं ज़्यादा मुअस्सिर है, वह मुफ़्त नेमत जो बहुतों
को उस एक शख़्स ईसा मसीह में मिली है। 16 हाँ, अल्लाह की इस नेमत और आदम के गुनाह में बहुत फ़रक़ है। उस
एक शख़्स आदम के गुनाह के नतीजे में हमें तो मुजरिम क़रार दिया गया, लेकिन अल्लाह की मुफ़्त नेमत का असर
यह है कि हमें रास्तबाज़ क़रार दिया जाता है, गो हमसे बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं। 17 इस एक शख़्स आदम के गुनाह
के नतीजे में मौत सब पर हुकूमत करने लगी। लेकिन इस एक शख़्स ईसा मसीह का काम कितना ज़्यादा मुअस्सिर था।
जितने भी अल्लाह का वाफ़िर फ़ज़ल और रास्तबाज़ी की नेमत पाते हैं वह मसीह के वसीले से अबदी ज़िंदगी में हुकूमत
करेंगे।

18 चुनाँचे जिस तरह एक ही शख़्स के गुनाह के बाइस सब लोग मुजरिम ठहरे उसी तरह एक ही शख़्स के रास्त
अमल से वह दरवाज़ा खुल गया जिसमें दाख़िल होकर सब लोग रास्तबाज़ ठहर सकते और ज़िंदगी पा सकते हैं। 19 जिस
तरह एक ही शख़्स की नाफ़रमानी से बहुत-से लोग गुनाहगार बन गए, उसी तरह एक ही शख़्स की फ़रमाँबरदारी से
बहुत-से लोग रास्तबाज़ बन जाएंगे।

[20] शरीअत इसलिए दरमियान में आ गई कि ख़िलाफ़वरज़ी बढ़ जाए। लेकिन जहाँ गुनाह ज़्यादा हुआ वहाँ अल्लाह
का फ़ज़ल इससे भी ज़्यादा हो गया। [21] चुनाँचे जिस तरह गुनाह मौत की सूरत में हुकूमत करता था उसी तरह अब
अल्लाह का फ़ज़ल हमें रास्तबाज़ ठहराकर हुकूमत करता है। यों हमें अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह की बदौलत अबदी
ज़िंदगी हासिल होती है।

6

मसीह में नई ज़िंदगी

[1] क्या इसका मतलब यह है कि हम गुनाह करते रहें ताकि अल्लाह के फ़ज़ल में इज़ाफ़ा हो? [2] हरगिज़ नहीं! हम
तो मरकर गुनाह से लाताल्लुक़ हो गए हैं। तो फिर हम किस तरह गुनाह को अपने आप पर हुकूमत करने दे सकते हैं?
[3] या क्या आपको मालूम नहीं कि हम सब जिन्हें बपतिस्मा दिया गया है इससे मसीह ईसा की मौत में शामिल हो गए
हैं? [4] क्योंकि बपतिस्मे से हमें दफ़नाया गया और उस की मौत में शामिल किया गया ताकि हम मसीह की तरह नई
ज़िंदगी गुज़ारें, जिसे बाप की जलाली क़ुदरत ने मुरदों में से ज़िंदा किया।

[5] चूँकि इस तरह हम उस की मौत में उसके साथ पैवस्त हो गए हैं इसलिए हम उसके जी उठने में भी उसके साथ
पैवस्त होंगे। [6] क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना इनसान मसीह के साथ मसलूब हो गया ताकि गुनाह के क़ब्ज़े
में यह जिस्म नेस्त हो जाए और यों हम गुनाह के ग़ुलाम न रहें। [7] क्योंकि जो मर गया वह गुनाह से आज़ाद हो गया
है। [8] और हमारा ईमान है कि चूँकि हम मसीह के साथ मर गए हैं इसलिए हम उसके साथ ज़िंदा भी होंगे, [9] क्योंकि
हम जानते हैं कि मसीह मुरदों में से जी उठा है और अब कभी नहीं मरेगा। अब मौत का उस पर कोई इख़्तियार नहीं।
[10] मरते वक़्त वह हमेशा के लिए गुनाह की हुकूमत से निकल गया, और अब जब वह दुबारा ज़िंदा है तो उस की ज़िंदगी
अल्लाह के लिए मख़सूस है। [11] आप भी अपने आपको ऐसा समझें। आप भी मरकर गुनाह की हुकूमत से निकल गए
हैं और अब आपकी मसीह में ज़िंदगी अल्लाह के लिए मख़सूस है।

[12] चुनाँचे गुनाह आपके फ़ानी बदन में हुकूमत न करे। ध्यान दें कि आप उस की बुरी ख़ाहिशात के ताबे न हो जाएँ।
[13] अपने बदन के किसी भी अज़ु को गुनाह की ख़िदमत के लिए पेश न करें, न उसे नारास्ती का हथियार बनने दें।
इसके बजाए अपने आपको अल्लाह की ख़िदमत के लिए पेश करें। क्योंकि पहले आप मुरदा थे, लेकिन अब आप
ज़िंदा हो गए हैं। चुनाँचे अपने तमाम आज़ा को अल्लाह की ख़िदमत के लिए पेश करें और उन्हें रास्ती के हथियार
बनने दें। [14] आइंदा गुनाह आप पर हुकूमत नहीं करेगा, क्योंकि आप अपनी ज़िंदगी शरीअत के तहत नहीं गुज़ारते
बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल के तहत।

रास्तबाज़ी के ग़ुलाम

[15] अब सवाल यह है, चूँकि हम शरीअत के तहत नहीं बल्कि फ़ज़ल के तहत हैं तो क्या इसका मतलब यह है
कि हमें गुनाह करने के लिए खुला छोड़ दिया गया है? हरगिज़ नहीं! [16] क्या आपको मालूम नहीं कि जब आप
अपने आपको किसी के ताबे करके उसके ग़ुलाम बन जाते हैं तो आप उस मालिक के ग़ुलाम हैं जिसके ताबे आप हैं?
या तो गुनाह आपका मालिक बनकर आपको मौत तक ले जाएगा, या फ़रमाँबरदारी आपकी मालिकन बनकर आपको
रास्तबाज़ी तक ले जाएगी। [17] दर-हक़ीक़त आप पहले गुनाह के ग़ुलाम थे, लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि अब आप पूरे
दिल से उसी तालीम के ताबे हो गए हैं जो आपके सुपुर्द की गई है। [18] अब आपको गुनाह से आज़ाद कर दिया गया
है, रास्तबाज़ी ही आपकी मालिकन बन गई है। [19] (आपकी फ़ितरती कमज़ोरी की वजह से मैं ग़ुलामी की यह मिसाल
दे रहा हूँ ताकि आप मेरी बात समझ पाएँ।) पहले आपने अपने आज़ा को नजासत और बेदीनी की ग़ुलामी में दे रखा
था जिसके नतीजे में आपकी बेदीनी बढ़ती गई। लेकिन अब आप अपने आज़ा को रास्तबाज़ी की ग़ुलामी में दे दें ताकि
आप मुक़द्दस बन जाएँ।

[20] जब गुनाह आपका मालिक था तो आप रास्तबाज़ी से आज़ाद थे। [21] और इसका नतीजा क्या था? जो कुछ
आपने उस वक़्त किया उससे आपको आज शर्म आती है और उसका अंजाम मौत है। [22] लेकिन अब आप गुनाह
की ग़ुलामी से आज़ाद होकर अल्लाह के ग़ुलाम बन गए हैं, जिसके नतीजे में आप मख़सूसो-मुक़द्दस बन जाते हैं और
जिसका अंजाम अबदी ज़िंदगी है। [23] क्योंकि गुनाह का अज्र मौत है जबकि अल्लाह हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा के
वसीले से हमें अबदी ज़िंदगी की मुफ़्त नेमत अता करता है।

7

शादी की मिसाल

1 भाइयो, आप तो शरीअत से वाक़िफ़ हैं। तो क्या आप नहीं जानते कि शरीअत उस वक़्त तक इनसान पर इख़्तियार
रखती है जब तक वह ज़िंदा है? 2 शादी की मिसाल लें। जब किसी औरत की शादी होती है तो शरीअत उसका शौहर
के साथ बंधन उस वक़्त तक क़ायम रखती है जब तक शौहर ज़िंदा है। अगर शौहर मर जाए तो फिर वह इस बंधन से
आज़ाद हो गई। 3 चुनाँचे अगर वह अपने ख़ाविंद के जीते-जी किसी और मर्द की बीवी बन जाए तो उसे ज़िनाकार
क़रार दिया जाता है। लेकिन अगर उसका शौहर मर जाए तो वह शरीअत से आज़ाद हुई। अब वह किसी दूसरे मर्द की
बीवी बने तो ज़िनाकार नहीं ठहरती। 4 मेरे भाइयो, यह बात आप पर भी सादिक़ आती है। जब आप मसीह के बदन का
हिस्सा बन गए तो आप मरकर शरीअत के इख़्तियार से आज़ाद हो गए। अब आप उसके साथ पैवस्त हो गए हैं जिसे
मुरदों में से ज़िंदा किया गया ताकि हम अल्लाह की ख़िदमत में फल लाएँ। 5 क्योंकि जब हम अपनी पुरानी फ़ितरत
के तहत ज़िंदगी गुज़ारते थे तो शरीअत हमारी गुनाहआलूदा रग़बतों को उकसाती थी। फिर यही रग़बतें हमारे आज़ा पर
असरअंदाज़ होती थीं और नतीजे में हम ऐसा फल लाते थे जिसका अंजाम मौत है। 6 लेकिन अब हम मरकर शरीअत
के बंधन से आज़ाद हो गए हैं। अब हम शरीअत की पुरानी ज़िंदगी के तहत ख़िदमत नहीं करते बल्कि रूहुल-क़ुद्स
की नई ज़िंदगी के तहत।

शरीअत और गुनाह

7 क्या इसका मतलब यह है कि शरीअत ख़ुद गुनाह है? हरगिज़ नहीं! बात तो यह है कि अगर शरीअत मुझ पर
मेरे गुनाह ज़ाहिर न करती तो मुझे इनका कुछ पता न चलता। मसलन अगर शरीअत न बताती, "लालच न करना" तो
मुझे दर-हक़ीक़त मालूम न होता कि लालच क्या है। 8 लेकिन गुनाह ने इस हुक्म से फ़ायदा उठाकर मुझमें हर तरह का
लालच पैदा कर दिया। इसके बरअक्स जहाँ शरीअत नहीं होती वहाँ गुनाह मुरदा है और ऐसा काम नहीं कर पाता।
9 एक वक़्त था जब मैं शरीअत के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारता था। लेकिन ज्योंही हुक्म मेरे सामने आया तो गुनाह में जान आ
गई 10 और मैं मर गया। इस तरह मालूम हुआ कि जिस हुक्म का मक़सद मेरी ज़िंदगी को क़ायम रखना था वही मेरी
मौत का बाइस बन गया। 11 क्योंकि गुनाह ने हुक्म से फ़ायदा उठाकर मुझे बहकाया और हुक्म से ही मुझे मार डाला।
12 लेकिन शरीअत ख़ुद मुक़द्दस है और इसके अहकाम मुक़द्दस, रास्त और अच्छे हैं। 13 क्या इसका मतलब यह है
कि जो अच्छा है वही मेरे लिए मौत का बाइस बन गया? हरगिज़ नहीं! गुनाह ही ने यह किया। इस अच्छी चीज़ को
इस्तेमाल करके उसने मेरे लिए मौत पैदा कर दी ताकि गुनाह ज़ाहिर हो जाए। यों हुक्म के ज़रीए गुनाह की संजीदगी
हद से ज़्यादा बढ़ जाती है।

हमारे अंदर की कश-म-कश

14 हम जानते हैं कि शरीअत रूहानी है। लेकिन मेरी फ़ितरत इनसानी है, मुझे गुनाह की ग़ुलामी में बेचा गया है।
15 दर-हक़ीक़त मैं नहीं समझता कि क्या करता हूँ। क्योंकि मैं वह काम नहीं करता जो करना चाहता हूँ बल्कि वह
जिससे मुझे नफ़रत है। 16 लेकिन अगर मैं वह करता हूँ जो नहीं करना चाहता तो ज़ाहिर है कि मैं मुत्तफ़िक़ हूँ कि
शरीअत अच्छी है। 17 और अगर ऐसा है तो फिर मैं यह काम ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि गुनाह जो मेरे अंदर सुकूनत
करता है। 18 मुझे मालूम है कि मेरे अंदर यानी मेरी पुरानी फ़ितरत में कोई अच्छी चीज़ नहीं बसती। अगरचे मुझमें नेक
काम करने का इरादा तो मौजूद है लेकिन मैं उसे अमली जामा नहीं पहना सकता। 19 जो नेक काम मैं करना चाहता हूँ
वह नहीं करता बल्कि वह बुरा काम करता हूँ जो करना नहीं चाहता। 20 अब अगर मैं वह काम करता हूँ जो मैं नहीं
करना चाहता तो इसका मतलब है कि मैं ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि वह गुनाह जो मेरे अंदर बसता है।
21 चुनाँचे मुझे एक और तरह की शरीअत काम करती हुई नज़र आती है, और वह यह है कि जब मैं नेक काम
करने का इरादा रखता हूँ तो बुराई आ मौजूद होती है। 22 हाँ, अपने बातिन में तो मैं ख़ुशी से अल्लाह की शरीअत को
मानता हूँ। 23 लेकिन मुझे अपने आज़ा में एक और तरह की शरीअत दिखाई देती है, ऐसी शरीअत जो मेरी समझ की
शरीअत के ख़िलाफ़ लड़कर मुझे गुनाह की शरीअत का क़ैदी बना देती है, उस शरीअत का जो मेरे आज़ा में मौजूद है।
24 हाय, मेरी हालत कितनी बुरी है! मुझे इस बदन से जिसका अंजाम मौत है कौन छुड़ाएगा? 25 ख़ुदा का शुक्र है जो
हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से यह काम करता है।

ग़रज़ यही मेरी हालत है, मसीह के बग़ैर मैं अल्लाह की शरीअत की ख़िदमत सिर्फ़ अपनी समझ से कर सकता हूँ
जबकि मेरी पुरानी फ़ितरत गुनाह की शरीअत की ग़ुलाम रहकर उसी की ख़िदमत करती है।

8

रूह में ज़िंदगी

1 अब जो मसीह ईसा में हैं उन्हें मुजरिम नहीं ठहराया जाता। 2 क्योंकि रूह की शरीअत ने जो हमें मसीह में ज़िंदगी
अता करती है तुझे गुनाह और मौत की शरीअत से आज़ाद कर दिया है। 3 मूसवी शरीअत हमारी पुरानी फ़ितरत की
कमज़ोर हालत की वजह से हमें न बचा सकी। इसलिए अल्लाह ने वह कुछ किया जो शरीअत के बस में न था। उसने
अपना फ़रज़ंद भेज दिया ताकि वह गुनाहगार का-सा जिस्म इख़्तियार करके हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा दे। इस तरह
अल्लाह ने पुरानी फ़ितरत में मौजूद गुनाह को मुजरिम ठहराया 4 ताकि हममें शरीअत का तक़ाज़ा पूरा हो जाए, हम जो
पुरानी फ़ितरत के मुताबिक़ नहीं बल्कि रूह के मुताबिक़ चलते हैं। 5 जो पुरानी फ़ितरत के इख़्तियार में हैं वह पुरानी
सोच रखते हैं जबकि जो रूह के इख़्तियार में हैं वह रूहानी सोच रखते हैं। 6 पुरानी फ़ितरत की सोच का अंजाम मौत
है जबकि रूह की सोच ज़िंदगी और सलामती पैदा करती है। 7 पुरानी फ़ितरत की सोच अल्लाह से दुश्मनी रखती है।
यह अपने आपको अल्लाह की शरीअत के ताबे नहीं रखती, न ही ऐसा कर सकती है। 8 इसलिए वह लोग अल्लाह
को पसंद नहीं आ सकते जो पुरानी फ़ितरत के इख़्तियार में हैं।

9 लेकिन आप पुरानी फ़ितरत के इख़्तियार में नहीं बल्कि रूह के इख़्तियार में हैं। शर्त यह है कि रूहुल-क़ुद्स
आपमें बसा हुआ हो। अगर किसी में मसीह का रूह नहीं तो वह मसीह का नहीं। 10 लेकिन अगर मसीह आपमें है तो
फिर आपका बदन गुनाह की वजह से मुरदा है जबकि रूहुल-क़ुद्स आपको रास्तबाज़ ठहराने की वजह से आपके लिए
ज़िंदगी का बाइस है। 11 उसका रूह आपमें बसता है जिसने ईसा को मुरदों में से ज़िंदा किया। और चूँकि रूहुल-क़ुद्स
आपमें बसता है इसलिए अल्लाह इसके ज़रीए आपके फ़ानी बदनों को भी मसीह की तरह ज़िंदा करेगा।

12 चुनाँचे मेरे भाइयो, हमारी पुरानी फ़ितरत का कोई हक़ न रहा कि हमें अपने मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने पर मजबूर
करे। 13 क्योंकि अगर आप अपनी पुरानी फ़ितरत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें तो आप हलाक हो जाएंगे। लेकिन अगर
आप रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत से अपनी पुरानी फ़ितरत के ग़लत कामों को नेस्तो-नाबूद करें तो फिर आप ज़िंदा रहेंगे।
14 जिसकी भी राहनुमाई रूहुल-क़ुद्स करता है वह अल्लाह का फ़रज़ंद है। 15 क्योंकि अल्लाह ने जो रूह आपको
दिया है उसने आपको ग़ुलाम बनाकर ख़ौफ़ज़दा हालत में नहीं रखा बल्कि आपको अल्लाह के फ़रज़ंद बना दिया है,
और उसी के ज़रीए हम पुकारकर अल्लाह को "अब्बा" यानी "ऐ बाप" कह सकते हैं। 16 रूहुल-क़ुद्स ख़ुद हमारी
रूह के साथ मिलकर गवाही देता है कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं। 17 और चूँकि हम उसके फ़रज़ंद हैं इसलिए हम
वारिस हैं, अल्लाह के वारिस और मसीह के हममीरास। क्योंकि अगर हम मसीह के दुख में शरीक हों तो उसके
जलाल में भी शरीक होंगे।

आइंदा का जलाल

18 मेरे ख़याल में हमारा मौजूदा दुख उस आनेवाले जलाल की निसबत कुछ भी नहीं जो हम पर ज़ाहिर होगा।
19 हाँ, तमाम कायनात यह देखने के लिए तड़पती है कि अल्लाह के फ़रज़ंद ज़ाहिर हो जाएँ, 20 क्योंकि कायनात
अल्लाह की लानत के तहत आकर फ़ानी हो गई है। यह उस की अपनी नहीं बल्कि अल्लाह की मरज़ी थी जिसने
उस पर यह लानत भेजी। तो भी यह उम्मीद दिलाई गई 21 कि एक दिन कायनात को ख़ुद उस की फ़ानी हालत की
ग़ुलामी से छुड़ाया जाएगा। उस वक़्त वह अल्लाह के फ़रज़ंदों की जलाली आज़ादी में शरीक हो जाएगी। 22 क्योंकि
हम जानते हैं कि आज तक तमाम कायनात कराहती और दर्दे-ज़ह में तड़पती रहती है। 23 न सिर्फ़ कायनात बल्कि हम
ख़ुद भी अंदर ही अंदर कराहते हैं, गो हमें आनेवाले जलाल का पहला फल रूहुल-क़ुद्स की सूरत में मिल चुका है। हम
कराहते कराहते शिद्दत से इस इंतज़ार में हैं कि यह बात ज़ाहिर हो जाए कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं और हमारे बदनों
को नजात मिले। 24 क्योंकि नजात पाते वक़्त हमें यह उम्मीद दिलाई गई। लेकिन अगर वह कुछ नज़र आ चुका होता
जिसकी उम्मीद हम रखते तो यह दर-हक़ीक़त उम्मीद न होती। कौन उस की उम्मीद रखे जो उसे नज़र आ चुका है?
25 लेकिन चूँकि हम उस की उम्मीद रखते हैं जो अभी नज़र नहीं आया तो लाज़िम है कि हम सब्र से उसका इंतज़ार
करें।

26 इसी तरह रूहुल-क़ुद्स भी हमारी कमज़ोर हालत में हमारी मदद करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि किस
तरह मुनासिब दुआ माँगें। लेकिन रूहुल-क़ुद्स ख़ुद नाक़ाबिले-बयान आहें भरते हुए हमारी शफ़ाअत करता है। 27 और
ख़ुदा बाप जो तमाम दिलों की तहक़ीक़ करता है रूहुल-क़ुद्स की सोच को जानता है, क्योंकि पाक रूह अल्लाह की
मरज़ी के मुताबिक़ मुक़द्दसीन की शफ़ाअत करता है।

28 और हम जानते हैं कि जो अल्लाह से मुहब्बत रखते हैं उनके लिए सब कुछ मिलकर भलाई का बाइस बनता है,
उनके लिए जो उसके इरादे के मुताबिक़ बुलाए गए हैं। 29 क्योंकि अल्लाह ने पहले से अपने लोगों को चुन लिया,
उसने पहले से उन्हें इसके लिए मुक़र्रर किया कि वह उसके फ़रज़ंद के हमशक्ल बन जाएँ और यों मसीह बहुत-से

भाइयों में पहलौठा हो। 30 लेकिन जिन्हें उसने पहले से मुक़र्रर किया उन्हें उसने बुलाया भी, जिन्हें उसने बुलाया उन्हें
उसने रास्तबाज़ भी ठहराया और जिन्हें उसने रास्तबाज़ ठहराया उन्हें उसने जलाल भी बख़्शा।

अल्लाह की मसीह में मुहब्बत

31 इन तमाम बातों के जवाब में हम क्या कहें? अगर अल्लाह हमारे हक़ में है तो कौन हमारे ख़िलाफ़ हो सकता
है? 32 उसने अपने फ़रज़ंद को भी दरेग़ न किया बल्कि उसे हम सबके लिए दुश्मन के हवाले कर दिया। जिसने हमें
अपने फ़रज़ंद को दे दिया क्या वह हमें उसके साथ सब कुछ मुफ़्त नहीं देगा? 33 अब कौन अल्लाह के चुने हुए लोगों
पर इलज़ाम लगाएगा जब अल्लाह ख़ुद उन्हें रास्तबाज़ क़रार देता है? 34 कौन हमें मुजरिम ठहराएगा जब मसीह ईसा
ने हमारे लिए अपनी जान दी? बल्कि हमारी ख़ातिर इससे भी ज़्यादा हुआ। उसे ज़िंदा किया गया और वह अल्लाह
के दहने हाथ बैठ गया, जहाँ वह हमारी शफ़ाअत करता है। 35 ग़रज़ कौन हमें मसीह की मुहब्बत से जुदा करेगा?
क्या कोई मुसीबत, तंगी, ईज़ारसानी, काल, नंगापन, ख़तरा या तलवार? 36 जैसे कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "तेरी
ख़ातिर हमें दिन-भर मौत का सामना करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होनेवाली भेड़ों के बराबर समझते हैं।" 37 कोई
बात नहीं, क्योंकि मसीह हमारे साथ है और हमसे मुहब्बत रखता है। उसके वसीले से हम इन सब ख़तरों के रूबरू
ज़बरदस्त फ़तह पाते हैं। 38 क्योंकि मुझे यक़ीन है कि हमें उस की मुहब्बत से कोई चीज़ जुदा नहीं कर सकती : न
मौत और न ज़िंदगी, न फ़रिश्ते और न हुक्मरान, न हाल और न मुस्तक़बिल, न ताक़तें, 39 न नशेब और न फ़राज़, न
कोई और मख़लूक़ हमें अल्लाह की उस मुहब्बत से जुदा कर सकेगी जो हमें हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा में हासिल है।

9

अल्लाह और उस की क़ौम

1 मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूट नहीं बोलता, और मेरा ज़मीर भी रूहुल-क़ुद्स में इसकी गवाही देता है 2 कि मैं दिल
में अपने यहूदी हमवतनों के लिए शदीद ग़म और मुसलसल दर्द महसूस करता हूँ। 3 काश मेरे भाई और ख़ूनी रिश्तेदार
नजात पाएँ! इसके लिए मैं ख़ुद मलऊन और मसीह से जुदा होने के लिए भी तैयार हूँ। 4 अल्लाह ने उन्हीं को जो
इसराईली हैं अपने फ़रज़ंद बनने के लिए मुक़र्रर किया था। उन्हीं पर उसने अपना जलाल ज़ाहिर किया, उन्हीं के साथ
अपने अहद बाँधे और उन्हीं को शरीअत अता की। वही हक़ीक़ी इबादत और अल्लाह के वादों के हक़दार हैं, 5 वही
इब्राहीम और याक़ूब की औलाद हैं और उन्हीं में से जिस्मानी लिहाज़ से मसीह आया। अल्लाह की तमजीदो-तारीफ़
अबद तक हो जो सब पर हुकूमत करता है! आमीन।

6 कहने का मतलब यह नहीं कि अल्लाह अपना वादा पूरा न कर सका। बात यह नहीं है बल्कि यह कि वह सब
हक़ीक़ी इसराईली नहीं हैं जो इसराईली क़ौम से हैं। 7 और सब इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद नहीं हैं जो उस की नसल
से हैं। क्योंकि अल्लाह ने कलामे-मुक़द्दस में इब्राहीम से फ़रमाया, "तेरी नसल इसहाक़ ही से क़ायम रहेगी।" 8 चुनाँचे
लाज़िम नहीं कि इब्राहीम की तमाम फ़ितरती औलाद अल्लाह के फ़रज़ंद हों बल्कि सिर्फ़ वही इब्राहीम की हक़ीक़ी
औलाद समझे जाते हैं जो अल्लाह के वादे के मुताबिक़ उसके फ़रज़ंद बन गए हैं। 9 और वादा यह था, "मुक़र्ररा वक़्त
पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा होगा।"

10 लेकिन न सिर्फ़ सारा के साथ ऐसा हुआ बल्कि इसहाक़ की बीवी रिबक़ा के साथ भी। एक ही मर्द यानी हमारे
बाप इसहाक़ से उसके जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए। 11 लेकिन बच्चे अभी पैदा नहीं हुए थे न उन्होंने कोई नेक या बुरा काम
किया था कि माँ को अल्लाह से एक पैग़ाम मिला। इस पैग़ाम से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह लोगों को अपने इरादे
के मुताबिक़ चुन लेता है। 12 और उसका यह चुनाव उनके नेक आमाल पर मबनी नहीं होता बल्कि उसके बुलावे
पर। पैग़ाम यह था, "बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।" 13 यह भी कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "याक़ूब मुझे प्यारा था,
जबकि एसौ से मैं मुतनफ़्फ़िर रहा।"

14 क्या इसका मतलब यह है कि अल्लाह बेइनसाफ़ है? हरगिज़ नहीं! 15 क्योंकि उसने मूसा से कहा, "मैं जिस
पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता हूँ और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता हूँ।" 16 चुनाँचे
सब कुछ अल्लाह के रहम पर ही मबनी है। इसमें इनसान की मरज़ी या कोशिश का कोई दख़ल नहीं। 17 यों अल्लाह
अपने कलाम में मिसर के बादशाह फ़िरौन से मुख़ातिब होकर फ़रमाता है, "मैंने तुझे इसलिए बरपा किया है कि तुझमें
अपनी क़ुदरत का इज़हार करूँ और यों तमाम दुनिया में मेरे नाम का प्रचार किया जाए।" 18 ग़रज़, यह अल्लाह ही
की मरज़ी है कि वह किस पर रहम करे और किस को सख़्त कर दे।

अल्लाह का ग़ज़ब और रहम

[19] शायद कोई कहे, "अगर यह बात है तो फिर अल्लाह किस तरह हम पर इलज़ाम लगा सकता है जब हमसे
ग़लतियाँ होती हैं? हम तो उस की मरज़ी का मुक़ाबला नहीं कर सकते।" [20] यह न कहें। आप इनसान होते हुए कौन
हैं कि अल्लाह के साथ बहस-मुबाहसा करें? क्या जिसको तश्कील दिया गया है वह तश्कील देनेवाले से कहता है,
"तूने मुझे इस तरह क्यों बना दिया?" [21] क्या कुम्हार का हक़ नहीं है कि गारे के एक ही लौंदे से मुख़्तलिफ़ क़िस्म
के बरतन बनाए, कुछ बाइज़्ज़त इस्तेमाल के लिए और कुछ ज़िल्लतआमेज़ इस्तेमाल के लिए? [22] यह बात अल्लाह
पर भी सादिक़ आती है। गो वह अपना ग़ज़ब नाज़िल करना और अपनी क़ुदरत ज़ाहिर करना चाहता था, लेकिन उसने
बड़े सब्रो-तहम्मुल से वह बरतन बरदाश्त किए जिन पर उसका ग़ज़ब आना है और जो हलाकत के लिए तैयार किए गए
हैं। [23] उसने यह इसलिए किया ताकि अपना जलाल कसरत से उन बरतनों पर ज़ाहिर करे जिन पर उसका फ़ज़्ल है
और जो पहले से जलाल पाने के लिए तैयार किए गए हैं। [24] और हम उनमें से हैं जिनको उसने चुन लिया है, न सिर्फ़
यहूदियों में से बल्कि ग़ैरयहूदियों में से भी। [25] यों वह ग़ैरयहूदियों के नाते से होसेअ की किताब में फ़रमाता है,

"मैं उसे 'मेरी क़ौम' कहूँगा
जो मेरी क़ौम न थी,
और उसे 'मेरी प्यारी' कहूँगा
जो मुझे प्यारी न थी।"
[26] और "जहाँ उन्हें बताया गया कि 'तुम मेरी क़ौम नहीं'
वहाँ वह 'ज़िंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद' कहलाएँगे।"

[27] और यसायाह नबी इसराईल के बारे में पुकारता है, "गो इसराईली साहिल पर की रेत जैसे बेशुमार क्यों न हों तो
भी सिर्फ़ एक बचे हुए हिस्से को नजात मिलेगी। [28] क्योंकि रब अपना फ़रमान मुकम्मल तौर पर और तेज़ी से दुनिया में
पूरा करेगा।" [29] यसायाह ने यह बात एक और पेशगोई में भी की, "अगर रब्बुल-अफ़वाज हमारी कुछ औलाद ज़िंदा
न छोड़ता तो हम सदूम की तरह मिट जाते, हमारा अमूरा जैसा सत्यानास हो जाता।"

इसराईल के लिए पौलुस की दुआ

[30] इससे हम क्या कहना चाहते हैं? यह कि गो ग़ैरयहूदी रास्तबाज़ी की तलाश में न थे तो भी उन्हें रास्तबाज़ी हासिल
हुई, ऐसी रास्तबाज़ी जो ईमान से पैदा हुई। [31] इसके बरअक्स इसराईलियों को यह हासिल न हुई, हालाँकि वह ऐसी
शरीअत की तलाश में रहे जो उन्हें रास्तबाज़ ठहराए। [32] इसकी क्या वजह थी? यह कि वह अपनी तमाम कोशिशों
में ईमान पर इनहिसार नहीं करते थे बल्कि अपने नेक आमाल पर। उन्होंने राह में पड़े पत्थर से ठोकर खाई। [33] यह
बात कलामे-मुक़द्दस में लिखी भी है,

"देखो मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ
जो ठोकर का बाइस बनेगा,
एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी।
लेकिन जो उस पर ईमान लाएगा
उसे शरमिंदा नहीं किया जाएगा।"

10

[1] भाइयो, मेरी दिली आरज़ू और मेरी अल्लाह से दुआ यह है कि इसराईलियों को नजात मिले। [2] मैं इसकी तसदीक़
कर सकता हूँ कि वह अल्लाह की ग़ैरत रखते हैं। लेकिन इस ग़ैरत के पीछे रूहानी समझ नहीं होती। [3] वह उस
रास्तबाज़ी से नावाक़िफ़ रहे हैं जो अल्लाह की तरफ़ से है। इसकी बजाए वह अपनी ज़ाती रास्तबाज़ी क़ायम करने
की कोशिश करते रहे हैं। यों उन्होंने अपने आपको अल्लाह की रास्तबाज़ी के ताबे नहीं किया। [4] क्योंकि मसीह
में शरीअत का मक़सद पूरा हो गया, हाँ वह अंजाम तक पहुँच गई है। चुनाँचे जो भी मसीह पर ईमान रखता है वही
रास्तबाज़ ठहरता है।

सबके लिए रास्तबाज़ी

[5] मूसा ने उस रास्तबाज़ी के बारे में लिखा जो शरीअत से हासिल होती है, "जो शख़्स यों करेगा वह जीता रहेगा।"
[6] लेकिन जो रास्तबाज़ी ईमान से हासिल होती है वह कहती है, "अपने दिल में न कहना कि 'कौन आसमान पर चढ़ेगा?'
(ताकि मसीह को नीचे ले आए)। [7] यह भी न कहना कि 'कौन पाताल में उतरेगा?' (ताकि मसीह को मुरदों में से वापस
ले आए)।" [8] तो फिर क्या करना चाहिए? ईमान की रास्तबाज़ी फ़रमाती है, "यह कलाम तेरे क़रीब बल्कि तेरे मुँह
और दिल में मौजूद है।" कलाम से मुराद ईमान का वह पैग़ाम है जो हम सुनाते हैं। [9] यानी यह कि अगर तू अपने मुँह से

इक़रार करे कि ईसा ख़ुदावंद है और दिल से ईमान लाए कि अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया तो तुझे नजात
मिलेगी। 10 क्योंकि जब हम दिल से ईमान लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है, और जब हम अपने मुँह से
इक़रार करते हैं तो हमें नजात मिलती है। 11 यों कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, "जो भी उस पर ईमान लाए उसे शरमिंदा
नहीं किया जाएगा।" 12 इसमें कोई फ़रक़ नहीं कि वह यहूदी हो या ग़ैरयहूदी। क्योंकि सबका एक ही ख़ुदावंद है, जो
फ़ैयाज़ी से हर एक को देता है जो उसे पुकारता है। 13 क्योंकि "जो भी ख़ुदावंद का नाम लेगा नजात पाएगा।"
14 लेकिन वह किस तरह उसे पुकार सकेंगे अगर वह उस पर कभी ईमान नहीं लाए? और वह किस तरह उस
पर ईमान ला सकते हैं अगर उन्होंने कभी उसके बारे में सुना नहीं? और वह किस तरह उसके बारे में सुन सकते हैं
अगर किसी ने उन्हें यह पैग़ाम सुनाया नहीं? 15 और सुनानेवाले किस तरह दूसरों के पास जाएंगे अगर उन्हें भेजा
न गया? इसलिए कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, "उनके क़दम कितने प्यारे हैं जो ख़ुशख़बरी सुनाते हैं।" 16 लेकिन
सबने अल्लाह की यह ख़ुशख़बरी क़बूल नहीं की। यों यसायाह नबी फ़रमाता है, "ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान
लाया?" 17 ग़रज़, ईमान पैग़ाम सुनने से पैदा होता है, यानी मसीह का कलाम सुनने से।
18 तो फिर सवाल यह है कि क्या इसराईलियों ने यह पैग़ाम नहीं सुना? उन्होंने इसे ज़रूर सुना। कलामे-मुक़द्दस में
लिखा है,
"उनकी आवाज़ निकलकर पूरी दुनिया में सुनाई दी,
उनके अलफ़ाज़ दुनिया की इंतहा तक पहुँच गए।"
19 तो क्या इसराईल को इस बात की समझ न आई? नहीं, उसे ज़रूर समझ आई। पहले मूसा इसका जवाब देता है,
"मैं ख़ुद ही तुम्हें ग़ैरत दिलाऊँगा,
एक ऐसी क़ौम के ज़रीए जो हक़ीक़त में क़ौम नहीं है।
एक नादान क़ौम के ज़रीए मैं तुम्हें ग़ुस्सा दिलाऊँगा।"
20 और यसायाह नबी यह कहने की जुर्रत करता है,
"जो मुझे तलाश नहीं करते थे
उन्हें मैंने मुझे पाने का मौक़ा दिया,
जो मेरे बारे में दरियाफ़्त नहीं करते थे
उन पर मैं ज़ाहिर हुआ।"
21 लेकिन इसराईल के बारे में वह फ़रमाता है,
"दिन-भर मैंने अपने हाथ फैलाए रखे
ताकि एक नाफ़रमान और सरकश क़ौम का इस्तक़बाल करूँ।"

11

इसराईल पर अल्लाह का रहम
1 तो क्या इसका यह मतलब है कि अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया है? हरगिज़ नहीं! मैं तो ख़ुद इसराईली
हूँ। इब्राहीम मेरा भी बाप है, और मैं बिनयमीन के क़बीले का हूँ। 2 अल्लाह ने अपनी क़ौम को पहले से चुन लिया था।
वह किस तरह उसे रद्द करेगा! क्या आपको मालूम नहीं कि कलामे-मुक़द्दस में इलियास नबी के बारे में क्या लिखा
है? इलियास ने अल्लाह के सामने इसराईली क़ौम की शिकायत करके कहा, 3 "ऐ रब, उन्होंने तेरे नबियों को क़त्ल
किया और तेरी क़ुरबानगाहों को गिरा दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।" 4 इस
पर अल्लाह ने उसे क्या जवाब दिया? "मैंने अपने लिए 7,000 मर्दों को बचा लिया है जिन्होंने अपने घुटने बाल
देवता के सामने नहीं टेके।" 5 आज भी यही हालत है। इसराईल का एक छोटा हिस्सा बच गया है जिसे अल्लाह ने
अपने फ़ज़ल से चुन लिया है। 6 और चूँकि यह अल्लाह के फ़ज़ल से हुआ है इसलिए यह उनकी अपनी कोशिशों से
नहीं हुआ। वरना फ़ज़ल फ़ज़ल ही न रहता।
7 ग़रज़, जिस चीज़ की तलाश में इसराईल रहा वह पूरी क़ौम को हासिल नहीं हुई बल्कि सिर्फ़ उसके एक चुने हुए
हिस्से को। बाक़ी सबको फ़ज़ल के बारे में बेहिस कर दिया गया, 8 जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
"आज तक अल्लाह ने उन्हें ऐसी हालत में रखा है
कि उनकी रूह मदहोश है,
उनकी आँखें देख नहीं सकतीं
और उनके कान सुन नहीं सकते।"
9 और दाऊद फ़रमाता है,

“उनकी मेज़ उनके लिए फंदा और जाल बन जाए,
इससे वह ठोकर खाकर अपने ग़लत कामों का मुआवज़ा पाएँ।
10 उनकी आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख न सकें,
उनकी कमर हमेशा झुकी रहे।”
11 तो क्या अल्लाह की क़ौम ठोकर खाकर यों गिर गई कि कभी बहाल नहीं होगी? हरगिज़ नहीं! उस की ख़ताओं
की वजह से अल्लाह ने ग़ैरयहूदियों को नजात पाने का मौक़ा दिया ताकि इसराईली ग़ैरत खाएँ। 12 यों यहूदियों की
ख़ताएँ दुनिया के लिए भरपूर बरकत का बाइस बन गईं, और उनका नुक़सान ग़ैरयहूदियों के लिए भरपूर बरकत का
बाइस बन गया। तो फिर यह बरकत कितनी और ज़्यादा होगी जब यहूदियों की पूरी तादाद इसमें शामिल हो जाएगी!

ग़ैरयहूदियों की नजात

13 आपको जो ग़ैरयहूदी हैं मैं यह बताता हूँ, अल्लाह ने मुझे ग़ैरयहूदियों के लिए रसूल बनाया है, इसलिए मैं अपनी
इस ख़िदमत पर ज़ोर देता हूँ। 14 क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरी क़ौम के लोग यह देखकर ग़ैरत खाएँ और उनमें से कुछ
बच जाएँ। 15 जब उन्हें रद्द किया गया तो बाक़ी दुनिया की अल्लाह के साथ सुलह हो गई। तो फिर क्या होगा जब उन्हें
दुबारा क़बूल किया जाएगा? यह मुरदों में से जी उठने के बराबर होगा!
16 जब आप फ़सल के पहले आटे से रोटी बनाकर अल्लाह के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करते हैं तो बाक़ी सारा आटा
भी मख़सूसो-मुक़द्दस है। और जब दरख़्त की जड़ें मुक़द्दस हैं तो उस की शाख़ें भी मुक़द्दस हैं। 17 ज़ैतून के दरख़्त की
कुछ शाख़ें तोड़ दी गई हैं और उनकी जगह जंगली ज़ैतून के दरख़्त की एक शाख़ पैवंद की गई है। आप ग़ैरयहूदी इस
जंगली शाख़ से मुताबिक़त रखते हैं। जिस तरह यह दूसरे दरख़्त की जड़ से रस और तक़वियत पाती है उसी तरह आप
भी यहूदी क़ौम की रूहानी जड़ से तक़वियत पाते हैं। 18 चुनाँचे आपका दूसरी शाख़ों के सामने शेख़ी मारने का हक़
नहीं। और अगर आप शेख़ी मारें तो यह ख़याल करें कि आप जड़ को क़ायम नहीं रखते बल्कि जड़ आपको।
19 शायद आप इस पर एतराज़ करें, “हाँ, लेकिन दूसरी शाख़ें तोड़ी गईं ताकि मैं पैवंद किया जाऊँ।” 20 बेशक,
लेकिन याद रखें, दूसरी शाख़ें इसलिए तोड़ी गईं कि वह ईमान नहीं रखती थीं और आप इसलिए उनकी जगह लगे हैं
कि आप ईमान रखते हैं। चुनाँचे अपने आप पर फ़ख़र न करें बल्कि ख़ौफ़ रखें। 21 अल्लाह ने असली शाख़ें बचने
न दीं। अगर आप इस तरह की हरकतें करें तो क्या वह आपको छोड़ देगा? 22 यहाँ हमें अल्लाह की मेहरबानी
और सख़्ती नज़र आती है—जो गिर गए हैं उनके सिलसिले में उस की सख़्ती, लेकिन आपके सिलसिले में उस की
मेहरबानी। और यह मेहरबानी रहेगी जब तक आप उस की मेहरबानी से लिपटे रहेंगे। वरना आपको भी दरख़्त से काट
डाला जाएगा। 23 और अगर यहूदी अपने कुफ़र से बाज़ आएँ तो उनकी पैवंदकारी दुबारा दरख़्त के साथ की जाएगी,
क्योंकि अल्लाह ऐसा करने पर क़ादिर है। 24 आख़िर आप ख़ुद क़ुदरती तौर पर ज़ैतून के जंगली दरख़्त की शाख़ थे
जिसे अल्लाह ने तोड़कर क़ुदरती क़वानीन के ख़िलाफ़ ज़ैतून के असल दरख़्त पर लगाया। तो फिर वह कितनी ज़्यादा
आसानी से यहूदियों की तोड़ी गई शाख़ें दुबारा उनके अपने दरख़्त में लगा देगा!

अल्लाह का रहम सब पर

25 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप एक भेद से वाक़िफ़ हो जाएँ, क्योंकि यह आपको अपने आपको दाना समझने से
बाज़ रखेगा। भेद यह है कि इसराईल का एक हिस्सा अल्लाह के फ़ज़ल के बारे में बेहिस हो गया है, और उस की यह
हालत उस वक़्त तक रहेगी जब तक ग़ैरयहूदियों की पूरी तादाद अल्लाह की बादशाही में दाख़िल न हो जाए। 26 फिर
पूरा इसराईल नजात पाएगा। यह कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है,
“छुड़ानेवाला सिय्यून से आएगा।
वह बेदीनी को याक़ूब से हटा देगा।
27 और यह मेरा उनके साथ अहद होगा
जब मैं उनके गुनाहों को उनसे दूर करूँगा।”
28 चूँकि यहूदी अल्लाह की ख़ुशख़बरी क़बूल नहीं करते इसलिए वह अल्लाह के दुश्मन हैं, और यह बात आपके
लिए फ़ायदे का बाइस बन गई है। तो भी वह अल्लाह को प्यारे हैं, इसलिए कि उसने उनके बापदादा इब्राहीम, इसहाक़
और याक़ूब को चुन लिया था। 29 क्योंकि जब भी अल्लाह किसी को अपनी नेमतों से नवाज़कर बुलाता है तो उस
की यह नेमतें और बुलावे कभी नहीं मिटने की। 30 माज़ी में ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे नहीं थे, लेकिन अब अल्लाह
ने आप पर यहूदियों की नाफ़रमानी की वजह से रहम किया है। 31 अब इसके उलट है कि यहूदी ख़ुद आप पर किए
गए रहम की वजह से अल्लाह के ताबे नहीं हैं, और लाज़िम है कि अल्लाह उन पर भी रहम करे। 32 क्योंकि उसने
सबको नाफ़रमानी के क़ैदी बना दिया है ताकि सब पर रहम करे।

अल्लाह की तमजीद

33 वाह! अल्लाह की दौलत, हिकमत और इल्म क्या ही गहरा है। कौन उसके फ़ैसलों की तह तक पहुँच सकता
है! कौन उस की राहों का खोज लगा सकता है! 34 कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है,

"किसने रब की सोच को जाना?
या कौन इतना इल्म रखता है
कि वह उसे मशवरा दे?
35 क्या किसी ने कभी उसे कुछ दिया
कि उसे इसका मुआवज़ा देना पड़े?"

36 क्योंकि सब कुछ उसी ने पैदा किया है, सब कुछ उसी के ज़रीए और उसी के जलाल के लिए क़ायम है। उसी
की तमजीद अबद तक होती रहे! आमीन।

12

पूरी ज़िंदगी अल्लाह की ख़िदमत में

1 भाइयो, अल्लाह ने आप पर कितना रहम किया है! अब ज़रूरी है कि आप अपने बदनों को अल्लाह के लिए
मख़सूस करें, कि वह एक ऐसी ज़िंदा और मुक़द्दस क़ुरबानी बन जाएँ जो उसे पसंद आए। ऐसा करने से आप उस की
माक़ूल इबादत करेंगे। 2 इस दुनिया के साँचे में न ढल जाएँ बल्कि अल्लाह को आपकी सोच की तजदीद करने दें ताकि
आप वह शक्लो-सूरत अपना सकें जो उसे पसंद है। फिर आप अल्लाह की मरज़ी को पहचान सकेंगे, वह कुछ जो
अच्छा, पसंदीदा और कामिल है।

3 उस रहम की बिना पर जो अल्लाह ने मुझ पर किया मैं आपमें से हर एक को हिदायत देता हूँ कि अपनी हक़ीक़ी
हैसियत को जानकर अपने आपको इससे ज़्यादा न समझें। क्योंकि जिस पैमाने से अल्लाह ने हर एक को ईमान बख़्शा
है उसी के मुताबिक़ वह समझदारी से अपनी हक़ीक़ी हैसियत को जान ले। 4 हमारे एक ही जिस्म में बहुत-से आज़ा
हैं, और हर एक अज़ु का फ़रक़ फ़रक़ काम होता है। 5 इसी तरह गो हम बहुत हैं, लेकिन मसीह में एक ही बदन हैं,
जिसमें हर अज़ु दूसरों के साथ जुड़ा हुआ है। 6 अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से हर एक को मुख़्तलिफ़ नेमतों से नवाज़ा है।
अगर आपकी नेमत नबुव्वत करना है तो अपने ईमान के मुताबिक़ नबुव्वत करें। 7 अगर आपकी नेमत ख़िदमत करना
है तो ख़िदमत करें। अगर आपकी नेमत तालीम देना है तो तालीम दें। 8 अगर आपकी नेमत हौसलाअफ़्ज़ाई करना है
तो हौसलाअफ़्ज़ाई करें। अगर आपकी नेमत दूसरों की ज़रूरियात पूरी करना है तो ख़ुलूसदिली से यही करें। अगर
आपकी नेमत राहनुमाई करना है तो सरगरमी से राहनुमाई करें। अगर आपकी नेमत रहम करना है तो ख़ुशी से रहम करें।

9 आपकी मुहब्बत महज़ दिखावे की न हो। जो कुछ बुरा है उससे नफ़रत करें और जो कुछ अच्छा है उसके साथ
लिपटे रहें। 10 आपकी एक दूसरे के लिए बरादराना मुहब्बत सरगरम हो। एक दूसरे की इज़्ज़त करने में आप ख़ुद पहला
क़दम उठाएँ। 11 आपका जोश ढीला न पड़ जाए बल्कि रूहानी सरगरमी से ख़ुदावंद की ख़िदमत करें। 12 उम्मीद में
ख़ुश, मुसीबत में साबितक़दम और दुआ में लगे रहें। 13 जब मुक़द्दसीन ज़रूरतमंद हैं तो उनकी मदद करने में शरीक हों।
मेहमान-नवाज़ी में लगे रहें।

14 जो आपको ईज़ा पहुँचाएँ उनको बरकत दें। उन पर लानत मत करें बल्कि बरकत चाहें। 15 ख़ुशी मनानेवालों के
साथ ख़ुशी मनाएँ और रोनेवालों के साथ रोएँ। 16 एक दूसरे के साथ अच्छे ताल्लुक़ात रखें। ऊँची सोच न रखें बल्कि
दबे हुओं से रिफ़ाक़त रखें। अपने आपको दाना मत समझें।

17 अगर कोई आपसे बुरा सुलूक करे तो बदले में उससे बुरा सुलूक न करना। ध्यान रखें कि जो कुछ सबकी नज़र में
अच्छा है वही अमल में लाएँ। 18 अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करें कि जहाँ तक मुमकिन हो सबके साथ मेल-मिलाप
रखें। 19 अज़ीज़ो, इंतक़ाम मत लें बल्कि अल्लाह के ग़ज़ब को बदला लेने का मौक़ा दें। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में
लिखा है, "रब फ़रमाता है, इंतक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।" 20 इसके बजाए "अगर तेरा दुश्मन
भूका हो तो उसे खाना खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला। क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सर पर जलते हुए कोयलों
का ढेर लगाएगा।" 21 अपने पर बुराई को ग़ालिब न आने दें बल्कि भलाई से आप बुराई पर ग़ालिब आएँ।

13

रिआया के फ़रायज़

1 हर शख़्स इख़्तियार रखनेवाले हुक्मरानों के ताबे रहे, क्योंकि तमाम इख़्तियार अल्लाह की तरफ़ से है। जो
इख़्तियार रखते हैं उन्हें अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर किया गया है। 2 चुनाँचे जो हुक्मरान की मुख़ालफ़त करता है वह

अल्लाह के फ़रमान की मुख़ालफ़त करता और यों अपने आप पर अल्लाह की अदालत लाता है। 3 क्योंकि हुक्मरान
उनके लिए ख़ौफ़ का बाइस नहीं होते जो सहीह काम करते हैं बल्कि उनके लिए जो ग़लत काम करते हैं। क्या आप
हुक्मरान से ख़ौफ़ खाए बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारना चाहते हैं? तो फिर वह कुछ करें जो अच्छा है तो वह आपको शाबाश
देगा। 4 क्योंकि वह अल्लाह का ख़ादिम है जो आपकी बेहतरी के लिए ख़िदमत करता है। लेकिन अगर आप ग़लत
काम करें तो डरें, क्योंकि वह अपनी तलवार को ख़ाहमख़ाह थामे नहीं रखता। वह अल्लाह का ख़ादिम है और उसका
ग़ज़ब ग़लत काम करनेवाले पर नाज़िल होता है। 5 इसलिए लाज़िम है कि आप हुकूमत के ताबे रहें, न सिर्फ़ सज़ा से
बचने के लिए बल्कि इसलिए भी कि आपके ज़मीर पर दाग़ न लगे।
6 यही वजह है कि आप टैक्स अदा करते हैं, क्योंकि सरकारी मुलाज़िम अल्लाह के ख़ादिम हैं जो इस ख़िदमत को
सरंजाम देने में लगे रहते हैं। 7 चुनाँचे हर एक को वह कुछ दें जो उसका हक़ है, टैक्स लेनेवाले को टैक्स और कस्टम
ड्यूटी लेनेवाले को कस्टम ड्यूटी। जिसका ख़ौफ़ रखना आप पर फ़र्ज़ है उसका ख़ौफ़ मानें और जिसका एहतराम करना
आप पर फ़र्ज़ है उसका एहतराम करें।

एक दूसरे के लिए फ़रायज़

8 किसी के भी क़र्ज़दार न रहें। सिर्फ़ एक क़र्ज़ है जो आप कभी नहीं उतार सकते, एक दूसरे से मुहब्बत रखने का
क़र्ज़। यह करते रहें क्योंकि जो दूसरों से मुहब्बत रखता है उसने शरीअत के तमाम तक़ाज़े पूरे किए हैं। 9 मसलन
शरीअत में लिखा है, "क़त्ल न करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, लालच न करना।" और दीगर जितने अहकाम
हैं इस एक ही हुक्म में समाए हुए हैं कि "अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।" 10 जो
किसी से मुहब्बत रखता है वह उससे ग़लत सुलूक नहीं करता। यों मुहब्बत शरीअत के तमाम तक़ाज़े पूरे करती है।
11 ऐसा करना लाज़िम है, क्योंकि आप ख़ुद इस वक़्त की अहमियत को जानते हैं कि नींद से जाग उठने की
घड़ी आ चुकी है। क्योंकि जब हम ईमान लाए थे तो हमारी नजात इतनी क़रीब नहीं थी जितनी कि अब है। 12 रात
ढलनेवाली है और दिन निकलनेवाला है। इसलिए आएँ, हम तारीकी के काम गंदे कपड़ों की तरह उतारकर नूर के
हथियार बाँध लें। 13 हम शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ारें, ऐसे लोगों की तरह जो दिन की रौशनी में चलते हैं। इसलिए लाज़िम
है कि हम इन चीज़ों से बाज़ रहें : बदमस्तों की रंगरलियों और शराबनोशी से, ज़िनाकारी और ऐयाशी से, और झगड़े
और हसद से। 14 इसके बजाए ख़ुदावंद ईसा मसीह को पहन लें और अपनी पुरानी फ़ितरत की परवरिश यों न करें कि
गुनाहआलूदा ख़ाहिशात बेदार हो जाएँ।

14

एक दूसरे को मुजरिम मत ठहराना

1 जिसका ईमान कमज़ोर है उसे क़बूल करें, और उसके साथ बहस-मुबाहसा न करें। 2 एक का ईमान तो उसे हर
चीज़ खाने की इजाज़त देता है जबकि कमज़ोर ईमान रखनेवाला सिर्फ़ सब्ज़ियाँ खाता है। 3 जो सब कुछ खाता है वह
उसे हक़ीर न जाने जो यह नहीं कर सकता। और जो यह नहीं कर सकता वह उसे मुजरिम न ठहराए जो सब कुछ
खाता है, क्योंकि अल्लाह ने उसे क़बूल किया है। 4 आप कौन हैं कि किसी और के ग़ुलाम का फ़ैसला करें? उसका
अपना मालिक फ़ैसला करेगा कि वह खड़ा रहे या गिर जाए। और वह ज़रूर खड़ा रहेगा, क्योंकि ख़ुदावंद उसे क़ायम
रखने पर क़ादिर है।
5 कुछ लोग एक दिन को दूसरे दिनों की निसबत ज़्यादा अहम क़रार देते हैं जबकि दूसरे तमाम दिनों की अहमियत
बराबर समझते हैं। आप जो भी ख़याल रखें, हर एक उसे पूरे यक़ीन के साथ रखे। 6 जो एक दिन को ख़ास क़रार देता
है वह इससे ख़ुदावंद की ताज़ीम करना चाहता है। इसी तरह जो सब कुछ खाता है वह इससे ख़ुदावंद को जलाल देना
चाहता है। यह इससे ज़ाहिर होता है कि वह इसके लिए ख़ुदा का शुक्र करता है। लेकिन जो कुछ खानों से परहेज़
करता है वह भी ख़ुदा का शुक्र करके इससे उस की ताज़ीम करना चाहता है। 7 बात यह है कि हममें से कोई नहीं जो
सिर्फ़ अपने वास्ते ज़िंदगी गुज़ारता है और कोई नहीं जो सिर्फ़ अपने वास्ते मरता है। 8 अगर हम ज़िंदा हैं तो इसलिए
कि ख़ुदावंद को जलाल दें, और अगर हम मरें तो इसलिए कि हम ख़ुदावंद को जलाल दें। ग़रज़ हम ख़ुदावंद ही के हैं,
ख़ाह ज़िंदा हों या मुरदा। 9 क्योंकि मसीह इसी मक़सद के लिए मुआ और जी उठा कि वह मुरदों और ज़िंदों दोनों का
मालिक हो। 10 तो फिर आप जो सिर्फ़ सब्ज़ी खाते हैं अपने भाई को मुजरिम क्यों ठहराते हैं? और आप जो सब कुछ
खाते हैं अपने भाई को हक़ीर क्यों जानते हैं? याद रखें कि एक दिन हम सब अल्लाह के तख़्ते-अदालत के सामने खड़े
होंगे। 11 कलामे-मुक़द्दस में यही लिखा है,

रब फ़रमाता है, "मेरी हयात की क़सम,

हर घुटना मेरे सामने झुकेगा
और हर ज़बान अल्लाह की तमजीद करेगी।”
12 हाँ, हममें से हर एक को अल्लाह के सामने अपनी ज़िंदगी का जवाब देना पड़ेगा।

दूसरों के लिए गिरने का बाइस न बनना

13 चुनाँचे आएँ, हम एक दूसरे को मुजरिम न ठहराएँ। पूरे अज़्म के साथ इसका ख़याल रखें कि आप अपने भाई
के लिए ठोकर खाने या गुनाह में गिरने का बाइस न बनें। 14 मुझे ख़ुदावंद मसीह में इल्म और यक़ीन है कि कोई भी
खाना बज़ाते-ख़ुद नापाक नहीं है। लेकिन जो किसी खाने को नापाक समझता है उसके लिए वह खाना नापाक ही है।
15 अगर आप अपने भाई को अपने किसी खाने के बाइस परेशान कर रहे हैं तो आप मुहब्बत की रूह में ज़िंदगी नहीं
गुज़ार रहे। अपने भाई को अपने खाने से हलाक न करें। याद रखें कि मसीह ने उसके लिए अपनी जान दी है। 16 ऐसा
न हो कि लोग उस अच्छी चीज़ पर कुफ़र बकें जो आपको मिल गई है। 17 क्योंकि अल्लाह की बादशाही खाने-पीने
की चीज़ों पर क़ायम नहीं है बल्कि रास्तबाज़ी, सुलह-सलामती और रूहुल-क़ुद्स में ख़ुशी पर। 18 जो यों मसीह की
ख़िदमत करता है वह अल्लाह को पसंद और इनसानों को मंज़ूर है।
19 चुनाँचे आएँ, हम पूरी जिद्दो-जहद के साथ वह कुछ करने की कोशिश करें जो सुलह-सलामती और एक दूसरे
की रूहानी तामीरो-तरक़्क़ी का बाइस है। 20 अल्लाह का काम किसी खाने की ख़ातिर बरबाद न करें। हर खाना पाक
है, लेकिन अगर आप कुछ खाते हैं जिससे दूसरे को ठेस लगे तो यह ग़लत है। 21 बेहतर यह है कि न आप गोश्त खाएँ,
न मै पिएँ और न कोई और क़दम उठाएँ जिससे आपका भाई ठोकर खाए। 22 जो भी ईमान आप इस नाते से रखते हैं वह
आप और अल्लाह तक महदूद रहे। मुबारक है वह जो किसी चीज़ को जायज़ क़रार देकर अपने आपको मुजरिम नहीं
ठहराता। 23 लेकिन जो शक करते हुए कोई खाना खाता है उसे मुजरिम ठहराया जाता है, क्योंकि उसका यह अमल
ईमान पर मबनी नहीं है। और जो भी अमल ईमान पर मबनी नहीं होता वह गुनाह है।

15

बुर्दबारी

1 हम ताक़तवरों का फ़र्ज़ है कि कमज़ोरों की कमज़ोरियाँ बरदाश्त करें। हम सिर्फ़ अपने आपको ख़ुश करने की
ख़ातिर ज़िंदगी न गुज़ारें 2 बल्कि हर एक अपने पड़ोसी को उस की बेहतरी और रूहानी तामीरो-तरक़्क़ी के लिए ख़ुश
करे। 3 क्योंकि मसीह ने भी ख़ुद को ख़ुश रखने के लिए ज़िंदगी नहीं गुज़ारी। कलामे-मुक़द्दस में उसके बारे में यही
लिखा है, “जो तुझे गालियाँ देते हैं उनकी गालियाँ मुझ पर आ गई हैं।” 4 यह सब कुछ हमें हमारी नसीहत के लिए
लिखा गया ताकि हम साबितक़दमी और कलामे-मुक़द्दस की हौसलाअफ़्ज़ा बातों से उम्मीद पाएँ। 5 अब साबितक़दमी
और हौसला देनेवाला ख़ुदा आपको तौफ़ीक़ दे कि आप मसीह ईसा का नमूना अपनाकर यगांगत की रूह में एक दूसरे
के साथ ज़िंदगी गुज़ारें। 6 तब ही आप मिलकर एक ही आवाज़ के साथ ख़ुदा, हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप को
जलाल दे सकेंगे।

ग़ैरयहूदियों के लिए ख़ुशख़बरी

7 चुनाँचे जिस तरह मसीह ने आपको क़बूल किया है उसी तरह एक दूसरे को भी क़बूल करें ताकि अल्लाह को
जलाल मिले। 8 याद रखें कि मसीह अल्लाह की सदाक़त का इज़हार करके यहूदियों का ख़ादिम बना ताकि उन वादों
की तसदीक़ करे जो इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किए गए थे। 9 वह इसलिए भी ख़ादिम बना कि ग़ैरयहूदी अल्लाह
को उस रहम के लिए जलाल दें जो उसने उन पर किया है। कलामे-मुक़द्दस में यही लिखा है,
“इसलिए मैं अक़वाम में तेरी हम्दो-सना करूँगा,
तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।”
10 यह भी लिखा है,
“ऐ दीगर क़ौमो, उस की उम्मत के साथ ख़ुशी मनाओ!”
11 फिर लिखा है,
“ऐ तमाम अक़वाम, रब की तमजीद करो!
ऐ तमाम उम्मतो, उस की सताइश करो!”
12 और यसायाह नबी यह फ़रमाता है,
“यस्सी की जड़ से एक कोंपल फूट निकलेगी,
एक ऐसा आदमी उठेगा

जो क़ौमों पर हुकूमत करेगा।
ग़ैरयहूदी उस पर आस रखेंगे।”
13 उम्मीद का ख़ुदा आपको ईमान रखने के बाइस हर ख़ुशी और सलामती से मामूर करे ताकि रूहुल-क़ुद्स की
क़ुदरत से आपकी उम्मीद बढ़कर दिल से छलक जाए।

दिलेरी से लिखने की वजह

14 मेरे भाइयो, मुझे पूरा यक़ीन है कि आप ख़ुद भलाई से मामूर हैं, कि आप हर तरह का इल्मो-इरफ़ान रखते हैं
और एक दूसरे को नसीहत करने के क़ाबिल भी हैं। 15 तो भी मैंने याद दिलाने की ख़ातिर आपको कई बातें लिखने
की दिलेरी की है। क्योंकि मैं अल्लाह के फ़ज़ल से 16 आप ग़ैरयहूदियों के लिए मसीह ईसा का ख़ादिम हूँ। और मैं
अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने में बैतुल-मुक़द्दस के इमाम की-सी ख़िदमत सरंजाम देता हूँ ताकि आप एक ऐसी क़ुरबानी
बन जाएँ जो अल्लाह को पसंद आए और जिसे रूहुल-क़ुद्स ने उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया हो। 17 चुनाँचे मैं
मसीह ईसा में अल्लाह के सामने अपनी ख़िदमत पर फ़ख़र कर सकता हूँ। 18 क्योंकि मैं सिर्फ़ उस काम के बारे में
बात करने की जुर्रत करूँगा जो मसीह ने मेरी मारिफ़त किया है और जिससे ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे हो गए हैं। हाँ,
मसीह ही ने यह काम कलाम और अमल से, 19 इलाही निशानों और मोजिज़ों की क़ुव्वत से और अल्लाह के रूह की
क़ुदरत से सरंजाम दिया है। यों मैंने यरूशलम से लेकर सूबा इल्लुरिकुम तक सफ़र करते करते अल्लाह की ख़ुशख़बरी
फैलाने की ख़िदमत पूरी की है। 20 और मैं इसे अपनी इज़्ज़त का बाइस समझा कि ख़ुशख़बरी वहाँ सुनाऊँ जहाँ मसीह
के बारे में ख़बर नहीं पहुँची। क्योंकि मैं ऐसी बुनियाद पर तामीर नहीं करना चाहता था जो किसी और ने डाली थी।
21 कलामे-मुक़द्दस यही फ़रमाता है,
“जिन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया
वह देखेंगे,
और जिन्होंने नहीं सुना
उन्हें समझ आएगी।”

पौलुस का रोम जाने का इरादा

22 यही वजह है कि मुझे इतनी दफ़ा आपके पास आने से रोका गया है। 23 लेकिन अब मेरी इन इलाक़ों में ख़िदमत
पूरी हो चुकी है। और चूँकि मैं इतने सालों से आपके पास आने का आरज़ूमंद रहा हूँ 24 इसलिए अब यह ख़ाहिश पूरी
करने की उम्मीद रखता हूँ। क्योंकि मैंने स्पेन जाने का मनसूबा बनाया है। उम्मीद है कि रास्ते में आपसे मिलूँगा और
आप आगे के सफ़र के लिए मेरी मदद कर सकेंगे। लेकिन पहले मैं कुछ देर के लिए आपकी रिफ़ाक़त से लुत्फ़अंदोज़
होना चाहता हूँ। 25 इस वक़्त मैं यरूशलम जा रहा हूँ ताकि वहाँ के मुक़द्दसीन की ख़िदमत करूँ। 26 क्योंकि मकिदुनिया
और अख़या की जमातों ने यरूशलम के उन मुक़द्दसीन के लिए हदिया जमा करने का फ़ैसला किया है जो ग़रीब हैं।
27 उन्होंने यह ख़ुशी से किया और दरअसल यह उनका फ़र्ज़ भी है। ग़ैरयहूदी तो यहूदियों की रूहानी बरकतों में शरीक
हुए हैं, इसलिए ग़ैरयहूदियों का फ़र्ज़ है कि वह यहूदियों को भी अपनी माली बरकतों में शरीक करके उनकी ख़िदमत
करें। 28 चुनाँचे अपना यह फ़र्ज़ अदा करने और मक़ामी भाइयों का यह सारा फल यरूशलम के ईमानदारों तक पहुँचाने
के बाद मैं आपके पास से होता हुआ स्पेन जाऊँगा। 29 और मैं जानता हूँ कि जब मैं आपके पास आऊँगा तो मसीह की
पूरी बरकत लेकर आऊँगा।
30 भाइयो, मैं हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह और रूहुल-क़ुद्स की मुहब्बत को याद दिलाकर आपसे मिन्नत करता हूँ
कि आप मेरे लिए अल्लाह से दुआ करें और यों मेरी रूहानी जंग में शरीक हो जाएँ। 31 इसके लिए दुआ करें कि मैं सूबा
यहूदिया के ग़ैरईमानदारों से बचा रहूँ और कि मेरी यरूशलम में ख़िदमत वहाँ के मुक़द्दसीन को पसंद आए। 32 क्योंकि
मैं चाहता हूँ कि जब मैं अल्लाह की मरज़ी से आपके पास आऊँगा तो मेरे दिल में ख़ुशी हो और हम एक दूसरे की
रिफ़ाक़त से तरो-ताज़ा हो जाएँ। 33 सलामती का ख़ुदा आप सबके साथ हो। आमीन।

16

सलामो-दुआ

1 हमारी बहन फ़ीबे आपके पास आ रही है। वह किंख़रिया शहर की जमात में ख़ादिमा है। मैं उस की सिफ़ारिश
करता हूँ 2 बल्कि ख़ुदावंद में अर्ज़ है कि आप उसका वैसे ही इस्तक़बाल करें जैसे कि मुक़द्दसीन को करना चाहिए।

जिस मामले में भी उसे आपकी मदद की ज़रूरत हो उसमें उसका साथ दें, क्योंकि उसने बहुत लोगों की बल्कि मेरी
भी मदद की है।
3 प्रिसकिल्ला और अकविला को मेरा सलाम देना जो मसीह ईसा में मेरे हमख़िदमत रहे हैं। 4 उन्होंने मेरे लिए
अपनी जान पर खेला। न सिर्फ़ मैं बल्कि ग़ैरयहूदियों की जमातें उनकी एहसानमंद हैं। 5 उनके घर में जमा होनेवाली
जमात को भी मेरा सलाम देना।
मेरे अज़ीज़ दोस्त इपिनेतुस को मेरा सलाम देना। वह सूबा आसिया में मसीह का पहला पैरोकार यानी उस इलाक़े की
फ़सल का पहला फल था। 6 मरियम को मेरा सलाम जिसने आपके लिए बड़ी मेहनत-मशक़्क़त की है। 7 अंदरूनीकुस
और यूनिया को मेरा सलाम। वह मेरे हमवतन हैं और जेल में मेरे साथ वक़्त गुज़ारा है। रसूलों में वह नुमायाँ हैसियत
रखते हैं, और वह मुझसे पहले मसीह के पीछे हो लिए थे।
8 अंपलियातुस को सलाम। वह ख़ुदावंद में मुझे अज़ीज़ है। 9 मसीह में हमारे हमख़िदमत उर्बानुस को सलाम और
इसी तरह मेरे अज़ीज़ दोस्त इस्तख़ुस को भी। 10 अपेल्लिस को सलाम जिसकी मसीह के साथ वफ़ादारी को आज़माया
गया है। अरिस्तुबूलुस के घरवालों को सलाम। 11 मेरे हमवतन हेरोदियोन को सलाम और इसी तरह नरकिस्सुस के उन
घरवालों को भी जो मसीह के पीछे हो लिए हैं।
12 त्रूफ़ेना और त्रूफ़ोसा को सलाम जो ख़ुदावंद की ख़िदमत में मेहनत-मशक़्क़त करती हैं। मेरी अज़ीज़ बहन परसिस
को सलाम जिसने ख़ुदावंद की ख़िदमत में बड़ी मेहनत-मशक़्क़त की है। 13 हमारे ख़ुदावंद के चुने हुए भाई रूफ़ुस को
सलाम और इसी तरह उस की माँ को भी जो मेरी माँ भी है। 14 असिंकरितुस, फ़लिगोन, हिरमेस, पतरोबास, हिरमास
और उनके साथी भाइयों को मेरा सलाम देना। 15 फ़िलुलुगुस और यूलिया, नेरियूस और उस की बहन, उलिंपास और
उनके साथ तमाम मुक़द्दसीन को सलाम।
16 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देकर सलाम करें। मसीह की तमाम जमातों की तरफ़ से आपको सलाम।

आख़िरी हिदायात

17 भाइयो, मैं आपको ताकीद करता हूँ कि आप उनसे ख़बरदार रहें जो पार्टीबाज़ी और ठोकर का बाइस बनते हैं।
यह उस तालीम के ख़िलाफ़ है जो आपको दी गई है। उनसे किनारा करें 18 क्योंकि ऐसे लोग हमारे ख़ुदावंद मसीह
की ख़िदमत नहीं कर रहे बल्कि अपने पेट की। वह अपनी मीठी और चिकनी-चुपड़ी बातों से सादालौह लोगों के
दिलों को धोका देते हैं। 19 आपकी फ़रमाँबरदारी की ख़बर सब तक पहुँच गई है। यह देखकर मैं आपके बारे में ख़ुश
हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप अच्छा काम करने के लिहाज़ से दानिशमंद और बुरा काम करने के लिहाज़ से बेक़ुसूर
हों। 20 सलामती का ख़ुदा जल्द ही इबलीस को आपके पाँवों तले कुचलवा डालेगा।
हमारे ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल आपके साथ हो।
21 मेरा हमख़िदमत तीमुथियुस आपको सलाम देता है, और इसी तरह मेरे हमवतन लूकियुस, यासोन और
सोसिपातरुस।
22 मैं, तिरतियुस इस ख़त का कातिब हूँ। मेरी तरफ़ से भी ख़ुदावंद में आपको सलाम।
23 गयुस की तरफ़ से आपको सलाम। मैं और पूरी जमात उसके मेहमान रहे हैं। शहर के ख़ज़ानची इरास्तुस और
हमारे भाई क्वारतुस भी आपको सलाम कहते हैं। 24 [हमारे ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल आप सबके साथ होता रहे।]

आख़िरी दुआ

25 अल्लाह की तमजीद हो, जो आपको मज़बूत करने पर क़ादिर है, क्योंकि ईसा मसीह के बारे में उस ख़ुशख़बरी
से जो मैं सुनाता हूँ और उस भेद के इनकिशाफ़ से जो अज़ल से पोशीदा रहा वह आपको क़ायम रख सकता है। 26 अब
इस भेद की हक़ीक़त नबियों के सहीफ़ों से ज़ाहिर की गई है और अबदी ख़ुदा के हुक्म पर तमाम क़ौमों को मालूम हो
गई है ताकि सब ईमान लाकर अल्लाह के ताबे हो जाएँ।
27 अल्लाह की तमजीद हो जो वाहिद दानिशमंद है। उसी का ईसा मसीह के वसीले से अबद तक जलाल होता रहे!
आमीन।

1 कुरिंथियों

सलाम

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो अल्लाह के इरादे से मसीह ईसा का बुलाया हुआ रसूल है, और हमारे भाई सोसथिनेस की तरफ़ से।

2 मैं कुरिंथुस में मौजूद अल्लाह की जमात को लिख रहा हूँ, आपको जिन्हें मसीह ईसा में मुक़द्दस किया गया है, जिन्हें मुक़द्दस होने के लिए बुलाया गया है। साथ ही यह ख़त उन तमाम लोगों के नाम भी है जो हर जगह हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का नाम लेते हैं जो उनका और हमारा ख़ुदावंद है।

3 हमारा ख़ुदा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़्ल और सलामती अता करें।

शुक्र

4 मैं हमेशा आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करता हूँ कि उसने आपको मसीह ईसा में इतना फ़ज़्ल बख़्शा है। 5 आपको
उसमें हर लिहाज़ से दौलतमंद किया गया है, हर क़िस्म की तक़रीर और इल्मो-इरफ़ान में। 6 क्योंकि मसीह की गवाही
ने आपके दरमियान ज़ोर पकड़ लिया है, 7 इसलिए आपको हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के ज़ुहूर का इंतज़ार करते करते
किसी भी बरकत में कमी नहीं। 8 वही आपको आख़िर तक मज़बूत बनाए रखेगा, इसलिए आप हमारे ख़ुदावंद ईसा
मसीह की दूसरी आमद के दिन बेइलज़ाम ठहरेंगे। 9 अल्लाह पर पूरा एतमाद किया जा सकता है जिसने आपको बुलाकर
अपने फ़रज़ंद हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की रिफ़ाक़त में शरीक किया है।

कुरिंथियों की पार्टीबाज़ी

10 भाइयो, मैं अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम में आपको ताकीद करता हूँ कि आप सब एक ही बात कहें। आपके
दरमियान पार्टीबाज़ी नहीं बल्कि एक ही सोच और एक ही राय होनी चाहिए। 11 क्योंकि मेरे भाइयो, आपके बारे में
मुझे ख़लोए के घरवालों से मालूम हुआ है कि आप झगड़ों में उलझ गए हैं। 12 मतलब यह है कि आपमें से कोई कहता
है, "मैं पौलुस की पार्टी का हूँ," कोई "मैं अपुल्लोस की पार्टी का हूँ," कोई "मैं कैफ़ा की पार्टी का हूँ" और कोई
कि "मैं मसीह की पार्टी का हूँ।" 13 क्या मसीह बट गया? क्या आपकी ख़ातिर पौलुस को सलीब पर चढ़ाया गया?
या क्या आपको पौलुस के नाम से बपतिस्मा दिया गया?

14 ख़ुदा का शुक्र है कि मैंने आपमें से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया सिवाए क्रिसपुस और गयुस के। 15 इसलिए
कोई नहीं कह सकता कि मैंने पौलुस के नाम से बपतिस्मा पाया है। 16 हाँ मैंने स्तिफ़नास के घराने को भी बपतिस्मा
दिया। लेकिन जहाँ तक मेरा ख़याल है इसके अलावा किसी और को बपतिस्मा नहीं दिया। 17 मसीह ने मुझे बपतिस्मा
देने के लिए रसूल बनाकर नहीं भेजा बल्कि इसलिए कि अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ। और यह काम मुझे दुनियावी
हिकमत से आरास्ता तक़रीर से नहीं करना है ताकि मसीह की सलीब की ताक़त बेअसर न हो जाए।

सलीब का पैग़ाम

18 क्योंकि सलीब का पैग़ाम उनके लिए जिनका अंजाम हलाकत है बेवुक़ूफ़ी है जबकि हमारे लिए जिनका अंजाम
नजात है यह अल्लाह की क़ुदरत है। 19 चुनाँचे पाक नविश्तों में लिखा है,

"मैं दानिशमंदों की दानिश को तबाह करूँगा
और समझदारों की समझ को रद्द करूँगा।"

20 अब दानिशमंद शख़्स कहाँ है? आलिम कहाँ है? इस जहान का मुनाज़रे का माहिर कहाँ है? क्या अल्लाह ने
दुनिया की हिकमतो-दानाई को बेवुक़ूफ़ी साबित नहीं किया?

21 क्योंकि अगरचे दुनिया अल्लाह की दानाई से घिरी हुई है तो भी दुनिया ने अपनी दानाई की बदौलत अल्लाह
को न पहचाना। इसलिए अल्लाह को पसंद आया कि वह सलीब के पैग़ाम की बेवुक़ूफ़ी के ज़रीए ही ईमान रखनेवालों
को नजात दे। 22 यहूदी तक़ाज़ा करते हैं कि इलाही बातों की तसदीक़ इलाही निशानों से की जाए जबकि यूनानी दानाई
के वसीले से इनकी तसदीक़ के ख़ाहाँ हैं। 23 इसके मुक़ाबले में हम मसीहे-मसलूब की मुनादी करते हैं। यहूदी इससे
ठोकर खाकर नाराज़ हो जाते हैं जबकि ग़ैरयहूदी इसे बेवुक़ूफ़ी क़रार देते हैं। 24 लेकिन जो अल्लाह के बुलाए हुए हैं,
ख़ाह वह यहूदी हों ख़ाह यूनानी, उनके लिए मसीह अल्लाह की क़ुदरत और अल्लाह की दानाई होता है। 25 क्योंकि
अल्लाह की जो बात बेवुक़ूफ़ी लगती है वह इनसान की दानाई से ज़्यादा दानिशमंद है। और अल्लाह की जो बात
कमज़ोर लगती है वह इनसान की ताक़त से ज़्यादा ताक़तवर है।

26 भाइयो, इस पर ग़ौर करें कि आपका क्या हाल था जब ख़ुदा ने आपको बुलाया। आपमें से कम हैं जो दुनिया के
मेयार के मुताबिक़ दाना हैं, कम हैं जो ताक़तवर हैं, कम हैं जो आली ख़ानदान से हैं। 27 बल्कि जो दुनिया की निगाह
में बेवुक़ूफ़ है उसे अल्लाह ने चुन लिया ताकि दानाओं को शरमिंदा करे। और जो दुनिया में कमज़ोर है उसे अल्लाह ने
चुन लिया ताकि ताक़तवरों को शरमिंदा करे। 28 इसी तरह जो दुनिया के नज़दीक ज़लील और हक़ीर है उसे अल्लाह
ने चुन लिया। हाँ, जो कुछ भी नहीं है उसे उसने चुन लिया ताकि उसे नेस्त करे जो बज़ाहिर कुछ है। 29 चुनाँचे कोई
भी अल्लाह के सामने अपने पर फ़ख़र नहीं कर सकता। 30 यह अल्लाह की तरफ़ से है कि आप मसीह ईसा में हैं।
अल्लाह की बख़्शिश से ईसा ख़ुद हमारी दानाई, हमारी रास्तबाज़ी, हमारी तक़दीस और हमारी मख़लसी बन गया है।
31 इसलिए जिस तरह कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, "फ़ख़र करनेवाला ख़ुदावंद ही पर फ़ख़र करे।"

2

पौलुस की सादा मुनादी

1 भाइयो, मुझ पर भी ग़ौर करें। जब मैं आपके पास आया तो मैंने आपको अल्लाह का भेद मोटे मोटे अलफ़ाज़
में या फ़लसफ़ियाना हिकमत का इज़हार करते हुए न सुनाया। 2 वजह क्या थी? यह कि मैंने इरादा कर रखा था कि
आपके दरमियान होते हुए मैं ईसा मसीह के सिवा और कुछ न जानूँ, ख़ासकर यह कि उसे मसलूब किया गया। 3 हाँ मैं
कमज़ोरहाल, ख़ौफ़ खाते और बहुत थरथराते हुए आपके पास आया। 4 और गुफ़्तगू और मुनादी करते हुए मैंने दुनियावी
हिकमत के बड़े ज़ोरदार अलफ़ाज़ की मारिफ़त आपको क़ायल करने की कोशिश न की, बल्कि रूहुल-क़ुद्स और
अल्लाह की क़ुदरत ने मेरी बातों की तसदीक़ की, 5 ताकि आपका ईमान इनसानी हिकमत पर मबनी न हो बल्कि
अल्लाह की क़ुदरत पर।

ग़लत और सहीह दानाई

6 दानाई की बातें हम उस वक़्त करते हैं जब कामिल ईमान रखनेवालों के दरमियान होते हैं। लेकिन यह दानाई
मौजूदा जहान की नहीं और न इस जहान के हाकिमों ही की है जो मिटनेवाले हैं। 7 बल्कि हम ख़ुदा ही की दानाई की
बातें करते हैं जो भेद की सूरत में छुपी रही है। अल्लाह ने तमाम ज़मानों से पेशतर मुक़र्रर किया है कि यह दानाई हमारे
जलाल का बाइस बने। 8 इस जहान के किसी भी हाकिम ने इस दानाई को न पहचाना, क्योंकि अगर वह पहचान लेते
तो फिर वह हमारे जलाली ख़ुदावंद को मसलूब न करते। 9 दानाई के बारे में पाक नविश्ते भी यही कहते हैं,
"जो न किसी आँख ने देखा,
न किसी कान ने सुना,
और न इनसान के ज़हन में आया,
उसे अल्लाह ने उनके लिए तैयार कर दिया
जो उससे मुहब्बत रखते हैं।"
10 लेकिन अल्लाह ने यही कुछ अपने रूह की मारिफ़त हम पर ज़ाहिर किया क्योंकि उसका रूह हर चीज़ का
खोज लगाता है, यहाँ तक कि अल्लाह की गहराइयों का भी। 11 इनसान के बातिन से कौन वाक़िफ़ है सिवाए इनसान
की रूह के जो उसके अंदर है? इसी तरह अल्लाह से ताल्लुक़ रखनेवाली बातों को कोई नहीं जानता सिवाए अल्लाह
के रूह के। 12 और हमें दुनिया की रूह नहीं मिली बल्कि वह रूह जो अल्लाह की तरफ़ से है ताकि हम उस की
अताकरदा बातों को जान सकें।
13 यही कुछ हम बयान करते हैं, लेकिन ऐसे अलफ़ाज़ में नहीं जो इनसानी हिकमत से हमें सिखाया गया बल्कि
रूहुल-क़ुद्स से। यों हम रूहानी हक़ीक़तों की तशरीह रूहानी लोगों के लिए करते हैं। 14 जो शख़्स रूहानी नहीं है
वह अल्लाह के रूह की बातों को क़बूल नहीं करता क्योंकि वह उसके नज़दीक बेवुक़ूफ़ी हैं। वह उन्हें पहचान नहीं
सकता क्योंकि उनकी परख सिर्फ़ रूहानी शख़्स ही कर सकता है। 15 वही हर चीज़ परख लेता है जबकि उस की
अपनी परख कोई नहीं कर सकता। 16 चुनाँचे पाक कलाम में लिखा है,
"किसने रब की सोच को जाना?
कौन उसको तालीम देगा?"
लेकिन हम मसीह की सोच रखते हैं।

3

कुरिंथुस की बचगाना हालत

1 भाइयो, मैं आपसे रूहानी लोगों की बातें न कर सका बल्कि सिर्फ़ जिस्मानी लोगों की। क्योंकि आप अब तक
मसीह में छोटे बच्चे हैं। 2 मैंने आपको दूध पिलाया, ठोस ग़िज़ा न खिलाई, क्योंकि आप उस वक़्त इस क़ाबिल नहीं
थे बल्कि अब तक नहीं हैं। 3 अभी तक आप जिस्मानी हैं, क्योंकि आपमें हसद और झगड़ा पाया जाता है। क्या इससे
यह साबित नहीं होता कि आप जिस्मानी हैं और रूह के बग़ैर चलते हैं? 4 जब कोई कहता है, "मैं पौलुस की पार्टी
का हूँ" और दूसरा, "मैं अपुल्लोस की पार्टी का हूँ" तो क्या इससे यह ज़ाहिर नहीं होता कि आप रूहानी नहीं बल्कि
इनसानी सोच रखते हैं?

पौलुस और अपुल्लोस की हैसियत

5 अपुल्लोस की क्या हैसियत है और पौलुस की क्या? दोनों नौकर हैं जिनके वसीले से आप ईमान लाए। और
हममें से हर एक ने वही ख़िदमत अंजाम दी जो ख़ुदावंद ने उसके सुपुर्द की। 6 मैंने पौदे लगाए, अपुल्लोस पानी देता
रहा, लेकिन अल्लाह ने उन्हें उगने दिया। 7 लिहाज़ा पौदा लगानेवाला और आबपाशी करनेवाला दोनों कुछ भी नहीं,
बल्कि ख़ुदा ही सब कुछ है जो पौदे को फलने फूलने देता है। 8 पौदा लगाने और पानी देनेवाला एक जैसे हैं, अलबत्ता
हर एक को उस की मेहनत के मुताबिक़ मज़दूरी मिलेगी। 9 क्योंकि हम अल्लाह के मुआविन हैं जबकि आप अल्लाह
का खेत और उस की इमारत हैं।

10 अल्लाह के उस फ़ज़्ल के मुताबिक़ जो मुझे बख़्शा गया मैंने एक दानिशमंद ठेकेदार की तरह बुनियाद रखी।
इसके बाद कोई और उस पर इमारत तामीर कर रहा है। लेकिन हर एक ध्यान रखे कि वह बुनियाद पर इमारत किस
तरह बना रहा है। 11 क्योंकि बुनियाद रखी जा चुकी है और वह है ईसा मसीह। इसके अलावा कोई भी मज़ीद कोई
बुनियाद नहीं रख सकता। 12 जो भी इस बुनियाद पर कुछ तामीर करे वह मुख़्तलिफ़ मवाद तो इस्तेमाल कर सकता
है, मसलन सोना, चाँदी, क़ीमती पत्थर, लकड़ी, सूखी घास या भूसा, 13 लेकिन आख़िर में हर एक का काम ज़ाहिर
हो जाएगा। क़ियामत के दिन कुछ पोशीदा नहीं रहेगा बल्कि आग सब कुछ ज़ाहिर कर देगी। वह साबित कर देगी कि
हर किसी ने कैसा काम किया है। 14 अगर उसका तामीरी काम न जला जो उसने इस बुनियाद पर किया तो उसे अज्र
मिलेगा। 15 अगर उसका काम जल गया तो उसे नुक़सान पहुँचेगा। ख़ुद तो वह बच जाएगा मगर जलते जलते।

16 क्या आपको मालूम नहीं कि आप अल्लाह का घर हैं, और आपमें अल्लाह का रूह सुकूनत करता है? 17 अगर
कोई अल्लाह के घर को तबाह करे तो अल्लाह उसे तबाह करेगा, क्योंकि अल्लाह का घर मख़सूसो-मुक़द्दस है और
यह घर आप ही हैं।

अपने बारे में शेख़ी न मारना

18 कोई अपने आपको फ़रेब न दे। अगर आपमें से कोई समझे कि वह इस दुनिया की नज़र में दानिशमंद है तो
फिर ज़रूरी है कि वह बेवुक़ूफ़ बने ताकि वाक़ई दानिशमंद हो जाए। 19 क्योंकि इस दुनिया की हिकमत अल्लाह की
नज़र में बेवुक़ूफ़ी है। चुनाँचे मुक़द्दस नविश्तों में लिखा है, "वह दानिशमंदों को उनकी अपनी चालाकी के फंदे में फँसा
देता है।" 20 यह भी लिखा है, "रब दानिशमंदों के ख़यालात को जानता है कि वह बातिल हैं।" 21 ग़रज़ कोई किसी
इनसान के बारे में शेख़ी न मारे। सब कुछ तो आपका है। 22 पौलुस, अपुल्लोस, कैफ़ा, दुनिया, ज़िंदगी, मौत, मौजूदा
जहान के और मुस्तक़बिल के उमूर सब कुछ आपका है। 23 लेकिन आप मसीह के हैं और मसीह अल्लाह का है।

4

ख़ुदावंद के ख़ादिम और उनका काम

1 ग़रज़ लोग हमें मसीह के ख़ादिम समझें, ऐसे निगरान जिन्हें अल्लाह के भेदों को खोलने की ज़िम्मादारी दी गई
है। 2 अब निगरानों का फ़र्ज़ यह है कि उन पर पूरा एतमाद किया जा सके। 3 मुझे इस बात की ज़्यादा फ़िकर नहीं
कि आप या कोई दुनियावी अदालत मेरा एहतसाब करे, बल्कि मैं ख़ुद भी अपना एहतसाब नहीं करता। 4 मुझे किसी
ग़लती का इल्म नहीं है अगरचे यह बात मुझे रास्तबाज़ क़रार देने के लिए काफ़ी नहीं है। ख़ुदावंद ख़ुद मेरा एहतसाब
करता है। 5 इसलिए वक़्त से पहले किसी बात का फ़ैसला न करें। उस वक़्त तक इंतज़ार करें जब तक ख़ुदावंद न आए।
क्योंकि वही तारीकी में छुपी हुई चीज़ों को रौशनी में लाएगा और दिलों की मनसूबाबंदियों को ज़ाहिर कर देगा। उस
वक़्त अल्लाह ख़ुद हर फ़रद की मुनासिब तारीफ़ करेगा।

कुरिंथियों की शेख़ीबाज़ी

6 भाइयो, मैंने इन बातों का इतलाक़ अपने और अपुल्लोस पर किया ताकि आप हम पर ग़ौर करते हुए अल्लाह के
कलाम की हुदूद जान लें जिनसे तजावुज़ करना मुनासिब नहीं। फिर आप फूलकर एक शख़्स की हिमायत करके दूसरे

की मुख़ालफ़त नहीं करेंगे। 7 क्योंकि कौन आपको किसी दूसरे से अफ़ज़ल क़रार देता है? जो कुछ आपके पास है
क्या वह आपको मुफ़्त नहीं मिला? और अगर मुफ़्त मिला तो इस पर शेख़ी क्यों मारते हैं गोया कि आपने उसे अपनी
मेहनत से हासिल किया हो?

8 वाह जी वाह! आप सेर हो चुके हैं। आप अमीर बन चुके हैं। आप हमारे बग़ैर बादशाह बन चुके हैं। काश आप
बादशाह बन चुके होते ताकि हम भी आपके साथ हुकूमत करते! 9 इसके बजाए मुझे लगता है कि अल्लाह ने हमारे लिए
जो उसके रसूल हैं रोमी तमाशागाह में सबसे निचला दर्जा मुक़र्रर किया है, जो उन लोगों के लिए मख़सूस होता है जिन्हें
सज़ाए-मौत का फ़ैसला सुनाया गया हो। हाँ, हम दुनिया, फ़रिश्तों और इनसानों के सामने तमाशा बन गए हैं। 10 हम
तो मसीह की ख़ातिर बेवुक़ूफ़ बन गए हैं जबकि आप मसीह में समझदार ख़याल किए जाते हैं। हम कमज़ोर हैं जबकि
आप ताक़तवर। आपकी इज़्ज़त की जाती है जबकि हमारी बेइज़्ज़ती। 11 अब तक हमें भूक और प्यास सताती है। हम
चीथड़ों में मलबूस गोया नंगे फिरते हैं। हमें मुक्के मारे जाते हैं। हमारी कोई मुस्तक़िल रिहाइशगाह नहीं। 12 और बड़ी
मशक़्क़त से हम अपने हाथों से रोज़ी कमाते हैं। लान-तान करनेवालों को हम बरकत देते हैं, ईज़ा देनेवालों को बरदाश्त
करते हैं। 13 जो हमें बुरा-भला कहते हैं उन्हें हम दुआ देते हैं। अब तक हम दुनिया का कूड़ा-करकट और ग़िलाज़त बने
फिरते हैं।

पौलुस कुरिंथियों का रूहानी बाप है

14 मैं आपको शरमिंदा करने के लिए यह नहीं लिख रहा, बल्कि अपने प्यारे बच्चे जानकर समझाने की ग़रज़ से।
15 बेशक मसीह ईसा में आपके उस्ताद तो बेशुमार हैं, लेकिन बाप कम हैं। क्योंकि मसीह ईसा में मैं ही आपको अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाकर आपका बाप बना। 16 अब मैं ताकीद करता हूँ कि आप मेरे नमूने पर चलें। 17 इसलिए मैंने
तीमुथियुस को आपके पास भेज दिया जो ख़ुदावंद में मेरा प्यारा और वफ़ादार बेटा है। वह आपको मसीह ईसा में मेरी
उन हिदायात की याद दिलाएगा जो मैं हर जगह और ईमानदारों की हर जमात में देता हूँ।

18 आपमें से बाज़ यों फूल गए हैं जैसे मैं अब आपके पास कभी नहीं आऊँगा। 19 लेकिन अगर ख़ुदावंद की मरज़ी
हुई तो जल्द आकर मालूम करूँगा कि क्या यह फूले हुए लोग सिर्फ़ बातें कर रहे हैं या कि अल्लाह की क़ुदरत उनमें
काम कर रही है। 20 क्योंकि अल्लाह की बादशाही ख़ाली बातों से ज़ाहिर नहीं होती बल्कि अल्लाह की क़ुदरत से।
21 क्या आप चाहते हैं कि मैं छड़ी लेकर आपके पास आऊँ या प्यार और हलीमी की रूह में?

5

ज़िनाकारी

1 यह बात हमारे कानों तक पहुँची है कि आपके दरमियान ज़िनाकारी हो रही है, बल्कि ऐसी ज़िनाकारी जिसे
ग़ैरयहूदी भी रवा नहीं समझते। कहते हैं कि आपमें से किसी ने अपनी सौतेली माँ * से शादी कर रखी है। 2 कमाल है
कि आप इस फ़ेल पर नादिम नहीं बल्कि फूले फिर रहे हैं! क्या मुनासिब न होता कि आप दुख महसूस करके इस बदी
के मुरतकिब को अपने दरमियान से ख़ारिज कर देते? 3 गो मैं जिस्म के लिहाज़ से आपके पास नहीं, लेकिन रूह के
लिहाज़ से ज़रूर हूँ। और मैं उस शख़्स पर फ़तवा इस तरह दे चुका हूँ जैसे कि मैं आपके दरमियान मौजूद हूँ। 4 जब आप
हमारे ख़ुदावंद ईसा के नाम में जमा होंगे तो मैं रूह में आपके साथ हूँगा और हमारे ख़ुदावंद ईसा की क़ुदरत भी। 5 उस
वक़्त ऐसे शख़्स को इबलीस के हवाले करें ताकि सिर्फ़ उसका जिस्म हलाक हो जाए, लेकिन उस की रूह ख़ुदावंद के
दिन रिहाई पाए।

6 आपका फ़ख़र करना अच्छा नहीं। क्या आपको मालूम नहीं कि जब हम थोड़ा-सा ख़मीर ताज़ा गुंधे हुए आटे
में मिलाते हैं तो वह सारे आटे को ख़मीर कर देता है? 7 अपने आपको ख़मीर से पाक-साफ़ करके ताज़ा गुंधा हुआ
आटा बन जाएँ। दर-हक़ीक़त आप हैं भी पाक, क्योंकि हमारा ईदे-फ़सह का लेला मसीह हमारे लिए ज़बह हो चुका
है। 8 इसलिए आइए हम पुराने ख़मीरी आटे यानी बुराई और बदी को दूर करके ताज़ा गुंधे हुए आटे यानी ख़ुलूस और
सच्चाई की रोटियाँ बनाकर फ़सह की ईद मनाएँ।

9 मैंने ख़त में लिखा था कि आप ज़िनाकारों से ताल्लुक़ न रखें। 10 मेरा मतलब यह नहीं था कि आप इस दुनिया
के ज़िनाकारों से ताल्लुक़ मुंक़ते कर लें या इस दुनिया के लालचियों, लुटेरों और बुतपरस्तों से। अगर आप ऐसा करते
तो लाज़िम होता कि आप दुनिया ही से कूच कर जाते। 11 नहीं, मेरा मतलब यह था कि आप ऐसे शख़्स से ताल्लुक़
न रखें जो मसीह में तो भाई कहलाता है मगर है वह ज़िनाकार या लालची या बुतपरस्त या गाली-गलोच करनेवाला या
शराबी या लुटेरा। ऐसे शख़्स के साथ खाना तक भी न खाएँ।

* **5:1** लफ़्ज़ी तरजुमा : बाप की बीवी, लेकिन ग़ालिबन इससे मुराद सौतेली माँ है।

12 मैं उन लोगों की अदालत क्यों करता फिरूँ जो ईमानदारों की जमात से बाहर हैं? क्या आप ख़ुद भी सिर्फ़
उनकी अदालत नहीं करते जो जमात के अंदर हैं? 13 बाहरवालों की अदालत तो ख़ुदा ही करेगा। कलामे-मुक़द्दस में
यों लिखा है, 'शरीर को अपने दरमियान से निकाल दो।'

6

मुक़दमाबाज़ी
1 आपमें यह जुर्रत कैसे पैदा हुई कि जब किसी का किसी दूसरे ईमानदार के साथ तनाज़ा हो तो वह अपना झगड़ा
बेदीनों के सामने ले जाता है न कि मुक़द्दसों के सामने? 2 क्या आप नहीं जानते कि मुक़द्दसीन दुनिया की अदालत
करेंगे? और अगर आप दुनिया की अदालत करेंगे तो क्या आप इस क़ाबिल नहीं कि छोटे मोटे झगड़ों का फ़ैसला
कर सकें? 3 क्या आपको मालूम नहीं कि हम फ़रिश्तों की अदालत करेंगे? तो फिर क्या हम रोज़मर्रा के मामलात
को नहीं निपटा सकते? 4 और इस क़िस्म के मामलात को फ़ैसल करने के लिए आप ऐसे लोगों को क्यों मुक़र्रर करते
हैं जो जमात की निगाह में कोई हैसियत नहीं रखते? 5 यह बात मैं आपको शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ। क्या आपमें
एक भी सयाना शख़्स नहीं जो अपने भाइयों के माबैन फ़ैसला करने के क़ाबिल हो? 6 लेकिन नहीं। भाई अपने ही
भाई पर मुक़दमा चलाता है और वह भी ग़ैरईमानदारों के सामने।
7 अव्वल तो आपसे यह ग़लती हुई कि आप एक दूसरे से मुक़दमाबाज़ी करते हैं। अगर कोई आपसे नाइनसाफ़ी कर
रहा हो तो क्या बेहतर नहीं कि आप उसे ऐसा करने दें? और अगर कोई आपको ठग रहा हो तो क्या यह बेहतर नहीं
कि आप उसे ठगने दें? 8 इसके बरअक्स आपका यह हाल है कि आप ख़ुद ही नाइनसाफ़ी करते और ठगते हैं और
वह भी अपने भाइयों को। 9 क्या आप नहीं जानते कि नाइनसाफ़ अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे? फ़रेब
न खाएँ! हरामकार, बुतपरस्त, ज़िनाकार, हमजिंसपरस्त, लौंडेबाज़, 10 चोर, लालची, शराबी, बदज़बान, लुटेरे, यह
सब अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे। 11 आपमें से कुछ ऐसे थे भी। लेकिन आपको धोया गया, आपको
मुक़द्दस किया गया, आपको ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम और हमारे ख़ुदा के रूह से रास्तबाज़ बनाया गया है।

जिस्म अल्लाह का घर है
12 मेरे लिए सब कुछ जायज़ है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद नहीं। मेरे लिए सब कुछ जायज़ तो है, लेकिन मैं किसी
भी चीज़ को इजाज़त नहीं दूँगा कि मुझ पर हुकूमत करे। 13 बेशक ख़ुराक पेट के लिए और पेट ख़ुराक के लिए है,
मगर अल्लाह दोनों को नेस्त कर देगा। लेकिन हम इससे यह नतीजा नहीं निकाल सकते कि जिस्म ज़िनाकारी के लिए
है। हरगिज़ नहीं! जिस्म ख़ुदावंद के लिए है और ख़ुदावंद जिस्म के लिए। 14 अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से ख़ुदावंद
ईसा को ज़िंदा किया और इसी तरह वह हमें भी ज़िंदा करेगा।
15 क्या आप नहीं जानते कि आपके जिस्म मसीह के आज़ा हैं? तो क्या मैं मसीह के आज़ा को लेकर फ़ाहिशा के
आज़ा बनाऊँ? हरगिज़ नहीं। 16 क्या आपको मालूम नहीं कि जो फ़ाहिशा से लिपट जाता है वह उसके साथ एक तन
हो जाता है? जैसे पाक नविश्तों में लिखा है, "वह दोनों एक हो जाते हैं।" 17 इसके बरअक्स जो ख़ुदावंद से लिपट
जाता है वह उसके साथ एक रूह हो जाता है।
18 ज़िनाकारी से भागें! इनसान से सरज़द होनेवाला हर गुनाह उसके जिस्म से बाहर होता है सिवाए ज़िना के।
ज़िनाकार तो अपने ही जिस्म का गुनाह करता है। 19 क्या आप नहीं जानते कि आपका बदन रूहुल-क़ुद्स का घर
है जो आपके अंदर सुकूनत करता है और जो आपको अल्लाह की तरफ़ से मिला है? आप अपने मालिक नहीं हैं
20 क्योंकि आपको क़ीमत अदा करके ख़रीदा गया है। अब अपने बदन से अल्लाह को जलाल दें।

7

इज़दिवाजी ज़िंदगी
1 अब मैं आपके सवालात का जवाब देता हूँ। बेशक अच्छा है कि मर्द शादी न करे। 2 लेकिन ज़िनाकारी से बचने
की ख़ातिर हर मर्द की अपनी बीवी और हर औरत का अपना शौहर हो। 3 शौहर अपनी बीवी का हक़ अदा करे और
इसी तरह बीवी अपने शौहर का। 4 बीवी अपने जिस्म पर इख़्तियार नहीं रखती बल्कि उसका शौहर। इसी तरह शौहर
भी अपने जिस्म पर इख़्तियार नहीं रखता बल्कि उस की बीवी। 5 चुनाँचे एक दूसरे से जुदा न हों सिवाए इसके कि
आप दोनों बाहमी रज़ामंदी से एक वक़्त मुक़र्रर कर लें ताकि दुआ के लिए ज़्यादा फ़ुरसत मिल सके। लेकिन इसके बाद
आप दुबारा इकट्ठे हो जाएँ ताकि इबलीस आपके बेज़ब्त नफ़स से फ़ायदा उठाकर आपको आज़माइश में न डाले।

6 यह मैं हुक्म के तौर पर नहीं बल्कि आपके हालात के पेशे-नज़र रिआयतन कह रहा हूँ। 7 मैं चाहता हूँ कि तमाम
लोग मुझ जैसे ही हों। लेकिन हर एक को अल्लाह की तरफ़ से अलग नेमत मिली है, एक को यह नेमत, दूसरे को वह।

तलाक़ और ग़ैरईमानदार से शादी

8 मैं ग़ैरशादीशुदा अफ़राद और बेवाओं से यह कहता हूँ कि अच्छा हो अगर आप मेरी तरह ग़ैरशादीशुदा रहें। 9 लेकिन
अगर आप अपने आप पर क़ाबू न रख सकें तो शादी कर लें। क्योंकि इससे पेशतर कि आपके शहवानी जज़बात बेलगाम
होने लगें बेहतर यह है कि आप शादी कर लें।
10 शादीशुदा जोड़ों को मैं नहीं बल्कि ख़ुदावंद हुक्म देता है कि बीवी अपने शौहर से ताल्लुक़ मुंक़ते न करे।
11 अगर वह ऐसा कर चुकी हो तो दूसरी शादी न करे या अपने शौहर से सुलह कर ले। इसी तरह शौहर भी अपनी बीवी
को तलाक़ न दे।
12 दीगर लोगों को ख़ुदावंद नहीं बल्कि मैं नसीहत करता हूँ कि अगर किसी ईमानदार भाई की बीवी ईमान नहीं
लाई, लेकिन वह शौहर के साथ रहने पर राज़ी हो तो फिर वह अपनी बीवी को तलाक़ न दे। 13 इसी तरह अगर किसी
ईमानदार ख़ातून का शौहर ईमान नहीं लाया, लेकिन वह बीवी के साथ रहने पर रज़ामंद हो तो वह अपने शौहर को
तलाक़ न दे। 14 क्योंकि जो शौहर ईमान नहीं लाया उसे उस की ईमानदार बीवी की मारिफ़त मुक़द्दस ठहराया गया है
और जो बीवी ईमान नहीं लाई उसे उसके ईमानदार शौहर की मारिफ़त मुक़द्दस क़रार दिया गया है। अगर ऐसा न होता
तो आपके बच्चे नापाक होते, मगर अब वह मुक़द्दस हैं। 15 लेकिन अगर ग़ैरईमानदार शौहर या बीवी अपना ताल्लुक़
मुंक़ते कर ले तो उसे जाने दें। ऐसी सूरत में ईमानदार भाई या बहन इस बंधन से आज़ाद हो गए। मगर अल्लाह ने आपको
सुलह-सलामती की ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बुलाया है। 16 बहन, मुमकिन है आप अपने ख़ाविंद की नजात का बाइस
बन जाएँ। या भाई, मुमकिन है आप अपनी बीवी की नजात का बाइस बन जाएँ।

अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्ररा राह पर रहें

17 हर शख़्स उसी राह पर चले जो ख़ुदावंद ने उसके लिए मुक़र्रर की और उस हालत में जिसमें अल्लाह ने उसे
बुलाया है। ईमानदारों की तमाम जमातों के लिए मेरी यही हिदायत है। 18 अगर किसी को मख़तून हालत में बुलाया
गया तो वह नामख़तून होने की कोशिश न करे। अगर किसी को नामख़तूनी की हालत में बुलाया गया तो वह अपना
ख़तना न करवाए। 19 न ख़तना कुछ चीज़ है और न ख़तने का न होना, बल्कि अल्लाह के अहकाम के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारना ही सब कुछ है। 20 हर शख़्स उसी हैसियत में रहे जिसमें उसे बुलाया गया था। 21 क्या आप ग़ुलाम
थे जब ख़ुदावंद ने आपको बुलाया? यह बात आपको परेशान न करे। अलबत्ता अगर आपको आज़ाद होने का मौक़ा
मिले तो इससे ज़रूर फ़ायदा उठाएँ। 22 क्योंकि जो उस वक़्त ग़ुलाम था जब ख़ुदावंद ने उसे बुलाया वह अब ख़ुदावंद
का आज़ाद किया हुआ है। इसी तरह जो आज़ाद था जब उसे बुलाया गया वह अब मसीह का ग़ुलाम है। 23 आपको
क़ीमत देकर ख़रीदा गया है, इसलिए इनसान के ग़ुलाम न बनें। 24 भाइयो, हर शख़्स जिस हालत में बुलाया गया उसी
में वह अल्लाह के सामने क़ायम रहे।

ग़ैरशादीशुदा लोग

25 कुँवारियों के बारे में मुझे ख़ुदावंद की तरफ़ से कोई ख़ास हुक्म नहीं मिला। तो भी मैं जिसे अल्लाह ने अपनी
रहमत से क़ाबिले-एतमाद बनाया है आप पर अपनी राय का इज़हार करता हूँ।
26 मेरी दानिस्त में मौजूदा मुसीबत के पेशे-नज़र इनसान के लिए अच्छा है कि ग़ैरशादीशुदा रहे। 27 अगर आप
किसी ख़ातून के साथ शादी के बंधन में बँध चुके हैं तो फिर इस बंधन को तोड़ने की कोशिश न करें। लेकिन अगर आप
शादी के बंधन में नहीं बँधे तो फिर इसके लिए कोशिश न करें। 28 ताहम अगर आपने शादी कर ही ली है तो आपने
गुनाह नहीं किया। इसी तरह अगर कुँवारी शादी कर चुकी है तो यह गुनाह नहीं। मगर ऐसे लोग जिस्मानी तौर पर
मुसीबत में पड़ जाएँगे जबकि मैं आपको इससे बचाना चाहता हूँ।
29 भाइयो, मैं तो यह कहता हूँ कि वक़्त थोड़ा है। आइंदा शादीशुदा ऐसे ज़िंदगी बसर करें जैसे कि ग़ैरशादीशुदा हैं।
30 रोनेवाले ऐसे हों जैसे नहीं रो रहे। ख़ुशी मनानेवाले ऐसे हों जैसे ख़ुशी नहीं मना रहे। ख़रीदनेवाले ऐसे हों जैसे उनके
पास कुछ भी नहीं। 31 दुनिया से फ़ायदा उठानेवाले ऐसे हों जैसे इसका कोई फ़ायदा नहीं। क्योंकि इस दुनिया की
मौजूदा शक्लो-सूरत ख़त्म होती जा रही है।
32 मैं तो चाहता हूँ कि आप फ़िकरों से आज़ाद रहें। ग़ैरशादीशुदा शख़्स ख़ुदावंद के मामलों की फ़िकर में रहता है कि
किस तरह उसे ख़ुश करे। 33 इसके बरअक्स शादीशुदा शख़्स दुनियावी फ़िकर में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी
को ख़ुश करे। 34 यों वह बड़ी कश-म-कश में मुब्तला रहता है। इसी तरह ग़ैरशादीशुदा ख़ातून और कुँवारी ख़ुदावंद की

फ़िकर में रहती है कि वह जिस्मानी और रूहानी तौर पर उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हो। इसके मुक़ाबले में शादीशुदा
ख़ातून दुनियावी फ़िकर में रहती है कि अपने ख़ाविंद को किस तरह ख़ुश करे।
35 मैं यह आप ही के फ़ायदे के लिए कहता हूँ। मक़सद यह नहीं कि आप पर पाबंदियाँ लगाई जाएँ बल्कि यह कि
आप शराफ़त, साबितक़दमी और यकसूई के साथ ख़ुदावंद की हुज़ूरी में चलें।
36 अगर कोई समझता है, 'मैं अपनी कुँवारी मंगेतर से शादी न करने से उसका हक़ मार रहा हूँ' या यह कि 'मेरी
उसके लिए ख़ाहिश हद से ज़्यादा है, इसलिए शादी होनी चाहिए' तो फिर वह अपने इरादे को पूरा करे, यह गुनाह नहीं।
वह शादी कर ले। 37 लेकिन इसके बरअक्स अगर उसने शादी न करने का पुख़्ता अज़म कर लिया है और वह मजबूर
नहीं बल्कि अपने इरादे पर इख़्तियार रखता है और उसने अपने दिल में फ़ैसला कर लिया है कि अपनी कुँवारी लड़की
को ऐसे ही रहने दे तो उसने अच्छा किया। 38 ग़रज़ जिसने अपनी कुँवारी मंगेतर से शादी कर ली है उसने अच्छा किया
है, लेकिन जिसने नहीं की उसने और भी अच्छा किया है।
39 जब तक ख़ाविंद ज़िंदा है बीवी को उससे रिश्ता तोड़ने की इजाज़त नहीं। ख़ाविंद की वफ़ात के बाद वह आज़ाद
है कि जिससे चाहे शादी कर ले, मगर सिर्फ़ ख़ुदावंद में। 40 लेकिन मेरी दानिस्त में अगर वह ऐसे ही रहे तो ज़्यादा
मुबारक होगी। और मैं समझता हूँ कि मुझमें भी अल्लाह का रूह है।

8

बुतों की क़ुरबानियाँ

1 अब मैं बुतों की क़ुरबानी के बारे में बात करता हूँ। हम जानते हैं कि हम सब साहबे-इल्म हैं। इल्म इनसान के फूलने
का बाइस बनता है जबकि मुहब्बत उस की तामीर करती है। 2 जो समझता है कि उसने कुछ जान लिया है उसने अब
तक उस तरह नहीं जाना जिस तरह उसको जानना चाहिए। 3 लेकिन जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है उसे अल्लाह ने
जान लिया है।
4 बुतों की क़ुरबानी खाने के ज़िम्न में हम जानते हैं कि दुनिया में बुत कोई चीज़ नहीं और कि रब के सिवा कोई और
ख़ुदा नहीं है। 5 बेशक आसमानो-ज़मीन पर कई नाम-निहाद देवता होते हैं, हाँ दरअसल बहुतेरे देवताओं और ख़ुदावंदों
की पूजा की जाती है। 6 तो भी हम जानते हैं कि फ़क़त एक ही ख़ुदा है, हमारा बाप जिसने सब कुछ पैदा किया है और
जिसके लिए हम ज़िंदगी गुज़ारते हैं। और एक ही ख़ुदावंद है यानी ईसा मसीह जिसके वसीले से सब कुछ वुजूद में आया
है और जिससे हमें ज़िंदगी हासिल है।
7 लेकिन हर किसी को इसका इल्म नहीं। बाज़ ईमानदार तो अब तक यह सोचने के आदी हैं कि बुत का वुजूद है।
इसलिए जब वह किसी बुत की क़ुरबानी का गोश्त खाते हैं तो वह समझते हैं कि हम ऐसा करने से उस बुत की पूजा
कर रहे हैं। यों उनका ज़मीर कमज़ोर होने की वजह से आलूदा हो जाता है। 8 हक़ीक़त तो यह है कि हमारा अल्लाह
को पसंद आना इस बात पर मबनी नहीं कि हम क्या खाते हैं और क्या नहीं खाते। न परहेज़ करने से हमें कोई नुक़सान
पहुँचता है और न खा लेने से कोई फ़ायदा।
9 लेकिन ख़बरदार रहें कि आपकी यह आज़ादी कमज़ोरों के लिए ठोकर का बाइस न बने। 10 क्योंकि अगर
कोई कमज़ोरज़मीर शख़्स आपको बुतख़ाने में खाना खाते हुए देखे तो क्या उसे उसके ज़मीर के ख़िलाफ़ बुतों की
क़ुरबानियाँ खाने पर उभारा नहीं जाएगा? 11 इस तरह आपका कमज़ोर भाई जिसकी ख़ातिर मसीह क़ुरबान हुआ
आपके इल्मो-इरफ़ान की वजह से हलाक हो जाएगा। 12 जब आप इस तरह अपने भाइयों का गुनाह करते और उनके
कमज़ोर ज़मीर को मजरूह करते हैं तो आप मसीह का ही गुनाह करते हैं। 13 इसलिए अगर ऐसा खाना मेरे भाई को
सहीह राह से भटकाने का बाइस बने तो मैं कभी गोश्त नहीं खाऊँगा ताकि अपने भाई की गुमराही का बाइस न बनूँ।

9

रसूल का हक़

1 क्या मैं आज़ाद नहीं? क्या मैं मसीह का रसूल नहीं? क्या मैंने ईसा को नहीं देखा जो हमारा ख़ुदावंद है? क्या
आप ख़ुदावंद में मेरी मेहनत का फल नहीं हैं? 2 अगरचे मैं दूसरों के नज़दीक मसीह का रसूल नहीं, लेकिन आपके
नज़दीक तो ज़रूर हूँ। ख़ुदावंद में आप ही मेरी रिसालत पर मुहर हैं।
3 जो मेरी बाज़पुर्स करना चाहते हैं उन्हें मैं अपने दिफ़ा में कहता हूँ, 4 क्या हमें खाने-पीने का हक़ नहीं? 5 क्या
हमें हक़ नहीं कि शादी करके अपनी बीवी को साथ लिए फिरें? दूसरे रसूल और ख़ुदावंद के भाई और कैफ़ा तो ऐसा
ही करते हैं। 6 क्या मुझे और बरनबास ही को अपनी ख़िदमत के अज्र में कुछ पाने का हक़ नहीं? 7 कौन-सा फ़ौजी

अपने ख़र्च पर जंग लड़ता है? कौन अंगूर का बाग़ लगाकर उसके फल से अपना हिस्सा नहीं पाता? या कौन रेवड़
की गल्लाबानी करके उसके दूध से अपना हिस्सा नहीं पाता?

8 क्या मैं यह फ़क़त इनसानी सोच के तहत कह रहा हूँ? क्या शरीअत भी यही नहीं कहती? 9 तौरेत में लिखा है,
"जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।" क्या अल्लाह सिर्फ़ बैलों
की फ़िकर करता है 10 या वह हमारी ख़ातिर यह फ़रमाता है? हाँ, ज़रूर हमारी ख़ातिर क्योंकि हल चलानेवाला इस
उम्मीद पर चलाता है कि उसे कुछ मिलेगा। इसी तरह गाहनेवाला इस उम्मीद पर गाहता है कि वह पैदावार में से अपना
हिस्सा पाएगा। 11 हमने आपके लिए रूहानी बीज बोया है। तो क्या यह नामुनासिब है अगर हम आपसे जिस्मानी फ़सल
काटें? 12 अगर दूसरों को आपसे अपना हिस्सा लेने का हक़ है तो क्या हमारा उनसे ज़्यादा हक़ नहीं बनता?

लेकिन हमने इस हक़ से फ़ायदा नहीं उठाया। हम सब कुछ बरदाश्त करते हैं ताकि मसीह की ख़ुशख़बरी के लिए
किसी भी तरह से रुकावट का बाइस न बनें। 13 क्या आप नहीं जानते कि बैतुल-मुक़द्दस में ख़िदमत करनेवालों की
ज़रूरियात बैतुल-मुक़द्दस ही से पूरी की जाती हैं? जो क़ुरबानियाँ चढ़ाने के काम में मसरूफ़ रहते हैं उन्हें क़ुरबानियों
से ही हिस्सा मिलता है। 14 इसी तरह ख़ुदावंद ने मुक़र्रर किया है कि इंजील की ख़ुशख़बरी की मुनादी करनेवालों की
ज़रूरियात उनसे पूरी की जाएँ जो इस ख़िदमत से फ़ायदा उठाते हैं।

15 लेकिन मैंने किसी तरह भी इससे फ़ायदा नहीं उठाया, और न इसलिए लिखा है कि मेरे साथ ऐसा सुलूक किया
जाए। नहीं, इससे पहले कि फ़ख़र करने का मेरा यह हक़ मुझसे छीन लिया जाए बेहतर यह है कि मैं मर जाऊँ।
16 लेकिन अल्लाह की ख़ुशख़बरी की मुनादी करना मेरे लिए फ़ख़र का बाइस नहीं। मैं तो यह करने पर मजबूर हूँ।
मुझ पर अफ़सोस अगर इस ख़ुशख़बरी की मुनादी न करूँ। 17 अगर मैं यह अपनी मरज़ी से करता तो फिर अज्र का मेरा
हक़ बनता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि ख़ुदा ही ने मुझे यह ज़िम्मादारी दी है। 18 तो फिर मेरा अज्र क्या है? यह कि मैं
इंजील की ख़ुशख़बरी मुफ़्त सुनाऊँ और अपने उस हक़ से फ़ायदा न उठाऊँ जो मुझे उस की मुनादी करने से हासिल है।

19 अगरचे मैं सब लोगों से आज़ाद हूँ फिर भी मैंने अपने आपको सबका ग़ुलाम बना लिया ताकि ज़्यादा से ज़्यादा
लोगों को जीत लूँ। 20 मैं यहूदियों के दरमियान यहूदी की मानिंद बना ताकि यहूदियों को जीत लूँ। मूसवी शरीअत
के तहत ज़िंदगी गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उनकी मानिंद बना ताकि उन्हें जीत लूँ, गो मैं शरीअत के मातहत नहीं।
21 मूसवी शरीअत के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उन्हीं की मानिंद बना ताकि उन्हें जीत लूँ। इसका
मतलब यह नहीं कि मैं अल्लाह की शरीअत के ताबे नहीं हूँ। हक़ीक़त में मैं मसीह की शरीअत के तहत ज़िंदगी
गुज़ारता हूँ। 22 मैं कमज़ोरों के लिए कमज़ोर बना ताकि उन्हें जीत लूँ। सबके लिए मैं सब कुछ बना ताकि हर मुमकिन
तरीक़े से बाज़ को बचा सकूँ। 23 जो कुछ भी करता हूँ अल्लाह की ख़ुशख़बरी के वास्ते करता हूँ ताकि इसकी बरकात
में शरीक हो जाऊँ।

24 क्या आप नहीं जानते कि स्टेडियम में दौड़ते तो सब ही हैं, लेकिन इनाम एक ही शख़्स हासिल करता है?
चुनाँचे ऐसे दौड़ें कि आप ही जीतें। 25 खेलों में शरीक होनेवाला हर शख़्स अपने आपको सख़्त नज़मो-ज़ब्त का पाबंद
रखता है। वह फ़ानी ताज पाने के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन हम ग़ैरफ़ानी ताज पाने के लिए। 26 चुनाँचे मैं हर वक़्त
मनज़िले-मक़सूद को पेशे-नज़र रखते हुए दौड़ता हूँ। और मैं इसी तरह बाक्सिंग भी करता हूँ, मैं हवा में मुक्के नहीं
मारता बल्कि निशाने को। 27 मैं अपने बदन को मारता कूटता और इसे अपना ग़ुलाम बनाता हूँ, ऐसा न हो कि दूसरों में
मुनादी करके ख़ुद नामक़बूल ठहरूँ।

10

इसराईल का इबरतनाक तजरबा

1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप इस बात से नावाक़िफ़ रहें कि हमारे बापदादा सब बादल के नीचे थे। वह सब
समुंदर में से गुज़रे। 2 उन सबने बादल और समुंदर में मूसा का बपतिस्मा लिया। 3 सबने एक ही रूहानी ख़ुराक खाई
4 और सबने एक ही रूहानी पानी पिया। क्योंकि मसीह रूहानी चटान की सूरत में उनके साथ साथ चलता रहा और वही
उन सबको पानी पिलाता रहा। 5 इसके बावुजूद उनमें से बेशतर लोग अल्लाह को पसंद न आए, इसलिए वह रेगिस्तान
में हलाक हो गए।

6 यह सब कुछ हमारी इबरत के लिए वाक़े हुआ ताकि हम उन लोगों की तरह बुरी चीज़ों की हवस न करें। 7 उनमें
से बाज़ की तरह बुतपरस्त न बनें, जैसे मुक़द्दस नविश्तों में लिखा है, "लोग खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर
रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।" 8 हम ज़िना भी न करें जैसे उनमें से बाज़ ने किया और नतीजे में एक ही दिन
में 23,000 अफ़राद ढेर हो गए। 9 हम ख़ुदावंद की आज़माइश भी न करें जिस तरह उनमें से बाज़ ने की और नतीजे

में साँपों से हलाक हुए। 10 और न बुडबुडाएँ जिस तरह उनमें से बाज़ बुडबुडाने लगे और नतीजे में हलाक करनेवाले
फ़रिश्ते के हाथों मारे गए।
11 यह माजरे इबरत की ख़ातिर उन पर वाक़े हुए और हम अख़ीर ज़माने में रहनेवालों की नसीहत के लिए लिखे
गए।
12 ग़रज़ जो समझता है कि वह मज़बूती से खड़ा है, ख़बरदार रहे कि गिर न पड़े। 13 आप सिर्फ़ ऐसी आज़माइशों
में पड़े हैं जो इनसान के लिए आम होती हैं। और अल्लाह वफ़ादार है। वह आपको आपकी ताक़त से ज़्यादा आज़माइश
में नहीं पड़ने देगा। जब आप आज़माइश में पड़ जाएंगे तो वह उसमें से निकलने की राह भी पैदा कर देगा ताकि आप
उसे बरदाश्त कर सकें।

अशाए-रब्बानी और बुतपरस्ती में तज़ाद

14 ग़रज़ मेरे प्यारो, बुतपरस्ती से भागें। 15 मैं आपको समझदार जानकर बात कर रहा हूँ। आप ख़ुद मेरी इस बात
का फ़ैसला करें। 16 जब हम अशाए-रब्बानी के मौक़े पर बरकत के प्याले को बरकत देकर उसमें से पीते हैं तो क्या
हम यों मसीह के ख़ून में शरीक नहीं होते? और जब हम रोटी तोड़कर खाते हैं तो क्या मसीह के बदन में शरीक नहीं
होते? 17 रोटी तो एक ही है, इसलिए हम जो बहुत-से हैं एक ही बदन हैं, क्योंकि हम सब एक ही रोटी में शरीक होते
हैं।
18 बनी इसराईल पर ग़ौर करें। क्या बैतुल-मुक़द्दस में क़ुरबानियाँ खानेवाले क़ुरबानगाह की रिफ़ाक़त में शरीक नहीं
होते? 19 क्या मैं यह कहना चाहता हूँ कि बुतों के चढ़ावे की कोई हैसियत है? या कि बुत की कोई हैसियत है?
हरगिज़ नहीं। 20 मैं यह कहता हूँ कि जो क़ुरबानियाँ वह गुज़रानते हैं अल्लाह को नहीं बल्कि शयातीन को गुज़रानते हैं।
और मैं नहीं चाहता कि आप शयातीन की रिफ़ाक़त में शरीक हों। 21 आप ख़ुदावंद के प्याले और साथ ही शयातीन
के प्याले से नहीं पी सकते। आप ख़ुदावंद के रिफ़ाक़ती खाने और साथ ही शयातीन के रिफ़ाक़ती खाने में शरीक नहीं
हो सकते। 22 या क्या हम अल्लाह की ग़ैरत को उकसाना चाहते हैं? क्या हम उससे ताक़तवर हैं?

दूसरों के ज़मीर का लिहाज़ करना

23 सब कुछ रवा तो है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद नहीं। सब कुछ जायज़ तो है, लेकिन सब कुछ हमारी तामीरो-तरक़्क़ी
का बाइस नहीं होता। 24 हर कोई अपने ही फ़ायदे की तलाश में न रहे बल्कि दूसरे के।
25 बाज़ार में जो कुछ बिकता है उसे खाएँ और अपने ज़मीर को मुतमइन करने की ख़ातिर पूछ-गछ न करें, 26 क्योंकि
"ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का है।"
27 अगर कोई ग़ैरईमानदार आपकी दावत करे और आप उस दावत को क़बूल कर लें तो आपके सामने जो कुछ भी
रखा जाए उसे खाएँ। अपने ज़मीर के इतमीनान के लिए तफ़तीश न करें। 28 लेकिन अगर कोई आपको बता दे, "यह
बुतों का चढ़ावा है" तो फिर उस शख़्स की ख़ातिर जिसने आपको आगाह किया है और ज़मीर की ख़ातिर उसे न खाएँ।
29 मतलब है अपने ज़मीर की ख़ातिर नहीं बल्कि दूसरे के ज़मीर की ख़ातिर। क्योंकि यह किस तरह हो सकता है कि
किसी दूसरे का ज़मीर मेरी आज़ादी के बारे में फ़ैसला करे? 30 अगर मैं ख़ुदा का शुक्र करके किसी खाने में शरीक
होता हूँ तो फिर मुझे क्यों बुरा कहा जाए? मैं तो उसे ख़ुदा का शुक्र करके खाता हूँ।
31 चुनाँचे सब कुछ अल्लाह के जलाल की ख़ातिर करें, ख़ाह आप खाएँ, पिएँ या और कुछ करें। 32 किसी के
लिए ठोकर का बाइस न बनें, न यहूदियों के लिए, न यूनानियों के लिए और न अल्लाह की जमात के लिए। 33 इसी
तरह मैं भी सबको पसंद आने की हर मुमकिन कोशिश करता हूँ। मैं अपने ही फ़ायदे के ख़याल में नहीं रहता बल्कि
दूसरों के ताकि बहुतेरे नजात पाएँ।

11

1 मेरे नमूने पर चलें जिस तरह मैं मसीह के नमूने पर चलता हूँ।

इबादत में ख़वातीन का किरदार

2 शाबाश कि आप हर तरह से मुझे याद रखते हैं। आपने रिवायात को यों महफ़ूज़ रखा है जिस तरह मैंने उन्हें आपके
सुपुर्द किया था। 3 लेकिन मैं आपको एक और बात से आगाह करना चाहता हूँ। हर मर्द का सर मसीह है जबकि औरत
का सर मर्द और मसीह का सर अल्लाह है। 4 अगर कोई मर्द सर ढाँककर दुआ या नबुव्वत करे तो वह अपने सर की
बेइज़्ज़ती करता है। 5 और अगर कोई ख़ातून नंगे सर दुआ या नबुव्वत करे तो वह अपने सर की बेइज़्ज़ती करती है,
गोया वह सर मुंडी है। 6 जो औरत अपने सर पर दोपट्टा नहीं लेती वह टिंड करवाए। लेकिन अगर टिंड करवाना या
सर मुँडवाना उसके लिए बेइज़्ज़ती का बाइस है तो फिर वह अपने सर को ज़रूर ढाँके। 7 लेकिन मर्द के लिए लाज़िम है

कि वह अपने सर को न ढाँके क्योंकि वह अल्लाह की सूरत और जलाल को मुनअकिस करता है। लेकिन औरत मर्द
का जलाल मुनअकिस करती है, 8 क्योंकि पहला मर्द औरत से नहीं निकला बल्कि औरत मर्द से निकली है। 9 मर्द को
औरत के लिए ख़लक़ नहीं किया गया बल्कि औरत को मर्द के लिए। 10 इस वजह से औरत फ़रिश्तों को पेशे-नज़र
रखकर अपने सर पर दोपट्टा ले जो उस पर इख़्तियार का निशान है। 11 लेकिन याद रहे कि ख़ुदावंद में न औरत मर्द के
बग़ैर कुछ है और न मर्द औरत के बग़ैर। 12 क्योंकि अगरचे इब्तिदा में औरत मर्द से निकली, लेकिन अब मर्द औरत
ही से पैदा होता है। और हर शै अल्लाह से निकलती है।

13 आप ख़ुद फ़ैसला करें। क्या मुनासिब है कि कोई औरत अल्लाह के सामने नंगे सर दुआ करे? 14 क्या फ़ितरत
भी यह नहीं सिखाती कि लंबे बाल मर्द की बेइज़्ज़ती का बाइस हैं 15 जबकि औरत के लंबे बाल उस की इज़्ज़त का
मूजिब हैं? क्योंकि बाल उसे ढाँपने के लिए दिए गए हैं। 16 लेकिन इस सिलसिले में अगर कोई झगड़ने का शौक़ रखे
तो जान ले कि न हमारा यह दस्तूर है, न अल्लाह की जमातों का।

अशाए-रब्बानी

17 मैं आपको एक और हिदायत देता हूँ। लेकिन इस सिलसिले में मेरे पास आपके लिए तारीफ़ी अलफ़ाज़ नहीं,
क्योंकि आपका जमा होना आपकी बेहतरी का बाइस नहीं होता बल्कि नुक़सान का बाइस। 18 अव्वल तो मैं सुनता हूँ
कि जब आप जमात की सूरत में इकट्ठे होते हैं तो आपके दरमियान पार्टीबाज़ी नज़र आती है। और किसी हद तक मुझे
इसका यक़ीन भी है। 19 लाज़िम है कि आपके दरमियान मुख़्तलिफ़ पार्टियाँ नज़र आएँ ताकि आपमें से वह ज़ाहिर हो
जाएँ जो आज़माने के बाद भी सच्चे निकलें। 20 जब आप जमा होते हैं तो जो खाना आप खाते हैं उसका अशाए-रब्बानी
से कोई ताल्लुक़ नहीं रहा। 21 क्योंकि हर शख़्स दूसरों का इंतज़ार किए बग़ैर अपना खाना खाने लगता है। नतीजे में
एक भूका रहता है जबकि दूसरे को नशा हो जाता है। 22 ताज्जुब है! क्या खाने-पीने के लिए आपके घर नहीं? या क्या
आप अल्लाह की जमात को हक़ीर जानकर उनको जो ख़ाली हाथ आए हैं शरमिंदा करना चाहते हैं? मैं क्या कहूँ?
क्या आपको शाबाश दूँ? इसमें मैं आपको शाबाश नहीं दे सकता।

23 क्योंकि जो कुछ मैंने आपके सुपुर्द किया है वह मुझे ख़ुदावंद ही से मिला है। जिस रात ख़ुदावंद ईसा को दुश्मन
के हवाले कर दिया गया उसने रोटी लेकर 24 शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके कहा, "यह मेरा बदन
है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।" 25 इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला
लेकर कहा, "मै का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ायम किया जाता है। जब कभी इसे पियो तो
मुझे याद करने के लिए पियो।" 26 क्योंकि जब भी आप यह रोटी खाते और यह प्याला पीते हैं तो ख़ुदावंद की मौत
का एलान करते हैं, जब तक वह वापस न आए।

27 चुनाँचे जो नालायक़ तौर पर ख़ुदावंद की रोटी खाए और उसका प्याला पिए वह ख़ुदावंद के बदन और ख़ून का
गुनाह करता है और क़ुसूरवार ठहरेगा। 28 हर शख़्स अपने आपको परखकर ही इस रोटी में से खाए और प्याले में से
पिए। 29 जो रोटी खाते और प्याला पीते वक़्त ख़ुदावंद के बदन का एहतराम नहीं करता वह अपने आप पर अल्लाह
की अदालत लाता है। 30 इसी लिए आपके दरमियान बहुतेरे कमज़ोर और बीमार हैं बल्कि बहुत-से मौत की नींद सो
चुके हैं। 31 अगर हम अपने आपको जाँचते तो अल्लाह की अदालत से बचे रहते। 32 लेकिन ख़ुदावंद हमारी अदालत
करने से हमारी तरबियत करता है ताकि हम दुनिया के साथ मुजरिम न ठहरें।

33 ग़रज़ मेरे भाइयो, जब आप खाने के लिए जमा होते हैं तो एक दूसरे का इंतज़ार करें। 34 अगर किसी को भूक
लगी हो तो वह अपने घर में ही खाना खा ले ताकि आपका जमा होना आपकी अदालत का बाइस न ठहरे। दीगर
हिदायात मैं आपको उस वक़्त दूँगा जब आपके पास आऊँगा।

12

एक रूह और मुख़्तलिफ़ नेमतें

1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप रूहानी नेमतों के बारे में नावाक़िफ़ रहें। 2 आप जानते हैं कि ईमान लाने से पेशतर
आपको बार बार बहकाया और गूँगे बुतों की तरफ़ खींचा जाता था। 3 इसी के पेशे-नज़र मैं आपको आगाह करता हूँ
कि अल्लाह के रूह की हिदायत से बोलनेवाला कभी नहीं कहेगा, "ईसा पर लानत।" और रूहुल-क़ुद्स की हिदायत
से बोलनेवाले के सिवा कोई नहीं कहेगा, "ईसा ख़ुदावंद है।"

4 गो तरह तरह की नेमतें होती हैं, लेकिन रूह एक ही है। 5 तरह तरह की ख़िदमतें होती हैं, लेकिन ख़ुदावंद एक
ही है। 6 अल्लाह अपनी क़ुदरत का इज़हार मुख़्तलिफ़ अंदाज़ से करता है, लेकिन ख़ुदा एक ही है जो सबमें हर तरह
का काम करता है। 7 हममें से हर एक में रूहुल-क़ुद्स का इज़हार किसी नेमत से होता है। यह नेमतें इसलिए दी जाती

हैं ताकि हम एक दूसरे की मदद करें। 8 एक को रूहुल-क़ुद्स हिकमत का कलाम अता करता है, दूसरे को वही रूह
इल्मो-इरफ़ान का कलाम। 9 तीसरे को वही रूह पुख़्ता ईमान देता है और चौथे को वही एक रूह शफ़ा देने की नेमतें।
10 वह एक को मोजिज़े करने की ताक़त देता है, दूसरे को नबुव्वत करने की सलाहियत और तीसरे को मुख़्तलिफ़ रूहों
में इम्तियाज़ करने की नेमत। एक को उससे ग़ैरज़बानें बोलने की नेमत मिलती है और दूसरे को इनका तरजुमा करने
की। 11 वही एक रूह यह तमाम नेमतें तक़सीम करता है। और वही फ़ैसला करता है कि किस को क्या नेमत मिलनी
है।

एक जिस्म और मुख़्तलिफ़ आज़ा

12 इनसानी जिस्म के बहुत-से आज़ा होते हैं, लेकिन यह तमाम आज़ा एक ही बदन को तश्कील देते हैं। मसीह
का बदन भी ऐसा है। 13 ख़ाह हम यहूदी थे या यूनानी, ग़ुलाम थे या आज़ाद, बपतिस्मे से हम सबको एक ही रूह की
मारिफ़त एक ही बदन में शामिल किया गया है, हम सबको एक ही रूह पिलाया गया है।
14 बदन के बहुत-से हिस्से होते हैं, न सिर्फ़ एक। 15 फ़र्ज़ करें कि पाँव कहे, "मैं हाथ नहीं हूँ इसलिए बदन का
हिस्सा नहीं।" क्या यह कहने पर उसका बदन से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाएगा? 16 या फ़र्ज़ करें कि कान कहे, "मैं आँख
नहीं हूँ इसलिए बदन का हिस्सा नहीं।" क्या यह कहने पर उसका बदन से नाता टूट जाएगा? 17 अगर पूरा जिस्म
आँख ही होता तो फिर सुनने की सलाहियत कहाँ होती? अगर सारा बदन कान ही होता तो फिर सूँघने का क्या बनता?
18 लेकिन अल्लाह ने जिस्म के मुख़्तलिफ़ आज़ा बनाकर हर एक को वहाँ लगाया जहाँ वह चाहता था। 19 अगर एक
ही अज़ु पूरा जिस्म होता तो फिर यह किस क़िस्म का जिस्म होता? 20 नहीं, बहुत-से आज़ा होते हैं, लेकिन जिस्म एक
ही है।
21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरी ज़रूरत नहीं," न सर पाँवों से कह सकता है, "मुझे तुम्हारी ज़रूरत
नहीं।" 22 बल्कि अगर देखा जाए तो अकसर ऐसा होता है कि जिस्म के जो आज़ा ज़्यादा कमज़ोर लगते हैं उनकी
ज़्यादा ज़रूरत होती है। 23 वह आज़ा जिन्हें हम कम इज़्ज़त के लायक़ समझते हैं उन्हें हम ज़्यादा इज़्ज़त के साथ ढाँप
लेते हैं, और वह आज़ा जिन्हें हम शर्म से छुपाकर रखते हैं उन्हीं का हम ज़्यादा एहतराम करते हैं। 24 इसके बरअक्स
हमारे इज़्ज़तदार आज़ा को इसकी ज़रूरत ही नहीं होती कि हम उनका ख़ास एहतराम करें। लेकिन अल्लाह ने जिस्म
को इस तरह तरतीब दिया कि उसने कमक़दर आज़ा को ज़्यादा इज़्ज़तदार ठहराया, 25 ताकि जिस्म के आज़ा में तफ़रक़ा
न हो बल्कि वह एक दूसरे की फ़िकर करें। 26 अगर एक अज़ु दुख में हो तो उसके साथ दीगर तमाम आज़ा भी दुख
महसूस करते हैं। अगर एक अज़ु सरफ़राज़ हो जाए तो उसके साथ बाक़ी तमाम आज़ा भी मसरूर होते हैं।
27 आप सब मिलकर मसीह का बदन हैं और इनफ़िरादी तौर पर उसके मुख़्तलिफ़ आज़ा। 28 और अल्लाह ने
अपनी जमात में पहले रसूल, दूसरे नबी और तीसरे उस्ताद मुक़र्रर किए हैं। फिर उसने ऐसे लोग भी मुक़र्रर किए हैं जो
मोजिज़े करते, शफ़ा देते, दूसरों की मदद करते, इंतज़ाम चलाते और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ग़ैरज़बानें बोलते हैं। 29 क्या
सब रसूल हैं? क्या सब नबी हैं? क्या सब उस्ताद हैं? क्या सब मोजिज़े करते हैं? 30 क्या सबको शफ़ा देने की नेमतें
हासिल हैं? क्या सब ग़ैरज़बानें बोलते हैं? क्या सब इनका तरजुमा करते हैं? 31 लेकिन आप उन नेमतों की तलाश में
रहें जो अफ़ज़ल हैं।
अब मैं आपको इससे कहीं उम्दा राह बताता हूँ।

13

मुहब्बत

1 अगर मैं इनसानों और फ़रिश्तों की ज़बानें बोलूँ, लेकिन मुहब्बत न रखूँ तो फिर मैं बस गूँजता हुआ घड़ियाल या
ठनठनाती हुई झाँझ ही हूँ। 2 अगर मेरी नबुव्वत की नेमत हो और मुझे तमाम भेदों और हर इल्म से वाक़िफ़ियत हो,
साथ ही मेरा ऐसा ईमान हो कि पहाड़ों को खिसका सकूँ, लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से ख़ाली हो तो मैं कुछ भी नहीं।
3 अगर मैं अपना सारा माल ग़रीबों में तक़सीम कर दूँ बल्कि अपना बदन जलाए जाने के लिए दे दूँ, लेकिन मेरा दिल
मुहब्बत से ख़ाली हो तो मुझे कुछ फ़ायदा नहीं।
4 मुहब्बत सब्र से काम लेती है, मुहब्बत मेहरबान है। न यह हसद करती है न डींगें मारती है। यह फूलती भी नहीं।
5 मुहब्बत बदतमीज़ी नहीं करती न अपने ही फ़ायदे की तलाश में रहती है। यह जल्दी से ग़ुस्से में नहीं आ जाती और
दूसरों की ग़लतियों का रिकार्ड नहीं रखती। 6 यह नाइनसाफ़ी देखकर ख़ुश नहीं होती बल्कि सच्चाई के ग़ालिब आने
पर ही ख़ुशी मनाती है। 7 यह हमेशा दूसरों की कमज़ोरियाँ बरदाश्त करती है, हमेशा एतमाद करती है, हमेशा उम्मीद
रखती है, हमेशा साबितक़दम रहती है।

8 मुहब्बत कभी ख़त्म नहीं होती। इसके मुक़ाबले में नबुव्वतें ख़त्म हो जाएँगी, ग़ैरज़बानें जाती रहेंगी, इल्म मिट
जाएगा। 9 क्योंकि इस वक़्त हमारा इल्म नामुकम्मल है और हमारी नबुव्वत सब कुछ ज़ाहिर नहीं करती। 10 लेकिन
जब वह कुछ आएगा जो कामिल है तो यह अधूरी चीज़ें जाती रहेंगी।
11 जब मैं बच्चा था तो बच्चे की तरह बोलता, बच्चे की-सी सोच रखता और बच्चे की-सी समझ से काम लेता
था। लेकिन अब मैं बालिग़ हूँ, इसलिए मैंने बच्चे का-सा अंदाज़ छोड़ दिया है। 12 इस वक़्त हमें आईने में धुँधला-सा
दिखाई देता है, लेकिन उस वक़्त हम रूबरू देखेंगे। अब मैं जुज़वी तौर पर जानता हूँ, लेकिन उस वक़्त कामिल तौर से
जान लूँगा, ऐसे ही जैसे अल्लाह ने मुझे पहले से जान लिया है।
13 ग़रज़ ईमान, उम्मीद और मुहब्बत तीनों क़ायम रहते हैं, लेकिन इनमें अफ़ज़ल मुहब्बत है।

14

नबुव्वत और ग़ैरज़बानें

1 मुहब्बत का दामन थामे रखें। लेकिन साथ ही रूहानी नेमतों को सरगरमी से इस्तेमाल में लाएँ, ख़ुसूसन नबुव्वत
की नेमत को। 2 ग़ैरज़बान बोलनेवाला लोगों से नहीं बल्कि अल्लाह से बात करता है। कोई उस की बात नहीं समझता
क्योंकि वह रूह में भेद की बातें करता है। 3 इसके बरअक्स नबुव्वत करनेवाला लोगों से ऐसी बातें करता है जो उनकी
तामीरो-तरक़्क़ी, हौसलाअफ़्ज़ाई और तसल्ली का बाइस बनती हैं। 4 ग़ैरज़बान बोलनेवाला अपनी तामीरो-तरक़्क़ी
करता है जबकि नबुव्वत करनेवाला जमात की।
5 मैं चाहता हूँ कि आप सब ग़ैरज़बानें बोलें, लेकिन इससे ज़्यादा यह ख़ाहिश रखता हूँ कि आप नबुव्वत करें। नबुव्वत
करनेवाला ग़ैरज़बानें बोलनेवाले से अहम है। हाँ, ग़ैरज़बानें बोलनेवाला भी अहम है बशर्तेकि अपनी ज़बान का तरजुमा
करे, क्योंकि इससे ख़ुदा की जमात की तामीरो-तरक़्क़ी होती है।
6 भाइयो, अगर मैं आपके पास आकर ग़ैरज़बानें बोलूँ, लेकिन मुकाशफ़े, इल्म, नबुव्वत और तालीम की कोई बात
न करूँ तो आपको क्या फ़ायदा होगा? 7 बेजान साज़ों पर ग़ौर करने से भी यही बात सामने आती है। अगर बाँसरी या
सरोद को किसी ख़ास सुर के मुताबिक़ न बजाया जाए तो फिर सुननेवाले किस तरह पहचान सकेंगे कि इन पर क्या
क्या पेश किया जा रहा है? 8 इसी तरह अगर बिगुल की आवाज़ जंग के लिए तैयार हो जाने के लिए साफ़ तौर से न
बजे तो क्या फ़ौजी कमरबस्ता हो जाएंगे? 9 अगर आप साफ़ साफ़ बात न करें तो आपकी हालत भी ऐसी ही होगी।
फिर आपकी बात कौन समझेगा? क्योंकि आप लोगों से नहीं बल्कि हवा से बातें करेंगे। 10 इस दुनिया में बहुत ज़्यादा
ज़बानें बोली जाती हैं और इनमें से कोई भी नहीं जो बेमानी हो। 11 अगर मैं किसी ज़बान से वाक़िफ़ नहीं तो मैं उस
ज़बान में बोलनेवाले के नज़दीक अजनबी ठहरूँगा और वह मेरे नज़दीक। 12 यह उसूल आप पर भी लागू होता है।
चूँकि आप रूहानी नेमतों के लिए तड़पते हैं तो फिर ख़ासकर उन नेमतों में माहिर बनने की कोशिश करें जो ख़ुदा की
जमात को तामीर करती हैं।
13 चुनाँचे ग़ैरज़बान बोलनेवाला दुआ करे कि इसका तरजुमा भी कर सके। 14 क्योंकि अगर मैं ग़ैरज़बान में दुआ
करूँ तो मेरी रूह तो दुआ करती है मगर मेरी अक़्ल बेअमल रहती है। 15 तो फिर क्या करूँ? मैं रूह में दुआ करूँगा,
लेकिन अक़्ल को भी इस्तेमाल करूँगा। मैं रूह में हम्दो-सना करूँगा, लेकिन अक़्ल को भी इस्तेमाल में लाऊँगा।
16 अगर आप सिर्फ़ रूह में हम्दो-सना करें तो हाज़िरीन में से जो आपकी बात नहीं समझता वह किस तरह आपकी
शुक्रगुज़ारी पर "आमीन" कह सकेगा? उसे तो आपकी बातों की समझ ही नहीं आई। 17 बेशक आप अच्छी तरह
ख़ुदा का शुक्र कर रहे होंगे, लेकिन इससे दूसरे शख़्स की तामीरो-तरक़्क़ी नहीं होगी।
18 मैं ख़ुदा का शुक्र करता हूँ कि आप सबकी निसबत ज़्यादा ग़ैरज़बानों में बात करता हूँ। 19 फिर भी मैं ख़ुदा
की जमात में ऐसी बातें पेश करना चाहता हूँ जो दूसरे समझ सकें और जिनसे वह तरबियत हासिल कर सकें। क्योंकि
ग़ैरज़बानों में बोली गई बेशुमार बातों की निसबत पाँच तरबियत देनेवाले अलफ़ाज़ कहीं बेहतर हैं।
20 भाइयो, बच्चों जैसी सोच से बाज़ आएँ। बुराई के लिहाज़ से तो ज़रूर बच्चे बने रहें, लेकिन समझ में बालिग़
बन जाएँ। 21 शरीअत में लिखा है, "रब फ़रमाता है कि मैं ग़ैरज़बानों और अजनबियों के होंटों की मारिफ़त इस
क़ौम से बात करूँगा। लेकिन वह फिर भी मेरी नहीं सुनेंगे।" 22 इससे ज़ाहिर होता है कि ग़ैरज़बानें ईमानदारों के लिए
इम्तियाज़ी निशान नहीं होतीं बल्कि ग़ैरईमानदारों के लिए। इसके बरअक्स नबुव्वत ग़ैरईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी
निशान नहीं होती बल्कि ईमानदारों के लिए।
23 अब फ़र्ज़ करें कि ईमानदार एक जगह जमा हैं और तमाम हाज़िरीन ग़ैरज़बानें बोल रहे हैं। इसी असना में ग़ैरज़बान
को न समझनेवाले या ग़ैरईमानदार आ शामिल होते हैं। आपको इस हालत में देखकर क्या वह आपको दीवाना क़रार
नहीं देंगे? 24 इसके मुक़ाबले में अगर तमाम लोग नबुव्वत कर रहे हों और कोई ग़ैरईमानदार अंदर आए तो क्या होगा?

वह सब उसे क़ायल कर लेंगे कि गुनाहगार है और सब उसे परख लेंगे। 25 यों उसके दिल की पोशीदा बातें ज़ाहिर
हो जाएँगी, वह गिरकर अल्लाह को सिजदा करेगा और तसलीम करेगा कि फ़िलहक़ीक़त अल्लाह आपके दरमियान
मौजूद है।

जमात में तरतीब की ज़रूरत

26 भाइयो, फिर क्या होना चाहिए? जब आप जमा होते हैं तो हर एक के पास कोई गीत या तालीम या मुकाशफ़ा
या ग़ैरज़बान या इसका तरजुमा हो। इन सबका मक़सद ख़ुदा की जमात की तामीरो-तरक़्क़ी हो। 27 ग़ैरज़बान में बोलते
वक़्त सिर्फ़ दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन अशख़ास बोलें और वह भी बारी बारी। साथ ही कोई उनका तरजुमा भी करे।
28 अगर कोई तरजुमा करनेवाला न हो तो ग़ैरज़बान बोलनेवाला जमात में ख़ामोश रहे, अलबत्ता उसे अपने आपसे और
अल्लाह से बात करने की आज़ादी है। 29 नबियों में से दो या तीन नबुव्वत करें और दूसरे उनकी बातों की सेहत को
परखें। 30 अगर इस दौरान किसी बैठे हुए शख़्स को कोई मुकाशफ़ा मिले तो पहला शख़्स ख़ामोश हो जाए। 31 क्योंकि
आप सब बारी बारी नबुव्वत कर सकते हैं ताकि तमाम लोग सीखें और उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई हो। 32 नबियों की रूहें
नबियों के ताबे रहती हैं, 33 क्योंकि अल्लाह बेतरतीबी का नहीं बल्कि सलामती का ख़ुदा है।

जैसा मुक़द्दसीन की तमाम जमातों का दस्तूर है 34 ख़वातीन जमात में ख़ामोश रहें। उन्हें बोलने की इजाज़त नहीं,
बल्कि वह फ़रमाँबरदार रहें। शरीअत भी यही फ़रमाती है। 35 अगर वह कुछ सीखना चाहें तो अपने घर पर अपने
शौहर से पूछ लें, क्योंकि औरत का ख़ुदा की जमात में बोलना शर्म की बात है।

36 क्या अल्लाह का कलाम आपमें से निकला है, या क्या वह सिर्फ़ आप ही तक पहुँचा है? 37 अगर कोई ख़याल
करे कि मैं नबी हूँ या ख़ास रूहानी हैसियत रखता हूँ तो वह जान ले कि जो कुछ मैं आपको लिख रहा हूँ वह ख़ुदावंद
का हुक्म है। 38 जो यह नज़रंदाज़ करता है उसे ख़ुद भी नज़रंदाज़ किया जाएगा।

39 ग़रज़ भाइयो, नबुव्वत करने के लिए तड़पते रहें, अलबत्ता किसी को ग़ैरज़बानें बोलने से न रोकें। 40 लेकिन सब
कुछ शायस्तगी और तरतीब से अमल में आए।

15

मसीह का जी उठना

1 भाइयो, मैं आपकी तवज्जुह उस ख़ुशख़बरी की तरफ़ दिलाता हूँ जो मैंने आपको सुनाई, वही ख़ुशख़बरी जिसे
आपने क़बूल किया और जिस पर आप क़ायम भी हैं। 2 इसी पैग़ाम के वसीले से आपको नजात मिलती है। शर्त यह है
कि आप वह बातें ज्यों की त्यों थामे रखें जिस तरह मैंने आप तक पहुँचाई हैं। बेशक यह बात इस पर मुनहसिर है कि
आपका ईमान लाना बेमक़सद नहीं था।

3 क्योंकि मैंने इस पर ख़ास ज़ोर दिया कि वही कुछ आपके सुपुर्द करूँ जो मुझे भी मिला है। यह कि मसीह ने पाक
नविश्तों के मुताबिक़ हमारे गुनाहों की ख़ातिर अपनी जान दी, 4 फिर वह दफ़न हुआ और तीसरे दिन पाक नविश्तों के
मुताबिक़ जी उठा। 5 वह पतरस को दिखाई दिया, फिर बारह शागिर्दों को। 6 इसके बाद वह एक ही वक़्त पाँच सौ से
ज़्यादा भाइयों पर ज़ाहिर हुआ। उनमें से बेशतर अब तक ज़िंदा हैं अगरचे चंद एक इंतक़ाल कर चुके हैं। 7 फिर याक़ूब
ने उसे देखा, फिर तमाम रसूलों ने।

8 और सबके बाद वह मुझ पर भी ज़ाहिर हुआ, मुझ पर जो गोया क़बल अज़ वक़्त पैदा हुआ। 9 क्योंकि रसूलों
में मेरा दर्जा सबसे छोटा है, बल्कि मैं तो रसूल कहलाने के भी लायक़ नहीं, इसलिए कि मैंने अल्लाह की जमात को
ईज़ा पहुँचाई। 10 लेकिन मैं जो कुछ हूँ अल्लाह के फ़ज़ल ही से हूँ। और जो फ़ज़ल उसने मुझ पर किया वह बेअसर
न रहा, क्योंकि मैंने उन सबसे ज़्यादा जाँफ़िशानी से काम किया है। अलबत्ता यह काम मैंने ख़ुद नहीं बल्कि अल्लाह
के फ़ज़ल ने किया है जो मेरे साथ था। 11 ख़ैर, यह काम मैंने किया या उन्होंने, हम सब उसी पैग़ाम की मुनादी करते
हैं जिस पर आप ईमान लाए हैं।

जी उठने पर एतराज़

12 अब मुझे यह बताएँ, हम तो मुनादी करते हैं कि मसीह मुरदों में से जी उठा है। तो फिर आपमें से कुछ लोग कैसे
कह सकते हैं कि मुरदे जी नहीं उठते? 13 अगर मुरदे जी नहीं उठते तो मतलब यह हुआ कि मसीह भी नहीं जी उठा।
14 और अगर मसीह जी नहीं उठा तो फिर हमारी मुनादी अबस होती और आपका ईमान लाना भी बेफ़ायदा होता।
15 नीज़ हम अल्लाह के बारे में झूटे गवाह साबित होते। क्योंकि हम गवाही देते हैं कि अल्लाह ने मसीह को ज़िंदा
किया जबकि अगर वाक़ई मुरदे नहीं जी उठते तो वह भी ज़िंदा नहीं हुआ। 16 ग़रज़ अगर मुरदे जी नहीं उठते तो फिर
मसीह भी नहीं जी उठा। 17 और अगर मसीह नहीं जी उठा तो आपका ईमान बेफ़ायदा है और आप अब तक अपने

गुनाहों में गिरिफ़्तार हैं। 18 हाँ, इसके मुताबिक़ जिन्होंने मसीह में होते हुए इंतक़ाल किया है वह सब हलाक हो गए हैं।
19 चुनाँचे अगर मसीह पर हमारी उम्मीद सिर्फ़ इसी ज़िंदगी तक महदूद है तो हम इनसानों में सबसे ज़्यादा क़ाबिले-रहम
हैं।

मसीह वाक़ई जी उठा है

20 लेकिन मसीह वाक़ई मुरदों में से जी उठा है। वह इंतक़ाल किए हुओं की फ़सल का पहला फल है। 21 चूँकि
इनसान के वसीले से मौत आई, इसलिए इनसान ही के वसीले से मुरदों के जी उठने की भी राह खुली। 22 जिस तरह
सब इसलिए मरते हैं कि वह आदम के फ़रज़ंद हैं उसी तरह सब ज़िंदा किए जाएंगे जो मसीह के हैं। 23 लेकिन जी
उठने की एक तरतीब है। मसीह तो फ़सल के पहले फल की हैसियत से जी उठ चुका है जबकि उसके लोग उस वक़्त
जी उठेंगे जब वह वापस आएगा। 24 इसके बाद ख़ातमा होगा। तब हर हुकूमत, इख़्तियार और क़ुव्वत को नेस्त करके
वह बादशाही को ख़ुदा बाप के हवाले कर देगा। 25 क्योंकि लाज़िम है कि मसीह उस वक़्त तक हुकूमत करे जब तक
अल्लाह तमाम दुश्मनों को उसके पाँवों के नीचे न कर दे। 26 आख़िरी दुश्मन जिसे नेस्त किया जाएगा मौत होगी।
27 क्योंकि अल्लाह के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "उसने सब कुछ उस (यानी मसीह) के पाँवों के नीचे कर
दिया।" जब कहा गया है कि सब कुछ मसीह के मातहत कर दिया गया है, तो ज़ाहिर है कि इसमें अल्लाह शामिल
नहीं जिसने सब कुछ मसीह के मातहत किया है। 28 जब सब कुछ मसीह के मातहत कर दिया गया तब फ़रज़ंद ख़ुद
भी उसी के मातहत हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके मातहत किया। यों अल्लाह सबमें सब कुछ होगा।

जी उठने के पेशे-नज़र ज़िंदगी गुज़ारना

29 अगर मुरदे वाक़ई जी नहीं उठते तो फिर वह लोग क्या करेंगे जो मुरदों की ख़ातिर बपतिस्मा लेते हैं? अगर
मुरदे जी नहीं उठेंगे तो फिर वह उनकी ख़ातिर क्यों बपतिस्मा लेते हैं? 30 और हम भी हर वक़्त अपनी जान ख़तरे में
क्यों डाले हुए हैं? 31 भाइयो, मैं रोज़ाना मरता हूँ। यह बात उतनी ही यक़ीनी है जितनी यह कि आप हमारे ख़ुदावंद
मसीह ईसा में मेरा फ़ख़र हैं। 32 अगर मैं सिर्फ़ इसी ज़िंदगी की उम्मीद रखते हुए इफ़िसुस में वहशी दरिंदों से लड़ा तो
मुझे क्या फ़ायदा हुआ? अगर मुरदे जी नहीं उठते तो इस क़ौल के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना बेहतर होगा कि "आओ,
हम खाएँ पिएँ, क्योंकि कल तो मर ही जाना है।"
33 फ़रेब न खाएँ, बुरी सोहबत अच्छी आदतों को बिगाड़ देती है। 34 पूरे तौर पर होश में आएँ और गुनाह न करें।
आपमें से बाज़ ऐसे हैं जो अल्लाह के बारे में कुछ नहीं जानते। यह बात मैं आपको शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ।

मुरदे किस तरह जी उठेंगे

35 शायद कोई सवाल उठाए, "मुरदे किस तरह जी उठते हैं? और जी उठने के बाद उनका जिस्म कैसा होगा?"
36 भई, अक़्ल से काम लें। जो बीज आप बोते हैं वह उस वक़्त तक नहीं उगता जब तक कि मर न जाए। 37 जो आप
बोते हैं वह वही पौदा नहीं है जो बाद में उगेगा बल्कि महज़ एक नंगा-सा दाना है, ख़ाह गंदुम का हो या किसी और
चीज़ का। 38 लेकिन अल्लाह उसे ऐसा जिस्म देता है जैसा वह मुनासिब समझता है। हर क़िस्म के बीज को वह उसका
ख़ास जिस्म अता करता है।
39 तमाम जानदारों को एक जैसा जिस्म नहीं मिला बल्कि इनसानों को और क़िस्म का, मवेशियों को और क़िस्म
का, परिंदों को और क़िस्म का, और मछलियों को और क़िस्म का।
40 इसके अलावा आसमानी जिस्म भी हैं और ज़मीनी जिस्म भी। आसमानी जिस्मों की शान और है और ज़मीनी
जिस्मों की शान और। 41 सूरज की शान और है, चाँद की शान और, और सितारों की शान और, बल्कि एक सितारा
शान में दूसरे सितारे से फ़रक़ है।
42 मुरदों का जी उठना भी ऐसा ही है। जिस्म फ़ानी हालत में बोया जाता है और लाफ़ानी हालत में जी उठता है।
43 वह ज़लील हालत में बोया जाता है और जलाली हालत में जी उठता है। वह कमज़ोर हालत में बोया जाता है और
क़वी हालत में जी उठता है। 44 फ़ितरती जिस्म बोया जाता है और रूहानी जिस्म जी उठता है। जहाँ फ़ितरती जिस्म
है वहाँ रूहानी जिस्म भी होता है। 45 पाक नविश्तों में भी लिखा है कि पहले इनसान आदम में जान आ गई। लेकिन
आख़िरी आदम ज़िंदा करनेवाली रूह बना। 46 रूहानी जिस्म पहले नहीं था बल्कि फ़ितरती जिस्म, फिर रूहानी जिस्म
हुआ। 47 पहला इनसान ज़मीन की मिट्टी से बना था, लेकिन दूसरा आसमान से आया। 48 जैसा पहला ख़ाकी इनसान था
वैसे ही दीगर ख़ाकी इनसान भी हैं, और जैसा आसमान से आया हुआ इनसान है वैसे ही दीगर आसमानी इनसान भी हैं।
49 यों हम इस वक़्त ख़ाकी इनसान की शक्लो-सूरत रखते हैं जबकि हम उस वक़्त आसमानी इनसान की शक्लो-सूरत
रखेंगे।

मौत पर फ़तह

50 भाइयो, मैं यह कहना चाहता हूँ कि ख़ाकी इनसान का मौजूदा जिस्म अल्लाह की बादशाही को मीरास में नहीं
पा सकता। जो कुछ फ़ानी है वह लाफ़ानी चीज़ों को मीरास में नहीं पा सकता।
51 देखो मैं आपको एक भेद बताता हूँ। हम सब वफ़ात नहीं पाएँगे, लेकिन सब ही बदल जाएंगे। 52 और यह
अचानक, आँख झपकते में, आख़िरी बिगुल बजते ही रूनुमा होगा। क्योंकि बिगुल बजने पर मुरदे लाफ़ानी हालत में
जी उठेंगे और हम बदल जाएंगे। 53 क्योंकि लाज़िम है कि यह फ़ानी जिस्म बक़ा का लिबास पहन ले और मरनेवाला
जिस्म अबदी ज़िंदगी का। 54 जब इस फ़ानी और मरनेवाले जिस्म ने बक़ा और अबदी ज़िंदगी का लिबास पहन लिया
होगा तो फिर वह कलाम पूरा होगा जो पाक नविश्तों में लिखा है कि
"मौत इलाही फ़तह का लुक़मा हो गई है।
55 ऐ मौत, तेरी फ़तह कहाँ रही?
ऐ मौत, तेरा डंक कहाँ रहा?"
56 मौत का डंक गुनाह है और गुनाह शरीअत से तक़वियत पाता है। 57 लेकिन ख़ुदा का शुक्र है जो हमें हमारे
ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से फ़तह बख़्शता है।
58 ग़रज़, मेरे प्यारे भाइयो, मज़बूत बने रहें। कोई चीज़ आपको डाँवाँडोल न कर दे। हमेशा ख़ुदावंद की ख़िदमत
जाँफ़िशानी से करें, यह जानते हुए कि ख़ुदावंद के लिए आपकी मेहनत-मशक़्क़त रायगाँ नहीं जाएगी।

16

यरूशलम की जमात के लिए चंदा

1 रही चंदे की बात जो यरूशलम के मुक़द्दसीन के लिए जमा किया जा रहा है तो उसी हिदायत पर अमल करें जो
मैं गलतिया की जमातों को दे चुका हूँ। 2 हर इतवार को आपमें से हर कोई अपने कमाए हुए पैसों में से कुछ इस चंदे
के लिए मख़सूस करके अपने पास रख छोड़े। फिर मेरे आने पर हदियाजात जमा करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। 3 जब
मैं आऊँगा तो ऐसे अफ़राद को जो आपके नज़दीक क़ाबिले-एतमाद हैं ख़ुतूत देकर यरूशलम भेजूँगा ताकि वह आपका
हदिया वहाँ तक पहुँचा दें। 4 अगर मुनासिब हो कि मैं भी जाऊँ तो वह मेरे साथ जाएंगे।
5 मैं मकिदुनिया से होकर आपके पास आऊँगा क्योंकि मकिदुनिया में से सफ़र करने का इरादा रखता हूँ। 6 शायद
आपके पास थोड़े अरसे के लिए ठहरूँ, लेकिन यह भी मुमकिन है कि सर्दियों का मौसम आप ही के साथ काटूँ ताकि
मेरे बाद के सफ़र के लिए आप मेरी मदद कर सकें। 7 मैं नहीं चाहता कि इस दफ़ा मुख़तसर मुलाक़ात के बाद चलता
बनूँ, बल्कि मेरी ख़ाहिश है कि कुछ वक़्त आपके साथ गुज़ारूँ। शर्त यह है कि ख़ुदावंद मुझे इजाज़त दे।
8 लेकिन ईदे-पंतिकुस्त तक मैं इफ़िसुस में ही ठहरूँगा, 9 क्योंकि यहाँ मेरे सामने मुअस्सिर काम के लिए एक बड़ा
दरवाज़ा खुल गया है और साथ ही बहुत-से मुख़ालिफ़ भी पैदा हो गए हैं।
10 अगर तीमुथियुस आए तो इसका ख़याल रखें कि वह बिलाख़ौफ़ आपके पास रह सके। मेरी तरह वह भी ख़ुदावंद
के खेत में फ़सल काट रहा है। 11 इसलिए कोई उसे हक़ीर न जाने। उसे सलामती से सफ़र पर रवाना करें ताकि वह
मुझ तक पहुँचे, क्योंकि मैं और दीगर भाई उसके मुंतज़िर हैं।
12 भाई अपुल्लोस की मैंने बड़ी हौसलाअफ़्ज़ाई की है कि वह दीगर भाइयों के साथ आपके पास आए, लेकिन
अल्लाह को क़तअन मंज़ूर न था। ताहम मौक़ा मिलने पर वह ज़रूर आएगा।

नसीहतें और सलाम

13 जागते रहें, ईमान में साबितक़दम रहें, मरदानगी दिखाएँ, मज़बूत बने रहें। 14 सब कुछ मुहब्बत से करें।
15 भाइयो, मैं एक बात में आपको नसीहत करना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि स्तिफ़नास का घराना अख़या का
पहला फल है और कि उन्होंने अपने आपको मुक़द्दसीन की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर रखा है। 16 आप ऐसे लोगों
के ताबे रहें और साथ ही हर उस शख़्स के जो उनके साथ ख़िदमत के काम में जाँफ़िशानी करता है।
17 स्तिफ़नास, फ़ुरतूनातुस और अख़ीकुस के पहुँचने पर मैं बहुत ख़ुश हुआ, क्योंकि उन्होंने वह कमी पूरी कर दी
जो आपकी ग़ैरहाज़िरी से पैदा हुई थी। 18 उन्होंने मेरी रूह को और साथ ही आपकी रूह को भी ताज़ा किया है। ऐसे
लोगों की क़दर करें।
19 आसिया की जमातें आपको सलाम कहती हैं। अकविला और प्रिसकिल्ला आपको ख़ुदावंद में पुरजोश सलाम
कहते हैं और उनके साथ वह जमात भी जो उनके घर में जमा होती है। 20 तमाम भाई आपको सलाम कहते हैं। एक
दूसरे को मुक़द्दस बोसा देते हुए सलाम कहें।
21 यह सलाम मैं यानी पौलुस अपने हाथ से लिखता हूँ।
22 लानत उस शख़्स पर जो ख़ुदावंद से मुहब्बत नहीं रखता।

ऐ हमारे ख़ुदावंद, आ! 23 ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल आपके साथ रहे।
24 मसीह ईसा में आप सबको मेरा प्यार।

2 कुरिंथियों

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस
की तरफ़ से भी है।
मैं कुरिंथुस में अल्लाह की जमात और सूबा अख़या में मौजूद तमाम मुक़द्दसीन को यह लिख रहा हूँ।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

अल्लाह की हम्दो-सना

3 हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के ख़ुदा और बाप की तमजीद हो, जो रहम का बाप और तमाम तरह की तसल्ली का
ख़ुदा है। 4 जब भी हम मुसीबत में फँस जाते हैं तो वह हमें तसल्ली देता है ताकि हम औरों को भी तसल्ली दे सकें।
फिर जब वह किसी मुसीबत से दोचार होते हैं तो हम भी उनको उसी तरह तसल्ली दे सकते हैं जिस तरह अल्लाह ने
हमें तसल्ली दी है। 5 क्योंकि जितनी कसरत से मसीह की-सी मुसीबतें हम पर आ जाती हैं उतनी कसरत से अल्लाह
मसीह के ज़रीए हमें तसल्ली देता है। 6 जब हम मुसीबतों से दोचार होते हैं तो यह बात आपकी तसल्ली और नजात का
बाइस बनती है। जब हमारी तसल्ली होती है तो यह आपकी भी तसल्ली का बाइस बनती है। यों आप भी सब्र से वह
कुछ बरदाश्त करने के क़ाबिल बन जाते हैं जो हम बरदाश्त कर रहे हैं। 7 चुनाँचे हमारी आपके बारे में उम्मीद पुख़्ता
रहती है। क्योंकि हम जानते हैं कि जिस तरह आप हमारी मुसीबतों में शरीक हैं उसी तरह आप उस तसल्ली में भी
शरीक हैं जो हमें हासिल होती है।
8 भाइयो, हम आपको उस मुसीबत से आगाह करना चाहते हैं जिसमें हम सूबा आसिया में फँस गए। हम पर दबाव
इतना शदीद था कि उसे बरदाश्त करना नामुमकिन-सा हो गया और हम जान से हाथ धो बैठे। 9 हमने महसूस किया कि
हमें सज़ाए-मौत दी गई है। लेकिन यह इसलिए हुआ ताकि हम अपने आप पर भरोसा न करें बल्कि अल्लाह पर जो
मुरदों को ज़िंदा कर देता है। 10 उसी ने हमें ऐसी हैबतनाक मौत से बचाया और वह आइंदा भी हमें बचाएगा। और हमने
उस पर उम्मीद रखी है कि वह हमें एक बार फिर बचाएगा। 11 आप भी अपनी दुआओं से हमारी मदद कर रहे हैं। यह
कितनी ख़ूबसूरत बात है कि अल्लाह बहुतों की दुआओं को सुनकर हम पर मेहरबानी करेगा और नतीजे में बहुतेरे हमारे
लिए शुक्र करेंगे।

पौलुस के मनसूबों में तबदीली

12 यह बात हमारे लिए फ़ख़र का बाइस है कि हमारा ज़मीर साफ़ है। क्योंकि हमने अल्लाह के सामने सादादिली
और ख़ुलूस से ज़िंदगी गुज़ारी है, और हमने अपनी इनसानी हिकमत पर इनहिसार नहीं किया बल्कि अल्लाह के
फ़ज़ल पर। दुनिया में और ख़ासकर आपके साथ हमारा रवैया ऐसा ही रहा है। 13 हम तो आपको ऐसी कोई बात नहीं
लिखते जो आप पढ़ या समझ नहीं सकते। और मुझे उम्मीद है कि आपको पूरे तौर पर समझ आएगी, 14 अगरचे आप
फ़िलहाल सब कुछ नहीं समझते। क्योंकि जब आपको सब कुछ समझ आएगा तब आप ख़ुदावंद ईसा के दिन हम पर
उतना फ़ख़र कर सकेंगे जितना हम आप पर।
15 चूँकि मुझे इसका पूरा यक़ीन था इसलिए मैं पहले आपके पास आना चाहता था ताकि आपको दुगनी बरकत
मिल जाए। 16 ख़याल यह था कि मैं आपके हाँ से होकर मकिदुनिया जाऊँ और वहाँ से आपके पास वापस आऊँ। फिर
आप सूबा यहूदिया के सफ़र के लिए तैयारियाँ करने में मेरी मदद करके मुझे आगे भेज सकते थे। 17 आप मुझे बताएँ
कि क्या मैंने यह मनसूबा यों ही बनाया था? क्या मैं दुनियावी लोगों की तरह मनसूबे बना लेता हूँ जो एक ही लमहे में
"जी हाँ" और "जी नहीं" कहते हैं? 18 लेकिन अल्लाह वफ़ादार है और वह मेरा गवाह है कि हम आपके साथ बात
करते वक़्त "नहीं" को "हाँ" के साथ नहीं मिलाते। 19 क्योंकि अल्लाह का फ़रज़ंद ईसा मसीह जिसकी मुनादी मैं,
सीलास और तीमुथियुस ने की वह भी ऐसा नहीं है। उसने कभी भी "हाँ" को "नहीं" के साथ नहीं मिलाया बल्कि
उसमें अल्लाह की हतमी "जी हाँ" वुजूद में आई। 20 क्योंकि वही अल्लाह के तमाम वादों की "हाँ" है। इसलिए
हम उसी के वसीले से "आमीन" (जी हाँ) कहकर अल्लाह को जलाल देते हैं। 21 और अल्लाह ख़ुद हमें और आपको
मसीह में मज़बूत कर देता है। उसी ने हमें मसह करके मख़सूस किया है। 22 उसी ने हम पर अपनी मुहर लगाकर ज़ाहिर
किया है कि हम उस की मिलकियत हैं और उसी ने हमें रूहुल-क़ुद्स देकर अपने वादों का बयाना अदा किया है।

23 अगर मैं झूट बोलूँ तो अल्लाह मेरे ख़िलाफ़ गवाही दे। बात यह है कि मैं आपको बचाने के लिए कुरिंथुस वापस
न आया। 24 मतलब यह नहीं कि हम ईमान के मामले में आप पर हुकूमत करना चाहते हैं। नहीं, हम आपके साथ
मिलकर ख़िदमत करते हैं ताकि आप ख़ुशी से भर जाएँ, क्योंकि आप तो ईमान की मारिफ़त क़ायम हैं।

2

1 चुनाँचे मैंने फ़ैसला किया कि मैं दुबारा आपके पास नहीं आऊँगा, वरना आपको बहुत ग़म खाना पड़ेगा। 2 क्योंकि
अगर मैं आपको दुख पहुँचाऊँ तो कौन मुझे ख़ुश करेगा? यह वह शख़्स नहीं करेगा जिसे मैंने दुख पहुँचाया है। 3 यही
वजह है कि मैंने आपको यह लिख दिया। मैं नहीं चाहता था कि आपके पास आकर उन्हीं लोगों से ग़म खाऊँ जिन्हें
मुझे ख़ुश करना चाहिए। क्योंकि मुझे आप सबके बारे में यक़ीन है कि मेरी ख़ुशी आप सबकी ख़ुशी है। 4 मैंने आपको
निहायत रंजीदा और परेशान हालत में आँसू बहा बहाकर लिख दिया। मक़सद यह नहीं था कि आप ग़मगीन हो जाएँ
बल्कि मैं चाहता था कि आप जान लें कि मैं आपसे कितनी गहरी मुहब्बत रखता हूँ।

मुजरिम को मुआफ़ कर दिया जाए

5 अगर किसी ने दुख पहुँचाया है तो मुझे नहीं बल्कि किसी हद तक आप सबको (मैं ज़्यादा सख़्ती से बात नहीं
करना चाहता)। 6 लेकिन मज़कूरा शख़्स के लिए यह काफ़ी है कि उसे जमात के अकसर लोगों ने सज़ा दी है। 7 अब
ज़रूरी है कि आप उसे मुआफ़ करके तसल्ली दें, वरना वह ग़म खा खाकर तबाह हो जाएगा। 8 चुनाँचे मैं इस पर ज़ोर
देना चाहता हूँ कि आप उसे अपनी मुहब्बत का एहसास दिलाएँ। 9 मैंने यह मालूम करने के लिए आपको लिखा कि
क्या आप इमतहान में पूरे उतरेंगे और हर बात में ताबे रहेंगे। 10 जिसे आप कुछ मुआफ़ करते हैं उसे मैं भी मुआफ़ करता
हूँ। और जो कुछ मैंने मुआफ़ किया, अगर मुझे कुछ मुआफ़ करने की ज़रूरत थी, वह मैंने आपकी ख़ातिर मसीह के
हुज़ूर मुआफ़ किया है 11 ताकि इबलीस हमसे फ़ायदा न उठाए। क्योंकि हम उस की चालों से ख़ूब वाक़िफ़ हैं।

त्रोआस में पौलुस की परेशानी

12 जब मैं मसीह की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए त्रोआस गया तो ख़ुदावंद ने मेरे लिए आगे ख़िदमत करने का एक
दरवाज़ा खोल दिया। 13 लेकिन जब मुझे अपना भाई तितुस वहाँ न मिला तो मैं बेचैन हो गया और उन्हें ख़ैरबाद कहकर
सूबा मकिदुनिया चला गया।

मसीह में फ़तह

14 लेकिन ख़ुदा का शुक्र है! वही हमारे आगे आगे चलता है और हम मसीह के क़ैदी बनकर उस की फ़तह मनाते
हुए उसके पीछे पीछे चलते हैं। यों अल्लाह हमारे वसीले से हर जगह मसीह के बारे में इल्म ख़ुशबू की तरह फैलाता
है। 15 क्योंकि हम मसीह की ख़ुशबू हैं जो अल्लाह तक पहुँचती है और साथ साथ लोगों में भी फैलती है, नजात
पानेवालों में भी और हलाक होनेवालों में भी। 16 बाज़ लोगों के लिए हम मौत की मोहलक बू हैं जबकि बाज़ के लिए
हम ज़िंदगीबख़्श ख़ुशबू हैं। तो कौन यह ज़िम्मादारी निभाने के लायक़ है? 17 क्योंकि हम अकसर लोगों की तरह
अल्लाह के कलाम की तिजारत नहीं करते, बल्कि यह जानकर कि हम अल्लाह के हुज़ूर में हैं और उसके भेजे हुए हैं
हम ख़ुलूसदिली से लोगों से बात करते हैं।

3

नए अहद के ख़ादिम

1 क्या हम दुबारा अपनी ख़ूबियों का ढंडोरा पीट रहे हैं? या क्या हम बाज़ लोगों की मानिंद हैं जिन्हें आपको
सिफ़ारिशी ख़त देने या आपसे ऐसे ख़त लिखवाने की ज़रूरत होती है? 2 नहीं, आप तो ख़ुद हमारा ख़त हैं जो हमारे
दिलों पर लिखा हुआ है। सब इसे पहचान और पढ़ सकते हैं। 3 यह साफ़ ज़ाहिर है कि आप मसीह का ख़त हैं जो उसने
हमारी ख़िदमत के ज़रीए लिख दिया है। और यह ख़त स्याही से नहीं बल्कि ज़िंदा ख़ुदा के रूह से लिखा गया, पत्थर
की तख़्तियों पर नहीं बल्कि इनसानी दिलों पर।
4 हम यह इसलिए यक़ीन से कह सकते हैं क्योंकि हम मसीह के वसीले से अल्लाह पर एतमाद रखते हैं। 5 हमारे
अंदर तो कुछ नहीं है जिसकी बिना पर हम दावा कर सकते कि हम यह काम करने के लायक़ हैं। नहीं, हमारी लियाक़त
अल्लाह की तरफ़ से है। 6 उसी ने हमें नए अहद के ख़ादिम होने के लायक़ बना दिया है। और यह अहद लिखी हुई
शरीअत पर मबनी नहीं है बल्कि रूह पर, क्योंकि लिखी हुई शरीअत के असर से हम मर जाते हैं जबकि रूह हमें ज़िंदा
कर देता है।

7 शरीअत के हुरूफ़ पत्थर की तख़्तियों पर कंदा किए गए और जब उसे दिया गया तो अल्लाह का जलाल ज़ाहिर
हुआ। यह जलाल इतना तेज़ था कि इसराईली मूसा के चेहरे को लगातार देख न सके। अगर उस चीज़ का जलाल इतना
तेज़ था जो अब मनसूख़ है 8 तो क्या रूह के निज़ाम का जलाल इससे कहीं ज़्यादा नहीं होगा? 9 अगर पुराना निज़ाम
जो हमें मुजरिम ठहराता था जलाली था तो फिर नया निज़ाम जो हमें रास्तबाज़ क़रार देता है कहीं ज़्यादा जलाली होगा।
10 हाँ, पहले निज़ाम का जलाल नए निज़ाम के ज़बरदस्त जलाल की निसबत कुछ भी नहीं है। 11 और अगर उस
पुराने निज़ाम का जलाल बहुत था जो अब मनसूख़ है तो फिर उस नए निज़ाम का जलाल कहीं ज़्यादा होगा जो क़ायम
रहेगा।

12 पस चूँकि हम ऐसी उम्मीद रखते हैं इसलिए बड़ी दिलेरी से ख़िदमत करते हैं। 13 हम मूसा की मानिंद नहीं हैं
जिसने शरीअत सुनाने के इख़्तिताम पर अपने चेहरे पर निक़ाब डाल लिया ताकि इसराईली उसे तकते न रहें जो अब
मनसूख़ है। 14 तो भी वह ज़हनी तौर पर अड़ गए, क्योंकि आज तक जब पुराने अहदनामे की तिलावत की जाती है
तो यही निक़ाब क़ायम है। आज तक निक़ाब को हटाया नहीं गया क्योंकि यह अहद सिर्फ़ मसीह में मनसूख़ होता है।
15 हाँ, आज तक जब मूसा की शरीअत पढ़ी जाती है तो यह निक़ाब उनके दिलों पर पड़ा रहता है। 16 लेकिन जब
भी कोई ख़ुदावंद की तरफ़ रुजू करता है तो यह निक़ाब हटाया जाता है, 17 क्योंकि ख़ुदावंद रूह है और जहाँ ख़ुदावंद
का रूह है वहाँ आज़ादी है। 18 चुनाँचे हम सब जिनके चेहरों से निक़ाब हटाया गया है ख़ुदावंद का जलाल मुनअकिस
करते और क़दम बक़दम जलाल पाते हुए मसीह की सूरत में बदलते जाते हैं। यह ख़ुदावंद ही का काम है जो रूह है।

4

मिट्टी के बरतनों में रूहानी ख़ज़ाना

1 पस चूँकि हमें अल्लाह के रहम से यह ख़िदमत सौंपी गई है इसलिए हम बेदिल नहीं हो जाते। 2 हमने छुपी हुई
शर्मनाक बातें मुस्तरद कर दी हैं। न हम चालाकी से काम करते, न अल्लाह के कलाम में तहरीफ़ करते हैं। बल्कि हमें
अपनी सिफ़ारिश की ज़रूरत भी नहीं, क्योंकि जब हम अल्लाह के हुज़ूर लोगों पर हक़ीक़त को ज़ाहिर करते हैं तो
हमारी नेकनामी ख़ुद बख़ुद हर एक के ज़मीर पर ज़ाहिर हो जाती है। 3 और अगर हमारी ख़ुशख़बरी निक़ाब तले छुपी
हुई भी हो तो वह सिर्फ़ उनके लिए छुपी हुई है जो हलाक हो रहे हैं। 4 इस जहान के शरीर ख़ुदा ने उनके ज़हनों को
अंधा कर दिया है जो ईमान नहीं रखते। इसलिए वह अल्लाह की ख़ुशख़बरी की जलाली रौशनी नहीं देख सकते।
वह यह पैग़ाम नहीं समझ सकते जो मसीह के जलाल के बारे में है, उसके बारे में जो अल्लाह की सूरत है। 5 क्योंकि
हम अपना प्रचार नहीं करते बल्कि ईसा मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं कि वह ख़ुदावंद है। अपने आपको हम ईसा की
ख़ातिर आपके ख़ादिम क़रार देते हैं। 6 क्योंकि जिस ख़ुदा ने फ़रमाया, "अंधेरे में से रौशनी चमके," उसने हमारे दिलों
में अपनी रौशनी चमकने दी ताकि हम अल्लाह का वह जलाल जान लें जो ईसा मसीह के चेहरे से चमकता है।

7 लेकिन हम जिनके अंदर यह ख़ज़ाना है आम मिट्टी के बरतनों की मानिंद हैं ताकि ज़ाहिर हो कि यह ज़बरदस्त
क़ुव्वत हमारी तरफ़ से नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से है। 8 लोग हमें चारों तरफ़ से दबाते हैं, लेकिन कोई हमें
कुचलकर ख़त्म नहीं कर सकता। हम उलझन में पड़ जाते हैं, लेकिन उम्मीद का दामन हाथ से जाने नहीं देते। 9 लोग
हमें ईज़ा देते हैं, लेकिन हमें अकेला नहीं छोड़ा जाता। लोगों के धक्कों से हम ज़मीन पर गिर जाते हैं, लेकिन हम
तबाह नहीं होते। 10 हर वक़्त हम अपने बदन में ईसा की मौत लिए फिरते हैं ताकि ईसा की ज़िंदगी भी हमारे बदन में
ज़ाहिर हो जाए। 11 क्योंकि हर वक़्त हमें ज़िंदा हालत में ईसा की ख़ातिर मौत के हवाले कर दिया जाता है ताकि उस
की ज़िंदगी हमारे फ़ानी बदन में ज़ाहिर हो जाए। 12 यों हममें मौत का असर काम करता है जबकि आपमें ज़िंदगी का
असर।

13 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "मैं ईमान लाया और इसलिए बोला।" हमें ईमान का यही रूह हासिल है इसलिए
हम भी ईमान लाने की वजह से बोलते हैं। 14 क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने ख़ुदावंद ईसा को मुरदों में से ज़िंदा कर
दिया है वह ईसा के साथ हमें भी ज़िंदा करके आप लोगों समेत अपने हुज़ूर खड़ा करेगा। 15 यह सब कुछ आपके
फ़ायदे के लिए है। यों अल्लाह का फ़ज़ल आगे बढ़ते बढ़ते मज़ीद बहुत-से लोगों तक पहुँच रहा है और नतीजे में वह
अल्लाह को जलाल देकर शुक्रगुज़ारी की दुआओं में बहुत इज़ाफ़ा कर रहे हैं।

ईमान की ज़िंदगी

16 इसी वजह से हम बेदिल नहीं हो जाते। बेशक ज़ाहिरी तौर पर हम ख़त्म हो रहे हैं, लेकिन अंदर ही अंदर रोज़
बरोज़ हमारी तजदीद होती जा रही है। 17 क्योंकि हमारी मौजूदा मुसीबत हलकी और पल-भर की है, और वह हमारे
लिए एक ऐसा अबदी जलाल पैदा कर रही है जिसकी निसबत मौजूदा मुसीबत कुछ भी नहीं। 18 इसलिए हम देखी

हुई चीज़ों पर ग़ौर नहीं करते बल्कि अनदेखी चीज़ों पर। क्योंकि देखी हुई चीज़ें आरिज़ी हैं, जबकि अनदेखी चीज़ें
अबदी हैं।

5

1 हम तो जानते हैं कि जब हमारी दुनियावी झोंपड़ी जिसमें हम रहते हैं गिराई जाएगी तो अल्लाह हमें आसमान पर
एक मकान देगा, एक ऐसा अबदी घर जिसे इनसानी हाथों ने नहीं बनाया होगा। 2 इसलिए हम इस झोंपड़ी में कराहते हैं
और आसमानी घर पहन लेने की शदीद आरज़ू रखते हैं, 3 क्योंकि जब हम उसे पहन लेंगे तो हम नंगे नहीं पाए जाएंगे।
4 इस झोंपड़ी में रहते हुए हम बोझ तले कराहते हैं। क्योंकि हम अपना फ़ानी लिबास उतारना नहीं चाहते बल्कि उस
पर आसमानी घर का लिबास पहन लेना चाहते हैं ताकि ज़िंदगी वह कुछ निगल जाए जो फ़ानी है। 5 अल्लाह ने ख़ुद
हमें इस मक़सद के लिए तैयार किया है और उसी ने हमें रूहुल-क़ुद्स को आनेवाले जलाल के बैआने के तौर पर दे दिया
है।

6 चुनाँचे हम हमेशा हौसला रखते हैं। हम जानते हैं कि जब तक अपने बदन में रिहाइशपज़ीर हैं उस वक़्त तक
ख़ुदावंद के घर से दूर हैं। 7 हम ज़ाहिरी चीज़ों पर भरोसा नहीं करते बल्कि ईमान पर चलते हैं। 8 हाँ, हमारा हौसला
बुलंद है बल्कि हम ज़्यादा यह चाहते हैं कि अपने जिस्मानी घर से रवाना होकर ख़ुदावंद के घर में रहें। 9 लेकिन ख़ाह
हम अपने बदन में हों या न, हम इसी कोशिश में रहते हैं कि ख़ुदावंद को पसंद आएँ। 10 क्योंकि लाज़िम है कि हम
सब मसीह के तख़्ते-अदालत के सामने हाज़िर हो जाएँ। वहाँ हर एक को उस काम का अज्र मिलेगा जो उसने अपने
बदन में रहते हुए किया है, ख़ाह वह अच्छा था या बुरा।

मसीह के वसीले से हमारी अल्लाह के साथ दोस्ती

11 अब हम ख़ुदावंद के ख़ौफ़ को जानकर लोगों को समझाने की कोशिश करते हैं। हम तो अल्लाह के सामने पूरे
तौर पर ज़ाहिर हैं। और मैं उम्मीद रखता हूँ कि हम आपके ज़मीर के सामने भी ज़ाहिर हैं। 12 क्या हम यह बात करके
दुबारा अपनी सिफ़ारिश कर रहे हैं? नहीं, आपको हम पर फ़ख़र करने का मौक़ा दे रहे हैं ताकि आप उनके जवाब में
कुछ कह सकें जो ज़ाहिरी बातों पर शेख़ी मारते और दिली बातें नज़रंदाज़ करते हैं। 13 क्योंकि अगर हम बेख़ुद हुए तो
अल्लाह की ख़ातिर, और अगर होश में हैं तो आपकी ख़ातिर। 14 बात यह है कि मसीह की मुहब्बत हमें मजबूर कर
देती है, क्योंकि हम इस नतीजे पर पहुँच गए हैं कि एक सबके लिए मुआ। इसका मतलब है कि सब ही मर गए हैं।
15 और वह सबके लिए इसलिए मुआ ताकि जो ज़िंदा हैं वह अपने लिए न जिएँ बल्कि उसके लिए जो उनकी ख़ातिर
मुआ और फिर जी उठा।

16 इस वजह से हम अब से किसी को भी दुनियावी निगाह से नहीं देखते। पहले तो हम मसीह को भी इस ज़ावीए
से देखते थे, लेकिन यह वक़्त गुज़र गया है। 17 चुनाँचे जो मसीह में है वह नया मख़लूक़ है। पुरानी ज़िंदगी जाती रही
और नई ज़िंदगी शुरू हो गई है। 18 यह सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है जिसने मसीह के वसीले से अपने साथ हमारा
मेल-मिलाप कर लिया है। और उसी ने हमें मेल-मिलाप कराने की ख़िदमत की ज़िम्मादारी दी है। 19 इस ख़िदमत के
तहत हम यह पैग़ाम सुनाते हैं कि अल्लाह ने मसीह के वसीले से अपने साथ दुनिया की सुलह कराई और लोगों के
गुनाहों को उनके ज़िम्मे न लगाया। सुलह कराने का यह पैग़ाम उसने हमारे सुपुर्द कर दिया।

20 पस हम मसीह के एलची हैं और अल्लाह हमारे वसीले से लोगों को समझाता है। हम मसीह के वास्ते आपसे
मिन्नत करते हैं कि अल्लाह की सुलह की पेशकश को क़बूल करें ताकि उस की आपके साथ सुलह हो जाए। 21 मसीह
बेगुनाह था, लेकिन अल्लाह ने उसे हमारी ख़ातिर गुनाह ठहराया ताकि हमें उसमें रास्तबाज़ क़रार दिया जाए।

6

1 अल्लाह के हमख़िदमत होते हुए हम आपसे मिन्नत करते हैं कि जो फ़ज़ल आपको मिला है वह ज़ाया न जाए।
2 क्योंकि अल्लाह फ़रमाता है, "क़बूलियत के वक़्त मैंने तेरी सुनी, नजात के दिन तेरी मदद की।" सुनें! अब क़बूलियत
का वक़्त आ गया है, अब नजात का दिन है।

3 हम किसी के लिए भी ठोकर का बाइस नहीं बनते ताकि लोग हमारी ख़िदमत में नुक़्स न निकाल सकें। 4 हाँ, हमें
सिफ़ारिश की ज़रूरत ही नहीं, क्योंकि अल्लाह के ख़ादिम होते हुए हम हर हालत में अपनी नेकनामी ज़ाहिर करते हैं
: जब हम सब्र से मुसीबतें, मुश्किलात और आफ़तें बरदाश्त करते हैं, 5 जब लोग हमें मारते और क़ैद में डालते हैं, जब
हम बेक़ाबू हुजूमों का सामना करते हैं, जब हम मेहनत-मशक़्क़त करते, रात के वक़्त जागते और भूके रहते हैं, 6 जब
हम अपनी पाकीज़गी, इल्म, सब्र और मेहरबान सुलूक का इज़हार करते हैं, जब हम रूहुल-क़ुद्स के वसीले से हक़ीक़ी
मुहब्बत रखते, 7 सच्ची बातें करते और अल्लाह की क़ुदरत से लोगों की ख़िदमत करते हैं। हम अपनी नेकनामी इसमें

भी ज़ाहिर करते हैं कि हम दोनों हाथों से रास्तबाज़ी के हथियार थामे रखते हैं। 8 हम अपनी ख़िदमत जारी रखते हैं,
चाहे लोग हमारी इज़्ज़त करें चाहे बेइज़्ज़ती, चाहे वह हमारी बुरी रिपोर्ट दें चाहे अच्छी। अगरचे हमारी ख़िदमत सच्ची
है, लेकिन लोग हमें दग़ाबाज़ क़रार देते हैं। 9 अगरचे लोग हमें जानते हैं तो भी हमें नज़रंदाज़ किया जाता है। हम मरते
मरते ज़िंदा रहते हैं और लोग हमें मार मारकर क़त्ल नहीं कर सकते। 10 हम ग़म खा खाकर हर वक़्त ख़ुश रहते हैं, हम
ग़रीब हालत में बहुतों को दौलतमंद बना देते हैं। हमारे पास कुछ नहीं है, तो भी हमें सब कुछ हासिल है।

11 कुरिंथुस के अज़ीज़ो, हमने खुलकर आपसे बात की है, हमारा दिल आपके लिए कुशादा हो गया है। 12 जो
जगह हमने दिल में आपको दी है वह अब तक कम नहीं हुई। लेकिन आपके दिलों में हमारे लिए कोई जगह नहीं रही।
13 अब मैं आपसे जो मेरे बच्चे हैं दरख़ास्त करता हूँ कि जवाब में हमें भी अपने दिलों में जगह दें।

ग़ैरमसीही असरात से ख़बरदार

14 ग़ैरईमानदारों के साथ मिलकर एक जुए तले ज़िंदगी न गुज़ारें, क्योंकि रास्ती का नारास्ती से क्या वास्ता है? या
रौशनी तारीकी के साथ क्या ताल्लुक़ रख सकती है? 15 मसीह और इबलीस के दरमियान क्या मुताबिक़त हो सकती
है? ईमानदार का ग़ैरईमानदार के साथ क्या वास्ता है? 16 अल्लाह के मक़दिस और बुतों में क्या इत्तफ़ाक़ हो सकता
है? हम तो ज़िंदा ख़ुदा का घर हैं। अल्लाह ने यों फ़रमाया है,

"मैं उनके दरमियान सुकूनत करूँगा
और उनमें फिरूँगा।
मैं उनका ख़ुदा हूँगा,
और वह मेरी क़ौम होंगे।"
17 चुनाँचे रब फ़रमाता है,
"इसलिए उनमें से निकल आओ
और उनसे अलग हो जाओ।
किसी नापाक चीज़ को न छूना,
तो फिर मैं तुम्हें क़बूल करूँगा।
18 मैं तुम्हारा बाप हूँगा
और तुम मेरे बेटे-बेटियाँ होगे,
रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है।"

7

1 मेरे अज़ीज़ो, यह तमाम वादे हमसे किए गए हैं। इसलिए आएँ, हम अपने आपको हर उस चीज़ से पाक-साफ़ करें
जो जिस्म और रूह को आलूदा कर देती है। और हम ख़ुदा के ख़ौफ़ में मुकम्मल तौर पर मुक़द्दस बनने के लिए कोशाँ
रहें।

पौलुस की ख़ुशी

2 हमें अपने दिल में जगह दें। न हमने किसी से नाइनसाफ़ी की, न किसी को बिगाड़ा या उससे ग़लत फ़ायदा उठाया।
3 मैं यह बात आपको मुजरिम ठहराने के लिए नहीं कह रहा। मैं आपको पहले बता चुका हूँ कि आप हमें इतने अज़ीज़
हैं कि हम आपके साथ मरने और जीने के लिए तैयार हैं। 4 इसलिए मैं आपसे खुलकर बात करता हूँ और मैं आप पर
बड़ा फ़ख़र भी करता हूँ। इस नाते से मुझे पूरी तसल्ली है, और हमारी तमाम मुसीबतों के बावुजूद मेरी ख़ुशी की इंतहा
नहीं।

5 क्योंकि जब हम मकिदुनिया पहुँचे तो हम जिस्म के लिहाज़ से आराम न कर सके। मुसीबतों ने हमें हर तरफ़
से घेर लिया। दूसरों की तरफ़ से झगड़ों से और दिल में तरह तरह के डर से निपटना पड़ा। 6 लेकिन अल्लाह ने जो
दबे हुओं को तसल्ली बख़्शता है तितुस के आने से हमारी हौसलाअफ़्ज़ाई की। 7 हमारा हौसला न सिर्फ़ उसके आने
से बढ़ गया बल्कि उन हौसलाअफ़्ज़ा बातों से भी जिनसे आपने उसे तसल्ली दी। उसने हमें आपकी आरज़ू, आपकी
आहो-ज़ारी और मेरे लिए आपकी सरगरमी के बारे में रिपोर्ट दी। यह सुनकर मेरी ख़ुशी मज़ीद बढ़ गई।

8 क्योंकि अगरचे मैंने आपको अपने ख़त से दुख पहुँचाया तो भी मैं पछताता नहीं। पहले तो मैं ख़त लिखने से
पछताया, लेकिन अब मैं देखता हूँ कि जो दुख उसने आपको पहुँचाया वह सिर्फ़ आरिज़ी था 9 और उसने आपको तौबा
तक पहुँचाया। यह सुनकर मैं अब ख़ुशी मनाता हूँ, इसलिए नहीं कि आपको दुख उठाना पड़ा है बल्कि इसलिए कि
इस दुख ने आपको तौबा तक पहुँचाया। अल्लाह ने यह दुख अपनी मरज़ी पूरी कराने के लिए इस्तेमाल किया, इसलिए
आपको हमारी तरफ़ से कोई नुक़सान न पहुँचा। 10 क्योंकि जो दुख अल्लाह अपनी मरज़ी पूरी कराने के लिए इस्तेमाल

करता है उससे तौबा पैदा होती है और उसका अंजाम नजात है। इसमें पछताने की गुंजाइश ही नहीं। इसके बरअक्स
दुनियावी दुख का अंजाम मौत है। 11 आप ख़ुद देखें कि अल्लाह के इस दुख ने आपमें क्या पैदा किया है : कितनी
संजीदगी, अपना दिफ़ा करने का कितना जोश, ग़लत हरकतों पर कितना ग़ुस्सा, कितना ख़ौफ़, कितनी चाहत, कितनी
सरगरमी। आप सज़ा देने के लिए कितने तैयार थे! आपने हर लिहाज़ से साबित किया है कि आप इस मामले में बेक़ुसूर
हैं।
12 ग़रज़, अगरचे मैंने आपको लिखा, लेकिन मक़सद यह नहीं था कि ग़लत हरकतें करनेवाले के बारे में लिखूँ या
उसके बारे में जिसके साथ ग़लत काम किया गया। नहीं, मक़सद यह था कि अल्लाह के हुज़ूर आप पर ज़ाहिर हो जाए
कि आप हमारे लिए कितने सरगरम हैं। 13 यही वजह है कि हमारा हौसला बढ़ गया है।

लेकिन न सिर्फ़ हमारी हौसलाअफ़्ज़ाई हुई है बल्कि हम यह देखकर बेइंतहा ख़ुश हुए कि तितुस कितना ख़ुश था।
वह क्यों ख़ुश था? इसलिए कि उस की रूह आप सबसे तरो-ताज़ा हुई। 14 उसके सामने मैंने आप पर फ़ख़र किया था,
और मैं शरमिंदा नहीं हुआ क्योंकि यह बात दुरुस्त साबित हुई है। जिस तरह हमने आपको हमेशा सच्ची बातें बताई हैं
उसी तरह तितुस के सामने आप पर हमारा फ़ख़र भी दुरुस्त निकला। 15 आप उसे निहायत अज़ीज़ हैं क्योंकि वह आप
सबकी फ़रमाँबरदारी याद करता है, कि आपने डरते और काँपते हुए उसे ख़ुशआमदीद कहा। 16 मैं ख़ुश हूँ कि मैं हर
लिहाज़ से आप पर एतमाद कर सकता हूँ।

8

यहूदिया के ग़रीबों के लिए हदिया

1 भाइयो, हम आपकी तवज्जुह उस फ़ज़ल की तरफ़ दिलाना चाहते हैं जो अल्लाह ने सूबा मकिदुनिया की जमातों
पर किया। 2 जिस मुसीबत में वह फँसे हुए हैं उससे उनकी सख़्त आज़माइश हुई। तो भी उनकी बेइंतहा ख़ुशी और शदीद
ग़ुरबत का नतीजा यह निकला कि उन्होंने बड़ी फ़ैयाज़दिली से हदिया दिया। 3 मैं गवाह हूँ कि जितना वह दे सके उतना
उन्होंने दे दिया बल्कि इससे भी ज़्यादा। अपनी ही तरफ़ से 4 उन्होंने बड़े ज़ोर से हमसे मिन्नत की कि हमें भी यहूदिया
के मुक़द्दसीन की ख़िदमत करने का मौक़ा दें, हम भी देने के फ़ज़ल में शरीक होना चाहते हैं। 5 और उन्होंने हमारी
उम्मीद से कहीं ज़्यादा किया! अल्लाह की मरज़ी से उनका पहला क़दम यह था कि उन्होंने अपने आपको ख़ुदावंद के
लिए मख़सूस किया। उनका दूसरा क़दम यह था कि उन्होंने अपने आपको हमारे लिए मख़सूस किया। 6 इस पर हमने
तितुस की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह आपके पास भी हदिया जमा करने का वह सिलसिला अंजाम तक पहुँचाए जो
उसने शुरू किया था। 7 आपके पास सब कुछ कसरत से पाया जाता है, ख़ाह ईमान हो, ख़ाह कलाम, इल्म, मुकम्मल
सरगरमी या हमसे मुहब्बत हो। अब इस बात का ख़याल रखें कि आप यह हदिया देने में भी अपनी कसीर दौलत का
इज़हार करें।
8 मेरी तरफ़ से यह कोई हुक्म नहीं है। लेकिन दूसरों की सरगरमी के पेशे-नज़र मैं आपकी भी मुहब्बत परख रहा
हूँ कि वह कितनी हक़ीक़ी है। 9 आप तो जानते हैं कि हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह ने आप पर कैसा फ़ज़ल किया है, कि
अगरचे वह दौलतमंद था तो भी वह आपकी ख़ातिर ग़रीब बन गया ताकि आप उस की ग़ुरबत से दौलतमंद बन जाएँ।
10 इस मामले में मेरा मशवरा सुनें, क्योंकि वह आपके लिए मुफ़ीद साबित होगा। पिछले साल आप पहली जमात
थे जो न सिर्फ़ हदिया देने लगी बल्कि इसे देना भी चाहती थी। 11 अब उसे तकमील तक पहुँचाएँ जो आपने शुरू कर
रखा है। देने का जो शौक़ आप रखते हैं वह अमल में लाया जाए। उतना दें जितना आप दे सकें। 12 क्योंकि अगर आप
देने का शौक़ रखते हैं तो फिर अल्लाह आपका हदिया उस बिना पर क़बूल करेगा जो आप दे सकते हैं, उस बिना पर
नहीं जो आप नहीं दे सकते।
13 कहने का मतलब यह नहीं कि दूसरों को आराम दिलाने के बाइस आप ख़ुद मुसीबत में पड़ जाएँ। बात सिर्फ़ यह
है कि लोगों के हालात कुछ बराबर होने चाहिएँ। 14 इस वक़्त तो आपके पास बहुत है और आप उनकी ज़रूरत पूरी
कर सकते हैं। बाद में किसी वक़्त जब उनके पास बहुत होगा तो वह आपकी ज़रूरत भी पूरी कर सकेंगे। यों आपके
हालात कुछ बराबर रहेंगे, 15 जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है, "जिसने ज़्यादा जमा किया था उसके पास
कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी था।"

तितुस और उसके साथी

16 ख़ुदा का शुक्र है जिसने तितुस के दिल में वही जोश पैदा किया है जो मैं आपके लिए रखता हूँ। 17 जब हमने उस
की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह आपके पास जाए तो वह न सिर्फ़ इसके लिए तैयार हुआ बल्कि बड़ा सरगरम होकर
ख़ुद बख़ुद आपके पास जाने के लिए रवाना हुआ। 18 हमने उसके साथ उस भाई को भेज दिया जिसकी ख़िदमत की

तारीफ़ तमाम जमातें करती हैं, क्योंकि उसे अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने की नेमत मिली है। 19 उसे न सिर्फ़ आपके
पास जाना है बल्कि जमातों ने उसे मुक़र्रर किया है कि जब हम हदिये को यरूशलम ले जाएंगे तो वह हमारे साथ जाए।
यों हम यह ख़िदमत अदा करते वक़्त ख़ुदावंद को जलाल देंगे और अपनी सरगरमी का इज़हार करेंगे।
20 क्योंकि उस बडे हदिये के पेशे-नज़र जो हम ले जाएंगे हम इससे बचना चाहते हैं कि किसी को हम पर शक
करने का मौक़ा मिले। 21 हमारी पूरी कोशिश यह है कि वही कुछ करें जो न सिर्फ़ ख़ुदावंद की नज़र में दुरुस्त है बल्कि
इनसान की नज़र में भी।
22 उनके साथ हमने एक और भाई को भी भेज दिया जिसकी सरगरमी हमने कई मौक़ों पर परखी है। अब वह
मज़ीद सरगरम हो गया है, क्योंकि वह आप पर बड़ा एतमाद करता है। 23 जहाँ तक तितुस का ताल्लुक़ है, वह मेरा
साथी और हमख़िदमत है। और जो भाई उसके साथ हैं उन्हें जमातों ने भेजा है। वह मसीह के लिए इज़्ज़त का बाइस
हैं। 24 उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार करके यह ज़ाहिर करें कि हम आप पर क्यों फ़ख़र करते हैं। फिर यह बात
ख़ुदा की दीगर जमातों को भी नज़र आएगी।

9

मुक़द्दसीन की मदद

1 असल में इसकी ज़रूरत नहीं कि मैं आपको उस काम के बारे में लिखूँ जो हमें यहूदिया के मुक़द्दसीन की ख़िदमत
में करना है। 2 क्योंकि मैं आपकी गरमजोशी जानता हूँ, और मैं मकिदुनिया के ईमानदारों के सामने आप पर फ़ख़र
करता रहा हूँ कि "अख़या के लोग पिछले साल से देने के लिए तैयार थे।" यों आपकी सरगरमी ने ज़्यादातर लोगों को
ख़ुद देने के लिए उभारा। 3 अब मैंने इन भाइयों को भेज दिया है ताकि हमारा आप पर फ़ख़र बेबुनियाद न निकले बल्कि
जिस तरह मैंने कहा था आप तैयार रहें। 4 ऐसा न हो कि जब मैं मकिदुनिया के कुछ भाइयों को साथ लेकर आपके
पास पहुँचूँगा तो आप तैयार न हूँ। उस वक़्त मैं, बल्कि आप भी शरमिंदा होंगे कि मैंने आप पर इतना एतमाद किया है।
5 इसलिए मैंने इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी समझा कि भाई पहले ही आपके पास आकर उस हदिये का इंतज़ाम करें
जिसका वादा आपने किया है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरे आने तक यह हदिया जमा किया गया हो और ऐसा न लगे
जैसा इसे मुश्किल से आपसे निकालना पडा। इसके बजाए आपकी सख़ावत ज़ाहिर हो जाए।
6 याद रहे कि जो शख़्स बीज को बचा बचाकर बोता है उस की फ़सल भी उतनी कम होगी। लेकिन जो बहुत बीज
बोता है उस की फ़सल भी बहुत ज़्यादा होगी। 7 हर एक उतना दे जितना देने के लिए उसने पहले अपने दिल में ठहरा
लिया है। वह इसमें तकलीफ़ या मजबूरी महसूस न करे, क्योंकि अल्लाह उससे मुहब्बत रखता है जो ख़ुशी से देता है।
8 और अल्लाह इस क़ाबिल है कि आपको आपकी ज़रूरियात से कहीं ज़्यादा दे। फिर आपके पास हर वक़्त और हर
लिहाज़ से काफ़ी होगा बल्कि इतना ज़्यादा कि आप हर क़िस्म का नेक काम कर सकेंगे। 9 चुनाँचे कलामे-मुक़द्दस में
यह भी लिखा है, "उसने फ़ैयाज़ी से ज़रूरतमंदों में ख़ैरात बिखेर दी, उस की रास्तबाज़ी हमेशा तक क़ायम रहेगी।"
10 ख़ुदा ही बीज बोनेवाले को बीज मुहैया करता और उसे खाने के लिए रोटी देता है। और वह आपको भी बीज देकर
उसमें इज़ाफ़ा करेगा और आपकी रास्तबाज़ी की फ़सल उगने देगा। 11 हाँ, वह आपको हर लिहाज़ से दौलतमंद बना
देगा और आप हर मौक़े पर फ़ैयाज़ी से दे सकेंगे। चुनाँचे जब हम आपका हदिया उनके पास ले जाएंगे जो ज़रूरतमंद हैं
तो वह ख़ुदा का शुक्र करेंगे। 12 यों आप न सिर्फ़ मुक़द्दसीन की ज़रूरियात पूरी करेंगे बल्कि वह आपकी इस ख़िदमत
से इतने मुतअस्सिर हो जाएंगे कि वह बडे जोश से ख़ुदा का भी शुक्रिया अदा करेंगे। 13 आपकी ख़िदमत के नतीजे में
वह अल्लाह को जलाल देंगे। क्योंकि आपकी उन पर और तमाम ईमानदारों पर सख़ावत का इज़हार साबित करेगा कि
आप मसीह की ख़ुशख़बरी न सिर्फ़ तसलीम करते हैं बल्कि उसके ताबे भी रहते हैं। 14 और जब वह आपके लिए दुआ
करेंगे तो आपके आरज़ूमंद रहेंगे, इसलिए कि अल्लाह ने आपको कितना बड़ा फ़ज़ल दे दिया है। 15 अल्लाह का उस
की नाक़ाबिले-बयान बख़्शिश के लिए शुक्र हो!

10

पौलुस अपनी ख़िदमत का दिफ़ा करता है

1 मैं आपसे अपील करता हूँ, मैं पौलुस जिसके बारे में कहा जाता है कि मैं आपके रूबरू आजिज़ होता हूँ और सिर्फ़
आपसे दूर होकर दिलेर होता हूँ। मसीह की हलीमी और नरमी के नाम में 2 मैं आपसे मिन्नत करता हूँ कि मुझे आपके
पास आकर इतनी दिलेरी से उन लोगों से निपटना न पड़े जो समझते हैं कि हमारा चाल-चलन दुनियावी है। क्योंकि
फ़िलहाल ऐसा लगता है कि इसकी ज़रूरत होगी। 3 बेशक हम इनसान ही हैं, लेकिन हम दुनिया की तरह जंग नहीं
लड़ते। 4 और जो हथियार हम इस जंग में इस्तेमाल करते हैं वह इस दुनिया के नहीं हैं, बल्कि उन्हें अल्लाह की तरफ़

से क़िले ढा देने की क़ुव्वत हासिल है। इनसे हम ग़लत ख़यालात के ढाँचे 5 और हर ऊँची चीज़ ढा देते हैं जो अल्लाह
के इल्मो-इरफ़ान के ख़िलाफ़ खड़ी हो जाती है। और हम हर ख़याल को क़ैद करके मसीह के ताबे कर देते हैं। 6 हाँ,
आपके पूरे तौर पर ताबे हो जाने पर हम हर नाफ़रमानी की सज़ा देने के लिए तैयार होंगे।
7 आप सिर्फ़ ज़ाहिरी बातों पर ग़ौर कर रहे हैं। अगर किसी को इस बात का एतमाद हो कि वह मसीह का है तो वह
इसका भी ख़याल करे कि हम भी उसी की तरह मसीह के हैं। 8 क्योंकि अगर मैं उस इख़्तियार पर मज़ीद फ़ख़र भी
करूँ जो ख़ुदावंद ने हमें दिया है तो भी मैं शरमिंदा नहीं हूँगा। ग़ौर करें कि उसने हमें आपको ढा देने का नहीं बल्कि
आपकी रूहानी तामीर करने का इख़्तियार दिया है। 9 मैं नहीं चाहता कि ऐसा लगे जैसे मैं आपको अपने ख़तों से डराने
की कोशिश कर रहा हूँ। 10 क्योंकि बाज़ कहते हैं, "पौलुस के ख़त ज़ोरदार और ज़बरदस्त हैं, लेकिन जब वह ख़ुद
हाज़िर होता है तो वह कमज़ोर और उसके बोलने का तर्ज़ हिक़ारतआमेज़ है।" 11 ऐसे लोग इस बात का ख़याल करें कि
जो बातें हम आपसे दूर होते हुए अपने ख़तों में पेश करते हैं उन्हीं बातों पर हम अमल करेंगे जब आपके पास आएँगे।
12 हम तो अपने आपको उनमें शुमार नहीं करते जो अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते रहते हैं, न अपना
उनके साथ मुवाज़ना करते हैं। वह कितने बेसमझ हैं जब वह अपने आपको मेयार बनाकर उसी पर अपने आपको जाँचते
हैं और अपना मुवाज़ना अपने आपसे करते हैं। 13 लेकिन हम मुनासिब हद से ज़्यादा फ़ख़र नहीं करेंगे बल्कि सिर्फ़
उस हद तक जो अल्लाह ने हमारे लिए मुक़र्रर किया है। और आप भी इस हद के अंदर आ जाते हैं। 14 इसमें हम
मुनासिब हद से ज़्यादा फ़ख़र नहीं कर रहे, क्योंकि हम तो मसीह की ख़ुशख़बरी लेकर आप तक पहुँच गए हैं। अगर
ऐसा न होता तो फिर और बात होती। 15 हम ऐसे काम पर फ़ख़र नहीं करते जो दूसरों की मेहनत से सरंजाम दिया गया
है। इसमें भी हम मुनासिब हद्दों के अंदर रहते हैं, बल्कि हम यह उम्मीद रखते हैं कि आपका ईमान बढ़ जाए और यों
हमारी क़दरो-क़ीमत भी अल्लाह की मुक़र्ररा हद तक बढ़ जाए। ख़ुदा करे कि आपमें हमारा यह काम इतना बढ़ जाए
16 कि हम अल्लाह की ख़ुशख़बरी आपसे आगे जाकर भी सुना सकें। क्योंकि हम उस काम पर फ़ख़र नहीं करना
चाहते जिसे दूसरे कर चुके हैं।
17 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "फ़ख़र करनेवाला ख़ुदावंद ही पर फ़ख़र करे।" 18 जब लोग अपनी तारीफ़ करके
अपनी सिफ़ारिश करते हैं तो इसमें क्या है! इससे वह सहीह साबित नहीं होते, बल्कि अहम बात यह है कि ख़ुदावंद
ही इसकी तसदीक़ करे।

11

पौलुस और झूटे रसूल
1 ख़ुदा करे कि जब मैं अपनी हमाक़त का कुछ इज़हार करता हूँ तो आप मुझे बरदाश्त करें। हाँ, ज़रूर मुझे बरदाश्त
करें, 2 क्योंकि मैं आपके लिए अल्लाह की-सी ग़ैरत रखता हूँ। मैंने आपका रिश्ता एक ही मर्द के साथ बाँधा, और मैं
आपको पाकदामन कुँवारी की हैसियत से उस मर्द मसीह के हुज़ूर पेश करना चाहता था। 3 लेकिन अफ़सोस, मुझे डर है
कि आप हव्वा की तरह गुनाह में गिर जाएंगे, कि जिस तरह साँप ने अपनी चालाकी से हव्वा को धोका दिया उसी तरह
आपकी सोच भी बिगड़ जाएगी और वह ख़ुलूसदिली और पाक लग्न ख़त्म हो जाएगी जो आप मसीह के लिए महसूस
करते हैं। 4 क्योंकि आप ख़ुशी से हर एक को बरदाश्त करते हैं जो आपके पास आकर एक फ़रक़ क़िस्म का ईसा पेश
करता है, एक ऐसा ईसा जो हमने आपको पेश नहीं किया था। और आप एक ऐसी रूह और ऐसी "ख़ुशख़बरी" क़बूल
करते हैं जो उस रूह और ख़ुशख़बरी से बिलकुल फ़रक़ है जो आपको हमसे मिली थी।
5 मेरा नहीं ख़याल कि मैं इन नाम-निहाद 'ख़ास' रसूलों की निसबत कम हूँ। 6 हो सकता है कि मैं बोलने में माहिर
नहीं हूँ, लेकिन यह मेरे इल्म के बारे में नहीं कहा जा सकता। यह हमने आपको साफ़ साफ़ और हर लिहाज़ से दिखाया
है।
7 मैंने अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए आपसे कोई भी मुआवज़ा न लिया। यों मैंने अपने आपको नीचा कर
दिया ताकि आपको सरफ़राज़ कर दिया जाए। क्या इसमें मुझसे ग़लती हुई? 8 जब मैं आपकी ख़िदमत कर रहा था तो
मुझे ख़ुदा की दीगर जमातों से पैसे मिल रहे थे, यानी आपकी मदद करने के लिए मैं उन्हें लूट रहा था। 9 और जब
मैं आपके पास था और ज़रूरतमंद था तो मैं किसी पर बोझ न बना, क्योंकि जो भाई मकिदुनिया से आए उन्होंने मेरी
ज़रूरियात पूरी कीं। माज़ी में मैं आप पर बोझ न बना और आइंदा भी नहीं बनूँगा। 10 मसीह की उस सच्चाई की
क़सम जो मेरे अंदर है, अख़या के पूरे सूबे में कोई मुझे इस पर फ़ख़र करने से नहीं रोकेगा। 11 मैं यह क्यों कह रहा
हूँ? इसलिए कि मैं आपसे मुहब्बत नहीं रखता? ख़ुदा ही जानता है कि मैं आपसे मुहब्बत रखता हूँ।
12 और जो कुछ मैं अब कर रहा हूँ वही करता रहूँगा, ताकि मैं नाम-निहाद रसूलों को वह मौक़ा न दूँ जो वह ढूँड
रहे हैं। क्योंकि यही उनका मक़सद है कि वह फ़ख़र करके यह कह सकें कि वह हम जैसे हैं। 13 ऐसे लोग तो झूटे

रसूल हैं, धोकेबाज़ मज़दूर जिन्होंने मसीह के रसूलों का रूप धार लिया है। 14 और क्या अजब, क्योंकि इबलीस भी
नूर के फ़रिश्ते का रूप धारकर घुमता-फिरता है। 15 तो फिर यह बड़ी बात नहीं कि उसके चेले रास्तबाज़ी के ख़ादिम
का रूप धारकर घुमते-फिरते हैं। उनका अंजाम उनके आमाल के मुताबिक़ ही होगा।

रसूल होने की वजह से पौलुस की ईज़ारसानी

16 मैं दुबारा कहता हूँ कि कोई मुझे अहमक़ न समझे। लेकिन अगर आप यह सोचें भी तो कम अज़ कम मुझे
अहमक़ की हैसियत से क़बूल करें ताकि मैं भी थोड़ा-बहुत अपने आप पर फ़ख़र करूँ। 17 असल में जो कुछ मैं अब
बयान कर रहा हूँ वह ख़ुदावंद को पसंद नहीं है, बल्कि मैं अहमक़ की तरह बात कर रहा हूँ। 18 लेकिन चूँकि इतने
लोग जिस्मानी तौर पर फ़ख़र कर रहे हैं इसलिए मैं भी फ़ख़र करूँगा। 19 बेशक आप ख़ुद इतने दानिशमंद हैं कि आप
अहमक़ों को ख़ुशी से बरदाश्त करते हैं। 20 हाँ, बल्कि आप यह भी बरदाश्त करते हैं जब लोग आपको ग़ुलाम बनाते,
आपको लूटते, आपसे ग़लत फ़ायदा उठाते, नख़रे करते और आपको थप्पड़ मारते हैं। 21 यह कहकर मुझे शर्म आती
है कि हम इतने कमज़ोर थे कि हम ऐसा न कर सके।

लेकिन अगर कोई किसी बात पर फ़ख़र करने की जुर्रत करे (मैं अहमक़ की-सी बात कर रहा हूँ) तो मैं भी उतनी
ही जुर्रत करूँगा। 22 क्या वह इबरानी हैं? मैं भी हूँ। क्या वह इसराईली हैं? मैं भी हूँ। क्या वह इब्राहीम की औलाद
हैं? मैं भी हूँ। 23 क्या वह मसीह के ख़ादिम हैं? (अब तो मैं गोया बेख़ुद हो गया हूँ कि इस तरह की बातें कर रहा हूँ!)
मैं उनसे ज़्यादा मसीह की ख़िदमत करता हूँ। मैंने उनसे कहीं ज़्यादा मेहनत-मशक़्क़त की, ज़्यादा दफ़ा जेल में रहा,
मेरे ज़्यादा सख़्ती से कोड़े लगाए गए और मैं बार बार मरने के ख़तरों में रहा हूँ। 24 मुझे यहूदियों से पाँच दफ़ा 39
कोड़ों की सज़ा मिली है। 25 तीन दफ़ा रोमियों ने मुझे लाठी से मारा। एक बार मुझे संगसार किया गया। जब मैं समुंदर
में सफ़र कर रहा था तो तीन मरतबा मेरा जहाज़ तबाह हुआ। हाँ, एक दफ़ा मुझे जहाज़ के तबाह होने पर एक पूरी रात
और दिन समुंदर में गुज़ारना पड़ा। 26 मेरे बेशुमार सफ़रों के दौरान मुझे कई तरह के ख़तरों का सामना करना पड़ा,
दरियाओं और डाकुओं का ख़तरा, अपने हमवतनों और ग़ैरयहूदियों के हमलों का ख़तरा। जहाँ भी मैं गया हूँ वहाँ यह
ख़तरे मौजूद रहे, ख़ाह मैं शहर में था, ख़ाह ग़ैरआबाद इलाक़े में या समुंदर में। झूटे भाइयों की तरफ़ से भी ख़तरे रहे
हैं। 27 मैंने जाँफ़िशानी से सख़्त मेहनत-मशक़्क़त की है और कई रात जागता रहा हूँ, मैं भूका और प्यासा रहा हूँ, मैंने
बहुत रोज़े रखे हैं। मुझे सर्दी और नंगेपन का तजरबा हुआ है। 28 और यह उन फ़िकरों के अलावा है जो मैं ख़ुदा की
तमाम जमातों के लिए महसूस करता हूँ और जो मुझे दबाती रहती हैं। 29 जब कोई कमज़ोर है तो मैं अपने आपको भी
कमज़ोर महसूस करता हूँ। जब किसी को ग़लत राह पर लाया जाता है तो मैं उसके लिए शदीद रंजिश महसूस करता हूँ।
30 अगर मुझे फ़ख़र करना पड़े तो मैं उन चीज़ों पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमज़ोर हालत ज़ाहिर करती हैं। 31 हमारा
ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा का बाप (उस की हम्दो-सना अबद तक हो) जानता है कि मैं झूट नहीं बोल रहा। 32 जब मैं
दमिश्क़ शहर में था तो बादशाह अरितास के गवर्नर ने शहर के तमाम दरवाज़ों पर अपने पहरेदार मुक़र्रर किए ताकि
वह मुझे गिरिफ़्तार करें। 33 लेकिन शहर की फ़सील में एक दरीचा था, और मुझे एक टोकरे में रखकर वहाँ से उतारा
गया। यों मैं उसके हाथों से बच निकला।

12

पौलुस पर कई बातों का इनकिशाफ़

1 लाज़िम है कि मैं कुछ और फ़ख़र करूँ। अगरचे इसका कोई फ़ायदा नहीं, लेकिन अब मैं उन रोयाओं और
इनकिशाफ़ात का ज़िक्र करूँगा जो ख़ुदावंद ने मुझ पर ज़ाहिर किए। 2 मैं मसीह में एक आदमी को जानता हूँ जिसे चौदह
साल हुए छीनकर तीसरे आसमान तक पहुँचाया गया। मुझे नहीं पता कि उसे यह तजरबा जिस्म में या इसके बाहर हुआ।
ख़ुदा जानता है। 3 हाँ, ख़ुदा ही जानता है कि वह जिस्म में था या नहीं। लेकिन यह मैं जानता हूँ 4 कि उसे छीनकर
फ़िर्दौस में लाया गया जहाँ उसने नाक़ाबिले-बयान बातें सुनीं, ऐसी बातें जिनका ज़िक्र करना इनसान के लिए रवा नहीं।
5 इस क़िस्म के आदमी पर मैं फ़ख़र करूँगा, लेकिन अपने आप पर नहीं। मैं सिर्फ़ उन बातों पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी
कमज़ोर हालत को ज़ाहिर करती हैं। 6 अगर मैं फ़ख़र करना चाहता तो इसमें अहमक़ न होता, क्योंकि मैं हक़ीक़त
बयान करता। लेकिन मैं यह नहीं करूँगा, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि सबकी मेरे बारे में राय सिर्फ़ उस पर मुनहसिर हो जो
मैं करता या बयान करता हूँ। कोई मुझे इससे ज़्यादा न समझे।

7 लेकिन मुझे इन आला इनकिशाफ़ात की वजह से एक काँटा चुभो दिया गया, एक तकलीफ़देह चीज़ जो मेरे जिस्म
में धँसी रहती है ताकि मैं फूल न जाऊँ। इबलीस का यह पैग़ंबर मेरे मुक्के मारता रहता है ताकि मैं मग़रूर न हो जाऊँ।
8 तीन बार मैंने ख़ुदावंद से इल्तिजा की कि वह इसे मुझसे दूर करे। 9 लेकिन उसने मुझे यही जवाब दिया, “मेरा फ़ज़ल

तेरे लिए काफ़ी है, क्योंकि मेरी क़ुदरत का पूरा इज़हार तेरी कमज़ोर हालत ही में होता है।" इसलिए मैं मज़ीद ख़ुशी
से अपनी कमज़ोरियों पर फ़ख़र करूँगा ताकि मसीह की क़ुदरत मुझ पर ठहरी रहे। 10 यही वजह है कि मैं मसीह की
ख़ातिर कमज़ोरियों, गालियों, मजबूरियों, ईज़ारसानियों और परेशानियों में ख़ुश हूँ, क्योंकि जब मैं कमज़ोर होता हूँ
तब ही मैं ताक़तवर होता हूँ।

पौलुस की कुरिंथियों के लिए फ़िकर

11 मैं बेवुक़ूफ़ बन गया हूँ, लेकिन आपने मुझे मजबूर कर दिया है। चाहिए था कि आप ही दूसरों के सामने मेरे
हक़ में बात करते। क्योंकि बेशक मैं कुछ भी नहीं हूँ, लेकिन इन नाम-निहाद ख़ास रसूलों के मुक़ाबले में मैं किसी भी
लिहाज़ से कम नहीं हूँ। 12 जो मुतअद्दिद इलाही निशान, मोजिज़े और ज़बरदस्त काम मेरे वसीले से हुए वह साबित
करते हैं कि मैं रसूल हूँ। हाँ, वह बड़ी साबितक़दमी से आपके दरमियान किए गए। 13 जो ख़िदमत मैंने आपके दरमियान
की, क्या वह ख़ुदा की दीगर जमातों में मेरी ख़िदमत की निसबत कम थी? हरगिज़ नहीं! इसमें फ़रक़ सिर्फ़ यह था
कि मैं आपके लिए माली बोझ न बना। मुझे मुआफ़ करें अगर मुझसे इसमें ग़लती हुई है।
14 अब मैं तीसरी बार आपके पास आने के लिए तैयार हूँ। इस मरतबा भी मैं आपके लिए बोझ का बाइस नहीं बनूँगा,
क्योंकि मैं आपका माल नहीं बल्कि आप ही को चाहता हूँ। आख़िर बच्चों को माँ-बाप की मदद के लिए माल जमा
नहीं करना चाहिए बल्कि माँ-बाप को बच्चों के लिए। 15 मैं तो बड़ी ख़ुशी से आपके लिए हर ख़र्चा उठा लूँगा बल्कि
अपने आपको भी ख़र्च कर दूँगा। क्या आप मुझे कम प्यार करेंगे अगर मैं आपसे ज़्यादा मुहब्बत रखूँ?
16 ठीक है, मैं आपके लिए बोझ न बना। लेकिन बाज़ सोचते हैं कि मैं चालाक हूँ और आपको धोके से अपने जाल
में फँसा लिया। 17 किस तरह? जिन लोगों को मैंने आपके पास भेजा क्या मैंने उनमें से किसी के ज़रीए आपसे ग़लत
फ़ायदा उठाया? 18 मैंने तितुस की हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह आपके पास जाए और दूसरे भाई को भी साथ भेज दिया।
क्या तितुस ने आपसे ग़लत फ़ायदा उठाया? हरगिज़ नहीं! क्योंकि हम दोनों एक ही रूह में एक ही राह पर चलते हैं।
19 आप काफ़ी देर से सोच रहे होंगे कि हम आपके सामने अपना दिफ़ा कर रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि हम
मसीह में होते हुए अल्लाह के हुज़ूर ही यह कुछ बयान कर रहे हैं। और मेरे अज़ीज़ो, जो कुछ भी हम करते हैं हम
आपकी तामीर करने के लिए करते हैं। 20 मुझे डर है कि जब मैं आऊँगा तो न आपकी हालत मुझे पसंद आएगी, न मेरी
हालत आपको। मुझे डर है कि आपमें झगड़ा, हसद, ग़ुस्सा, ख़ुदग़रज़ी, बुहतान, गपबाज़ी, ग़ुरूर और बेतरतीबी पाई
जाएगी। 21 हाँ, मुझे डर है कि अगली दफ़ा जब आऊँगा तो अल्लाह मुझे आपके सामने नीचा दिखाएगा, और मैं उन
बहुतों के लिए ग़म खाऊँगा जिन्होंने माज़ी में गुनाह करके अब तक अपनी नापाकी, ज़िनाकारी और ऐयाशी से तौबा
नहीं की।

13

आख़िरी तंबीह और सलाम

1 अब मैं तीसरी दफ़ा आपके पास आ रहा हूँ। कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ लाज़िम है कि हर इलज़ाम की तसदीक़
दो या तीन गवाहों से की जाए। 2 जब मैं दूसरी दफ़ा आपके पास आया था तो मैंने पहले से आपको आगाह किया था।
अब मैं आपसे दूर यह बात दुबारा कहता हूँ कि जब मैं वापस आऊँगा तो न वह बचेंगे जिन्होंने पहले गुनाह किया था न
दीगर लोग। 3 जो भी सबूत आप माँग रहे हैं कि मसीह मेरे ज़रीए बोलता है वह मैं आपको दूँगा। आपके साथ सुलूक
में मसीह कमज़ोर नहीं है। नहीं, वह आपके दरमियान ही अपनी क़ुव्वत का इज़हार करता है। 4 क्योंकि अगरचे उसे
कमज़ोर हालत में मसलूब किया गया, लेकिन अब वह अल्लाह की क़ुदरत से ज़िंदा है। इसी तरह हम भी उसमें कमज़ोर
हैं, लेकिन अल्लाह की क़ुदरत से हम आपकी ख़िदमत करते वक़्त उसके साथ ज़िंदा हैं।
5 अपने आपको जाँचकर मालूम करें कि क्या आपका ईमान क़ायम है? ख़ुद अपने आपको परखें। क्या आप
नहीं जानते कि ईसा मसीह आपमें है? अगर नहीं तो इसका मतलब होता कि आपका ईमान नामक़बूल साबित होता।
6 लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप इतना पहचान लेंगे कि जहाँ तक हमारा ताल्लुक़ है हम नामक़बूल साबित नहीं हुए
हैं। 7 हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि आपसे कोई ग़लती न हो जाए। बात यह नहीं कि लोगों के सामने हम सहीह
निकलें बल्कि यह कि आप सहीह काम करें, चाहे लोग हमें ख़ुद नाकाम क्यों न क़रार दें। 8 क्योंकि हम हक़ीक़त
के ख़िलाफ़ खड़े नहीं हो सकते बल्कि सिर्फ़ उसके हक़ में। 9 हम ख़ुश हैं जब आप ताक़तवर हैं गो हम ख़ुद कमज़ोर
हैं। और हमारी दुआ यह है कि आप कामिल हो जाएँ। 10 यही वजह है कि मैं आपसे दूर रहकर लिखता हूँ। फिर जब
मैं आऊँगा तो मुझे अपना इख़्तियार इस्तेमाल करके आप पर सख़्ती नहीं करनी पड़ेगी। क्योंकि ख़ुदावंद ने मुझे यह
इख़्तियार आपको ढा देने के लिए नहीं बल्कि आपको तामीर करने के लिए दिया है।

11 भाइयो, आख़िर में मैं आपको सलाम कहता हूँ। सुधर जाएँ, एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें, एक ही सोच रखें
और सुलह-सलामती के साथ ज़िंदगी गुज़ारें। फिर मुहब्बत और सलामती का ख़ुदा आपके साथ होगा।
12 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देना। तमाम मुक़द्दसीन आपको सलाम कहते हैं।
13 ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल, अल्लाह की मुहब्बत और रूहुल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त आप सबके साथ होती
रहे।

गलतियों

1 यह ख़त पौलुस रसूल की तरफ़ से है। मुझे न किसी गुरोह ने मुक़र्रर किया न किसी शख़्स ने बल्कि ईसा मसीह
और ख़ुदा बाप ने जिसने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। 2 तमाम भाई भी जो मेरे साथ हैं गलतिया की जमातों को
सलाम कहते हैं।
3 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।
4 मसीह वही है जिसने अपने आपको हमारे गुनाहों की ख़ातिर क़ुरबान कर दिया और यों हमें इस मौजूदा शरीर जहान
से बचा लिया है, क्योंकि यह अल्लाह हमारे बाप की मरज़ी थी। 5 उसी का जलाल अबद तक होता रहे! आमीन।

एक ही ख़ुशख़बरी

6 मैं हैरान हूँ! आप इतनी जल्दी से उसे तर्क कर रहे हैं जिसने मसीह के फ़ज़ल से आपको बुलाया। और अब आप
एक फ़रक़ क़िस्म की "ख़ुशख़बरी" के पीछे लग गए हैं। 7 असल में यह अल्लाह की ख़ुशख़बरी है नहीं। बस कुछ
लोग आपको उलझन में डालकर मसीह की ख़ुशख़बरी में तबदीली लाना चाहते हैं। 8 हमने तो असली ख़ुशख़बरी सुनाई
और जो इससे फ़रक़ पैग़ाम सुनाता है उस पर लानत, ख़ाह हम ख़ुद ऐसा करें ख़ाह आसमान से कोई फ़रिश्ता उतरकर
यह ग़लत पैग़ाम सुनाए। 9 हम यह पहले बयान कर चुके हैं और अब मैं दुबारा कहता हूँ कि अगर कोई आपको ऐसी
"ख़ुशख़बरी" सुनाए जो उससे फ़रक़ है जिसे आपने क़बूल किया है तो उस पर लानत!
10 क्या मैं इसमें यह कोशिश कर रहा हूँ कि लोग मुझे क़बूल करें? हरगिज़ नहीं! मैं चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे
क़बूल करे। क्या मेरी कोशिश यह है कि मैं लोगों को पसंद आऊँ? अगर मैं अब तक ऐसा करता तो मसीह का ख़ादिम
न होता।

पौलुस किस तरह रसूल बन गया

11 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि जो ख़ुशख़बरी मैंने सुनाई वह इनसान की तरफ़ से नहीं है। 12 न मुझे
यह पैग़ाम किसी इनसान से मिला, न यह मुझे किसी ने सिखाया है बल्कि ईसा मसीह ने ख़ुद मुझ पर यह पैग़ाम ज़ाहिर
किया।
13 आपने तो ख़ुद सुन लिया है कि मैं उस वक़्त किस तरह ज़िंदगी गुज़ारता था जब यहूदी मज़हब का पैरोकार था।
उस वक़्त मैंने कितने जोश और शिद्दत से अल्लाह की जमात को ईज़ा पहुँचाई। मेरी पूरी कोशिश यह थी कि यह जमात
ख़त्म हो जाए। 14 यहूदी मज़हब के लिहाज़ से मैं अकसर दीगर हमउम्र यहूदियों पर सबक़त ले गया था। हाँ, मैं अपने
बापदादा की रिवायतों की पैरवी में हद से ज़्यादा सरगरम था।
15 लेकिन अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से मुझे पैदा होने से पेशतर ही चुनकर अपनी ख़िदमत करने के लिए बुलाया।
और जब उसने अपनी मरज़ी से 16 अपने फ़रज़ंद को मुझ पर ज़ाहिर किया ताकि मैं उसके बारे में ग़ैरयहूदियों को
ख़ुशख़बरी सुनाऊँ तो मैंने किसी भी शख़्स से मशवरा न लिया। 17 उस वक़्त मैं यरूशलम भी न गया ताकि उनसे मिलूँ
जो मुझसे पहले रसूल थे बल्कि मैं सीधा अरब चला गया और बाद में दमिश्क़ वापस आया। 18 इसके तीन साल बाद
ही मैं पतरस से शनासा होने के लिए यरूशलम गया। वहाँ मैं पंद्रह दिन उसके साथ रहा। 19 इसके अलावा मैंने सिर्फ़
ख़ुदावंद के भाई याक़ूब को देखा, किसी और रसूल को नहीं।
20 जो कुछ मैं लिख रहा हूँ अल्लाह गवाह है कि वह सहीह है। मैं झूट नहीं बोल रहा।
21 बाद में मैं मुल्के-शाम और किलिकिया चला गया। 22 उस वक़्त सूबा यहूदिया में मसीह की जमातें मुझे नहीं
जानती थीं। 23 उन तक सिर्फ़ यह ख़बर पहुँची थी कि जो आदमी पहले हमें ईज़ा पहुँचा रहा था वह अब ख़ुद उस
ईमान की ख़ुशख़बरी सुनाता है जिसे वह पहले ख़त्म करना चाहता था। 24 यह सुनकर उन्होंने मेरी वजह से अल्लाह
की तमजीद की।

2

पौलुस और दीगर रसूल

1 चौदह साल के बाद मैं दुबारा यरूशलम गया। इस दफ़ा बरनबास साथ था। मैं तितुस को भी साथ लेकर गया। 2 मैं
एक मुकाशफ़े की वजह से गया जो अल्लाह ने मुझ पर ज़ाहिर किया था। मेरी अलहदगी में उनके साथ मीटिंग हुई जो
असरो-रसूख़ रखते हैं। इसमें मैंने उन्हें वह ख़ुशख़बरी पेश की जो मैं ग़ैरयहूदियों को सुनाता हूँ। मैं नहीं चाहता था कि

जो दौड़ मैं दौड़ रहा हूँ या माज़ी में दौड़ा था वह आख़िरकार बेफ़ायदा निकले। 3 उस वक़्त वह यहाँ तक मेरे हक़ में
थे कि उन्होंने तितुस को भी अपना ख़तना करवाने पर मजबूर नहीं किया, अगरचे वह ग़ैरयहूदी है। 4 और चंद यही
चाहते थे। लेकिन यह झूटे भाई थे जो चुपके से अंदर घुस आए थे ताकि जासूस बनकर हमारी उस आज़ादी के बारे में
मालूमात हासिल कर लें जो हमें मसीह में मिली है। यह हमें ग़ुलाम बनाना चाहते थे, 5 लेकिन हमने लमहा-भर उनकी
बात न मानी और न उनके ताबे हुए ताकि अल्लाह की ख़ुशख़बरी की सच्चाई आपके दरमियान क़ायम रहे।
6 और जो राहनुमा समझे जाते थे उन्होंने मेरी बात में कोई इज़ाफ़ा न किया। (असल में मुझे कोई परवा नहीं कि
उनका असरो-रसूख़ था कि नहीं। अल्लाह तो इनसान की ज़ाहिरी हालत का लिहाज़ नहीं करता।) 7 बहरहाल उन्होंने
देखा कि अल्लाह ने मुझे ग़ैरयहूदियों को मसीह की ख़ुशख़बरी सुनाने की ज़िम्मादारी दी थी, बिलकुल उसी तरह जिस
तरह उसने पतरस को यहूदियों को यह पैग़ाम सुनाने की ज़िम्मादारी दी थी। 8 क्योंकि जो काम अल्लाह यहूदियों के
रसूल पतरस की ख़िदमत के वसीले से कर रहा था वही काम वह मेरे वसीले से भी कर रहा था, जो ग़ैरयहूदियों का
रसूल हूँ। 9 याक़ूब, पतरस और यूहन्ना को जमात के सतून माना जाता था। जब उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने इस
नाते से मुझे ख़ास फ़ज़ल दिया है तो उन्होंने मुझसे और बरनबास से दहना हाथ मिलाकर इसका इज़हार किया कि वह
हमारे साथ हैं। यों हम मुत्तफ़िक़ हुए कि बरनबास और मैं ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत करेंगे और वह यहूदियों में। 10 उन्होंने
सिर्फ़ एक बात पर ज़ोर दिया कि हम ज़रूरतमंदों को याद रखें, वही बात जिसे मैं हमेशा करने के लिए कोशाँ रहा हूँ।

अंताकिया में पौलुस पतरस को मलामत करता है

11 लेकिन जब पतरस अंताकिया शहर आया तो मैंने रूबरू उस की मुख़ालफ़त की, क्योंकि वह अपने रवय्ये के
सबब से मुजरिम ठहरा। 12 जब वह आया तो पहले वह ग़ैरयहूदी ईमानदारों के साथ खाना खाता रहा। लेकिन फिर
याक़ूब के कुछ अज़ीज़ आए। उसी वक़्त पतरस पीछे हटकर ग़ैरयहूदियों से अलग हुआ, क्योंकि वह उनसे डरता
था जो ग़ैरयहूदियों का ख़तना करवाने के हक़ में थे। 13 बाक़ी यहूदी भी इस रियाकारी में शामिल हुए, यहाँ तक कि
बरनबास को भी उनकी रियाकारी से बहकाया गया। 14 जब मैंने देखा कि वह उस सीधी राह पर नहीं चल रहे हैं जो
अल्लाह की ख़ुशख़बरी की सच्चाई पर मबनी है तो मैंने सबके सामने पतरस से कहा, "आप यहूदी हैं। लेकिन आप
ग़ैरयहूदी की तरह ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, यहूदी की तरह नहीं। तो फिर यह कैसी बात है कि आप ग़ैरयहूदियों को यहूदी
रिवायात की पैरवी करने पर मजबूर कर रहे हैं?"

सब ईमान से नजात पाते हैं

15 बेशक हम पैदाइशी यहूदी हैं और 'ग़ैरयहूदी गुनाहगार' नहीं हैं। 16 लेकिन हम जानते हैं कि इनसान को शरीअत
की पैरवी करने से रास्तबाज़ नहीं ठहराया जाता बल्कि ईसा मसीह पर ईमान लाने से। हम भी मसीह ईसा पर ईमान
लाए हैं ताकि हमें रास्तबाज़ क़रार दिया जाए, शरीअत की पैरवी करने से नहीं बल्कि मसीह पर ईमान लाने से। क्योंकि
शरीअत की पैरवी करने से किसी को भी रास्तबाज़ क़रार नहीं दिया जाएगा। 17 लेकिन अगर मसीह में रास्तबाज़
ठहरने की कोशिश करते करते हम ख़ुद गुनाहगार साबित हो जाएँ तो क्या इसका मतलब यह है कि मसीह गुनाह का
ख़ादिम है? हरगिज़ नहीं! 18 अगर मैं शरीअत के उस निज़ाम को दुबारा तामीर करूँ जो मैंने ढा दिया तो फिर मैं ज़ाहिर
करता हूँ कि मैं मुजरिम हूँ। 19 क्योंकि जहाँ तक शरीअत का ताल्लुक़ है मैं मुरदा हूँ। मुझे शरीअत ही से मारा गया है
ताकि अल्लाह के लिए जी सकूँ। मुझे मसीह के साथ मसलूब किया गया 20 और यों मैं ख़ुद ज़िंदा न रहा बल्कि मसीह
मुझमें ज़िंदा है। अब जो ज़िंदगी मैं इस जिस्म में गुज़ारता हूँ वह अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान लाने से गुज़ारता हूँ। उसी
ने मुझसे मुहब्बत रखकर मेरे लिए अपनी जान दी। 21 मैं अल्लाह का फ़ज़ल रद्द करने से इनकार करता हूँ। क्योंकि
अगर किसी को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहराया जा सकता तो इसका मतलब यह होता कि मसीह का
मरना अबस था।

3

शरीअत या ईमान

1 नासमझ गलतियो! किसने आप पर जादू कर दिया? आपकी आँखों के सामने ही ईसा मसीह और उस की सलीबी
मौत को साफ़ साफ़ पेश किया गया। 2 मुझे एक बात बताएँ, क्या आपको शरीअत की पैरवी करने से रूहुल-क़ुद्स
मिला? हरगिज़ नहीं! वह आपको उस वक़्त मिला जब आप मसीह के बारे में पैग़ाम सुनकर उस पर ईमान लाए।
3 क्या आप इतने बेसमझ हैं? आपकी रूहानी ज़िंदगी रूहुल-क़ुद्स के वसीले से शुरू हुई। तो अब आप यह काम अपनी
इनसानी कोशिशों से किस तरह तकमील तक पहुँचाना चाहते हैं? 4 आपको कई तरह के तजरबे हासिल हुए हैं। क्या
यह सब बेफ़ायदा थे? यक़ीनन यह बेफ़ायदा नहीं थे। 5 क्या अल्लाह इसलिए आपको अपना रूह देता और आपके

दरमियान मोजिज़े करता है कि आप शरीअत की पैरवी करते हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि इसलिए कि आप मसीह के बारे
में पैग़ाम सुनकर ईमान लाए हैं।

6 इब्राहीम की मिसाल लें। उसने अल्लाह पर भरोसा किया और इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।
7 तो फिर आपको जान लेना चाहिए कि इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद वह लोग हैं जो ईमान रखते हैं। 8 कलामे-मुक़द्दस
ने इस बात की पेशगोई की कि अल्लाह ग़ैरयहूदियों को ईमान के ज़रीए रास्तबाज़ क़रार देगा। यों उसने इब्राहीम को
यह ख़ुशख़बरी सुनाई, "तमाम क़ौमें तुझसे बरकत पाएँगी।" 9 इब्राहीम ईमान लाया, इसलिए उसे बरकत मिली। इसी
तरह सबको ईमान लाने पर इब्राहीम की-सी बरकत मिलती है।

10 लेकिन जो भी इस पर तकिया करते हैं कि हमें शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ क़रार दिया जाएगा उन पर
अल्लाह की लानत है। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, "हर एक पर लानत जो शरीअत की किताब की तमाम बातें
क़ायम न रखे, न इन पर अमल करे।" 11 यह बात तो साफ़ है कि अल्लाह किसी को भी शरीअत की पैरवी करने की
बिना पर रास्तबाज़ नहीं ठहराता, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा। 12 ईमान
की यह राह शरीअत की राह से बिलकुल फ़रक़ है जो कहती है, "जो यों करेगा वह जीता रहेगा।"

13 लेकिन मसीह ने हमारा फ़िद्या देकर हमें शरीअत की लानत से आज़ाद कर दिया है। यह उसने इस तरह किया
कि वह हमारी ख़ातिर ख़ुद लानत बना। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "जिसे भी दरख़्त से लटकाया गया है उस
पर अल्लाह की लानत है।" 14 इसका मक़सद यह था कि जो बरकत इब्राहीम को हासिल हुई वह मसीह के वसीले से
ग़ैरयहूदियों को भी मिले और यों हम ईमान लाकर वादा किया हुआ रूह पाएँ।

शरीअत और वादा

15 भाइयो, इनसानी ज़िंदगी की एक मिसाल लें। जब दो पार्टियाँ किसी मामले में मुत्तफ़िक़ होकर मुआहदा करती
हैं तो कोई इस मुआहदे को मनसूख़ या इसमें इज़ाफ़ा नहीं कर सकता। 16 अब ग़ौर करें कि अल्लाह ने अपने वादे
इब्राहीम और उस की औलाद से ही किए। लेकिन जो लफ़्ज़ इबरानी में औलाद के लिए इस्तेमाल हुआ है इससे मुराद
बहुत-से अफ़राद नहीं बल्कि एक फ़रद है और वह है मसीह। 17 कहने से मुराद यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम से अहद
बाँधकर उसे क़ायम रखने का वादा किया। शरीअत जो 430 साल के बाद दी गई इस अहद को रद्द करके अल्लाह
का वादा मनसूख़ नहीं कर सकती। 18 क्योंकि अगर इब्राहीम की मीरास शरीअत की पैरवी करने से मिलती तो फिर
वह अल्लाह के वादे पर मुनहसिर न होती। लेकिन ऐसा नहीं था। अल्लाह ने इसे अपने वादे की बिना पर इब्राहीम को
दे दिया।

19 तो फिर शरीअत का क्या मक़सद था? उसे इसलिए वादे के अलावा दिया गया ताकि लोगों के गुनाहों को ज़ाहिर
करे। और उसे उस वक़्त तक क़ायम रहना था जब तक इब्राहीम की वह औलाद न आ जाती जिससे वादा किया गया
था। अल्लाह ने अपनी शरीअत फ़रिश्तों के वसीले से मूसा को दे दी जो अल्लाह और लोगों के बीच में दरमियानी
रहा। 20 अब दरमियानी उस वक़्त ज़रूरी होता है जब एक से ज़्यादा पार्टियों में इत्तफ़ाक़ कराने की ज़रूरत है। लेकिन
अल्लाह जो एक ही है उसने दरमियानी इस्तेमाल न किया जब उसने इब्राहीम से वादा किया।

शरीअत का मक़सद

21 तो क्या इसका मतलब यह है कि शरीअत अल्लाह के वादों के ख़िलाफ़ है? हरगिज़ नहीं! अगर इनसान को
ऐसी शरीअत मिली होती जो ज़िंदगी दिला सकती तो फिर सब उस की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहरते। 22 लेकिन
कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है कि पूरी दुनिया गुनाह के क़ब्ज़े में है। चुनाँचे हमें अल्लाह का वादा सिर्फ़ ईसा मसीह पर
ईमान लाने से हासिल होता है।

23 इससे पहले कि ईमान की यह राह दस्तयाब हुई शरीअत ने हमें क़ैद करके महफ़ूज़ रखा था। इस क़ैद में हम उस
वक़्त तक रहे जब तक ईमान की राह ज़ाहिर नहीं हुई थी। 24 यों शरीअत को हमारी तरबियत करने की ज़िम्मादारी दी
गई। उसे हमें मसीह तक पहुँचाना था ताकि हमें ईमान से रास्तबाज़ क़रार दिया जाए। 25 अब चूँकि ईमान की राह आ
गई है इसलिए हम शरीअत की तरबियत के तहत नहीं रहे।

26 क्योंकि मसीह ईसा पर ईमान लाने से आप सब अल्लाह के फ़रज़ंद बन गए हैं। 27 आपमें से जितनों को मसीह
में बपतिस्मा दिया गया उन्होंने मसीह को पहन लिया। 28 अब न यहूदी रहा न ग़ैरयहूदी, न ग़ुलाम रहा न आज़ाद, न
मर्द रहा न औरत। मसीह ईसा में आप सबके सब एक हैं। 29 शर्त यह है कि आप मसीह के हों। तब आप इब्राहीम की
औलाद और उन चीज़ों के वारिस हैं जिनका वादा अल्लाह ने किया है।

4

1 देखें, जो बेटा अपने बाप की मिलकियत का वारिस है वह उस वक़्त तक ग़ुलामों से फ़रक़ नहीं जब तक वह
बालिग़ न हो, हालाँकि वह पूरी मिलकियत का मालिक है। 2 बाप की तरफ़ से मुक़र्रर की हुई उम्र तक दूसरे उस की
देख-भाल करते और उस की मिलकियत सँभालते हैं। 3 इसी तरह हम भी जब बच्चे थे दुनिया की कुव्वतों के ग़ुलाम
थे। 4 लेकिन जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को भेज दिया। एक औरत से पैदा होकर वह
शरीअत के ताबे हुआ 5 ताकि फ़िद्या देकर हमें जो शरीअत के ताबे थे आज़ाद कर दे। यों हमें अल्लाह के फ़रज़ंद होने
का मरतबा मिला है।
6 अब चूँकि आप उसके फ़रज़ंद हैं इसलिए अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद के रूह को हमारे दिलों में भेज दिया, वह रूह
जो "अब्बा" यानी "ऐ बाप" कहकर पुकारता रहता है। 7 ग़रज़ अब आप ग़ुलाम न रहे बल्कि बेटे की हैसियत रखते
हैं। और बेटा होने का यह मतलब है कि अल्लाह ने आपको वारिस भी बना दिया है।

पौलुस की गलतियों के लिए फ़िकर

8 माज़ी में जब आप अल्लाह को नहीं जानते थे तो आप उनके ग़ुलाम थे जो हक़ीक़त में ख़ुदा नहीं हैं। 9 लेकिन
अब आप अल्लाह को जानते हैं, बल्कि अब अल्लाह ने आपको जान लिया है। तो फिर आप मुडकर इन कमज़ोर
और घटिया उसूलों की तरफ़ क्यों वापस जाने लगे हैं? क्या आप दुबारा इनकी ग़ुलामी में आना चाहते हैं? 10 आप
बड़ी फ़िकरमंदी से ख़ास दिन, माह, मौसम और साल मनाते हैं। 11 मुझे आपके बारे में डर है, कहीं मेरी आप पर
मेहनत-मशक़्क़त ज़ाया न जाए।
12 भाइयो, मैं आपसे इल्तिजा करता हूँ कि मेरी मानिंद बन जाएँ, क्योंकि मैं तो आपकी मानिंद बन गया हूँ। आपने
मेरे साथ कोई ग़लत सुलूक नहीं किया। 13 आपको मालूम है कि जब मैंने पहली दफ़ा आपको अल्लाह की ख़ुशख़बरी
सुनाई तो इसकी वजह मेरे जिस्म की कमज़ोर हालत थी। 14 लेकिन अगरचे मेरी यह हालत आपके लिए आज़माइश
का बाइस थी तो भी आपने मुझे हक़ीर न जाना, न मुझे नीच समझा, बल्कि आपने मुझे यों ख़ुशआमदीद कहा जैसा कि
मैं अल्लाह का कोई फ़रिश्ता या मसीह ईसा ख़ुद हूँ। 15 उस वक़्त आप इतने ख़ुश थे! अब क्या हुआ है? मैं गवाह
हूँ, उस वक़्त अगर आपको मौक़ा मिलता तो आप अपनी आँखें निकालकर मुझे दे देते। 16 तो क्या अब मैं आपको
हक़ीक़त बताने की वजह से आपका दुश्मन बन गया हूँ?
17 वह दूसरे लोग आपकी दोस्ती पाने की पूरी जिद्दो-जहद कर रहे हैं, लेकिन उनकी नीयत साफ़ नहीं है। बस वह
आपको मुझसे जुदा करना चाहते हैं ताकि आप उन्हीं के हक़ में जिद्दो-जहद करते रहें। 18 जब लोग आपकी दोस्ती
पाने की जिद्दो-जहद करते हैं तो यह है तो ठीक, लेकिन इसका मक़सद अच्छा होना चाहिए। हाँ, सहीह जिद्दो-जहद हर
वक़्त अच्छी होती है, न सिर्फ़ इस वक़्त जब मैं आपके दरमियान हूँ। 19 मेरे प्यारे बच्चो! अब मैं दुबारा आपको जन्म
देने का-सा दर्द महसूस कर रहा हूँ और उस वक़्त तक करता रहूँगा जब तक मसीह आपमें सूरत न पकड़े। 20 काश मैं
उस वक़्त आपके पास होता ताकि फ़रक़ अंदाज़ में आपसे बात कर सकता, क्योंकि मैं आपके सबब से बड़ी उलझन में
हूँ!

हाजिरा और सारा की मिसाल

21 आप जो शरीअत के ताबे रहना चाहते हैं मुझे एक बात बताएँ, क्या आप वह बात नहीं सुनते जो शरीअत कहती
है? 22 वह कहती है कि इब्राहीम के दो बेटे थे। एक लौंडी का बेटा था, एक आज़ाद औरत का। 23 लौंडी के बेटे की
पैदाइश हसबे-मामूल थी, लेकिन आज़ाद औरत के बेटे की पैदाइश ग़ैरमामूली थी, क्योंकि उसमें अल्लाह का वादा पूरा
हुआ। 24 जब यह किनायतन समझा जाए तो यह दो ख़वातीन अल्लाह के दो अहदों की नुमाइंदगी करती हैं। पहली
ख़ातून हाजिरा सीना पहाड़ पर बँधे हुए अहद की नुमाइंदगी करती है, और जो बच्चे उससे पैदा होते हैं वह ग़ुलामी के
लिए मुक़र्रर हैं। 25 हाजिरा जो अरब में वाक़े पहाड़ सीना की अलामत है मौजूदा शहर यरूशलम से मुताबिक़त रखती
है। वह और उसके तमाम बच्चे ग़ुलामी में ज़िंदगी गुज़ारते हैं। 26 लेकिन आसमानी यरूशलम आज़ाद है और वही
हमारी माँ है। 27 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

"ख़ुश हो जा, तू जो बेऔलाद है,
जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती।
बुलंद आवाज़ से शादियाना बजा,
तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ।
क्योंकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे
शादीशुदा औरत के बच्चों से ज़्यादा हैं।"

28 भाइयो, आप इसहाक़ की तरह अल्लाह के वादे के फ़रज़ंद हैं। 29 उस वक़्त इसमाईल ने जो हसबे-मामूल पैदा
हुआ था इसहाक़ को सताया जो रूहुल-क़ुद्स की क़ुदरत से पैदा हुआ था। आज भी ऐसा ही है। 30 लेकिन कलामे-
मुक़द्दस में क्या फ़रमाया गया है? "इस लौंडी और इसके बेटे को घर से निकाल दें, क्योंकि वह आज़ाद औरत के बेटे
के साथ विरसा नहीं पाएगा।" 31 ग़रज़ भाइयो, हम लौंडी के फ़रज़ंद नहीं हैं बल्कि आज़ाद औरत के।

5

अपनी आज़ादी महफ़ूज़ रखें

1 मसीह ने हमें आज़ाद रहने के लिए ही आज़ाद किया है। तो अब क़ायम रहें और दुबारा अपने गले में ग़ुलामी का
जुआ डालने न दें।

2 सुनें! मैं पौलुस आपको बताता हूँ कि अगर आप अपना ख़तना करवाएँ तो आपको मसीह का कोई फ़ायदा नहीं
होगा। 3 मैं एक बार फिर इस बात की तसदीक़ करता हूँ कि जिसने भी अपना ख़तना करवाया उसका फ़र्ज़ है कि वह
पूरी शरीअत की पैरवी करे। 4 आप जो शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ बनना चाहते हैं आपका मसीह के साथ
कोई वास्ता न रहा। हाँ, आप अल्लाह के फ़ज़ल से दूर हो गए हैं। 5 लेकिन हमें एक फ़रक़ उम्मीद दिलाई गई है।
उम्मीद यह है कि ख़ुदा ही हमें रास्तबाज़ क़रार देता है। चुनाँचे हम रूहुल-क़ुद्स के बाइस ईमान रखकर इसी रास्तबाज़ी
के लिए तड़पते रहते हैं। 6 क्योंकि जब हम मसीह ईसा में होते हैं तो ख़तना करवाने या न करवाने से कोई फ़रक़ नहीं
पड़ता। फ़रक़ सिर्फ़ उस ईमान से पड़ता है जो मुहब्बत करने से ज़ाहिर होता है।

7 आप ईमान की दौड़ में अच्छी तरक़्क़ी कर रहे थे! तो फिर किसने आपको सच्चाई की पैरवी करने से रोक
लिया? 8 किसने आपको उभारा? अल्लाह तो नहीं था जो आपको बुलाता है। 9 देखें, थोड़ा-सा ख़मीर तमाम गुंधे हुए
आटे को ख़मीर कर देता है। 10 मुझे ख़ुदावंद में आप पर इतना एतमाद है कि आप यही सोच रखते हैं। जो भी आपमें
अफ़रा-तफ़री पैदा कर रहा है उसे सज़ा मिलेगी।

11 भाइयो, जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर मैं यह पैग़ाम देता कि अब तक ख़तना करवाने की ज़रूरत है तो मेरी
ईज़ारसानी क्यों हो रही होती? अगर ऐसा होता तो लोग मसीह के मसलूब होने के बारे में सुनकर ठोकर न खाते।
12 बेहतर है कि आपको परेशान करनेवाले न सिर्फ़ अपना ख़तना करवाएँ बल्कि ख़ोजे बन जाएँ।

13 भाइयो, आपको आज़ाद होने के लिए बुलाया गया है। लेकिन ख़बरदार रहें कि इस आज़ादी से आपकी
गुनाहआलूदा फ़ितरत को अमल में आने का मौक़ा न मिले। इसके बजाए मुहब्बत की रूह में एक दूसरे की ख़िदमत
करें। 14 क्योंकि पूरी शरीअत एक ही हुक्म में समाई हुई है, "अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने
आपसे रखता है।" 15 अगर आप एक दूसरे को काटते और फाड़ते हैं तो ख़बरदार! ऐसा न हो कि आप एक दूसरे को
ख़त्म करके सबके सब तबाह हो जाएँ।

रूहुल-क़ुद्स और इनसानी फ़ितरत

16 मैं तो यह कहता हूँ कि रूहुल-क़ुद्स में ज़िंदगी गुज़ारें। फिर आप अपनी पुरानी फ़ितरत की ख़ाहिशात पूरी नहीं
करेंगे। 17 क्योंकि जो कुछ हमारी पुरानी फ़ितरत चाहती है वह उसके ख़िलाफ़ है जो रूह चाहता है, और जो कुछ रूह
चाहता है वह उसके ख़िलाफ़ है जो हमारी पुरानी फ़ितरत चाहती है। यह दोनों एक दूसरे के दुश्मन हैं, इसलिए आप वह
कुछ नहीं कर पाते जो आप करना चाहते हैं। 18 लेकिन जब रूहुल-क़ुद्स आपकी राहनुमाई करता है तो आप शरीअत
के ताबे नहीं होते।

19 जो काम पुरानी फ़ितरत करती है वह साफ़ ज़ाहिर होता है। मसलन ज़िनाकारी, नापाकी, ऐयाशी, 20 बुतपरस्ती,
जादूगरी, दुश्मनी, झगड़ा, हसद, ग़ुस्सा, ख़ुदग़रज़ी, अनबन, पार्टीबाज़ी, 21 जलन, नशाबाज़ी, रंगरलियाँ वग़ैरा। मैं
पहले भी आपको आगाह कर चुका हूँ, लेकिन अब एक बार फिर कहता हूँ कि जो इस तरह की ज़िंदगी गुज़ारते हैं वह
अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे।

22 रूहुल-क़ुद्स का फल फ़रक़ है। वह मुहब्बत, ख़ुशी, सुलह-सलामती, सब्र, मेहरबानी, नेकी, वफ़ादारी, 23 नरमी
और ज़ब्ते-नफ़स पैदा करता है। शरीअत ऐसी चीज़ों के ख़िलाफ़ नहीं होती। 24 और जो मसीह ईसा के हैं उन्होंने
अपनी पुरानी फ़ितरत को उस की रग़बतों और बुरी ख़ाहिशों समेत मसलूब कर दिया है। 25 चूँकि हम रूह में ज़िंदगी
गुज़ारते हैं इसलिए आएँ, हम क़दम बक़दम उसके मुताबिक़ चलते भी रहें। 26 न हम मग़रूर हों, न एक दूसरे को
मुश्तइल करें या एक दूसरे से हसद करें।

6

एक दूसरे के बोझ उठाना

1 भाइयो, अगर कोई किसी गुनाह में फँस जाए तो आप जो रूहानी हैं उसे नरमदिली से बहाल करें। लेकिन अपना
भी ख़याल रखें, ऐसा न हो कि आप भी आज़माइश में फँस जाएँ। 2 बोझ उठाने में एक दूसरे की मदद करें, क्योंकि
इस तरह आप मसीह की शरीअत पूरी करेंगे। 3 जो समझता है कि मैं कुछ हूँ अगरचे वह हक़ीक़त में कुछ भी नहीं
है तो वह अपने आपको फ़रेब दे रहा है। 4 हर एक अपना ज़ाती अमल परखे। फिर ही उसे अपने आप पर फ़ख़र का
मौक़ा होगा और उसे किसी दूसरे से अपना मुवाज़ना करने की ज़रूरत न होगी। 5 क्योंकि हर एक को अपना ज़ाती बोझ
उठाना होता है।

6 जिसे कलामे-मुक़द्दस की तालीम दी जाती है उसका फ़र्ज़ है कि वह अपने उस्ताद को अपनी तमाम अच्छी चीज़ों
में शरीक करे।

7 फ़रेब मत खाना, अल्लाह इनसान को अपना मज़ाक़ उड़ाने नहीं देता। जो कुछ भी इनसान बोता है उसी की फ़सल
वह काटेगा। 8 जो अपनी पुरानी फ़ितरत के खेत में बीज बोए वह हलाकत की फ़सल काटेगा। और जो रूहुल-क़ुदुस के
खेत में बीज बोए वह अबदी ज़िंदगी की फ़सल काटेगा। 9 चुनाँचे हम नेक काम करने में बेदिल न हो जाएँ, क्योंकि हम
मुक़र्ररा वक़्त पर ज़रूर फ़सल की कटाई करेंगे। शर्त सिर्फ़ यह है कि हम हथियार न डालें। 10 इसलिए आएँ, जितना
वक़्त रह गया है सबके साथ नेकी करें, ख़ासकर उनके साथ जो ईमान में हमारे भाई और बहनें हैं।

आख़िरी आगाही और सलाम

11 देखें, मैं बड़े बड़े हुरूफ़ के साथ अपने हाथ से आपको लिख रहा हूँ। 12 यह लोग जो दुनिया के सामने इज़्ज़त
हासिल करना चाहते हैं आपको ख़तना करवाने पर मजबूर करना चाहते हैं। मक़सद उनका सिर्फ़ एक ही है, कि वह
उस ईज़ारसानी से बचे रहें जो तब पैदा होती है जब हम मसीह की सलीबी मौत की तालीम देते हैं। 13 बात यह है कि
जो अपना ख़तना कराते हैं वह ख़ुद शरीअत की पैरवी नहीं करते। तो भी यह चाहते हैं कि आप अपना ख़तना करवाएँ
ताकि आपके जिस्म की हालत पर वह फ़ख़र कर सकें। 14 लेकिन ख़ुदा करे कि मैं सिर्फ़ हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की
सलीब ही पर फ़ख़र करूँ। क्योंकि उस की सलीब से दुनिया मेरे लिए मसलूब हुई है और मैं दुनिया के लिए। 15 ख़तना
करवाने या न करवाने से कोई फ़रक़ नहीं पड़ता बल्कि फ़रक़ उस वक़्त पड़ता है जब अल्लाह किसी को नए सिरे से
ख़लक़ करता है। 16 जो भी इस उसूल पर अमल करते हैं उन्हें सलामती और रहम हासिल होता रहे, उन्हें भी और
अल्लाह की क़ौम इसराईल को भी।

17 आइंदा कोई मुझे तकलीफ़ न दे, क्योंकि मेरे जिस्म पर ज़ख़मों के निशान ज़ाहिर करते हैं कि मैं ईसा का ग़ुलाम
हूँ।

18 भाइयो, हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आपकी रूह के साथ होता रहे। आमीन।

इफ़िसियों

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है, जो अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है।
मैं इफ़िसुस शहर के मुक़द्दसीन को लिख रहा हूँ, उन्हें जो मसीह ईसा में ईमानदार हैं।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शें।

मसीह में रूहानी बरकतें

3 ख़ुदा हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप की हम्दो-सना हो! क्योंकि मसीह में उसने हमें आसमान पर हर रूहानी
बरकत से नवाज़ा है। 4 दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर ही उसने मसीह में हमें चुन लिया ताकि हम मुक़द्दस और बेऐब
हालत में उसके सामने ज़िंदगी गुज़ारें।
यह कितनी अज़ीम मुहब्बत थी! 5 पहले ही से उसने फ़ैसला कर लिया कि वह हमें मसीह में अपने बेटे-बेटियाँ बना
लेगा। यही उस की मरज़ी और ख़ुशी थी 6 ताकि हम उसके जलाली फ़ज़ल की तमजीद करें, उस मुफ़्त नेमत के लिए
जो उसने हमें अपने प्यारे फ़रज़ंद में दे दी। 7 क्योंकि उसने मसीह के ख़ून से हमारा फ़िद्या देकर हमें आज़ाद और हमारे
गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। अल्लाह का यह फ़ज़ल कितना वसी है 8 जो उसने कसरत से हमें अता किया है।
अपनी पूरी हिकमत और दानाई का इज़हार करके 9 अल्लाह ने हम पर अपनी पोशीदा मरज़ी ज़ाहिर कर दी, यानी
वह मनसूबा जो उसे पसंद था और जो उसने मसीह में पहले से बना रखा था। 10 मनसूबा यह है कि जब मुक़र्ररा वक़्त
आएगा तो अल्लाह मसीह में तमाम कायनात को जमा कर देगा। उस वक़्त सब कुछ मिलकर मसीह के तहत हो जाएगा,
ख़ाह वह आसमान पर हो या ज़मीन पर।
11 मसीह में हम आसमानी बादशाही के वारिस भी बन गए हैं। अल्लाह ने पहले से हमें इसके लिए मुक़र्रर किया,
क्योंकि वह सब कुछ यों सरंजाम देता है कि उस की मरज़ी का इरादा पूरा हो जाए। 12 और वह चाहता है कि हम
उसके जलाल की सताइश का बाइस बनें, हम जिन्होंने पहले से मसीह पर उम्मीद रखी।
13 आप भी मसीह में हैं, क्योंकि आप सच्चाई का कलाम और अपनी नजात की ख़ुशख़बरी सुनकर ईमान लाए।
और अल्लाह ने आप पर भी रूहुल-क़ुद्स की मुहर लगा दी जिसका वादा उसने किया था। 14 रूहुल-क़ुद्स हमारी
मीरास का बयाना है। वह हमें यह ज़मानत देता है कि अल्लाह हमारा जो उस की मिलकियत हैं फ़िद्या देकर हमें पूरी
मख़लसी तक पहुँचाएगा। क्योंकि हमारी ज़िंदगी का मक़सद यह है कि उसके जलाल की सताइश की जाए।

पौलुस की दुआ

15 भाइयो, मैं ख़ुदावंद ईसा पर आपके ईमान और आपकी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुनकर 16 आपके
लिए ख़ुदा का शुक्र करने से बाज़ नहीं आता बल्कि आपको अपनी दुआओं में याद करता रहता हूँ। 17 मेरी ख़ास दुआ
यह है कि हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का ख़ुदा और जलाली बाप आपको दानाई और मुकाशफ़ा की रूह दे ताकि आप
उसे बेहतर तौर पर जान सकें। 18 वह करे कि आपके दिलों की आँखें रौशन हो जाएँ। क्योंकि फिर ही आप जान लेंगे
कि यह कैसी उम्मीद है जिसके लिए उसने आपको बुलाया है, कि यह जलाली मीरास कैसी दौलत है जो मुक़द्दसीन
को हासिल है, 19 और कि हम ईमान रखनेवालों पर उस की क़ुदरत का इज़हार कितना ज़बरदस्त है। यह वही बेहद
क़ुदरत है 20 जिससे उसने मसीह को मुरदों में से ज़िंदा करके आसमान पर अपने दहने हाथ बिठाया। 21 वहाँ मसीह
हर हुक्मरान, इख़्तियार, क़ुव्वत, हुकूमत, हाँ हर नाम से कहीं सरफ़राज़ है, ख़ाह इस दुनिया में हो या आनेवाली दुनिया
में। 22 अल्लाह ने सब कुछ उसके पाँवों के नीचे करके उसे सबका सर बना दिया। यह उसने अपनी जमात की ख़ातिर
किया 23 जो मसीह का बदन है और जिसे मसीह से पूरी मामूरी हासिल होती है यानी उससे जो हर तरह से सब कुछ
मामूर कर देता है।

2

मौत से ज़िंदगी तक

1 आप भी अपनी ख़ताओं और गुनाहों की वजह से रूहानी तौर पर मुरदा थे। 2 क्योंकि पहले आप इनमें फँसे हुए
इस दुनिया के तौर-तरीक़ों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते थे। आप हवा की क़ुव्वतों के सरदार के ताबे थे, उस रूह के
जो इस वक़्त उनमें सरगरमे-अमल है जो अल्लाह के नाफ़रमान हैं। 3 पहले तो हम भी सब उनमें ज़िंदगी गुज़ारते थे।

हम भी अपनी पुरानी फ़ितरत की शहवतें, मरज़ी और सोच पूरी करने की कोशिश करते रहे। दूसरों की तरह हम पर भी
फ़ितरी तौर पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होना था।
4 लेकिन अल्लाह का रहम इतना वसी है और वह इतनी शिद्दत से हमसे मुहब्बत रखता है 5 कि अगरचे हम अपने
गुनाहों में मुरदा थे तो भी उसने हमें मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया। हाँ, आपको अल्लाह के फ़ज़ल ही से नजात मिली
है। 6 जब हम मसीह ईसा पर ईमान लाए तो उसने हमें मसीह के साथ ज़िंदा करके आसमान पर बिठा दिया। 7 ईसा
मसीह में हम पर मेहरबानी करने से अल्लाह आनेवाले ज़मानों में अपने फ़ज़ल की लामहदूद दौलत दिखाना चाहता
था। 8 क्योंकि यह उसका फ़ज़ल ही है कि आपको ईमान लाने पर नजात मिली है। यह आपकी तरफ़ से नहीं है बल्कि
अल्लाह की बख़्शिश है। 9 और यह नजात हमें अपने किसी काम के नतीजे में नहीं मिली, इसलिए कोई अपने आप
पर फ़ख़र नहीं कर सकता। 10 हाँ, हम उसी की मख़लूक़ हैं जिन्हें उसने मसीह में नेक काम करने के लिए ख़लक़
किया है। और यह काम उसने पहले से हमारे लिए तैयार कर रखे हैं, क्योंकि वह चाहता है कि हम उन्हें सरंजाम देते
हुए ज़िंदगी गुज़ारें।

मसीह में एक

11 यह बात ज़हन में रखें कि माज़ी में आप क्या थे। यहूदी सिर्फ़ अपने लिए लफ़्ज़ मख़तून इस्तेमाल करते थे अगरचे
वह अपना ख़तना सिर्फ़ इनसानी हाथों से करवाते हैं। आपको जो ग़ैरयहूदी हैं वह नामख़तून क़रार देते थे। 12 उस वक़्त
आप मसीह के बग़ैर ही चलते थे। आप इसराईल क़ौम के शहरी न बन सके और जो वादे अल्लाह ने अहदों के ज़रीए
अपनी क़ौम से किए थे वह आपके लिए नहीं थे। इस दुनिया में आपकी कोई उम्मीद नहीं थी, आप अल्लाह के बग़ैर
ही ज़िंदगी गुज़ारते थे। 13 लेकिन अब आप मसीह में हैं। पहले आप दूर थे, लेकिन अब आपको मसीह के ख़ून के
वसीले से क़रीब लाया गया है। 14 क्योंकि मसीह हमारी सुलह है और उसी ने यहूदियों और ग़ैरयहूदियों को मिलाकर
एक क़ौम बना दिया है। अपने जिस्म को क़ुरबान करके उसने वह दीवार गिरा दी जिसने उन्हें अलग करके एक दूसरे के
दुश्मन बना रखा था। 15 उसने शरीअत को उसके अहकाम और ज़वाबित समेत मनसूख़ कर दिया ताकि दोनों गुरोहों
को मिलाकर एक नया इनसान ख़लक़ करे, ऐसा इनसान जो उसमें एक हो और सुलह-सलामती के साथ ज़िंदगी गुज़ारे।
16 अपनी सलीबी मौत से उसने दोनों गुरोहों को एक बदन में मिलाकर उनकी अल्लाह के साथ सुलह कराई। हाँ,
उसने अपने आपमें यह दुश्मनी ख़त्म कर दी। 17 उसने आकर दोनों गुरोहों को सुलह-सलामती की ख़ुशख़बरी सुनाई,
आप ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह से दूर थे और आप यहूदियों को भी जो उसके क़रीब थे। 18 अब हम दोनों मसीह के
ज़रीए एक ही रूह में बाप के हुज़ूर आ सकते हैं।
19 नतीजे में अब आप परदेसी और अजनबी नहीं रहे बल्कि मुक़द्दसीन के हमवतन और अल्लाह के घराने के हैं।
20 आपको रसूलों और नबियों की बुनियाद पर तामीर किया गया है जिसके कोने का बुनियादी पत्थर मसीह ईसा ख़ुद
है। 21 उसमें पूरी इमारत जुड़ जाती और बढ़ती बढ़ती ख़ुदावंद में अल्लाह का मुक़द्दस घर बन जाती है। 22 दूसरों के
साथ साथ उसमें आपकी भी तामीर हो रही है ताकि आप रूह में अल्लाह की सुकूनतगाह बन जाएँ।

3

पौलुस की ग़ैरयहूदियों में ख़िदमत

1 इस वजह से मैं पौलुस जो आप ग़ैरयहूदियों की ख़ातिर मसीह ईसा का क़ैदी हूँ अल्लाह से दुआ करता हूँ। 2 आपने
तो सुन लिया है कि मुझे आपमें अल्लाह के फ़ज़ल का इंतज़ाम चलाने * की ख़ास ज़िम्मादारी दी गई है। 3 जिस तरह
मैंने पहले ही मुख़तसर तौर पर लिखा है, अल्लाह ने ख़ुद मुझ पर यह राज़ ज़ाहिर कर दिया। 4 जब आप वह पढ़ेंगे जो
मैंने लिखा तो आप जान लेंगे कि मुझे मसीह के राज़ के बारे में क्या क्या समझ आई है। 5 गुज़रे ज़मानों में अल्लाह ने
यह बात ज़ाहिर नहीं की, लेकिन अब उसने इसे रूहुल-क़ुदुस के ज़रीए अपने मुक़द्दस रसूलों और नबियों पर ज़ाहिर कर
दिया। 6 और अल्लाह का राज़ यह है कि उस की ख़ुशख़बरी के ज़रीए ग़ैरयहूदी इसराईल के साथ आसमानी बादशाही
के वारिस, एक ही बदन के आज़ा और उसी वादे में शरीक हैं जो अल्लाह ने मसीह ईसा में किया है।
7 मैं अल्लाह के मुफ़्त फ़ज़ल और उस की क़ुदरत के इज़हार से ख़ुशख़बरी का ख़ादिम बन गया। 8 अगरचे मैं
अल्लाह के तमाम मुक़द्दसीन से कमतर हूँ तो भी उसने मुझे यह फ़ज़ल बख़्शा कि मैं ग़ैरयहूदियों को उस लामहदूद दौलत
की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ जो मसीह में दस्तयाब है। 9 यही मेरी ज़िम्मादारी बन गई कि मैं सब पर उस राज़ का इंतज़ाम
ज़ाहिर करूँ जो गुज़रे ज़मानों में सब चीज़ों के ख़ालिक़ ख़ुदा में पोशीदा रहा। 10 क्योंकि अल्लाह चाहता था कि
अब मसीह की जमात ही आसमानी हुक्मरानों और क़ुव्वतों को अल्लाह की वसी हिकमत के बारे में इल्म पहुँचाए।

* **3:2** यानी ख़ुशख़बरी सुनाने।

11 यही उसका अज़ली मनसूबा था जो उसने हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा के वसीले से तकमील तक पहुँचाया। 12 उसमें
और उस पर ईमान रखकर हम पूरी आज़ादी और एतमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आ सकते हैं। 13 इसलिए मेरी
आपसे गुज़ारिश है कि आप मेरी मुसीबतें देखकर बेदिल न हो जाएँ। यह मैं आपकी ख़ातिर बरदाश्त कर रहा हूँ, और
यह आपकी इज़्ज़त का बाइस हैं।

मसीह की मुहब्बत

14 इस वजह से मैं बाप के हुज़ूर अपने घुटने टेकता हूँ, 15 उस बाप के सामने जिससे आसमानो-ज़मीन का हर
ख़ानदान नामज़द है। 16 मेरी दुआ है कि वह अपने जलाल की दौलत के मुवाफ़िक़ यह बख़्शे कि आप उसके रूह के
वसीले से बातिनी तौर पर ज़बरदस्त तक़वियत पाएँ, 17 कि मसीह ईमान के ज़रीए आपके दिलों में सुकूनत करे। हाँ, मेरी
दुआ है कि आप मुहब्बत में जड़ पकड़ें और इस बुनियाद पर ज़िंदगी यों गुज़ारें 18 कि आप बाक़ी तमाम मुक़द्दसीन के
साथ यह समझने के क़ाबिल बन जाएँ कि मसीह की मुहब्बत कितनी चौड़ी, कितनी लंबी, कितनी ऊँची और कितनी
गहरी है। 19 ख़ुदा करे कि आप मसीह की यह मुहब्बत जान लें जो हर इल्म से कहीं अफ़ज़ल है और यों अल्लाह की
पूरी मामूरी से भर जाएँ।

20 अल्लाह की तमजीद हो जो अपनी उस क़ुदरत के मुवाफ़िक़ जो हममें काम कर रही है ऐसा ज़बरदस्त काम
कर सकता है जो हमारी हर सोच और दुआ से कहीं बाहर है। 21 हाँ, मसीह ईसा और उस की जमात में अल्लाह की
तमजीद पुश्त-दर-पुश्त और अज़ल से अबद तक होती रहे। आमीन।

4

बदन की यगांगत

1 चुनाँचे मैं जो ख़ुदावंद में क़ैदी हूँ आपको ताकीद करता हूँ कि उस ज़िंदगी के मुताबिक़ चलें जिसके लिए ख़ुदा
ने आपको बुलाया है। 2 हर वक़्त हलीम और नरमदिल रहें, सब्र से काम लें और एक दूसरे से मुहब्बत रखकर उसे
बरदाश्त करें। 3 सुलह-सलामती के बंधन में रहकर रूह की यगांगत क़ायम रखने की पूरी कोशिश करें। 4 एक ही बदन
और एक ही रूह है। यों आपको भी एक ही उम्मीद के लिए बुलाया गया। 5 एक ख़ुदावंद, एक ईमान, एक बपतिस्मा
है। 6 एक ख़ुदा है, जो सबका वाहिद बाप है। वह सबका मालिक है, सबके ज़रीए काम करता है और सबमें मौजूद है।

7 अब हम सबको अल्लाह का फ़ज़ल बख़्शा गया। लेकिन मसीह हर एक को मुख़्तलिफ़ पैमाने से यह फ़ज़ल अता
करता है। 8 इसलिए कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, "उसने बुलंदी पर चढ़कर क़ैदियों का हुजूम गिरिफ़्तार कर लिया
और आदमियों को तोहफ़े दिए।" 9 अब ग़ौर करें कि चढ़ने का ज़िक्र किया गया है। इसका मतलब है कि पहले वह
ज़मीन की गहराइयों में उतरा। 10 जो उतरा वह वहीं है जो तमाम आसमानों से ऊँचा चढ़ गया ताकि तमाम कायनात
को अपने आपसे मामूर करे। 11 उसी ने अपनी जमात को तरह तरह के ख़ादिमों से नवाज़ा। बाज़ रसूल, बाज़ नबी,
बाज़ मुबश्शिर, बाज़ चरवाहे और बाज़ उस्ताद हैं। 12 इनका मक़सद यह है कि मुक़द्दसीन को ख़िदमत करने के लिए
तैयार किया जाए और यों मसीह के बदन की तामीरो-तरक़्क़ी हो जाए। 13 इस तरीक़े से हम सब ईमान और अल्लाह
के फ़रज़ंद की पहचान में एक होकर बालिग़ हो जाएंगे, और हम मिलकर मसीह की मामूरी और बलूग़त को मुनअकिस
करेंगे। 14 फिर हम बच्चे नहीं रहेंगे, और तालीम के हर एक झोंके से उछलते फिरते नहीं रहेंगे जब लोग अपनी
चालाकी और धोकेबाज़ी से हमें अपने जालों में फँसाने की कोशिश करेंगे। 15 इसके बजाए हम मुहब्बत की रूह में
सच्ची बात करके हर लिहाज़ से मसीह की तरफ़ बढ़ते जाएंगे जो हमारा सर है। 16 वही नसों के ज़रीए पूरे बदन के
मुख़्तलिफ़ हिस्सों को एक दूसरे के साथ जोड़कर मुत्तहिद कर देता है। हर हिस्सा अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ काम
करता है, और यों पूरा बदन मुहब्बत की रूह में बढ़ता और अपनी तामीर करता रहता है।

मसीह में नई ज़िंदगी

17 पस मैं ख़ुदावंद के नाम में आपको आगाह करता हूँ कि अब से ग़ैरईमानदारों की तरह ज़िंदगी न गुज़ारें जिनकी
सोच बेकार है 18 और जिनकी समझ अंधेरे की गिरिफ़्त में है। उनका उस ज़िंदगी में कोई हिस्सा नहीं जो अल्लाह देता
है, क्योंकि वह जाहिल हैं और उनके दिल सख़्त हो गए हैं। 19 बेहिस होकर उन्होंने अपने आपको ऐयाशी के हवाले
कर दिया। यों वह न बुझनेवाली प्यास के साथ हर क़िस्म की नापाक हरकतें करते हैं।

20 लेकिन आपने मसीह को यों नहीं जाना। 21 आपने तो उसके बारे में सुन लिया है, और उसमें होकर आपको वह
सच्चाई सिखाई गई जो ईसा में है। 22 चुनाँचे अपने पुराने इनसान को उसके पुराने चाल-चलन समेत उतार देना, क्योंकि
वह अपनी धोकेबाज़ शहवतों से बिगड़ता जा रहा है। 23 अल्लाह को आपकी सोच की तजदीद करने दें 24 और नए
इनसान को पहन लें जो यों बनाया गया है कि वह हक़ीक़ी रास्तबाज़ी और क़ुद्दूसियत में अल्लाह के मुशाबेह है।

25 इसलिए हर शख़्स झूट से बाज़ रहकर दूसरों से सच बात करे, क्योंकि हम सब एक ही बदन के आज़ा हैं।
26 ग़ुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। आपका ग़ुस्सा सूरज के ग़ुरूब होने तक ठंडा हो जाए, 27 वरना आप इबलीस
को अपनी ज़िंदगी में काम करने का मौक़ा देंगे। 28 चोर अब से चोरी न करे बल्कि ख़ूब मेहनत-मशक़्क़त करके अपने
हाथों से अच्छा काम करे। हाँ, वह इतना कमाए कि ज़रूरतमंदों को भी कुछ दे सके। 29 कोई भी बुरी बात आपके मुँह
से न निकले बल्कि सिर्फ़ ऐसी बातें जो दूसरों की ज़रूरियात के मुताबिक़ उनकी तामीर करें। यों सुननेवालों को बरकत
मिलेगी। 30 अल्लाह के मुक़द्दस रूह को दुख न पहुँचाना, क्योंकि उसी से अल्लाह ने आप पर मुहर लगाकर यह
ज़मानत दे दी है कि आप उसी के हैं और नजात के दिन बच जाएंगे। 31 तमाम तरह की तलख़ी, तैश, ग़ुस्से, शोर-शराबा,
गाली-गलोच बल्कि हर क़िस्म के बुरे रवय्ये से बाज़ आएँ। 32 एक दूसरे पर मेहरबान और रहमदिल हों और एक दूसरे
को यों मुआफ़ करें जिस तरह अल्लाह ने आपको भी मसीह में मुआफ़ कर दिया है।

5

रौशनी में ज़िंदगी गुज़ारना

1 चूँकि आप अल्लाह के प्यारे बच्चे हैं इसलिए उसके नमूने पर चलें। 2 मुहब्बत की रूह में ज़िंदगी यों गुज़ारें जैसे
मसीह ने गुज़ारी। क्योंकि उसने हमसे मुहब्बत रखकर अपने आपको हमारे लिए अल्लाह के हुज़ूर क़ुरबान कर दिया
और यों ऐसी क़ुरबानी बन गया जिसकी ख़ुशबू अल्लाह को पसंद आई।

3 आपके दरमियान ज़िनाकारी, हर तरह की नापाकी या लालच का ज़िक्र तक न हो, क्योंकि यह अल्लाह के
मुक़द्दसीन के लिए मुनासिब नहीं है। 4 इसी तरह शर्मनाक, अहमक़ाना या गंदी बातें भी ठीक नहीं। इनकी जगह
शुक्रगुज़ारी होनी चाहिए। 5 क्योंकि यक़ीन जानें कि ज़िनाकार, नापाक या लालची मसीह और अल्लाह की बादशाही
में मीरास नहीं पाएँगे (लालच तो एक क़िस्म की बुतपरस्ती है)।

6 कोई आपको बेमानी अलफ़ाज़ से धोका न दे। ऐसी ही बातों की वजह से अल्लाह का ग़ज़ब उन पर जो नाफ़रमान
हैं नाज़िल होता है। 7 चुनाँचे उनमें शरीक न हो जाएँ जो यह करते हैं। 8 क्योंकि पहले आप तारीकी थे, लेकिन अब
आप ख़ुदावंद में रौशनी हैं। रौशनी के फ़रज़ंद की तरह ज़िंदगी गुज़ारें, 9 क्योंकि रौशनी का फल हर तरह की भलाई,
रास्तबाज़ी और सच्चाई है। 10 और मालूम करते रहें कि ख़ुदावंद को क्या कुछ पसंद है। 11 तारीकी के बेफल कामों
में हिस्सा न लें बल्कि उन्हें रौशनी में लाएँ। 12 क्योंकि जो कुछ यह लोग पोशीदगी में करते हैं उसका ज़िक्र करना भी
शर्म की बात है। 13 लेकिन सब कुछ बेनिक़ाब हो जाता है जब उसे रौशनी में लाया जाता है। 14 क्योंकि जो रौशनी में
लाया जाता है वह रौशन हो जाता है। इसलिए कहा जाता है,

“ऐ सोनेवाले, जाग उठ!
मुरदों में से जी उठ,
तो मसीह तुझ पर चमकेगा।”

15 चुनाँचे बड़ी एहतियात से इस पर ध्यान दें कि आप ज़िंदगी किस तरह गुज़ारते हैं—बेसमझ या समझदार लोगों
की तरह। 16 हर मौक़े से पूरा फ़ायदा उठाएँ, क्योंकि दिन बुरे हैं। 17 इसलिए अहमक़ न बनें बल्कि ख़ुदावंद की मरज़ी
को समझें।

18 शराब में मत्वाले न हो जाएँ, क्योंकि इसका अंजाम ऐयाशी है। इसके बजाए रूहुल-क़ुद्स से मामूर होते जाएँ।
19 ज़बूरों, हम्दो-सना और रूहानी गीतों से एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें। अपने दिलों में ख़ुदावंद के लिए गीत
गाएँ और नग़मासराई करें। 20 हाँ, हर वक़्त हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम में हर चीज़ के लिए ख़ुदा बाप का शुक्र
करें।

मियाँ-बीवी का ताल्लुक़

21 मसीह के ख़ौफ़ में एक दूसरे के ताबे रहें। 22 बीवियो, जिस तरह आप ख़ुदावंद के ताबे हैं उसी तरह अपने शौहर
के ताबे भी रहें। 23 क्योंकि शौहर वैसे ही अपनी बीवी का सर है जैसे मसीह अपनी जमात का। हाँ, जमात मसीह का
बदन है जिसे उसने नजात दी है। 24 अब जिस तरह जमात मसीह के ताबे है उसी तरह बीवियाँ भी अपने शौहरों के ताबे
रहें।

25 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मसीह ने अपनी जमात से मुहब्बत रखकर
अपने आपको उसके लिए क़ुरबान किया 26 ताकि उसे अल्लाह के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करे। उसने उसे कलामे-पाक
से धोकर पाक-साफ़ कर दिया 27 ताकि अपने आपको एक ऐसी जमात पेश करे जो जलाली, मुक़द्दस और बेइलज़ाम
हो, जिसमें न कोई दाग़ हो, न कोई झुर्री, न किसी और क़िस्म का नुक़्स। 28 शौहरों का फ़र्ज़ है कि वह अपनी बीवियों
से ऐसी ही मुहब्बत रखें। हाँ, वह उनसे वैसी मुहब्बत रखें जैसी अपने जिस्म से रखते हैं। क्योंकि जो अपनी बीवी से

मुहब्बत रखता है वह अपने आपसे ही मुहब्बत रखता है। 29 आख़िर कोई भी अपने जिस्म से नफ़रत नहीं करता बल्कि
उसे ख़ुराक मुहैया करता और पालता है। मसीह भी अपनी जमात के लिए यही कुछ करता है। 30 क्योंकि हम उसके
बदन के आज़ा हैं। 31 कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है, "इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ
पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते हैं।" 32 यह राज़ बहुत गहरा है। मैं तो उसका इतलाक़ मसीह और उस की
जमात पर करता हूँ। 33 लेकिन इसका इतलाक़ आप पर भी है। हर शौहर अपनी बीवी से इस तरह मुहब्बत रखे जिस
तरह वह अपने आपसे रखता है। और हर बीवी अपने शौहर की इज़्ज़त करे।

6

बच्चों और वालिदैन का ताल्लुक़

1 बच्चो, ख़ुदावंद में अपने माँ-बाप के ताबे रहें, क्योंकि यही रास्तबाज़ी का तक़ाज़ा है। 2 कलामे-मुक़द्दस में लिखा
है, "अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।" यह पहला हुक्म है जिसके साथ एक वादा भी किया गया है,
3 "फिर तू ख़ुशहाल और ज़मीन पर देर तक जीता रहेगा।"
4 ऐ वालिदो, अपने बच्चों से ऐसा सुलूक मत करें कि वह ग़ुस्से हो जाएँ बल्कि उन्हें ख़ुदावंद की तरफ़ से तरबियत
और हिदायत देकर पालें।

ग़ुलाम और मालिक

5 ग़ुलामो, डरते और काँपते हुए अपने इनसानी मालिकों के ताबे रहें। ख़ुलूसदिली से उनकी ख़िदमत यों करें जैसे
मसीह की। 6 न सिर्फ़ उनके सामने ही और उन्हें ख़ुश रखने के लिए ख़िदमत करें बल्कि मसीह के ग़ुलामों की हैसियत
से जो पूरी लगन से अल्लाह की मरज़ी पूरी करना चाहते हैं। 7 ख़ुशी से ख़िदमत करें, इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़
इनसानों की बल्कि ख़ुदावंद की ख़िदमत कर रहे हों। 8 आप तो जानते हैं कि जो भी अच्छा काम हमने किया उसका
अज्र ख़ुदावंद देगा, ख़ाह हम ग़ुलाम हों या आज़ाद।
9 और मालिको, आप भी अपने ग़ुलामों से ऐसा ही सुलूक करें। उन्हें धमकियाँ न दें। आपको तो मालूम है कि
आसमान पर आपका भी मालिक है और कि वह जानिबदार नहीं होता।

रूहानी ज़िरा-बकतर

10 एक आख़िरी बात, ख़ुदावंद और उस की ज़बरदस्त क़ुव्वत में ताक़तवर बन जाएँ। 11 अल्लाह का पूरा ज़िरा-
बकतर पहन लें ताकि इबलीस की चालों का सामना कर सकें। 12 क्योंकि हमारी जंग इनसान के साथ नहीं है बल्कि
हुक्मरानों और इख़्तियारवालों के साथ, इस तारीक दुनिया के हाकिमों के साथ और आसमानी दुनिया की शैतानी
क़ुव्वतों के साथ है। 13 चुनाँचे अल्लाह का पूरा ज़िरा-बकतर पहन लें ताकि आप मुसीबत के दिन इबलीस के हमलों
का सामना कर सकें बल्कि सब कुछ सरंजाम देने के बाद क़ायम रह सकें।
14 अब यों खड़े हो जाएँ कि आपकी कमर में सच्चाई का पटका बँधा हुआ हो, आपके सीने पर रास्तबाज़ी का
सीनाबंद लगा हो 15 और आपके पाँवों में ऐसे जूते हों जो सुलह-सलामती की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए तैयार रहें।
16 इसके अलावा ईमान की ढाल भी उठाए रखें, क्योंकि इससे आप इबलीस के जलते हुए तीर बुझा सकते हैं। 17 अपने
सर पर नजात का ख़ोद पहनकर हाथ में रूह की तलवार जो अल्लाह का कलाम है थामे रखें। 18 और हर मौक़े पर
रूह में हर तरह की दुआ और मिन्नत करते रहें। जागते और साबितक़दमी से तमाम मुक़द्दसीन के लिए दुआ करते रहें।
19 मेरे लिए भी दुआ करें कि जब भी मैं अपना मुँह खोलूँ अल्लाह मुझे ऐसे अलफ़ाज़ अता करे कि पूरी दिलेरी से उस
की ख़ुशख़बरी का राज़ सुना सकूँ। 20 क्योंकि मैं इसी पैग़ाम की ख़ातिर क़ैदी, हाँ ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ मसीह का
एलची हूँ। दुआ करें कि मैं मसीह में उतनी दिलेरी से यह पैग़ाम सुनाऊँ जितना मुझे करना चाहिए।

आख़िरी सलाम

21 आप मेरे हाल और काम के बारे में भी जानना चाहेंगे। ख़ुदावंद में हमारा अज़ीज़ भाई और वफ़ादार ख़ादिम
तुख़िकुस आपको यह सब कुछ बता देगा। 22 मैंने उसे इसी लिए आपके पास भेज दिया कि आपको हमारे हाल का पता
चले और आपको तसल्ली मिले।
23 ख़ुदा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आप भाइयों को सलामती और ईमान के साथ मुहब्बत अता करें। 24 अल्लाह
का फ़ज़ल उन सबके साथ हो जो अनमिट मुहब्बत के साथ हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह को प्यार करते हैं।

फ़िलिप्पियों

सलाम

1 यह ख़त मसीह ईसा के ग़ुलामों पौलुस और तीमुथियुस की तरफ़ से है।
मैं फ़िलिप्पी में मौजूद उन तमाम लोगों को लिख रहा हूँ जिन्हें अल्लाह ने मसीह ईसा के ज़रीए मख़सूसो-मुक़द्दस
किया है। मैं उनके बुज़ुर्गों और ख़ादिमों को भी लिख रहा हूँ।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

जमात के लिए शुक्रो-दुआ

3 जब भी मैं आपको याद करता हूँ तो अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ। 4 आपके लिए तमाम दुआओं में मैं हमेशा
ख़ुशी से दुआ करता हूँ, 5 इसलिए कि आप पहले दिन से लेकर आज तक अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने में मेरे शरीक
रहे हैं। 6 और मुझे यक़ीन है कि अल्लाह जिसने आपमें यह अच्छा काम शुरू किया है इसे उस दिन तकमील तक
पहुँचाएगा जब मसीह ईसा वापस आएगा। 7 और मुनासिब है कि आप सबके बारे में मेरा यही ख़याल हो, क्योंकि आप
मुझे अज़ीज़ रखते हैं। हाँ, जब मुझे जेल में डाला गया या मैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी का दिफ़ा या उस की तसदीक़ कर
रहा था तो आप भी मेरे इस ख़ास फ़ज़ल में शरीक हुए। 8 अल्लाह मेरा गवाह है कि मैं कितनी शिद्दत से आप सबका
आरज़ूमंद हूँ। हाँ, मैं मसीह की-सी दिली शफ़क़त के साथ आपका ख़ाहिशमंद हूँ।
9 और मेरी दुआ है कि आपकी मुहब्बत में इल्मो-इरफ़ान और हर तरह की रूहानी बसीरत का यहाँ तक इज़ाफ़ा हो
जाए कि वह बढ़ती बढ़ती दिल से छलक उठे। 10 क्योंकि यह ज़रूरी है ताकि आप वह बातें क़बूल करें जो बुनियादी
अहमियत की हामिल हैं और आप मसीह की आमद तक बेलौस और बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारें। 11 और यों आप उस
रास्तबाज़ी के फल से भरे रहेंगे जो आपको ईसा मसीह के वसीले से हासिल होती है। फिर आप अपनी ज़िंदगी से
अल्लाह को जलाल देंगे और उस की तमजीद करेंगे।

हर एक को मालूम हो जाए कि मसीह कौन है

12 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि यह बात आपके इल्म में हो कि जो कुछ भी मुझ पर गुज़रा है वह हक़ीक़त में अल्लाह
की ख़ुशख़बरी के फैलाव का बाइस बन गया है। 13 क्योंकि प्रैटोरियुम * के तमाम अफ़राद और बाक़ी सबको मालूम
हो गया है कि मैं मसीह की ख़ातिर क़ैदी हूँ। 14 और मेरे क़ैद में होने की वजह से ख़ुदावंद में ज़्यादातर भाइयों का
एतमाद इतना बढ़ गया है कि वह मज़ीद दिलेरी के साथ बिलाख़ौफ़ अल्लाह का कलाम सुनाते हैं।
15 बेशक बाज़ तो हसद और मुख़ालफ़त के बाइस मसीह की मुनादी कर रहे हैं, लेकिन बाक़ियों की नीयत अच्छी
है, 16 क्योंकि वह जानते हैं कि मैं अल्लाह की ख़ुशख़बरी के दिफ़ा की वजह से यहाँ पड़ा हूँ। इसलिए वह मुहब्बत की
रूह में तबलीग़ करते हैं। 17 इसके मुक़ाबले में दूसरे ख़ुलूसदिली से मसीह के बारे में पैग़ाम नहीं सुनाते बल्कि ख़ुदग़रज़ी
से। यह समझते हैं कि हम इस तरह पौलुस की गिरिफ़्तारी को मज़ीद तकलीफ़देह बना सकते हैं।
18 लेकिन इससे क्या फ़रक़ पड़ता है! अहम बात तो यह है कि मसीह की मुनादी हर तरह से की जा रही है, ख़ाह
मुनाद की नीयत पुरख़ुलूस हो या न। और इस वजह से मैं ख़ुश हूँ। और ख़ुश रहूँगा भी, 19 क्योंकि मैं जानता हूँ कि
यह मेरे लिए रिहाई का बाइस बनेगा, इसलिए कि आप मेरे लिए दुआ कर रहे हैं और ईसा मसीह का रूह मेरी हिमायत
कर रहा है। 20 हाँ, यह मेरी पूरी तवक़्क़ो और उम्मीद है। मैं यह भी जानता हूँ कि मुझे किसी भी बात में शरमिंदा नहीं
किया जाएगा बल्कि जैसा माज़ी में हमेशा हुआ अब भी मुझे बड़ी दिलेरी से मसीह को जलाल देने का फ़ज़ल मिलेगा,
ख़ाह मैं ज़िंदा रहूँ या मर जाऊँ। 21 क्योंकि मेरे लिए मसीह ज़िंदगी है और मौत नफ़ा का बाइस। 22 अगर मैं ज़िंदा रहूँ
तो इसका फ़ायदा यह होगा कि मैं मेहनत करके मज़ीद फल ला सकूँगा। चुनाँचे मैं नहीं कह सकता कि क्या बेहतर है।
23 मैं बड़ी कश-म-कश में रहता हूँ। एक तरफ़ मैं कूच करके मसीह के पास होने की आरज़ू रखता हूँ, क्योंकि यह मेरे
लिए सबसे बेहतर होता। 24 लेकिन दूसरी तरफ़ ज़्यादा ज़रूरी यह है कि मैं आपकी ख़ातिर ज़िंदा रहूँ। 25 और चूँकि
मुझे इस ज़रूरत का यक़ीन है, इसलिए मैं जानता हूँ कि मैं ज़िंदा रहकर दुबारा आप सबके साथ रहूँगा ताकि आप तरक़्क़ी
करें और ईमान में ख़ुश रहें। 26 हाँ, मेरे आपके पास वापस आने से आप मेरे सबब से मसीह ईसा पर हद से ज़्यादा फ़ख़र
करेंगे।

---

* **1:13** गवर्नर का सरकारी महल प्रैटोरियुम कहलाता था। यहाँ इसका मतलब शाहनशाह के पहरेदारों के क्वार्टर भी हो सकता है।

27 लेकिन आप हर सूरत में मसीह की ख़ुशख़बरी और आसमान के शहरियों के लायक़ ज़िंदगी गुज़ारें। फिर ख़ाह
मैं आकर आपको देखूँ, ख़ाह ग़ैरमौजूदगी में आपके बारे में सुनूँ, मुझे मालूम होगा कि आप एक रूह में क़ायम हैं, आप
मिलकर यकदिली से उस ईमान के लिए जाँफ़िशानी कर रहे हैं जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी से पैदा हुआ है, 28 और
आप किसी सूरत में अपने मुख़ालिफ़ों से दहशत नहीं खाते। यह उनके लिए एक निशान होगा कि वह हलाक हो जाएंगे
जबकि आपको नजात हासिल होगी, और वह भी अल्लाह से। 29 क्योंकि आपको न सिर्फ़ मसीह पर ईमान लाने का
फ़ज़ल हासिल हुआ है बल्कि उस की ख़ातिर दुख उठाने का भी। 30 आप भी उस मुक़ाबले में जाँफ़िशानी कर रहे हैं
जिसमें आपने मुझे देखा है और जिसके बारे में आपने अब सुन लिया है कि मैं अब तक उसमें मसरूफ़ हूँ।

2

यगांगत की ज़रूरत

1 क्या आपके दरमियान मसीह में हौसलाअफ़्ज़ाई, मुहब्बत की तसल्ली, रूहुल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त, नरमदिली
और रहमत पाई जाती है? 2 अगर ऐसा है तो मेरी ख़ुशी इसमें पूरी करें कि आप एक जैसी सोच रखें और एक जैसी
मुहब्बत रखें, एक जान और एक ज़हन हो जाएँ। 3 ख़ुदग़रज़ न हों, न बातिल इज़्ज़त के पीछे पड़ें बल्कि फ़रोतनी से
दूसरों को अपने से बेहतर समझें। 4 हर एक न सिर्फ़ अपना फ़ायदा सोचे बल्कि दूसरों का भी।

मसीह की राहे-सलीब

5 वही सोच रखें जो मसीह ईसा की भी थी।
6 वह जो अल्लाह की सूरत पर था
नहीं समझता था कि मेरा अल्लाह के बराबर होना
कोई ऐसी चीज़ है
जिसके साथ ज़बरदस्ती चिमटे रहने की ज़रूरत है।
7 नहीं, उसने अपने आपको इससे महरूम करके
ग़ुलाम की सूरत अपनाई
और इनसानों की मानिंद बन गया।
शक्लो-सूरत में वह इनसान पाया गया।
8 उसने अपने आपको पस्त कर दिया
और मौत तक ताबे रहा,
बल्कि सलीबी मौत तक।
9 इसलिए अल्लाह ने उसे सबसे आला मक़ाम पर सरफ़राज़ कर दिया
और उसे वह नाम बख़्शा जो हर नाम से आला है,
10 ताकि ईसा के इस नाम के सामने हर घुटना झुके,
ख़ाह वह घुटना आसमान पर, ज़मीन पर या इसके नीचे हो,
11 और हर ज़बान तसलीम करे कि ईसा मसीह ख़ुदावंद है।
यों ख़ुदा बाप को जलाल दिया जाएगा।

रूहानी तरक़्क़ी का राज़

12 मेरे अज़ीज़ो, जब मैं आपके पास था तो आप हमेशा फ़रमाँबरदार रहे। अब जब मैं ग़ैरहाज़िर हूँ तो इसकी
कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। चुनाँचे डरते और काँपते हुए जाँफ़िशानी करते रहें ताकि आपकी नजात तकमील तक पहुँचे।
13 क्योंकि ख़ुदा ही आपमें वह कुछ करने की ख़ाहिश पैदा करता है जो उसे पसंद है, और वही आपको यह पूरा करने
की ताक़त देता है।

14 सब कुछ बुड़बुड़ाए और बहस-मुबाहसा किए बग़ैर करें 15 ताकि आप बेइलज़ाम और पाक होकर अल्लाह के
बेदाग़ फ़रज़ंद साबित हो जाएँ, ऐसे लोग जो एक टेढ़ी और उलटी नसल के दरमियान ही आसमान के सितारों की तरह
चमकते-दमकते 16 और ज़िंदगी का कलाम थामे रखते हैं। फिर मैं मसीह की आमद के दिन फ़ख़र कर सकूँगा कि न
मैं रायगाँ दौड़ा, न बेफ़ायदा जिद्दो-जहद की।

17 देखें, जो ख़िदमत आप ईमान से सरंजाम दे रहे हैं वह एक ऐसी क़ुरबानी है जो अल्लाह को पसंद है। ख़ुदा करे
कि जो दुख मैं उठा रहा हूँ वह मै की उस नज़र की मानिंद हो जो बैतुल-मुक़द्दस में क़ुरबानी पर उंडेली जाती है। अगर
मेरी नज़र वाक़ई आपकी क़ुरबानी यों मुकम्मल करे तो मैं ख़ुश हूँ और आपके साथ ख़ुशी मनाता हूँ। 18 आप भी इसी
वजह से ख़ुश हों और मेरे साथ ख़ुशी मनाएँ।

तीमुथियुस और इपफ़्रुदितुस को फ़िलिप्पियों के पास भेजा जाएगा

19 मुझे उम्मीद है कि अगर ख़ुदावंद ईसा ने चाहा तो मैं जल्द ही तीमुथियुस को आपके पास भेज दूँगा ताकि आपके
बारे में ख़बर पाकर मेरा हौसला भी बढ़ जाए। 20 क्योंकि मेरे पास कोई और नहीं जिसकी सोच बिलकुल मेरी जैसी
है और जो इतनी ख़ुलूसदिली से आपकी फ़िकर करे। 21 दूसरे सब अपने मफ़ाद की तलाश में रहते हैं और वह कुछ
नज़रंदाज़ करते हैं जो ईसा मसीह का काम बढ़ाता है। 22 लेकिन आपको तो मालूम है कि तीमुथियुस क़ाबिले-एतमाद
साबित हुआ, कि उसने मेरा बेटा बनकर मेरे साथ अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने की ख़िदमत सरंजाम दी। 23 चुनाँचे
उम्मीद है कि ज्योंही मुझे पता चले कि मेरा क्या बनेगा मैं उसे आपके पास भेज दूँगा। 24 और मेरा ख़ुदावंद में ईमान है
कि मैं भी जल्द ही आपके पास आऊँगा।

25 लेकिन मैंने ज़रूरी समझा कि इतने में इपफ़्रुदितुस को आपके पास वापस भेज दूँ जिसे आपने क़ासिद के तौर पर
मेरी ज़रूरियात पूरी करने के लिए मेरे पास भेज दिया था। वह मेरा सच्चा भाई, हमख़िदमत और साथी सिपाही साबित
हुआ। 26 मैं उसे इसलिए भेज रहा हूँ क्योंकि वह आप सबका निहायत आरज़ूमंद है और इसलिए बेचैन है कि आपको
उसके बीमार होने की ख़बर मिल गई थी। 27 और वह था भी बीमार बल्कि मरने को था। लेकिन अल्लाह ने उस पर
रहम किया, और न सिर्फ़ उस पर बल्कि मुझ पर भी ताकि मेरे दुख में इज़ाफ़ा न हो जाए। 28 इसलिए मैं उसे और जल्दी
से आपके पास भेजूँगा ताकि आप उसे देखकर ख़ुश हो जाएँ और मेरी परेशानी भी दूर हो जाए। 29 चुनाँचे ख़ुदावंद में
बड़ी ख़ुशी से उसका इस्तक़बाल करें। उस जैसे लोगों की इज़्ज़त करें, 30 क्योंकि वह मसीह के काम के बाइस मरने
की नौबत तक पहुँच गया था। उसने अपनी जान ख़तरे में डाल दी ताकि आपकी जगह मेरी वह ख़िदमत करे जो आप
न कर सके।

3

अल्लाह में ख़ुशी

1 मेरे भाइयो, जो कुछ भी हो, ख़ुदावंद में ख़ुश रहें। मैं आपको यह बात बताते रहने से कभी थकता नहीं, क्योंकि
ऐसा करने से आप महफ़ूज़ रहते हैं।

यहूदियों से ख़बरदार

2 कुत्तों से ख़बरदार! उन शरीर मज़दूरों से होशियार रहना जो जिस्म की काँट-छाँट यानी ख़तना करवाते हैं।
3 क्योंकि हम ही हक़ीक़ी ख़तना के पैरोकार हैं, हम ही हैं जो अल्लाह के रूह में परस्तिश करते, मसीह ईसा पर फ़ख़र
करते और इनसानी ख़ूबियों पर भरोसा नहीं करते।

पौलुस की शख़्सी गवाही

4 बात यह नहीं कि मेरा अपनी इनसानी ख़ूबियों पर भरोसा करने का कोई जवाज़ न होता। जब दूसरे अपनी इनसानी
ख़ूबियों पर फ़ख़र करते हैं तो मैं उनकी निसबत ज़्यादा कर सकता हूँ। 5 मेरा ख़तना हुआ जब मैं अभी आठ दिन का
बच्चा था। मैं इसराईल क़ौम के क़बीले बिनयमीन का हूँ, ऐसा इबरानी जिसके वालिदैन भी इबरानी थे। मैं फ़रीसियों
का मेंबर था जो यहूदी शरीअत के कटर पैरोकार हैं। 6 मैं इतना सरगरम था कि मसीह की जमातों को ईज़ा पहुँचाई।
हाँ, मैं शरीअत पर अमल करने में रास्तबाज़ और बेइलज़ाम था।

हक़ीक़ी फ़ायदा

7 उस वक़्त यह सब कुछ मेरे नज़दीक नफ़ा का बाइस था, लेकिन अब मैं इसे मसीह में होने के बाइस नुक़सान ही
समझता हूँ। 8 हाँ, बल्कि मैं सब कुछ इस अज़ीमतरीन बात के सबब से नुक़सान समझता हूँ कि मैं अपने ख़ुदावंद मसीह
ईसा को जानता हूँ। उसी की ख़ातिर मुझे तमाम चीज़ों का नुक़सान पहुँचा है। मैं उन्हें कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह
को हासिल करूँ 9 और उसमें पाया जाऊँ। लेकिन मैं इस नौबत तक अपनी उस रास्तबाज़ी के ज़रीए नहीं पहुँच सकता
जो शरीअत के ताबे रहने से हासिल होती है। इसके लिए वह रास्तबाज़ी ज़रूरी है जो मसीह पर ईमान लाने से मिलती
है, जो अल्लाह की तरफ़ से है और जो ईमान पर मबनी होती है। 10 हाँ, मैं सब कुछ कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह
को, उसके जी उठने की क़ुदरत और उसके दुखों में शरीक होने का फ़ज़ल जान लूँ। यों मैं उस की मौत का हमशक्ल
बनता जा रहा हूँ, 11 इस उम्मीद में कि मैं किसी न किसी तरह मुरदों में से जी उठने की नौबत तक पहुँचूँगा।

इनाम हासिल करने के लिए दौड़ें

12 मतलब यह नहीं कि मैं यह सब कुछ हासिल कर चुका या कामिल हो चुका हूँ। लेकिन मैं मनज़िले-मक़सूद की
तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ ताकि वह कुछ पकड़ लूँ जिसके लिए मसीह ईसा ने मुझे पकड़ लिया है। 13 भाइयो, मैं अपने

बारे में यह ख़याल नहीं करता कि मैं इसे हासिल कर चुका हूँ। लेकिन मैं इस एक ही बात पर ध्यान देता हूँ, जो कुछ
मेरे पीछे है वह मैं भूलकर सख़्त तगो-दौ के साथ उस तरफ़ बढ़ता हूँ जो आगे पड़ा है। 14 मैं सीधा मनज़िले-मक़सूद की
तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ ताकि वह इनाम हासिल करूँ जिसके लिए अल्लाह ने मुझे मसीह ईसा में आसमान पर बुलाया
है।

मसीह में पुख़्ता होना

15 चुनाँचे हममें से जितने कामिल हैं आएँ, हम ऐसी सोच रखें। और अगर आप किसी बात में फ़रक़ सोचते हैं तो
अल्लाह आप पर यह भी ज़ाहिर करेगा। 16 जो भी हो, जिस मरहले तक हम पहुँच गए हैं आएँ, हम उसके मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारें।
17 भाइयो, मिलकर मेरे नक़्शे-क़दम पर चलें। और उन पर ख़ूब ध्यान दें जो हमारे नमूने पर चलते हैं। 18 क्योंकि
जिस तरह मैंने आपको कई बार बताया है और अब रो रोकर बता रहा हूँ, बहुत-से लोग अपने चाल-चलन से ज़ाहिर
करते हैं कि वह मसीह की सलीब के दुश्मन हैं। 19 ऐसे लोगों का अंजाम हलाकत है। खाने-पीने की पाबंदियाँ और
ख़तने पर फ़ख़र उनका ख़ुदा बन गया है। * हाँ, वह सिर्फ़ दुनियावी सोच रखते हैं। 20 लेकिन हम आसमान के शहरी
हैं, और हम शिद्दत से इस इंतज़ार में हैं कि हमारा नजातदहिंदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह वहीं से आए। 21 उस वक़्त
वह हमारे पस्तहाल बदनों को बदलकर अपने जलाली बदन के हमशक्ल बना देगा। और यह वह उस क़ुव्वत के ज़रीए
करेगा जिससे वह तमाम चीज़ें अपने ताबे कर सकता है।

4

हिदायात

1 चुनाँचे मेरे प्यारे भाइयो, जिनका आरज़ूमंद मैं हूँ और जो मेरी मुसर्रत का बाइस और मेरा ताज हैं, ख़ुदावंद में
साबितक़दम रहें। अज़ीज़ो, 2 मैं युवदिया और सुंतुख़े से अपील करता हूँ कि वह ख़ुदावंद में एक जैसी सोच रखें। 3 हाँ
मेरे हमख़िदमत भाई, मेरी आपसे गुज़ारिश है कि आप उनकी मदद करें। क्योंकि वह अल्लाह की ख़ुशख़बरी फैलाने
की जिद्दो-जहद में मेरे साथ ख़िदमत करती रही हैं, उस मुक़ाबले में जिसमें क्लेमेंस और मेरे वह बाक़ी मददगार भी
शरीक थे जिनके नाम किताबे-हयात में दर्ज हैं।
4 हर वक़्त ख़ुदावंद में ख़ुशी मनाएँ। एक बार फिर कहता हूँ, ख़ुशी मनाएँ।
5 आपकी नरमदिली तमाम लोगों पर ज़ाहिर हो। याद रखें कि ख़ुदावंद आने को है। 6 अपनी किसी भी फ़िकर में
उलझकर परेशान न हो जाएँ बल्कि हर हालत में दुआ और इल्तिजा करके अपनी दरख़ास्तें अल्लाह के सामने पेश
करें। ध्यान रखें कि आप यह शुक्रगुज़ारी की रूह में करें। 7 फिर अल्लाह की सलामती जो समझ से बाहर है आपके
दिलों और ख़यालात को मसीह ईसा में महफ़ूज़ रखेगी।
8 भाइयो, एक आख़िरी बात, जो कुछ सच्चा है, जो कुछ शरीफ़ है, जो कुछ रास्त है, जो कुछ मुक़द्दस है, जो कुछ
पसंदीदा है, जो कुछ उम्दा है, ग़रज़, अगर कोई अख़लाक़ी या क़ाबिले-तारीफ़ बात हो तो उसका ख़याल रखें। 9 जो
कुछ आपने मेरे वसीले से सीख लिया, हासिल कर लिया, सुन लिया या देख लिया है उस पर अमल करें। फिर सलामती
का ख़ुदा आपके साथ होगा।

जमात की माली इमदाद के लिए शुक्रिया

10 मैं ख़ुदावंद में निहायत ही ख़ुश हुआ कि अब आख़िरकार आपकी मेरे लिए फ़िकरमंदी दुबारा जाग उठी है। हाँ,
मुझे पता है कि आप पहले भी फ़िकरमंद थे, लेकिन आपको इसका इज़हार करने का मौक़ा नहीं मिला था। 11 मैं यह
अपनी किसी ज़रूरत की वजह से नहीं कह रहा, क्योंकि मैंने हर हालत में ख़ुश रहने का राज़ सीख लिया है। 12 मुझे
दबाए जाने का तजरबा हुआ है और हर चीज़ कसरत से मुयस्सर होने का भी। मुझे हर हालत से ख़ूब वाक़िफ़ किया
गया है, सेर होने से और भूका रहने से भी, हर चीज़ कसरत से मुयस्सर होने से और ज़रूरतमंद होने से भी। 13 मसीह में
मैं सब कुछ करने के क़ाबिल हूँ, क्योंकि वही मुझे तक़वियत देता रहता है।
14 तो भी अच्छा था कि आप मेरी मुसीबत में शरीक हुए। 15 आप जो फ़िलिप्पी के रहनेवाले हैं ख़ुद जानते हैं कि
उस वक़्त जब मसीह की मुनादी का काम आपके इलाक़े में शुरू हुआ था और मैं सूबा मकिदुनिया से निकल आया था
तो सिर्फ़ आपकी जमात पूरे हिसाब-किताब के साथ पैसे देकर मेरी ख़िदमत में शरीक हुई। 16 उस वक़्त भी जब मैं
थिस्सलुनीके शहर में था आपने कई बार मेरी ज़रूरियात पूरी करने के लिए कुछ भेज दिया। 17 कहने का मतलब यह
नहीं कि मैं आपसे कुछ पाना चाहता हूँ, बल्कि मेरी शदीद ख़ाहिश यह है कि आपके देने से आप ही को अल्लाह से

* **3:19** लफ़्ज़ी तरजुमा : उनका पेट और उनका अपनी शर्म पर फ़ख़र उनका ख़ुदा बन गया है।

कसरत का सूद मिल जाए। 18 यही मेरी रसीद है। मैंने पूरी रक़म वसूल पाई है बल्कि अब मेरे पास ज़रूरत से ज़्यादा है।
जब से मुझे इपफ़्रुदितुस के हाथ आपका हदिया मिल गया है मेरे पास बहुत कुछ है। यह ख़ुशबूदार और क़ाबिले-क़बूल
क़ुरबानी अल्लाह को पसंदीदा है। 19 जवाब में मेरा ख़ुदा अपनी उस जलाली दौलत के मुवाफ़िक़ जो मसीह ईसा में है
आपकी तमाम ज़रूरियात पूरी करे। 20 अल्लाह हमारे बाप का जलाल अज़ल से अबद तक हो। आमीन।

सलाम और बरकत

21 तमाम मक़ामी मुक़द्दसीन को मसीह ईसा में मेरा सलाम देना। जो भाई मेरे साथ हैं वह आपको सलाम कहते हैं।
22 यहाँ के तमाम मुक़द्दसीन आपको सलाम कहते हैं, ख़ासकर शहनशाह के घराने के भाई और बहनें। 23 ख़ुदावंद ईसा
मसीह का फ़ज़ल आपकी रूह के साथ रहे। आमीन।

कुलुस्सियों

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस
की तरफ़ से भी है।
2 मैं कुलुस्से शहर के मुक़द्दस भाइयों को लिख रहा हूँ जो मसीह पर ईमान लाए हैं :
ख़ुदा हमारा बाप आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शे।

शुक्रगुज़ारी की दुआ

3 जब हम आपके लिए दुआ करते हैं तो हर वक़्त ख़ुदा अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप का शुक्र करते हैं, 4 क्योंकि
हमने आपके मसीह ईसा पर ईमान और आपकी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुन लिया है। 5 आपका यह ईमान
और मुहब्बत वह कुछ ज़ाहिर करते हैं जिसकी आप उम्मीद रखते हैं और जो आसमान पर आपके लिए महफ़ूज़ रखा
गया है। और आपने यह उम्मीद उस वक़्त से रखी है जब से आपने पहली मरतबा सच्चाई का कलाम यानी अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनी। 6 यह पैग़ाम जो आपके पास पहुँच गया पूरी दुनिया में फल ला रहा और बढ़ रहा है, बिलकुल उसी
तरह जिस तरह यह आपमें भी उस दिन से काम कर रहा है जब आपने पहली बार इसे सुनकर अल्लाह के फ़ज़ल की
पूरी हक़ीक़त समझ ली। 7 आपने हमारे अज़ीज़ हमख़िदमत इपफ्रास से इस ख़ुशख़बरी की तालीम पा ली थी। मसीह
का यह वफ़ादार ख़ादिम हमारी जगह आपकी ख़िदमत कर रहा है। 8 उसी ने हमें आपकी उस मुहब्बत के बारे में बताया
जो रूहुल-क़ुद्स ने आपके दिलों में डाल दी है।
9 इस वजह से हम आपके लिए दुआ करने से बाज़ नहीं आए बल्कि यह माँगते रहते हैं कि अल्लाह आपको हर
रूहानी हिकमत और समझ से नवाज़कर अपनी मरज़ी के इल्म से भर दे। 10 क्योंकि फिर ही आप अपनी ज़िंदगी
ख़ुदावंद के लायक़ गुज़ार सकेंगे और हर तरह से उसे पसंद आएँगे। हाँ, आप हर क़िस्म का अच्छा काम करके फल
लाएँगे और अल्लाह के इल्मो-इरफ़ान में तरक़्क़ी करेंगे। 11 और आप उस की जलाली क़ुदरत से मिलनेवाली हर
क़िस्म की क़ुव्वत से तक़वियत पाकर हर वक़्त साबितक़दमी और सब्र से चल सकेंगे। आप ख़ुशी से 12 बाप का शुक्र
करेंगे जिसने आपको उस मीरास में हिस्सा लेने के लायक़ बना दिया जो उसके रौशनी में रहनेवाले मुक़द्दसीन को हासिल
है। 13 क्योंकि वही हमें तारीकी के इख़्तियार से रिहाई देकर अपने प्यारे फ़रज़ंद की बादशाही में लाया, 14 उस वाहिद
शख़्स के इख़्तियार में जिसने हमारा फ़िद्या देकर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया।

मसीह की शख़्सियत और काम

15 अल्लाह को देखा नहीं जा सकता, लेकिन हम मसीह को देख सकते हैं जो अल्लाह की सूरत और कायनात
का पहलौठा है। 16 क्योंकि अल्लाह ने उसी में सब कुछ ख़लक़ किया, ख़ाह आसमान पर हो या ज़मीन पर, आँखों
को नज़र आए या न, ख़ाह शाही तख़्त, क़ुव्वतें, हुक्मरान या इख़्तियारवाले हूँ। सब कुछ मसीह के ज़रीए और उसी
के लिए ख़लक़ हुआ। 17 वही सब चीज़ों से पहले है और उसी में सब कुछ क़ायम रहता है। 18 और वह बदन यानी
अपनी जमात का सर भी है। वही इब्तिदा है, और चूँकि पहले वही मुरदों में से जी उठा इसलिए वही उनमें से पहलौठा
भी है ताकि वह सब बातों में अव्वल हो। 19 क्योंकि अल्लाह को पसंद आया कि मसीह में उस की पूरी मामूरी सुकूनत
करे 20 और वह मसीह के ज़रीए सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले, ख़ाह वह ज़मीन की हूँ ख़ाह आसमान की।
क्योंकि उसने मसीह के सलीब पर बहाए गए ख़ून के वसीले से सुलह-सलामती क़ायम की।
21 आप भी पहले अल्लाह के सामने अजनबी थे और दुश्मन की-सी सोच रखकर बुरे काम करते थे। 22 लेकिन
अब उसने मसीह के इनसानी बदन की मौत से आपके साथ सुलह कर ली है ताकि वह आपको मुक़द्दस, बेदाग़ और
बेइलज़ाम हालत में अपने हुज़ूर खड़ा करे। 23 बेशक अब ज़रूरी है कि आप ईमान में क़ायम रहें, कि आप ठोस बुनियाद
पर मज़बूती से खड़े रहें और उस ख़ुशख़बरी की उम्मीद से हट न जाएँ जो आपने सुन ली है। यह वही पैग़ाम है जिसकी
मुनादी दुनिया में हर मख़लूक़ के सामने कर दी गई है और जिसका ख़ादिम मैं पौलुस बन गया हूँ।

जमात के ख़ादिम की हैसियत से पौलुस की ख़िदमत

24 अब मैं उन दुखों के बाइस ख़ुशी मनाता हूँ जो मैं आपकी ख़ातिर उठा रहा हूँ। क्योंकि मैं अपने जिस्म में मसीह
के बदन यानी उस की जमात की ख़ातिर मसीह की मुसीबतों की वह कमियाँ पूरी कर रहा हूँ जो अब तक रह गई हैं।
25 हाँ, अल्लाह ने मुझे अपनी जमात का ख़ादिम बनाकर यह ज़िम्मादारी दी कि मैं आपको अल्लाह का पूरा कलाम

सुना दूँ, 26 वह राज़ जो अज़ल से तमाम गुज़री नसलों से पोशीदा रहा था लेकिन अब मुक़द्दसीन पर ज़ाहिर किया गया
है। 27 क्योंकि अल्लाह चाहता था कि वह जान लें कि ग़ैरयहूदियों में यह राज़ कितना बेशक़ीमत और जलाली है।
और यह राज़ है क्या? यह कि मसीह आपमें है। वही आपमें है जिसके बाइस हम अल्लाह के जलाल में शरीक होने की
उम्मीद रखते हैं। 28 यों हम सबको मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं। हर मुमकिना हिकमत से हम उन्हें समझाते और तालीम
देते हैं ताकि हर एक को मसीह में कामिल हालत में अल्लाह के हुज़ूर पेश करें। 29 यही मक़सद पूरा करने के लिए मैं
सख़्त मेहनत करता हूँ। हाँ, मैं पूरी जिद्दो-जहद करके मसीह की उस क़ुव्वत का सहारा लेता हूँ जो बड़े ज़ोर से मेरे अंदर
काम कर रही है।

2

1 मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि मैं आपके लिए किस क़दर जाँफ़िशानी कर रहा हूँ—आपके लिए, लौदीकियावालों
के लिए और उन तमाम ईमानदारों के लिए भी जिनकी मेरे साथ मुलाक़ात नहीं हुई। 2 मेरी कोशिश यह है कि उनकी
दिली हौसलाअफ़्ज़ाई की जाए और वह मुहब्बत में एक हो जाएँ, कि उन्हें वह ठोस एतमाद हासिल हो जाए जो पूरी
समझ से पैदा होता है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वह अल्लाह का राज़ जान लें। राज़ क्या है? मसीह ख़ुद। 3 उसी में
हिकमत और इल्मो-इरफ़ान के तमाम ख़ज़ाने पोशीदा हैं।
4 ग़रज़ ख़बरदार रहें कि कोई आपको बज़ाहिर सहीह और मीठे मीठे अलफ़ाज़ से धोका न दे। 5 क्योंकि गो मैं
जिस्म के लिहाज़ से हाज़िर नहीं हूँ, लेकिन रूह में मैं आपके साथ हूँ। और मैं यह देखकर ख़ुश हूँ कि आप कितनी
मुनज़्ज़म ज़िंदगी गुज़ारते हैं, कि आपका मसीह पर ईमान कितना पुख़्ता है।

मसीह में ज़िंदगी

6 आपने ईसा मसीह को ख़ुदावंद के तौर पर क़बूल कर लिया है। अब उसमें ज़िंदगी गुज़ारें। 7 उसमें जड़ पकड़ें, उस
पर अपनी ज़िंदगी तामीर करें, उस ईमान में मज़बूत रहें जिसकी आपको तालीम दी गई है और शुक्रगुज़ारी से लबरेज़ हो
जाएँ।
8 मुहतात रहें कि कोई आपको फ़लसफ़ियाना और महज़ फ़रेब देनेवाली बातों से अपने जाल में न फँसा ले। ऐसी
बातों का सरचश्मा मसीह नहीं बल्कि इनसानी रिवायतें और इस दुनिया की क़ुव्वतें हैं। 9 क्योंकि मसीह में उलूहियत
की सारी मामूरी मुजस्सम होकर सुकूनत करती है। 10 और आपको जो मसीह में हैं उस की मामूरी में शरीक कर दिया
गया है। वही हर हुक्मरान और इख़्तियारवाले का सर है।
11 उसमें आते वक़्त आपका ख़तना भी करवाया गया। लेकिन यह ख़तना इनसानी हाथों से नहीं किया गया बल्कि
मसीह के वसीले से। उस वक़्त आपकी पुरानी फ़ितरत उतार दी गई, 12 आपको बपतिस्मा देकर मसीह के साथ दफ़नाया
गया और आपको ईमान से ज़िंदा कर दिया गया। क्योंकि आप अल्लाह की क़ुदरत पर ईमान लाए थे, उसी क़ुदरत
पर जिसने मसीह को मुरदों में से ज़िंदा कर दिया था। 13 पहले आप अपने गुनाहों और नामख़तून जिस्मानी हालत के
सबब से मुरदा थे, लेकिन अब अल्लाह ने आपको मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया है। उसने हमारे तमाम गुनाहों को
मुआफ़ कर दिया है। 14 हमारे क़र्ज़ की जो रसीद अपनी शरायत की बिना पर हमारे ख़िलाफ़ थी उसे उसने मनसूख़
कर दिया। हाँ, उसने हमसे दूर करके उसे कीलों से सलीब पर जड़ दिया। 15 उसने हुक्मरानों और इख़्तियारवालों से
उनका असला छीनकर सबके सामने उनकी रुसवाई की। हाँ, मसीह की सलीबी मौत से वह अल्लाह के क़ैदी बन गए
और उन्हें फ़तह के जुलूस में उसके पीछे पीछे चलना पड़ा।
16 चुनाँचे कोई आपको इस वजह से मुजरिम न ठहराए कि आप क्या क्या खाते-पीते या कौन कौन-सी ईदें मनाते
हैं। इसी तरह कोई आपकी अदालत न करे अगर आप हिलाल की ईद या सबत का दिन नहीं मनाते। 17 यह चीज़ें तो
सिर्फ़ आनेवाली हक़ीक़त का साया ही हैं जबकि यह हक़ीक़त ख़ुद मसीह में पाई जाती है। 18 ऐसे लोग आपको मुजरिम
न ठहराएँ जो ज़ाहिरी फ़रोतनी और फ़रिश्तों की पूजा पर इसरार करते हैं। बड़ी तफ़सील से अपनी रोयाओं में देखी हुई
बातें बयान करते करते उनके ग़ैररूहानी ज़हन ख़ाहमख़ाह फूल जाते हैं। 19 यों उन्होंने मसीह के साथ लगे रहना छोड़
दिया अगरचे वह बदन का सर है। वही जोड़ों और पट्ठों के ज़रीए पूरे बदन को सहारा देकर उसके मुख़्तलिफ़ हिस्सों
को जोड़ देता है। यों पूरा बदन अल्लाह की मदद से तरक़्क़ी करता जाता है।

मसीह के साथ मरना और ज़िंदगी गुज़ारना

20 आप तो मसीह के साथ मरकर दुनिया की क़ुव्वतों से आज़ाद हो गए हैं। अगर ऐसा है तो आप ज़िंदगी ऐसे
क्यों गुज़ारते हैं जैसे कि आप अभी तक इस दुनिया की मिलकियत हैं? आप क्यों इसके अहकाम के ताबे रहते हैं?
21 मसलन "इसे हाथ न लगाना, वह न चखना, यह न छूना।" 22 इन तमाम चीज़ों का मक़सद तो यह है कि इस्तेमाल

होकर ख़त्म हो जाएँ। यह सिर्फ़ इनसानी अहकाम और तालीमात हैं। 23 बेशक यह अहकाम जो घड़े हुए मज़हबी
फ़रायज़, नाम-निहाद फ़रोतनी और जिस्म के सख़्त दबाव का तक़ाज़ा करते हैं हिकमत पर मबनी तो लगते हैं, लेकिन
यह बेकार हैं और सिर्फ़ जिस्म ही की ख़ाहिशात पूरी करते हैं।

3

1 आपको मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया गया है, इसलिए वह कुछ तलाश करें जो आसमान पर है जहाँ मसीह
अल्लाह के दहने हाथ बैठा है। 2 दुनियावी चीज़ों को अपने ख़यालों का मरकज़ न बनाएँ बल्कि आसमानी चीज़ों को।
3 क्योंकि आप मर गए हैं और अब आपकी ज़िंदगी मसीह के साथ अल्लाह में पोशीदा है। 4 मसीह ही आपकी ज़िंदगी
है। जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो आप भी उसके साथ ज़ाहिर होकर उसके जलाल में शरीक हो जाएंगे।

पुरानी और नई ज़िंदगी

5 चुनाँचे उन दुनियावी चीज़ों को मार डालें जो आपके अंदर काम कर रही हैं : ज़िनाकारी, नापाकी, शहवतपरस्ती,
बुरी ख़ाहिशात और लालच (लालच तो एक क़िस्म की बुतपरस्ती है)। 6 अल्लाह का ग़ज़ब ऐसी ही बातों की वजह से
नाज़िल होगा। 7 एक वक़्त था जब आप भी इनके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते थे, जब आपकी ज़िंदगी इनके क़ाबू में थी।
8 लेकिन अब वक़्त आ गया है कि आप यह सब कुछ यानी ग़ुस्सा, तैश, बदसुलूकी, बुहतान और गंदी ज़बान
ख़स्ताहाल कपड़े की तरह उतारकर फेंक दें। 9 एक दूसरे से बात करते वक़्त झूट मत बोलना, क्योंकि आपने अपनी
पुरानी फ़ितरत उस की हरकतों समेत उतार दी है। 10 साथ साथ आपने नई फ़ितरत पहन ली है, वह फ़ितरत जिसकी
तजदीद हमारा ख़ालिक़ अपनी सूरत पर करता जा रहा है ताकि आप उसे और बेहतर तौर पर जान लें। 11 जहाँ यह
काम हो रहा है वहाँ लोगों में कोई फ़रक़ नहीं है, ख़ाह कोई ग़ैरयहूदी हो या यहूदी, मख़तून हो या नामख़तून, ग़ैरयूनानी
हो या स्कूती, * ग़ुलाम हो या आज़ाद। कोई फ़रक़ नहीं पड़ता, सिर्फ़ मसीह ही सब कुछ और सबमें है।
12 अल्लाह ने आपको चुनकर अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया है। वह आपसे मुहब्बत रखता है। इसलिए
अब तरस, नेकी, फ़रोतनी, नरमदिली और सब्र को पहन लें। 13 एक दूसरे को बरदाश्त करें, और अगर आपकी किसी
से शिकायत हो तो उसे मुआफ़ कर दें। हाँ, यों मुआफ़ करें जिस तरह ख़ुदावंद ने आपको मुआफ़ कर दिया है। 14 इनके
अलावा मुहब्बत भी पहन लें जो सब कुछ बाँधकर कामिलियत की तरफ़ ले जाती है। 15 मसीह की सलामती आपके
दिलों में हुकूमत करे। क्योंकि अल्लाह ने आपको इसी सलामती की ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बुलाकर एक बदन में
शामिल कर दिया है। शुक्रगुज़ार भी रहें। 16 आपकी ज़िंदगी में मसीह के कलाम की पूरी दौलत घर कर जाए। एक
दूसरे को हर तरह की हिकमत से तालीम देते और समझाते रहें। साथ साथ अपने दिलों में अल्लाह के लिए शुक्रगुज़ारी
के साथ ज़बूर, हम्दो-सना और रूहानी गीत गाते रहें। 17 और जो कुछ भी आप करें ख़ाह ज़बानी हो या अमली वह
ख़ुदावंद ईसा का नाम लेकर करें। हर काम में उसी के वसीले से ख़ुदा बाप का शुक्र करें।

नई ज़िंदगी में ताल्लुक़ात कैसे हूँ

18 बीवियो, अपने शौहर के ताबे रहें, क्योंकि जो ख़ुदावंद में है उसके लिए यही मुनासिब है।

19 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें। उनसे तलख़मिज़ाजी से पेश न आएँ।

20 बच्चो, हर बात में अपने माँ-बाप के ताबे रहें, क्योंकि यही ख़ुदावंद को पसंद है।

21 वालिदो, अपने बच्चों को मुश्तइल न करें, वरना वह बेदिल हो जाएंगे।

22 ग़ुलामो, हर बात में अपने दुनियावी मालिकों के ताबे रहें। न सिर्फ़ उनके सामने ही और उन्हें ख़ुश रखने के लिए
ख़िदमत करें बल्कि ख़ुलूसदिली और ख़ुदावंद का ख़ौफ़ मानकर काम करें। 23 जो कुछ भी आप करते हैं उसे पूरी लग्न
के साथ करें, इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़ इनसानों की बल्कि ख़ुदावंद की ख़िदमत कर रहे हूँ। 24 आप तो जानते हैं
कि ख़ुदावंद आपको इसके मुआवज़े में वह मीरास देगा जिसका वादा उसने किया है। हक़ीक़त में आप ख़ुदावंद मसीह
की ही ख़िदमत कर रहे हैं। 25 लेकिन जो ग़लत काम करे उसे अपनी ग़लतियों का मुआवज़ा भी मिलेगा। अल्लाह तो
किसी की भी जानिबदारी नहीं करता।

4

1 मालिको, अपने ग़ुलामों के साथ मुंसिफ़ाना और जायज़ सुलूक करें। आप तो जानते हैं कि आसमान पर आपका
भी मालिक है।

हिदायात

---

* **3:11** एक क़बीला जो ज़लील समझा जाता था।

2 दुआ में लगे रहें। और दुआ करते वक़्त शुक्रगुज़ारी के साथ जागते रहें। 3 साथ साथ हमारे लिए भी दुआ करें ताकि
अल्लाह हमारे लिए कलाम सुनाने का दरवाज़ा खोले और हम मसीह का राज़ पेश कर सकें। आख़िर मैं इसी राज़ की
वजह से क़ैद में हूँ। 4 दुआ करें कि मैं इसे यों पेश करूँ जिस तरह करना चाहिए, कि इसे साफ़ समझा जा सके।
5 जो अब तक ईमान न लाए हों उनके साथ दानिशमंदाना सुलूक करें। इस सिलसिले में हर मौक़े से फ़ायदा उठाएँ।
6 आपकी गुफ़्तगू हर वक़्त मेहरबान हो, ऐसी कि मज़ा आए और आप हर एक को मुनासिब जवाब दे सकें।

आख़िरी सलामो-दुआ

7 जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है हमारा अज़ीज़ भाई तुख़िकुस आपको सब कुछ बता देगा। वह एक वफ़ादार ख़ादिम और
ख़ुदावंद में हमख़िदमत रहा है। 8 मैंने उसे ख़ासकर इसलिए आपके पास भेज दिया ताकि आपको हमारा हाल मालूम हो
जाए और वह आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करे। 9 वह हमारे वफ़ादार और अज़ीज़ भाई उनेसिमुस के साथ आपके पास आ
रहा है, वही जो आपकी जमात से है। दोनों आपको वह सब कुछ सुना देंगे जो यहाँ हो रहा है।
10 अरिस्तरख़ुस जो मेरे साथ क़ैद में है आपको सलाम कहता है और इसी तरह बरनबास का कज़न * मरक़ुस भी।
(आपको उसके बारे में हिदायात दी गई हैं। जब वह आपके पास आए तो उसे ख़ुशआमदीद कहना।) 11 ईसा जो यूसतुस
कहलाता है भी आपको सलाम कहता है। उनमें से जो मेरे साथ अल्लाह की बादशाही में ख़िदमत कर रहे हैं सिर्फ़ यह
तीन मर्द यहूदी हैं। और यह मेरे लिए तसल्ली का बाइस रहे हैं।
12 मसीह ईसा का ख़ादिम इपफ़्रास भी जो आपकी जमात से है सलाम कहता है। वह हर वक़्त बड़ी जिद्दो-जहद के
साथ आपके लिए दुआ करता है। उस की ख़ास दुआ यह है कि आप मज़बूती के साथ खड़े रहें, कि आप बालिग़ मसीही
बनकर हर बात में अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ चलें। 13 मैं ख़ुद इसकी तसदीक़ कर सकता हूँ कि उसने आपके
लिए सख़्त मेहनत की है बल्कि लौदीकिया और हियरापुलिस की जमातों के लिए भी। 14 हमारे अज़ीज़ डाक्टर लूक़ा
और देमास आपको सलाम कहते हैं।
15 मेरा सलाम लौदीकिया की जमात को देना और इसी तरह नुंफ़ास को उस जमात समेत जो उसके घर में जमा होती
है। 16 यह पढ़ने के बाद ध्यान दें कि लौदीकिया की जमात में भी यह ख़त पढ़ा जाए और आप लौदीकिया का ख़त भी
पढ़ें। 17 अरख़िप्पुस को बता देना, ख़बरदार कि आप वह ख़िदमत तकमील तक पहुँचाएँ जो आपको ख़ुदावंद में सौंपी
गई है।
18 मैं अपने हाथ से यह अलफ़ाज़ लिख रहा हूँ। मेरी यानी पौलुस की तरफ़ से सलाम। मेरी ज़ंजीरें मत भूलना!
अल्लाह का फ़ज़ल आपके साथ होता रहे।

* **4:10** यूनानी लफ़्ज़ से ज़ाहिर नहीं होता कि मरक़ुस चचा, मामूँ, फूफी या ख़ाला का लडका है।

1 थिस्सलुनीकियों

1 यह ख़त पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की तरफ़ से है।
हम थिस्सलुनीकियों की जमात को लिख रहे हैं, उन्हें जो ख़ुदा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह पर ईमान लाए हैं।
अल्लाह आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शे।

थिस्सलुनीकियों की ज़िंदगी और ईमान

2 हम हर वक़्त आप सबके लिए ख़ुदा का शुक्र करते और अपनी दुआओं में आपको याद करते रहते हैं। 3 हमें
अपने ख़ुदा बाप के हुज़ूर ख़ासकर आपका अमल, मेहनत-मशक़्क़त और साबितक़दमी याद आती रहती है। आप अपना
ईमान कितनी अच्छी तरह अमल में लाए, आपने मुहब्बत की रूह में कितनी मेहनत-मशक़्क़त की और आपने कितनी
साबितक़दमी दिखाई, ऐसी साबितक़दमी जो सिर्फ़ हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह पर उम्मीद ही दिला सकती है। 4 भाइयो,
अल्लाह आपसे मुहब्बत रखता है, और हमें पूरा इल्म है कि उसने आपको वाक़ई चुन लिया है। 5 क्योंकि जब हमने
अल्लाह की ख़ुशख़बरी आप तक पहुँचाई तो न सिर्फ़ बातें करके बल्कि क़ुव्वत के साथ, रूहुल-क़ुदस में और पूरे
एतमाद के साथ। आप जानते हैं कि जब हम आपके पास थे तो हमने किस तरह की ज़िंदगी गुज़ारी। जो कुछ हमने किया
वह आपकी ख़ातिर किया। 6 उस वक़्त आप हमारे और ख़ुदावंद के नमूने पर चलने लगे। अगरचे आप बड़ी मुसीबत
में पड़ गए तो भी आपने हमारे पैग़ाम को उस ख़ुशी के साथ क़बूल किया जो सिर्फ़ रूहुल-क़ुद्स दे सकता है। 7 यों
आप सूबा मकिदुनिया और सूबा अख़या के तमाम ईमानदारों के लिए नमूना बन गए। 8 ख़ुदावंद के पैग़ाम की आवाज़
आपमें से निकलकर न सिर्फ़ मकिदुनिया और अख़या में सुनाई दी, बल्कि यह ख़बर कि आप अल्लाह पर ईमान रखते
हैं हर जगह तक पहुँच गई है। नतीजे में हमें कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रही, 9 क्योंकि लोग हर जगह बात कर रहे
हैं कि आपने हमें किस तरह ख़ुशआमदीद कहा है, कि आपने किस तरह बुतों से मुँह फेरकर अल्लाह की तरफ़ रुजू
किया ताकि ज़िंदा और हक़ीक़ी ख़ुदा की ख़िदमत करें। 10 लोग यह भी कह रहे हैं कि अब आप इस इंतज़ार में हैं कि
अल्लाह का फ़रज़ंद आसमान पर से आए यानी ईसा जिसे अल्लाह ने मुरदों में से ज़िंदा कर दिया और जो हमें आनेवाले
ग़ज़ब से बचाएगा।

2

थिस्सलुनीके में पौलुस का काम

1 भाइयो, आप जानते हैं कि हमारा आपके पास आना बेफ़ायदा न हुआ। 2 आप उस दुख से भी वाक़िफ़ हैं जो
हमें आपके पास आने से पहले सहना पड़ा, कि फ़िलिप्पी शहर में हमारे साथ कितनी बदसुलूकी हुई थी। तो भी हमने
अपने ख़ुदा की मदद से आपको उस की ख़ुशख़बरी सुनाने की जुर्रत की हालाँकि बहुत मुख़ालफ़त का सामना करना
पड़ा। 3 क्योंकि जब हम आपको उभारते हैं तो इसके पीछे न तो कोई ग़लत नीयत होती है, न कोई नापाक मक़सद या
चालाकी। 4 नहीं, अल्लाह ने ख़ुद हमें जाँचकर इस लायक़ समझा कि हम उस की ख़ुशख़बरी सुनाने की ज़िम्मादारी
सँभालें। इसी बिना पर हम बोलते हैं, इनसानों को ख़ुश रखने के लिए नहीं बल्कि अल्लाह को जो हमारे दिलों को
परखता है। 5 आपको भी मालूम है कि हमने न ख़ुशामद से काम लिया, न हम पसे-परदा लालची थे—अल्लाह हमारा
गवाह है! 6 हम इस मक़सद से काम नहीं कर रहे थे कि लोग हमारी इज़्ज़त करें, ख़ाह आप हों या दीगर लोग। 7 मसीह
के रसूलों की हैसियत से हम आपके लिए माली बोझ बन सकते थे, लेकिन हम आपके दरमियान होते हुए नरमदिल
रहे, ऐसी माँ की तरह जो अपने छोटे बच्चों की परवरिश करती है। 8 हमारी आपके लिए चाहत इतनी शदीद थी कि
हम आपको न सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशख़बरी की बरकत में शरीक करने को तैयार थे बल्कि अपनी ज़िंदगियों में भी।
हाँ, आप हमें इतने अज़ीज़ थे! 9 भाइयो, बेशक आपको याद है कि हमने कितनी सख़्त मेहनत-मशक़्क़त की। दिन-रात
हम काम करते रहे ताकि अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते वक़्त किसी पर बोझ न बनें।

10 आप और अल्लाह हमारे गवाह हैं कि आप ईमान लानेवालों के साथ हमारा सुलूक कितना मुक़द्दस, रास्त और
बेइलज़ाम था। 11 क्योंकि आप जानते हैं कि हमने आपमें से हर एक से ऐसा सुलूक किया जैसा बाप अपने बच्चों के
साथ करता है। 12 हम आपकी हौसलाअफ़ज़ाई करते, आपको तसल्ली देते और आपको समझाते रहे कि आप अल्लाह
के लायक़ ज़िंदगी गुज़ारें, क्योंकि वह आपको अपनी बादशाही और जलाल में हिस्सा लेने के लिए बुलाता है।

13 एक और वजह है कि हम हर वक़्त ख़ुदा का शुक्र करते हैं। जब हमने आप तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाया
तो आपने उसे सुनकर यों क़बूल किया जैसा यह हक़ीक़त में है यानी अल्लाह का कलाम जो इनसानों की तरफ़ से
नहीं है और जो आप ईमानदारों में काम कर रहा है। 14 भाइयो, न सिर्फ़ यह बल्कि आप यहूदिया में अल्लाह की उन
जमातों के नमूने पर चल पड़े जो मसीह ईसा में हैं। क्योंकि आपको अपने हमवतनों के हाथों वह कुछ सहना पड़ा जो
उन्हें पहले ही अपने हमवतन यहूदियों से सहना पड़ा था। 15 हाँ, यहूदियों ने न सिर्फ़ ख़ुदावंद ईसा और नबियों को
क़त्ल किया बल्कि हमें भी अपने बीच में से निकाल दिया। यह लोग अल्लाह को पसंद नहीं आते और तमाम लोगों
के ख़िलाफ़ होकर 16 हमें इससे रोकने की कोशिश करते हैं कि ग़ैरयहूदियों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाएँ, ऐसा न
हो कि वह नजात पाएँ। यों वह हर वक़्त अपने गुनाहों का प्याला किनारे तक भरते जा रहे हैं। लेकिन अल्लाह का पूरा
ग़ज़ब उन पर नाज़िल हो चुका है।

पौलुस की उनसे दुबारा मिलने की ख़ाहिश

17 भाइयो, जब हमें कुछ देर के लिए आपसे अलग कर दिया गया (गो हम दिल से आपके साथ रहे) तो हमने बड़ी
आरज़ू से आपसे मिलने की पूरी कोशिश की। 18 क्योंकि हम आपके पास आना चाहते थे। हाँ, मैं पौलुस ने बार बार
आने की कोशिश की, लेकिन इबलीस ने हमें रोक लिया। 19 आख़िर आप ही हमारी उम्मीद और ख़ुशी का बाइस हैं।
आप ही हमारा इनाम और हमारा ताज हैं जिस पर हम अपने ख़ुदावंद ईसा के हुज़ूर फ़ख़र करेंगे जब वह आएगा। 20 हाँ,
आप हमारा जलाल और ख़ुशी हैं।

3

1 आख़िरकार हम यह हालत मज़ीद बरदाश्त न कर सके। हमने फ़ैसला किया कि अकेले ही अथेने में रहकर
2 तीमुथियुस को भेज देंगे जो हमारा भाई और मसीह की ख़ुशख़बरी फैलाने में हमारे साथ अल्लाह की ख़िदमत करता
है। हमने उसे भेज दिया ताकि वह आपको मज़बूत करे और ईमान में आपकी हौसलाअफ़ज़ाई करे 3 ताकि कोई इन
मुसीबतों से बेचैन न हो जाए। क्योंकि आप ख़ुद जानते हैं कि इनका सामना करना हमारे लिए अल्लाह की मरज़ी है।
4 बल्कि जब हम आपके पास थे तो हमने इसकी पेशगोई की कि हमें मुसीबत बरदाश्त करनी पड़ेगी। और ऐसा ही
हुआ जैसा कि आप ख़ूब जानते हैं। 5 यही वजह थी कि मैंने तीमुथियुस को भेज दिया। मैं यह हालात बरदाश्त न कर
सका, इसलिए मैंने उसे आपके ईमान को मालूम करने के लिए भेज दिया। ऐसा न हो कि आज़मानेवाले ने आपको यों
आज़माइश में डाल दिया हो कि हमारी आप पर मेहनत ज़ाया जाए।

6 लेकिन अब तीमुथियुस लौट आया है, और वह आपके ईमान और मुहब्बत के बारे में अच्छी ख़बर लेकर आया
है। उसने हमें बताया कि आप हमें बहुत याद करते हैं और हमसे उतना ही मिलने के आरज़ूमंद हैं जितना कि हम आप
से। 7 भाइयो, आप और आपके ईमान के बारे में यह सुनकर हमारी हौसलाअफ़ज़ाई हुई, हालाँकि हम ख़ुद तरह तरह के
दबाव और मुसीबतों में फँसे हुए हैं। 8 अब हमारी जान में जान आ गई है, क्योंकि आप मज़बूती से ख़ुदावंद में क़ायम
हैं। 9 हम आपकी वजह से अल्लाह के कितने शुक्रगुज़ार हैं! यह ख़ुशी नाक़ाबिले-बयान है जो हम आपकी वजह से
अल्लाह के हुज़ूर महसूस करते हैं। 10 दिन-रात हम बड़ी संजीदगी से दुआ करते रहते हैं कि आपसे दुबारा मिलकर वह
कमियाँ पूरी करें जो आपके ईमान में अब तक रह गई हैं।

11 अब हमारा ख़ुदा और बाप ख़ुद और हमारा ख़ुदावंद ईसा रास्ता खोले ताकि हम आप तक पहुँच सकें। 12 ख़ुदावंद
करे कि आपकी एक दूसरे और दीगर तमाम लोगों से मुहब्बत इतनी बढ़ जाए कि वह यों दिल से छलक उठे जिस तरह
आपके लिए हमारी मुहब्बत भी छलक रही है। 13 क्योंकि इस तरह अल्लाह आपके दिलों को मज़बूत करेगा और
आप उस वक़्त हमारे ख़ुदा और बाप के हुज़ूर बेइलज़ाम और मुक़द्दस साबित होंगे जब हमारा ख़ुदावंद ईसा अपने तमाम
मुक़द्दसीन के साथ आएगा। आमीन।

4

अल्लाह को पसंदीदा ज़िंदगी

1 भाइयो, एक आख़िरी बात, आपने हमसे सीख लिया था कि हमारी ज़िंदगी किस तरह होनी चाहिए ताकि वह
अल्लाह को पसंद आए। और आप इसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते भी हैं। अब हम ख़ुदावंद ईसा में आपसे दरख़ास्त
और आपकी हौसलाअफ़ज़ाई करते हैं कि आप इसमें मज़ीद तरक़्क़ी करते जाएँ। 2 आप तो उन हिदायात से वाक़िफ़ हैं जो
हमने आपको ख़ुदावंद ईसा के वसीले से दी थीं। 3 क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि आप उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस
हों, कि आप ज़िनाकारी से बाज़ रहें। 4 हर एक अपने बदन पर यों क़ाबू पाना सीख ले कि वह मुक़द्दस और शरीफ़
ज़िंदगी गुज़ार सके। 5 वह ग़ैरईमानदारों की तरह जो अल्लाह से नावाक़िफ़ हैं शहवतपरस्ती का शिकार न हो। 6 इस

मामले में कोई अपने भाई का गुनाह न करे, न उससे ग़लत फ़ायदा उठाए। ख़ुदावंद ऐसे गुनाहों की सज़ा देता है। हम
यह सब कुछ बता चुके और आपको आगाह कर चुके हैं। 7 क्योंकि अल्लाह ने हमें नापाक ज़िंदगी गुज़ारने के लिए
नहीं बुलाया बल्कि मख़सूसो-मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारने के लिए। 8 इसलिए जो यह हिदायात रद्द करता है वह इनसान को
नहीं बल्कि अल्लाह को रद्द करता है जो आपको अपना मुक़द्दस रूह दे देता है।

9 यह लिखने की ज़रूरत नहीं कि आप दूसरे ईमानदारों से मुहब्बत रखें। अल्लाह ने ख़ुद आपको एक दूसरे से
मुहब्बत रखना सिखाया है। 10 और हक़ीक़तन आप मकिदुनिया के तमाम भाइयों से ऐसी ही मुहब्बत रखते हैं। तो
भी भाइयो, हम आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करना चाहते हैं कि आप इसमें मज़ीद तरक़्क़ी करते जाएँ। 11 अपनी इज़्ज़त
इसमें बरक़रार रखें कि आप सुकून से ज़िंदगी गुज़ारें, अपने फ़रायज़ अदा करें और अपने हाथों से काम करें, जिस तरह
हमने आपको कह दिया था। 12 जब आप ऐसा करेंगे तो ग़ैरईमानदार आपकी क़दर करेंगे और आप किसी भी चीज़ के
मुहताज नहीं रहेंगे।

ख़ुदावंद की आमद

13 भाइयो, हम चाहते हैं कि आप उनके बारे में हक़ीक़त जान लें जो सो गए हैं ताकि आप दूसरों की तरह जिनकी
कोई उम्मीद नहीं मातम न करें। 14 हमारा ईमान है कि ईसा मर गया और दुबारा जी उठा, इसलिए हमारा यह भी ईमान
है कि जब ईसा वापस आएगा तो अल्लाह उसके साथ उन ईमानदारों को भी वापस लाएगा जो मौत की नींद सो गए हैं।

15 जो कुछ हम अब आपको बता रहे हैं वह ख़ुदावंद की तालीम है। ख़ुदावंद की आमद पर हम जो ज़िंदा होंगे सोए
हुए लोगों से पहले ख़ुदावंद से नहीं मिलेंगे। 16 उस वक़्त ऊँची आवाज़ से हुक्म दिया जाएगा, फ़रिश्ताए-आज़म की
आवाज़ सुनाई देगी, अल्लाह का तुरम बजेगा और ख़ुदावंद ख़ुद आसमान पर से उतर आएगा। तब पहले वह जी उठेंगे
जो मसीह में मर गए थे। 17 इनके बाद ही हमें जो ज़िंदा होंगे बादलों पर उठा लिया जाएगा ताकि हवा में ख़ुदावंद से
मिलें। फिर हम हमेशा ख़ुदावंद के साथ रहेंगे। 18 चुनाँचे इन अलफ़ाज़ से एक दूसरे को तसल्ली दिया करें।

5

ख़ुदावंद की आमद के लिए तैयार रहना

1 भाइयो, इसकी ज़रूरत नहीं कि हम आपको लिखें कि यह सब कुछ कब और किस मौक़े पर होगा। 2 क्योंकि
आप ख़ुद ख़ूब जानते हैं कि ख़ुदावंद का दिन यों आएगा जिस तरह चोर रात के वक़्त घर में घुस आता है। 3 जब लोग
कहेंगे, "अब अमनो-अमान है," तो हलाकत अचानक ही उन पर आन पड़ेगी। वह इस तरह मुसीबत में पड़ जाएंगे
जिस तरह वह औरत जिसका बच्चा पैदा हो रहा है। वह हरगिज़ नहीं बच सकेंगे। 4 लेकिन आप भाइयो तारीकी की
गिरिफ़्त में नहीं हैं, इसलिए यह दिन चोर की तरह आप पर ग़ालिब नहीं आना चाहिए। 5 क्योंकि आप सब रौशनी
और दिन के फ़रज़ंद हैं। हमारा रात या तारीकी से कोई वास्ता नहीं। 6 ग़रज़ आएँ, हम दूसरों की मानिंद न हों जो सोए
हुए हैं बल्कि जागते रहें, होशमंद रहें। 7 क्योंकि रात के वक़्त ही लोग सो जाते हैं, रात के वक़्त ही लोग नशे में धुत
हो जाते हैं। 8 लेकिन चूँकि हम दिन के हैं इसलिए आएँ हम होश में रहें। लाज़िम है कि हम ईमान और मुहब्बत को
ज़िरा-बकतर के तौर पर और नजात की उम्मीद को ख़ोद के तौर पर पहन लें। 9 क्योंकि अल्लाह ने हमें इसलिए नहीं
चुना कि हम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करे बल्कि इसलिए कि हम अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से नजात पाएँ।
10 उसने हमारी ख़ातिर अपनी जान दे दी ताकि हम उसके साथ जिएँ, ख़ाह हम उस की आमद के दिन मुरदा हों या
ज़िंदा। 11 इसलिए एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई और तामीर करते रहें, जैसा कि आप कर भी रहे हैं।

आख़िरी हिदायात और सलाम

12 भाइयो, हमारी दरख़ास्त है कि आप उनकी क़दर करें जो आपके दरमियान सख़्त मेहनत करके ख़ुदावंद में आपकी
राहनुमाई और हिदायत करते हैं। 13 उनकी ख़िदमत को सामने रखकर प्यार से उनकी बड़ी इज़्ज़त करें। और एक दूसरे
के साथ मेल-मिलाप से ज़िंदगी गुज़ारें।

14 भाइयो, हम इस पर ज़ोर देना चाहते हैं कि उन्हें समझाएँ जो बेक़ायदा ज़िंदगी गुज़ारते हैं, उन्हें तसल्ली दें जो
जल्दी से मायूस हो जाते हैं, कमज़ोरों का ख़याल रखें और सबको सब्र से बरदाश्त करें। 15 इस पर ध्यान दें कि कोई
किसी से बुराई के बदले बुराई न करे बल्कि आप हर वक़्त एक दूसरे और तमाम लोगों के साथ नेक काम करने में लगे
रहें।

16 हर वक़्त ख़ुश रहें, 17 बिलानाग़ा दुआ करें, 18 और हर हालत में ख़ुदा का शुक्र करें। क्योंकि जब आप मसीह
में हैं तो अल्लाह यही कुछ आपसे चाहता है।

19 रूहुल-क़ुद्स को मत बुझाएँ। 20 नबुव्वतों की तहक़ीर न करें। 21 सब कुछ परखकर वह थामे रखें जो अच्छा
है, 22 और हर क़िस्म की बुराई से बाज़ रहें।

23 अल्लाह ख़ुद जो सलामती का ख़ुदा है आपको पूरे तौर पर मख़सूसो-मुक़द्दस करे। वह करे कि आप पूरे तौर पर
रूह, जान और बदन समेत उस वक़्त तक महफ़ूज़ और बेइलज़ाम रहें जब तक हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह वापस नहीं
आ जाता। 24 जो आपको बुलाता है वह वफ़ादार है और वह ऐसा करेगा भी।

25 भाइयो, हमारे लिए दुआ करें।

26 तमाम भाइयों को हमारी तरफ़ से बोसा देना।

27 ख़ुदावंद के हुज़ूर मैं आपको ताकीद करता हूँ कि यह ख़त तमाम भाइयों के सामने पढ़ा जाए।

28 हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आपके साथ होता रहे।

2 थिस्सलुनीकियों

1 यह ख़त पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की तरफ़ से है।
हम थिस्सलुनीकियों की जमात को लिख रहे हैं, उन्हें जो अल्लाह हमारे बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह पर ईमान
लाए हैं।
2 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शें।

मसीह की आमद पर अदालत

3 भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करें। हाँ, यह मौज़ूँ है, क्योंकि आपका ईमान
हैरतअंगेज़ तरक़्क़ी कर रहा है और आप सबकी एक दूसरे से मुहब्बत बढ़ रही है। 4 यही वजह है कि हम अल्लाह की
दीगर जमातों में आप पर फ़ख़र करते हैं। हाँ, हम फ़ख़र करते हैं कि आप इन दिनों में कितनी साबितक़दमी और ईमान
दिखा रहे हैं हालाँकि आप बहुत ईज़ारसानियाँ और मुसीबतें बरदाश्त कर रहे हैं।
5 यह सब कुछ साबित करता है कि अल्लाह की अदालत रास्त है, और नतीजे में आप उस की बादशाही के लायक़
ठहरेंगे, जिसके लिए आप अब दुख उठा रहे हैं। 6 अल्लाह वही कुछ करेगा जो रास्त है। वह उन्हें मुसीबतों में डाल
देगा जो आपको मुसीबत में डाल रहे हैं, 7 और आपको जो मुसीबत में हैं हमारे समेत आराम देगा। वह यह उस वक़्त
करेगा जब ख़ुदावंद ईसा अपने क़वी फ़रिश्तों के साथ आसमान पर से आकर ज़ाहिर होगा 8 और भड़कती हुई आग
में उन्हें सज़ा देगा जो न अल्लाह को जानते हैं, न हमारे ख़ुदावंद ईसा की ख़ुशख़बरी के ताबे हैं। 9 ऐसे लोग अबदी
हलाकत की सज़ा पाएँगे, वह हमेशा तक ख़ुदावंद की हुज़ूरी और उस की जलाली क़ुदरत से दूर हो जाएंगे। 10 लेकिन
उस दिन ख़ुदावंद इसलिए भी आएगा कि अपने मुक़द्दसीन में जलाल पाए और तमाम ईमानदारों में हैरत का बाइस हो।
आप भी उनमें शामिल होंगे, क्योंकि आप उस पर ईमान लाए जिसकी गवाही हमने आपको दी।
11 यह पेशे-नज़र रखकर हम लगातार आपके लिए दुआ करते हैं। हमारा ख़ुदा आपको उस बुलावे के लायक़ ठहराए
जिसके लिए आपको बुलाया गया है। और वह अपनी क़ुदरत से आपकी नेकी करने की हर ख़ाहिश और आपके ईमान
का हर काम तकमील तक पहुँचाए। 12 क्योंकि इस तरह ही हमारे ख़ुदावंद ईसा का नाम आपमें जलाल पाएगा और
आप भी उसमें जलाल पाएँगे, उस फ़ज़ल के मुताबिक़ जो हमारे ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह ने आपको दिया है।

2

बेदीनी का आदमी

1 भाइयो, यह सवाल उठा है कि हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की आमद कैसी होगी? हम किस तरह उसके साथ जमा
हो जाएंगे? इस नाते से हमारी आपसे दरख़ास्त है 2 कि जब लोग कहते हैं कि ख़ुदावंद का दिन आ चुका है तो आप
जल्दी से बेचैन या परेशान न हो जाएँ। उनकी बात न मानें, चाहे वह यह दावा भी करें कि उनके पास हमारी तरफ़ से
कोई नबुव्वत, पैग़ाम या ख़त है। 3 कोई भी आपको किसी भी चाल से फ़रेब न दे, क्योंकि यह दिन उस वक़्त तक
नहीं आएगा जब तक आख़िरी बग़ावत पेश न आए और "बेदीनी का आदमी" ज़ाहिर न हो जाए, वह जिसका अंजाम
हलाकत होगा। 4 वह हर एक की मुख़ालफ़त करेगा जो ख़ुदा और माबूद कहलाता है और अपने आपको उन सबसे
बड़ा ठहराएगा। हाँ, वह अल्लाह के घर में बैठकर एलान करेगा, "मैं अल्लाह हूँ।"
5 क्या आपको याद नहीं कि मैं आपको यह बताता रहा जब अभी आपके पास था? 6 और अब आप जानते हैं कि
क्या कुछ उसे रोक रहा है ताकि वह अपने मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर हो जाए। 7 क्योंकि यह पुरअसरार बेदीनी अब भी
असर कर रही है। लेकिन यह उस वक़्त तक ज़ाहिर नहीं होगी जब तक वह शख़्स हट न जाए जो अब तक उसे रोक
रहा है। 8 फिर ही "बेदीनी का आदमी" ज़ाहिर होगा। लेकिन जब ख़ुदावंद ईसा आएगा तो वह उसे अपने मुँह की फूँक
से मार डालेगा, ज़ाहिर होने पर ही वह उसे हलाक कर देगा। 9 "बेदीनी के आदमी" में इबलीस काम करेगा। जब वह
आएगा तो हर क़िस्म की ताक़त का इज़्हार करेगा। वह झूटे निशान और मोजिज़े पेश करेगा। 10 यों वह उन्हें हर तरह
के शरीर फ़रेब में फँसाएगा जो हलाक होनेवाले हैं। लोग इसलिए हलाक हो जाएंगे कि उन्होंने सच्चाई से मुहब्बत करने
से इनकार किया, वरना वह बच जाते। 11 इस वजह से अल्लाह उन्हें बुरी तरह से फ़रेब में फँसने देता है ताकि वह इस
झूट पर ईमान लाएँ। 12 नतीजे में सब जो सच्चाई पर ईमान न लाए बल्कि नारास्ती से लुत्फ़अंदोज़ हुए मुजरिम ठहरेंगे।

आपको नजात के लिए चुन लिया गया है

13 मेरे भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करें जिन्हें ख़ुदावंद प्यार करता है। क्योंकि
अल्लाह ने आपको शुरू ही से नजात पाने के लिए चुन लिया, ऐसी नजात के लिए जो रूहुल-क़ुद्स से पाकीज़गी पाकर
सच्चाई पर ईमान लाने से हासिल होती है। 14 अल्लाह ने आपको उस वक़्त यह नजात पाने के लिए बुला लिया जब
हमने आपको उस की ख़ुशख़बरी सुनाई। और अब आप हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के जलाल में शरीक हो सकते हैं।
15 भाइयो, इसलिए साबितक़दम रहें और उन रिवायात को थामे रखें जो हमने आपको सिखाई हैं, ख़ाह ज़बानी या ख़त
के ज़रीए।

16 हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह ख़ुद और ख़ुदा हमारा बाप जिसने हमसे मुहब्बत रखी और अपने फ़ज़ल से हमें अबदी
तसल्ली और ठोस उम्मीद बख़्शी 17 आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई करे और यों मज़बूत करे कि आप हमेशा वह कुछ बोलें
और करें जो अच्छा है।

3

हमारे लिए दुआ करना

1 भाइयो, एक आख़िरी बात, हमारे लिए दुआ करें कि ख़ुदावंद का पैग़ाम जल्दी से फैल जाए और इज़्ज़त पाए,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह आपके दरमियान हुआ। 2 इसके लिए भी दुआ करें कि अल्लाह हमें ग़लत और शरीर
लोगों से बचाए रखे, क्योंकि सब तो ईमान नहीं रखते।

3 लेकिन ख़ुदावंद वफ़ादार है, और वही आपको मज़बूत करके इबलीस से महफ़ूज़ रखेगा। 4 हम ख़ुदावंद में आप
पर एतमाद रखते हैं कि आप वह कुछ कर रहे हैं बल्कि करते रहेंगे जो हमने आपको करने को कहा था।

5 ख़ुदावंद आपके दिलों को अल्लाह की मुहब्बत और मसीह की साबितक़दमी की तरफ़ मायल करता रहे।

काम करने का फ़र्ज़

6 भाइयो, अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम में हम आपको हुक्म देते हैं कि हर उस भाई से किनारा करें जो बेक़ायदा
चलता और जो हमसे पाई हुई रिवायत के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारता। 7 आप ख़ुद जानते हैं कि आपको किस तरह
हमारे नमूने पर चलना चाहिए। जब हम आपके पास थे तो हमारी ज़िंदगी में बेतरतीबी नहीं पाई जाती थी। 8 हमने
किसी का खाना भी पैसे दिए बग़ैर न खाया, बल्कि दिन-रात सख़्त मेहनत-मशक़्क़त करते रहे ताकि आपमें से किसी के
लिए बोझ न बनें। 9 बात यह नहीं कि हमें आपसे मुआवज़ा मिलने का हक़ नहीं था। नहीं, हमने ऐसा किया ताकि हम
आपके लिए अच्छा नमूना बनें और आप इस नमूने पर चलें। 10 जब हम अभी आपके पास थे तो हमने आपको हुक्म
दिया, "जो काम नहीं करना चाहता वह खाना भी न खाए।"

11 अब हमें यह ख़बर मिली है कि आपमें से बाज़ बेक़ायदा ज़िंदगी गुज़ारते हैं। वह काम नहीं करते बल्कि दूसरों
के कामों में ख़ाहमख़ाह दख़ल देते हैं। 12 ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम में हम ऐसे लोगों को हुक्म देते और समझाते हैं
कि आराम से काम करके अपनी रोज़ी कमाएँ।

13 भाइयो, आप भलाई करने से कभी हिम्मत न हारें। 14 अगर कोई इस ख़त में दर्ज हमारी हिदायत पर अमल
न करे तो उससे ताल्लुक़ न रखना ताकि उसे शर्म आए। 15 लेकिन उसे दुश्मन मत समझना बल्कि उसे भाई जानकर
समझाना।

आख़िरी अलफ़ाज़

16 ख़ुदावंद ख़ुद जो सलामती का सरचश्मा है आपको हर वक़्त और हर तरह से सलामती बख़्शे। ख़ुदावंद आप
सबके साथ हो।

17 मैं, पौलुस अपने हाथ से यह लिख रहा हूँ। मेरी तरफ़ से सलाम। मैं इसी तरीक़े से अपने हर ख़त पर दस्तख़त
करता और इसी तरह लिखता हूँ।

18 हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

1 तीमुथियुस

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो हमारे नजातदहिंदा अल्लाह और हमारी उम्मीद मसीह ईसा के हुक्म पर मसीह
ईसा का रसूल है।
2 मैं तीमुथियुस को लिख रहा हूँ जो ईमान में मेरा सच्चा बेटा है।
ख़ुदा बाप और हमारा ख़ुदावंद मसीह ईसा आपको फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करें।

ग़लत तालीम से ख़बरदार

3 मैंने आपको मकिदुनिया जाते वक़्त नसीहत की थी कि इफ़िसुस में रहें ताकि आप वहाँ के कुछ लोगों को ग़लत
तालीम देने से रोकें। 4 उन्हें फ़रज़ी कहानियों और ख़त्म न होनेवाले नसबनामे के पीछे न लगने दें। इनसे महज़ बहस-
मुबाहसा पैदा होता है और अल्लाह का नजातबख़्श मनसूबा पूरा नहीं होता। क्योंकि यह मनसूबा सिर्फ़ ईमान से तकमील
तक पहुँचता है। 5 मेरी इस हिदायत का मक़सद यह है कि मुहब्बत उभर आए, ऐसी मुहब्बत जो ख़ालिस दिल, साफ़
ज़मीर और बेरिया ईमान से पैदा होती है। 6 कुछ लोग इन चीज़ों से भटककर बेमानी बातों में गुम हो गए हैं। 7 यह
शरीअत के उस्ताद बनना चाहते हैं, लेकिन उन्हें उन बातों की समझ नहीं आती जो वह कर रहे हैं और जिन पर वह
इतने एतमाद से इसरार कर रहे हैं।
8 लेकिन हम तो जानते हैं कि शरीअत अच्छी है बशर्तेकि इसे सहीह तौर पर इस्तेमाल किया जाए। 9 और याद रहे
कि यह रास्तबाज़ों के लिए नहीं दी गई। क्योंकि यह उनके लिए है जो बग़ैर शरीअत के और सरकश ज़िंदगी गुज़ारते
हैं, जो बेदीन और गुनाहगार हैं, जो मुक़द्दस और रूहानी बातों से ख़ाली हैं, जो अपने माँ-बाप के क़ातिल हैं, जो ख़ूनी,
10 ज़िनाकार, हमजिंसपरस्त और ग़ुलामों के ताजिर हैं, जो झूट बोलते, झूटी क़सम खाते और मज़ीद बहुत कुछ करते
हैं जो सेहतबख़्श तालीम के ख़िलाफ़ है। 11 और सेहतबख़्श तालीम क्या है? वह जो मुबारक ख़ुदा की उस जलाली
ख़ुशख़बरी में पाई जाती है जो मेरे सुपुर्द की गई है।

अल्लाह के रहम के लिए शुक्रगुज़ारी

12 मैं अपने ख़ुदावंद मसीह ईसा का शुक्र करता हूँ जिसने मेरी तक़वियत की है। मैं उसका शुक्र करता हूँ कि उसने
मुझे वफ़ादार समझकर ख़िदमत के लिए मुक़र्रर किया। 13 गो मैं पहले कुफ़र बकनेवाला और गुस्ताख़ आदमी था,
जो लोगों को ईज़ा देता था, लेकिन अल्लाह ने मुझ पर रहम किया। क्योंकि उस वक़्त मैं ईमान नहीं लाया था और
इसलिए नहीं जानता था कि क्या कर रहा हूँ। 14 हाँ, हमारे ख़ुदावंद ने मुझ पर अपना फ़ज़ल कसरत से उंडेल दिया
और मुझे वह ईमान और मुहब्बत अता की जो हमें मसीह ईसा में होते हुए मिलती है। 15 हम इस क़ाबिले-क़बूल बात
पर पूरा भरोसा रख सकते हैं कि मसीह ईसा गुनाहगारों को नजात देने के लिए इस दुनिया में आया। उनमें से मैं सबसे
बड़ा गुनाहगार हूँ, 16 लेकिन यही वजह है कि अल्लाह ने मुझ पर रहम किया। क्योंकि वह चाहता था कि मसीह ईसा
मुझमें जो अव्वल गुनाहगार हूँ अपना वसी सब्र ज़ाहिर करे और मैं यों उनके लिए नमूना बन जाऊँ जो उस पर ईमान
लाकर अबदी ज़िंदगी पानेवाले हैं। 17 हाँ, हमारे अज़लीओ-अबदी शहनशाह की हमेशा तक इज़्ज़तो-जलाल हो! वही
लाफ़ानी, अनदेखा और वाहिद ख़ुदा है। आमीन।
18 तीमुथियुस मेरे बेटे, मैं आपको यह हिदायत उन पेशगोइयों के मुताबिक़ देता हूँ जो पहले आपके बारे में की गई
थीं। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप इनकी पैरवी करके अच्छी तरह लड़ सकें 19 और ईमान और साफ़ ज़मीर के
साथ ज़िंदगी गुज़ार सकें। क्योंकि बाज़ ने यह बातें रद्द कर दी हैं और नतीजे में उनके ईमान का बेड़ा ग़रक़ हो गया।
20 हुमिनयुस और सिकंदर भी इनमें शामिल हैं। अब मैंने इन्हें इबलीस के हवाले कर दिया है ताकि वह कुफ़र बकने से
बाज़ आना सीखें।

2

जमात की परस्तिश

1 पहले मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप सबके लिए दरख़ास्तें, दुआएँ, सिफारिशें और शुक्रगुज़ारियाँ पेश
करें, 2 बादशाहों और इख़्तियारवालों के लिए भी ताकि हम आराम और सुकून से ख़ुदातरस और शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ार
सकें। 3 यह अच्छा और हमारे नजातदहिंदा अल्लाह को पसंदीदा है। 4 हाँ, वह चाहता है कि तमाम इनसान नजात
पाकर सच्चाई को जान लें। 5 क्योंकि एक ही ख़ुदा है और अल्लाह और इनसान के बीच में एक ही दरमियानी है

यानी मसीह ईसा, वह इनसान 6 जिसने अपने आपको फ़िद्या के तौर पर सबके लिए दे दिया ताकि वह मख़लसी पाएँ।
यों उसने मुक़र्ररा वक़्त पर गवाही दी 7 और यह गवाही सुनाने के लिए मुझे मुनाद, रसूल और ग़ैरयहूदियों का उस्ताद
मुक़र्रर किया ताकि उन्हें ईमान और सच्चाई का पैग़ाम सुनाऊँ। मैं झूट नहीं बोल रहा बल्कि सच कह रहा हूँ।
8 अब मैं चाहता हूँ कि हर मक़ामी जमात के मर्द मुक़द्दस हाथ उठाकर दुआ करें। वह ग़ुस्से या बहस-मुबाहसा की
हालत में ऐसा न करें। 9 इसी तरह मैं चाहता हूँ कि ख़वातीन मुनासिब कपड़े पहनकर शराफ़त और शायस्तगी से अपने
आपको आरास्ता करें। वह गुंधे हुए बाल, सोना, मोती या हद से ज़्यादा महँगे कपड़ों से अपने आपको आरास्ता न
करें 10 बल्कि नेक कामों से। क्योंकि यही ऐसी ख़वातीन के लिए मुनासिब है जो ख़ुदातरस होने का दावा करती हैं।
11 ख़ातून ख़ामोशी से और पूरी फ़रमाँबरदारी के साथ सीखे। 12 मैं ख़वातीन को तालीम देने या आदमियों पर हुकूमत
करने की इजाज़त नहीं देता। वह ख़ामोश रहें। 13 क्योंकि पहले आदम को तश्कील दिया गया, फिर हव्वा को। 14 और
आदम ने इबलीस से धोका न खाया बल्कि हव्वा ने, जिसका नतीजा गुनाह था। 15 लेकिन ख़वातीन बच्चे जन्म देने से
नजात पाएँगी। शर्त यह है कि वह समझ के साथ ईमान, मुहब्बत और मुक़द्दस हालत में ज़िंदगी गुज़ारती रहें।

3

ख़ुदा की जमात के निगरान

1 यह बात यक़ीनी है कि जो जमात का निगरान बनना चाहता है वह एक अच्छी ज़िम्मादारी की आरज़ू रखता है।
2 लाज़िम है कि निगरान बेइलज़ाम हो। उस की एक ही बीवी हो। वह होशमंद, समझदार, * शरीफ़, मेहमान-नवाज़
और तालीम देने के क़ाबिल हो। 3 वह शराबी न हो, न लड़ाका बल्कि नरमदिल और अमनपसंद। वह पैसों का लालच
करनेवाला न हो। 4 लाज़िम है कि वह अपने ख़ानदान को अच्छी तरह सँभाल सके और कि उसके बच्चे शराफ़त के
साथ उस की बात मानें। 5 क्योंकि अगर वह अपना ख़ानदान न सँभाल सके तो वह किस तरह अल्लाह की जमात की
देख-भाल कर सकेगा? 6 वह नौमुरीद न हो वरना ख़तरा है कि वह फूलकर इबलीस के जाल में उलझ जाए और यों
उस की अदालत की जाए। 7 लाज़िम है कि जमात से बाहर के लोग उस की अच्छी गवाही दे सकें, ऐसा न हो कि वह
बदनाम होकर इबलीस के फंदे में फँस जाए।

जमात के मददगार

8 इसी तरह जमात के मददगार भी शरीफ़ हों। वह रियाकार न हों, न हद से ज़्यादा मै पिएँ। वह लालची भी न हों।
9 लाज़िम है कि वह साफ़ ज़मीर रखकर ईमान की पुरअसरार सच्चाइयाँ महफ़ूज़ रखें। 10 यह भी ज़रूरी है कि उन्हें
पहले परखा जाए। अगर वह इसके बाद बेइलज़ाम निकलें तो फिर वह ख़िदमत करें। 11 उनकी बीवियाँ भी शरीफ़ हों।
वह बुहतान लगानेवाली न हों बल्कि होशमंद और हर बात में वफ़ादार। 12 मददगार की एक ही बीवी हो। लाज़िम है कि
वह अपने बच्चों और ख़ानदान को अच्छी तरह सँभाल सके। 13 जो मददगार अच्छी तरह अपनी ख़िदमत सँभालते
हैं उनकी हैसियत बढ़ जाएगी और मसीह ईसा पर उनका ईमान इतना पुख़्ता हो जाएगा कि वह बड़े एतमाद के साथ
ज़िंदगी गुज़ार सकेंगे।

एक अज़ीम भेद

14 अगरचे मैं जल्द आपके पास आने की उम्मीद रखता हूँ तो भी आपको यह ख़त लिख रहा हूँ। 15 लेकिन अगर
देर भी लगे तो यह पढ़कर आपको मालूम होगा कि अल्लाह के घराने में हमारा बरताव कैसा होना चाहिए। अल्लाह का
घराना क्या है? ज़िंदा ख़ुदा की जमात, जो सच्चाई का सतून और बुनियाद है। 16 यक़ीनन हमारे ईमान का भेद अज़ीम
है।

वह जिस्म में ज़ाहिर हुआ,
रूह में रास्तबाज़ ठहरा
और फ़रिश्तों को दिखाई दिया।
उस की ग़ैरयहूदियों में मुनादी की गई,
उस पर दुनिया में ईमान लाया गया
और उसे आसमान के जलाल में उठा लिया गया।

4

झूटे उस्ताद

* **3:2** यूनानी लफ़्ज़ में ज़ब्ते-नफ़स का उनसुर भी पाया जाता है।

1 रूहुल-क़ुद्स साफ़ फ़रमाता है कि आख़िरी दिनों में कुछ ईमान से हटकर फ़रेबदेह रूहों और शैतानी तालीमात
की पैरवी करेंगे। 2 ऐसी तालीमात झूट बोलनेवालों की रियाकार बातों से आती हैं, जिनके ज़मीर पर इबलीस ने अपना
निशान लगाकर ज़ाहिर कर दिया है कि यह उसके अपने हैं। 3 यह शादी करने की इजाज़त नहीं देते और लोगों को
कहते हैं कि वह मुख़्तलिफ़ खाने की चीज़ों से परहेज़ करें। लेकिन अल्लाह ने यह चीज़ें इसलिए बनाई हैं कि जो
ईमान रखते हैं और सच्चाई से वाक़िफ़ हैं इन्हें शुक्रगुज़ारी के साथ खाएँ। 4 जो कुछ भी अल्लाह ने ख़लक़ किया है
वह अच्छा है, और हमें उसे रद्द नहीं करना चाहिए बल्कि ख़ुदा का शुक्र करके उसे खा लेना चाहिए। 5 क्योंकि उसे
अल्लाह के कलाम और दुआ से मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया है।

मसीह ईसा का अच्छा ख़ादिम

6 अगर आप भाइयों को यह तालीम दें तो आप मसीह ईसा के अच्छे ख़ादिम होंगे। फिर यह साबित हो जाएगा कि
आपको ईमान और उस अच्छी तालीम की सच्चाइयों में तरबियत दी गई है जिसकी पैरवी आप करते रहे हैं। 7 लेकिन
दादी-अम्माँ की इन बेमानी फ़रज़ी कहानियों से बाज़ रहें। इनकी बजाए ऐसी तरबियत हासिल करें जिससे आपकी
रूहानी ज़िंदगी मज़बूत हो जाए। 8 क्योंकि जिस्म की तरबियत का थोड़ा ही फ़ायदा है, लेकिन रूहानी तरबियत हर
लिहाज़ से मुफ़ीद है, इसलिए कि अगर हम इस क़िस्म की तरबियत हासिल करें तो हमसे हाल और मुस्तक़बिल में
ज़िंदगी पाने का वादा किया गया है। 9 यह बात क़ाबिले-एतमाद है और इसे पूरे तौर पर क़बूल करना चाहिए। 10 यही
वजह है कि हम मेहनत-मशक़्क़त और जाँफ़िशानी करते रहते हैं, क्योंकि हमने अपनी उम्मीद ज़िंदा ख़ुदा पर रखी है
जो तमाम इनसानों का नजातदहिंदा है, ख़ासकर ईमान रखनेवालों का।

11 लोगों को यह हिदायात दें और सिखाएँ। 12 कोई भी आपको इसलिए हक़ीर न जाने कि आप जवान हैं। लेकिन
ज़रूरी है कि आप कलाम में, चाल-चलन में, मुहब्बत में, ईमान में और पाकीज़गी में ईमानदारों के लिए नमूना बन जाएँ।
13 जब तक मैं नहीं आता इस पर ख़ास ध्यान दें कि जमात में बाक़ायदगी से कलाम की तिलावत की जाए, लोगों को
नसीहत की जाए और उन्हें तालीम दी जाए। 14 अपनी उस नेमत को नज़रंदाज़ न करें जो आपको उस वक़्त पेशगोई के
ज़रीए मिली जब बुज़ुर्गों ने आप पर अपने हाथ रखे। 15 इन बातों को फ़रोग़ दें और इनके पीछे लगे रहें ताकि आपकी
तरक़्क़ी सबको नज़र आए। 16 अपना और तालीम का ख़ास ख़याल रखें। इनमें साबितक़दम रहें, क्योंकि ऐसा करने
से आप अपने आपको और अपने सुननेवालों को बचा लेंगे।

5

ईमानदारों से सुलूक

1 बुज़ुर्ग भाइयों को सख़्ती से न डाँटना बल्कि उन्हें यों समझाना जिस तरह कि वह आपके बाप हों। इसी तरह
जवान आदमियों को यों समझाना जैसे वह आपके भाई हों, 2 बुज़ुर्ग बहनों को यों जैसे वह आपकी माएँ हों और जवान
ख़वातीन को तमाम पाकीज़गी के साथ यों जैसे वह आपकी बहनें हों।

3 उन बेवाओं की मदद करके उनकी इज़्ज़त करें जो वाक़ई ज़रूरतमंद हैं। 4 अगर किसी बेवा के बच्चे या पोते-नवासे
हों तो उस की मदद करना उन्हीं का फ़र्ज़ है। हाँ, वह सीखें कि ख़ुदातरस होने का पहला फ़र्ज़ यह है कि हम अपने
घरवालों की फ़िकर करें और यों अपने माँ-बाप, दादा-दादी और नाना-नानी को वह कुछ वापस करें जो हमें उनसे
मिला है, क्योंकि ऐसा अमल अल्लाह को पसंद है। 5 जो औरत वाक़ई ज़रूरतमंद बेवा और तनहा रह गई है वह अपनी
उम्मीद अल्लाह पर रखकर दिन-रात अपनी इल्तिजाओं और दुआओं में लगी रहती है। 6 लेकिन जो बेवा ऐशो-इशरत
में ज़िंदगी गुज़ारती है वह ज़िंदा हालत में ही मुरदा है। 7 यह हिदायात लोगों तक पहुँचाएँ ताकि उन पर इलज़ाम न
लगाया जा सके। 8 क्योंकि अगर कोई अपनों और ख़ासकर अपने घरवालों की फ़िकर न करे तो उसने अपने ईमान
का इनकार कर दिया। ऐसा शख़्स ग़ैरईमानदारों से बदतर है।

9 जिस बेवा की उम्र 60 साल से कम है उसे बेवाओं की फ़हरिस्त में दर्ज न किया जाए। शर्त यह भी है कि जब
उसका शौहर ज़िंदा था तो वह उस की वफ़ादार रही हो 10 और कि लोग उसके नेक कामों की अच्छी गवाही दे सकें,
मसलन क्या उसने अपने बच्चों को अच्छी तरह पाला है? क्या उसने मेहमान-नवाज़ी की और मुक़द्दसीन के पाँव
धोकर उनकी ख़िदमत की है? क्या वह मुसीबत में फँसे हुओं की मदद करती रही है? क्या वह हर नेक काम के लिए
कोशाँ रही है?

11 लेकिन जवान बेवाएँ इस फ़हरिस्त में शामिल मत करना, क्योंकि जब उनकी जिस्मानी ख़ाहिशात उन पर ग़ालिब
आती हैं तो वह मसीह से दूर होकर शादी करना चाहती हैं। 12 यों वह अपना पहला ईमान छोड़कर मुजरिम ठहरती हैं।
13 इसके अलावा वह सुस्त होने और इधर उधर घरों में फिरने की आदी बन जाती हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि वह बातूनी
भी बन जाती हैं और दूसरों के मामलात में दख़ल देकर नामुनासिब बातें करती हैं। 14 इसलिए मैं चाहता हूँ कि जवान

बेवाएँ दुबारा शादी करके बच्चों को जन्म दें और अपने घरों को सँभालें। फिर वह दुश्मन को बदगोई करने का मौक़ा
नहीं देंगी। 15 क्योंकि बाज़ तो सहीह राह से हटकर इबलीस के पीछे लग चुकी हैं। 16 लेकिन जिस ईमानदार औरत
के ख़ानदान में बेवाएँ हैं उसका फ़र्ज़ है कि वह उनकी मदद करे ताकि वह ख़ुदा की जमात के लिए बोझ न बनें। वरना
जमात उन बेवाओं की सहीह मदद नहीं कर सकेगी जो वाक़ई ज़रूरतमंद हैं।

17 जो बुज़ुर्ग जमात को अच्छी तरह सँभालते हैं उन्हें दुगनी इज़्ज़त के लायक़ समझा जाए।* मैं ख़ासकर उनकी बात
कर रहा हूँ जो पाक कलाम सुनाने और तालीम देने में मेहनत-मशक़्क़त करते हैं। 18 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता
है, "जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।" यह भी लिखा है,
"मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है।" 19 जब किसी बुज़ुर्ग पर इलज़ाम लगाया जाए तो यह बात सिर्फ़ इस सूरत में
मानें कि दो या इससे ज़्यादा गवाह इसकी तसदीक़ करें। 20 लेकिन जिन्होंने वाक़ई गुनाह किया हो उन्हें पूरी जमात के
सामने समझाएँ ताकि दूसरे ऐसी हरकतें करने से डर जाएँ।

21 अल्लाह और मसीह ईसा और उसके चुनीदा फ़रिश्तों के सामने मैं संजीदगी से ताकीद करता हूँ कि इन हिदायात
की यों पैरवी करें कि आप किसी मामले से सहीह तौर पर वाक़िफ़ होने से पेशतर फ़ैसला न करें, न जानिबदारी का
शिकार हो जाएँ। 22 जल्दी से किसी पर हाथ रखकर उसे किसी ख़िदमत के लिए मख़सूस मत करना, न दूसरों के
गुनाहों में शरीक होना। अपने आपको पाक रखें।

23 चूँकि आप अकसर बीमार रहते हैं इसलिए अपने मेदे का लिहाज़ करके न सिर्फ़ पानी ही पिया करें बल्कि साथ
साथ कुछ मै भी इस्तेमाल करें।

24 कुछ लोगों के गुनाह साफ़ साफ़ नज़र आते हैं, और वह उनसे पहले ही अदालत के तख़्त के सामने आ पहुँचते
हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिनके गुनाह गोया उनके पीछे चलकर बाद में ज़ाहिर होते हैं। 25 इसी तरह कुछ लोगों के
अच्छे काम साफ़ नज़र आते हैं जबकि बाज़ के अच्छे काम अभी नज़र नहीं आते। लेकिन यह भी पोशीदा नहीं रहेंगे
बल्कि किसी वक़्त ज़ाहिर हो जाएंगे।

6

1 जो भी ग़ुलामी के जुए में हैं वह अपने मालिकों को पूरी इज़्ज़त के लायक़ समझें ताकि लोग अल्लाह के नाम और
हमारी तालीम पर कुफ़र न बकें। 2 जब मालिक ईमान लाते हैं तो ग़ुलामों को उनकी इसलिए कम इज़्ज़त नहीं करना
चाहिए कि वह अब मसीह में भाई हैं। बल्कि वह उनकी और ज़्यादा ख़िदमत करें, क्योंकि अब जो उनकी अच्छी
ख़िदमत से फ़ायदा उठा रहे हैं वह ईमानदार और अज़ीज़ हैं।

ग़लत तालीम और हक़ीक़ी दौलत

लाज़िम है कि आप लोगों को इन बातों की तालीम दें और इसमें उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई करें। 3 जो भी इससे फ़रक़
तालीम देकर हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के सेहतबख़्श अलफ़ाज़ और इस ख़ुदातरस ज़िंदगी की तालीम से वाबस्ता नहीं
रहता 4 वह ख़ुदपसंदी से फूला हुआ है और कुछ नहीं समझता। ऐसा शख़्स बहस-मुबाहसा करने और ख़ाली बातों
पर झगड़ने में ग़ैरसेहतमंद दिलचस्पी लेता है। नतीजे में हसद, झगड़े, कुफ़र और बदगुमानी पैदा होती है। 5 यह लोग
आपस में झगड़ने की वजह से हमेशा कुढ़ते रहते हैं। उनके ज़हन बिगड़ गए हैं और सच्चाई उनसे छीन ली गई है। हाँ,
यह समझते हैं कि ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारने से माली नफ़ा हासिल किया जा सकता है।

6 ख़ुदातरस ज़िंदगी वाक़ई बहुत नफ़ा का बाइस है, लेकिन शर्त यह है कि इनसान को जो कुछ भी मिल जाए वह
उस पर इकतिफ़ा करे। 7 हम दुनिया में अपने साथ क्या लाए? कुछ नहीं! तो हम दुनिया से निकलते वक़्त क्या कुछ
साथ ले जा सकेंगे? कुछ भी नहीं! 8 चुनाँचे अगर हमारे पास ख़ुराक और लिबास हो तो यह हमारे लिए काफ़ी होना
चाहिए। 9 जो अमीर बनने के ख़ाहाँ रहते हैं वह कई तरह की आज़माइशों और फंदों में फँस जाते हैं। बहुत-सी नासमझ
और नुक़सानदेह ख़ाहिशात उन्हें हलाकत और तबाही में ग़रक़ हो जाने देती हैं। 10 क्योंकि पैसों का लालच हर ग़लत
काम का सरचश्मा है। कई लोगों ने इसी लालच के बाइस ईमान से भटककर अपने आपको बहुत अज़ियत पहुँचाई है।

शख़्सी हिदायात

11 लेकिन आप जो अल्लाह के बंदे हैं इन चीज़ों से भागते रहें। इनकी बजाए रास्तबाज़ी, ख़ुदातरसी, ईमान, मुहब्बत,
साबितक़दमी और नरमदिली के पीछे लगे रहें। 12 ईमान की अच्छी कुश्ती लड़ें। अबदी ज़िंदगी से ख़ूब लिपट जाएँ,
क्योंकि अल्लाह ने आपको यही ज़िंदगी पाने के लिए बुलाया, और आपने अपनी तरफ़ से बहुत-से गवाहों के सामने इस
बात का इक़रार भी किया। 13 मेरे दो गवाह हैं, अल्लाह जो सब कुछ ज़िंदा रखता है और मसीह ईसा जिसने पुंतियुस

* **5:17** यहाँ मतलब है कि उनकी इज़्ज़त ख़ासकर माली लिहाज़ से की जाए।

पीलातुस के सामने अपने ईमान की अच्छी गवाही दी। इन्हीं के सामने मैं आपको कहता हूँ कि [14] यह हुक्म यों पूरा
करें कि आप पर न दाग़ लगे, न इलज़ाम। और इस हुक्म पर उस दिन तक अमल करते रहें जब तक हमारा ख़ुदावंद
ईसा मसीह ज़ाहिर नहीं हो जाता। [15] क्योंकि अल्लाह मसीह को मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर करेगा। हाँ, जो मुबारक और
वाहिद हुक्मरान, बादशाहों का बादशाह और मालिकों का मालिक है वह उसे मुक़र्ररा वक़्त पर ज़ाहिर करेगा। [16] सिर्फ़
वही लाफ़ानी है, वही ऐसी रौशनी में रहता है जिसके क़रीब कोई नहीं आ सकता। न किसी इनसान ने उसे कभी देखा,
न वह उसे देख सकता है। उस की इज़्ज़त और क़ुदरत अबद तक रहे। आमीन।

[17] जो मौजूदा दुनिया में अमीर हैं उन्हें समझाएँ कि वह मग़रूर न हों, न दौलत जैसी ग़ैरयक़ीनी चीज़ पर उम्मीद रखें।
इसकी बजाए वह अल्लाह पर उम्मीद रखें जो हमें फ़ैयाज़ी से सब कुछ मुहैया करता है ताकि हम उससे लुत्फ़अंदोज़
हो जाएँ। [18] यह पेशे-नज़र रखकर अमीर नेक काम करें और भलाई करने में ही अमीर हों। वह ख़ुशी से दूसरों को
देने और अपनी दौलत में शरीक करने के लिए तैयार हों। [19] यों वह अपने लिए एक अच्छा ख़ज़ाना जमा करेंगे यानी
आनेवाले जहान के लिए एक ठोस बुनियाद जिस पर खड़े होकर वह हक़ीक़ी ज़िंदगी पा सकेंगे।

[20] तीमुथियुस बेटे, जो कुछ आपके हवाले किया गया है उसे महफ़ूज़ रखें। दुनियावी बकवास और उन मुतज़ाद
ख़यालात से कतराते रहें जिन्हें ग़लती से इल्म का नाम दिया गया है। [21] कुछ तो इस इल्म के माहिर होने का दावा
करके ईमान की सहीह राह से हट गए हैं।

अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

2 तीमुथियुस

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है ताकि उस वादा की हुई ज़िंदगी का पैग़ाम सुनाए जो हमें मसीह ईसा में हासिल होती है।
2 मैं अपने प्यारे बेटे तीमुथियुस को लिख रहा हूँ।

ख़ुदा बाप और हमारा ख़ुदावंद मसीह ईसा आपको फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करें।

शुक्रगुज़ारी और हौसलाअफ़्ज़ाई

3 मैं आपके लिए ख़ुदा का शुक्र करता हूँ जिसकी ख़िदमत मैं अपने बापदादा की तरह साफ़ ज़मीर से करता हूँ।
दिन-रात मैं लगातार आपको अपनी दुआओं में याद रखता हूँ। 4 मुझे आपके आँसू याद आते हैं, और मैं आपसे मिलने
का आरज़ूमंद हूँ ताकि ख़ुशी से भर जाऊँ। 5 मुझे ख़ासकर आपका मुख़लिस ईमान याद है जो पहले आपकी नानी लूइस
और माँ यूनीके रखती थीं। और मुझे यक़ीन है कि आप भी यही ईमान रखते हैं। 6 यही वजह है कि मैं आपको एक
बात याद दिलाता हूँ। अल्लाह ने आपको उस वक़्त एक नेमत से नवाज़ा जब मैंने आप पर हाथ रखे। आपको उस नेमत
की आग को नए सिरे से भड़काने की ज़रूरत है। 7 क्योंकि जिस रूह से अल्लाह ने हमें नवाज़ा है वह हमें बुज़दिल
नहीं बनाता बल्कि हमें क़ुव्वत, मुहब्बत और नज़मो-ज़ब्त दिलाता है।

8 इसलिए हमारे ख़ुदावंद के बारे में गवाही देने से न शर्माएँ, न मुझसे जो मसीह की ख़ातिर क़ैदी हूँ। इसके बजाए मेरे
साथ अल्लाह की क़ुव्वत से मदद लेकर उस की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर दुख उठाएँ। 9 क्योंकि उसने हमें नजात देकर
मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बुलाया। और यह चीज़ें हमें अपनी मेहनत से नहीं मिलीं बल्कि अल्लाह के इरादे और
फ़ज़ल से। यह फ़ज़ल ज़मानों की इब्तिदा से पहले हमें मसीह में दिया गया 10 लेकिन अब हमारे नजातदहिंदा मसीह
ईसा की आमद से ज़ाहिर हुआ। मसीह ही ने मौत को नेस्त कर दिया। उसी ने अपनी ख़ुशख़बरी के ज़रीए लाफ़ानी
ज़िंदगी रौशनी में लाकर हम पर ज़ाहिर कर दी है।

11 अल्लाह ने मुझे यही ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए मुनाद, रसूल और उस्ताद मुक़र्रर किया है। 12 इसी वजह से मैं
दुख उठा रहा हूँ। तो भी मैं शर्माता नहीं, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ जिस पर में ईमान लाया हूँ, और मुझे पूरा यक़ीन है
कि जो कुछ मैंने उसके हवाले कर दिया है उसे वह अपनी आमद के दिन तक महफ़ूज़ रखने के क़ाबिल है। 13 उन
सेहतबख़्श बातों के मुताबिक़ चलते रहें जो आपने मुझसे सुन ली हैं, और यों ईमान और मुहब्बत के साथ मसीह ईसा
में ज़िंदगी गुज़ारें। 14 जो बेशक़ीमत चीज़ आपके हवाले कर दी गई है उसे रूहुल-क़ुद्स की मदद से जो हममें सुकूनत
करता है महफ़ूज़ रखें।

15 आपको मालूम है कि सूबा आसिया में तमाम लोगों ने मुझे तर्क कर दिया है। इनमें फ़ूगिलुस और हिरमुगिनेस
भी शामिल हैं। 16 ख़ुदावंद उनेसिफ़ुरुस के घराने पर रहम करे, क्योंकि उसने कई दफ़ा मुझे तरो-ताज़ा किया। हाँ, वह
इससे कभी न शर्माया कि मैं क़ैदी हूँ। 17 बल्कि जब वह रोम शहर पहुँचा तो बड़ी कोशिशों से मेरा खोज लगाकर मुझे
मिला। 18 ख़ुदावंद करे कि वह क़ियामत के दिन ख़ुदावंद से रहम पाए। आप ख़ुद बेहतर जानते हैं कि उसने इफ़िसुस में
कितनी ख़िदमत की।

2

मसीह ईसा का वफ़ादार सिपाही

1 लेकिन आप, मेरे बेटे, उस फ़ज़ल से तक़वियत पाएँ जो आपको मसीह ईसा में मिल गया है। 2 जो कुछ आपने
बहुत गवाहों की मौजूदगी में मुझसे सुना है उसे मोतबर लोगों के सुपुर्द करें। यह ऐसे लोग हों जो औरों को सिखाने के
क़ाबिल हों।

3 मसीह ईसा के अच्छे सिपाही की तरह हमारे साथ दुख उठाते रहें। 4 जिस सिपाही की ड्यूटी है वह आम रिआया
के मामलात में फँसने से बाज़ रहता है, क्योंकि वह अपने अफ़सर को पसंद आना चाहता है। 5 इसी तरह खेल के
मुक़ाबले में हिस्सा लेनेवाले को सिर्फ़ इस सूरत में इनाम मिल सकता है कि वह क़वायद के मुताबिक़ ही मुक़ाबला करे।
6 और लाज़िम है कि फ़सल की कटाई के वक़्त पहले उसको फ़सल का हिस्सा मिले जिसने खेत में मेहनत की है।
7 उस पर ध्यान देना जो मैं आपको बता रहा हूँ, क्योंकि ख़ुदावंद आपको इन तमाम बातों की समझ अता करेगा।

8 मसीह ईसा को याद रखें, जो दाऊद की औलाद में से है और जिसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया गया। यही मेरी
ख़ुशख़बरी है 9 जिसकी ख़ातिर मैं दुख उठा रहा हूँ, यहाँ तक कि मुझे आम मुजरिम की तरह ज़ंजीरों से बाँधा गया है।
लेकिन अल्लाह का कलाम ज़ंजीरों से बाँधा नहीं जा सकता। 10 इसलिए मैं सब कुछ अल्लाह के चुने हुए लोगों की
ख़ातिर बरदाश्त करता हूँ ताकि वह भी नजात पाएँ—वह नजात जो मसीह ईसा से मिलती है और जो अबदी जलाल का
बाइस बनती है। 11 यह क़ौल क़ाबिले-एतमाद है,

अगर हम उसके साथ मर गए
तो हम उसके साथ जिएँगे भी।
12 अगर हम बरदाश्त करते रहें
तो हम उसके साथ हुकूमत भी करेंगे।
अगर हम उसे जानने से इनकार करें
तो वह भी हमें जानने से इनकार करेगा।
13 अगर हम बेवफ़ा निकलें
तो भी वह वफ़ादार रहेगा।
क्योंकि वह अपना इनकार नहीं कर सकता।

क़ाबिले-क़बूल ख़िदमतगुज़ार

14 लोगों को इन बातों की याद दिलाते रहें और उन्हें संजीदगी से अल्लाह के हुज़ूर समझाएँ कि वह बाल की खाल
उतारकर एक दूसरे से न झगड़ें। यह बेफ़ायदा है बल्कि सुननेवालों को बिगाड़ देता है। 15 अपने आपको अल्लाह के
सामने यों पेश करने की पूरी कोशिश करें कि आप मक़बूल साबित हों, कि आप ऐसा मज़दूर निकलें जिसे अपने काम
से शर्माने की ज़रूरत न हो बल्कि जो सहीह तौर पर अल्लाह का सच्चा कलाम पेश करे। 16 दुनियावी बकवास से बाज़
रहें। क्योंकि जितना यह लोग इसमें फँस जाएंगे उतना ही बेदीनी का असर बढ़ेगा 17 और उनकी तालीम कैंसर की
तरह फैल जाएगी। इन लोगों में हुमिनयुस और फ़िलेतुस भी शामिल हैं 18 जो सच्चाई से हट गए हैं। यह दावा करते हैं
कि मुरदों के जी उठने का अमल हो चुका है और यों बाज़ एक का ईमान तबाह हो गया है। 19 लेकिन अल्लाह की
ठोस बुनियाद क़ायम रहती है और उस पर इन दो बातों की मुहर लगी है, "ख़ुदावंद ने अपने लोगों को जान लिया है"
और "जो भी समझे कि मैं ख़ुदावंद का पैरोकार हूँ वह नारास्ती से बाज़ रहे।"

20 बड़े घरों में न सिर्फ़ सोने और चाँदी के बरतन होते हैं बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी। यानी कुछ शरीफ़
कामों के लिए इस्तेमाल होते हैं और कुछ कमक़दर कामों के लिए। 21 अगर कोई अपने आपको इन बुरी चीज़ों से
पाक-साफ़ करे तो वह शरीफ़ कामों के लिए इस्तेमाल होनेवाला बरतन होगा। वह मख़सूसो-मुक़द्दस, मालिक के लिए
मुफ़ीद और हर नेक काम के लिए तैयार होगा। 22 जवानी की बुरी ख़ाहिशात से भागकर रास्तबाज़ी, ईमान, मुहब्बत
और सुलह-सलामती के पीछे लगे रहें। और यह उनके साथ मिलकर करें जो ख़ुलूसदिली से ख़ुदावंद की परस्तिश करते
हैं। 23 हमाक़त और जहालत की बहसों से किनारा करें। आप तो जानते हैं कि इनसे सिर्फ़ झगड़े पैदा होते हैं। 24 लाज़िम
है कि ख़ुदावंद का ख़ादिम न झगड़े बल्कि हर एक से मेहरबानी का सुलूक करे। वह तालीम देने के क़ाबिल हो और
सब्र से ग़लत सुलूक बरदाश्त करे। 25 जो मुख़ालफ़त करते हैं उन्हें वह नरमदिली से तरबियत दे, क्योंकि हो सकता है
कि अल्लाह उन्हें तौबा करने की तौफ़ीक़ दे और वह सच्चाई को जान लें, 26 होश में आएँ और इबलीस के फंदे से बच
निकलें। क्योंकि इबलीस ने उन्हें क़ैद कर लिया है ताकि वह उस की मरज़ी पूरी करें।

3

आख़िरी दिन

1 लेकिन यह बात जान लें कि आख़िरी दिनों में हौलनाक लमहे आएँगे। 2 लोग ख़ुदपसंद और पैसों के लालची
होंगे। वह शेख़ीबाज़, मग़रूर, कुफ़र बकनेवाले, माँ-बाप के नाफ़रमान, नाशुकरे, बेदीन 3 और मुहब्बत से ख़ाली होंगे।
वह सुलह करने के लिए तैयार नहीं होंगे, दूसरों पर तोहमत लगाएँगे, ऐयाश और वहशी होंगे और भलाई से नफ़रत
रखेंगे। 4 वह नमकहराम, ग़ैरमुहतात और ग़ुरूर से फूले हुए होंगे। अल्लाह से मुहब्बत रखने के बजाए उन्हें ऐशो-इशरत
प्यारी होगी। 5 वह बज़ाहिर ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारेंगे, लेकिन हक़ीक़ी ख़ुदातरस ज़िंदगी की क़ुव्वत का इनकार करेंगे।
ऐसों से किनारा करें। 6 उनमें से कुछ लोग घरों में घुसकर कमज़ोर ख़वातीन को अपने जाल में फँसा लेते हैं, ऐसी
ख़वातीन को जो अपने गुनाहों तले दबी हुई हैं और जिन्हें कई तरह की शहवतें चलाती हैं। 7 गो यह हर वक़्त तालीम
हासिल करती रहती हैं तो भी सच्चाई को जानने तक कभी नहीं पहुँच सकतीं। 8 जिस तरह यन्नेस और यंबरेस मूसा की
मुख़ालफ़त करते थे उसी तरह यह लोग भी सच्चाई की मुख़ालफ़त करते हैं। इनका ज़हन बिगड़ा हुआ है और इनका

ईमान नामक़बूल निकला। 9 लेकिन यह ज़्यादा तरक़्क़ी नहीं करेंगे क्योंकि इनकी हमाक़त सब पर ज़ाहिर हो जाएगी,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह यन्नेस और यंब्रेस के साथ भी हुआ।

आख़िरी हिदायात

10 लेकिन आप हर लिहाज़ से मेरे शागिर्द रहे हैं, चाल-चलन में, इरादे में, ईमान में, सब्र में, मुहब्बत में, साबितक़दमी
में, 11 ईज़ारसानियों में और दुखों में। अंताकिया, इकुनियुम और लुस्तरा में मेरे साथ क्या कुछ न हुआ! वहाँ मुझे
कितनी सख़्त ईज़ारसानियों का सामना करना पड़ा। लेकिन ख़ुदावंद ने मुझे इन सबसे रिहाई दी। 12 बात यह है कि
सब जो मसीह ईसा में ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारना चाहते हैं उन्हें सताया जाएगा। 13 साथ साथ शरीर और धोकेबाज़ लोग
अपने ग़लत कामों में तरक़्क़ी करते जाएंगे। वह दूसरों को ग़लत राह पर ले जाएंगे और उन्हें ख़ुद भी ग़लत राह पर
लाया जाएगा। 14 लेकिन आप ख़ुद उस पर क़ायम रहें जो आपने सीख लिया और जिस पर आपको यक़ीन आया है।
क्योंकि आप अपने उस्तादों को जानते हैं 15 और आप बचपन से मुक़द्दस सहीफ़ों से वाक़िफ़ हैं। अल्लाह का यह
कलाम आपको वह हिकमत अता कर सकता है जो मसीह ईसा पर ईमान लाने से नजात तक पहुँचाती है। 16 क्योंकि
हर पाक नविश्ता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है और तालीम देने, मलामत करने, इसलाह करने और रास्तबाज़
ज़िंदगी गुज़ारने की तरबियत देने के लिए मुफ़ीद है। 17 कलामे-मुक़द्दस का मक़सद यही है कि अल्लाह का बंदा हर
लिहाज़ से क़ाबिल और हर नेक काम के लिए तैयार हो।

4

1 मैं अल्लाह और मसीह ईसा के सामने जो ज़िंदों और मुरदों की अदालत करेगा और उस की आमद और बादशाही
की याद दिलाकर संजीदगी से इसकी ताकीद करता हूँ, 2 कि वक़्त बेवक़्त कलामे-मुक़द्दस की मुनादी करने के लिए
तैयार रहें। बड़े सब्र से ईमानदारों को तालीम देकर उन्हें समझाएँ, मलामत करें और उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई भी करें।
3 क्योंकि एक वक़्त आएगा जब लोग सेहतबख़्श तालीम बरदाश्त नहीं करेंगे बल्कि अपने पास अपनी बुरी ख़ाहिशात
से मुताबिक़त रखनेवाले उस्तादों का ढेर लगा लेंगे। यह उस्ताद उन्हें सिर्फ़ दिल बहलानेवाली बातें सुनाएँगे, सिर्फ़ वह
कुछ जो वह सुनना चाहते हैं। 4 वह सच्चाई को सुनने से बाज़ आकर फ़रज़ी कहानियों के पीछे पड़ जाएंगे। 5 लेकिन
आप ख़ुद हर हालत में होश में रहें। दुख को बरदाश्त करें, अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते रहें और अपनी ख़िदमत के
तमाम फ़रायज़ अदा करें।

6 जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, वह वक़्त आ चुका है कि मुझे मै की नज़र की तरह क़ुरबानगाह पर उंडेला जाए। मेरे
कूच का वक़्त आ गया है। 7 मैंने अच्छी कुश्ती लड़ी है, मैं दौड़ के इख़्तिताम तक पहुँच गया हूँ, मैंने ईमान को महफ़ूज़
रखा है। 8 और अब एक इनाम तैयार पड़ा है, रास्तबाज़ी का वह ताज जो ख़ुदावंद हमारा रास्त मुंसिफ़ मुझे अपनी आमद
के दिन देगा। और न सिर्फ़ मुझे बल्कि उन सबको जो उस की आमद के आरज़ूमंद रहे हैं।

कुछ शख़्सी बातें

9 मेरे पास आने में जल्दी करें। 10 क्योंकि देमास ने इस दुनिया को प्यार करके मुझे छोड़ दिया है। वह थिस्सलुनीके
चला गया। क्रेसकेंस गलतिया और तितुस दल्मतिया चले गए हैं। 11 सिर्फ़ लूक़ा मेरे पास है। मरक़ुस को अपने साथ ले
आना, क्योंकि वह ख़िदमत के लिए मुफ़ीद साबित होगा। 12 तुख़िकुस को मैंने इफ़िसुस भेज दिया है। 13 आते वक़्त
मेरा वह कोट अपने साथ ले आएँ जो मैं त्रोआस में करपुस के पास छोड़ आया था। मेरी किताबें भी ले आएँ, ख़ासकर
चरमी काग़ज़वाली।

14 सिकंदर लोहार ने मुझे बहुत नुक़सान पहुँचाया है। ख़ुदावंद उसे उसके काम का बदला देगा। 15 उससे मुहतात
रहें क्योंकि उसने बड़ी शिद्दत से हमारी बातों की मुख़ालफ़त की।

16 जब मुझे पहली दफ़ा अपने दिफ़ा के लिए अदालत में पेश किया गया तो सबने मुझे तर्क कर दिया। अल्लाह
उनसे इस बात का हिसाब न ले बल्कि इसे नज़रंदाज़ कर दे। 17 लेकिन ख़ुदावंद मेरे साथ था। उसी ने मुझे तक़वियत
दी, क्योंकि उस की मरज़ी थी कि मेरे वसीले से उसका पूरा पैग़ाम सुनाया जाए और तमाम ग़ैरयहूदी उसे सुनें। यों
अल्लाह ने मुझे शेरबबर के मुँह से निकालकर बचा लिया। 18 और आगे भी ख़ुदावंद मुझे हर शरीर हमले से बचाएगा
और अपनी आसमानी बादशाही में लाकर नजात देगा। उसका जलाल अज़ल से अबद तक होता रहे। आमीन।

आख़िरी सलाम

19 प्रिसकिल्ला, अकविला और उनेसिफ़ुरुस के घराने को हमारा सलाम कहना। 20 इरास्तुस कुरिंथुस में रहा, और
मुझे त्रुफ़िमुस को मीलेतुस में छोड़ना पड़ा, क्योंकि वह बीमार था। 21 जल्दी करें ताकि सर्दियों के मौसम से पहले यहाँ
पहुँचें।

यूबूलुस, पूदेंस, लीनुस, क्लौदिया और तमाम भाई आपको सलाम कहते हैं।
22 ख़ुदावंद आपकी रूह के साथ हो। अल्लाह का फ़ज़ल आपके साथ होता रहे।

तितुस

1 यह ख़त पौलुस की तरफ़ से है जो अल्लाह का ख़ादिम और ईसा मसीह का रसूल है।
मुझे चुनकर भेजा गया ताकि मैं ईमान लाने और ख़ुदातरस ज़िंदगी की सच्चाई जान लेने में अल्लाह के चुने हुए
लोगों की मदद करूँ। 2 क्योंकि उससे उन्हें अबदी ज़िंदगी की उम्मीद दिलाई जाती है, ऐसी ज़िंदगी की जिसका वादा
अल्लाह ने दुनिया के ज़मानों से पेशतर ही किया था। और वह झूट नहीं बोलता। 3 अपने मुक़र्ररा वक़्त पर अल्लाह ने
अपने कलाम का एलान करके उसे ज़ाहिर कर दिया। यही एलान मेरे सुपुर्द किया गया है और मैं इसे हमारे नजातदहिंदा
अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ सुनाता हूँ।
4 मैं तितुस को लिख रहा हूँ जो हमारे मुश्तरका ईमान के मुताबिक़ मेरा हक़ीक़ी बेटा है।
ख़ुदा बाप और हमारा नजातदहिंदा मसीह ईसा आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

क्रेते में तितुस की ख़िदमत

5 मैंने आपको क्रेते में इसलिए छोड़ा था कि आप वह कमियाँ दुरुस्त करें जो अब तक रह गई थीं। यह भी एक
मक़सद था कि आप हर शहर की जमात में बुज़ुर्ग मुक़र्रर करें, जिस तरह मैंने आपको कहा था। 6 बुज़ुर्ग बेइलज़ाम हो।
उस की सिर्फ़ एक बीवी हो। उसके बच्चे ईमानदार हों और लोग उन पर ऐयाश या सरकश होने का इलज़ाम न लगा
सकें। 7 निगरान को तो अल्लाह का घराना सँभालने की ज़िम्मादारी दी गई है, इसलिए लाज़िम है कि वह बेइलज़ाम
हो। वह ख़ुदसर, ग़ुसीला, शराबी, लड़ाका या लालची न हो। 8 इसके बजाए वह मेहमान-नवाज़ हो और सब अच्छी
चीज़ों से प्यार करनेवाला हो। वह समझदार, रास्तबाज़ और मुक़द्दस हो। वह अपने आप पर क़ाबू रख सके। 9 वह उस
कलाम के साथ लिपटा रहे जो क़ाबिले-एतमाद और हमारी तालीम के मुताबिक़ है। क्योंकि इस तरह ही वह सेहतबख़्श
तालीम देकर दूसरों की हौसलाअफ़्ज़ाई कर सकेगा और मुख़ालफ़त करनेवालों को समझा भी सकेगा।
10 बात यह है कि बहुत-से ऐसे लोग हैं जो सरकश हैं, जो फ़ज़ूल बातें करके दूसरों को धोका देते हैं। यह बात
ख़ासकर उन पर सादिक़ आती है जो यहूदियों में से हैं। 11 लाज़िम है कि उन्हें चुप करा दिया जाए, क्योंकि यह लालच
में आकर कई लोगों के पूरे घर अपनी ग़लत तालीम से ख़राब कर रहे हैं। 12 उनके अपने एक नबी ने कहा है, "क्रेते के
बाशिंदे हमेशा झूट बोलनेवाले, वहशी जानवर और सुस्त पेटू होते हैं।" 13 उस की यह गवाही दुरुस्त है। इस वजह से
लाज़िम है कि आप उन्हें सख़्ती से समझाएँ ताकि उनका ईमान सेहतमंद रहे 14 और वह यहूदी फ़रज़ी कहानियों या उन
इनसानों के अहकाम पर ध्यान न दें जो सच्चाई से हट गए हैं। 15 जो लोग पाक-साफ़ हैं उनके लिए सब कुछ पाक है।
लेकिन जो नापाक और ईमान से ख़ाली हैं उनके लिए कुछ भी पाक नहीं होता बल्कि उनका ज़हन और उनका ज़मीर
दोनों नापाक हो गए हैं। 16 यह अल्लाह को जानने का दावा तो करते हैं, लेकिन उनकी हरकतें इस बात का इनकार
करती हैं। यह घिनौने, नाफ़रमान और कोई भी अच्छा काम करने के क़ाबिल नहीं हैं।

2

सेहतबख़्श तालीम

1 लेकिन आप वह कुछ सुनाएँ जो सेहतबख़्श तालीम से मुताबिक़त रखता है। 2 बुज़ुर्ग मर्दों को बता देना कि वह
होशमंद, शरीफ़ और समझदार हों। उनका ईमान, मुहब्बत और साबितक़दमी सेहतमंद हों।
3 इसी तरह बुज़ुर्ग ख़वातीन को हिदायत देना कि वह मुक़द्दसीन की-सी ज़िंदगी गुज़ारें। न वह तोहमत लगाएँ न शराब
की ग़ुलाम हों। इसके बजाए वह अच्छी तालीम देने के लायक़ हों 4 ताकि वह जवान औरतों को समझदार ज़िंदगी
गुज़ारने की तरबियत दे सकें, कि वह अपने शौहरों और बच्चों से मुहब्बत रखें, 5 कि वह समझदार * और मुक़द्दस
हों, कि वह घर के फ़रायज़ अदा करने में लगी रहें, कि वह नेक हों, कि वह अपने शौहरों के ताबे रहें। अगर वह ऐसी
ज़िंदगी गुज़ारें तो वह दूसरों को अल्लाह के कलाम पर कुफ़र बकने का मौक़ा फ़राहम नहीं करेंगी।
6 इसी तरह जवान आदमियों की हौसलाअफ़्ज़ाई करें कि वह हर लिहाज़ से समझदार ज़िंदगी गुज़ारें। 7 आप ख़ुद
नेक काम करने में उनके लिए नमूना बनें। तालीम देते वक़्त आपकी ख़ुलूसदिली, शराफ़त 8 और अलफ़ाज़ की बेइलज़ाम
सेहत साफ़ नज़र आए। फिर आपके मुख़ालिफ़ शरमिंदा हो जाएंगे, क्योंकि वह हमारे बारे में कोई बुरी बात नहीं कह
सकेंगे।

---

* **2:5** यूनानी लफ़्ज़ में ज़ब्ते-नफ़स का उनसुर भी पाया जाता है।

9 ग़ुलामों को कह देना कि वह हर लिहाज़ से अपने मालिकों के ताबे रहें। वह उन्हें पसंद आएँ, बहस-मुबाहसा किए
बग़ैर उनकी बात मानें 10 और उनकी चीज़ें चोरी न करें बल्कि साबित करें कि उन पर हर तरह का एतमाद किया जा
सकता है। क्योंकि इस तरीक़े से वह हमारे नजातदहिंदा अल्लाह के बारे में तालीम को हर तरह से दिलकश बना देंगे।
11 क्योंकि अल्लाह का नजातबख़्श फ़ज़ल तमाम इनसानों पर ज़ाहिर हुआ है। 12 और यह फ़ज़ल हमें तरबियत
देकर इस क़ाबिल बना देता है कि हम बेदीनी और दुनियावी ख़ाहिशात का इनकार करके इस दुनिया में समझदार,
रास्तबाज़ और ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ार सकें। 13 साथ साथ यह तरबियत उस मुबारक दिन का इंतज़ार करने में हमारी
मदद करती है जिसकी उम्मीद हम रखते हैं और जब हमारे अज़ीम ख़ुदा और नजातदहिंदा ईसा मसीह का जलाल ज़ाहिर
हो जाएगा। 14 क्योंकि मसीह ने हमारे लिए अपनी जान दे दी ताकि फ़िद्या देकर हमें हर तरह की बेदीनी से छुड़ाकर
अपने लिए एक पाक और मख़सूस क़ौम बनाए जो नेक काम करने में सरगरम हो।
15 इन्हीं बातों की तालीम देकर पूरे इख़्तियार के साथ लोगों को समझाएँ और उनकी इसलाह करें। कोई भी आपको
हक़ीर न जाने।

3

मसीही किरदार

1 उन्हें याद दिलाना कि वह हुक्मरानों और इख़्तियारवालों के ताबे और फ़रमाँबरदार रहें। वह हर नेक काम करने
के लिए तैयार रहें, 2 किसी पर तोहमत न लगाएँ, अमनपसंद और नरमदिल हों और तमाम लोगों के साथ नरममिज़ाजी
से पेश आएँ। 3 क्योंकि एक वक़्त था जब हम भी नासमझ, नाफ़रमान और सहीह राह से भटके हुए थे। उस वक़्त हम
कई तरह की शहवतों और ग़लत ख़ाहिशों की ग़ुलामी में थे। हम बुरे कामों और हसद करने में ज़िंदगी गुज़ारते थे। दूसरे
हमसे नफ़रत करते थे और हम भी उनसे नफ़रत करते थे। 4 लेकिन जब हमारे नजातदहिंदा अल्लाह की मेहरबानी और
मुहब्बत ज़ाहिर हुई 5 तो उसने हमें बचाया। यह नहीं कि हमने रास्त काम करने के बाइस नजात हासिल की बल्कि
उसके रहम ही ने हमें रूहुल-क़ुद्स के वसीले से बचाया जिसने हमें धोकर नए सिरे से जन्म दिया और नई ज़िंदगी अता
की। 6 अल्लाह ने अपने इस रूह को बड़ी फ़ैयाज़ी से हमारे नजातदहिंदा ईसा मसीह के वसीले से हम पर उंडेल दिया
7 ताकि हमें उसके फ़ज़ल से रास्तबाज़ क़रार दिया जाए और हम उस अबदी ज़िंदगी के वारिस बन जाएँ जिसकी उम्मीद
हम रखते हैं। 8 इस बात पर पूरा एतमाद किया जा सकता है।
मैं चाहता हूँ कि आप इन बातों पर ख़ास ज़ोर दें ताकि जो अल्लाह पर ईमान लाए हैं वह ध्यान से नेक काम करने में
लगे रहें। यह बातें सबके लिए अच्छी और मुफ़ीद हैं। 9 लेकिन बेहूदा बहसों, नसबनामों, झगड़ों और शरीअत के बारे
में तनाज़ों से बाज़ रहें, क्योंकि ऐसा करना बेफ़ायदा और फ़ज़ूल है। 10 जो शख़्स पार्टीबाज़ है उसे दो बार समझाएँ।
अगर वह इसके बाद भी न माने तो उसे रिफ़ाक़त से ख़ारिज करें। 11 क्योंकि आपको पता होगा कि ऐसा शख़्स ग़लत
राह पर है और गुनाह में फँसा हुआ होता है। उसने अपनी हरकतों से अपने आपको मुजरिम ठहराया है।

आख़िरी हिदायात

12 जब मैं अरतिमास या तुख़िकुस को आपके पास भेज दूँगा तो मेरे पास आने में जल्दी करें। मैं नीकुपुलिस शहर में
हूँ, क्योंकि मैंने फ़ैसला कर लिया है कि सर्दियों का मौसम यहाँ गुज़ारूँ। 13 जब ज़ेनास वकील और अपुल्लोस सफ़र
की तैयारियाँ कर रहे हैं तो उनकी मदद करें। ख़याल रखें कि उनकी हर ज़रूरत पूरी की जाए। 14 लाज़िम है कि हमारे
लोग नेक काम करने में लगे रहना सीखें, ख़ासकर जहाँ बहुत ज़रूरत है, ऐसा न हो कि आख़िरकार वह बेफल निकलें।
15 सब जो मेरे साथ हैं आपको सलाम कहते हैं। उन्हें मेरा सलाम देना जो ईमान में हमसे मुहब्बत रखते हैं।
अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ होता रहे।

फ़िलेमोन

1 यह ख़त मसीह ईसा के क़ैदी पौलुस और तीमुथियुस की तरफ़ से है।
मैं अपने अज़ीज़ दोस्त और हमख़िदमत फ़िलेमोन को लिख रहा हूँ 2 और साथ साथ अपनी बहन अफ़िया, अपने
हमसिपाह अरख़िप्पुस और उस जमात को जो आपके घर में जमा होती है।
3 ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

फ़िलेमोन की मुहब्बत और ईमान

4 जब भी मैं दुआ करता हूँ तो आपको याद करके अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ। 5 क्योंकि मुझे ख़ुदावंद ईसा के
बारे में आपके ईमान और आपकी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत की ख़बर मिलती रहती है। 6 मेरी दुआ है कि आपकी
जो रिफ़ाक़त ईमान से पैदा हुई है वह आपमें यों ज़ोर पकड़े कि आपको बेहतर तौर पर हर उस अच्छी चीज़ की समझ
आए जो हमें मसीह में हासिल है। 7 भाई, आपकी मुहब्बत देखकर मुझे बड़ी ख़ुशी और तसल्ली हुई है, क्योंकि आपने
मुक़द्दसीन के दिलों को तरो-ताज़ा कर दिया है।

उनेसिमुस की सिफ़ारिश

8 इस वजह से मैं मसीह में इतनी दिलेरी महसूस करता हूँ कि आपको वह कुछ करने का हुक्म दूँ जो अब मुनासिब
है। 9 तो भी मैं ऐसा नहीं करना चाहता बल्कि मुहब्बत की बिना पर आपसे अपील ही करता हूँ। गो मैं पौलुस मसीह
ईसा का एलची बल्कि अब उसका क़ैदी भी हूँ 10 तो भी मिन्नत करके अपने बेटे उनेसिमुस की सिफ़ारिश करता हूँ।
क्योंकि मेरे क़ैद में होते हुए वह मेरा बेटा बन गया। 11 पहले तो वह आपके काम नहीं आ सकता था, लेकिन अब वह
आपके लिए और मेरे लिए काफ़ी मुफ़ीद साबित हुआ है। *
12 अब मैं इसको गोया अपनी जान को आपके पास वापस भेज रहा हूँ। 13 असल में मैं उसे अपने पास रखना
चाहता था ताकि जब तक मैं ख़ुशख़बरी की ख़ातिर क़ैद में हूँ वह आपकी जगह मेरी ख़िदमत करे। 14 लेकिन मैं
आपकी इजाज़त के बग़ैर कुछ नहीं करना चाहता था। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि जो भी मेहरबानी आप करेंगे वह आप
मजबूर होकर न करें बल्कि ख़ुशी से।
15 हो सकता है कि उनेसिमुस इसलिए कुछ देर के लिए आपसे जुदा हो गया कि वह आपको हमेशा के लिए दुबारा
मिल जाए। 16 क्योंकि अब वह न सिर्फ़ ग़ुलाम है बल्कि ग़ुलाम से कहीं ज़्यादा। अब वह एक अज़ीज़ भाई है जो मुझे
ख़ास अज़ीज़ है। लेकिन वह आपको कहीं ज़्यादा अज़ीज़ होगा, ग़ुलाम की हैसियत से भी और ख़ुदावंद में भाई की
हैसियत से भी।
17 ग़रज़, अगर आप मुझे अपना साथी समझें तो उसे यों ख़ुशआमदीद कहें जैसे मैं ख़ुद आकर हाज़िर होता। 18 अगर
उसने आपको कोई नुक़सान पहुँचाया या आपका क़र्ज़दार हुआ तो मैं इसका मुआवज़ा देने के लिए तैयार हूँ। 19 यहाँ मैं
पौलुस अपने ही हाथ से इस बात की तसदीक़ करता हूँ : मैं इसका मुआवज़ा दूँगा अगरचे मुझे आपको याद दिलाने की
ज़रूरत नहीं कि आप ख़ुद मेरे क़र्ज़दार हैं। क्योंकि मेरा क़र्ज़ जो आप पर है वह आप ख़ुद हैं। 20 चुनाँचे मेरे भाई, मुझ
पर यह मेहरबानी करें कि मुझे ख़ुदावंद में आपसे कुछ फ़ायदा मिले। मसीह में मेरी जान को ताज़ा करें।
21 मैं आपकी फ़रमाँबरदारी पर एतबार करके आपको यह लिख रहा हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप न सिर्फ़ मेरी
सुनेंगे बल्कि इससे कहीं ज़्यादा मेरे लिए करेंगे। 22 एक और गुज़ारिश भी है, मेरे लिए एक कमरा तैयार करें, क्योंकि
मुझे उम्मीद है कि आपकी दुआओं के जवाब में मुझे आपको वापस दिया जाएगा।

आख़िरी सलाम

23 इपफ़्रास जो मसीह ईसा में मेरे साथ क़ैदी है आपको सलाम कहता है। 24 इसी तरह मरक़ुस, अरिस्तरख़ुस, देमास
और लूक़ा भी आपको सलाम कहते हैं।
25 ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल आप सबके साथ होता रहे।

---

* **1:11** उनेसिमुस का मतलब कारामद, फ़ायदामंद है।

इबरानियों

अल्लाह का अपने फ़रज़ंद के ज़रीए कलाम
1 माज़ी में अल्लाह मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर और कई तरीक़ों से हमारे बापदादा से हमकलाम हुआ। उस वक़्त उसने
यह नबियों के वसीले से किया 2 लेकिन इन आख़िरी दिनों में वह अपने फ़रज़ंद के वसीले से हमसे हमकलाम हुआ,
उसी के वसीले से जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस बना दिया और जिसके वसीले से उसने कायनात को भी ख़लक़
किया। 3 फ़रज़ंद अल्लाह का शानदार जलाल मुनअकिस करता और उस की ज़ात की ऐन शबीह * है। वह अपने
क़वी कलाम से सब कुछ सँभाले रखता है। जब वह दुनिया में था तो उसने हमारे लिए गुनाहों से पाक-साफ़ हो जाने का
इंतज़ाम क़ायम किया। इसके बाद वह आसमान पर क़ादिरे-मुतलक़ के दहने हाथ जा बैठा।

अल्लाह के फ़रज़ंद की अज़मत
4 फ़रज़ंद फ़रिश्तों से कहीं अज़ीम है, इतना जितना उसका मीरास में पाया हुआ नाम उनके नामों से अज़ीम है।
5 क्योंकि अल्लाह ने किस फ़रिश्ते से कभी कहा,

“तू मेरा फ़रज़ंद है,
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।”
यह भी उसने किसी फ़रिश्ते के बारे में कभी नहीं कहा,
“मैं उसका बाप हूँगा
और वह मेरा फ़रज़ंद होगा।”
6 और जब अल्लाह अपने पहलौठे फ़रज़ंद को आसमानी दुनिया में लाता है तो वह फ़रमाता है,
“अल्लाह के तमाम फ़रिश्ते उस की परस्तिश करें।”
7 फ़रिश्तों के बारे में वह फ़रमाता है,
“वह अपने फ़रिश्तों को हवाएँ
और अपने ख़ादिमों को आग के शोले बना देता है।”
8 लेकिन फ़रज़ंद के बारे में वह कहता है,
“ऐ ख़ुदा, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक क़ायमो-दायम रहेगा,
और इनसाफ़ का शाही असा तेरी बादशाही पर हुकूमत करेगा।
9 तूने रास्तबाज़ी से मुहब्बत
और बेदीनी से नफ़रत की,
इसलिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे ख़ुशी के तेल से मसह करके
तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ कर दिया।”
10 वह यह भी फ़रमाता है,
“ऐ रब, तूने इब्तिदा में दुनिया की बुनियाद रखी,
और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।
11 यह तो तबाह हो जाएंगे,
लेकिन तू क़ायम रहेगा।
यह सब लिबास की तरह घिस फट जाएंगे
12 और तू इन्हें चादर की तरह लपेटेगा,
पुराने कपड़े की तरह यह बदले जाएंगे।
लेकिन तू वही का वही रहता है,
और तेरी ज़िंदगी कभी ख़त्म नहीं होती।”
13 अल्लाह ने कभी भी अपने किसी फ़रिश्ते से यह बात न कही,
“मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को
तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।”

---
* **1:3** या नक़्श।

14 फिर फ़रिश्ते क्या हैं? वह तो सब ख़िदमतगुज़ार रूहें हैं जिन्हें अल्लाह उनकी ख़िदमत करने के लिए भेज देता
है जिन्हें मीरास में नजात पानी है।

2

नजात की अज़मत

1 इसलिए लाज़िम है कि हम और ज़्यादा ध्यान से कलामे-मुक़द्दस की उन बातों पर ग़ौर करें जो हमने सुन ली हैं।
ऐसा न हो कि हम समुंदर पर बेक़ाबू कश्ती की तरह बेमक़सद इधर उधर फिरें। 2 जो कलाम फ़रिश्तों ने इनसान तक
पहुँचाया वह तो अनमिट रहा, और जिससे भी कोई ख़ता या नाफ़रमानी हुई उसे उस की मुनासिब सज़ा मिली। 3 तो फिर
हम किस तरह अल्लाह के ग़ज़ब से बच सकेंगे अगर हम मसीह की इतनी अज़ीम नजात को नज़रंदाज़ करें? पहले
ख़ुदावंद ने ख़ुद इस नजात का एलान किया, और फिर ऐसे लोगों ने हमारे पास आकर इसकी तसदीक़ की जिन्होंने
उसे सुन लिया था। 4 साथ साथ अल्लाह ने इस बात की इस तरह तसदीक़ भी की कि उसने अपनी मरज़ी के मुताबिक़
इलाही निशान, मोजिज़े और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ज़ोरदार काम दिखाए और रूहुल-क़ुद्स की नेमतें लोगों में तक़सीम
कीं।

मसीह का नजातबख़्श काम

5 अब ऐसा है कि अल्लाह ने मज़कूरा आनेवाली दुनिया को फ़रिश्तों के ताबे नहीं किया। 6 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस
में किसी ने कहीं यह गवाही दी है,

“इनसान कौन है कि तू उसे याद करे
या आदमज़ाद कि तू उसका ख़याल रखे?
7 तूने उसे थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम कर दिया,
तूने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहनाकर
8 सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया।”

जब लिखा है कि सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया गया तो इसका मतलब है कि कोई चीज़ न रही जो उसके
ताबे नहीं है। बेशक हमें हाल में यह बात नज़र नहीं आती कि सब कुछ उसके ताबे है, 9 लेकिन हम उसे ज़रूर देखते
हैं जो “थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम” था यानी ईसा को जिसे उस की मौत तक के दुख की वजह से “जलाल
और इज़्ज़त का ताज” पहनाया गया है। हाँ, अल्लाह के फ़ज़ल से उसने सबकी ख़ातिर मौत बरदाश्त की। 10 क्योंकि
यही मुनासिब था कि अल्लाह जिसके लिए और जिसके वसीले से सब कुछ है यों बहुत-से बेटों को अपने जलाल में
शरीक करे कि वह उनकी नजात के बानी ईसा को दुख उठाने से कामिलियत तक पहुँचाए।

11 ईसा और वह जिन्हें वह मख़सूसो-मुक़द्दस कर देता है दोनों का एक ही बाप है। यही वजह है कि ईसा यह कहने
से नहीं शर्माता कि मुक़द्दसीन मेरे भाई हैं। 12 मसलन वह अल्लाह से कहता है,

“मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का एलान करूँगा,
जमात के दरमियान ही तेरी मद्हसराई करूँगा।”

13 वह यह भी कहता है, “मैं उस पर भरोसा रखूँगा।” और फिर “मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे जो अल्लाह ने
मुझे दिए हैं।”

14 अब चूँकि यह बच्चे गोश्त-पोस्त और ख़ून के इनसान हैं इसलिए ईसा ख़ुद उनकी मानिंद बन गया और उनकी
इनसानी फ़ितरत में शरीक हुआ। क्योंकि इस तरह ही वह अपनी मौत से मौत के मालिक इबलीस को तबाह कर सका,
15 और इस तरह ही वह उन्हें छुड़ा सका जो मौत से डरने की वजह से ज़िंदगी-भर ग़ुलामी में थे। 16 ज़ाहिर है कि
जिनकी मदद वह करता है वह फ़रिश्ते नहीं हैं बल्कि इब्राहीम की औलाद। 17 इसलिए लाज़िम था कि वह हर लिहाज़
से अपने भाइयों की मानिंद बन जाए। सिर्फ़ इससे उसका यह मक़सद पूरा हो सका कि वह अल्लाह के हुज़ूर एक रहीम
और वफ़ादार इमामे-आज़म बनकर लोगों के गुनाहों का कफ़्फ़ारा दे सके। 18 और अब वह उनकी मदद कर सकता है
जो आज़माइश में उलझे हुए हैं, क्योंकि उस की भी आज़माइश हुई और उसने ख़ुद दुख उठाया है।

3

ईसा मूसा से बड़ा है

1 मुक़द्दस भाइयो, जो मेरे साथ अल्लाह के बुलाए हुए हैं! ईसा पर ग़ौरो-ख़ौज़ करते रहें जो अल्लाह का पैग़ंबर और
इमामे-आज़म है और जिसका हम इक़रार करते हैं। 2 ईसा अल्लाह का वफ़ादार रहा जब उसने उसे यह काम करने के
लिए मुक़र्रर किया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मूसा भी वफ़ादार रहा जब अल्लाह का पूरा घर उसके सुपुर्द किया

गया। 3 अब जो किसी घर को तामीर करता है उसे घर की निसबत ज़्यादा इज़्ज़त हासिल होती है। इसी तरह ईसा मूसा
की निसबत ज़्यादा इज़्ज़त के लायक़ है। 4 क्योंकि हर घर को किसी न किसी ने बनाया होता है, जबकि अल्लाह ने
सब कुछ बनाया है। 5 मूसा तो अल्लाह के पूरे घर में ख़िदमत करते वक़्त वफ़ादार रहा, लेकिन मुलाज़िम की हैसियत से
ताकि कलामे-मुक़द्दस की आनेवाली बातों की गवाही देता रहे। 6 मसीह फ़रक़ है। उसे फ़रज़ंद की हैसियत से अल्लाह
के घर पर इख़्तियार है और इसी में वह वफ़ादार है। हम उसका घर हैं बशर्तेकि हम अपनी दिलेरी और वह उम्मीद
क़ायम रखें जिस पर हम फ़ख़र करते हैं।

अल्लाह की क़ौम के लिए सुकून

7 चुनाँचे जिस तरह रूहुल-क़ुद्स फ़रमाता है,
“अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो
8 तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह बग़ावत के दिन हुआ,
जब तुम्हारे बापदादा ने रेगिस्तान में मुझे आज़माया।
9 वहाँ उन्होंने मुझे आज़माया और जाँचा,
हालाँकि उन्होंने चालीस साल के दौरान मेरे काम देख लिए थे।
10 इसलिए मुझे उस नसल पर ग़ुस्सा आया और मैं बोला,
‘उनके दिल हमेशा सहीह राह से हट जाते हैं
और वह मेरी राहें नहीं जानते।’
11 अपने ग़ज़ब में मैंने क़सम खाई,
‘यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता’।”
12 भाइयो, ख़बरदार रहें ताकि आपमें से किसी का दिल बुराई और कुफ़्र से भरकर ज़िंदा ख़ुदा से बरगश्ता न हो
जाए। 13 इसके बजाए जब तक अल्लाह का यह फ़रमान क़ायम है रोज़ाना एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें ताकि
आपमें से कोई भी गुनाह के फ़रेब में आकर सख़्तदिल न हो। 14 बात यह है कि हम मसीह के शरीके-कार बन गए हैं।
लेकिन इस शर्त पर कि हम आख़िर तक वह एतमाद मज़बूती से क़ायम रखें जो हम आग़ाज़ में रखते थे।
15 मज़कूरा कलाम में लिखा है,
“अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो,
तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह बग़ावत के दिन हुआ।”
16 यह कौन थे जो अल्लाह की आवाज़ सुनकर बाग़ी हो गए? वह सब जिन्हें मूसा मिसर से निकालकर बाहर
लाया। 17 और यह कौन थे जिनसे अल्लाह चालीस साल के दौरान नाराज़ रहा? यह वही थे जिन्होंने गुनाह किया
और जो रेगिस्तान में मरकर वहीं पड़े रहे। 18 अल्लाह ने किनकी बाबत क़सम खाई कि “यह कभी भी उस मुल्क
में दाख़िल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून देता”? ज़ाहिर है उनकी बाबत जिन्होंने नाफ़रमानी की थी। 19 चुनाँचे हम
देखते हैं कि वह ईमान न रखने की वजह से मुल्क में दाख़िल न हो सके।

4

1 देखें, अब तक अल्लाह का यह वादा क़ायम है, और अब तक हम सुकून के मुल्क में दाख़िल हो सकते हैं।
इसलिए आएँ, हम ख़बरदार रहें। ऐसा न हो कि आपमें से कोई पीछे रहकर उसमें दाख़िल न होने पाए। 2 क्योंकि हमें
भी उनकी तरह एक ख़ुशख़बरी सुनाई गई। लेकिन यह पैग़ाम उनके लिए बेफ़ायदा था, क्योंकि वह उसे सुनकर ईमान
न लाए। 3 उनकी निसबत हम जो ईमान लाए हैं सुकून के इस मुल्क में दाख़िल हो सकते हैं।
ग़रज़, यह ऐसा ही है जिस तरह अल्लाह ने फ़रमाया,
“अपने ग़ज़ब में मैंने क़सम खाई,
‘यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता’।”
अब ग़ौर करें कि उसने यह कहा अगरचे उसका काम दुनिया की तख़लीक़ पर इख़्तिताम तक पहुँच गया था।
4 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में सातवें दिन के बारे में लिखा है, “सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तकमील तक पहुँच
गया। इससे फ़ारिग़ होकर उसने आराम किया।” 5 अब इसका मुक़ाबला मज़कूरा आयत से करें,
“यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे
जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।”

6 जिन्होंने पहले अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनी उन्हें नाफ़रमान होने की वजह से यह सुकून न मिला। तो भी यह बात
क़ायम रही कि कुछ तो सुकून के इस मुल्क में दाख़िल हो जाएंगे। 7 यह मद्दे-नज़र रखकर अल्लाह ने एक और दिन
मुक़र्रर किया, मज़कूरा "आज" का दिन। कई सालों के बाद ही उसने दाऊद की मारिफ़त वह बात की जिस पर हम
ग़ौर कर रहे हैं,

"अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो
तो अपने दिलों को सख़्त न करो।"

8 जब यशुअ उन्हें मुल्के-कनान में लाया तब उसने इसराईलियों को यह सुकून न दिया, वरना अल्लाह इसके बाद
के किसी और दिन का ज़िक्र न करता। 9 चुनाँचे अल्लाह की क़ौम के लिए एक ख़ास सुकून बाक़ी रह गया है, ऐसा
सुकून जो अल्लाह के सातवें दिन आराम करने से मुताबिक़त रखता है। 10 क्योंकि जो भी वह सुकून पाता है जिसका
वादा अल्लाह ने किया वह अल्लाह की तरह अपने कामों से फ़ारिग़ होकर आराम करेगा। 11 इसलिए आएँ, हम इस
सुकून में दाख़िल होने की पूरी कोशिश करें ताकि हममें से कोई भी बापदादा के नाफ़रमान नमूने पर चलकर गुनाह में न
गिर जाए।

12 क्योंकि अल्लाह का कलाम ज़िंदा, मुअस्सिर और हर दोधारी तलवार से ज़्यादा तेज़ है। वह इनसान में से
गुज़रकर उस की जान रूह से और उसके जोड़ों को गूदे से अलग कर लेता है। वही दिल के ख़यालात और सोच को
जाँचकर उन पर फ़ैसला करने के क़ाबिल है। 13 कोई मख़लूक़ भी अल्लाह की नज़र से नहीं छुप सकती। उस की
आँखों के सामने जिसके जवाबदेह हम होते हैं सब कुछ अयाँ और बेनिक़ाब है।

ईसा हमारा इमामे-आज़म है

14 ग़रज़ आएँ, हम उस ईमान से लिपटे रहें जिसका इक़रार हम करते हैं। क्योंकि हमारा ऐसा अज़ीम इमामे-आज़म
है जो आसमानों में से गुज़र गया यानी ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद। 15 और वह ऐसा इमामे-आज़म नहीं है जो हमारी
कमज़ोरियों को देखकर हमदर्दी न दिखाए बल्कि अगरचे वह बेगुनाह रहा तो भी हमारी तरह उसे हर क़िस्म की
आज़माइश का सामना करना पड़ा। 16 अब आएँ, हम पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के तख़्त के सामने हाज़िर हो जाएँ
जहाँ फ़ज़ल पाया जाता है। क्योंकि वहीं हम वह रहम और फ़ज़ल पाएँगे जो ज़रूरत के वक़्त हमारी मदद कर सकता
है।

5

1 अब इनसानों में से चुने गए इमामे-आज़म को इसलिए मुक़र्रर किया जाता है कि वह उनकी ख़ातिर अल्लाह की
ख़िदमत करे, ताकि वह गुनाहों के लिए नज़राने और क़ुरबानियाँ पेश करे। 2 वह जाहिल और आवारा लोगों के साथ
नरम सुलूक रख सकता है, क्योंकि वह ख़ुद कई तरह की कमज़ोरियों की गिरिफ़्त में होता है। 3 यही वजह है कि
उसे न सिर्फ़ क़ौम के गुनाहों के लिए बल्कि अपने गुनाहों के लिए भी क़ुरबानियाँ चढ़ानी पड़ती हैं। 4 और कोई अपनी
मरज़ी से इमामे-आज़म का पुरवक़ार ओहदा नहीं अपना सकता बल्कि लाज़िम है कि अल्लाह उसे हारून की तरह
बुलाकर मुक़र्रर करे।

5 इसी तरह मसीह ने भी अपनी मरज़ी से इमामे-आज़म का पुरवक़ार ओहदा नहीं अपनाया। इसके बजाए अल्लाह
ने उससे कहा,

"तू मेरा फ़रज़ंद है,
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।"

6 कहीं और वह फ़रमाता है,

"तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क़ था।"

7 जब ईसा इस दुनिया में था तो उसने ज़ोर ज़ोर से पुकारकर और आँसू बहा बहाकर उसे दुआएँ और इल्तिजाएँ पेश
कीं * जो उसे मौत से बचा सकता था। और अल्लाह ने उस की सुनी, क्योंकि वह ख़ुदा का ख़ौफ़ रखता था। 8 वह
अल्लाह का फ़रज़ंद तो था, तो भी उसने दुख उठाने से फ़रमाँबरदारी सीखी। 9 जब वह कामिलियत तक पहुँच गया तो
वह उन सबकी अबदी नजात का सरचश्मा बन गया जो उस की सुनते हैं। 10 उस वक़्त अल्लाह ने उसे इमामे-आज़म
भी मुतैयिन किया, ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क़ था।

ईमान तर्क करने की बाबत आगाही

* **5:7** यानी इमाम की हैसियत से उसने यह दुआएँ और इल्तिजाएँ क़ुरबानी के तौर पर पेश कीं।

11 इसके बारे में हम मज़ीद बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन हम मुश्किल से इसकी तशरीह कर सकते हैं, क्योंकि
आप सुनने में सुस्त हैं। 12 असल में इतना वक़्त गुज़र गया है कि अब आपको ख़ुद उस्ताद होना चाहिए। अफ़सोस कि
ऐसा नहीं है बल्कि आपको इसकी ज़रूरत है कि कोई आपके पास आकर आपको अल्लाह के कलाम की बुनियादी
सच्चाइयाँ दुबारा सिखाए। आप अब तक ठोस खाना नहीं खा सकते बल्कि आपको दूध की ज़रूरत है। 13 जो दूध ही
पी सकता है वह अभी छोटा बच्चा ही है और वह रास्तबाज़ी की तालीम से नावाक़िफ़ है। 14 इसके मुक़ाबले में ठोस
खाना बालिग़ों के लिए है जिन्होंने अपनी बलूग़त के बाइस अपनी रूहानी बसारत को इतनी तरबियत दी है कि वह
भलाई और बुराई में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

6

1 इसलिए आएँ, हम मसीह के बारे में बुनियादी तालीम को छोड़कर बलूग़त की तरफ़ आगे बढ़ें। क्योंकि ऐसी बातें
दोहराने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए जिनसे ईमान की बुनियाद रखी जाती है, मसलन मौत तक पहुँचानेवाले काम से
तौबा, 2 बपतिस्मा क्या है, किसी पर हाथ रखने की तालीम, मुरदों के जी उठने और अबदी सज़ा पाने की तालीम।
3 चुनाँचे अल्लाह की मरज़ी हुई तो हम यह छोड़कर आगे बढ़ेंगे।

4 नामुमकिन है कि उन्हें बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाया जाए जिन्होंने अपना ईमान तर्क कर दिया हो। उन्हें
तो एक बार अल्लाह के नूर में लाया गया था, उन्होंने आसमान की नेमत चख ली थी, वह रूहुल-क़ुद्‌स में शरीक हुए,
5 उन्होंने अल्लाह के कलाम की भलाई और आनेवाले ज़माने की क़ुव्वतों का तजरबा किया था। 6 और फिर उन्होंने
अपना ईमान तर्क कर दिया! ऐसे लोगों को बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाना नामुमकिन है। क्योंकि ऐसा करने
से वह अल्लाह के फ़रज़ंद को दुबारा मसलूब करके उसे लान-तान का निशाना बना देते हैं।

7 अल्लाह उस ज़मीन को बरकत देता है जो अपने पर बार बार पड़नेवाली बारिश को जज़्ब करके ऐसी फ़सल पैदा
करती है जो खेतीबाड़ी करनेवाले के लिए मुफ़ीद हो। 8 लेकिन अगर वह सिर्फ़ ख़ारदार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करे
तो वह बेकार है और इस ख़तरे में है कि उस पर लानत भेजी जाए। अंजामे-कार उस पर का सब कुछ जलाया जाएगा।

9 अज़ीज़ो, गो हम इस तरह की बातें कर रहे हैं तो भी हमारा एतमाद यह है कि आपको वह बेहतरीन बरकतें हासिल
हैं जो नजात से मिलती हैं। 10 क्योंकि अल्लाह बेइनसाफ़ नहीं है। वह आपका काम और वह मुहब्बत नहीं भूलेगा जो
आपने उसका नाम लेकर ज़ाहिर की जब आपने मुक़द्दसीन की ख़िदमत की बल्कि आज तक कर रहे हैं। 11 लेकिन
हमारी बड़ी ख़ाहिश यह है कि आपमें से हर एक इसी सरगरमी का इज़हार आख़िर तक करता रहे ताकि जिन बातों की
उम्मीद आप रखते हैं वह वाक़ई पूरी हो जाएँ। 12 हम नहीं चाहते कि आप सुस्त हो जाएँ बल्कि यह कि आप उनके
नमूने पर चलें जो ईमान और सब्र से वह कुछ मीरास में पा रहे हैं जिसका वादा अल्लाह ने किया है।

अल्लाह का यक़ीनी वादा

13 जब अल्लाह ने क़सम खाकर इब्राहीम से वादा किया तो उसने अपनी ही क़सम खाकर यह वादा किया। क्योंकि
कोई और नहीं था जो उससे बड़ा था जिसकी क़सम वह खा सकता। 14 उस वक़्त उसने कहा, "मैं ज़रूर तुझे बहुत
बरकत दूँगा, और मैं यक़ीनन तुझे कसरत की औलाद दूँगा।" 15 इस पर इब्राहीम ने सब्र से इंतज़ार करके वह कुछ पाया
जिसका वादा किया गया था। 16 क़सम खाते वक़्त लोग उस की क़सम खाते हैं जो उनसे बड़ा होता है। इस तरह से
क़सम में बयानकरदा बात की तसदीक़ बहस-मुबाहसा की हर गुंजाइश को ख़त्म कर देती है। 17 अल्लाह ने भी क़सम
खाकर अपने वादे की तसदीक़ की। क्योंकि वह अपने वादे के वारिसों पर साफ़ ज़ाहिर करना चाहता था कि उसका
इरादा कभी नहीं बदलेगा। 18 ग़रज़, यह दो बातें क़ायम रही हैं, अल्लाह का वादा और उस की क़सम। वह इन्हें न
तो बदल सकता न इनके बारे में झूट बोल सकता है। यों हम जिन्होंने उसके पास पनाह ली है बड़ी तसल्ली पाकर
उस उम्मीद को मज़बूती से थामे रख सकते हैं जो हमें पेश की गई है। 19 क्योंकि यह उम्मीद हमारी जान के लिए
मज़बूत लंगर है। और यह आसमानी बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे में से गुज़रकर उसमें दाख़िल होती
है। 20 वहीं ईसा हमारे आगे आगे जाकर हमारी ख़ातिर दाख़िल हुआ है। यों वह मलिके-सिद्‌क़ की मानिंद हमेशा के
लिए इमामे-आज़म बन गया है।

7

मलिके-सिद्‌क़

1 यह मलिके-सिद्‌क़, सालिम का बादशाह और अल्लाह तआला का इमाम था। जब इब्राहीम चार बादशाहों को
शिकस्त देने के बाद वापस आ रहा था तो मलिके-सिद्‌क़ उससे मिला और उसे बरकत दी। 2 इस पर इब्राहीम ने उसे

तमाम लूट के माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। अब मलिके-सिद्क़ का मतलब "रास्तबाज़ी का बादशाह" है। दूसरे,
"सालिम का बादशाह" का मतलब "सलामती का बादशाह" है। 3 न उसका बाप या माँ है, न कोई नसबनामा। उस
की ज़िंदगी का न तो आग़ाज़ है, न इख़्तिताम। अल्लाह के फ़रज़ंद की तरह वह अबद तक इमाम रहता है।
4 ग़ौर करें कि वह कितना अज़ीम था। हमारे बापदादा इब्राहीम ने उसे लूटे हुए माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। 5 अब
शरीअत तलब करती है कि लावी की वह औलाद जो इमाम बन जाती है क़ौम यानी अपने भाइयों से पैदावार का दसवाँ
हिस्सा ले, हालाँकि उनके भाई इब्राहीम की औलाद हैं। 6 लेकिन मलिके-सिद्क़ लावी की औलाद में से नहीं था। तो
भी उसने इब्राहीम से दसवाँ हिस्सा लेकर उसे बरकत दी जिससे अल्लाह ने वादा किया था। 7 इसमें कोई शक नहीं कि
कमहैसियत शख़्स को उससे बरकत मिलती है जो ज़्यादा हैसियत का हो। 8 जहाँ लावी इमामों का ताल्लुक़ है फ़ानी
इनसान दसवाँ हिस्सा लेते हैं। लेकिन मलिके-सिद्क़ के मामले में यह हिस्सा उसको मिला जिसके बारे में गवाही दी गई
है कि वह ज़िंदा रहता है। 9 यह भी कहा जा सकता है कि जब इब्राहीम ने माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया तो लावी ने
उसके ज़रीए भी यह हिस्सा दिया, हालाँकि वह ख़ुद दसवाँ हिस्सा लेता है। 10 क्योंकि गो लावी उस वक़्त पैदा नहीं
हुआ था तो भी वह एक तरह से इब्राहीम के जिस्म में मौजूद था जब मलिके-सिद्क़ उससे मिला।
11 अगर लावी की कहानत (जिस पर शरीअत मबनी थी) कामिलियत पैदा कर सकती तो फिर एक और क़िस्म के
इमाम की क्या ज़रूरत होती, उस की जो हारून जैसा न हो बल्कि मलिके-सिद्क़ जैसा? 12 क्योंकि जब भी कहानत
बदल जाती है तो लाज़िम है कि शरीअत में भी तबदीली आए। 13 और हमारा ख़ुदावंद जिसके बारे में यह बयान किया
गया है वह एक फ़रक़ क़बीले का फ़रद था। उसके क़बीले के किसी भी फ़रद ने इमाम की ख़िदमत अदा नहीं की।
14 क्योंकि साफ़ मालूम है कि ख़ुदावंद मसीह यहूदाह क़बीले का फ़रद था, और मूसा ने इस क़बीले को इमामों की
ख़िदमत में शामिल न किया।

मलिके-सिद्क़ जैसा एक और इमाम

15 मामला मज़ीद साफ़ हो जाता है। एक फ़रक़ इमाम ज़ाहिर हुआ है जो मलिके-सिद्क़ जैसा है। 16 वह लावी के
क़बीले का फ़रद होने से इमाम न बना जिस तरह शरीअत तक़ाज़ा करती थी, बल्कि वह लाफ़ानी ज़िंदगी की क़ुव्वत
ही से इमाम बन गया। 17 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है,
"तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क़ था।"
18 यों पुराने हुक्म को मनसूख़ कर दिया जाता है, क्योंकि वह कमज़ोर और बेकार था 19 (मूसा की शरीअत तो
किसी चीज़ को कामिल नहीं बना सकती थी) और अब एक बेहतर उम्मीद मुहैया की गई है जिससे हम अल्लाह के
क़रीब आ जाते हैं।
20 और यह नया निज़ाम अल्लाह की क़सम से क़ायम हुआ। ऐसी कोई क़सम न खाई गई जब दूसरे इमाम बने।
21 लेकिन ईसा एक क़सम के ज़रीए इमाम बन गया जब अल्लाह ने फ़रमाया,
"रब ने क़सम खाई है
और इससे पछताएगा नहीं,
'तू अबद तक इमाम है'।"
22 इस क़सम की वजह से ईसा एक बेहतर अहद की ज़मानत देता है।
23 एक और फ़रक़, पुराने निज़ाम में बहुत-से इमाम थे, क्योंकि मौत ने हर एक की ख़िदमत महदूद किए रखी।
24 लेकिन चूँकि ईसा अबद तक ज़िंदा है इसलिए उस की कहानत कभी भी ख़त्म नहीं होगी। 25 यों वह उन्हें अबदी
नजात दे सकता है जो उसके वसीले से अल्लाह के पास आते हैं, क्योंकि वह अबद तक ज़िंदा है और उनकी शफ़ाअत
करता रहता है।
26 हमें ऐसे ही इमामे-आज़म की ज़रूरत थी। हाँ, ऐसा इमाम जो मुक़द्दस, बेक़ुसूर, बेदाग़, गुनाहगारों से अलग और
आसमानों से बुलंद हुआ है। 27 उसे दूसरे इमामों की तरह इसकी ज़रूरत नहीं कि हर रोज़ क़ुरबानियाँ पेश करे, पहले
अपने लिए फिर क़ौम के लिए। बल्कि उसने अपने आपको पेश करके अपनी इस क़ुरबानी से उनके गुनाहों को एक
बार सदा के लिए मिटा दिया। 28 मूसवी शरीअत ऐसे लोगों को इमामे-आज़म मुक़र्रर करती है जो कमज़ोर हैं। लेकिन
शरीअत के बाद अल्लाह की क़सम फ़रज़ंद को इमामे-आज़म मुक़र्रर करती है, और यह फ़रज़ंद अबद तक कामिल है।

8

ईसा हमारा इमामे-आज़म

[1] जो कुछ हम कह रहे हैं उस की मरकज़ी बात यह है, हमारा एक ऐसा इमामे-आज़म है जो आसमान पर जलाली
ख़ुदा के तख़्त के दहने हाथ बैठा है। [2] वहाँ वह मक़दिस में ख़िदमत करता है, उस हक़ीक़ी मुलाक़ात के ख़ैमे में जिसे
इनसानी हाथों ने खड़ा नहीं किया बल्कि रब ने।

[3] हर इमामे-आज़म को नज़राने और क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए मुक़र्रर किया जाता है। इसलिए लाज़िम है कि
हमारे इमामे-आज़म के पास भी कुछ हो जो वह पेश कर सके। [4] अगर यह दुनिया में होता तो इमामे-आज़म न होता,
क्योंकि यहाँ इमाम तो हैं जो शरीअत के मतलूबा नज़राने पेश करते हैं। [5] जिस मक़दिस में वह ख़िदमत करते हैं वह
उस मक़दिस की सिर्फ़ नक़ली सूरत और साया है जो आसमान पर है। यही वजह है कि अल्लाह ने मूसा को मुलाक़ात
का ख़ैमा बनाने से पहले आगाह करके यह कहा, "ग़ौर कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए जो मैं
तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।" [6] लेकिन जो ख़िदमत ईसा को मिल गई है वह दुनिया के इमामों की ख़िदमत से कहीं
बेहतर है, उतनी बेहतर जितना वह अहद जिसका दरमियानी ईसा है पुराने अहद से बेहतर है। क्योंकि यह अहद बेहतर
वादों की बुनियाद पर बाँधा गया।

[7] अगर पहला अहद बेइलज़ाम होता तो फिर नए अहद की ज़रूरत न होती। [8] लेकिन अल्लाह को अपनी क़ौम पर
इलज़ाम लगाना पड़ा। उसने कहा,

"रब का फ़रमान है, ऐसे दिन आ रहे हैं
जब मैं इसराईल के घराने और यहूदाह के घराने से एक नया अहद बाँधूँगा।
[9] यह उस अहद की मानिंद नहीं होगा
जो मैंने उनके बापदादा के साथ
उस दिन बाँधा था जब मैं उनका हाथ पकड़कर
उन्हें मिसर से निकाल लाया।
क्योंकि वह उस अहद के वफ़ादार न रहे
जो मैंने उनसे बाँधा था।
नतीजे में मेरी उनके लिए फ़िकर न रही।
[10] ख़ुदावंद फ़रमाता है कि
जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद उनसे बाँधूँगा
उसके तहत मैं अपनी शरीअत
उनके ज़हनों में डालकर
उनके दिलों पर कंदा करूँगा।
तब मैं ही उनका ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी क़ौम होंगे।
[11] उस वक़्त से इसकी ज़रूरत नहीं रहेगी
कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को तालीम देकर कहे,
'रब को जान लो।'
क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक
सब मुझे जानेंगे,
[12] क्योंकि मैं उनका क़ुसूर मुआफ़ करूँगा
और आइंदा उनके गुनाहों को याद नहीं करूँगा।"

[13] इन अलफ़ाज़ में अल्लाह एक नए अहद का ज़िक्र करता है और यों पुराने अहद को मतरूक क़रार देता है। और
जो मतरूक और पुराना है उसका अंजाम क़रीब ही है।

9

दुनियावी और आसमानी इबादत

[1] जब पहला अहद बाँधा गया तो इबादत करने के लिए हिदायात दी गईं। ज़मीन पर एक मक़दिस भी बनाया गया,
[2] एक ख़ैमा जिसके पहले कमरे में शमादान, मेज़ और उस पर पड़ी मख़सूस की गई रोटियाँ थीं। उसका नाम "मुक़द्दस
कमरा" था। [3] उसके पीछे एक और कमरा था जिसका नाम "मुक़द्दसतरीन कमरा" था। पहले और दूसरे कमरे के
दरमियान वाक़े दरवाज़े पर परदा लगा था। [4] इस पिछले कमरे में बख़ूर जलाने के लिए सोने की क़ुरबानगाह और अहद
का संदूक़ था। अहद के संदूक़ पर सोना मँढा हुआ था और उसमें तीन चीज़ें थीं : सोने का मरतबान जिसमें मन भरा
था, हारून का वह असा जिससे कोंपलें फूट निकली थीं और पत्थर की वह दो तख़्तियाँ जिन पर अहद के अहकाम

लिखे थे। 5 संदूक़ पर इलाही जलाल के दो करूबी फ़रिश्ते लगे थे जो संदूक़ के ढकने को साया देते थे जिसका नाम
“कफ़्फ़ारा का ढकना” था। लेकिन इस जगह पर हम सब कुछ मज़ीद तफ़सील से बयान नहीं करना चाहते।

6 यह चीज़ें इसी तरतीब से रखी जाती हैं। जब इमाम अपनी ख़िदमत के फ़रायज़ अदा करते हैं तो बाक़ायदगी से
पहले कमरे में जाते हैं। 7 लेकिन सिर्फ़ इमामे-आज़म ही दूसरे कमरे में दाख़िल होता है, और वह भी साल में सिर्फ़ एक
दफ़ा। जब भी वह जाता है वह अपने साथ ख़ून लेकर जाता है जिसे वह अपने और क़ौम के लिए पेश करता है ताकि
वह गुनाह मिट जाएँ जो लोगों ने ग़ैरइरादी तौर पर किए होते हैं। 8 इससे रूहुल-क़ुद्स दिखाता है कि मुक़द्दसतरीन कमरे
तक रसाई उस वक़्त तक ज़ाहिर नहीं की गई थी जब तक पहला कमरा इस्तेमाल में था। 9 यह मजाज़न मौजूदा ज़माने
की तरफ़ इशारा है। इसका मतलब यह है कि जो नज़राने और क़ुरबानियाँ पेश की जा रही हैं वह परस्तार के ज़मीर को
पाक-साफ़ करके कामिल नहीं बना सकतीं। 10 क्योंकि इनका ताल्लुक़ सिर्फ़ खाने-पीनेवाली चीज़ों और ग़ुस्ल की
मुख़्तलिफ़ रस्मों से होता है, ऐसी ज़ाहिरी हिदायात जो सिर्फ़ नए निज़ाम के आने तक लागू हैं।

11 लेकिन अब मसीह आ चुका है, उन अच्छी चीज़ों का इमामे-आज़म जो अब हासिल हुई हैं। जिस ख़ैमे में वह
ख़िदमत करता है वह कहीं ज़्यादा अज़ीम और कामिल है। यह ख़ैमा इनसानी हाथों से नहीं बनाया गया यानी यह इस
कायनात का हिस्सा नहीं है। 12 जब मसीह एक बार सदा के लिए ख़ैमे के मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हुआ तो उसने
क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए बकरों और बछड़ों का ख़ून इस्तेमाल न किया। इसके बजाए उसने अपना ही ख़ून पेश
किया और यों हमारे लिए अबदी नजात हासिल की। 13 पुराने निज़ाम में बैल-बकरों का ख़ून और जवान गाय की राख
नापाक लोगों पर छिड़के जाते थे ताकि उनके जिस्म पाक-साफ़ हो जाएँ। 14 अगर इन चीज़ों का यह असर था तो फिर
मसीह के ख़ून का क्या ज़बरदस्त असर होगा! अज़ली रूह के ज़रीए उसने अपने आपको बेदाग़ क़ुरबानी के तौर पर
पेश किया। यों उसका ख़ून हमारे ज़मीर को मौत तक पहुँचानेवाले कामों से पाक-साफ़ करता है ताकि हम ज़िंदा ख़ुदा
की ख़िदमत कर सकें।

15 यही वजह है कि मसीह एक नए अहद का दरमियानी है। मक़सद यह था कि जितने लोगों को अल्लाह ने बुलाया
है उन्हें अल्लाह की मौऊदा और अबदी मीरास मिले। और यह सिर्फ़ इसलिए मुमकिन हुआ है कि मसीह ने मरकर
फ़िद्या दिया ताकि लोग उन गुनाहों से छुटकारा पाएँ जो उनसे उस वक़्त सरज़द हुए जब वह पहले अहद के तहत थे।

16 जहाँ वसियत है वहाँ ज़रूरी है कि वसियत करनेवाले की मौत की तसदीक़ की जाए। 17 क्योंकि जब तक वसियत
करनेवाला ज़िंदा हो वसियत बेअसर होती है। इसका असर वसियत करनेवाले की मौत ही से शुरू होता है। 18 यही
वजह है कि पहला अहद बाँधते वक़्त भी ख़ून इस्तेमाल हुआ। 19 क्योंकि पूरी क़ौम को शरीअत का हर हुक्म सुनाने
के बाद मूसा ने बछड़ों का ख़ून पानी से मिलाकर उसे ज़ूफ़े के गुच्छे और क़िरमिज़ी रंग के धागे के ज़रीए शरीअत की
किताब और पूरी क़ौम पर छिड़का। 20 उसने कहा, “यह ख़ून उस अहद की तसदीक़ करता है जिसकी पैरवी करने
का हुक्म अल्लाह ने तुम्हें दिया है।” 21 इसी तरह मूसा ने यह ख़ून मुलाक़ात के ख़ैमे और इबादत के तमाम सामान पर
छिड़का। 22 न सिर्फ़ यह बल्कि शरीअत तक़ाज़ा करती है कि तक़रीबन हर चीज़ को ख़ून ही से पाक-साफ़ किया जाए
बल्कि अल्लाह के हुज़ूर ख़ून पेश किए बग़ैर मुआफ़ी मिल ही नहीं सकती।

मसीह की क़ुरबानी गुनाहों को मिटा देती है

23 ग़रज़, लाज़िम था कि यह चीज़ें जो आसमान की असली चीज़ों की नक़ली सूरतें हैं पाक-साफ़ की जाएँ। लेकिन
आसमानी चीज़ें ख़ुद ऐसी क़ुरबानियों का मुतालबा करती हैं जो इनसे कहीं बेहतर हों। 24 क्योंकि मसीह सिर्फ़ इनसानी
हाथों से बने मक़दिस में दाख़िल नहीं हुआ जो असली मक़दिस की सिर्फ़ नक़ली सूरत थी बल्कि वह आसमान में ही
दाख़िल हुआ ताकि अब से हमारी ख़ातिर अल्लाह के सामने हाज़िर हो। 25 दुनिया का इमामे-आज़म तो सालाना किसी
और (यानी जानवर) का ख़ून लेकर मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल होता है। लेकिन मसीह इसलिए आसमान में दाख़िल
न हुआ कि वह अपने आपको बार बार क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। 26 अगर ऐसा होता तो उसे दुनिया की तख़लीक़
से लेकर आज तक बहुत दफ़ा दुख सहना पड़ता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि अब वह ज़मानों के इख़्तिताम पर एक
ही बार सदा के लिए ज़ाहिर हुआ ताकि अपने आपको क़ुरबान करने से गुनाह को दूर करे। 27 एक बार मरना और
अल्लाह की अदालत में हाज़िर होना हर इनसान के लिए मुक़र्रर है। 28 इसी तरह मसीह को भी एक ही बार बहुतों के
गुनाहों को उठाकर ले जाने के लिए क़ुरबान किया गया। दूसरी बार जब वह ज़ाहिर होगा तो गुनाहों को दूर करने के
लिए ज़ाहिर नहीं होगा बल्कि उन्हें नजात देने के लिए जो शिद्दत से उसका इंतज़ार कर रहे हैं।

10

1 मूसवी शरीअत आनेवाली अच्छी और असली चीज़ों की सिर्फ़ नक़ली सूरत और साया है। यह उन चीज़ों की
असली शक्ल नहीं है। इसलिए यह उन्हें कभी भी कामिल नहीं कर सकती जो साल बसाल और बार बार अल्लाह के
हुज़ूर आकर वही क़ुरबानियाँ पेश करते रहते हैं। 2 अगर वह कामिल कर सकती तो क़ुरबानियाँ पेश करने की ज़रूरत
न रहती। क्योंकि इस सूरत में परस्तार एक बार सदा के लिए पाक-साफ़ हो जाते और उन्हें गुनाहगार होने का शऊर
न रहता। 3 लेकिन इसके बजाए यह क़ुरबानियाँ साल बसाल लोगों को उनके गुनाहों की याद दिलाती हैं। 4 क्योंकि
मुमकिन ही नहीं कि बैल-बकरों का ख़ून गुनाहों को दूर करे।

5 इसलिए मसीह दुनिया में आते वक़्त अल्लाह से कहता है,

"तू क़ुरबानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था
लेकिन तूने मेरे लिए एक जिस्म तैयार किया।
6 भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और गुनाह की क़ुरबानियाँ
तुझे पसंद नहीं थीं।
7 फिर मैं बोल उठा, 'ऐ ख़ुदा, मैं हाज़िर हूँ
ताकि तेरी मरज़ी पूरी करूँ,
जिस तरह मेरे बारे में कलामे-मुक़द्दस में * लिखा है'।"

8 पहले मसीह कहता है, "न तू क़ुरबानियाँ, नज़रें, भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ या गुनाह की क़ुरबानियाँ चाहता था,
न उन्हें पसंद करता था" गो शरीअत इन्हें पेश करने का मुतालबा करती है। 9 फिर वह फ़रमाता है, "मैं हाज़िर हूँ ताकि
तेरी मरज़ी पूरी करूँ।" यों वह पहला निज़ाम ख़त्म करके उस की जगह दूसरा निज़ाम क़ायम करता है। 10 और उस
की मरज़ी पूरी हो जाने से हमें ईसा मसीह के बदन के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया है। क्योंकि उसे एक ही
बार सदा के लिए हमारे लिए क़ुरबान किया गया।

11 हर इमाम रोज़ बरोज़ मक़दिस में खड़ा अपनी ख़िदमत के फ़रायज़ अदा करता है। रोज़ाना और बार बार वह वही
क़ुरबानियाँ पेश करता रहता है जो कभी भी गुनाहों को दूर नहीं कर सकतीं। 12 लेकिन मसीह ने गुनाहों को दूर करने
के लिए एक ही क़ुरबानी पेश की, एक ऐसी क़ुरबानी जिसका असर सदा के लिए रहेगा। फिर वह अल्लाह के दहने
हाथ बैठ गया। 13 वहीं वह अब इंतज़ार करता है जब तक अल्लाह उसके दुश्मनों को उसके पाँवों की चौकी न बना
दे। 14 यों उसने एक ही क़ुरबानी से उन्हें सदा के लिए कामिल बना दिया है जिन्हें मुक़द्दस किया जा रहा है।

15 रूहुल-क़ुद्स भी हमें इसके बारे में गवाही देता है। पहले वह कहता है,

16 "रब फ़रमाता है कि
जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद उनसे बाँधूँगा
उसके तहत मैं अपनी शरीअत
उनके दिलों में डालकर
उनके ज़हनों पर कंदा करूँगा।"

17 फिर वह कहता है, "उस वक़्त से मैं उनके गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा।" 18 और जहाँ इन गुनाहों
की मुआफ़ी हुई है वहाँ गुनाहों को दूर करने की क़ुरबानियों की ज़रूरत ही नहीं रही।

आएँ, हम अल्लाह के हुज़ूर आएँ

19 चुनाँचे भाइयो, अब हम ईसा के ख़ून के वसीले से पूरे एतमाद के साथ मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हो सकते
हैं। 20 अपने बदन की क़ुरबानी से ईसा ने उस कमरे के परदे में से गुज़रने का एक नया और ज़िंदगीबख़्श रास्ता खोल
दिया। 21 हमारा एक अज़ीम इमामे-आज़म है जो अल्लाह के घर पर मुक़र्रर है। 22 इसलिए आएँ, हम ख़ुलूसदिली और
ईमान के पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आएँ। क्योंकि हमारे दिलों पर मसीह का ख़ून छिड़का गया है ताकि
हमारे मुजरिम ज़मीर साफ़ हो जाएँ। नीज़, हमारे बदनों को पाक-साफ़ पानी से धोया गया है। 23 आएँ, हम मज़बूती से
उस उम्मीद को थामे रखें जिसका इक़रार हम करते हैं। हम डाँवाँडोल न हो जाएँ, क्योंकि जिसने इस उम्मीद का वादा
किया है वह वफ़ादार है। 24 और आएँ, हम इस पर ध्यान दें कि हम एक दूसरे को किस तरह मुहब्बत दिखाने और नेक
काम करने पर उभार सकें। 25 हम बाहम जमा होने से बाज़ न आएँ, जिस तरह बाज़ की आदत बन गई है। इसके बजाए
हम एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें, ख़ासकर यह बात मद्दे-नज़र रखकर कि ख़ुदावंद का दिन क़रीब आ रहा है।

---

* **10:7** लफ़्ज़ी तरजुमा : किताब के तूमार में।

26 ख़बरदार! अगर हम सच्चाई जान लेने के बाद भी जान-बूझकर गुनाह करते रहें तो मसीह की क़ुरबानी इन
गुनाहों को दूर नहीं कर सकेगी। 27 फिर सिर्फ़ अल्लाह की अदालत की हौलनाक तवक़्क़ो बाक़ी रहेगी, उस भड़कती
हुई आग की जो अल्लाह के मुख़ालिफ़ों को भस्म कर डालेगी। 28 जो मूसा की शरीअत रद्द करता है उस पर रहम नहीं
किया जा सकता बल्कि अगर दो या इससे ज़ायद लोग इस जुर्म की गवाही दें तो उसे सज़ाए-मौत दी जाए। 29 तो फिर
क्या ख़याल है, वह कितनी सख़्त सज़ा के लायक़ होगा जिसने अल्लाह के फ़रज़ंद को पाँवों तले रौंदा? जिसने अहद
का वह ख़ून हक़ीर जाना जिससे उसे मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया था? और जिसने फ़ज़ल के रूह की बेइज़्ज़ती की?
30 क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने फ़रमाया, "इंतक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।" उसने यह भी कहा,
"रब अपनी क़ौम का इनसाफ़ करेगा।" 31 यह एक हौलनाक बात है अगर ज़िंदा ख़ुदा हमें सज़ा देने के लिए पकड़े।
32 ईमान के पहले दिन याद करें जब अल्लाह ने आपको रौशन कर दिया था। उस वक़्त के सख़्त मुक़ाबले में आपको
कई तरह का दुख सहना पड़ा, लेकिन आप साबितक़दम रहे। 33 कभी कभी आपकी बेइज़्ज़ती और अवाम के सामने
ही ईज़ारसानी होती थी, कभी कभी आप उनके साथी थे जिनसे ऐसा सुलूक हो रहा था। 34 जिन्हें जेल में डाला गया
आप उनके दुख में शरीक हुए और जब आपका मालो-मता लूटा गया तो आपने यह बात ख़ुशी से बरदाश्त की। क्योंकि
आप जानते थे कि वह माल हमसे नहीं छीन लिया गया जो पहले की निसबत कहीं बेहतर है और हर सूरत में क़ायम
रहेगा। 35 चुनाँचे अपने इस एतमाद को हाथ से जाने न दें क्योंकि इसका बड़ा अज्र मिलेगा। 36 लेकिन इसके लिए
आपको साबितक़दमी की ज़रूरत है ताकि आप अल्लाह की मरज़ी पूरी कर सकें और यों आपको वह कुछ मिल जाए
जिसका वादा उसने किया है। 37 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस यह फ़रमाता है,

"थोड़ी ही देर बाक़ी है
तो आनेवाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।
38 लेकिन मेरा रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा,
और अगर वह पीछे हट जाए
तो मैं उससे ख़ुश नहीं हूँगा।"

39 लेकिन हम उनमें से नहीं हैं जो पीछे हटकर तबाह हो जाएंगे बल्कि हम उनमें से हैं जो ईमान रखकर नजात पाते
हैं।

11

ईमान

1 ईमान क्या है? यह कि हम उसमें क़ायम रहें जिस पर हम उम्मीद रखते हैं और कि हम उसका यक़ीन रखें जो हम
नहीं देख सकते। 2 ईमान ही से पुराने ज़मानों के लोगों को अल्लाह की क़बूलियत हासिल हुई।
3 ईमान के ज़रीए हम जान लेते हैं कि कायनात को अल्लाह के कलाम से ख़लक़ किया गया, कि जो कुछ हम देख
सकते हैं नज़र आनेवाली चीज़ों से नहीं बना।
4 यह ईमान का काम था कि हाबील ने अल्लाह को एक ऐसी क़ुरबानी पेश की जो क़ाबील की क़ुरबानी से बेहतर
थी। इस ईमान की बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ ठहराकर उस की अच्छी गवाही दी, जब उसने उस की क़ुरबानियों
को क़बूल किया। और ईमान के ज़रीए वह अब तक बोलता रहता है हालाँकि वह मुरदा है। 5 यह ईमान का काम था
कि हनूक न मरा बल्कि ज़िंदा हालत में आसमान पर उठाया गया। कोई भी उसे ढूँडकर पा न सका क्योंकि अल्लाह
उसे आसमान पर उठा ले गया था। वजह यह थी कि उठाए जाने से पहले उसे यह गवाही मिली कि वह अल्लाह को
पसंद आया। 6 और ईमान रखे बग़ैर हम अल्लाह को पसंद नहीं आ सकते। क्योंकि लाज़िम है कि अल्लाह के हुज़ूर
आनेवाला ईमान रखे कि वह है और कि वह उन्हें अज्र देता है जो उसके तालिब हैं।
7 यह ईमान का काम था कि नूह ने अल्लाह की सुनी जब उसने उसे आनेवाली बातों के बारे में आगाह किया, ऐसी
बातों के बारे में जो अभी देखने में नहीं आई थीं। नूह ने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानकर एक कश्ती बनाई ताकि उसका ख़ानदान
बच जाए। यों उसने अपने ईमान के ज़रीए दुनिया को मुजरिम क़रार दिया और उस रास्तबाज़ी का वारिस बन गया जो
ईमान से हासिल होती है।
8 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने अल्लाह की सुनी जब उसने उसे बुलाकर कहा कि वह एक ऐसे मुल्क में
जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ, वह अपने मुल्क को छोड़कर रवाना हुआ, हालाँकि उसे मालूम न था कि
वह कहाँ जा रहा है। 9 ईमान के ज़रीए वह वादा किए हुए मुल्क में अजनबी की हैसियत से रहने लगा। वह ख़ैमों में
रहता था और इसी तरह इसहाक़ और याक़ूब भी जो उसके साथ उसी वादे के वारिस थे। 10 क्योंकि इब्राहीम उस शहर
के इंतज़ार में था जिसकी मज़बूत बुनियाद है और जिसका नक़्शा बनाने और तामीर करनेवाला ख़ुद अल्लाह है।

11 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम बाप बनने के क़ाबिल हो गया, हालाँकि वह बुढ़ापे की वजह से बाप नहीं बन
सकता था। इसी तरह सारा भी बच्चे जन्म नहीं दे सकती थी। लेकिन इब्राहीम समझता था कि अल्लाह जिसने वादा
किया है वफ़ादार है। 12 गो इब्राहीम तक़रीबन मर चुका था तो भी उसी एक शख़्स से बेशुमार औलाद निकली, तादाद
में आसमान पर के सितारों और साहिल पर की रेत के ज़र्रों के बराबर।

13 यह तमाम लोग ईमान रखते रखते मर गए। उन्हें वह कुछ न मिला जिसका वादा किया गया था। उन्होंने उसे सिर्फ़
दूर ही से देखकर ख़ुशआमदीद * कहा। और उन्होंने तसलीम किया कि हम ज़मीन पर † सिर्फ़ मेहमान और आरिज़ी
तौर पर रहनेवाले अजनबी हैं। 14 जो इस क़िस्म की बातें करते हैं वह ज़ाहिर करते हैं कि हम अब तक अपने वतन की
तलाश में हैं। 15 अगर उनके ज़हन में वह मुल्क होता जिससे वह निकल आए थे तो वह अब भी वापस जा सकते थे।
16 इसके बजाए वह एक बेहतर मुल्क यानी एक आसमानी मुल्क की आरज़ू कर रहे थे। इसलिए अल्लाह उनका ख़ुदा
कहलाने से नहीं शर्माता, क्योंकि उसने उनके लिए एक शहर तैयार किया है।

17 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने उस वक़्त इसहाक़ को क़ुरबानी के तौर पर पेश किया जब अल्लाह ने
उसे आज़माया। हाँ, वह अपने इकलौते बेटे को क़ुरबान करने के लिए तैयार था अगरचे उसे अल्लाह के वादे मिल गए
थे 18 कि "तेरी नसल इसहाक़ ही से क़ायम रहेगी।" 19 इब्राहीम ने सोचा, "अल्लाह मुरदों को भी ज़िंदा कर सकता
है," और मजाज़न उसे वाक़ई इसहाक़ मुरदों में से वापस मिल गया।

20 यह ईमान का काम था कि इसहाक़ ने आनेवाली चीज़ों के लिहाज़ से याक़ूब और एसौ को बरकत दी।

21 यह ईमान का काम था कि याक़ूब ने मरते वक़्त यूसुफ़ के दोनों बेटों को बरकत दी और अपनी लाठी के सिरे
पर टेक लगाकर अल्लाह को सिजदा किया।

22 यह ईमान का काम था कि यूसुफ़ ने मरते वक़्त यह पेशगोई की कि इसराईली मिसर से निकलेंगे बल्कि यह भी
कहा कि निकलते वक़्त मेरी हड्डियाँ भी अपने साथ ले जाओ।

23 यह ईमान का काम था कि मूसा के माँ-बाप ने उसे पैदाइश के बाद तीन माह तक छुपाए रखा, क्योंकि उन्होंने
देखा कि वह ख़ूबसूरत है। वह बादशाह के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करने से न डरे।

24 यह ईमान का काम था कि मूसा ने परवान चढ़कर इनकार किया कि उसे फ़िरौन की बेटी का बेटा ठहराया जाए।
25 आरिज़ी तौर पर गुनाह से लुत्फ़अंदोज़ होने के बजाए उसने अल्लाह की क़ौम के साथ बदसुलूकी का निशाना बनने
को तरजीह दी। 26 वह समझा कि जब मेरी मसीह की ख़ातिर रुसवाई की जाती है तो यह मिसर के तमाम ख़ज़ानों से
ज़्यादा क़ीमती है, क्योंकि उस की आँखें आनेवाले अज्र पर लगी रहीं।

27 यह ईमान का काम था कि मूसा ने बादशाह के ग़ुस्से से डरे बग़ैर मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह गोया अनदेखे
ख़ुदा को मुसलसल अपनी आँखों के सामने रखता रहा। 28 यह ईमान का काम था कि उसने फ़सह की ईद मनाकर
हुक्म दिया कि ख़ून को चौखटों पर लगाया जाए ताकि हलाक करनेवाला फ़रिश्ता उनके पहलौठे बेटों को न छुए।

29 यह ईमान का काम था कि इसराईली बहरे-क़ुलज़ुम में से यों गुज़र सके जैसे कि यह ख़ुश्क ज़मीन थी। जब
मिसरियों ने यह करने की कोशिश की तो वह डूब गए।

30 यह ईमान का काम था कि सात दिन तक यरीहू शहर की फ़सील के गिर्द चक्कर लगाने के बाद पूरी दीवार गिर
गई। 31 यह भी ईमान का काम था कि राहब फ़ाहिशा अपने शहर के बाक़ी नाफ़रमान बाशिंदों के साथ हलाक न हुई,
क्योंकि उसने इसराईली जासूसों को सलामती के साथ ख़ुशआमदीद कहा था।

32 मैं मज़ीद क्या कुछ कहूँ? मेरे पास इतना वक़्त नहीं कि मैं जिदौन, बरक़, समसून, इफ़ताह, दाऊद, समुएल और
नबियों के बारे में सुनाता रहूँ। 33 यह सब ईमान के सबब से ही कामयाब रहे। वह बादशाहियों पर ग़ालिब आए और
इनसाफ़ करते रहे। उन्हें अल्लाह के वादे हासिल हुए। उन्होंने शेरबबरों के मुँह बंद कर दिए 34 और आग के भड़कते
शोलों को बुझा दिया। वह तलवार की ज़द से बच निकले। वह कमज़ोर थे लेकिन उन्हें क़ुव्वत हासिल हुई। जब जंग
छिड़ गई तो वह इतने ताक़तवर साबित हुए कि उन्होंने ग़ैरमुल्की लशकरों को शिकस्त दी। 35 ईमान रखने के बाइस
ख़वातीन को उनके मुरदा अज़ीज़ ज़िंदा हालत में वापस मिले।

लेकिन ऐसे भी थे जिन्हें तशद्दुद बरदाश्त करना पड़ा और जिन्होंने आज़ाद हो जाने से इनकार किया ताकि उन्हें एक
बेहतर चीज़ यानी जी उठने का तजरबा हासिल हो जाए। 36 बाज़ को लान-तान और कोड़ों बल्कि ज़ंजीरों और क़ैद
का भी सामना करना पड़ा। 37 उन्हें संगसार किया गया, उन्हें आरे से चीरा गया, उन्हें तलवार से मार डाला गया। बाज़
को भेड़-बकरियों की खालों में घूमना फिरना पड़ा। ज़रूरतमंद हालत में उन्हें दबाया और उन पर ज़ुल्म किया जाता
रहा। 38 दुनिया उनके लायक़ नहीं थी! वह वीरान जगहों में, पहाड़ों पर, ग़ारों और गढ़ों में आवारा फिरते रहे।

---

* **11:13** लफ़्ज़ी तरजुमा : सलामी दी। सलाम देकर इज़्ज़त का इज़हार किया। सल्यूट किया। † **11:13** ज़मीन पर या मुल्क (यानी कनान) में।

39 इन सबको ईमान की वजह से अच्छी गवाही मिली। तो भी इन्हें वह कुछ हासिल न हुआ जिसका वादा अल्लाह
ने किया था। 40 क्योंकि उसने हमारे लिए एक ऐसा मनसूबा बनाया था जो कहीं बेहतर है। वह चाहता था कि यह लोग
हमारे बग़ैर कामिलियत तक न पहुँचें।

12

अल्लाह हमारा बाप

1 ग़रज़, हम गवाहों के इतने बड़े लशकर से घेरे रहते हैं! इसलिए आएँ, हम सब कुछ उतारें जो हमारे लिए रुकावट
का बाइस बन गया है, हर गुनाह को जो हमें आसानी से उलझा लेता है। आएँ, हम साबितक़दमी से उस दौड़ में दौड़ते
रहें जो हमारे लिए मुक़र्रर की गई है। 2 और दौड़ते हुए हम ईसा को तकते रहें, उसे जो ईमान का बानी भी है और उसे
तकमील तक पहुँचानेवाला भी। याद रहे कि गो वह ख़ुशी हासिल कर सकता था तो भी उसने सलीबी मौत की शर्मनाक
बेइज़्ज़ती की परवा न की बल्कि उसे बरदाश्त किया। और अब वह अल्लाह के तख़्त के दहने हाथ जा बैठा है!
3 उस पर ध्यान दें जिसने गुनाहगारों की इतनी मुख़ालफ़त बरदाश्त की। फिर आप थकते थकते बेदिल नहीं हो
जाएंगे। 4 देखें, आप गुनाह से लड़े तो हैं, लेकिन अभी तक आपको जान देने तक इसकी मुख़ालफ़त नहीं करनी पड़ी।
5 क्या आप कलामे-मुक़द्दस की यह हौसलाअफ़्ज़ा बात भूल गए हैं जो आपको अल्लाह के फ़रज़ंद ठहराकर बयान
करती है,

"मेरे बेटे, रब की तरबियत को हक़ीर मत जान,
जब वह तुझे डाँटे तो न बेदिल हो।
6 क्योंकि जो रब को प्यारा है उस की वह तादीब करता है,
वह हर एक को सज़ा देता है
जिसे उसने बेटे के तौर पर क़बूल किया है।"

7 अपनी मुसीबतों को इलाही तरबियत समझकर बरदाश्त करें। इसमें अल्लाह आपसे बेटों का-सा सुलूक कर रहा
है। क्या कभी कोई बेटा था जिसकी उसके बाप ने तरबियत न की? 8 अगर आपकी तरबियत सबकी तरह न की जाती
तो इसका मतलब यह होता कि आप अल्लाह के हक़ीक़ी फ़रज़ंद न होते बल्कि नाजायज़ औलाद। 9 देखें, जब हमारे
इनसानी बाप ने हमारी तरबियत की तो हमने उस की इज़्ज़त की। अगर ऐसा है तो कितना ज़्यादा ज़रूरी है कि हम अपने
रूहानी बाप के ताबे होकर ज़िंदगी पाएँ। 10 हमारे इनसानी बापों ने हमें अपनी समझ के मुताबिक़ थोड़ी देर के लिए
तरबियत दी। लेकिन अल्लाह हमारी ऐसी तरबियत करता है जो फ़ायदे का बाइस है और जिससे हम उस की क़ुद्दूसियत
में शरीक होने के क़ाबिल हो जाते हैं। 11 जब हमारी तरबियत की जाती है तो उस वक़्त हम ख़ुशी महसूस नहीं करते
बल्कि ग़म। लेकिन जिनकी तरबियत इस तरह होती है वह बाद में रास्तबाज़ी और सलामती की फ़सल काटते हैं।

हिदायात

12 चुनाँचे अपने थकेहारे बाज़ुओं और कमज़ोर घुटनों को मज़बूत करें। 13 अपने रास्ते चलने के क़ाबिल बना दें
ताकि जो अज़ु लँगड़ा है उसका जोड़ उतर न जाए * बल्कि शफ़ा पाए।
14 सबके साथ मिलकर सुलह-सलामती और क़ुद्दूसियत के लिए जिद्दो-जहद करते रहें, क्योंकि जो मुक़द्दस नहीं है
वह ख़ुदावंद को कभी नहीं देखेगा। 15 इस पर ध्यान देना कि कोई अल्लाह के फ़ज़ल से महरूम न रहे। ऐसा न हो कि
कोई कड़वी जड़ फूट निकले और बढ़कर तकलीफ़ का बाइस बन जाए और बहुतों को नापाक कर दे। 16 ध्यान दें कि
कोई भी ज़िनाकार या एसौ जैसा दुनियावी शख़्स न हो जिसने एक ही खाने के एवज़ अपने वह मौरूसी हुक़ूक़ बेच डाले
जो उसे बड़े बेटे की हैसियत से हासिल थे। 17 आपको भी मालूम है कि बाद में जब वह यह बरकत विरासत में पाना
चाहता था तो उसे रद्द किया गया। उस वक़्त उसे तौबा का मौक़ा न मिला हालाँकि उसने आँसू बहा बहाकर यह बरकत
हासिल करने की कोशिश की।
18 आप उस तरह अल्लाह के हुज़ूर नहीं आए जिस तरह इसराईली जब वह सीना पहाड़ पर पहुँचे, उस पहाड़
के पास जिसे छुआ जा सकता था। वहाँ आग भड़क रही थी, अंधेरा ही अंधेरा था और आँधी चल रही थी। 19 जब
नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दी और अल्लाह उनसे हमकलाम हुआ तो सुननेवालों ने उससे इल्तिजा की कि हमें मज़ीद
कोई बात न बता। 20 क्योंकि वह यह हुक्म बरदाश्त नहीं कर सकते थे कि "अगर कोई जानवर भी पहाड़ को छू ले
तो उसे संगसार करना है।" 21 यह मंज़र इतना हैबतनाक था कि मूसा ने कहा, "मैं ख़ौफ़ के मारे काँप रहा हूँ।"
22 नहीं, आप सिय्यून पहाड़ के पास आ गए हैं, यानी ज़िंदा ख़ुदा के शहर आसमानी यरूशलम के पास। आप बेशुमार
फ़रिश्तों और जशन मनानेवाली जमात के पास आ गए हैं, 23 उन पहलौठों की जमात के पास जिनके नाम आसमान

* **12:13** एक और मुमकिना तरजुमा : जो लँगड़ा है वह भटक न जाए।

पर दर्ज किए गए हैं। आप तमाम इनसानों के मुंसिफ़ अल्लाह के पास आ गए हैं और कामिल किए गए रास्तबाज़ों की
रूहों के पास। 24 नीज़ आप नए अहद के दरमियानी ईसा के पास आ गए हैं और उस छिड़काए गए ख़ून के पास जो
हाबील के ख़ून की तरह बदला लेने की बात नहीं करता बल्कि एक ऐसी मुआफ़ी देता है जो कहीं ज़्यादा मुअस्सिर है।
25 चुनाँचे ख़बरदार रहें कि आप उस की सुनने से इनकार न करें जो इस वक़्त आपसे हमकलाम हो रहा है। क्योंकि
अगर इसराईली न बचे जब उन्होंने दुनियावी पैग़ंबर मूसा की सुनने से इनकार किया तो फिर हम किस तरह बचेंगे अगर
हम उस की सुनने से इनकार करें जो आसमान से हमसे हमकलाम होता है। 26 जब अल्लाह सीना पहाड़ पर से बोल
उठा तो ज़मीन काँप गई, लेकिन अब उसने वादा किया है, "एक बार फिर मैं न सिर्फ़ ज़मीन को हिला दूँगा बल्कि
आसमान को भी।" 27 "एक बार फिर" के अलफ़ाज़ इस तरफ़ इशारा करते हैं कि ख़लक़ की गई चीज़ों को हिलाकर
दूर किया जाएगा और नतीजे में सिर्फ़ वह चीज़ें क़ायम रहेंगी जिन्हें हिलाया नहीं जा सकता।
28 चुनाँचे आएँ, हम शुक्रगुज़ार हों। क्योंकि हमें एक ऐसी बादशाही हासिल हो रही है जिसे हिलाया नहीं जा
सकता। हाँ, हम शुक्रगुज़ारी की इस रूह में एहतराम और ख़ौफ़ के साथ अल्लाह की पसंदीदा परस्तिश करें, 29 क्योंकि
हमारा ख़ुदा हक़ीक़तन भस्म कर देनेवाली आग है।

13

हम अल्लाह को किस तरह पसंद आएँ

1 एक दूसरे से भाइयों की-सी मुहब्बत रखते रहें। 2 मेहमान-नवाज़ी मत भूलना, क्योंकि ऐसा करने से बाज़ ने
नादानिस्ता तौर पर फ़रिश्तों की मेहमान-नवाज़ी की है। 3 जो क़ैद में हैं, उन्हें यों याद रखना जैसे आप ख़ुद उनके साथ
क़ैद में हों। और जिनके साथ बदसुलूकी हो रही है उन्हें यों याद रखना जैसे आपसे यह बदसुलूकी हो रही हो।
4 लाज़िम है कि सबके सब इज़दिवाजी ज़िंदगी का एहतराम करें। शौहर और बीवी एक दूसरे के वफ़ादार रहें, क्योंकि
अल्लाह ज़िनाकारों और शादी का बंधन तोड़नेवालों की अदालत करेगा।
5 आपकी ज़िंदगी पैसों के लालच से आज़ाद हो। उसी पर इकतिफ़ा करें जो आपके पास है, क्योंकि अल्लाह ने
फ़रमाया है, "मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, मैं तुझे कभी तर्क नहीं करूँगा।" 6 इसलिए हम एतमाद से कह सकते हैं,

"रब मेरी मदद करनेवाला है,
इसलिए मैं नहीं डरूँगा।
इनसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?"

7 अपने राहनुमाओं को याद रखें जिन्होंने आपको अल्लाह का कलाम सुनाया। इस पर ग़ौर करें कि उनके चाल-
चलन से कितनी भलाई पैदा हुई है, और उनके ईमान के नमूने पर चलें। 8 ईसा मसीह माज़ी में, आज और अबद
तक यकसाँ है। 9 तरह तरह की और बेगाना तालीमात आपको इधर उधर न भटकाएँ। आप तो अल्लाह के फ़ज़ल से
तक़वियत पाते हैं और इससे नहीं कि आप मुख़्तलिफ़ खानों से परहेज़ करते हैं। इसमें कोई ख़ास फ़ायदा नहीं है।
10 हमारे पास एक ऐसी क़ुरबानगाह है जिसकी क़ुरबानी खाना मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करनेवालों के लिए
मना है। 11 क्योंकि गो इमामे-आज़म जानवरों का ख़ून गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर मुक़द्दसतरीन कमरे में ले जाता
है, लेकिन उनकी लाशों को ख़ैमागाह के बाहर जलाया जाता है। 12 इस वजह से ईसा को भी शहर के बाहर सलीबी
मौत सहनी पड़ी ताकि क़ौम को अपने ख़ून से मख़सूसो-मुक़द्दस करे। 13 इसलिए आएँ, हम ख़ैमागाह से निकलकर
उसके पास जाएँ और उस की बेइज़्ज़ती में शरीक हो जाएँ। 14 क्योंकि यहाँ हमारा कोई क़ायम रहनेवाला शहर नहीं है
बल्कि हम आनेवाले शहर की शदीद आरज़ू रखते हैं। 15 चुनाँचे आएँ, हम ईसा के वसीले से अल्लाह को हम्दो-सना
की क़ुरबानी पेश करें, यानी हमारे होंटों से उसके नाम की तारीफ़ करनेवाला फल निकले। 16 नीज़, भलाई करना और
दूसरों को अपनी बरकात में शरीक करना मत भूलना, क्योंकि ऐसी क़ुरबानियाँ अल्लाह को पसंद हैं।
17 अपने राहनुमाओं की सुनें और उनकी बात मानें। क्योंकि वह आपकी देख-भाल करते करते जागते रहते हैं, और
इसमें वह अल्लाह के सामने जवाबदेह हैं। उनकी बात मानें ताकि वह ख़ुशी से अपनी ख़िदमत सरंजाम दें। वरना वह
कराहते कराहते अपनी ज़िम्मादारी निभाएँगे, और यह आपके लिए मुफ़ीद नहीं होगा।
18 हमारे लिए दुआ करें, गो हमें यक़ीन है कि हमारा ज़मीर साफ़ है और हम हर लिहाज़ से अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने
के ख़ाहिशमंद हैं।
19 मैं ख़ासकर इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप दुआ करें कि अल्लाह मुझे आपके पास जल्द वापस आने की
तौफ़ीक़ बख़्शे।

आख़िरी दुआ

20 अब सलामती का ख़ुदा जो अबदी अहद के ख़ून से हमारे ख़ुदावंद और भेड़ों के अज़ीम चरवाहे ईसा को मुरदों
में से वापस लाया 21 वह आपको हर अच्छी चीज़ से नवाज़े ताकि आप उस की मरज़ी पूरी कर सकें। और वह ईसा
मसीह के ज़रीए हममें वह कुछ पैदा करे जो उसे पसंद आए। उसका जलाल अज़ल से अबद तक होता रहे! आमीन।

आख़िरी अलफ़ाज़

22 भाइयो, मेहरबानी करके नसीहत की इन बातों पर संजीदगी से ग़ौर करें, क्योंकि मैंने आपको सिर्फ़ चंद अलफ़ाज़
लिखे हैं। 23 यह बात आपके इल्म में होनी चाहिए कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है। अगर वह
जल्दी पहुँचे तो उसे साथ लेकर आपसे मिलने आऊँगा।

24 अपने तमाम राहनुमाओं और तमाम मुक़द्दसीन को मेरा सलाम कहना। इटली के ईमानदार आपको सलाम कहते हैं।

25 अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

याक़ूब

1 यह ख़त अल्लाह और ख़ुदावंद ईसा मसीह के ख़ादिम याक़ूब की तरफ़ से है।
ग़ैरयहूदी क़ौमों में बिखरे हुए बारह इसराईली क़बीलों को सलाम।

ईमान और हिकमत

2 मेरे भाइयो, जब आपको तरह तरह की आज़माइशों का सामना करना पड़े तो अपने आपको ख़ुशक़िसमत समझें,
3 क्योंकि आप जानते हैं कि आपके ईमान के आज़माए जाने से साबितक़दमी पैदा होती है। 4 चुनाँचे साबितक़दमी को
बढ़ने दें, क्योंकि जब वह तकमील तक पहुँचेगी तो आप बालिग़ और कामिल बन जाएंगे, और आपमें कोई भी कमी
नहीं पाई जाएगी। 5 लेकिन अगर आपमें से किसी में हिकमत की कमी हो तो अल्लाह से माँगे जो सबको फ़ैयाज़ी से
और बग़ैर झिड़की दिए देता है। वह ज़रूर आपको हिकमत देगा। 6 लेकिन अपनी गुज़ारिश ईमान के साथ पेश करें
और शक न करें, क्योंकि शक करनेवाला समुंदर की मौज की मानिंद होता है जो हवा से इधर उधर उछलती बहती
जाती है। 7 ऐसा शख़्स न समझे कि मुझे ख़ुदावंद से कुछ मिलेगा, 8 क्योंकि वह दोदिला और अपने हर काम में
ग़ैरमुस्तक़िलमिज़ाज है।

ग़ुरबत और दौलत

9 पस्तहाल भाई मसीह में अपने ऊँचे मरतबे पर फ़ख़र करे 10 जबकि दौलतमंद शख़्स अपने अदना मरतबे पर फ़ख़र
करे, क्योंकि वह जंगली फूल की तरह जल्द ही जाता रहेगा। 11 जब सूरज तुलू होता है तो उस की झुलसा देनेवाली
धूप में पौदा मुरझा जाता, उसका फूल गिर जाता और उस की तमाम ख़ूबसूरती ख़त्म हो जाती है। उस तरह दौलतमंद
शख़्स भी काम करते करते मुरझा जाएगा।

आज़माइश

12 मुबारक है वह जो आज़माइश के वक़्त साबितक़दम रहता है, क्योंकि क़ायम रहने पर उसे ज़िंदगी का वह ताज
मिलेगा जिसका वादा अल्लाह ने उनसे किया है जो उससे मुहब्बत रखते हैं। 13 आज़माइश के वक़्त कोई न कहे कि
अल्लाह मुझे आज़माइश में फँसा रहा है। न तो अल्लाह को बुराई से आज़माइश में फँसाया जा सकता है, न वह किसी
को फँसाता है। 14 बल्कि हर एक की अपनी बुरी ख़ाहिशात उसे खींचकर और उकसाकर आज़माइश में फँसा देती हैं।
15 फिर यह ख़ाहिशात हामिला होकर गुनाह को जन्म देती हैं और गुनाह बालिग़ होकर मौत को जन्म देता है।
16 मेरे अज़ीज़ भाइयो, फ़रेब मत खाना! 17 हर अच्छी नेमत और हर अच्छा तोहफ़ा आसमान से नाज़िल होता है,
नूरों के बाप से, जिसमें न कभी तबदीली आती है, न बदलते हुए सायों की-सी हालत पाई जाती है। 18 उसी ने अपनी
मरज़ी से हमें सच्चाई के कलाम के वसीले से पैदा किया। यों हम एक तरह से उस की तमाम मख़लूक़ात का पहला
फल हैं।

सुनना काफ़ी नहीं है

19 मेरे अज़ीज़ भाइयो, इसका ख़याल रखना, हर शख़्स सुनने में तेज़ हो, लेकिन बोलने और ग़ुस्सा करने में धीमा।
20 क्योंकि इनसान का ग़ुस्सा वह रास्तबाज़ी पैदा नहीं करता जो अल्लाह चाहता है। 21 चुनाँचे अपनी ज़िंदगी की
गंदी आदतें और शरीर चाल-चलन दूर करके हलीमी से कलामे-मुक़द्दस का वह बीज क़बूल करें जो आपके अंदर बोया
गया है, क्योंकि यही आपको नजात दे सकता है।
22 कलामे-मुक़द्दस को न सिर्फ़ सुनें बल्कि उस पर अमल भी करें, वरना आप अपने आपको फ़रेब देंगे। 23 जो
कलाम को सुनकर उस पर अमल नहीं करता वह उस आदमी की मानिंद है जो आईने में अपने चेहरे पर नज़र डालता
है। 24 अपने आपको देखकर वह चला जाता है और फ़ौरन भूल जाता है कि मैंने क्या कुछ देखा। 25 इसकी निसबत
वह मुबारक है जो आज़ाद करनेवाली कामिल शरीअत में ग़ौर से नज़र डालकर उसमें क़ायम रहता है और उसे सुनने के
बाद नहीं भूलता बल्कि उस पर अमल करता है।
26 क्या आप अपने आपको दीनदार समझते हैं? अगर आप अपनी ज़बान पर क़ाबू नहीं रख सकते तो आप अपने
आपको फ़रेब देते हैं। फिर आपकी दीनदारी का इज़हार बेकार है। 27 ख़ुदा बाप की नज़र में दीनदारी का पाक और
बेदाग़ इज़हार यह है, यतीमों और बेवाओं की देख-भाल करना जब वह मुसीबत में हों और अपने आपको दुनिया की
आलूदगी से बचाए रखना।

2

तास्सुब से ख़बरदार

1 मेरे भाइयो, लाज़िम है कि आप जो हमारे जलाली ख़ुदावंद ईसा मसीह पर ईमान रखते हैं जानिबदारी न दिखाएँ।
2 फ़र्ज़ करें कि एक आदमी सोने की अंगूठी और शानदार कपड़े पहने हुए आपकी जमात में आ जाए और साथ साथ
एक ग़रीब आदमी भी मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए अंदर आए। 3 और आप शानदार कपड़े पहने हुए आदमी पर ख़ास
ध्यान देकर उससे कहें, "यहाँ इस अच्छी कुरसी पर तशरीफ़ रखें," लेकिन ग़रीब आदमी को कहें, "वहाँ खड़ा हो
जा" या "आ, मेरे पाँवों के पास फ़र्श पर बैठ जा।" 4 क्या आप ऐसा करने से मुजरिमाना ख़यालातवाले मुंसिफ़ नहीं
साबित हुए? क्योंकि आपने लोगों में नारवा फ़रक़ किया है।

5 मेरे अज़ीज़ भाइयो, सुनें! क्या अल्लाह ने उन्हें नहीं चुना जो दुनिया की नज़र में ग़रीब हैं ताकि वह ईमान में
दौलतमंद हो जाएँ? यही लोग वह बादशाही मीरास में पाएँगे जिसका वादा अल्लाह ने उनसे किया है जो उसे प्यार करते
हैं। 6 लेकिन आपने ज़रूरतमंदों की बेइज़्ज़ती की है। ज़रा सोच लें, वह कौन हैं जो आपको दबाते और अदालत में
घसीटकर ले जाते हैं? क्या यह दौलतमंद ही नहीं हैं? 7 वही तो ईसा पर कुफ़र बकते हैं, उस अज़ीम नाम पर जिसके
पैरोकार आप बन गए हैं।

8 अल्लाह चाहता है कि आप कलामे-मुक़द्दस में मज़कूर शाही शरीअत पूरी करें, "अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत
रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।" 9 चुनाँचे जब आप जानिबदारी दिखाते हैं तो गुनाह करते हैं और शरीअत आपको
मुजरिम ठहराती है। 10 मत भूलना कि जिसने शरीअत का सिर्फ़ एक हुक्म तोड़ा है वह पूरी शरीअत का क़ुसूरवार
ठहरता है। 11 क्योंकि जिसने फ़रमाया, "ज़िना न करना" उसने यह भी कहा, "क़त्ल न करना।" हो सकता है कि
आपने ज़िना तो न किया हो, लेकिन किसी को क़त्ल किया हो। तो भी आप उस एक जुर्म की वजह से पूरी शरीअत
तोड़ने के मुजरिम बन गए हैं। 12 चुनाँचे जो कुछ भी आप कहते और करते हैं याद रखें कि आज़ाद करनेवाली शरीअत
आपकी अदालत करेगी। 13 क्योंकि अल्लाह अदालत करते वक़्त उस पर रहम नहीं करेगा जिसने ख़ुद रहम नहीं
दिखाया। लेकिन रहम अदालत पर ग़ालिब आ जाता है। जब आप रहम करेंगे तो अल्लाह आप पर रहम करेगा।

ईमान नेक कामों के बग़ैर मुरदा है

14 मेरे भाइयो, अगर कोई ईमान रखने का दावा करे, लेकिन उसके मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारे तो उसका क्या फ़ायदा
है? क्या ऐसा ईमान उसे नजात दिला सकता है? 15 फ़र्ज़ करें कि कोई भाई या बहन कपड़ों और रोज़मर्रा रोटी की
ज़रूरतमंद हो। 16 यह देखकर आपमें से कोई उससे कहे, "अच्छा जी, ख़ुदा हाफ़िज़। गरम कपड़े पहनो और जी भरकर
खाना खाओ।" लेकिन वह ख़ुद यह ज़रूरियात पूरी करने में मदद न करे। क्या इसका कोई फ़ायदा है? 17 ग़रज़, महज़
ईमान काफ़ी नहीं। अगर वह नेक कामों से अमल में न लाया जाए तो वह मुरदा है।

18 हो सकता है कोई एतराज़ करे, "एक शख़्स के पास तो ईमान होता है, दूसरे के पास नेक काम।" आएँ, मुझे
दिखाएँ कि आप नेक कामों के बग़ैर किस तरह ईमान रख सकते हैं। यह तो नामुमकिन है। लेकिन मैं ज़रूर आपको
अपने नेक कामों से दिखा सकता हूँ कि मैं ईमान रखता हूँ। 19 अच्छा, आप कहते हैं, "हम ईमान रखते हैं कि एक ही
ख़ुदा है।" शाबाश, यह बिलकुल सहीह है। शयातीन भी यह ईमान रखते हैं, गो वह यह जानकर ख़ौफ़ के मारे थरथराते
हैं। 20 होश में आएँ! क्या आप नहीं समझते कि नेक आमाल के बग़ैर ईमान बेकार है? 21 हमारे बाप इब्राहीम पर ग़ौर
करें। वह तो इसी वजह से रास्तबाज़ ठहराया गया कि उसने अपने बेटे इसहाक़ को क़ुरबानगाह पर पेश किया। 22 आप
ख़ुद देख सकते हैं कि उसका ईमान और नेक काम मिलकर अमल कर रहे थे। उसका ईमान तो उससे मुकम्मल हुआ
जो कुछ उसने किया 23 और इस तरह ही कलामे-मुक़द्दस की यह बात पूरी हुई, "इब्राहीम ने अल्लाह पर भरोसा रखा।
इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।" इसी वजह से वह "अल्लाह का दोस्त" कहलाया। 24 यों आप
ख़ुद देख सकते हैं कि इनसान अपने नेक आमाल की बिना पर रास्तबाज़ क़रार दिया जाता है, न कि सिर्फ़ ईमान रखने
की वजह से।

25 राहब फ़ाहिशा की मिसाल भी लें। उसे भी अपने कामों की बिना पर रास्तबाज़ क़रार दिया गया जब उसने
इसराईली जासूसों की मेहमान-नवाज़ी की और उन्हें शहर से निकलने का दूसरा रास्ता दिखाकर बचाया।

26 ग़रज़, जिस तरह बदन रूह के बग़ैर मुरदा है उसी तरह ईमान भी नेक आमाल के बग़ैर मुरदा है।

3

ज़बान

1 मेरे भाइयो, आपमें से ज़्यादा उस्ताद न बनें। आपको मालूम है कि हम उस्तादों की ज़्यादा सख़्ती से अदालत की
जाएगी। 2 हम सबसे तो कई तरह की ग़लतियाँ सरज़द होती हैं। लेकिन जिस शख़्स से बोलने में कभी ग़लती नहीं होती

वह कामिल है और अपने पूरे बदन को क़ाबू में रखने के क़ाबिल है। 3 हम घोड़े के मुँह में लगाम का दहाना रख देते
हैं ताकि वह हमारे हुक्म पर चले, और इस तरह हम अपनी मरज़ी से उसका पूरा जिस्म चला लेते हैं। 4 या बादबानी
जहाज़ की मिसाल लें। जितना भी बड़ा वह हो और जितनी भी तेज़ हवा चलती हो नाख़ुदा एक छोटी-सी पतवार के
ज़रीए उसका रुख़ ठीक रखता है। यों ही वह उसे अपनी मरज़ी से चला लेता है। 5 इसी तरह ज़बान एक छोटा-सा अज़ु
है, लेकिन वह बड़ी बड़ी बातें करती है।

देखें, एक बड़े जंगल को भस्म करने के लिए एक ही चिंगारी काफ़ी होती है। 6 ज़बान भी आग की मानिंद है। बदन
के दीगर आज़ा के दरमियान रहकर उसमें नारास्ती की पूरी दुनिया पाई जाती है। वह पूरे बदन को आलूदा कर देती है,
हाँ इनसान की पूरी ज़िंदगी को आग लगा देती है, क्योंकि वह ख़ुद जहन्नुम की आग से सुलगाई गई है। 7 देखें, इनसान
हर क़िस्म के जानवरों पर क़ाबू पा लेता है और उसने ऐसा किया भी है, ख़ाह जंगली जानवर हों या परिंदे, रेंगनेवाले हों
या समुंदरी जानवर। 8 लेकिन ज़बान पर कोई क़ाबू नहीं पा सकता, इस बेताब और शरीर चीज़ पर जो मोहलक ज़हर
से लबालब भरी है। 9 ज़बान से हम अपने ख़ुदावंद और बाप की सताइश भी करते हैं और दूसरों पर लानत भी भेजते
हैं, जिन्हें अल्लाह की सूरत पर बनाया गया है। 10 एक ही मुँह से सताइश और लानत निकलती है। मेरे भाइयो, ऐसा
नहीं होना चाहिए। 11 यह कैसे हो सकता है कि एक ही चश्मे से मीठा और कड़वा पानी फूट निकले। 12 मेरे भाइयो,
क्या अंजीर के दरख़्त पर ज़ैतून लग सकते हैं या अंगूर की बेल पर अंजीर? हरगिज़ नहीं! इसी तरह नमकीन चश्मे
से मीठा पानी नहीं निकल सकता।

आसमान से हिकमत

13 क्या आपमें से कोई दाना और समझदार है? वह यह बात अपने अच्छे चाल-चलन से ज़ाहिर करे, हिकमत से
पैदा होनेवाली हलीमी के नेक कामों से। 14 लेकिन ख़बरदार! अगर आप दिल में हसद की कड़वाहट और ख़ुदग़रज़ी
पाल रहे हैं तो इस पर शेख़ी मत मारना, न सच्चाई के ख़िलाफ़ झूट बोलें। 15 ऐसा फ़ख़र आसमान की तरफ़ से नहीं
है, बल्कि दुनियावी, ग़ैररूहानी और इबलीस से है। 16 क्योंकि जहाँ हसद और ख़ुदग़रज़ी है वहाँ फ़साद और हर शरीर
काम पाया जाता है। 17 आसमान की हिकमत फ़रक़ है। अव्वल तो वह पाक और मुक़द्दस है। नीज़ वह अमनपसंद,
नरमदिल, फ़रमाँबरदार, रहम और अच्छे फल से भरी हुई, ग़ैरजानिबदार और ख़ुलूसदिल है। 18 और जो सुलह कराते
हैं उनके लिए रास्तबाज़ी का फल सलामती से बोया जाता है।

4

दुनिया से दोस्ती

1 यह लड़ाइयाँ और झगड़े जो आपके दरमियान हैं कहाँ से आते हैं? क्या इनका सरचश्मा वह बुरी ख़ाहिशात नहीं
जो आपके आज़ा में लड़ती रहती हैं? 2 आप किसी चीज़ की ख़ाहिश रखते हैं, लेकिन उसे हासिल नहीं कर सकते।
आप क़त्ल और हसद करते हैं, लेकिन जो कुछ आप चाहते हैं वह पा नहीं सकते। आप झगड़ते और लड़ते हैं। तो
भी आपके पास कुछ नहीं है, क्योंकि आप अल्लाह से माँगते नहीं। 3 और जब आप माँगते हैं तो आपको कुछ नहीं
मिलता। वजह यह है कि आप ग़लत नीयत से माँगते हैं। आप इससे अपनी ख़ुदग़रज़ ख़ाहिशात पूरी करना चाहते हैं।
4 बेवफ़ा लोगो! क्या आपको नहीं मालूम कि दुनिया का दोस्त अल्लाह का दुश्मन होता है? जो दुनिया का दोस्त बनना
चाहता है वह अल्लाह का दुश्मन बन जाता है। 5 या क्या आप समझते हैं कि कलामे-मुक़द्दस की यह बात बेतुकी-सी
है कि अल्लाह ग़ैरत से उस रूह का आरज़ूमंद है जिसको उसने हमारे अंदर सुकूनत करने दिया? 6 लेकिन वह हमें
इससे कहीं ज़्यादा फ़ज़ल बख़्शता है। कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है, "अल्लाह मग़रूरों का मुक़ाबला करता लेकिन
फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है।"

7 ग़रज़, अल्लाह के ताबे हो जाएँ। इबलीस का मुक़ाबला करें तो वह भाग जाएगा। 8 अल्लाह के क़रीब आ जाएँ
तो वह आपके क़रीब आएगा। गुनाहगारो, अपने हाथों को पाक-साफ़ करें। दोदिलो, अपने दिलों को मख़सूसो-मुक़द्दस
करें। 9 अफ़सोस करें, मातम करें, ख़ूब रोएँ। आपकी हँसी मातम में बदल जाए और आपकी ख़ुशी मायूसी में। 10 अपने
आपको ख़ुदावंद के सामने नीचा करें तो वह आपको सरफ़राज़ करेगा।

एक दूसरे का मुंसिफ़ मत बनना

11 भाइयो, एक दूसरे पर तोहमत मत लगाना। जो अपने भाई पर तोहमत लगाता या उसे मुजरिम ठहराता है वह
शरीअत पर तोहमत लगाता है और शरीअत को मुजरिम ठहराता है। और जब आप शरीअत पर तोहमत लगाते हैं तो
आप उसके पैरोकार नहीं रहते बल्कि उसके मुंसिफ़ बन गए हैं। 12 शरीअत देनेवाला और मुंसिफ़ सिर्फ़ एक ही है और

वह है अल्लाह जो नजात देने और हलाक करने के क़ाबिल है। तो फिर आप कौन हैं जो अपने आपको मुंसिफ़ समझकर
अपने पड़ोसी को मुजरिम ठहरा रहे हैं!

शेख़ी मत मारना

13 और अब मेरी बात सुनें, आप जो कहते हैं, "आज या कल हम फ़ुलाँ फ़ुलाँ शहर में जाएंगे। वहाँ हम एक साल
ठहरकर कारोबार करके पैसे कमाएँगे।" 14 देखें, आप यह भी नहीं जानते कि कल क्या होगा। आपकी ज़िंदगी चीज़
ही किया है! आप भाप ही हैं जो थोड़ी देर के लिए नज़र आती, फिर ग़ायब हो जाती है। 15 बल्कि आपको यह कहना
चाहिए, "अगर ख़ुदावंद की मरज़ी हुई तो हम जिएँगे और यह या वह करेंगे।" 16 लेकिन फ़िलहाल आप शेख़ी मारकर
अपने ग़ुरूर का इज़हार करते हैं। इस क़िस्म की तमाम शेख़ीबाज़ी बुरी है।
17 चुनाँचे जो जानता है कि उसे क्या क्या नेक काम करना है, लेकिन फिर भी कुछ नहीं करता वह गुनाह करता
है।

5

दौलतमंदो, ख़बरदार!

1 दौलतमंदो, अब मेरी बात सुनें! ख़ूब रोएँ और गिर्याओ-ज़ारी करें, क्योंकि आप पर मुसीबत आनेवाली है। 2 आपकी
दौलत सड़ गई है और कीड़े आपके शानदार कपड़े खा गए हैं। 3 आपके सोने और चाँदी को ज़ंग लग गया है। और उनकी
ज़ंगआलूदा हालत आपके ख़िलाफ़ गवाही देगी और आपके जिस्मों को आग की तरह खा जाएगी। क्योंकि आपने इन
आख़िरी दिनों में अपने लिए ख़ज़ाने जमा कर लिए हैं। 4 देखें, जो मज़दूरी आपने फ़सल की कटाई करनेवालों से बाज़
रखी है वह आपके ख़िलाफ़ चिल्ला रही है। और आपकी फ़सल जमा करनेवालों की चीख़ें आसमानी लशकरों के
रब के कानों तक पहुँच गई हैं। 5 आपने दुनिया में ऐयाशी और ऐशो-इशरत की ज़िंदगी गुज़ारी है। ज़बह के दिन आपने
अपने आपको मोटा-ताज़ा कर दिया है। 6 आपने रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराकर क़त्ल किया है, और उसने आपका
मुक़ाबला नहीं किया।

सब्र और दुआ

7 भाइयो, अब सब्र से ख़ुदावंद की आमद के इंतज़ार में रहें। किसान पर ग़ौर करें जो इस इंतज़ार में रहता है कि ज़मीन
अपनी क़ीमती फ़सल पैदा करे। वह कितने सब्र से ख़रीफ़ और बहार की बारिशों का इंतज़ार करता है! 8 आप भी सब्र
करें और अपने दिलों को मज़बूत रखें, क्योंकि ख़ुदावंद की आमद क़रीब आ गई है।
9 भाइयो, एक दूसरे पर मत बुड़बुड़ाना, वरना आपकी अदालत की जाएगी। मुंसिफ़ तो दरवाज़े पर खड़ा है।
10 भाइयो, उन नबियों के नमूने पर चलें जिन्होंने रब के नाम में कलाम पेश करके सब्र से दुख उठाया। 11 देखें, हम
उन्हें मुबारक कहते हैं जो सब्र से दुख बरदाश्त करते थे। आपने अय्यूब की साबितक़दमी के बारे में सुना है और यह भी
देख लिया कि रब ने आख़िर में क्या कुछ किया, क्योंकि रब बहुत मेहरबान और रहीम है।
12 मेरे भाइयो, सबसे बढ़कर यह कि आप क़सम न खाएँ, न आसमान की क़सम, न ज़मीन की, न किसी और चीज़
की। जब आप "हाँ" कहना चाहते हैं तो बस "हाँ" ही काफ़ी है। और अगर इनकार करना चाहें तो बस "नहीं" कहना
काफ़ी है, वरना आप मुजरिम ठहरेंगे।
13 क्या आपमें से कोई मुसीबत में फँसा हुआ है? वह दुआ करे। क्या कोई ख़ुश है? वह सताइश के गीत गाए।
14 क्या आपमें से कोई बीमार है? वह जमात के बुज़ुर्गों को बुलाए ताकि वह आकर उसके लिए दुआ करें और ख़ुदावंद
के नाम में उस पर तेल मलें। 15 फिर ईमान से की गई दुआ मरीज़ को बचाएगी और ख़ुदावंद उसे उठा खड़ा करेगा।
और अगर उसने गुनाह किया हो तो उसे मुआफ़ किया जाएगा। 16 चुनाँचे एक दूसरे के सामने अपने गुनाहों का इक़रार
करें और एक दूसरे के लिए दुआ करें ताकि आप शफ़ा पाएँ। रास्त शख़्स की मुअस्सिर दुआ से बहुत कुछ हो सकता है।
17 इलियास हम जैसा इनसान था। लेकिन जब उसने ज़ोर से दुआ की कि बारिश न हो तो साढ़े तीन साल तक बारिश
न हुई। 18 फिर उसने दुबारा दुआ की तो आसमान ने बारिश अता की और ज़मीन ने अपनी फ़सलें पैदा कीं।
19 मेरे भाइयो, अगर आपमें से कोई सच्चाई से भटक जाए और कोई उसे सहीह राह पर वापस लाए 20 तो यक़ीन
जानें, जो किसी गुनाहगार को उस की ग़लत राह से वापस लाता है वह उस की जान को मौत से बचाएगा और गुनाहों
की बड़ी तादाद को छुपा देगा।

1 पतरस

1 यह ख़त ईसा मसीह के रसूल पतरस की तरफ़ से है।
मैं अल्लाह के चुने हुओं को लिख रहा हूँ, दुनिया के उन मेहमानों को जो पुंतुस, गलतिया, कप्पदुकिया, आसिया
और बिथुनिया के सूबों में बिखरे हुए हैं। 2 ख़ुदा बाप ने आपको बहुत देर पहले जानकर चुन लिया और उसके रूह ने
आपको मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया। नतीजे में आप ईसा मसीह के ताबे और उसके छिड़काए गए ख़ून से पाक-साफ़ हो
गए हैं।
अल्लाह आपको भरपूर फ़ज़ल और सलामती बख़्शे।

ज़िंदा उम्मीद

3 ख़ुदा हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के बाप की तारीफ़ हो! अपने अज़ीम रहम से उसने ईसा मसीह को ज़िंदा करने
के वसीले से हमें नए सिरे से पैदा किया है। इससे हमें एक ज़िंदा उम्मीद मिली है, 4 एक ऐसी मीरास जो कभी नहीं
सड़ेगी, कभी नहीं नापाक हो जाएगी और कभी नहीं मुरझाएगी। क्योंकि यह आसमान पर आपके लिए महफ़ूज़ रखी
गई है। 5 और अल्लाह आपके ईमान के ज़रीए अपनी क़ुदरत से आपकी उस वक़्त तक हिफ़ाज़त करता रहेगा जब तक
आपको नजात न मिल जाए, वह नजात जो आख़िरत के दिन सब पर ज़ाहिर होने के लिए तैयार है।
6 उस वक़्त आप ख़ुशी मनाएँगे, गो फ़िलहाल आपको थोड़ी देर के लिए तरह तरह की आज़माइशों का सामना
करके ग़म खाना पड़ता है 7 ताकि आपका ईमान असली साबित हो जाए। क्योंकि जिस तरह आग सोने को आज़माकर
ख़ालिस बना देती है उसी तरह आपका ईमान भी आज़माया जा रहा है, हालाँकि यह फ़ानी सोने से कहीं ज़्यादा क़ीमती
है। क्योंकि अल्लाह चाहता है कि आपको उस दिन तारीफ़, जलाल और इज़्ज़त मिल जाए जब ईसा मसीह ज़ाहिर
होगा। 8 उसी को आप प्यार करते हैं अगरचे आपने उसे देखा नहीं, और उसी पर आप ईमान रखते हैं गो वह आपको
इस वक़्त नज़र नहीं आता। हाँ, आप दिल में नाक़ाबिले-बयान और जलाली ख़ुशी मनाएँगे, 9 जब आप वह कुछ पाएँगे
जो ईमान की मनज़िले-मक़सूद है यानी अपनी जानों की नजात।
10 नबी इसी नजात की तलाश और तफ़तीश में लगे रहे, और उन्होंने उस फ़ज़ल की पेशगोई की जो अल्लाह
आपको देनेवाला था। 11 उन्होंने मालूम करने की कोशिश की कि मसीह का रूह जो उनमें था किस वक़्त या किन
हालात के बारे में बात कर रहा था जब उसने मसीह के दुख और बाद के जलाल की पेशगोई की। 12 उन पर इतना
ज़ाहिर किया गया कि उनकी यह पेशगोइयाँ उनके अपने लिए नहीं थीं, बल्कि आपके लिए। और अब यह सब कुछ
आपको उन्हीं के वसीले से पेश किया गया है जिन्होंने आसमान से भेजे गए रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए आपको अल्लाह
की ख़ुशख़बरी सुनाई है। यह ऐसी बातें हैं जिन पर फ़रिश्ते भी नज़र डालने के आरज़ूमंद हैं।

मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारना

13 चुनाँचे ज़हनी तौर पर कमरबस्ता हो जाएँ। होशमंदी से अपनी पूरी उम्मीद उस फ़ज़ल पर रखें जो आपको ईसा
मसीह के ज़ुहूर पर बख़्शा जाएगा। 14 आप अल्लाह के ताबेफ़रमान फ़रज़ंद हैं, इसलिए उन बुरी ख़ाहिशात को अपनी
ज़िंदगी में जगह न दें जो आप जाहिल होते वक़्त रखते थे। वरना वह आपकी ज़िंदगी को अपने साँचे में ढाल लेंगी।
15 इसके बजाए अल्लाह की मानिंद बनें जिसने आपको बुलाया है। जिस तरह वह क़ुद्दूस है उसी तरह आप भी हर
वक़्त मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारें। 16 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस रखो क्योंकि
मैं मुक़द्दस हूँ।"
17 और याद रखें कि आसमानी बाप जिससे आप दुआ करते हैं जानिबदारी नहीं करता बल्कि आपके अमल के
मुताबिक़ आपका फ़ैसला करेगा। चुनाँचे जब तक आप इस दुनिया के मेहमान रहेंगे ख़ुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदगी गुज़ारें।
18 क्योंकि आप ख़ुद जानते हैं कि आपको बापदादा की बेमानी ज़िंदगी से छुड़ाने के लिए क्या फ़िद्या दिया गया। यह
सोने या चाँदी जैसी फ़ानी चीज़ नहीं थी 19 बल्कि मसीह का क़ीमती ख़ून था। उसी को बेनुक़्स और बेदाग़ लेले की
हैसियत से हमारे लिए क़ुरबान किया गया। 20 उसे दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर चुना गया, लेकिन इन आख़िरी दिनों
में आपकी ख़ातिर ज़ाहिर किया गया। 21 और उसके वसीले से आप अल्लाह पर ईमान रखते हैं जिसने उसे मुरदों में
से ज़िंदा करके इज़्ज़तो-जलाल दिया ताकि आपका ईमान और उम्मीद अल्लाह पर हो।
22 सच्चाई के ताबे हो जाने से आपको मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया गया और आपके दिलों में भाइयों के लिए बेरिया
मुहब्बत डाली गई है। चुनाँचे अब एक दूसरे को ख़ुलूसदिली और लग्न से प्यार करते रहें। 23 क्योंकि आपकी नए सिरे

से पैदाइश हुई है। और यह किसी फ़ानी बीज का फल नहीं है बल्कि अल्लाह के लाफ़ानी, ज़िंदा और क़ायम रहनेवाले
कलाम का फल है। 24 यों कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है,
"तमाम इनसान घास ही हैं,
उनकी तमाम शानो-शौकत जंगली फूल की मानिंद है।
घास तो मुरझा जाती और फूल गिर जाता है,
25 लेकिन रब का कलाम अबद तक क़ायम रहता है।"
मज़कूरा कलाम अल्लाह की ख़ुशख़बरी है जो आपको सुनाई गई है।

2

ज़िंदा पत्थर और मुक़द्दस क़ौम

1 चुनाँचे अपनी ज़िंदगी से तमाम तरह की बुराई, धोकेबाज़ी, रियाकारी, हसद और बुहतान निकालें। 2 चूँकि आप
नौमौलूद बच्चे हैं इसलिए ख़ालिस रूहानी दूध पीने के आरज़ूमंद रहें, क्योंकि इसे पीने से ही आप बढ़ते बढ़ते नजात
की नौबत तक पहुँचेंगे। 3 जिन्होंने ख़ुदावंद की भलाई का तजरबा किया है उनके लिए ऐसा करना ज़रूरी है।
4 ख़ुदावंद के पास आएँ, उस ज़िंदा पत्थर के पास जिसे इनसानों ने रद्द किया है, लेकिन जो अल्लाह के नज़दीक
चुनीदा और क़ीमती है। 5 और आप भी ज़िंदा पत्थर हैं जिनको अल्लाह अपने रूहानी मक़दिस को तामीर करने के
लिए इस्तेमाल कर रहा है। न सिर्फ़ यह बल्कि आप उसके मख़सूसो-मुक़द्दस इमाम हैं। ईसा मसीह के वसीले से आप
ऐसी रूहानी क़ुरबानियाँ पेश कर रहे हैं जो अल्लाह को पसंद हैं। 6 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है,
"देखो, मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ,
कोने का एक चुनीदा और क़ीमती पत्थर।
जो उस पर ईमान लाएगा
उसे शरमिंदा नहीं किया जाएगा।"
7 यह पत्थर आपके नज़दीक जो ईमान रखते हैं बेशक़ीमत है। लेकिन जो ईमान नहीं लाए उन्होंने उसे रद्द किया।
"जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।"
8 नीज़ वह एक ऐसा पत्थर है
"जो ठोकर का बाइस बनेगा,
एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी।"
वह इसलिए ठोकर खाते हैं क्योंकि वह कलामे-मुक़द्दस के ताबे नहीं होते। यही कुछ अल्लाह की उनके लिए मरज़ी
थी।
9 लेकिन आप अल्लाह की चुनी हुई नसल हैं, आप आसमानी बादशाह के इमाम और उस की मख़सूसो-मुक़द्दस
क़ौम हैं। आप उस की मिलकियत बन गए हैं ताकि अल्लाह के क़वी कामों का एलान करें, क्योंकि वह आपको तारीकी
से अपनी हैरतअंगेज़ रौशनी में लाया है। 10 एक वक़्त था जब आप उस की क़ौम नहीं थे, लेकिन अब आप अल्लाह
की क़ौम हैं। पहले आप पर रहम नहीं हुआ था, लेकिन अब अल्लाह ने आप पर अपने रहम का इज़हार किया है।

अल्लाह के ख़ादिम

11 अज़ीज़ो, आप इस दुनिया में अजनबी और मेहमान हैं। इसलिए मैं आपको ताकीद करता हूँ कि आप जिस्मानी
ख़ाहिशात का इनकार करें। क्योंकि यह आपकी जान से लड़ती हैं। 12 ग़ैरईमानदारों के दरमियान रहते हुए इतनी
अच्छी ज़िंदगी गुज़ारें कि गो वह आप पर ग़लत काम करने की तोहमत भी लगाएँ तो भी उन्हें आपके नेक काम नज़र
आएँ और उन्हें अल्लाह की आमद के दिन उस की तमजीद करनी पड़े।
13 ख़ुदावंद की ख़ातिर हर इनसानी इख़्तियार के ताबे रहें, ख़ाह बादशाह हो जो सबसे आला इख़्तियार रखनेवाला
है, 14 ख़ाह उसके वज़ीर जिन्हें उसने इसलिए मुक़र्रर किया है कि वह ग़लत काम करनेवालों को सज़ा और अच्छा
काम करनेवालों को शाबाश दें। 15 क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि आप अच्छा काम करने से नासमझ लोगों की
जाहिल बातों को बंद करें। 16 आप आज़ाद हैं, इसलिए आज़ादाना ज़िंदगी गुज़ारें। लेकिन अपनी आज़ादी को ग़लत
काम छुपाने के लिए इस्तेमाल न करें, क्योंकि आप अल्लाह के ख़ादिम हैं। 17 हर एक का मुनासिब एहतराम करें,
अपने बहन-भाइयों से मुहब्बत रखें, ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें, बादशाह का एहतराम करें।

मसीह के दुख का नमूना

[18] ऐ ग़ुलामो, हर लिहाज़ से अपने मालिकों का एहतराम करके उनके ताबे रहें। और यह सुलूक न सिर्फ़ उनके
साथ हो जो नेक और नरमदिल हैं बल्कि उनके साथ भी जो ज़ालिम हैं। [19] क्योंकि अगर कोई अल्लाह की मरज़ी का
ख़याल करके बेइनसाफ़ तकलीफ़ का ग़म सब्र से बरदाश्त करे तो यह अल्लाह का फ़ज़ल है। [20] बेशक इसमें फ़ख़र
की कोई बात नहीं अगर आप सब्र से पिटाई की वह सज़ा बरदाश्त करें जो आपको ग़लत काम करने की वजह से मिली
हो। लेकिन अगर आपको अच्छा काम करने की वजह से दुख सहना पड़े और आप यह सज़ा सब्र से बरदाश्त करें तो
यह अल्लाह का फ़ज़ल है। [21] आपको इसी के लिए बुलाया गया है। क्योंकि मसीह ने आपकी ख़ातिर दुख सहने में
आपके लिए एक नमूना छोड़ा है। और वह चाहता है कि आप उसके नक़्शे-क़दम पर चलें। [22] उसने तो कोई गुनाह न
किया, और न कोई फ़रेब की बात उसके मुँह से निकली। [23] जब लोगों ने उसे गालियाँ दीं तो उसने जवाब में गालियाँ
न दीं। जब उसे दुख सहना पड़ा तो उसने किसी को धमकी न दी बल्कि उसने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर
दिया जो इनसाफ़ से अदालत करता है। [24] मसीह ख़ुद अपने बदन पर हमारे गुनाहों को सलीब पर ले गया ताकि हम
गुनाहों के एतबार से मर जाएँ और यों हमारा गुनाह से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाए। अब वह चाहता है कि हम रास्तबाज़ी
की ज़िंदगी गुज़ारें। क्योंकि आपको उसी के ज़ख़मों के वसीले से शफ़ा मिली है। [25] पहले आप आवारा भेड़ों की तरह
आवारा फिर रहे थे, लेकिन अब आप अपनी जानों के चरवाहे और निगरान के पास लौट आए हैं।

3

बीवी और शौहर

[1] इसी तरह आप बीवियों को भी अपने अपने शौहर के ताबे रहना है। क्योंकि इस तरह वह जो ईमान नहीं रखते
अपनी बीवी के चाल-चलन से जीते जा सकते हैं। कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रहेगी [2] क्योंकि वह देखेंगे कि आप
कितनी पाकीज़गी से ख़ुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदगी गुज़ारती हैं। [3] इसकी फ़िकर मत करना कि आप ज़ाहिरी तौर पर आरास्ता
हों, मसलन खास तौर-तरीक़ों से गुंधे हुए बालों से या सोने के ज़ेवर और शानदार लिबास पहनने से। [4] इसके बजाए
इसकी फ़िकर करें कि आपकी बातिनी शख़्सियत आरास्ता हो। क्योंकि जो रूह नरमदिली और सुकून के लाफ़ानी ज़ेवरों
से सजी हुई है वही अल्लाह के नज़दीक बेशक़ीमत है। [5] माज़ी में अल्लाह पर उम्मीद रखनेवाली मुक़द्दस ख़वातीन भी
इसी तरह अपना सिंगार किया करती थीं। यों वह अपने शौहरों के ताबे रहीं, [6] सारा की तरह जो अपने शौहर इब्राहीम
को आक़ा कहकर उस की मानती थी। आप तो सारा की बेटियाँ बन गई हैं। चुनाँचे नेक काम करें और किसी भी चीज़
से न डरें, ख़ाह वह कितनी ही डरावनी क्यों न हो।

[7] इस तरह लाज़िम है कि आप जो शौहर हैं समझ के साथ अपनी बीवियों के साथ ज़िंदगी गुज़ारें, यह जानकर कि
यह आपकी निसबत कमज़ोर हैं। उनकी इज़्ज़त करें, क्योंकि यह भी आपके साथ ज़िंदगी के फ़ज़ल की वारिस हैं।
ऐसा न हो कि इसमें बेपरवाई करने से आपकी दुआइया ज़िंदगी में रुकावट पैदा हो जाए।

नेक ज़िंदगी गुज़ारने की वजह से दुख

[8] आख़िर में एक और बात, आप सब एक ही सोच रखें और एक दूसरे से ताल्लुक़ात में हमदर्दी, प्यार, रहम और
हलीमी का इज़हार करें। [9] किसी के ग़लत काम के जवाब में ग़लत काम मत करना, न किसी की गालियों के जवाब
में गाली देना। इसके बजाए जवाब में ऐसे शख़्स को बरकत दें, क्योंकि अल्लाह ने आपको भी इसलिए बुलाया है कि
आप उस की बरकत विरासत में पाएँ। [10] कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है,

"कौन मज़े से ज़िंदगी गुज़ारना
और अच्छे दिन देखना चाहता है?
वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके
और अपने होंटों को झूट बोलने से।
[11] वह बुराई से मुँह फेरकर नेक काम करे,
सुलह-सलामती का तालिब होकर
उसके पीछे लगा रहे।
[12] क्योंकि रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं,
और उसके कान उनकी दुआओं की तरफ़ मायल हैं।
लेकिन रब का चेहरा उनके ख़िलाफ़ है जो ग़लत काम करते हैं।"

[13] अगर आप नेक काम करने में सरगरम हों तो कौन आपको नुक़सान पहुँचाएगा? [14] लेकिन अगर आपको रास्त
काम करने की वजह से दुख भी उठाना पड़े तो आप मुबारक हैं। उनकी धमकियों से मत डरना और मत घबराना
[15] बल्कि अपने दिलों में ख़ुदावंद मसीह को मख़सूसो-मुक़द्दस जानें। और जो भी आपसे आपकी मसीह पर उम्मीद के

बारे में पूछे हर वक़्त उसे जवाब देने के लिए तैयार रहें। लेकिन नरमदिली से और ख़ुदा के ख़ौफ़ के साथ जवाब दें।
16 साथ साथ आपका ज़मीर साफ़ हो। फिर जो लोग आपके मसीह में अच्छे चाल-चलन के बारे में ग़लत बातें कर रहे
हैं उन्हें अपनी तोहमत पर शर्म आएगी। 17 याद रहे कि ग़लत काम करने की वजह से दुख सहने की निसबत बेहतर
यह है कि हम नेक काम करने की वजह से तकलीफ़ उठाएँ, बशर्तेकि यह अल्लाह की मरज़ी हो। 18 क्योंकि मसीह ने
हमारे गुनाहों को मिटाने की ख़ातिर एक बार सदा के लिए मौत सही। हाँ, जो रास्तबाज़ है उसने यह नारास्तों के लिए
किया ताकि आपको अल्लाह के पास पहुँचाए। उसे बदन के एतबार से सज़ाए-मौत दी गई, लेकिन रूह के एतबार से
उसे ज़िंदा कर दिया गया। 19 इस रूह के ज़रीए उसने जाकर क़ैदी रूहों को पैग़ाम दिया। 20 यह उनकी रूहें थीं जो
उन दिनों में नाफ़रमान थे जब नूह अपनी कश्ती बना रहा था। उस वक़्त अल्लाह सब्र से इंतज़ार करता रहा, लेकिन
आख़िरकार सिर्फ़ चंद एक लोग यानी आठ अफ़राद पानी में से गुज़रकर बच निकले। 21 यह पानी उस बपतिस्मे की
तरफ़ इशारा है जो इस वक़्त आपको नजात दिलाता है। इससे जिस्म की गंदगी दूर नहीं की जाती बल्कि बपतिस्मा लेते
वक़्त हम अल्लाह से अर्ज़ करते हैं कि वह हमारा ज़मीर पाक-साफ़ कर दे। फिर यह आपको ईसा मसीह के जी उठने से
नजात दिलाता है। 22 अब मसीह आसमान पर जाकर अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया है जहाँ फ़रिश्ते, इख़्तियारवाले
और क़ुव्वतें उसके ताबे हैं।

4

तबदीलशुदा ज़िंदगियाँ

1 अब चूँकि मसीह ने जिस्मानी तौर पर दुख उठाया इसलिए आप भी अपने आपको उस की-सी सोच से लैस
करें। क्योंकि जिसने मसीह की ख़ातिर जिस्मानी तौर पर दुख सह लिया है उसने गुनाह से निपट लिया है। 2 नतीजे में
वह ज़मीन पर अपनी बाक़ी ज़िंदगी इनसान की बुरी ख़ाहिशात पूरी करने में नहीं गुज़ारेगा बल्कि अल्लाह की मरज़ी
पूरी करने में। 3 माज़ी में आपने काफ़ी वक़्त वह कुछ करने में गुज़ारा जो ग़ैरईमानदार पसंद करते हैं यानी ऐयाशी,
शहवतपरस्ती, नशाबाज़ी, शराबनोशी, रंगरलियों, नाच-रंग और घिनौनी बुतपरस्ती में। 4 अब आपके ग़ैरईमानदार दोस्त
ताज्जुब करते हैं कि आप उनके साथ मिलकर ऐयाशी के इस तेज़ धारे में छलाँग नहीं लगाते। इसलिए वह आप पर
कुफ़र बकते हैं। 5 लेकिन उन्हें अल्लाह को जवाब देना पड़ेगा जो ज़िंदों और मुरदों की अदालत करने के लिए तैयार
खड़ा है। 6 यही वजह है कि अल्लाह की ख़ुशख़बरी उन्हें भी सुनाई गई जो अब मुरदा हैं। मक़सद यह था कि वह
अल्लाह के सामने रूह में ज़िंदगी गुज़ार सकें अगरचे इनसानी लिहाज़ से उनके जिस्म की अदालत की गई है।

अपनी नेमतों से एक दूसरे की ख़िदमत करें

7 तमाम चीज़ों का ख़ातमा क़रीब आ गया है। चुनाँचे दुआ करने के लिए चुस्त और होशमंद रहें। 8 सबसे ज़रूरी
बात यह है कि आप एक दूसरे से लगातार मुहब्बत रखें, क्योंकि मुहब्बत गुनाहों की बड़ी तादाद पर परदा डाल देती
है। 9 बुड़बुड़ाए बग़ैर एक दूसरे की मेहमान-नवाज़ी करें। 10 अल्लाह अपना फ़ज़ल मुख़्तलिफ़ नेमतों से ज़ाहिर करता
है। फ़ज़ल का यह इंतज़ाम वफ़ादारी से चलाते हुए एक दूसरे की ख़िदमत करें, हर एक उस नेमत से जो उसे मिली है।
11 अगर कोई बोले तो अल्लाह के-से अलफ़ाज़ के साथ बोले। अगर कोई ख़िदमत करे तो उस ताक़त के ज़रीए जो
अल्लाह उसे मुहैया करता है, क्योंकि इस तरह ही अल्लाह को ईसा मसीह के वसीले से जलाल दिया जाएगा। अज़ल
से अबद तक जलाल और क़ुदरत उसी की हो! आमीन।

आपकी मुसीबत ग़ैरमामूली नहीं है

12 अज़ीज़ो, ईज़ारसानी की उस आग पर ताज्जुब न करें जो आपको आज़माने के लिए आप पर आन पड़ी है। यह
मत सोचना कि मेरे साथ कैसी ग़ैरमामूली बात हो रही है। 13 बल्कि ख़ुशी मनाएँ कि आप मसीह के दुखों में शरीक
हो रहे हैं। क्योंकि फिर आप उस वक़्त भी ख़ुशी मनाएँगे जब मसीह का जलाल ज़ाहिर होगा। 14 अगर लोग इसलिए
आपकी बेइज़्ज़ती करते हैं कि आप मसीह के पैरोकार हैं तो आप मुबारक हैं। क्योंकि इसका मतलब है कि अल्लाह
का जलाली रूह आप पर ठहरा हुआ है। 15 अगर आपमें से किसी को दुख उठाना पड़े तो यह इसलिए नहीं होना
चाहिए कि आप क़ातिल, चोर, मुजरिम या फ़सादी हैं। 16 लेकिन अगर आपको मसीह के पैरोकार होने की वजह से
दुख उठाना पड़े तो न शर्माएँ बल्कि मसीह के नाम में अल्लाह की हम्दो-सना करें।

17 क्योंकि अब वक़्त आ गया है कि अल्लाह की अदालत शुरू हो जाए, और पहले उसके घरवालों की अदालत
की जाएगी। अगर ऐसा है तो फिर इसका अंजाम उनके लिए क्या होगा जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी के ताबे नहीं हैं?
18 और अगर रास्तबाज़ मुश्किल से बचेंगे तो फिर बेदीन और गुनाहगार का क्या होगा? 19 चुनाँचे जो अल्लाह की

मरज़ी से दुख उठा रहे हैं वह नेक काम करने से बाज़ न आएँ बल्कि अपनी जानों को उसी के हवाले करें जो उनका वफ़ादार ख़ालिक़ है।

5

अल्लाह का गल्ला

1 अब मैं आपको जो जमातों के बुज़ुर्ग हैं नसीहत करना चाहता हूँ। मैं ख़ुद भी बुज़ुर्ग हूँ बल्कि मसीह के दुखों का
गवाह भी हूँ, और मैं आपके साथ उस आनेवाले जलाल में शरीक हो जाऊँगा जो ज़ाहिर हो जाएगा। इस हैसियत से मैं
आपसे अपील करता हूँ, 2 गल्लाबान होते हुए अल्लाह के उस गल्ले की देख-भाल करें जो आपके सुपुर्द किया गया
है। यह ख़िदमत मजबूरन न करें बल्कि ख़ुशी से, क्योंकि यह अल्लाह की मरज़ी है। लालच के बग़ैर पूरी लग्न से यह
ख़िदमत सरंजाम दें। 3 जिन्हें आपके सुपुर्द किया गया है उन पर हुकूमत मत करना बल्कि गल्ले के लिए अच्छा नमूना
बनें। 4 फिर जब हमारा सरदार गल्लाबान ज़ाहिर होगा तो आपको जलाल का ग़ैरफ़ानी ताज मिलेगा।

5 इसी तरह लाज़िम है कि आप जो जवान हैं बुज़ुर्गों के ताबे रहें। सब इंकिसारी का लिबास पहनकर एक दूसरे की
ख़िदमत करें, क्योंकि अल्लाह मग़रूरों का मुक़ाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है। 6 चुनाँचे अल्लाह
के क़ादिर हाथ के नीचे झुक जाएँ ताकि वह मौज़ूँ वक़्त पर आपको सरफ़राज़ करे। 7 अपनी तमाम परेशानियाँ उस पर
डाल दें, क्योंकि वह आपकी फ़िकर करता है।

8 होशमंद रहें, जागते रहें। आपका दुश्मन इबलीस गरजते हुए शेरबबर की तरह घुमता-फिरता और किसी को हड़प
कर लेने की तलाश में रहता है। 9 ईमान में मज़बूत रहकर उसका मुक़ाबला करें। आपको तो मालूम है कि पूरी दुनिया में
आपके भाई इसी क़िस्म का दुख उठा रहे हैं। 10 लेकिन आपको ज़्यादा देर के लिए दुख उठाना नहीं पड़ेगा। क्योंकि
हर तरह के फ़ज़ल का ख़ुदा जिसने आपको मसीह में अपने अबदी जलाल में शरीक होने के लिए बुलाया है वह ख़ुद
आपको कामिलियत तक पहुँचाएगा, मज़बूत बनाएगा, तक़वियत देगा और एक ठोस बुनियाद पर खड़ा करेगा। 11 अबद
तक क़ुदरत उसी को हासिल रहे। आमीन।

आख़िरी सलाम

12 मैं आपको यह मुख़तसर ख़त सिलवानुस की मदद से लिख रहा हूँ जिसे मैं वफ़ादार भाई समझता हूँ। मैं इससे
आपकी हौसलाअफ़्ज़ाई और इसकी तसदीक़ करना चाहता हूँ कि यही अल्लाह का हक़ीक़ी फ़ज़ल है। इस पर क़ायम
रहें।

13 बाबल में जो जमात अल्लाह ने आपकी तरह चुनी है वह आपको सलाम कहती है, और इसी तरह मेरा बेटा
मरक़ुस भी। 14 एक दूसरे को मुहब्बत का बोसा देना।

आप सबकी जो मसीह में हैं सलामती हो।

2 पतरस

1 यह ख़त ईसा मसीह के ख़ादिम और रसूल शमौन पतरस की तरफ़ से है।
मैं उन सबको लिख रहा हूँ जिन्हें हमारे ख़ुदा और नजातदहिंदा ईसा मसीह की रास्तबाज़ी के वसीले से वही बेशक़ीमत
ईमान बख़्शा गया है जो हमें भी मिला।
2 ख़ुदा करे कि आप उसे और हमारे ख़ुदावंद ईसा को जानने में तरक़्क़ी करते करते कसरत से फ़ज़ल और सलामती
पाते जाएँ।

अल्लाह का बुलावा

3 अल्लाह ने अपनी इलाही क़ुदरत से हमें वह सब कुछ अता किया है जो ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारने के लिए ज़रूरी
है। और हमें यह उसे जान लेने से हासिल हुआ है। क्योंकि उसने हमें अपने ज़ाती जलाल और क़ुदरत के ज़रीए बुलाया
है। 4 इस जलाल और क़ुदरत से उसने हमें वह अज़ीम और बेशक़ीमत चीज़ें दी हैं जिनका वादा उसने किया था।
क्योंकि वह चाहता था कि आप इनसे दुनिया की बुरी ख़ाहिशात से पैदा होनेवाले फ़साद से बचकर उस की इलाही
ज़ात में शरीक हो जाएँ। 5 यह सब कुछ पेशे-नज़र रखकर पूरी लग्न से कोशिश करें कि आपके ईमान से अख़लाक़ पैदा
हो जाए, अख़लाक़ से इल्म, 6 इल्म से ज़ब्ते-नफ़स, ज़ब्ते-नफ़स से साबितक़दमी, साबितक़दमी से ख़ुदातरस ज़िंदगी,
7 ख़ुदातरस ज़िंदगी से बरादराना शफ़क़त और बरादराना शफ़क़त से सबके लिए मुहब्बत। 8 क्योंकि जितना ही आप
इन ख़ूबियों में बढ़ते जाएंगे उतना ही यह आपको इससे महफ़ूज़ रखेंगी कि आप हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह को जानने में
सुस्त और बेफल रहें। 9 लेकिन जिसमें यह ख़ूबियाँ नहीं हैं उस की नज़र इतनी कमज़ोर है कि वह अंधा है। वह भूल
गया है कि उसे उसके गुज़रे गुनाहों से पाक-साफ़ किया गया है।
10 चुनाँचे भाइयो, मज़ीद लग्न से अपने बुलावे और चुनाव की तसदीक़ करने में कोशाँ रहें। क्योंकि यह करने
से आप गिर जाने से बचेंगे 11 और अल्लाह बड़ी ख़ुशी से आपको हमारे ख़ुदावंद और नजातदहिंदा ईसा मसीह की
बादशाही में दाख़िल होने की इजाज़त देगा।
12 इसलिए मैं हमेशा आपको इन बातों की याद दिलाता रहूँगा, हालाँकि आप इनसे वाक़िफ़ हैं और मज़बूती से उस
सच्चाई पर क़ायम हैं जो आपको मिली है। 13 बल्कि मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ कि जितनी और देर मैं जिस्म की
इस झोंपड़ी में रहता हूँ आपको इन बातों की याद दिलाने से उभारता रहूँ। 14 क्योंकि मुझे मालूम है कि अब मेरी यह
झोंपड़ी जल्द ही ढा दी जाएगी। हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह ने भी मुझ पर यह ज़ाहिर किया था। 15 लेकिन मैं पूरी
कोशिश करूँगा कि मेरे कूच कर जाने के बाद भी आप हर वक़्त इन बातों को याद रख सकें।

मसीह के जलाल के गवाह

16 क्योंकि जब हमने आपको अपने और आपके ख़ुदावंद मसीह की क़ुदरत और आमद के बारे में बताया तो हम
चालाकी से घड़े क़िस्से-कहानियों पर इनहिसार नहीं कर रहे थे बल्कि हमने यह गवाहों की हैसियत से बताया। क्योंकि
हमने अपनी ही आँखों से उस की अज़मत देखी थी। 17 हम मौजूद थे जब उसे ख़ुदा बाप से इज़्ज़तो-जलाल मिला, जब
एक आवाज़ ने अल्लाह की पुरजलाल शान से आकर कहा, "यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है जिससे मैं ख़ुश हूँ।" 18 जब
हम उसके साथ मुक़द्दस पहाड़ पर थे तो हमने ख़ुद यह आवाज़ आसमान से आती सुनी।
19 इस तजरबे की बिना पर हमारा नबियों के पैग़ाम पर एतमाद ज़्यादा मज़बूत है। आप अच्छा करेंगे अगर इस
पर ख़ूब ध्यान दें। क्योंकि यह किसी तारीक जगह में रौशनी की मानिंद है जो उस वक़्त तक चमकती रहेगी जब तक
पौ फटकर सुबह का सितारा आपके दिलों में तुलू न हो जाए। 20 सबसे बढ़कर आपको यह समझने की ज़रूरत है कि
कलामे-मुक़द्दस की कोई भी पेशगोई नबी की अपनी ही तफ़सीर से पैदा नहीं होती। 21 क्योंकि कोई भी पेशगोई कभी
भी इनसान की तहरीक से वुजूद में नहीं आई बल्कि पेशगोई करते वक़्त इनसानों ने रूहुल-क़ुद्स से तहरीक पाकर
अल्लाह की तरफ़ से बात की।

2

झूटे उस्ताद

1 लेकिन जिस तरह माज़ी में इसराईल क़ौम में झूटे नबी भी थे, उसी तरह आपमें से भी झूटे उस्ताद खड़े हो जाएंगे।
यह ख़ुदा की जमातों में मोहलक तालीमात फैलाएँगे बल्कि अपने मालिक को जानने से इनकार भी करेंगे जिसने उन्हें
ख़रीद लिया था। ऐसी हरकतों से यह जल्द ही अपने आप पर हलाकत लाएँगे। 2 बहुत-से लोग उनकी ऐयाश हरकतों

की पैरवी करेंगे, और इस वजह से दूसरे सच्चाई की राह पर कुफ़्र बकेंगे। 3 लालच के सबब से यह उस्ताद आपको
फ़रज़ी कहानियाँ सुनाकर आपकी लूट-खसोट करेंगे। लेकिन अल्लाह ने बड़ी देर से उन्हें मुजरिम ठहराया, और उसका
फ़ैसला सुस्तरफ़्तार नहीं है। हाँ, उनका मुंसिफ़ ऊँघ नहीं रहा बल्कि उन्हें हलाक करने के लिए तैयार खड़ा है।
4 देखें, अल्लाह ने उन फ़रिश्तों को बचने न दिया जिन्होंने गुनाह किया बल्कि उन्हें तारीकी की ज़ंजीरों में बाँधकर
जहन्नुम में डाल दिया जहाँ वह अदालत के दिन तक महफ़ूज़ रहेंगे। 5 इसी तरह उसने क़दीम दुनिया को बचने न दिया
बल्कि उसके बेदीन बाशिंदों पर सैलाब को आने दिया। उसने सिर्फ़ रास्तबाज़ी के पैग़ंबर नूह को सात और जानों समेत
बचाया। 6 और उसने सदूम और अमूरा के शहरों को मुजरिम क़रार देकर राख कर दिया। यों अल्लाह ने उन्हें इबरत
बनाकर दिखाया कि बेदीनों के साथ क्या कुछ किया जाएगा। 7 साथ साथ उसने लूत को बचाया जो रास्तबाज़ था और
बेउसूल लोगों के गंदे चाल-चलन देख देखकर पिसता रहा। 8 क्योंकि यह रास्तबाज़ आदमी उनके दरमियान बसता था,
और उस की रास्तबाज़ जान रोज़ बरोज़ उनकी शरीर हरकतें देख और सुनकर सख़्त अज़ाब में फँसी रही। 9 यों ज़ाहिर
है कि रब दीनदार लोगों को आज़माइश से बचाना और बेदीनों को अदालत के दिन तक सज़ा के तहत रखना जानता है,
10 ख़ासकर उन्हें जो अपने जिस्म की गंदी ख़ाहिशात के पीछे लगे रहते और ख़ुदावंद के इख़्तियार को हक़ीर जानते
हैं।

यह लोग गुस्ताख़ और मग़रूर हैं और जलाली हस्तियों पर कुफ़्र बकने से नहीं डरते। 11 इसके मुक़ाबले में फ़रिश्ते
भी जो कहीं ज़्यादा ताक़तवर और क़वी हैं रब के हुज़ूर ऐसी हस्तियों पर बुहतान और इलज़ामात लगाने की जुर्रत नहीं
करते। 12 लेकिन यह झूटे उस्ताद बेअक़्ल जानवरों की मानिंद हैं, जो फ़ितरी तौर पर इसलिए पैदा हुए हैं कि उन्हें
पकड़ा और ख़त्म किया जाए। जो कुछ वह नहीं समझते उस पर वह कुफ़्र बकते हैं। और जंगली जानवरों की तरह
वह भी हलाक हो जाएंगे। 13 यों जो नुक़सान उन्होंने दूसरों को पहुँचाया वही उन्हें ख़ुद भुगतना पड़ेगा। उनके नज़दीक
लुत्फ़ उठाने से मुराद यह है कि दिन के वक़्त खुलकर ऐश करें। वह दाग़ और धब्बे हैं जो आपकी ज़ियाफ़तों में शरीक
होकर अपनी दग़ाबाज़ियों की रंगरलियाँ मनाते हैं। 14 उनकी आँखें हर वक़्त किसी बदकार औरत से ज़िना करने की
तलाश में रहती हैं और गुनाह करने से कभी नहीं रुकतीं। वह कमज़ोर लोगों को ग़लत काम करने के लिए उकसाते
और लालच करने में माहिर हैं। उन पर अल्लाह की लानत! 15 वह सहीह राह से हटकर आवारा फिर रहे और बिलाम
बिन बओर के नक़्शे-क़दम पर चल रहे हैं, क्योंकि बिलाम ने पैसों के लालच में ग़लत काम किया। 16 लेकिन गधी ने
उसे इस गुनाह के सबब से डाँटा। इस जानवर ने जो बोलने के क़ाबिल नहीं था इनसान की-सी आवाज़ में बात की और
नबी को उस की दीवानगी से रोक दिया।

17 यह लोग सूखे हुए चश्मे और आँधी से धकेले हुए बादल हैं। इनकी तक़दीर अंधेरे का तारीकतरीन हिस्सा है।
18 यह मग़रूर बातें करते हैं जिनके पीछे कुछ नहीं है और ग़ैरअख़लाक़ी जिस्मानी शहवतों से ऐसे लोगों को उकसाते
हैं जो हाल ही में धोके की ज़िंदगी गुज़ारनेवालों में से बच निकले हैं। 19 यह उन्हें आज़ाद करने का वादा करते हैं
जबकि ख़ुद बदकारी के ग़ुलाम हैं। क्योंकि इनसान उसी का ग़ुलाम है जो उस पर ग़ालिब आ गया है। 20 और जो हमारे
ख़ुदावंद और नजातदहिंदा ईसा मसीह को जान लेने से इस दुनिया की आलूदगी से बच निकलते हैं, लेकिन बाद में एक
बार फिर इसमें फँसकर मग़लूब हो जाते हैं उनका अंजाम पहले की निसबत ज़्यादा बुरा हो जाता है। 21 हाँ, जिन लोगों
ने रास्तबाज़ी की राह को जान लिया, लेकिन बाद में उस मुक़द्दस हुक्म से मुँह फेर लिया जो उनके हवाले किया गया था,
उनके लिए बेहतर होता कि वह इस राह से कभी वाक़िफ़ न होते। 22 उन पर यह मुहावरा सादिक़ आता है कि "कुत्ता
अपनी क़ै के पास वापस आ जाता है।" और यह भी कि "सुअरनी नहाने के बाद दुबारा कीचड़ में लोटने लगती है।"

3

ख़ुदावंद की आमद का वादा

1 अज़ीज़ो, यह अब दूसरा ख़त है जो मैंने आपको लिख दिया है। दोनों ख़तों में मैंने कई बातों की याद दिलाकर
आपके ज़हनों में पाक सोच उभारने की कोशिश की। 2 मैं चाहता हूँ कि आप वह कुछ याद रखें जिसकी पेशगोई
मुक़द्दस नबियों ने की थी और साथ साथ हमारे ख़ुदावंद और नजातदहिंदा का वह हुक्म भी जो आपको अपने रसूलों
की मारिफ़त मिला। 3 अव्वल आपको यह बात समझने की ज़रूरत है कि इन आख़िरी दिनों में ऐसे लोग आएँगे जो
मज़ाक़ उड़ाकर अपनी शहवतों के क़ब्ज़े में रहेंगे। 4 वह पूछेंगे, "ईसा ने आने का वादा तो किया, लेकिन वह कहाँ है?
हमारे बापदादा तो मर चुके हैं, और दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक सब कुछ वैसे का वैसा ही है।" 5 लेकिन
यह लोग नज़रंदाज़ करते हैं कि क़दीम ज़माने में अल्लाह के हुक्म पर आसमानों की तख़लीक़ हुई और ज़मीन पानी में
से और पानी के ज़रीए वुजूद में आई। 6 इसी पानी के ज़रीए क़दीम ज़माने की दुनिया पर सैलाब आया और सब कुछ

तबाह हुआ। 7 और अल्लाह के इसी हुक्म ने मौजूदा आसमान और ज़मीन को आग के लिए महफ़ूज़ कर रखा है, उस
दिन के लिए जब बेदीन लोगों की अदालत की जाएगी और वह हलाक हो जाएंगे।

8 लेकिन मेरे अज़ीज़ो, एक बात आपसे पोशीदा न रहे। ख़ुदावंद के नज़दीक एक दिन हज़ार साल के बराबर है और
हज़ार साल एक दिन के बराबर। 9 ख़ुदावंद अपना वादा पूरा करने में देर नहीं करता जिस तरह कुछ लोग समझते हैं
बल्कि वह तो आपकी ख़ातिर सब्र कर रहा है। क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई हलाक हो जाए बल्कि यह कि सब
तौबा की नौबत तक पहुँचें।

10 लेकिन ख़ुदावंद का दिन चोर की तरह आएगा। आसमान बड़े शोर के साथ ख़त्म हो जाएंगे, अजरामे-फ़लकी
आग में पिघल जाएंगे और ज़मीन उसके कामों समेत ज़ाहिर होकर अदालत में पेश की जाएगी। 11 अब सोचें, अगर
सब कुछ इस तरह ख़त्म हो जाएगा तो फिर आप किस क़िस्म के लोग होने चाहिएँ? आपको मुक़द्दस और ख़ुदातरस
ज़िंदगी गुज़ारते हुए 12 अल्लाह के दिन की राह देखनी चाहिए। हाँ, आपको यह कोशिश करनी चाहिए कि वह दिन
जल्दी आए जब आसमान जल जाएंगे और अजरामे-फ़लकी आग में पिघल जाएंगे। 13 लेकिन हम उन नए आसमानों
और नई ज़मीन के इंतज़ार में हैं जिनका वादा अल्लाह ने किया है। और वहाँ रास्ती सुकूनत करेगी।

14 चुनाँचे अज़ीज़ो, चूँकि आप इस इंतज़ार में हैं इसलिए पूरी लगन के साथ कोशाँ रहें कि आप अल्लाह के नज़दीक
बेदाग़ और बेइलज़ाम ठहरें और आपकी उसके साथ सुलह हो। 15 याद रखें कि हमारे ख़ुदावंद का सब्र लोगों को नजात
पाने का मौक़ा देता है। हमारे अज़ीज़ भाई पौलुस ने भी उस हिकमत के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उसे अता की है आपको
यही कुछ लिखा है। 16 वह यही कुछ अपने तमाम ख़तों में लिखता है जब वह इस मज़मून का ज़िक्र करता है। उसके
ख़तों में कुछ ऐसी बातें हैं जो समझने में मुश्किल हैं और जिन्हें जाहिल और कमज़ोर लोग तोड़-मरोड़कर बयान करते
हैं, बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह बाक़ी सहीफ़ों के साथ भी करते हैं। लेकिन इससे वह अपने आपको ही हलाक
कर रहे हैं।

17 मेरे अज़ीज़ो, मैं आपको वक़्त से पहले इन बातों से आगाह कर रहा हूँ। इसलिए ख़बरदार रहें ताकि बेउसूल
लोगों की ग़लत सोच आपको बहकाकर आपको महफ़ूज़ मक़ाम से हटा न दे। 18 इसके बजाए हमारे ख़ुदावंद और
नजातदहिंदा ईसा मसीह के फ़ज़ल और इल्म में तरक़्क़ी करते रहें। उसे अब और अबद तक जलाल हासिल होता रहे!
आमीन।

1 यूहन्ना

ज़िंदगी का कलाम
1 हम आपको उस की मुनादी करते हैं जो इब्तिदा से था, जिसे हमने अपने कानों से सुना, अपनी आँखों से देखा,
जिसका मुशाहदा हमने किया और जिसे हमने अपने हाथों से छुआ। वही ज़िंदगी का कलाम है। 2 वह जो ख़ुद ज़िंदगी
था ज़ाहिर हुआ, हमने उसे देखा। और अब हम गवाही देकर आपको उस अबदी ज़िंदगी की मुनादी करते हैं जो ख़ुदा
बाप के पास थी और हम पर ज़ाहिर हुई है। 3 हम आपको वह कुछ सुनाते हैं जो हमने ख़ुद देख और सुन लिया है ताकि
आप भी हमारी रिफ़ाक़त में शरीक हो जाएँ। और हमारी रिफ़ाक़त ख़ुदा बाप और उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह के साथ
है। 4 हम यह इसलिए लिख रहे हैं ताकि हमारी ख़ुशी पूरी हो जाए।

अल्लाह नूर है
5 जो पैग़ाम हमने उससे सुना और आपको सुना रहे हैं वह यह है, अल्लाह नूर है और उसमें तारीकी है ही नहीं।
6 जब हम तारीकी में चलते हुए अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त रखने का दावा करते हैं तो हम झूट बोल रहे और सच्चाई
के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ार रहे। 7 लेकिन जब हम नूर में चलते हैं, बिलकुल उसी तरह जिस तरह अल्लाह नूर में
है, तो फिर हम एक दूसरे के साथ रिफ़ाक़त रखते हैं और उसके फ़रज़ंद ईसा का ख़ून हमें तमाम गुनाहों से पाक-साफ़
कर देता है।
8 अगर हम गुनाह से पाक होने का दावा करें तो हम अपने आपको फ़रेब देते हैं और हममें सच्चाई नहीं है। 9 लेकिन
अगर हम अपने गुनाहों का इक़रार करें तो वह वफ़ादार और रास्त साबित होगा। वह हमारे गुनाहों को मुआफ़ करके
हमें तमाम नारास्ती से पाक-साफ़ करेगा। 10 अगर हम दावा करें कि हमने गुनाह नहीं किया तो हम उसे झूटा क़रार देते
हैं और उसका कलाम हमारे अंदर नहीं है।

2

मसीह हमारी शफ़ाअत करता है
1 मेरे बच्चो, मैं आपको यह इसलिए लिख रहा हूँ कि आप गुनाह न करें। लेकिन अगर कोई गुनाह करे तो एक है
जो ख़ुदा बाप के सामने हमारी शफ़ाअत करता है, ईसा मसीह जो रास्त है। 2 वही हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा देनेवाली
क़ुरबानी है, और न सिर्फ़ हमारे गुनाहों का बल्कि पूरी दुनिया के गुनाहों का भी।
3 इससे हमें पता चलता है कि हमने उसे जान लिया है, जब हम उसके अहकाम पर अमल करते हैं। 4 जो कहता है,
"मैं उसे जानता हूँ" लेकिन उसके अहकाम पर अमल नहीं करता वह झूटा है और सच्चाई उसमें नहीं है। 5 लेकिन
जो उसके कलाम की पैरवी करता है उसमें अल्लाह की मुहब्बत हक़ीक़तन तकमील तक पहुँच गई है। इससे हमें पता
चलता है कि हम उसमें हैं। 6 जो कहता है कि वह उसमें क़ायम है उसके लिए लाज़िम है कि वह यों चले जिस तरह
ईसा चलता था।

एक नया हुक्म
7 अज़ीज़ो, मैं आपको कोई नया हुक्म नहीं लिख रहा, बल्कि वही पुराना हुक्म जो आपको शुरू से मिला है। यह
पुराना हुक्म वही पैग़ाम है जो आपने सुन लिया है। 8 लेकिन दूसरी तरफ़ से यह हुक्म नया भी है, और इसकी सच्चाई
मसीह और आपमें ज़ाहिर हुई है। क्योंकि तारीकी ख़त्म होनेवाली है और हक़ीक़ी रौशनी चमकने लग गई है।
9 जो नूर में होने का दावा करके अपने भाई से नफ़रत करता है वह अब तक तारीकी में है। 10 जो अपने भाई से
मुहब्बत रखता है वह नूर में रहता है और उसमें कोई भी चीज़ नहीं पाई जाती जो ठोकर का बाइस बन सके। 11 लेकिन
जो अपने भाई से नफ़रत करता है वह तारीकी ही में है और अंधेरे में चलता-फिरता है। उसको यह नहीं मालूम कि वह
कहाँ जा रहा है, क्योंकि तारीकी ने उसे अंधा कर रखा है।
12 प्यारे बच्चो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपके गुनाहों को उसके नाम की ख़ातिर मुआफ़ कर दिया
गया है। 13 वालिदो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने उसे जान लिया है जो इब्तिदा ही से है। जवान मर्दो,
मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आप इबलीस पर ग़ालिब आ गए हैं। बच्चो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि
आपने बाप को जान लिया है। 14 वालिदो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने उसे जान लिया है जो इब्तिदा

ही से है। जवान मर्दो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आप मज़बूत हैं। अल्लाह का कलाम आपमें बसता है और
आप इबलीस पर ग़ालिब आ गए हैं।
15 दुनिया को प्यार मत करना, न किसी चीज़ को जो दुनिया में है। अगर कोई दुनिया को प्यार करे तो ख़ुदा बाप
की मुहब्बत उसमें नहीं है। 16 क्योंकि जो भी चीज़ दुनिया में है वह बाप की तरफ़ से नहीं बल्कि दुनिया की तरफ़
से है, ख़ाह वह जिस्म की बुरी ख़ाहिशात, आँखों का लालच या अपनी मिलकियत पर फ़ख़र हो। 17 दुनिया और उस
की वह चीज़ें जो इनसान चाहता है ख़त्म हो रही हैं, लेकिन जो अल्लाह की मरज़ी पूरी करता है वह अबद तक जीता
रहेगा।

मसीह का दुश्मन

18 बच्चो, अब आख़िरी घड़ी आ पहुँची है। आपने ख़ुद सुन लिया है कि मुख़ालिफ़े-मसीह आ रहा है, और हक़ीक़तन
बहुत-से ऐसे मुख़ालिफ़े-मसीह आ चुके हैं। इससे हमें पता चलता है कि आख़िरी घड़ी आ गई है। 19 यह लोग हममें से
निकले तो हैं, लेकिन हक़ीक़त में हममें से नहीं थे। क्योंकि अगर वह हममें से होते तो वह हमारे साथ ही रहते। लेकिन
हमें छोड़ने से ज़ाहिर हुआ कि सब हममें से नहीं हैं।
20 लेकिन आप फ़रक़ हैं। आपको उससे जो क़ुद्दूस है रूह का मसह मिल गया है, और आप पूरी सच्चाई को जानते
हैं। 21 मैं आपको इसलिए नहीं लिख रहा कि आप सच्चाई को नहीं जानते बल्कि इसलिए कि आप सच्चाई जानते हैं
और कि कोई भी झूट सच्चाई की तरफ़ से नहीं आ सकता।
22 कौन झूटा है? वह जो ईसा के मसीह होने का इनकार करता है। मुख़ालिफ़े-मसीह ऐसा शख़्स है। वह बाप और
फ़रज़ंद का इनकार करता है। 23 जो फ़रज़ंद का इनकार करता है उसके पास बाप भी नहीं है, और जो फ़रज़ंद का
इक़रार करता है उसके पास बाप भी है।
24 चुनाँचे लाज़िम है कि जो कुछ आपने इब्तिदा से सुना वह आपमें रहे। अगर वह आपमें रहे तो आप भी फ़रज़ंद
और बाप में रहेंगे। 25 और जो वादा उसने हमसे किया है वह है अबदी ज़िंदगी।
26 मैं आपको यह उनके बारे में लिख रहा हूँ जो आपको सहीह राह से हटाने की कोशिश कर रहे हैं। 27 लेकिन
आपको उससे रूह का मसह मिल गया है। वह आपके अंदर बसता है, इसलिए आपको इसकी ज़रूरत ही नहीं कि कोई
आपको तालीम दे। क्योंकि मसीह का रूह आपको सब बातों के बारे में तालीम देता है और जो कुछ भी वह सिखाता
है वह सच है, झूट नहीं। चुनाँचे जिस तरह उसने आपको तालीम दी है, उसी तरह मसीह में रहें।
28 और अब प्यारे बच्चो, उसमें क़ायम रहें ताकि उसके ज़ाहिर होने पर हम पूरे एतमाद के साथ उसके सामने खड़े
हो सकें और उस की आमद पर शरमिंदा न होना पड़े। 29 अगर आप जानते हैं कि मसीह रास्तबाज़ है तो आप यह भी
जानते हैं कि जो भी रास्त काम करता है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है।

3

अल्लाह के फ़रज़ंद

1 ध्यान दें कि बाप ने हमसे कितनी मुहब्बत की है, यहाँ तक कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद कहलाते हैं। और हम
वाक़ई हैं भी। इसलिए दुनिया हमें नहीं जानती। वह तो उसे भी नहीं जानती। 2 अज़ीज़ो, अब हम अल्लाह के फ़रज़ंद
हैं, और जो कुछ हम होंगे वह अभी तक ज़ाहिर नहीं हुआ है। लेकिन इतना हम जानते हैं कि जब वह ज़ाहिर हो जाएगा
तो हम उस की मानिंद होंगे। क्योंकि हम उसका मुशाहदा वैसे ही करेंगे जैसा वह है। 3 जो भी मसीह में यह उम्मीद
रखता है वह अपने आपको पाक-साफ़ रखता है, वैसे ही जैसा मसीह ख़ुद है।
4 जो गुनाह करता है वह शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी करता है। हाँ, गुनाह शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी ही है। 5 लेकिन
आप जानते हैं कि ईसा हमारे गुनाहों को उठा ले जाने के लिए ज़ाहिर हुआ। और उसमें गुनाह नहीं है। 6 जो उसमें
क़ायम रहता है वह गुनाह नहीं करता। और जो गुनाह करता रहता है न तो उसने उसे देखा है, न उसे जाना है।
7 प्यारे बच्चो, किसी को इजाज़त न दें कि वह आपको सहीह राह से हटा दे। जो रास्त काम करता है वह रास्तबाज़,
हाँ मसीह जैसा रास्तबाज़ है। 8 जो गुनाह करता है वह इबलीस से है, क्योंकि इबलीस शुरू ही से गुनाह करता आया
है। अल्लाह का फ़रज़ंद इसी लिए ज़ाहिर हुआ कि इबलीस का काम तबाह करे।
9 जो भी अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है वह गुनाह नहीं करेगा, क्योंकि अल्लाह की फ़ितरत
उसमें रहती है। वह गुनाह कर ही नहीं सकता क्योंकि वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है। 10 इससे
पता चलता है कि अल्लाह के फ़रज़ंद कौन हैं और इबलीस के फ़रज़ंद कौन : जो रास्त काम नहीं करता, न अपने भाई
से मुहब्बत रखता है, वह अल्लाह का फ़रज़ंद नहीं है।

एक दूसरे से मुहब्बत रखना

11 क्योंकि यही वह पैग़ाम है जो आपने शुरू से सुन रखा है, कि हमें एक दूसरे से मुहब्बत रखना है। 12 क़ाबील की
तरह न हों, जो इबलीस का था और जिसने अपने भाई को क़त्ल किया। और उसने उसको क़त्ल क्यों किया? इसलिए
कि उसका काम बुरा था जबकि भाई का काम रास्त था।

13 चुनाँचे भाइयो, जब दुनिया आपसे नफ़रत करती है तो हैरान न हो जाएँ। 14 हम तो जानते हैं कि हम मौत से
निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गए हैं। हम यह इसलिए जानते हैं कि हम अपने भाइयों से मुहब्बत रखते हैं। जो
मुहब्बत नहीं रखता वह अब तक मौत की हालत में है। 15 जो भी अपने भाई से नफ़रत रखता है वह क़ातिल है। और
आप जानते हैं कि जो क़ातिल है उसमें अबदी ज़िंदगी नहीं रहती। 16 इससे ही हमने मुहब्बत को जाना है कि मसीह ने
हमारी ख़ातिर अपनी जान दे दी। और हमारा भी फ़र्ज़ यही है कि अपने भाइयों की ख़ातिर अपनी जान दें। 17 अगर
किसी के माली हालात ठीक हों और वह अपने भाई की ज़रूरतमंद हालत को देखकर रहम न करे तो उसमें अल्लाह
की मुहब्बत किस तरह क़ायम रह सकती है? 18 प्यारे बच्चो, आएँ हम अलफ़ाज़ और बातों से मुहब्बत का इज़हार न
करें बल्कि हमारी मुहब्बत अमली और हक़ीक़ी हो।

अल्लाह के हुज़ूर पूरा एतमाद

19 ग़रज़ इससे हम जान लेते हैं कि हम सच्चाई की तरफ़ से हैं, और यों ही हम अपने दिल को तसल्ली दे सकते हैं
20 जब वह हमें मुजरिम ठहराता है। क्योंकि अल्लाह हमारे दिल से बड़ा है और सब कुछ जानता है। 21 और अज़ीज़ो,
जब हमारा दिल हमें मुजरिम नहीं ठहराता तो हम पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आ सकते हैं 22 और वह कुछ
पाते हैं जो उससे माँगते हैं। क्योंकि हम उसके अहकाम पर चलते हैं और वही कुछ करते हैं जो उसे पसंद है। 23 और
उसका यह हुक्म है कि हम उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह के नाम पर ईमान लाकर एक दूसरे से मुहब्बत रखें, जिस तरह
मसीह ने हमें हुक्म दिया था। 24 जो अल्लाह के अहकाम के ताबे रहता है वह अल्लाह में बसता है और अल्लाह
उसमें। हम किस तरह जान लेते हैं कि वह हममें बसता है? उस रूह के वसीले से जो उसने हमें दिया है।

4

हक़ीक़ी और झूटी रूह

1 अज़ीज़ो, हर एक रूह का यक़ीन मत करना बल्कि रूहों को परखकर मालूम करें कि वह अल्लाह से हैं या नहीं,
क्योंकि मुतअद्दिद झूटे नबी दुनिया में निकले हैं। 2 इससे आप अल्लाह के रूह को पहचान लेते हैं : जो भी रूह इसका
एतराफ़ करती है कि ईसा मसीह मुजस्सम होकर आया है वह अल्लाह से है। 3 लेकिन जो भी रूह ईसा के बारे में यह
तसलीम न करे वह अल्लाह से नहीं है। यह मुख़ालिफ़े-मसीह की रूह है जिसके बारे में आपको ख़बर मिली कि वह
आनेवाला है बल्कि इस वक़्त दुनिया में आ चुका है।

4 लेकिन आप प्यारे बच्चो, अल्लाह से हैं और उन पर ग़ालिब आ गए हैं। क्योंकि जो आपमें है वह उससे बड़ा
है जो दुनिया में है। 5 यह लोग दुनिया से हैं और इसलिए दुनिया की बातें करते हैं और दुनिया उनकी सुनती है। 6 हम
तो अल्लाह से हैं और जो अल्लाह को जानता है वह हमारी सुनता है। लेकिन जो अल्लाह से नहीं है वह हमारी नहीं
सुनता। यों हम सच्चाई की रूह और फ़रेब देनेवाली रूह में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

अल्लाह मुहब्बत है

7 अज़ीज़ो, आएँ हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें। क्योंकि मुहब्बत अल्लाह की तरफ़ से है, और जो मुहब्बत रखता
है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है और अल्लाह को जानता है। 8 जो मुहब्बत नहीं रखता वह
अल्लाह को नहीं जानता, क्योंकि अल्लाह मुहब्बत है। 9 इसमें अल्लाह की मुहब्बत हमारे दरमियान ज़ाहिर हुई कि
उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को दुनिया में भेज दिया ताकि हम उसके ज़रीए जिएँ। 10 यही मुहब्बत है, यह नहीं कि
हमने अल्लाह से मुहब्बत की बल्कि यह कि उसने हमसे मुहब्बत करके अपने फ़रज़ंद को भेज दिया ताकि वह हमारे
गुनाहों को मिटाने के लिए कफ़्फ़ारा दे।

11 अज़ीज़ो, चूँकि अल्लाह ने हमें इतना प्यार किया इसलिए लाज़िम है कि हम भी एक दूसरे को प्यार करें।
12 किसी ने भी अल्लाह को नहीं देखा। लेकिन जब हम एक दूसरे को प्यार करते हैं तो अल्लाह हमारे अंदर बसता है
और उस की मुहब्बत हमारे अंदर तकमील पाती है।

13 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम उसमें रहते हैं और वह हममें? इस तरह कि उसने हमें अपना रूह बख़्श दिया
है। 14 और हमने यह बात देख ली और इसकी गवाही देते हैं कि ख़ुदा बाप ने अपने फ़रज़ंद को दुनिया का नजातदहिंदा

बनने के लिए भेज दिया है। 15 अगर कोई इक़रार करे कि ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद है तो अल्लाह उसमें रहता है और
वह अल्लाह में। 16 और ख़ुद हमने वह मुहब्बत जान ली है और उस पर ईमान लाए हैं जो अल्लाह हमसे रखता है।
अल्लाह मुहब्बत ही है। जो भी मुहब्बत में क़ायम रहता है वह अल्लाह में रहता है और अल्लाह उसमें। 17 इसी
तरह मुहब्बत हमारे दरमियान तकमील तक पहुँचती है, और यों हम अदालत के दिन पूरे एतमाद के साथ खड़े हो सकेंगे,
क्योंकि जैसे वह है वैसे ही हम भी इस दुनिया में हैं। 18 मुहब्बत में ख़ौफ़ नहीं होता बल्कि कामिल मुहब्बत ख़ौफ़ को
भगा देती है, क्योंकि ख़ौफ़ के पीछे सज़ा का डर है। जो डरता है उस की मुहब्बत तकमील तक नहीं पहुँची।
19 हम इसलिए मुहब्बत रखते हैं कि अल्लाह ने पहले हमसे मुहब्बत रखी। 20 अगर कोई कहे, "मैं अल्लाह से
मुहब्बत रखता हूँ" लेकिन अपने भाई से नफ़रत करे तो वह झूटा है। क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है
मुहब्बत नहीं रखता वह किस तरह अल्लाह से मुहब्बत रख सकता है जिसे उसने नहीं देखा? 21 जो हुक्म मसीह ने
हमें दिया है वह यह है, जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है वह अपने भाई से भी मुहब्बत रखे।

5

दुनिया पर हमारी फ़तह

1 जो भी ईमान रखता है कि ईसा ही मसीह है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है। और जो बाप से
मुहब्बत रखता है वह उसके फ़रज़ंद से भी मुहब्बत रखता है। 2 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद
से मुहब्बत रखते हैं? इससे कि हम अल्लाह से मुहब्बत रखते और उसके अहकाम पर अमल करते हैं। 3 क्योंकि
अल्लाह से मुहब्बत से मुराद यह है कि हम उसके अहकाम पर अमल करें। और उसके अहकाम हमारे लिए बोझ का
बाइस नहीं हैं, 4 क्योंकि जो भी अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है वह दुनिया पर ग़ालिब आ जाता है।
और हम यह फ़तह अपने ईमान के ज़रीए पाते हैं। 5 कौन दुनिया पर ग़ालिब आ सकता है? सिर्फ़ वह जो ईमान रखता
है कि ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद है।

ईसा मसीह के बारे में गवाही

6 ईसा मसीह वह है जो अपने बपतिस्मे के पानी और अपनी मौत के ख़ून के ज़रीए ज़ाहिर हुआ, न सिर्फ़ पानी के
ज़रीए बल्कि पानी और ख़ून दोनों ही के ज़रीए। और रूहुल-क़ुद्स जो सच्चाई है इसकी गवाही देता है। 7 क्योंकि
इसके तीन गवाह हैं, 8 रूहुल-क़ुद्स, पानी और ख़ून। और तीनों एक ही बात की तसदीक़ करते हैं। 9 हम तो इनसान
की गवाही क़बूल करते हैं, लेकिन अल्लाह की गवाही इससे कहीं अफ़ज़ल है। और अल्लाह की गवाही यह है कि
उसने अपने फ़रज़ंद की तसदीक़ की है। 10 जो अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान रखता है उसके दिल में यह गवाही है।
और जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखता उसने उसे झूटा क़रार दिया है। क्योंकि उसने वह गवाही न मानी जो अल्लाह ने
अपने फ़रज़ंद के बारे में दी। 11 और गवाही यह है, अल्लाह ने हमें अबदी ज़िंदगी अता की है, और यह ज़िंदगी उसके
फ़रज़ंद में है। 12 जिसके पास फ़रज़ंद है उसके पास ज़िंदगी है, और जिसके पास अल्लाह का फ़रज़ंद नहीं है उसके
पास ज़िंदगी भी नहीं है।

अबदी ज़िंदगी

13 मैं आपको जो अल्लाह के फ़रज़ंद के नाम पर ईमान रखते हैं इसलिए लिख रहा हूँ कि आप जान लें कि आपको
अबदी ज़िंदगी हासिल है। 14 हमारा अल्लाह पर यह एतमाद है कि जब भी हम उस की मरज़ी के मुताबिक़ कुछ माँगते
हैं तो वह हमारी सुनता है। 15 और चूँकि हम जानते हैं कि जब माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है इसलिए हम यह इल्म
भी रखते हैं कि हमें वह कुछ हासिल भी है जो हमने उससे माँगा था।
16 अगर कोई अपने भाई को ऐसा गुनाह करते देखे जिसका अंजाम मौत न हो तो वह दुआ करे, और अल्लाह
उसे ज़िंदगी अता करेगा। मैं उन गुनाहों की बात कर रहा हूँ जिनका अंजाम मौत नहीं। लेकिन एक ऐसा गुनाह भी है
जिसका अंजाम मौत है। मैं नहीं कह रहा कि ऐसे शख़्स के लिए दुआ की जाए जिससे ऐसा गुनाह सरज़द हुआ हो।
17 हर नारास्त हरकत गुनाह है, लेकिन हर गुनाह का अंजाम मौत नहीं होता।
18 हम जानते हैं कि जो अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है वह गुनाह करता नहीं रहता, क्योंकि
अल्लाह का फ़रज़ंद ऐसे शख़्स को महफ़ूज़ रखता है और इबलीस उसे नुक़सान नहीं पहुँचा सकता।
19 हम जानते हैं कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं और कि तमाम दुनिया इबलीस के क़ब्ज़े में है।
20 हम जानते हैं कि अल्लाह का फ़रज़ंद आ गया है और हमें समझ अता की है ताकि हम उसे जान लें जो हक़ीक़ी
है। और हम उसमें हैं जो हक़ीक़ी है यानी उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह में। वही हक़ीक़ी ख़ुदा और अबदी ज़िंदगी है।
21 प्यारे बच्चो, अपने आपको बुतों से महफ़ूज़ रखें!

2 यूहन्ना

1 यह ख़त बुज़ुर्ग यूहन्ना की तरफ़ से है।
मैं चुनीदा ख़ातून और उसके बच्चों को लिख रहा हूँ जिन्हें मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ, और न सिर्फ़ मैं बल्कि सब
जो सच्चाई को जानते हैं। 2 क्योंकि सच्चाई हममें रहती है और अबद तक हमारे साथ रहेगी।
3 ख़ुदा बाप और बाप का फ़रज़ंद ईसा मसीह हमें फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करे। और यह चीज़ें सच्चाई
और मुहब्बत की रूह में हमें हासिल हों।

सच्चाई और मुहब्बत

4 मैं निहायत ही ख़ुश हुआ कि मैंने आपके बच्चों में से बाज़ ऐसे पाए जो उसी तरह सच्चाई में चलते हैं जिस तरह
ख़ुदा बाप ने हमें हुक्म दिया था। 5 और अब अज़ीज़ ख़ातून, मैं आपसे दरख़ास्त करता हूँ कि आएँ, हम सब एक दूसरे से
मुहब्बत रखें। यह कोई नया हुक्म नहीं है जो मैं आपको लिख रहा हूँ बल्कि वही जो हमें शुरू ही से मिला है। 6 मुहब्बत
का मतलब यह है कि हम उसके अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें। जिस तरह आपने शुरू ही से सुना है, उसका हुक्म
यह है कि आप मुहब्बत की रूह में चलें।
7 क्योंकि बहुत-से ऐसे लोग दुनिया में निकल खड़े हुए हैं जो आपको सहीह राह से हटाने की कोशिश में लगे रहते
हैं। यह लोग नहीं मानते कि ईसा मसीह मुजस्सम होकर आया है। हर ऐसा शख़्स फ़रेब देनेवाला और मुख़ालिफ़े-मसीह
है। 8 चुनाँचे ख़बरदार रहें। ऐसा न हो कि आपने जो कुछ मेहनत करके हासिल किया है वह जाता रहे बल्कि ख़ुदा करे
कि आपको इसका पूरा अज्र मिल जाए।
9 जो भी मसीह की तालीम पर क़ायम नहीं रहता बल्कि इससे आगे निकल जाता है उसके पास अल्लाह नहीं।
जो मसीह की तालीम पर क़ायम रहता है उसके पास बाप भी है और फ़रज़ंद भी। 10 चुनाँचे अगर कोई आपके पास
आकर यह तालीम पेश नहीं करता तो न उसे अपने घरों में आने दें, न उसको सलाम करें। 11 क्योंकि जो उसके लिए
सलामती की दुआ करता है वह उसके शरीर कामों में शरीक हो जाता है।

आख़िरी बातें

12 मैं आपको बहुत कुछ बताना चाहता हूँ, लेकिन काग़ज़ और स्याही के ज़रीए नहीं। इसके बजाए मैं आपसे मिलने
और आपके रूबरू बात करने की उम्मीद रखता हूँ। फिर हमारी ख़ुशी मुकम्मल हो जाएगी।
13 आपकी चुनीदा बहन के बच्चे आपको सलाम कहते हैं।

3 यूहन्ना

1 यह ख़त बुज़ुर्ग यूहन्ना की तरफ़ से है।
मैं अपने अज़ीज़ गयुस को लिख रहा हूँ जिसे मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ।
2 मेरे अज़ीज़, मेरी दुआ है कि आपका हाल हर तरह से ठीक हो और आप जिस्मानी तौर पर उतने ही तनदुरुस्त हों
जितने आप रूहानी लिहाज़ से हैं। 3 क्योंकि मैं निहायत ख़ुश हुआ जब भाइयों ने आकर गवाही दी कि आप किस तरह
सच्चाई के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं। और यक़ीनन आप हमेशा सच्चाई के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं। 4 जब मैं
सुनता हूँ कि मेरे बच्चे सच्चाई के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं तो यह मेरे लिए सबसे ज़्यादा ख़ुशी का बाइस होता है।

गयुस की तारीफ़

5 मेरे अज़ीज़, जो कुछ आप भाइयों के लिए कर रहे हैं उसमें आप वफ़ादारी दिखा रहे हैं, हालाँकि वह आपके
जाननेवाले नहीं हैं। 6 उन्होंने ख़ुदा की जमात के सामने ही आपकी मुहब्बत की गवाही दी है। मेहरबानी करके उनकी
सफ़र के लिए यों मदद करें कि अल्लाह ख़ुश हो। 7 क्योंकि वह मसीह के नाम की ख़ातिर सफ़र के लिए निकले हैं
और ग़ैरईमानदारों से मदद नहीं लेते। 8 चुनाँचे यह हमारा फ़र्ज़ है कि हम ऐसे लोगों की मेहमान-नवाज़ी करें, क्योंकि
यों हम भी सच्चाई के हमख़िदमत बन जाते हैं।

दियुतरिफ़ेस और देमेतरियुस

9 मैंने तो जमात को कुछ लिख दिया था, लेकिन दियुतरिफ़ेस जो उनमें अव्वल होने की ख़ाहिश रखता है हमें क़बूल
नहीं करता। 10 चुनाँचे मैं जब आऊँगा तो उसे उन बुरी हरकतों की याद दिलाऊँगा जो वह कर रहा है, क्योंकि वह
हमारे ख़िलाफ़ बुरी बातें बक रहा है। और न सिर्फ़ यह बल्कि वह भाइयों को ख़ुशआमदीद कहने से भी इनकार करता
है। जब दूसरे यह करना चाहते हैं तो वह उन्हें रोककर जमात से निकाल देता है।
11 मेरे अज़ीज़, जो बुरा है उस की नक़ल मत करना बल्कि उस की करना जो अच्छा है। जो अच्छा काम करता
है वह अल्लाह से है। लेकिन जो बुरा काम करता है उसने अल्लाह को नहीं देखा।
12 सब लोग देमेतरियुस की अच्छी गवाही देते हैं बल्कि सच्चाई ख़ुद भी उस की अच्छी गवाही देती है। हम भी
इसके गवाह हैं, और आप जानते हैं कि हमारी गवाही सच्ची है।

आख़िरी सलाम

13 मुझे आपको बहुत कुछ लिखना था, लेकिन यह ऐसी बातें हैं जो मैं क़लम और स्याही के ज़रीए आपको नहीं
बता सकता। 14 मैं जल्द ही आपसे मिलने की उम्मीद रखता हूँ। फिर हम रूबरू बात करेंगे।
15 सलामती आपके साथ होती रहे।
यहाँ के दोस्त आपको सलाम कहते हैं। वहाँ के हर दोस्त को शख़्सी तौर पर हमारा सलाम दें।

यहूदाह

1 यह ख़त ईसा मसीह के ख़ादिम और याक़ूब के भाई यहूदाह की तरफ़ से है।
मैं उन्हें लिख रहा हूँ जिन्हें बुलाया गया है, जो ख़ुदा बाप में प्यारे हैं और ईसा मसीह के लिए महफ़ूज़ रखे गए हैं।
2 अल्लाह आपको रहम, सलामती और मुहब्बत कसरत से अता करे।

झूटे उस्ताद

3 अज़ीज़ो, गो मैं आपको उस नजात के बारे में लिखने का बड़ा शौक़ रखता हूँ जिसमें हम सब शरीक हैं, लेकिन
अब मैं आपको एक और बात के बारे में लिखना चाहता हूँ। मैं इसमें आपको नसीहत करने की ज़रूरत महसूस करता
हूँ कि आप उस ईमान की ख़ातिर जिद्दो-जहद करें जो एक ही बार सदा के लिए मुक़द्दसीन के सुपुर्द कर दिया गया है।
4 क्योंकि कुछ लोग आपके दरमियान घुस आए हैं जिन्हें बहुत अरसा पहले मुजरिम ठहराया जा चुका है। उनके बारे
में यह लिखा गया है कि वह बेदीन हैं जो हमारे ख़ुदा के फ़ज़ल को तोड़-मरोड़कर ऐयाशी का बाइस बना देते हैं और
हमारे वाहिद आक़ा और ख़ुदावंद ईसा मसीह का इनकार करते हैं।
5 गो आप यह सब कुछ जानते हैं, फिर भी मैं आपको इसकी याद दिलाना चाहता हूँ कि अगरचे ख़ुदावंद ने अपनी
क़ौम को मिसर से निकालकर बचा लिया था तो भी उसने बाद में उन्हें हलाक कर दिया जो ईमान नहीं रखते थे। 6 उन
फ़रिश्तों को याद करें जो उस दायराए-इख़्तियार के अंदर न रहे जो अल्लाह ने उनके लिए मुक़र्रर किया था बल्कि
जिन्होंने अपनी रिहाइशगाह को तर्क कर दिया। उन्हें उसने तारीकी में महफ़ूज़ रखा है जहाँ वह अबदी ज़ंजीरों में जकड़े
हुए रोज़े-अज़ीम की अदालत का इंतज़ार कर रहे हैं। 7 सदूम, अमूरा और उनके इर्दगिर्द के शहरों को भी मत भूलना,
जिनके बाशिंदे इन फ़रिश्तों की तरह ज़िनाकारी और ग़ैरफ़ितरी सोहबत के पीछे पड़े रहे। यह लोग अबदी आग की
सज़ा भुगतते हुए सबके लिए एक इबरतनाक मिसाल हैं।
8 तो भी इन लोगों ने उनका-सा रवैया अपना लिया है। अपने ख़ाबों की बिना पर वह अपने बदनों को आलूदा कर
लेते, ख़ुदावंद का इख़्तियार रद्द करते और जलाली हस्तियों पर कुफ़र बकते हैं। 9 इनके मुक़ाबले में सरदार फ़रिश्ते
मीकाएल के रवय्ये पर ग़ौर करें। जब वह इबलीस से झगड़ते वक़्त मूसा की लाश के बारे में बहस-मुबाहसा कर रहा
था तो उसने इबलीस पर कुफ़र बकने का फ़ैसला करने की जुर्रत न की बल्कि सिर्फ़ इतना ही कहा, "रब आपको
डाँटे!" 10 लेकिन यह लोग हर ऐसी बात के बारे में कुफ़र बकते हैं जो उनकी समझ में नहीं आती। और जो कुछ
वह फ़ितरी तौर पर बेसमझ जानवरों की तरह समझते हैं वही उन्हें तबाह कर देता है। 11 उन पर अफ़सोस! उन्होंने
क़ाबील की राह इख़्तियार की है। पैसों के लालच में उन्होंने अपने आपको पूरे तौर पर उस ग़लती के हवाले कर दिया
है जो बिलाम ने की। वह क़ोरह की तरह बाग़ी होकर हलाक हुए हैं। 12 जब यह लोग ख़ुदावंद की मुहब्बत को याद
करनेवाले रिफ़ाक़ती खानों में शरीक होते हैं तो रिफ़ाक़त के लिए धब्बे बन जाते हैं। यह डरे बग़ैर खाना खा खाकर
उससे महज़ूज़ होते हैं। यह ऐसे चरवाहे हैं जो सिर्फ़ अपनी गल्लाबानी करते हैं। यह ऐसे बादल हैं जो हवाओं के ज़ोर
से चलते तो हैं लेकिन बरसते नहीं। यह सर्दियों के मौसम में ऐसे दरख़्तों की मानिंद हैं जो दो लिहाज़ से मुरदा हैं। वह
फल नहीं लाते और जड़ से उखड़े हुए हैं। 13 यह समुंदर की बेकाबू लहरों की मानिंद हैं जो अपनी शर्मनाक हरकतों
की झाग उछालती हैं। यह आवारा सितारे हैं जिनके लिए अल्लाह ने सबसे गहरी तारीकी में एक दायमी जगह मख़सूस
की है।
14 आदम के बाद सातवें आदमी हनूक ने इन लोगों के बारे में यह पेशगोई की, "देखो, ख़ुदावंद अपने बेशुमार
मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ 15 सबकी अदालत करने आएगा। वह उन्हें उन तमाम बेदीन हरकतों के सबब से मुजरिम
ठहराएगा जो उनसे सरज़द हुई हैं और उन तमाम सख़्त बातों की वजह से जो बेदीन गुनाहगारों ने उसके ख़िलाफ़ की
हैं।"
16 यह लोग बुड़बुड़ाते और शिकायत करते रहते हैं। यह सिर्फ़ अपनी ज़ाती ख़ाहिशात पूरी करने के लिए ज़िंदगी
गुज़ारते हैं। यह अपने बारे में शेख़ी मारते और अपने फ़ायदे के लिए दूसरों की ख़ुशामद करते हैं।

आगाही और हिदायात

17 लेकिन आप मेरे अज़ीज़ो, वह कुछ याद रखें जिसकी पेशगोई हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के रसूलों ने की थी।
18 उन्होंने आपसे कहा था, "आख़िरी दिनों में मज़ाक़ उड़ानेवाले होंगे जो अपनी बेदीन ख़ाहिशात पूरी करने के लिए
ही ज़िंदगी गुज़ारेंगे।" 19 यह वह हैं जो पार्टीबाज़ी करते, जो दुनियावी सोच रखते हैं और जिनके पास रूहुल-क़ुद्स नहीं
है। 20 लेकिन आप मेरे अज़ीज़ो, अपने आपको अपने मुक़द्दसतरीन ईमान की बुनियाद पर तामीर करें और रूहुल-क़ुद्स

में दुआ करें। 21 अपने आपको अल्लाह की मुहब्बत में क़ायम रखें और इस इंतज़ार में रहें कि हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
का रहम आपको अबदी ज़िंदगी तक पहुँचाए।
22 उन पर रहम करें जो शक में पड़े हैं। 23 बाज़ को आग में से छीनकर बचाएँ और बाज़ पर रहम करें, लेकिन
ख़ौफ़ के साथ। बल्कि उस शख़्स के लिबास से भी नफ़रत करें जो अपनी हरकतों से गुनाह से आलूदा हो गया है।

सताइश की दुआ

24 उस की तमजीद हो जो आपको ठोकर खाने से महफ़ूज़ रख सकता है और आपको अपने जलाल के सामने बेदाग़
और बड़ी ख़ुशी से मामूर करके खड़ा कर सकता है। 25 उस वाहिद ख़ुदा यानी हमारे नजातदहिंदा का जलाल हो। हाँ,
हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से उसे जलाल, अज़मत, क़ुदरत और इख़्तियार अज़ल से अब भी हो और अबद
तक रहे। आमीन।

मुकाशफ़ा

1 यह ईसा मसीह की तरफ़ से मुकाशफ़ा है जो अल्लाह ने उसे अता किया ताकि वह अपने ख़ादिमों को वह कुछ
दिखाए जिसे जल्द ही पेश आना है। उसने अपने फ़रिश्ते को भेजकर यह मुकाशफ़ा अपने ख़ादिम यूहन्ना तक पहुँचा
दिया। 2 और जो कुछ भी यूहन्ना ने देखा है उस की गवाही उसने दी है, ख़ाह अल्लाह का कलाम हो या ईसा मसीह
की गवाही। 3 मुबारक है वह जो इस नबुव्वत की तिलावत करता है। हाँ, मुबारक हैं वह जो सुनकर अपने दिलों में इस
किताब में दर्ज बातें महफ़ूज़ रखते हैं, क्योंकि यह जल्द ही पूरी हो जाएँगी।

सात जमातों को सलाम

4 यह ख़त यूहन्ना की तरफ़ से सूबा आसिया की सात जमातों के लिए है।

आपको अल्लाह की तरफ़ से फ़ज़ल और सलामती हासिल रहे, उस की तरफ़ से जो है, जो था और जो आनेवाला
है, उन सात रूहों की तरफ़ से जो उसके तख़्त के सामने होती हैं, 5 और ईसा मसीह की तरफ़ से यानी उससे जो इन
बातों का वफ़ादार गवाह, मुरदों में से पहला जी उठनेवाला और दुनिया के बादशाहों का सरदार है।

उस की तमजीद हो जो हमें प्यार करता है, जिसने अपने ख़ून से हमें हमारे गुनाहों से ख़लासी बख़्शी है 6 और जिसने
हमें शाही इख़्तियार देकर अपने ख़ुदा और बाप के इमाम बना दिया है। उसे अज़ल से अबद तक जलाल और क़ुदरत
हासिल रहे! आमीन।

7 देखें, वह बादलों के साथ आ रहा है। हर एक उसे देखेगा, वह भी जिन्होंने उसे छेदा था। और दुनिया की तमाम
क़ौमें उसे देखकर आहो-ज़ारी करेंगी। हाँ, ऐसा ही हो! आमीन।

8 रब ख़ुदा फ़रमाता है, "मैं अव्वल और आख़िर हूँ, वह जो है, जो था और जो आनेवाला है, यानी क़ादिरे-मुतलक़
ख़ुदा।"

मसीह की रोया

9 मैं यूहन्ना आपका भाई और शरीके-हाल हूँ। मुझ पर भी आपकी तरह ज़ुल्म किया जा रहा है। मैं आपके साथ
अल्लाह की बादशाही में शरीक हूँ और ईसा में आपके साथ साबितक़दम रहता हूँ। मुझे अल्लाह का कलाम सुनाने और
ईसा के बारे में गवाही देने की वजह से इस जज़ीरे में जो पतमुस कहलाता है छोड़ दिया गया। 10 रब के दिन यानी इतवार
को मैं रूहुल-क़ुद्स की गिरिफ़्त में आ गया और मैंने अपने पीछे तुरम की-सी एक ऊँची आवाज़ सुनी। 11 उसने कहा,
"जो कुछ तू देख रहा है उसे एक किताब में लिखकर उन सात जमातों को भेज देना जो इफ़िसुस, स्मुरना, पिरगमुन,
थुआतीरा, सरदीस, फ़िलदिलफ़िया और लौदीकिया में हैं।"

12 मैंने बोलनेवाले को देखने के लिए अपने पीछे नज़र डाली तो सोने के सात शमादान देखे। 13 इन शमादानों के
दरमियान कोई खड़ा था जो इब्ने-आदम की मानिंद था। उसने पाँवों तक का लंबा चोग़ा पहन रखा था और सीने पर
सोने का सीनाबंद बाँधा हुआ था। 14 उसका सर और बाल ऊन या बर्फ़ जैसे सफ़ेद थे और उस की आँखें आग के शोले
की मानिंद थीं। 15 उसके पाँव भट्टे में दमकते पीतल की मानिंद थे और उस की आवाज़ आबशार के शोर जैसी थी।
16 अपने दहने हाथ में उसने सात सितारे थाम रखे थे और उसके मुँह से एक तेज़ और दोधारी तलवार निकल रही थी।
उसका चेहरा पूरे ज़ोर से चमकनेवाले सूरज की तरह चमक रहा था। 17 उसे देखते ही मैं उसके पाँवों में गिर गया। मैं
मुरदा-सा था। फिर उसने अपना दहना हाथ मुझ पर रखकर कहा, "मत डर। मैं अव्वल और आख़िर हूँ। 18 मैं वह हूँ
जो ज़िंदा है। मैं तो मर गया था लेकिन अब देख, मैं अबद तक ज़िंदा हूँ। और मौत और पाताल की कुंजियाँ मेरे हाथ में
हैं। 19 चुनाँचे जो कुछ तूने देखा है, जो अभी है और जो आइंदा होगा उसे लिख दे। 20 मेरे दहने हाथ में सात सितारों
और सात शमादानों का पोशीदा मतलब यह है : यह सात सितारे आसिया की सात जमातों के फ़रिश्ते हैं, और यह सात
शमादान यह सात जमातें हैं।

2

इफ़िसुस के लिए पैग़ाम

1 इफ़िसुस में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जो अपने दहने हाथ में सात सितारे थामे रखता और सोने के सात शमादानों के दरमियान
चलता-फिरता है। 2 मैं तेरे कामों को जानता हूँ, तेरी सख़्त मेहनत और तेरी साबितक़दमी को। मैं जानता हूँ कि तू बुरे
लोगों को बरदाश्त नहीं कर सकता, कि तूने उनकी पड़ताल की है जो रसूल होने का दावा करते हैं, हालाँकि वह रसूल

नहीं हैं। तुझे तो पता चल गया है कि वह झूटे थे। 3 तू मेरे नाम की ख़ातिर साबितक़दम रहा और बरदाश्त करते करते
थका नहीं। 4 लेकिन मुझे तुझसे यह शिकायत है, तू मुझे उस तरह प्यार नहीं करता जिस तरह पहले करता था। 5 अब
ख़याल कर कि तू कहाँ से गिर गया है। तौबा करके वह कुछ कर जो तू पहले करता था, वरना मैं आकर तेरे शमादान
को उस की जगह से हटा दूँगा। 6 लेकिन यह बात तेरे हक़ में है, तू मेरी तरह नीकुलियों के कामों से नफ़रत करता है।
7 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे मैं ज़िंदगी के दरख़्त का फल खाने को दूँगा, उस दरख़्त का फल जो अल्लाह के फ़िरदौस में है।

स्मुरना के लिए पैग़ाम

8 स्मुरना में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह लिख देना : यह उसका फ़रमान है जो अव्वल और आख़िर है, जो
मर गया था और दुबारा ज़िंदा हुआ। 9 मैं तेरी मुसीबत और ग़ुरबत को जानता हूँ। लेकिन हक़ीक़त में तू दौलतमंद है। मैं
उन लोगों के बुहतान से वाक़िफ़ हूँ जो कहते हैं कि वह यहूदी हैं हालाँकि हैं नहीं। असल में वह इबलीस की जमात हैं।
10 जो कुछ तुझे झेलना पड़ेगा उससे मत डरना। देख, इबलीस तुझे आज़माने के लिए तुममें से बाज़ को जेल में डाल
देगा, और दस दिन तक तुझे ईज़ा पहुँचाई जाएगी। मौत तक वफ़ादार रह तो मैं तुझे ज़िंदगी का ताज दूँगा।
11 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे दूसरी मौत से नुक़सान नहीं पहुँचेगा।

पिरगमुन के लिए पैग़ाम

12 पिरगमुन में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जिसके पास दोधारी तेज़ तलवार है। 13 मैं जानता हूँ कि तू कहाँ रहता है, वहाँ जहाँ इबलीस
का तख़्त है। ताहम तू मेरे नाम का वफ़ादार रहा है। तूने उन दिनों में भी मुझ पर ईमान रखने का इनकार न किया जब
मेरा वफ़ादार गवाह अंतिपास तुम्हारे पास शहीद हुआ, वहाँ जहाँ इबलीस बसता है। 14 लेकिन मुझे तुझसे कई बातों
की शिकायत है। तेरे पास ऐसे लोग हैं जो बिलाम की तालीम की पैरवी करते हैं। क्योंकि बिलाम ने बलक़ को सिखाया
कि वह किस तरह इसराईलियों को गुनाह करने पर उकसा सकता है यानी बुतों को पेश की गई क़ुरबानियाँ खाने और
ज़िना करने से। 15 इसी तरह तेरे पास भी ऐसे लोग हैं, जो नीकुलियों की तालीम की पैरवी करते हैं। 16 अब तौबा कर!
वरना मैं जल्द ही तेरे पास आकर अपने मुँह की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा।
17 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आएगा उसे मैं पोशीदा मन में से दूँगा। मैं उसे एक सफ़ेद पत्थर भी दूँगा जिस पर एक नया नाम लिखा होगा, ऐसा नाम जो सिर्फ़ मिलनेवाले को मालूम होगा।

थुआतीरा के लिए पैग़ाम

18 थुआतीरा में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह अल्लाह के फ़रज़ंद का फ़रमान है जिसकी आँखें आग के शोलों और पाँव दमकते पीतल की मानिंद हैं। 19 मैं
तेरे कामों को जानता हूँ यानी तेरी मुहब्बत और ईमान, तेरी ख़िदमत और साबितक़दमी, और यह कि इस वक़्त तू पहले
की निसबत कहीं ज़्यादा कर रहा है। 20 लेकिन मुझे तुझसे यह शिकायत है, तू उस औरत ईज़बिल को जो अपने आपको
नबिया कहती है काम करने देता है, हालाँकि यह अपनी तालीम से मेरे ख़ादिमों को सहीह राह से दूर करके उन्हें ज़िना
करने और बुतों को पेश की गई क़ुरबानियाँ खाने पर उकसाती है। 21 मैंने उसे काफ़ी देर से तौबा करने का मौक़ा दिया
है, लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं है। 22 चुनाँचे मैं उसे यों मारूँगा कि वह बिस्तर पर पड़ी रहेगी। और अगर वह
जो उसके साथ ज़िना कर रहे हैं अपनी ग़लत हरकतों से तौबा न करें तो मैं उन्हें शदीद मुसीबत में फँसाऊँगा। 23 हाँ, मैं
उसके फ़रज़ंदों को मार डालूँगा। फिर तमाम जमातें जान लेंगी कि मैं ही ज़हनों और दिलों को परखता हूँ, और मैं ही
तुममें से हर एक को उसके कामों का बदला दूँगा।
24 लेकिन थुआतीरा की जमात के ऐसे लोग भी हैं जो इस तालीम की पैरवी नहीं करते, और जिन्होंने वह कुछ
नहीं जाना जिसे इन लोगों ने 'इबलीस के गहरे भेद' का नाम दिया है। तुम्हें मैं बताता हूँ कि मैं तुम पर कोई और बोझ
नहीं डालूँगा। 25 लेकिन इतना ज़रूर करो कि जो कुछ तुम्हारे पास है उसे मेरे आने तक मज़बूती से थामे रखना। 26 जो
ग़ालिब आएगा और आख़िर तक मेरे कामों पर क़ायम रहेगा उसे मैं क़ौमों पर इख़्तियार दूँगा। 27 हाँ, वह लोहे के शाही
असा से उन पर हुकूमत करेगा, उन्हें मिट्टी के बरतनों की तरह फोड़ डालेगा। 28 यानी उसे वही इख़्तियार मिलेगा जो
मुझे भी अपने बाप से मिला है। ऐसे शख़्स को मैं सुबह का सितारा भी दूँगा।

29 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

3

सरदीस के लिए पैग़ाम

1 सरदीस में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जो अल्लाह की सात रूहों और सात सितारों को अपने हाथ में थामे रखता है। मैं तेरे कामों
को जानता हूँ। तू ज़िंदा तो कहलाता है लेकिन है मुरदा। 2 जाग उठ! जो बाक़ी रह गया है और मरनेवाला है उसे मज़बूत
कर। क्योंकि मैंने तेरे काम अपने ख़ुदा की नज़र में मुकम्मल नहीं पाए। 3 चुनाँचे जो कुछ तुझे मिला है और जो तूने
सुना है उसे याद रखना। उसे महफ़ूज़ रख और तौबा कर। अगर तू बेदार न हो तो मैं चोर की तरह आऊँगा और तुझे
मालूम नहीं होगा कि मैं कब तुझ पर आन पड़ूँगा। 4 लेकिन सरदीस में तेरे कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने लिबास
आलूदा नहीं किए। वह सफ़ेद कपड़े पहने हुए मेरे साथ चलें-फिरेंगे, क्योंकि वह इसके लायक़ हैं। 5 जो ग़ालिब आएगा
वह भी उनकी तरह सफ़ेद कपड़े पहने हुए फिरेगा। मैं उसका नाम किताबे-हयात से नहीं मिटाऊँगा बल्कि अपने बाप
और उसके फ़रिश्तों के सामने इक़रार करूँगा कि यह मेरा है।

6 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

फ़िलदिलफ़िया के लिए पैग़ाम

7 फ़िलदिलफ़िया में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जो क़ुद्दूस और सच्चा है, जिसके हाथ में दाऊद की चाबी है। जो कुछ वह खोलता है उसे कोई
बंद नहीं कर सकता, और जो कुछ वह बंद कर देता है उसे कोई खोल नहीं सकता। 8 मैं तेरे कामों को जानता हूँ। देख,
मैंने तेरे सामने एक ऐसा दरवाज़ा खोल रखा है जिसे कोई बंद नहीं कर सकता। मुझे मालूम है कि तेरी ताक़त कम है।
लेकिन तूने मेरे कलाम को महफ़ूज़ रखा है और मेरे नाम का इनकार नहीं किया। 9 देख, जहाँ तक उनका ताल्लुक़ है
जो इबलीस की जमात से हैं, वह जो यहूदी होने का दावा करते हैं हालाँकि वह झूट बोलते हैं, मैं उन्हें तेरे पास आने दूँगा,
उन्हें तेरे पाँवों में झुककर यह तसलीम करने पर मजबूर करूँगा कि मैंने तुझे प्यार किया है। 10 तूने मेरा साबितक़दम
रहने का हुक्म पूरा किया, इसलिए मैं तुझे आज़माइश की उस घड़ी से बचाए रखूँगा जो पूरी दुनिया पर आकर उसमें
बसनेवालों को आज़माएगी।

11 मैं जल्द आ रहा हूँ। जो कुछ तेरे पास है उसे मज़बूती से थामे रखना ताकि कोई तुझसे तेरा ताज छीन न ले।
12 जो ग़ालिब आएगा उसे मैं अपने ख़ुदा के घर में सतून बनाऊँगा, ऐसा सतून जो उसे कभी नहीं छोड़ेगा। मैं उस पर
अपने ख़ुदा का नाम और अपने ख़ुदा के शहर का नाम लिख दूँगा, उस नए यरूशलम का नाम जो मेरे ख़ुदा के हाँ से
उतरनेवाला है। हाँ, मैं उस पर अपना नया नाम भी लिख दूँगा।

13 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

लौदीकिया के लिए पैग़ाम

14 लौदीकिया में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जो आमीन है, वह जो वफ़ादार और सच्चा गवाह और अल्लाह की कायनात का मंबा है।
15 मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू न तो सर्द है, न गरम। काश तू इनमें से एक होता! 16 लेकिन चूँकि तू नीमगरम
है, न गरम, न सर्द, इसलिए मैं तुझे क़ै करके अपने मुँह से निकाल फेंकूँगा। 17 तू कहता है, 'मैं अमीर हूँ, मैंने बहुत
दौलत हासिल कर ली है और मुझे किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं।' और तू नहीं जानता कि तू असल में बदबख़्त,
क़ाबिले-रहम, ग़रीब, अंधा और नंगा है। 18 मैं तुझे मशवरा देता हूँ कि मुझसे आग में ख़ालिस किया गया सोना ख़रीद
ले। तब ही तू दौलतमंद बनेगा। और मुझसे सफ़ेद लिबास ख़रीद ले जिसको पहनने से तेरे नंगेपन की शर्म ज़ाहिर नहीं
होगी। इसके अलावा मुझसे आँखों में लगाने के लिए मरहम ख़रीद ले ताकि तू देख सके। 19 जिनको मैं प्यार करता हूँ
उनकी मैं सज़ा देकर तरबियत करता हूँ। अब संजीदा हो जा और तौबा कर। 20 देख, मैं दरवाज़े पर खड़ा खटखटा रहा
हूँ। अगर कोई मेरी आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोले तो मैं अंदर आकर उसके साथ खाना खाऊँगा और वह मेरे साथ।
21 जो ग़ालिब आए उसे मैं अपने साथ अपने तख़्त पर बैठने का हक़ दूँगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मैं ख़ुद भी
ग़ालिब आकर अपने बाप के साथ उसके तख़्त पर बैठ गया।

22 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-क़ुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।"

4

आसमान पर अल्लाह की परस्तिश

1 इसके बाद मैंने देखा कि आसमान में एक दरवाज़ा खुला हुआ है और तुरम की-सी आवाज़ ने जो मैंने पहले सुनी
थी कहा, "इधर ऊपर आ। फिर मैं तुझे वह कुछ दिखाऊँगा जिसे इसके बाद पेश आना है।" 2 तब रूहुल-क़ुद्स ने मुझे
फ़ौरन अपनी गिरिफ़्त में ले लिया। वहाँ आसमान पर एक तख़्त था जिस पर कोई बैठा था। 3 और बैठनेवाला देखने
में यशब और अक़ीक़ से मुताबिक़त रखता था। तख़्त के इर्दगिर्द क़ौसे-क़ुज़ह थी जो देखने में ज़ुमुर्रद की मानिंद थी।
4 यह तख़्त 24 तख़्तों से घिरा हुआ था जिन पर 24 बुज़ुर्ग बैठे थे। बुज़ुर्गों के लिबास सफ़ेद थे और हर एक के सर
पर सोने का ताज था। 5 दरमियानी तख़्त से बिजली की चमकें, आवाज़ें और बादल की गरजें निकल रही थीं। और
तख़्त के सामने सात मशालें जल रही थीं। यह अल्लाह की सात रूहें हैं। 6 तख़्त के सामने शीशे का-सा समुंदर भी था
जो बिल्लौर से मुताबिक़त रखता था।

बीच में तख़्त के इर्दगिर्द चार जानदार थे जिनके जिस्मों पर हर जगह आँखें ही आँखें थीं, सामनेवाले हिस्से पर भी
और पीछेवाले हिस्से पर भी। 7 पहला जानदार शेरबबर जैसा था, दूसरा बैल जैसा, तीसरे का इनसान जैसा चेहरा था
और चौथा उड़ते हुए उक़ाब की मानिंद था। 8 इन चार जानदारों में से हर एक के छः पर थे और जिस्म पर हर जगह
आँखें ही आँखें थीं, बाहर भी और अंदर भी। दिन-रात वह बिलानाग़ा कहते रहते हैं,

"क़ुद्दूस, क़ुद्दूस, क़ुद्दूस है रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा,
जो था, जो है और जो आनेवाला है।"

9 यों यह जानदार उस की तमजीद, इज़्ज़त और शुक्र करते हैं जो तख़्त पर बैठा है और अबद तक ज़िंदा है। जब
भी वह यह करते हैं 10 तो 24 बुज़ुर्ग तख़्त पर बैठनेवाले के सामने मुँह के बल होकर उसे सिजदा करते हैं जो अज़ल
से अबद तक ज़िंदा है। साथ साथ वह अपने सोने के ताज तख़्त के सामने रखकर कहते हैं,

11 "ऐ रब हमारे ख़ुदा,
तू जलाल, इज़्ज़त और क़ुदरत के लायक़ है।
क्योंकि तूने सब कुछ ख़लक़ किया।
तमाम चीज़ें तेरी ही मरज़ी से थीं और पैदा हुईं।"

5

सात मुहरोंवाला तूमार

1 फिर मैंने तख़्त पर बैठनेवाले के दहने हाथ में एक तूमार देखा जिस पर दोनों तरफ़ लिखा हुआ था और जिस पर
सात मुहरें लगी थीं। 2 और मैंने एक ताक़तवर फ़रिश्ता देखा जिसने ऊँची आवाज़ से एलान किया, "कौन मुहरों को
तोड़कर तूमार को खोलने के लायक़ है?" 3 लेकिन न आसमान पर, न ज़मीन पर और न ज़मीन के नीचे कोई था जो
तूमार को खोलकर उसमें नज़र डाल सकता। 4 मैं ख़ूब रो पड़ा, क्योंकि कोई इस लायक़ न पाया गया कि वह तूमार
को खोलकर उसमें नज़र डाल सकता। 5 लेकिन बुज़ुर्गों में से एक ने मुझसे कहा, "मत रो। देख, यहूदाह क़बीले के
शेरबबर और दाऊद की जड़ ने फ़तह पाई है, और वही तूमार की सात मुहरों को खोल सकता है।"

6 फिर मैंने एक लेला देखा जो तख़्त के दरमियान खड़ा था। वह चार जानदारों और बुज़ुर्गों से घिरा हुआ था और यों
लगता था कि उसे ज़बह किया गया हो। उसके सात सींग और सात आँखें थीं। इनसे मुराद अल्लाह की वह सात रूहें
हैं जिन्हें दुनिया की हर जगह भेजा गया है। 7 लेले ने आकर तख़्त पर बैठनेवाले के दहने हाथ से तूमार को ले लिया।
8 और लेते वक़्त चार जानदार और 24 बुज़ुर्ग लेले के सामने मुँह के बल गिर गए। हर एक के पास एक सरोद और
बख़ूर से भरे सोने के प्याले थे। इनसे मुराद मुक़द्दसीन की दुआएँ हैं। 9 साथ साथ वह एक नया गीत गाने लगे,

"तू तूमार को लेकर
उस की मुहरों को खोलने के लायक़ है।
क्योंकि तुझे ज़बह किया गया, और अपने ख़ून से
तूने लोगों को हर क़बीले, हर अहले-ज़बान, हर मिल्लत और हर क़ौम से
अल्लाह के लिए ख़रीद लिया है।
10 तूने उन्हें शाही इख़्तियार देकर
हमारे ख़ुदा के इमाम बना दिया है।
और वह दुनिया में हुकूमत करेंगे।"

11 मैंने दुबारा देखा तो बेशुमार फ़रिश्तों की आवाज़ सुनी। वह तख़्त, चार जानदारों और बुज़ुर्गों के इर्दगिर्द खड़े
12 ऊँची आवाज़ से कह रहे थे,

"लायक़ है वह लेला जो ज़बह किया गया है।
वह क़ुदरत, दौलत, हिकमत और ताक़त,
इज़्ज़त, जलाल और सताइश पाने के लायक़ है।"

13 फिर मैंने आसमान पर, ज़मीन पर, ज़मीन के नीचे और समुंदर की हर मख़लूक़ की आवाज़ें सुनीं। हाँ, कायनात
की सब मख़लूक़ात यह गा रहे थे,

"तख़्त पर बैठनेवाले और लेले की सताइश और इज़्ज़त,
जलाल और क़ुदरत अज़ल से अबद तक रहे।"

14 चार जानदारों ने जवाब में "आमीन" कहा, और बुज़ुर्गों ने गिरकर सिजदा किया।

6

मुहरें तोड़ी जाती हैं

1 फिर मैंने देखा, लेले ने सात मुहरों में से पहली मुहर को खोला। इस पर मैंने चार जानदारों में से एक को जिसकी
आवाज़ कड़कते बादलों की मानिंद थी यह कहते हुए सुना, "आ!" 2 मेरे देखते देखते एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया।
उसके सवार के हाथ में कमान थी, और उसे एक ताज दिया गया। यों वह फ़ातेह की हैसियत से और फ़तह पाने के लिए
वहाँ से निकला।

3 लेले ने दूसरी मुहर खोली तो मैंने दूसरे जानदार को कहते हुए सुना कि "आ!" 4 इस पर एक और घोड़ा निकला
जो आग जैसा सुर्ख़ था। उसके सवार को दुनिया से सुलह-सलामती छीनने का इख़्तियार दिया गया ताकि लोग एक दूसरे
को क़त्ल करें। उसे एक बड़ी तलवार पकड़ाई गई।

5 लेले ने तीसरी मुहर खोली तो मैंने तीसरे जानदार को कहते हुए सुना कि "आ!" मेरे देखते देखते एक काला घोड़ा
नज़र आया। उसके सवार के हाथ में तराज़ू था। 6 और मैंने चारों जानदारों में से गोया एक आवाज़ सुनी जिसने कहा,
"एक दिन की मज़दूरी के लिए एक किलोग्राम गंदुम, और एक दिन की मज़दूरी के लिए तीन किलोग्राम जौ। लेकिन
तेल और मै को नुक़सान मत पहुँचाना।"

7 लेले ने चौथी मुहर खोली तो मैंने चौथे जानदार को कहते सुना कि "आ!" 8 मेरे देखते देखते एक घोड़ा नज़र
आया जिसका रंग हलका पीला-सा था। उसके सवार का नाम मौत था, और पाताल उसके पीछे पीछे चल रही थी। उन्हें
ज़मीन का चौथा हिस्सा क़त्ल करने का इख़्तियार दिया गया, ख़ाह तलवार, काल, मोहलक वबा या वहशी जानवरों
के ज़रीए से हो।

9 लेले ने पाँचवीं मुहर खोली तो मैंने क़ुरबानगाह के नीचे उनकी रूहें देखीं जो अल्लाह के कलाम और अपनी
गवाही क़ायम रखने की वजह से शहीद हो गए थे। 10 उन्होंने ऊँची आवाज़ से चिल्लाकर कहा, "ऐ क़ादिरे-मुतलक़,
क़ुद्दूस और सच्चे रब, कितनी देर और लगेगी? तू कब तक ज़मीन के बाशिंदों की अदालत करके हमारे शहीद होने का
इंतक़ाम न लेगा?" 11 तब उनमें से हर एक को एक सफ़ेद लिबास दिया गया, और उन्हें समझाया गया कि "मज़ीद
थोड़ी देर आराम करो, क्योंकि पहले तुम्हारे हमख़िदमत भाइयों में से उतनों को शहीद हो जाना है जितनों के लिए यह
मुक़र्रर है।"

12 लेले ने छटी मुहर खोली तो मैंने एक शदीद ज़लज़ला देखा। सूरज बकरी के बालों से बने टाट की मानिंद काला
हो गया, पूरा चाँद ख़ून जैसा नज़र आने लगा 13 और आसमान के सितारे ज़मीन पर यों गिर गए जिस तरह अंजीर के
दरख़्त पर लगे आख़िरी अंजीर तेज़ हवा के झोंकों से गिर जाते हैं। 14 आसमान तूमार की तरह जब उसे लपेटकर बंद
किया जाता है पीछे हट गया। और हर पहाड़ और जज़ीरा अपनी अपनी जगह से खिसक गया। 15 फिर ज़मीन के
बादशाह, शहज़ादे, जरनैल, अमीर, असरो-रसूख़वाले, ग़ुलाम और आज़ाद सबके सब ग़ारों में और पहाड़ी चटानों के
दरमियान छुप गए। 16 उन्होंने चिल्लाकर पहाड़ों और चटानों से मिन्नत की, "हम पर गिरकर हमें तख़्त पर बैठे हुए
के चेहरे और लेले के ग़ज़ब से छुपा लो। 17 क्योंकि उनके ग़ज़ब का अज़ीम दिन आ गया है, और कौन क़ायम रह
सकता है?"

7

इसराईल के *1,44,000* चुने हुए अफ़राद

1 इसके बाद मैंने चार फ़रिश्तों को ज़मीन के चार कोनों पर खड़े देखा। वह ज़मीन की चार हवाओं को चलने से
रोक रहे थे ताकि न ज़मीन पर, न समुंदर या किसी दरख़्त पर कोई हवा चले। 2 फिर मैंने एक और फ़रिश्ता मशरिक़ से
चढ़ते हुए देखा जिसके पास ज़िंदा ख़ुदा की मुहर थी। उसने ऊँची आवाज़ से उन चार फ़रिश्तों से बात की जिन्हें ज़मीन
और समुंदर को नुक़सान पहुँचाने का इख़्तियार दिया गया था। उसने कहा, 3 "ज़मीन, समुंदर या दरख़्तों को उस वक़्त
तक नुक़सान मत पहुँचाना जब तक हम अपने ख़ुदा के ख़ादिमों के माथों पर मुहर न लगा लें।" 4 और मैंने सुना कि जिन
पर मुहर लगाई गई थी वह 1,44,000 अफ़राद थे और वह इसराईल के हर एक क़बीले से थे : 5 12,000 यहूदाह
से, 12,000 रूबिन से, 12,000 जद से, 6 12,000 आशर से, 12,000 नफ़ताली से, 12,000 मनस्सी से,
7 12,000 शमौन से, 12,000 लावी से, 12,000 इशकार से, 8 12,000 ज़बूलून से, 12,000 यूसुफ़ से और
12,000 बिनयमीन से।

अल्लाह के हुज़ूर एक बड़ा हुजूम

9 इसके बाद मैंने एक हुजूम देखा जो इतना बड़ा था कि उसे गिना नहीं जा सकता था। उसमें हर मिल्लत, हर
क़बीले, हर क़ौम और हर ज़बान के अफ़राद सफ़ेद लिबास पहने हुए तख़्त और लेले के सामने खड़े थे। उनके हाथों में
खजूर की डालियाँ थीं। 10 और वह ऊँची आवाज़ से चिल्ला चिल्लाकर कह रहे थे, "नजात तख़्त पर बैठे हुए हमारे
ख़ुदा और लेले की तरफ़ से है।" 11 तमाम फ़रिश्ते तख़्त, बुज़ुर्गों और चार जानदारों के इर्दगिर्द खड़े थे। उन्होंने तख़्त
के सामने गिरकर अल्लाह को सिजदा किया 12 और कहा, "आमीन! हमारे ख़ुदा की अज़ल से अबद तक सताइश,
जलाल, हिकमत, शुक्रगुज़ारी, इज़्ज़त, क़ुदरत और ताक़त हासिल रहे। आमीन!"

13 बुज़ुर्गों में से एक ने मुझसे पूछा, "सफ़ेद लिबास पहने हुए यह लोग कौन हैं और कहाँ से आए हैं?"

14 मैंने जवाब दिया, "मेरे आक़ा, आप ही जानते हैं।"

उसने कहा, "यह वही हैं जो बड़ी ईज़ारसानी से निकलकर आए हैं। उन्होंने अपने लिबास लेले के ख़ून में धोकर
सफ़ेद कर लिए हैं। 15 इसलिए वह अल्लाह के तख़्त के सामने खड़े हैं और दिन-रात उसके घर में उस की ख़िदमत
करते हैं। और तख़्त पर बैठा हुआ उनको पनाह देगा। 16 इसके बाद न कभी भूक उन्हें सताएगी न प्यास। न धूप, न किसी
और क़िस्म की तपती गरमी उन्हें झुलसाएगी। 17 क्योंकि जो लेला तख़्त के दरमियान बैठा है वह उनकी गल्लाबानी
करेगा और उन्हें ज़िंदगी के चश्मों के पास ले जाएगा। और अल्लाह उनकी आँखों से तमाम आँसू पोंछ डालेगा।"

8

सातवीं मुहर

1 जब लेले ने सातवीं मुहर खोली तो आसमान पर ख़ामोशी छा गई। यह ख़ामोशी तक़रीबन आधे घंटे तक रही।
2 फिर मैंने अल्लाह के सामने खड़े सात फ़रिश्तों को देखा। उन्हें सात तुरम दिए गए।

3 एक और फ़रिश्ता जिसके पास सोने का बख़ूरदान था आकर क़ुरबानगाह के पास खड़ा हो गया। उसे बहुत-सा
बख़ूर दिया गया ताकि वह उसे मुक़द्दसीन की दुआओं के साथ तख़्त के सामने की सोने की क़ुरबानगाह पर पेश करे।
4 बख़ूर का धुआँ मुक़द्दसीन की दुआओं के साथ फ़रिश्ते के हाथ से उठते उठते अल्लाह के सामने पहुँचा। 5 फिर
फ़रिश्ते ने बख़ूरदान को लिया और उसे क़ुरबानगाह की आग से भरकर ज़मीन पर फेंक दिया। तब कड़कती और
गरजती आवाज़ें सुनाई दीं, बिजली चमकने लगी और ज़लज़ला आ गया।

तुरमों का असर

6 फिर जिन सात फ़रिश्तों के पास सात तुरम थे वह उन्हें बजाने के लिए तैयार हुए।

7 पहले फ़रिश्ते ने अपने तुरम को बजा दिया। इस पर ओले और ख़ून के साथ मिलाई गई आग पैदा होकर ज़मीन
पर बरसाई गई। इससे ज़मीन का तीसरा हिस्सा, दरख़्तों का तीसरा हिस्सा और तमाम हरी घास भस्म हो गई।

8 फिर दूसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर जलती हुई एक बड़ी पहाड़नुमा चीज़ को समुंदर में फेंका
गया। समुंदर का तीसरा हिस्सा ख़ून में बदल गया, 9 समुंदर में मौजूद ज़िंदा मख़लूक़ात का तीसरा हिस्सा हलाक और
बहरी जहाज़ों का तीसरा हिस्सा तबाह हो गया।

10 फिर तीसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर मशाल की तरह भड़कता हुआ एक बड़ा सितारा आसमान
से दरियाओं के तीसरे हिस्से और पानी के चश्मों पर गिर गया। 11 इस सितारे का नाम अफ़संतीन था और इससे पानी
का तीसरा हिस्सा अफ़संतीन जैसा कड़वा हो गया। बहुत-से लोग यह कड़वा पानी पीने से मर गए।

12 फिर चौथे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर सूरज का तीसरा हिस्सा, चाँद का तीसरा हिस्सा और
सितारों का तीसरा हिस्सा रौशनी से महरूम हो गया। दिन का तीसरा हिस्सा रौशनी से महरूम हुआ और इसी तरह रात
का तीसरा हिस्सा भी।
13 फिर देखते देखते मैंने एक उक़ाब को सुना जिसने मेरे सर के ऊपर ही बुलंदियों पर उड़ते हुए ऊँची आवाज़ से
पुकारा, "अफ़सोस! अफ़सोस! ज़मीन के बाशिंदों पर अफ़सोस! क्योंकि तीन फ़रिश्तों के तुरमों की आवाज़ें अभी
बाक़ी हैं।"

9

1 फिर पाँचवें फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर मैंने एक सितारा देखा जो आसमान से ज़मीन पर गिर गया
था। इस सितारे को अथाह गढ़े के रास्ते की चाबी दी गई। 2 उसने अथाह गढ़े का रास्ता खोल दिया तो उससे धुआँ
निकलकर ऊपर आया, यों जैसे धुआँ किसी बड़े भट्टे से निकलता है। सूरज और चाँद अथाह गढ़े के इस धुएँ से तारीक
हो गए। 3 और धुएँ में से टिड्डियाँ निकलकर ज़मीन पर उतर आईं। उन्हें ज़मीन के बिछुओं जैसा इख़्तियार दिया गया।
4 उन्हें बताया गया, "न ज़मीन की घास, न किसी पौदे या दरख़्त को नुक़सान पहुँचाओ बल्कि सिर्फ़ उन लोगों को
जिनके माथों पर अल्लाह की मुहर नहीं लगी है।" 5 टिड्डियों को इन लोगों को मार डालने का इख़्तियार न दिया गया
बल्कि उन्हें बताया गया कि वह पाँच महीनों तक इनको अज़ियत दें। और यह अज़ियत उस तकलीफ़ की मानिंद है
जो तब पैदा होती है जब बिच्छू किसी को डंक मारता है। 6 उन पाँच महीनों के दौरान लोग मौत की तलाश में रहेंगे,
लेकिन उसे पाएँगे नहीं। वह मर जाने की शदीद आरज़ू करेंगे, लेकिन मौत उनसे भागकर दूर रहेगी।
7 टिड्डियों की शक्लो-सूरत जंग के लिए तैयार घोड़ों की मानिंद थी। उनके सरों पर सोने के ताजों जैसी चीज़ें
थीं और उनके चेहरे इनसानों के चेहरों की मानिंद थे। 8 उनके बाल ख़वातीन के बालों की मानिंद और उनके दाँत
शेरबबर के दाँतों जैसे थे। 9 यों लगा जैसे उनके सीनों पर लोहे के-से ज़िरा-बकतर लगे हुए थे, और उनके परों की
आवाज़ बेशुमार रथों और घोड़ों के शोर जैसी थी जब वह मुख़ालिफ़ पर झपट रहे होते हों। 10 उनकी दुम पर बिच्छू
का-सा डंक लगा था और उन्हें इन्हीं दुमों से लोगों को पाँच महीनों तक नुक़सान पहुँचाने का इख़्तियार था। 11 उनका
बादशाह अथाह गढ़े का फ़रिश्ता है जिसका इबरानी नाम अबद्दोन और यूनानी नाम अपुल्लियोन (हलाकू) है।
12 यों पहला अफ़सोस गुज़र गया, लेकिन इसके बाद दो मज़ीद अफ़सोस होनेवाले हैं।
13 छटे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर मैंने एक आवाज़ सुनी जो अल्लाह के सामने वाक़े सोने की
क़ुरबानगाह के चार कोनों पर लगे सींगों से आई। 14 इस आवाज़ ने छटा तुरम पकड़े हुए फ़रिश्ते से कहा, "उन चार
फ़रिश्तों को खुला छोड़ देना जो बड़े दरिया बनाम फ़ुरात के पास बँधे हुए हैं।" 15 इन चार फ़रिश्तों को इसी महीने
के इसी दिन के इसी घंटे के लिए तैयार किया गया था। अब इन्हें खुला छोड़ दिया गया ताकि वह इनसानों का तीसरा
हिस्सा मार डालें। 16 मुझे बताया गया कि घोड़ों पर सवार फ़ौजी बीस करोड़ थे। 17 रोया में घोड़े और सवार यों नज़र
आए : सीनों पर लगे ज़िरा-बकतर आग जैसे सुर्ख़, नीले और गंधक जैसे पीले थे। घोड़ों के सर शेरबबर के सरों से
मुताबिक़त रखते थे और उनके मुँह से आग, धुआँ और गंधक निकलती थी। 18 आग, धुएँ और गंधक की इन तीन
बलाओं से इनसानों का तीसरा हिस्सा हलाक हुआ। 19 हर घोड़े की ताक़त उसके मुँह और दुम में थी, क्योंकि उनकी
दुमें साँप की मानिंद थीं जिनके सर नुक़सान पहुँचाते थे।
20 जो इन बलाओं से हलाक नहीं हुए थे बल्कि अभी बाक़ी थे उन्होंने फिर भी अपने हाथों के कामों से तौबा न
की। वह बदरूहों और सोने, चाँदी, पीतल, पत्थर और लकड़ी के बुतों की पूजा से बाज़ न आए हालाँकि ऐसी चीज़ें न
तो देख सकती हैं, न सुनने या चलने के क़ाबिल होती हैं। 21 वह क़त्लो-ग़ारत, जादूगरी, ज़िनाकारी और चोरियों से
भी तौबा करके बाज़ न आए।

10

फ़रिश्ता और छोटा तूमार

1 फिर मैंने एक और ताक़तवर फ़रिश्ता देखा। वह बादल ओढ़े हुए आसमान से उतर रहा था और उसके सर के ऊपर
क़ौसे-क़ुज़ह थी। उसका चेहरा सूरज जैसा था और उसके पाँव आग के सतून जैसे। 2 उसके हाथ में एक छोटा तूमार
था जो खुला था। अपने एक पाँव को उसने समुंदर पर रख दिया और दूसरे को ज़मीन पर। 3 फिर वह ऊँची आवाज़ से
पुकार उठा। ऐसे लगा जैसे शेरबबर गरज रहा है। इस पर कड़क की सात आवाज़ें बोलने लगीं। 4 उनके बोलने पर मैं
उनकी बातें लिखने को था कि एक आवाज़ ने कहा, "कड़क की सात आवाज़ों की बातों पर मुहर लगा और उन्हें मत
लिखना।"

5 फिर उस फ़रिश्ते ने जिसे मैंने समुंदर और ज़मीन पर खड़ा देखा अपने दहने हाथ को आसमान की तरफ़ उठाकर
6 अल्लाह के नाम की क़सम खाई, उसके नाम की जो अज़ल से अबद तक ज़िंदा है और जिसने आसमानों, ज़मीन
और समुंदर को उन तमाम चीज़ों समेत ख़लक़ किया जो उनमें हैं। फ़रिश्ते ने कहा, "अब देर नहीं होगी। 7 जब सातवाँ
फ़रिश्ता अपने तुरम में फूँक मारने को होगा तब अल्लाह का भेद जो उसने अपने नबुव्वत करनेवाले ख़ादिमों को बताया
था तकमील तक पहुँचेगा।"

8 फिर जो आवाज़ आसमान से सुनाई दी थी उसने एक बार फिर मुझसे बात की, "जा, वह तूमार ले लेना जो समुंदर
और ज़मीन पर खड़े फ़रिश्ते के हाथ में खुला पड़ा है।"

9 चुनाँचे मैंने फ़रिश्ते के पास जाकर उससे गुज़ारिश की कि वह मुझे छोटा तूमार दे। उसने मुझसे कहा, "इसे ले
और खा ले। यह तेरे मुँह में शहद की तरह मीठा लगेगा, लेकिन तेरे मेदे में कड़वाहट पैदा करेगा।"

10 मैंने छोटे तूमार को फ़रिश्ते के हाथ से लेकर उसे खा लिया। मेरे मुँह में तो वह शहद की तरह मीठा लग रहा था,
लेकिन मेदे में जाकर उसने कड़वाहट पैदा कर दी। 11 फिर मुझे बताया गया, "लाज़िम है कि तू बहुत उम्मतों, क़ौमों,
ज़बानों और बादशाहों के बारे में मज़ीद नबुव्वत करे।"

11

दो गवाह

1 मुझे गज़ की तरह का सरकंडा दिया गया और बताया गया, "जा, अल्लाह के घर और क़ुरबानगाह की पैमाइश
कर। उसमें परस्तारों की तादाद भी गिन। 2 लेकिन बैरूनी सहन को छोड़ दे। उसे मत नाप, क्योंकि उसे ग़ैरईमानदारों
को दिया गया है जो मुक़द्दस शहर को 42 महीनों तक कुचलते रहेंगे। 3 और मैं अपने दो गवाहों को इख़्तियार दूँगा,
और वह टाट ओढ़कर 1,260 दिनों के दौरान नबुव्वत करेंगे।"

4 यह दो गवाह ज़ैतून के वह दो दरख़्त और वह दो शमादान हैं जो दुनिया के आक़ा के सामने खड़े हैं। 5 अगर
कोई उन्हें नुक़सान पहुँचाना चाहे तो उनके मुँह में से आग निकलकर उनके दुश्मनों को भस्म कर देती है। जो भी उन्हें
नुक़सान पहुँचाना चाहे उसे इस तरह मरना पड़ता है। 6 इन गवाहों को आसमान को बंद रखने का इख़्तियार है ताकि
जितना वक़्त वह नबुव्वत करें बारिश न हो। उन्हें पानी को ख़ून में बदलने और ज़मीन को हर क़िस्म की अज़ियत
पहुँचाने का इख़्तियार भी है। और वह जितनी दफ़ा जी चाहे यह कर सकते हैं।

7 उनकी गवाही का मुक़र्ररा वक़्त पूरा होने पर अथाह गढ़े में से निकलनेवाला हैवान उनसे जंग करना शुरू करेगा
और उन पर ग़ालिब आकर उन्हें मार डालेगा। 8 उनकी लाशें उस बड़े शहर की सड़क पर पड़ी रहेंगी जिसका अलामती
नाम सदूम और मिसर है। वहाँ उनका आक़ा भी मसलूब हुआ था। 9 और साढ़े तीन दिनों के दौरान हर उम्मत, क़बीले,
ज़बान और क़ौम के लोग इन लाशों को घूरकर देखेंगे और इन्हें दफ़न करने नहीं देंगे। 10 ज़मीन के बाशिंदे उनकी
वजह से मसरूर होंगे और ख़ुशी मनाकर एक दूसरे को तोहफ़े भेजेंगे, क्योंकि इन दो नबियों ने ज़मीन पर रहनेवालों
को काफ़ी ईज़ा पहुँचाई थी। 11 लेकिन इन साढ़े तीन दिनों के बाद अल्लाह ने उनमें ज़िंदगी का दम फूँक दिया, और
वह अपने पाँवों पर खड़े हुए। जो उन्हें देख रहे थे वह सख़्त दहशतज़दा हुए। 12 फिर उन्होंने आसमान से एक ऊँची
आवाज़ सुनी जिसने उनसे कहा, "यहाँ ऊपर आओ!" और उनके दुश्मनों के देखते देखते दोनों एक बादल में आसमान
पर चले गए। 13 उसी वक़्त एक शदीद ज़लज़ला आया और शहर का दसवाँ हिस्सा गिरकर तबाह हो गया। 7,000
अफ़राद उस की ज़द में आकर मर गए। बचे हुए लोगों में दहशत फैल गई और वह आसमान के ख़ुदा को जलाल देने
लगे।

14 दूसरा अफ़सोस गुज़र गया, लेकिन अब तीसरा अफ़सोस जल्द होनेवाला है।

सातवाँ तुरम

15 सातवें फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर आसमान पर से ऊँची आवाज़ें सुनाई दें जो कह रही थीं,
"ज़मीन की बादशाही हमारे आक़ा और उसके मसीह की हो गई है। वही अज़ल से अबद तक हुकूमत करेगा।" 16 और
अल्लाह के तख़्त के सामने बैठे 24 बुज़ुर्गों ने गिरकर अल्लाह को सिजदा किया 17 और कहा, "ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़
ख़ुदा, हम तेरा शुक्र करते हैं, तू जो है और जो था। क्योंकि तू अपनी अज़ीम क़ुदरत को काम में लाकर हुकूमत करने
लगा है। 18 क़ौमें ग़ुस्से में आईं तो तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ। अब मुरदों की अदालत करने और अपने ख़ादिमों को अज्र
देने का वक़्त आ गया है। हाँ, तेरे नबियों, मुक़द्दसीन और तेरा ख़ौफ़ माननेवालों को अज्र मिलेगा, ख़ाह वह छोटे हों
या बड़े। अब वह वक़्त भी आ गया है कि ज़मीन को तबाह करनेवालों को तबाह किया जाए।"

19 आसमान पर अल्लाह के घर को खोला गया और उसमें उसके अहद का संदूक़ नज़र आया। बिजली चमकने
लगी, शोर मच गया, बादल गरजने और बड़े बड़े ओले पड़ने लगे।

12

ख़ातून और अज़दहा

1 फिर आसमान पर एक अज़ीम निशान ज़ाहिर हुआ, एक ख़ातून जिसका लिबास सूरज था। उसके पाँवों तले चाँद
और सर पर बारह सितारों का ताज था। 2 उसका पाँव भारी था, और जन्म देने के शदीद दर्द में मुब्तला होने की वजह
से वह चिल्ला रही थी।

3 फिर आसमान पर एक और निशान नज़र आया, एक बड़ा और आग जैसा सुर्ख़ अज़दहा। उसके सात सर और दस
सींग थे, और हर सर पर एक ताज था। 4 उस की दुम ने सितारों के तीसरे हिस्से को आसमान पर से उतारकर ज़मीन पर
फेंक दिया। फिर अज़दहा जन्म देनेवाली ख़ातून के सामने खड़ा हुआ ताकि उस बच्चे को जन्म लेते ही हड़प कर ले।
5 ख़ातून के बेटा पैदा हुआ, वह बच्चा जो लोहे के शाही असा से क़ौमों पर हुकूमत करेगा। और ख़ातून के इस बच्चे
को छीनकर अल्लाह और उसके तख़्त के सामने लाया गया। 6 ख़ातून ख़ुद रेगिस्तान में हिजरत करके एक ऐसी जगह
पहुँच गई जो अल्लाह ने उसके लिए तैयार कर रखी थी, ताकि वहाँ 1,260 दिन तक उस की परवरिश की जाए।

7 फिर आसमान पर जंग छिड़ गई। मीकाएल और उसके फ़रिश्ते अज़दहे से लड़े। अज़दहा और उसके फ़रिश्ते
उनसे लड़ते रहे, 8 लेकिन वह ग़ालिब न आ सके बल्कि आसमान पर अपने मक़ाम से महरूम हो गए। 9 बड़े अज़दहे
को निकाल दिया गया, उस क़दीम अज़दहे को जो इबलीस या शैतान कहलाता है और जो पूरी दुनिया को गुमराह कर
देता है। उसे उसके फ़रिश्तों समेत ज़मीन पर फेंका गया।

10 फिर आसमान पर एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी, "अब हमारे ख़ुदा की नजात, क़ुदरत और बादशाही आ गई है,
अब उसके मसीह का इख़्तियार आ गया है। क्योंकि हमारे भाइयों और बहनों पर इलज़ाम लगानेवाला जो दिन-रात
अल्लाह के हुज़ूर उन पर इलज़ाम लगाता रहता था उसे ज़मीन पर फेंका गया है। 11 ईमानदार लेले के ख़ून और अपनी
गवाही सुनाने के ज़रीए ही उस पर ग़ालिब आए हैं। उन्होंने अपनी जान अज़ीज़ न रखी बल्कि उसे देने तक तैयार
थे। 12 चुनाँचे ख़ुशी मनाओ, ऐ आसमानो! ख़ुशी मनाओ, उनमें बसनेवालो! लेकिन ज़मीन और समुंदर पर अफ़सोस!
क्योंकि इबलीस तुम पर उतर आया है। वह बड़े ग़ुस्से में है, क्योंकि वह जानता है कि अब उसके पास वक़्त कम है।"

13 जब अज़दहे ने देखा कि उसे ज़मीन पर गिरा दिया गया है तो वह उस ख़ातून के पीछे पड़ गया जिसने बच्चे
को जन्म दिया था। 14 लेकिन ख़ातून को बड़े उक़ाब के-से दो पर दिए गए ताकि वह उड़कर रेगिस्तान में उस जगह
पहुँचे जो उसके लिए तैयार की गई थी और जहाँ वह साढ़े तीन साल तक अज़दहे की पहुँच से महफ़ूज़ रहकर परवरिश
पाएगी। 15 इस पर अज़दहे ने अपने मुँह से पानी निकालकर दरिया की सूरत में ख़ातून के पीछे पीछे बहा दिया ताकि
उसे बहा ले जाए। 16 लेकिन ज़मीन ने ख़ातून की मदद करके अपना मुँह खोल दिया और उस दरिया को निगल लिया
जो अज़दहे ने अपने मुँह से निकाल दिया था। 17 फिर अज़दहे को ख़ातून पर ग़ुस्सा आया, और वह उस की बाक़ी
औलाद से जंग करने के लिए चला गया। (ख़ातून की औलाद वह हैं जो अल्लाह के अहकाम पूरे करके ईसा की गवाही
को क़ायम रखते हैं)। 18 और अज़दहा समुंदर के साहिल पर खड़ा हो गया।

13

दो हैवान

1 फिर मैंने देखा कि समुंदर में से एक हैवान निकल रहा है। उसके दस सींग और सात सर थे। हर सींग पर एक
ताज और हर सर पर कुफ़र का एक नाम था। 2 यह हैवान चीते की मानिंद था। लेकिन उसके रीछ के-से पाँव और
शेरबबर का-सा मुँह था। अज़दहे ने इस हैवान को अपनी क़ुव्वत, अपना तख़्त और बड़ा इख़्तियार दे दिया। 3 लगता
था कि हैवान के सरों में से एक पर लाइलाज ज़ख़म लगा है। लेकिन इस ज़ख़म को शफ़ा दी गई। पूरी दुनिया यह
देखकर हैरतज़दा हुई और हैवान के पीछे लग गई। 4 लोगों ने अज़दहे को सिजदा किया, क्योंकि उसी ने हैवान को
इख़्तियार दिया था। और उन्होंने यह कहकर हैवान को भी सिजदा किया, "कौन इस हैवान की मानिंद है? कौन इससे
लड़ सकता है?"

5 इस हैवान को बड़ी बड़ी बातें और कुफ़र बकने का इख़्तियार दिया गया। और उसे यह करने का इख़्तियार 42
महीने के लिए मिल गया। 6 यों वह अपना मुँह खोलकर अल्लाह, उसके नाम, उस की सुकूनतगाह और आसमान के
बाशिंदों पर कुफ़र बकने लगा। 7 उसे मुक़द्दसीन से जंग करके उन पर फ़तह पाने का इख़्तियार भी दिया गया। और
उसे हर क़बीले, हर उम्मत, हर ज़बान और हर क़ौम पर इख़्तियार दिया गया। 8 ज़मीन के तमाम बाशिंदे इस हैवान को

सिजदा करेंगे यानी वह सब जिनके नाम दुनिया की इब्तिदा से लेले की किताबे-हयात में दर्ज नहीं हैं, उस लेले की
किताब में जो ज़बह किया गया है।
9 जो सुन सकता है वह सुन ले! 10 अगर किसी को क़ैदी बनना है तो वह क़ैदी ही बनेगा। अगर किसी को तलवार
की ज़द में आकर मरना है तो वह ऐसे ही मरेगा। अब मुक़द्दसीन को साबितक़दमी और वफ़ादार ईमान की ख़ास ज़रूरत
है।
11 फिर मैंने एक और हैवान को देखा। वह ज़मीन में से निकल रहा था। उसके लेले के-से दो सींग थे, लेकिन उसके
बोलने का अंदाज़ अज़दहे का-सा था। 12 उसने पहले हैवान का पूरा इख़्तियार उस की ख़ातिर इस्तेमाल करके ज़मीन
और उसके बाशिंदों को पहले हैवान को सिजदा करने पर उकसाया, यानी उस हैवान को जिसका लाइलाज ज़ख़म भर
गया था। 13 और उसने बड़े मोजिज़ाना निशान दिखाए, यहाँ तक कि उसने लोगों के देखते देखते आसमान से ज़मीन
पर आग नाज़िल होने दी। 14 यों उसे पहले हैवान की ख़ातिर मोजिज़ाना निशान दिखाने का इख़्तियार दिया गया, और
इनके ज़रीए उसने ज़मीन के बाशिंदों को सहीह राह से बहकाया। उसने उन्हें कहा कि वह उस हैवान की ताज़ीम में एक
मुजस्समा बना दें जो तलवार से ज़ख़मी होने के बावुजूद दुबारा ज़िंदा हुआ था। 15 फिर उसे पहले हैवान के मुजस्समे
में जान डालने का इख़्तियार दिया गया ताकि मुजस्समा बोल सके और उन्हें क़त्ल करवा सके जो उसे सिजदा करने से
इनकार करते थे। 16 उसने यह भी करवाया कि हर एक के दहने हाथ या माथे पर एक ख़ास निशान लगाया जाए, ख़ाह
वह छोटा हो या बड़ा, अमीर हो या ग़रीब, आज़ाद हो या ग़ुलाम। 17 सिर्फ़ वह शख़्स कुछ ख़रीद या बेच सकता था
जिस पर यह निशान लगा था। यह निशान हैवान का नाम या उसके नाम का नंबर था।
18 यहाँ हिकमत की ज़रूरत है। जो समझदार है वह हैवान के नंबर का हिसाब करे, क्योंकि यह एक मर्द का नंबर
है। उसका नंबर 666 है।

14

लेला और उस की क़ौम

1 फिर मैंने देखा कि लेला मेरे सामने ही सिय्यून के पहाड़ पर खड़ा है। उसके साथ 1,44,000 अफ़राद खड़े
थे जिनके माथों पर उसका और उसके बाप का नाम लिखा था। 2 और मैंने आसमान से एक ऐसी आवाज़ सुनी जो
किसी बड़े आबशार और गरजते बादलों की ऊँची कड़क की मानिंद थी। यह उस आवाज़ की मानिंद थी जो सरोद
बजानेवाले अपने साज़ों से निकालते हैं। 3 यह 1,44,000 अफ़राद तख़्त, चार जानदारों और बुज़ुर्गों के सामने खड़े
एक नया गीत गा रहे थे, एक ऐसा गीत जो सिर्फ़ वही सीख सके जिन्हें लेले ने ज़मीन से ख़रीद लिया था। 4 यह वह
मर्द हैं जिन्होंने अपने आपको ख़वातीन के साथ आलूदा नहीं किया, क्योंकि वह कुँवारे हैं। जहाँ भी लेला जाता है वहाँ
वह भी जाते हैं। उन्हें बाक़ी इनसानों में से फ़सल के पहले फल की हैसियत से अल्लाह और लेले के लिए ख़रीदा गया
है। 5 उनके मुँह से कभी झूट नहीं निकला बल्कि वह बेइलज़ाम हैं।

तीन फ़रिश्ते

6 फिर मैंने एक और फ़रिश्ता देखा। वह मेरे सर के ऊपर ही हवा में उड़ रहा था। उसके पास अल्लाह की अबदी
ख़ुशख़बरी थी ताकि वह उसे ज़मीन के बाशिंदों यानी हर क़ौम, क़बीले, अहले-ज़बान और उम्मत को सुनाए। 7 उसने
ऊँची आवाज़ से कहा, "ख़ुदा का ख़ौफ़ मानकर उसे जलाल दो, क्योंकि उस की अदालत का वक़्त आ गया है। उसे
सिजदा करो जिसने आसमानों, ज़मीन, समुंदर और पानी के चश्मों को ख़लक़ किया है।"
8 एक दूसरे फ़रिश्ते ने पहले के पीछे पीछे चलते हुए कहा, "वह गिर गया है! हाँ, अज़ीम बाबल गिर गया है,
जिसने तमाम क़ौमों को अपनी हरामकारी और मस्ती की मै पिलाई है।"
9 इन दो फ़रिश्तों के पीछे एक तीसरा फ़रिश्ता चल रहा था। उसने ऊँची आवाज़ से कहा, "जो भी हैवान और
उसके मुजस्समे को सिजदा करे और जिसे भी उसका निशान अपने माथे या हाथ पर मिल जाए 10 वह अल्लाह के
ग़ज़ब की मै से पिएगा, ऐसी मै जो मिलावट के बग़ैर ही अल्लाह के ग़ज़ब के प्याले में डाली गई है। मुक़द्दस फ़रिश्तों
और लेले के हुज़ूर उसे आग और गंधक का अज़ाब सहना पड़ेगा। 11 और इन लोगों को सतानेवाली यह आग जलती
रहेगी, इसका धुआँ अबद तक चढ़ता रहेगा। जो हैवान और उसके मुजस्समे को सिजदा करते हैं या जिन्होंने उसके नाम
का निशान लिया है वह न दिन, न रात को आराम पाएँगे।"
12 यहाँ मुक़द्दसीन को साबितक़दम रहने की ज़रूरत है, उन्हें जो अल्लाह के अहकाम पूरे करते और ईसा के वफ़ादार
रहते हैं।
13 फिर मैंने आसमान से एक आवाज़ यह कहती हुई सुनी, "लिख, मुबारक हैं वह मुरदे जो अब से ख़ुदावंद में वफ़ात
पाते हैं।"

"जी हाँ," रूह फ़रमाता है, "वह अपनी मेहनत-मशक़्क़त से आराम पाएँगे, क्योंकि उनके नेक काम उनके पीछे होकर उनके साथ चलेंगे।"

ज़मीन पर फ़सल की कटाई

14 फिर मैंने एक सफ़ेद बादल देखा, और उस पर कोई बैठा था जो इब्ने-आदम की मानिंद था। उसके सर पर सोने
का ताज और हाथ में तेज़ दराँती थी। 15 एक और फ़रिश्ता अल्लाह के घर से निकलकर ऊँची आवाज़ से पुकारकर
उससे मुख़ातिब हुआ जो बादल पर बैठा था, "अपनी दराँती लेकर फ़सल की कटाई कर! क्योंकि फ़सल काटने का
वक़्त आ गया है और ज़मीन पर की फ़सल पक गई है।" 16 चुनाँचे बादल पर बैठनेवाले ने अपनी दराँती ज़मीन पर
चलाई और ज़मीन की फ़सल की कटाई हुई।

17 इसके बाद एक और फ़रिश्ता अल्लाह के उस घर से निकल आया जो आसमान पर है, और उसके पास भी तेज़ दराँती थी।

18 फिर एक तीसरा फ़रिश्ता आया। उसे आग पर इख़्तियार था। वह क़ुरबानगाह से आया और ऊँची आवाज़ से
पुकारकर तेज़ दराँती पकड़े हुए फ़रिश्ते से मुख़ातिब हुआ, "अपनी तेज़ दराँती लेकर ज़मीन की अंगूर की बेल से अंगूर
के गुच्छे जमा कर, क्योंकि उसके अंगूर पक गए हैं।" 19 फ़रिश्ते ने ज़मीन पर अपनी दराँती चलाई, उसके अंगूर
जमा किए और उन्हें अल्लाह के ग़ज़ब के उस बड़े हौज़ में फेंक दिया जिसमें अंगूर का रस निकाला जाता है। 20 यह
हौज़ शहर से बाहर वाक़े था। उसमें पड़े अंगूरों को इतना रौंदा गया कि हौज़ में से ख़ून बह निकला। ख़ून का यह सैलाब
300 किलोमीटर दूर तक पहुँच गया और वह इतना ज़्यादा था कि घोड़ों की लगामों तक पहुँच गया।

15

आख़िरी बलाओं के फ़रिश्ते

1 फिर मैंने आसमान पर एक और इलाही निशान देखा, जो अज़ीम और हैरतअंगेज़ था। सात फ़रिश्ते सात आख़िरी
बलाएँ अपने पास रखकर खड़े थे। इनसे अल्लाह का ग़ज़ब तकमील तक पहुँच गया।

2 मैंने शीशे का-सा एक समुंदर भी देखा जिसमें आग मिलाई गई थी। इस समुंदर के पास वह खड़े थे जो हैवान,
उसके मुजस्समे और उसके नाम के नंबर पर ग़ालिब आ गए थे। वह अल्लाह के दिए हुए सरोद पकड़े 3 अल्लाह के
ख़ादिम मूसा और लेले का गीत गा रहे थे,

"ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा,
तेरे काम कितने अज़ीम और हैरतअंगेज़ हैं।
ऐ ज़मानों के बादशाह,
तेरी राहें कितनी रास्त और सच्ची हैं।
4 ऐ रब, कौन तेरा ख़ौफ़ नहीं मानेगा?
कौन तेरे नाम को जलाल नहीं देगा?
क्योंकि तू ही क़ुद्दूस है।
तमाम क़ौमें आकर तेरे हुज़ूर सिजदा करेंगी,
क्योंकि तेरे रास्त काम ज़ाहिर हो गए हैं।"

5 इसके बाद मैंने देखा कि अल्लाह के घर यानी आसमान पर के शरीअत के ख़ैमे को * खोल दिया गया। 6 अल्लाह
के घर से वह सात फ़रिश्ते निकल आए जिनके पास सात बलाएँ थीं। उनके कतान के कपड़े साफ़-सुथरे और चमक
रहे थे। यह कपड़े सीनों पर सोने के कमरबंद से बँधे हुए थे। 7 फिर चार जानदारों में से एक ने इन सात फ़रिश्तों को
सोने के सात प्याले दिए। यह प्याले उस ख़ुदा के ग़ज़ब से भरे हुए थे जो अज़ल से अबद तक ज़िंदा है। 8 उस वक़्त
अल्लाह का घर उसके जलाल और क़ुदरत से पैदा होनेवाले धुएँ से भर गया। और जब तक सात फ़रिश्तों की सात
बलाएँ तकमील तक न पहुँचीं उस वक़्त तक कोई भी अल्लाह के घर में दाख़िल न हो सका।

16

अल्लाह के ग़ज़ब के प्याले

1 फिर मैंने एक ऊँची आवाज़ सुनी जिसने अल्लाह के घर में से सात फ़रिश्तों से कहा, "जाओ, अल्लाह के ग़ज़ब से भरे सात प्यालों को ज़मीन पर उंडेल दो।"

* **15:5** यानी मुलाक़ात के ख़ैमे को।

2 पहले फ़रिश्ते ने जाकर अपना प्याला ज़मीन पर उंडेल दिया। इस पर उन लोगों के जिस्मों पर भद्दे और तकलीफ़देह
फोड़े निकल आए जिन पर हैवान का निशान था और जो उसके मुजस्समे को सिजदा करते थे।
3 दूसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला समुंदर पर उंडेल दिया। इस पर समुंदर का पानी लाश के-से ख़ून में बदल गया, और
उसमें हर ज़िंदा मख़लूक़ मर गई।
4 तीसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला दरियाओं और पानी के चश्मों पर उंडेल दिया तो उनका पानी ख़ून बन गया। 5 फिर
मैंने पानियों पर मुक़र्रर फ़रिश्ते को यह कहते सुना, "तू यह फ़ैसला करने में रास्त है, तू जो है और जो था, तू जो क़ुद्दूस
है। 6 चूँकि उन्होंने तेरे मुक़द्दसीन और नबियों की ख़ूनरेज़ी की है, इसलिए तूने उन्हें वह कुछ दे दिया जिसके लायक़
वह हैं। तूने उन्हें ख़ून पिला दिया।" 7 फिर मैंने क़ुरबानगाह को यह जवाब देते सुना, "हाँ, ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा,
हक़ीक़तन तेरे फ़ैसले सच्चे और रास्त हैं।"
8 चौथे फ़रिश्ते ने अपना प्याला सूरज पर उंडेल दिया। इस पर सूरज को लोगों को आग से झुलसाने का इख़्तियार
दिया गया। 9 लोग शदीद तपिश से झुलस गए, और उन्होंने अल्लाह के नाम पर कुफ़र बका जिसे इन बलाओं पर
इख़्तियार था। उन्होंने तौबा करने और उसे जलाल देने से इनकार किया।
10 पाँचवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हैवान के तख़्त पर उंडेल दिया। इस पर उस की बादशाही में अंधेरा छा गया।
लोग अज़ियत के मारे अपनी ज़बानें काटते रहे। 11 उन्होंने अपनी तकलीफ़ों और फोड़ों की वजह से आसमान पर
कुफ़र बका और अपने कामों से इनकार न किया।
12 छटे फ़रिश्ते ने अपना प्याला बड़े दरिया फ़ुरात पर उंडेल दिया। इस पर उसका पानी सूख गया ताकि मशरिक़
के बादशाहों के लिए रास्ता तैयार हो जाए। 13 फिर मैंने तीन बदरूहें देखीं जो मेंढकों की मानिंद थीं। वह अज़दहे के
मुँह, हैवान के मुँह और झूटे नबी के मुँह में से निकल आईं। 14 यह मेंढक शयातीन की रूहें हैं जो मोजिज़े दिखाती हैं
और निकलकर पूरी दुनिया के बादशाहों के पास जाती हैं ताकि उन्हें अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ के अज़ीम दिन पर जंग
के लिए इकट्ठा करें।
15 "देखो, मैं चोर की तरह आऊँगा। मुबारक है वह जो जागता रहता और अपने कपड़े पहने हुए रहता है ताकि उसे
नंगी हालत में चलना न पड़े और लोग उस की शर्मगाह न देखें।"
16 फिर उन्होंने बादशाहों को उस जगह पर इकट्ठा किया जिसका नाम इबरानी ज़बान में हर्मजिद्दोन है।
17 सातवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हवा में उंडेल दिया। इस पर अल्लाह के घर में तख़्त की तरफ़ से एक ऊँची
आवाज़ सुनाई दी जिसने कहा, "अब काम तकमील तक पहुँच गया है!" 18 बिजलियाँ चमकने लगीं, शोर मच गया,
बादल गरजने लगे और एक शदीद ज़लज़ला आया। इस क़िस्म का ज़लज़ला ज़मीन पर इनसान की तख़लीक़ से लेकर
आज तक नहीं आया, इतना सख़्त ज़लज़ला कि 19 अज़ीम शहर तीन हिस्सों में बट गया और क़ौमों के शहर तबाह
हो गए। अल्लाह ने अज़ीम बाबल को याद करके उसे अपने सख़्त ग़ज़ब की मै से भरा प्याला पिला दिया। 20 तमाम
जज़ीरे ग़ायब हो गए और पहाड़ कहीं नज़र न आए। 21 लोगों पर आसमान से मन मन-भर के बड़े बड़े ओले गिर गए।
और लोगों ने ओलों की बला की वजह से अल्लाह पर कुफ़र बका, क्योंकि यह बला निहायत सख़्त थी।

17

मशहूर कसबी

1 फिर सात प्याले अपने पास रखनेवाले इन सात फ़रिश्तों में से एक मेरे पास आया। उसने कहा, "आ, मैं तुझे उस
बड़ी कसबी की सज़ा दिखा दूँ जो गहरे पानी के पास बैठी है। 2 ज़मीन के बादशाहों ने उसके साथ ज़िना किया। हाँ,
उस की ज़िनाकारी की मै से ज़मीन के बाशिंदे मस्त हो गए।"
3 फिर फ़रिश्ता मुझे रूह में एक रेगिस्तान में ले गया। वहाँ मैंने एक औरत को देखा। वह एक क़िरमिज़ी रंग के
हैवान पर सवार थी जिसके पूरे जिस्म पर कुफ़र के नाम लिखे थे और जिसके सात सर और दस सींग थे। 4 यह औरत
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के कपड़े पहने और सोने, बेशक़ीमत जवाहर और मोतियों से सजी हुई थी। उसके हाथ
में सोने का एक प्याला था जो घिनौनी चीज़ों और उस की ज़िनाकारी की गंदगी से भरा हुआ था। 5 उसके माथे पर यह
नाम लिखा था, जो एक भेद है, "अज़ीम बाबल, कसबियों और ज़मीन की घिनौनी चीज़ों की माँ।" 6 और मैंने देखा
कि यह औरत उन मुक़द्दसीन के ख़ून से मस्त हो गई थी जिन्होंने ईसा की गवाही दी थी।
उसे देखकर मैं निहायत हैरान हुआ। 7 फ़रिश्ते ने मुझसे पूछा, "तू क्यों हैरान है? मैं तुझ पर औरत और उस हैवान
का भेद खोल दूँगा जिस पर औरत सवार है और जिसके सात सर और दस सींग हैं। 8 जिस हैवान को तूने देखा वह
पहले था, इस वक़्त नहीं है और दुबारा अथाह गढ़े में से निकलकर हलाकत की तरफ़ बढ़ेगा। ज़मीन के जिन बाशिंदों

के नाम दुनिया की तख़लीक़ से ही किताबे-हयात में दर्ज नहीं हैं वह हैवान को देखकर हैरतज़दा हो जाएंगे। क्योंकि
वह पहले था, इस वक़्त नहीं है लेकिन दुबारा आएगा।
9 यहाँ समझदार ज़हन की ज़रूरत है। सात सरों से मुराद सात पहाड़ हैं जिन पर यह औरत बैठी है। यह सात बादशाहों
की नुमाइंदगी भी करते हैं। 10 इनमें से पाँच गिर गए हैं, छटा मौजूद है और सातवाँ अभी आनेवाला है। लेकिन जब वह
आएगा तो उसे थोड़ी देर के लिए रहना है। 11 जो हैवान पहले था और इस वक़्त नहीं है वह आठवाँ बादशाह है, गो
वह सात बादशाहों में से भी एक है। वह हलाकत की तरफ़ बढ़ रहा है।
12 जो दस सींग तूने देखे वह दस बादशाह हैं जिन्हें अभी कोई बादशाही नहीं मिली। लेकिन उन्हें घंटे-भर के लिए
हैवान के साथ बादशाह का इख़्तियार मिलेगा। 13 यह एक हीं सोच रखकर अपनी ताक़त और इख़्तियार हैवान को दे
देंगे और लेले से जंग करेंगे, 14 लेकिन लेला अपने बुलाए गए, चुने हुए और वफ़ादार पैरोकारों के साथ उन पर ग़ालिब
आएगा, क्योंकि वह रब्बों का रब और बादशाहों का बादशाह है।"
15 फिर फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, "जिस पानी के पास तूने कसबी को बैठी देखा वह उम्मतें, हुजूम, क़ौमें और ज़बानें
है। 16 जो हैवान और दस सींग तूने देखे वह कसबी से नफ़रत करेंगे। वह उसे वीरान करके नंगा छोड़ देंगे और उसका
गोश्त खाकर उसे भस्म करेंगे। 17 क्योंकि अल्लाह ने उनके दिलों में यह डाल दिया है कि वह उसका मक़सद पूरा करें
और उस वक़्त तक हुकूमत करने का अपना इख़्तियार हैवान के सुपुर्द कर दें जब तक अल्लाह के फ़रमान तकमील
तक न पहुँच जाएँ।
18 जिस औरत को तूने देखा वह वही बड़ा शहर है जो ज़मीन के बादशाहों पर हुकूमत करता है।"

18

बाबल शहर की शिकस्त

1 इसके बाद मैंने एक और फ़रिश्ता देखा जो आसमान पर से उतर रहा था। उसे बहुत इख़्तियार हासिल था और
ज़मीन उसके जलाल से रौशन हो गई। 2 उसने ऊँची आवाज़ से पुकारकर कहा, "वह गिर गई है! हाँ, अज़ीम कसबी
बाबल गिर गई है! अब वह शयातीन का घर और हर बदरूह का बसेरा बन गई है, हर नापाक और घिनौने परिंदे का
बसेरा। 3 क्योंकि तमाम क़ौमों ने उस की हरामकारी और मस्ती की मै पी ली है। ज़मीन के बादशाहों ने उसके साथ
ज़िना किया और ज़मीन के सौदागर उस की बेलगाम ऐयाशी से अमीर हो गए हैं।" 4 फिर मैंने एक और आवाज़ सुनी।
उसने आसमान की तरफ़ से कहा,

"ऐ मेरी क़ौम, उसमें से निकल आ,
ताकि तुम उसके गुनाहों में शरीक न हो जाओ
और उस की बलाएँ तुम पर न आएँ।
5 क्योंकि उसके गुनाह आसमान तक पहुँच गए हैं,
और अल्लाह उनकी बदियों को याद करता है।
6 उसके साथ वही सुलूक करो
जो उसने तुम्हारे साथ किया है।
जो कुछ उसने किया है
उसका दुगना बदला उसे देना।
जो शराब उसने दूसरों को पिलाने के लिए तैयार की है
उसका दुगना बदला उसे दे देना।
7 उसे उतनी ही अज़ियत और ग़म पहुँचा दो
जितना उसने अपने आपको शानदार बनाया और ऐयाशी की।
क्योंकि अपने दिल में वह कहती है,
'मैं यहाँ अपने तख़्त पर रानी हूँ।
न मैं बेवा हूँ, न मैं कभी मातम करूँगी।'
8 इस वजह से एक दिन यह बलाएँ
यानी मौत, मातम और काल उस पर आन पड़ेंगी।
वह भस्म हो जाएगी,
क्योंकि उस की अदालत करनेवाला रब ख़ुदा क़वी है।"

9 और ज़मीन के जिन बादशाहों ने उसके साथ ज़िना और ऐयाशी की वह उसके जलने का धुआँ देखकर रो पड़ेंगे
और आहो-ज़ारी करेंगे। 10 वह उस की अज़ियत को देखकर ख़ौफ़ खाएँगे और दूर दूर खड़े होकर कहेंगे, "अफ़सोस!
तुझ पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम और ताक़तवर शहर बाबल! एक ही घंटे के अंदर अंदर अल्लाह की अदालत तुझ पर आ
गई है।"

11 ज़मीन के सौदागर भी उसे देखकर रो पड़ेंगे और आहो-ज़ारी करेंगे, क्योंकि कोई नहीं रहा होगा जो उनका माल
ख़रीदे : 12 उनका सोना, चाँदी, बेशक़ीमत जवाहर, मोती, बारीक कतान, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का कपड़ा,
रेशम, हर क़िस्म की ख़ुशबूदार लकड़ी, हाथीदाँत की हर चीज़ और क़ीमती लकड़ी, पीतल, लोहे और संगे-मरमर की
हर चीज़, 13 दारचीनी, मसाला, अगरबत्ती, मुर, बख़ूर, मै, ज़ैतून का तेल, बेहतरीन मैदा, गंदुम, गाय-बैल, भेड़ें, घोड़े,
रथ और ग़ुलाम यानी इनसान। 14 सौदागर उससे कहेंगे, "जो फल तू चाहती थी वह तुझसे दूर हो गया है। तेरी तमाम
दौलत और शानो-शौकत ग़ायब हो गई है और आइंदा कभी भी तेरे पास पाई नहीं जाएगी।" 15 जो सौदागर उसे यह
चीज़ें फ़रोख़्त करने से दौलतमंद हुए वह उस की अज़ियत देखकर ख़ौफ़ के मारे दूर दूर खड़े हो जाएंगे। वह रो रोकर
मातम करेंगे 16 और कहेंगे, "हाय! तुझ पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, ऐ ख़ातून जो पहले बारीक कतान, अरग़वानी
और क़िरमिज़ी रंग के कपड़े पहने फिरती थी और जो सोने, क़ीमती जवाहर और मोतियों से सजी हुई थी। 17 एक ही
घंटे के अंदर अंदर सारी दौलत तबाह हो गई है!"

हर बहरी जहाज़ का कप्तान, हर समुंदरी मुसाफ़िर, हर मल्लाह और वह तमाम लोग जो समुंदर पर सफ़र करने से
अपनी रोज़ी कमाते हैं वह सब दूर दूर खड़े हो जाएंगे। 18 उसके जलने का धुआँ देखकर वह कहेंगे, "क्या कभी कोई
इतना अज़ीम शहर था?" 19 वह अपने सरों पर ख़ाक डाल लेंगे और चिल्ला चिल्लाकर रोएँगे और आहो-ज़ारी करेंगे।
वह कहेंगे, "हाय! तुझ पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, जिसकी दौलत से तमाम बहरी जहाज़ों के मालिक अमीर हुए।
एक ही घंटे के अंदर अंदर वह वीरान हो गया है।"

20 ऐ आसमान, उसे देखकर ख़ुशी मना!
ऐ मुक़द्दसो, रसूलो और नबियो, ख़ुशी मनाओ!
क्योंकि अल्लाह ने तुम्हारी ख़ातिर उस की अदालत की है।

21 फिर एक ताक़तवर फ़रिश्ते ने बड़ी चक्की के पाट की मानिंद एक बड़े पत्थर को उठाकर समुंदर में फेंक दिया।
उसने कहा, "अज़ीम शहर बाबल को इतनी ही ज़बरदस्ती से पटक दिया जाएगा। बाद में उसे कहीं नहीं पाया जाएगा।
22 अब से न मौसीक़ारों की आवाज़ें तुझमें कभी सुनाई देंगी, न सरोद, बाँसरी या तुरम बजानेवालों की। अब से किसी
भी काम का कारीगर तुझमें पाया नहीं जाएगा। हाँ, चक्की की आवाज़ हमेशा के लिए बंद हो जाएगी। 23 अब से
चराग़ तुझे रौशन नहीं करेगा, दुलहन-दूल्हे की आवाज़ तुझमें सुनाई नहीं देगी। हाय, तेरे सौदागर दुनिया के बड़े बड़े
अफ़सर थे, और तेरी जादूगरी से तमाम क़ौमों को बहकाया गया।"

24 हाँ, बाबल में नबियों, मुक़द्दसीन और उन तमाम लोगों का ख़ून पाया गया है जो ज़मीन पर शहीद हो गए हैं।

19

1 इसके बाद मैंने आसमान पर एक बड़े हुजूम की-सी आवाज़ सुनी जिसने कहा, "अल्लाह की तमजीद हो! नजात,
जलाल और क़ुदरत हमारे ख़ुदा को हासिल है। 2 क्योंकि उस की अदालतें सच्ची और रास्त हैं। उसने उस बड़ी कसबी
को मुजरिम ठहराया है जिसने ज़मीन को अपनी ज़िनाकारी से बिगाड़ दिया। उसने उससे अपने ख़ादिमों की क़त्लो-ग़ारत
का बदला ले लिया है।" 3 और वह दुबारा बोल उठे, "अल्लाह की तमजीद हो! इस शहर का धुआँ अबद तक चढ़ता
रहता है।" 4 चौबीस बुज़ुर्गों और चार जानदारों ने गिरकर तख़्त पर बैठे अल्लाह को सिजदा किया। उन्होंने कहा,
"आमीन, अल्लाह की तमजीद हो।"

लेले की ज़ियाफ़त

5 फिर तख़्त की तरफ़ से एक आवाज़ सुनाई दी। उसने कहा, "ऐ उसके तमाम ख़ादिमो, हमारे ख़ुदा की तमजीद
करो। ऐ उसका ख़ौफ़ माननेवालो, ख़ाह बड़े हो या छोटे उस की सताइश करो।" 6 फिर मैंने एक बड़े हुजूम की-सी
आवाज़ सुनी, जो बड़ी आबशार के शोर और गरजते बादलों की कड़क की मानिंद थी। इन लोगों ने कहा, "अल्लाह
की तमजीद हो! क्योंकि हमारा रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा तख़्तनशीन हो गया है। 7 आओ, हम मसरूर हों, ख़ुशी मनाएँ
और उसे जलाल दें, क्योंकि लेले की शादी का वक़्त आ गया है। उस की दुलहन ने अपने आपको तैयार कर लिया है,
8 और उसे पहनने के लिए बारीक कतान का चमकता और पाक-साफ़ लिबास दे दिया गया।" (बारीक कतान से मुराद
मुक़द्दसीन के रास्त काम हैं।)

9 फिर फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, "लिख, मुबारक हैं वह जिन्हें लेले की शादी की ज़ियाफ़त के लिए दावत मिल गई
है।" उसने मज़ीद कहा, "यह अल्लाह के सच्चे अलफ़ाज़ हैं।"
10 इस पर मैं उसे सिजदा करने के लिए उसके पाँवों में गिर गया। लेकिन उसने मुझसे कहा, "ऐसा मत कर! मैं
भी तेरा और तेरे उन भाइयों का हमख़िदमत हूँ जो ईसा की गवाही देने पर क़ायम हैं। सिर्फ़ अल्लाह को सिजदा कर।
क्योंकि जो ईसा के बारे में गवाही देता है वह यह नबुव्वत की रूह में करता है।"

सफ़ेद घोड़े का सवार

11 फिर मैंने आसमान को खुला देखा। एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया जिसके सवार का नाम "वफ़ादार और सच्चा"
है, क्योंकि वह इनसाफ़ से अदालत और जंग करता है। 12 उस की आँखें भड़कते शोले की मानिंद हैं और उसके सर
पर बहुत-से ताज हैं। उस पर एक नाम लिखा है जिसे सिर्फ़ वही जानता है, कोई और उसे नहीं जानता। 13 वह एक
लिबास से मुलब्बस था जिसे ख़ून में डुबोया गया था। उसका नाम "अल्लाह का कलाम" है। 14 आसमान की फ़ौजें
उसके पीछे पीछे चल रही थीं। सब सफ़ेद घोड़ों पर सवार थे और बारीक कतान के चमकते और पाक-साफ़ कपड़े
पहने हुए थे। 15 उसके मुँह से एक तेज़ तलवार निकलती है जिससे वह क़ौमों को मार देगा। वह लोहे के शाही असा
से उन पर हुकूमत करेगा। हाँ, वह अंगूर का रस निकालने के हौज़ में उन्हें कुचल डालेगा। यह हौज़ क्या है? अल्लाह
क़ादिरे-मुतलक़ का सख़्त ग़ज़ब। 16 उसके लिबास और रान पर यह नाम लिखा है, "बादशाहों का बादशाह और रब्बों
का रब।"
17 फिर मैंने एक फ़रिश्ता सूरज पर खड़ा देखा। उसने ऊँची आवाज़ से पुकारकर उन तमाम परिंदों से जो मेरे सर
पर मँडला रहे थे कहा, "आओ, अल्लाह की बड़ी ज़ियाफ़त के लिए जमा हो जाओ। 18 फिर तुम बादशाहों, जरनैलों,
बड़े बड़े अफ़सरों, घोड़ों और उनके सवारों का गोश्त खाओगे, हाँ तमाम लोगों का गोश्त, ख़ाह आज़ाद हों या ग़ुलाम,
छोटे हों या बड़े।"
19 फिर मैंने हैवान और बादशाहों को उनकी फ़ौजों समेत देखा। वह घोड़े पर "अल्लाह का कलाम" नामी सवार
और उस की फ़ौज से जंग करने के लिए जमा हुए थे। 20 लेकिन हैवान को गिरिफ़्तार किया गया। उसके साथ उस झूटे
नबी को भी गिरिफ़्तार किया गया जिसने हैवान की ख़ातिर मोजिज़ाना निशान दिखाए थे। इन मोजिज़ों के वसीले से
उसने उनको फ़रेब दिया था जिन्हें हैवान का निशान मिल गया था और जो उसके मुजस्समे को सिजदा करते थे। दोनों
को जलती हुई गंधक की शोलाख़ेज़ झील में फेंका गया। 21 बाक़ी लोगों को उस तलवार से मार डाला गया जो घोड़े
पर सवार के मुँह से निकलती थी। और तमाम परिंदे लाशों का गोश्त खाकर सेर हो गए।

20

हज़ार साल का दौर

1 फिर मैंने एक फ़रिश्ता देखा जो आसमान से उतर रहा था। उसके हाथ में अथाह गढ़े की चाबी और एक भारी
ज़ंजीर थी। 2 उसने अज़दहे यानी क़दीम साँप को जो शैतान या इबलीस कहलाता है पकड़कर हज़ार साल के लिए बाँध
लिया। 3 उसने उसे अथाह गढ़े में फेंककर ताला लगा दिया और उस पर मुहर लगा दी ताकि वह हज़ार साल तक क़ौमों
को गुमराह न कर सके। उसके बाद ज़रूरी है कि उसे थोड़ी देर के लिए आज़ाद कर दिया जाए।
4 फिर मैंने तख़्त देखे जिन पर वह बैठे थे जिन्हें अदालत करने का इख़्तियार दिया गया था। और मैंने उनकी रूहें
देखीं जिन्हें ईसा के बारे में गवाही देने और जिनका अल्लाह का कलाम पेश करने की वजह से सर क़लम किया गया
था। उन्होंने हैवान या उसके मुजस्समे को सिजदा नहीं किया था, न उसका निशान अपने माथों या हाथों पर लगवाया
था। अब यह लोग ज़िंदा हुए और हज़ार साल तक मसीह के साथ हुकूमत करते रहे। 5 (बाक़ी मुरदे हज़ार साल के
इख़्तिताम पर ही ज़िंदा हुए)। यह पहली क़ियामत है। 6 मुबारक और मुक़द्दस हैं वह जो इस पहली क़ियामत में शरीक
हैं। इन पर दूसरी मौत का कोई इख़्तियार नहीं है बल्कि यह अल्लाह और मसीह के इमाम होकर हज़ार साल तक उसके
साथ हुकूमत करेंगे।

इबलीस की शिकस्त

7 हज़ार साल गुज़र जाने के बाद इबलीस को उस की क़ैद से आज़ाद कर दिया जाएगा। 8 तब वह निकलकर ज़मीन
के चारों कोनों में मौजूद क़ौमों बनाम जूज और माजूज को बहकाएगा और उन्हें जंग करने के लिए जमा करेगा।
लड़नेवालों की तादाद साहिल पर की रेत के ज़र्रों जैसी बेशुमार होगी। 9 उन्होंने ज़मीन पर फैलकर मुक़द्दसीन की
लशकरगाह को घेर लिया, यानी उस शहर को जिसे अल्लाह प्यार करता है। लेकिन आग ने आसमान से नाज़िल होकर
उन्हें हड़प कर लिया। 10 और इबलीस को जिसने उनको फ़रेब दिया था जलती हुई गंधक की झील में फेंका गया,

वहाँ जहाँ हैवान और झूटे नबी को पहले फेंका गया था। उस जगह पर उन्हें दिन-रात बल्कि अबद तक अज़ाब सहना पड़ेगा।

आख़िरी अदालत

11 फिर मैंने एक बड़ा सफ़ेद तख़्त देखा और उसे जो उस पर बैठा है। आसमानो-ज़मीन उसके हुज़ूर से भागकर
ग़ायब हो गए। 12 और मैंने तमाम मुरदों को तख़्त के सामने खड़े देखा, ख़ाह वह छोटे थे या बड़े। किताबें खोली गईं।
फिर एक और किताब को खोल दिया गया जो किताबे-हयात थी। मुरदों का उसके मुताबिक़ फ़ैसला किया गया जो कुछ
उन्होंने किया था और जो किताबों में दर्ज था। 13 समुंदर ने उन तमाम मुरदों को पेश कर दिया जो उसमें थे, और मौत
और पाताल ने भी उन मुरदों को पेश कर दिया जो उनमें थे। चुनाँचे हर शख़्स का उसके मुताबिक़ फ़ैसला किया गया
जो उसने किया था। 14 फिर मौत और पाताल को जलती हुई झील में फेंका गया। यह झील दूसरी मौत है। 15 जिस
किसी का नाम किताबे-हयात में दर्ज नहीं था उसे जलती हुई झील में फेंका गया।

21

नया आसमान और नई ज़मीन

1 फिर मैंने एक नया आसमान और एक नई ज़मीन देखी। क्योंकि पहला आसमान और पहली ज़मीन ख़त्म हो गए
थे और समुंदर भी नेस्त था। 2 मैंने नए यरूशलम को भी देखा। यह मुक़द्दस शहर दुलहन की सूरत में अल्लाह के पास
से आसमान पर से उतर रहा था। और यह दुलहन अपने दूल्हे के लिए तैयार और सजी हुई थी। 3 मैंने एक आवाज़ सुनी
जिसने तख़्त पर से कहा, "अब अल्लाह की सुकूनतगाह इनसानों के दरमियान है। वह उनके साथ सुकूनत करेगा और
वह उस की क़ौम होंगे। अल्लाह ख़ुद उनका ख़ुदा होगा। 4 वह उनकी आँखों से तमाम आँसू पोंछ डालेगा। अब से न
मौत होगी न मातम, न रोना होगा न दर्द, क्योंकि जो भी पहले था वह जाता रहा है।"
5 जो तख़्त पर बैठा था उसने कहा, "मैं सब कुछ नए सिरे से बना रहा हूँ।" उसने यह भी कहा, "यह लिख दे,
क्योंकि यह अलफ़ाज़ क़ाबिले-एतमाद और सच्चे हैं।" 6 फिर उसने कहा, "काम मुकम्मल हो गया है! मैं अलिफ़
और ये, अव्वल और आख़िर हूँ। जो प्यासा है उसे मैं ज़िंदगी के चश्मे से मुफ़्त पानी पिलाऊँगा। 7 जो ग़ालिब आएगा
वह यह सब कुछ विरासत में पाएगा। मैं उसका ख़ुदा हूँगा और वह मेरा फ़रज़ंद होगा। 8 लेकिन बुज़दिलों, ग़ैरईमानदारों,
घिनौनों, क़ातिलों, ज़िनाकारों, जादूगरों, बुतपरस्तों और तमाम झूटे लोगों का अंजाम जलती हुई गंधक की शोलाख़ेज़
झील है। यह दूसरी मौत है।"

नया यरूशलम

9 जिन सात फ़रिश्तों के पास सात आख़िरी बलाओं से भरे प्याले थे उनमें से एक ने मेरे पास आकर कहा, "आ, मैं
तुझे दुलहन यानी लेले की बीवी दिखाऊँ।" 10 वह मुझे रूह में उठाकर एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया। वहाँ से
उसने मुझे मुक़द्दस शहर यरूशलम दिखाया जो अल्लाह की तरफ़ से आसमान पर से उतर रहा था। 11 उसे अल्लाह का
जलाल हासिल था और वह अनमोल जौहर बल्कि बिल्लौर जैसे साफ़-शफ़्फ़ाफ़ यशब की तरह चमक रहा था। 12 उस
की बड़ी और ऊँची फ़सील में बारह दरवाज़े थे, और हर दरवाज़े पर एक फ़रिश्ता खड़ा था। दरवाज़ों पर इसराईल के
बारह क़बीलों के नाम लिखे थे। 13 तीन दरवाज़े मशरिक़ की तरफ़ थे, तीन शिमाल की तरफ़, तीन जुनूब की तरफ़
और तीन मग़रिब की तरफ़। 14 शहर की फ़सील की बारह बुनियादें थीं जिन पर लेले के बारह रसूलों के नाम लिखे
थे। 15 जिस फ़रिश्ते ने मुझसे बात की थी उसके पास सोने का गज़ था ताकि शहर, उसके दरवाज़ों और उस की फ़सील
की पैमाइश करे। 16 शहर चौकोर था। उस की लंबाई उतनी ही थी जितनी उस की चौड़ाई। फ़रिश्ते ने गज़ से शहर
की पैमाइश की तो पता चला कि उस की लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई 2,400 किलोमीटर है। 17 जब उसने फ़सील
की पैमाइश की तो चौड़ाई 60 मीटर थी यानी उस पैमाने के हिसाब से जो वह इस्तेमाल कर रहा था। 18 फ़सील यशब
की थी जबकि शहर ख़ालिस सोने का था, यानी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ शीशे जैसे सोने का। 19 शहर की बुनियादें हर क़िस्म के
क़ीमती जवाहर से सजी हुई थीं : पहली यशब * से, दूसरी संगे-लाजवर्द † से, तीसरी संगे-यमानी ‡ से, चौथी ज़ुमुर्रद
से, 20 पाँचवीं संगे-सुलेमानी § से, छटी अक़ीक़े-अहमर * से, सातवीं ज़बरजद † से, आठवीं आबे-बहर ‡ से, नव्वीं
पुखराज § से, दसवीं अक़ीक़े-सब्ज़ * से, ग्यारहवीं नीले रंग के ज़रक़ोन † से और बारहवीं याक़ूते-अरग़वानी ‡ से।

* **21:19** jasper † **21:19** lapis lazuli ‡ **21:19** chalcedony § **21:20** sardonyx। यानी संगे-सुलेमानी की एक क़िस्म जिसमें नारंजी और सफ़ेद अक़ीक़ के परत यके बाद दीगरे होते हैं। * **21:20** carnelian † **21:20** peridot ‡ **21:20** beryl § **21:20** topaz * **21:20** chrysoprase † **21:20** यूनानी लफ़्ज़ कुछ मुबहम-सा है। ‡ **21:20** amethyst

21 बारह दरवाज़े बारह मोती थे और हर दरवाज़ा एक मोती का था। शहर की बड़ी सड़क ख़ालिस सोने की थी, यानी
साफ़-शफ़्फ़ाफ़ शीशे जैसे सोने की।
22 मैंने शहर में अल्लाह का घर न देखा, क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा और लेला ही उसका मक़दिस हैं।
23 शहर को सूरज या चाँद की ज़रूरत नहीं जो उसे रौशन करे, क्योंकि अल्लाह का जलाल उसे रौशन कर देता है
और लेला उसका चराग़ है। 24 क़ौमें उस की रौशनी में चलेंगी, और ज़मीन के बादशाह अपनी शानो-शौकत उसमें
लाएँगे। 25 उसके दरवाज़े किसी भी दिन बंद नहीं होंगे क्योंकि वहाँ कभी भी रात का वक़्त नहीं आएगा। 26 क़ौमों
की शानो-शौकत उसमें लाई जाएगी। 27 कोई नापाक चीज़ उसमें दाख़िल नहीं होगी, न वह जो घिनौनी हरकतें करता
और झूट बोलता है। सिर्फ़ वह दाख़िल होंगे जिनके नाम लेले की किताबे-हयात में दर्ज हैं।

22

मुकाशफ़ा

1 फिर फ़रिश्ते ने मुझे ज़िंदगी के पानी का दरिया दिखाया। वह बिल्लौर जैसा साफ़-शफ़्फ़ाफ़ था और अल्लाह और
लेले के तख़्त से निकल कर 2 शहर की बड़ी सड़क के बीच में से बह रहा था। दरिया के दोनों किनारों पर ज़िंदगी का
दरख़्त था। यह दरख़्त साल में बारह दफ़ा फल लाता था, हर महीने में एक बार। और दरख़्त के पत्ते क़ौमों की शफ़ा
के लिए इस्तेमाल होते थे। 3 वहाँ कोई भी मलऊन चीज़ नहीं होगी।
अल्लाह और लेले का तख़्त शहर में होंगे और उसके ख़ादिम उस की ख़िदमत करेंगे। 4 वह उसका चेहरा देखेंगे,
और उसका नाम उनके माथों पर होगा। 5 वहाँ रात नहीं होगी और उन्हें किसी चराग़ या सूरज की रौशनी की ज़रूरत
नहीं होगी, क्योंकि रब ख़ुदा उन्हें रौशनी देगा। वहाँ वह अबद तक हुकूमत करेंगे।

ईसा की आमद

6 फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, "यह बातें क़ाबिले-एतमाद और सच्ची हैं। रब ने जो नबियों की रूहों का ख़ुदा है अपने
फ़रिश्ते को भेज दिया ताकि अपने ख़ादिमों को वह कुछ दिखाए जो जल्द होनेवाला है।"
7 ईसा फ़रमाता है, "देखो, मैं जल्द आऊँगा। मुबारक है वह जो इस किताब की पेशगोइयों के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारता है।"
8 मैं यूहन्ना ने ख़ुद यह कुछ सुना और देखा है। और उसे सुनने और देखने के बाद मैं उस फ़रिश्ते के पाँवों में गिर
गया जिसने मुझे यह दिखाया था और उसे सिजदा करना चाहता था। 9 लेकिन उसने मुझसे कहा, "ऐसा मत कर! मैं भी
उसी का ख़ादिम हूँ जिसका तू, तेरे भाई नबी और किताब की पैरवी करनेवाले हैं। ख़ुदा ही को सिजदा कर!" 10 फिर
उसने मझे बताया, "इस किताब की पेशगोइयों पर मुहर मत लगाना, क्योंकि वक़्त क़रीब आ गया है। 11 जो ग़लत
काम कर रहा है वह ग़लत काम करता रहे। जो घिनौना है वह घिनौना होता जाए। जो रास्तबाज़ है वह रास्तबाज़ी करता
रहे। जो मुक़द्दस है वह मुक़द्दस होता जाए।"
12 ईसा फ़रमाता है, "देखो, मैं जल्द आने को हूँ। मैं अज्र लेकर आऊँगा और मैं हर एक को उसके कामों के
मुवाफ़िक़ अज्र दूँगा। 13 मैं अलिफ़ और ये, अव्वल और आख़िर, इब्तिदा और इंतहा हूँ।"
14 मुबारक हैं वह जो अपने लिबास को धोते हैं। क्योंकि वह ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने और दरवाज़ों के
ज़रीए शहर में दाख़िल होने का हक़ रखते हैं। 15 लेकिन बाक़ी सब शहर के बाहर रहेंगे। कुत्ते, ज़िनाकार, क़ातिल,
बुतपरस्त और तमाम वह लोग जो झूट को प्यार करते और उस पर अमल करते हैं सबके सब बाहर रहेंगे।
16 "मैं ईसा ने अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे पास भेजा है ताकि वह जमातों के लिए तुम्हें इन बातों की गवाही दे। मैं
दाऊद की जड़ और औलाद हूँ, मैं ही चमकता हुआ सुबह का सितारा हूँ।"
17 रूह और दुलहन कहती हैं, "आ!"
हर सुननेवाला भी यही कहे, "आ!"
जो प्यासा हो वह आए और जो चाहे वह ज़िंदगी का पानी मुफ़्त ले ले।

ख़ुलासा

18 मैं, यूहन्ना हर एक को जो इस किताब की पेशगोइयाँ सुनता है आगाह करता हूँ, अगर कोई इस किताब में किसी
भी बात का इज़ाफ़ा करे तो अल्लाह उस की ज़िंदगी में उन बलाओं का इज़ाफ़ा करेगा जो इस किताब में बयान की गई
हैं। 19 और अगर कोई नबुव्वत की इस किताब से बातें निकाले तो अल्लाह उससे किताब में मज़कूर ज़िंदगी के दरख़्त
के फल से खाने और मुक़द्दस शहर में रहने का हक़ छीन लेगा।
20 जो इन बातों की गवाही देता है वह फ़रमाता है, "जी हाँ! मैं जल्द ही आने को हूँ।" "आमीन! ऐ ख़ुदावंद ईसा
आ!"

21 ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल सबके साथ रहे।

ज़बूर
पहली किताब : 1-41

1

दो राहें
1 मुबारक है वह जो न बेदीनों के मशवरे पर चलता, न गुनाहगारों की राह पर क़दम रखता, और न तानाज़नों के
साथ बैठता है
2 बल्कि रब की शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता और दिन-रात उसी पर ग़ौरो-ख़ौज़ करता रहता है।
3 वह नहरों के किनारे पर लगे दरख़्त की मानिंद है। वक़्त पर वह फल लाता, और उसके पत्ते नहीं मुरझाते। जो
कुछ भी करे उसमें वह कामयाब है।

4 बेदीनों का यह हाल नहीं होता। वह भूसे की मानिंद हैं जिसे हवा उड़ा ले जाती है।
5 इसलिए बेदीन अदालत में क़ायम नहीं रहेंगे, और गुनाहगार का रास्तबाज़ों की मजलिस में मक़ाम नहीं होगा।
6 क्योंकि रब रास्तबाज़ों की राह की पहरादारी करता है जबकि बेदीनों की राह तबाह हो जाएगी।

2

अल्लाह का मसीह
1 अक़वाम क्यों तैश में आ गई हैं? उम्मतें क्यों बेकार साज़िशें कर रही हैं?
2 दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए, हुक्मरान रब और उसके मसीह के ख़िलाफ़ जमा हो गए हैं।
3 वह कहते हैं, "आओ, हम उनकी ज़ंजीरों को तोड़कर आज़ाद हो जाएँ, उनके रस्सों को दूर तक फेंक दें।"
4 लेकिन जो आसमान पर तख़्तनशीन है वह हँसता है, रब उनका मज़ाक़ उड़ाता है।
5 फिर वह ग़ुस्से से उन्हें डाँटता, अपना शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें डराता है।
6 वह फ़रमाता है, "मैंने ख़ुद अपने बादशाह को अपने मुक़द्दस पहाड़ सिय्यून पर मुक़र्रर किया है!"

7 आओ, मैं रब का फ़रमान सुनाऊँ। उसने मुझसे कहा, "तू मेरा बेटा है, आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।
8 मुझसे माँग तो मैं तुझे मीरास में तमाम अक़वाम अता करूँगा, दुनिया की इंतहा तक सब कुछ बख़्श दूँगा।
9 तू उन्हें लोहे के शाही असा से पाश पाश करेगा, उन्हें मिट्टी के बरतनों की तरह चकनाचूर करेगा।"
10 चुनाँचे ऐ बादशाहो, समझ से काम लो! ऐ दुनिया के हुक्मरानो, तरबियत क़बूल करो!
11 ख़ौफ़ करते हुए रब की ख़िदमत करो, लरज़ते हुए ख़ुशी मनाओ।
12 बेटे को बोसा दो, ऐसा न हो कि वह ग़ुस्से हो जाए और तुम रास्ते में ही हलाक हो जाओ। क्योंकि वह एकदम
तैश में आ जाता है। मुबारक हैं वह सब जो उसमें पनाह लेते हैं।

3

सुबह को मदद के लिए दुआ
1 दाऊद का ज़बूर। उस वक़्त जब उसे अपने बेटे अबीसलूम से भागना पड़ा।
ऐ रब, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, कितने लोग मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं!
2 मेरे बारे में बहुतेरे कह रहे हैं, "अल्लाह इसे छुटकारा नहीं देगा।" (सिलाह) *

3 लेकिन तू ऐ रब, चारों तरफ़ मेरी हिफ़ाज़त करनेवाली ढाल है। तू मेरी इज़्ज़त है जो मेरे सर को उठाए रखता है।
4 मैं बुलंद आवाज़ से रब को पुकारता हूँ, और वह अपने मुक़द्दस पहाड़ से मेरी सुनता है। (सिलाह)
5 मैं आराम से लेटकर सो गया, फिर जाग उठा, क्योंकि रब ख़ुद मुझे सँभाले रखता है।
6 उन हज़ारों से मैं नहीं डरता जो मुझे घेरे रखते हैं।

* **3:2** सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरीन में इसके मतलब के बारे में इत्तफ़ाक़े-राय नहीं होती।

7 ऐ रब, उठ! ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे रिहा कर! क्योंकि तूने मेरे तमाम दुश्मनों के मुँह पर थप्पड़ मारा, तूने बेदीनों के दाँतों को तोड़ दिया है।
8 रब के पास नजात है। तेरी बरकत तेरी क़ौम पर आए। (सिलाह)

4

शाम को मदद के लिए दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ऐ मेरी रास्ती के ख़ुदा, मेरी सुन जब मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ तू जो मुसीबत में मेरी मख़लसी रहा है मुझ पर मेहरबानी करके मेरी इल्तिजा सुन!

2 ऐ आदमज़ादो, मेरी इज़्ज़त कब तक ख़ाक में मिलाई जाती रहेगी? तुम कब तक बातिल चीज़ों से लिपटे रहोगे, कब तक झूट की तलाश में रहोगे? (सिलाह)
3 जान लो कि रब ने ईमानदार को अपने लिए अलग कर रखा है। रब मेरी सुनेगा जब मैं उसे पुकारूँगा।
4 ग़ुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। अपने बिस्तर पर लेटकर मामले पर सोच-बिचार करो, लेकिन दिल में, ख़ामोशी से। (सिलाह)
5 रास्ती की क़ुरबानियाँ पेश करो, और रब पर भरोसा रखो।
6 बहुतेरे शक कर रहे हैं, "कौन हमारे हालात ठीक करेगा?" ऐ रब, अपने चेहरे का नूर हम पर चमका!

7 तूने मेरे दिल को ख़ुशी से भर दिया है, ऐसी ख़ुशी से जो उनके पास भी नहीं होती जिनके पास कसरत का अनाज और अंगूर है।
8 मैं आराम से लेटकर सो जाता हूँ, क्योंकि तू ही ऐ रब मुझे हिफ़ाज़त से बसने देता है।

5

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। इसे बाँसरी के साथ गाना है।

ऐ रब, मेरी बातें सुन, मेरी आहों पर ध्यान दे!
2 ऐ मेरे बादशाह, मेरे ख़ुदा, मदद के लिए मेरी चीख़ें सुन, क्योंकि मैं तुझी से दुआ करता हूँ।
3 ऐ रब, सुबह को तू मेरी आवाज़ सुनता है, सुबह को मैं तुझे सब कुछ तरतीब से पेश करके जवाब का इंतज़ार करने लगता हूँ।

4 क्योंकि तू ऐसा ख़ुदा नहीं है जो बेदीनी से ख़ुश हो। जो बुरा है वह तेरे हुज़ूर नहीं ठहर सकता।
5 मग़रूर तेरे हुज़ूर खड़े नहीं हो सकते, बदकार से तू नफ़रत करता है।
6 झूट बोलनेवालों को तू तबाह करता, ख़ूनख़ार और धोकेबाज़ से रब घिन खाता है।

7 लेकिन मुझ पर तूने बड़ी मेहरबानी की है, इसलिए मैं तेरे घर में दाख़िल हो सकता, मैं तेरा ख़ौफ़ मानकर तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह के सामने सिजदा करता हूँ।
8 ऐ रब, अपनी रास्त राह पर मेरी राहनुमाई कर ताकि मेरे दुश्मन मुझ पर ग़ालिब न आएँ। अपनी राह को मेरे आगे हमवार कर।

9 क्योंकि उनके मुँह से एक भी क़ाबिले-एतमाद बात नहीं निकलती। उनका दिल तबाही से भरा रहता, उनका गला खुली क़ब्र है, और उनकी ज़बान चिकनी-चुपड़ी बातें उगलती रहती है।
10 ऐ रब, उन्हें उनके ग़लत काम का अज्र दे। उनकी साज़िशें उनकी अपनी तबाही का बाइस बनें। उन्हें उनके मुतअद्दिद गुनाहों के बाइस निकालकर मुंतशिर कर दे, क्योंकि वह तुझसे सरकश हो गए हैं।

11 लेकिन जो तुझमें पनाह लेते हैं वह सब ख़ुश हों, वह अबद तक शादियाना बजाएँ, क्योंकि तू उन्हें महफ़ूज़ रखता है। तेरे नाम को प्यार करनेवाले तेरा जशन मनाएँ।

12 क्योंकि तू ऐ रब, रास्तबाज़ को बरकत देता है, तू अपनी मेहरबानी की ढाल से उस की चारों तरफ़ हिफ़ाज़त करता है।

6

मुसीबत में दुआ (तौबा का पहला ज़बूर)

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
ऐ रब, ग़ुस्से में मुझे सज़ा न दे, तैश में मुझे तंबीह न कर।
2 ऐ रब, मुझ पर रहम कर, क्योंकि मैं निढाल हूँ। ऐ रब, मुझे शफ़ा दे, क्योंकि मेरे आज़ा दहशतज़दा हैं।
3 मेरी जान निहायत ख़ौफ़ज़दा है। ऐ रब, तू कब तक देर करेगा?
4 ऐ रब, वापस आकर मेरी जान को बचा। अपनी शफ़क़त की ख़ातिर मुझे छुटकारा दे।
5 क्योंकि मुरदा तुझे याद नहीं करता। पाताल में कौन तेरी सताइश करेगा?

6 मैं कराहते कराहते थक गया हूँ। पूरी रात रोने से बिस्तर भीग गया है, मेरे आँसुओं से पलंग गल गया है।
7 ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरे मुख़ालिफ़ों के हमलों से वह ज़ाया होती जा रही हैं।
8 ऐ बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ, क्योंकि रब ने मेरी आहो-बुका सुनी है।
9 रब ने मेरी इल्तिजाओं को सुन लिया है, मेरी दुआ रब को क़बूल है।
10 मेरे तमाम दुश्मनों की रुसवाई हो जाएगी, और वह सख़्त घबरा जाएंगे। वह मुड़कर अचानक ही शरमिंदा हो जाएंगे।

7

इनसाफ़ के लिए दुआ

1 दाऊद का वह मातमी गीत जो उसने कूश बिनयमीनी की बातों पर रब की तमजीद में गाया।
ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। मुझे उन सबसे बचाकर छुटकारा दे जो मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं,
2 वरना वह शेरबबर की तरह मुझे फाड़कर टुकड़े टुकड़े कर देंगे, और बचानेवाला कोई नहीं होगा।

3 ऐ रब मेरे ख़ुदा, अगर मुझसे यह कुछ सरज़द हुआ और मेरे हाथ क़ुसूरवार हों,
4 अगर मैंने उससे बुरा सुलूक किया जिसका मेरे साथ झगड़ा नहीं था या अपने दुश्मन को ख़ाहमख़ाह लूट लिया हो
5 तो फिर मेरा दुश्मन मेरे पीछे पड़कर मुझे पकड़ ले। वह मेरी जान को मिट्टी में कुचल दे, मेरी इज़्ज़त को ख़ाक में मिलाए। (सिलाह)

6 ऐ रब, उठ और अपना ग़ज़ब दिखा! मेरे दुश्मनों के तैश के ख़िलाफ़ खड़ा हो जा। मेरी मदद करने के लिए जाग उठ! तूने ख़ुद अदालत का हुक्म दिया है।
7 अक़वाम तेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएँ जब तू उनके ऊपर बुलंदियों पर तख़्तनशीन हो जाए।
8 रब अक़वाम की अदालत करता है। ऐ रब, मेरी रास्तबाज़ी और बेगुनाही का लिहाज़ करके मेरा इनसाफ़ कर।
9 ऐ रास्त ख़ुदा, जो दिल की गहराइयों को तह तक जाँच लेता है, बेदीनों की शरारतें ख़त्म कर और रास्तबाज़ को क़ायम रख।

10 अल्लाह मेरी ढाल है। जो दिल से सीधी राह पर चलते हैं उन्हें वह रिहाई देता है।
11 अल्लाह आदिल मुंसिफ़ है, ऐसा ख़ुदा जो रोज़ाना लोगों की सरज़निश करता है।

12 यक़ीनन इस वक़्त भी दुश्मन अपनी तलवार को तेज़ कर रहा, अपनी कमान को तानकर निशाना बाँध रहा है।
13 लेकिन जो मोहलक हथियार और जलते हुए तीर उसने तैयार कर रखे हैं उनकी ज़द में वह ख़ुद ही आ जाएगा।
14 देख, बुराई का बीज उसमें उग आया है। अब वह शरारत से हामिला होकर फिरता और झूट के बच्चे जन्म देता है।
15 लेकिन जो गढ़ा उसने दूसरों को फँसाने के लिए खोद खोदकर तैयार किया उसमें ख़ुद गिर पड़ा है।
16 वह ख़ुद अपनी शरारत की ज़द में आएगा, उसका ज़ुल्म उसके अपने सर पर नाज़िल होगा।

17 मैं रब की सताइश करूँगा, क्योंकि वह रास्त है। मैं रब तआला के नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।

8

मख़लूक़ात का ताज

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।
ऐ रब हमारे आक़ा, तेरा नाम पूरी दुनिया में कितना शानदार है! तूने आसमान पर ही अपना जलाल ज़ाहिर कर दिया है।
2 अपने मुख़ालिफ़ों के जवाब में तूने छोटे बच्चों और शीरख़ारों की ज़बान को तैयार किया है ताकि वह तेरी क़ुव्वत से दुश्मन और कीनापरवर को ख़त्म करें।

3 जब मैं तेरे आसमान का मुलाहज़ा करता हूँ जो तेरी उँगलियों का काम है, चाँद और सितारों पर ग़ौर करता हूँ जिनको तूने अपनी अपनी जगह पर क़ायम किया
4 तो इनसान कौन है कि तू उसे याद करे या आदमज़ाद कि तू उसका ख़याल रखे?
5 तूने उसे फ़रिश्तों से कुछ ही कम बनाया, * तूने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहनाया।
6 तूने उसे अपने हाथों के कामों पर मुक़र्रर किया, सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया,
7 ख़ाह भेड़-बकरियाँ हों ख़ाह गाय-बैल, जंगली जानवर,
8 परिंदे, मछलियाँ या समुंदरी राहों पर चलनेवाले बाक़ी तमाम जानवर।

9 ऐ रब हमारे आक़ा, पूरी दुनिया में तेरा नाम कितना शानदार है!

9

अल्लाह की क़ुदरत और इनसाफ़

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : अलामूत-लब्बीन।
ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, तेरे तमाम मोजिज़ात का बयान करूँगा।
2 मैं शादमान होकर तेरी ख़ुशी मनाऊँगा। ऐ अल्लाह तआला, मैं तेरे नाम की तमजीद में गीत गाऊँगा।
3 जब मेरे दुश्मन पीछे हट जाएंगे तो वह ठोकर खाकर तेरे हुज़ूर तबाह हो जाएंगे।
4 क्योंकि तूने मेरा इनसाफ़ किया है, तू तख़्त पर बैठकर रास्त मुंसिफ़ साबित हुआ है।
5 तूने अक़वाम को मलामत करके बेदीनों को हलाक कर दिया, उनका नामो-निशान हमेशा के लिए मिटा दिया है।
6 दुश्मन तबाह हो गया, अबद तक मलबे का ढेर बन गया है। तूने शहरों को जड़ से उखाड़ दिया है, और उनकी याद तक बाक़ी नहीं रहेगी।

7 लेकिन रब हमेशा तक तख़्तनशीन रहेगा, और उसने अपने तख़्त को अदालत करने के लिए खड़ा किया है।
8 वह रास्ती से दुनिया की अदालत करेगा, इनसाफ़ से उम्मतों का फ़ैसला करेगा।
9 रब मज़लूमों की पनाहगाह है, एक क़िला जिसमें वह मुसीबत के वक़्त महफ़ूज़ रहते हैं।

10 ऐ रब, जो तेरा नाम जानते वह तुझ पर भरोसा रखते हैं। क्योंकि जो तेरे तालिब हैं उन्हें तूने कभी तर्क नहीं किया।
11 रब की तमजीद में गीत गाओ जो सिय्यून पहाड़ पर तख़्तनशीन है, उम्मतों में वह कुछ सुनाओ जो उसने किया है।
12 क्योंकि जो मक़तूलों का इंतक़ाम लेता है वह मुसीबतज़दों की चीख़ें नज़रंदाज़ नहीं करता।

13 ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मेरी उस तकलीफ़ पर ग़ौर कर जो नफ़रत करनेवाले मुझे पहुँचा रहे हैं। मुझे मौत के दरवाज़ों में से निकालकर उठा ले
14 ताकि मैं सिय्यून बेटी के दरवाज़ों में तेरी सताइश करके वह कुछ सुनाऊँ जो तूने मेरे लिए किया है, ताकि मैं तेरी नजात की ख़ुशी मनाऊँ।

* **8:5** एक और मुमकिना तरजुमा : तूने उसे थोड़ी देर के लिए फ़रिश्तों से कम कर दिया (देखिए इबरानियों 2:7,9)।

15 अक़वाम उस गढ़े में ख़ुद गिर गई हैं जो उन्होंने दूसरों को पकड़ने के लिए खोदा था। उनके अपने पाँव उस जाल में फँस गए हैं जो उन्होंने दूसरों को फँसाने के लिए बिछा दिया था।
16 रब ने इनसाफ़ करके अपना इज़हार किया तो बेदीन अपने हाथ के फंदे में उलझ गया। (हिग्गायून का तर्ज़। सिलाह)
17 बेदीन पाताल में उतरेंगे, जो उम्मतें अल्लाह को भूल गई हैं वह सब वहाँ जाएँगी।
18 क्योंकि वह ज़रूरतमंदों को हमेशा तक नहीं भूलेगा, मुसीबतज़दों की उम्मीद अबद तक जाती नहीं रहेगी।

19 ऐ रब, उठ खड़ा हो ताकि इनसान ग़ालिब न आए। बख़्श दे कि तेरे हुज़ूर अक़वाम की अदालत की जाए।
20 ऐ रब, उन्हें दहशतज़दा कर ताकि अक़वाम जान लें कि इनसान ही हैं। (सिलाह)

10

इनसाफ़ के लिए दुआ

1 ऐ रब, तू इतना दूर क्यों खड़ा है? मुसीबत के वक़्त तू अपने आपको पोशीदा क्यों रखता है?

2 बेदीन तकब्बुर से मुसीबतज़दों के पीछे लग गए हैं, और अब बेचारे उनके जालों में उलझने लगे हैं।
3 क्योंकि बेदीन अपनी दिली आरज़ुओं पर शेख़ी मारता है, और नाजायज़ नफ़ा कमानेवाला लानत करके रब को
हक़ीर जानता है।
4 बेदीन ग़ुरूर से फूलकर कहता है, “अल्लाह मुझसे जवाबतलबी नहीं करेगा।” उसके तमाम ख़यालात इस बात
पर मबनी हैं कि कोई ख़ुदा नहीं है।
5 जो कुछ भी करे उसमें वह कामयाब है। तेरी अदालतें उसे बुलंदियों में कहीं दूर लगती हैं जबकि वह अपने तमाम
मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़ फुँकारता है।
6 दिल में वह सोचता है, “मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा, नसल-दर-नसल मुसीबत के पंजों से बचा रहूँगा।”
7 उसका मुँह लानतों, फ़रेब और ज़ुल्म से भरा रहता, उस की ज़बान नुक़सान और आफ़त पहुँचाने के लिए तैयार
रहती है।
8 वह आबादियों के क़रीब ताक में बैठकर चुपके से बेगुनाहों को मार डालता है, उस की आँखें बदक़िस्मतों की
घात में रहती हैं।
9 जंगल में बैठे शेरबबर की तरह ताक में रहकर वह मुसीबतज़दा पर हमला करने का मौक़ा ढूँडता है। जब उसे
पकड़ ले तो उसे अपने जाल में घसीटकर ले जाता है।
10 उसके शिकार पाश पाश होकर झुक जाते हैं, बेचारे उस की ज़बरदस्त ताक़त की ज़द में आकर गिर जाते हैं।
11 तब वह दिल में कहता है, “अल्लाह भूल गया है, उसने अपना चेहरा छुपा लिया है, उसे यह कभी नज़र नहीं
आएगा।”

12 ऐ रब, उठ! ऐ अल्लाह, अपना हाथ उठाकर नाचारों की मदद कर और उन्हें न भूल।
13 बेदीन अल्लाह की तहक़ीर क्यों करे, वह दिल में क्यों कहे, “अल्लाह मुझसे जवाब तलब नहीं करेगा”?
14 ऐ अल्लाह, हक़ीक़त में तू यह सब कुछ देखता है। तू हमारी तकलीफ़ और परेशानी पर ध्यान देकर मुनासिब
जवाब देगा। नाचार अपना मामला तुझ पर छोड़ देता है, क्योंकि तू यतीमों का मददगार है।
15 शरीर और बेदीन आदमी का बाज़ू तोड़ दे! उससे उस की शरारतों की जवाबतलबी कर ताकि उसका पूरा असर
मिट जाए।

16 रब अबद तक बादशाह है। उसके मुल्क से दीगर अक़वाम ग़ायब हो गई हैं।
17 ऐ रब, तूने नाचारों की आरज़ू सुन ली है। तू उनके दिलों को मज़बूत करेगा और उन पर ध्यान देकर
18 यतीमों और मज़लूमों का इनसाफ़ करेगा ताकि आइंदा कोई भी इनसान मुल्क में दहशत न फैलाए।

11

रब पर भरोसा

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मैंने रब में पनाह ली है। तो फिर तुम किस तरह मुझसे कहते हो, “चल, परिंदे की तरह फड़फड़ाकर पहाड़ों में भाग जा”?

2 क्योंकि देखो, बेदीन कमान तानकर तीर को ताँत पर लगा चुके हैं। अब वह अंधेरे में बैठकर इस इंतज़ार में हैं कि दिल से सीधी राह पर चलनेवालों पर चलाएँ।

3 रास्तबाज़ क्या करे? उन्होंने तो बुनियाद को ही तबाह कर दिया है।

4 लेकिन रब अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में है, रब का तख़्त आसमान पर है। वहाँ से वह देखता है, वहाँ से उस की आँखें आदमज़ादों को परखती हैं।

5 रब रास्तबाज़ को परखता तो है, लेकिन बेदीन और ज़ालिम से नफ़रत ही करता है।

6 बेदीनों पर वह जलते हुए कोयले और शोलाज़न गंधक बरसा देगा। झुलसनेवाली आँधी उनका हिस्सा होगी।

7 क्योंकि रब रास्त है, और उसे इनसाफ़ प्यारा है। सिर्फ़ सीधी राह पर चलनेवाले उसका चेहरा देखेंगे।

12

मदद के लिए दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : शमीनीत।

ऐ रब, मदद फ़रमा! क्योंकि ईमानदार ख़त्म हो गए हैं। दियानतदार इनसानों में से मिट गए हैं।

2 आपस में सब झूट बोलते हैं। उनकी ज़बान पर चिकनी-चुपड़ी बातें होती हैं जबकि दिल में कुछ और ही होता है।

3 रब तमाम चिकनी-चुपड़ी और शेख़ीबाज़ ज़बानों को काट डाले!

4 वह उन सबको मिटा दे जो कहते हैं, “हम अपनी लायक़ ज़बान के बाइस ताक़तवर हैं। हमारे होंट हमें सहारा देते हैं तो कौन हमारा मालिक होगा? कोई नहीं!”

5 लेकिन रब फ़रमाता है, “नाचारों पर तुम्हारे ज़ुल्म की ख़बर और ज़रूरतमंदों की कराहती आवाज़ें मेरे सामने आई हैं। अब मैं उठकर उन्हें उनसे छुटकारा दूँगा जो उनके ख़िलाफ़ फुँकारते हैं।”

6 रब के फ़रमान पाक हैं, वह भट्टी में सात बार साफ़ की गई चाँदी की मानिंद ख़ालिस हैं।

7 ऐ रब, तू ही उन्हें महफ़ूज़ रखेगा, तू ही उन्हें अबद तक इस नसल से बचाए रखेगा,

8 गो बेदीन आज़ादी से इधर उधर फिरते हैं, और इनसानों के दरमियान कमीनापन का राज है।

13

मदद के लिए दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, कब तक? क्या तू मुझे अबद तक भूला रहेगा? तू कब तक अपना चेहरा मुझसे छुपाए रखेगा?

2 मेरी जान कब तक परेशानियों में मुब्तला रहे, मेरा दिल कब तक रोज़ बरोज़ दुख उठाता रहे? मेरा दुश्मन कब तक मुझ पर ग़ालिब रहेगा?

3 ऐ रब मेरे ख़ुदा, मुझ पर नज़र डालकर मेरी सुन! मेरी आँखों को रौशन कर, वरना मैं मौत की नींद सो जाऊँगा।

4 तब मेरा दुश्मन कहेगा, “मैं उस पर ग़ालिब आ गया हूँ!” और मेरे मुख़ालिफ़ शादियाना बजाएंगे कि मैं हिल गया हूँ।

5 लेकिन मैं तेरी शफ़क़त पर भरोसा रखता हूँ, मेरा दिल तेरी नजात देखकर ख़ुशी मनाएगा।

6 मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि उसने मुझ पर एहसान किया है।

14

बेदीन की हमाक़त

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

अहमक़ दिल में कहता है, “अल्लाह है ही नहीं!” ऐसे लोग बदचलन हैं, उनकी हरकतें क़ाबिले-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।

2 रब ने आसमान से इनसान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब
है?
3 अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सबके सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।

4 क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की तरह खा लेते हैं उनमें से एक को भी समझ नहीं आती? वह तो रब
को पुकारते ही नहीं।

5 तब उन पर सख़्त दहशत छा गई, क्योंकि अल्लाह रास्तबाज़ की नसल के साथ है।
6 तुम नाचार के मनसूबों को ख़ाक में मिलाना चाहते हो, लेकिन रब ख़ुद उस की पनाहगाह है।

7 काश कोहे-सिय्यून से इसराईल की नजात निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा तो याक़ूब ख़ुशी के नारे
लगाएगा, इसराईल बाग़ बाग़ होगा।

15

कौन अल्लाह के हुज़ूर क़ायम रह सकता है?
1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, कौन तेरे ख़ैमे में ठहर सकता है? किस को तेरे मुक़द्दस पहाड़ पर रहने की इजाज़त है?
2 वह जिसका चाल-चलन बेगुनाह है, जो रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारकर दिल से सच बोलता है।
3 ऐसा शख़्स अपनी ज़बान से किसी पर तोहमत नहीं लगाता। न वह अपने पड़ोसी पर ज़्यादती करता, न उस की
बेइज़्ज़ती करता है।
4 वह मरदूद को हक़ीर जानता लेकिन ख़ुदातरस की इज़्ज़त करता है। जो वादा उसने क़सम खाकर किया उसे पूरा
करता है, ख़ाह उसे कितना ही नुक़सान क्यों न पहुँचे।
5 वह सूद लिए बग़ैर उधार देता है और उस की रिश्वत क़बूल नहीं करता जो बेगुनाह का हक़ मारना चाहता है।
ऐसा शख़्स कभी डाँवाँडोल नहीं होगा।

16

एतमाद की दुआ
1 दाऊद का एक सुनहरा ज़बूर।
ऐ अल्लाह, मुझे महफ़ूज़ रख, क्योंकि तुझमें मैं पनाह लेता हूँ।
2 मैंने रब से कहा, "तू मेरा आक़ा है, तू ही मेरी ख़ुशहाली का वाहिद सरचश्मा है।"
3 मुल्क में जो मुक़द्दसीन हैं वही मेरे सूरमे हैं, उन्हीं को मैं पसंद करता हूँ।
4 लेकिन जो दीगर माबूदों के पीछे भागे रहते हैं उनकी तकलीफ़ बढ़ती जाएगी। न मैं उनकी ख़ून की क़ुरबानियों
को पेश करूँगा, न उनके नामों का ज़िक्र तक करूँगा।

5 ऐ रब, तू मेरी मीरास और मेरा हिस्सा है। मेरा नसीब तेरे हाथ में है।
6 जब क़ुरा डाला गया तो मुझे ख़ुशगवार ज़मीन मिल गई। यक़ीनन मेरी मीरास मुझे बहुत पसंद है।
7 मैं रब की सताइश करूँगा जिसने मुझे मशवरा दिया है। रात को भी मेरा दिल मेरी हिदायत करता है।
8 रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहता है। वह मेरे दहने हाथ रहता है, इसलिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।
9 इसलिए मेरा दिल शादमान है, मेरी जान ख़ुशी के नारे लगाती है। हाँ, मेरा बदन पुरसुकून ज़िंदगी गुज़ारेगा।
10 क्योंकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा, और न अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने
देगा।
11 तू मुझे ज़िंदगी की राह से आगाह करता है। तेरे हुज़ूर से भरपूर ख़ुशियाँ, तेरे दहने हाथ से अबदी मसर्रतें हासिल
होती हैं।

17

बेगुनाह शख़्स की दुआ
1 दाऊद की दुआ।

ऐ रब, इनसाफ़ के लिए मेरी फ़रियाद सुन, मेरी आहो-ज़ारी पर ध्यान दे। मेरी दुआ पर ग़ौर कर, क्योंकि वह फ़रेबदेह होंटों से नहीं निकलती।

2 तेरे हुज़ूर मेरा इनसाफ़ किया जाए, तेरी आँखें उन बातों का मुशाहदा करें जो सच हैं।

3 तूने मेरे दिल को जाँच लिया, रात को मेरा मुआयना किया है। तूने मुझे भट्टी में डाल दिया ताकि नापाक चीज़ें दूर करे, गो ऐसी कोई चीज़ नहीं मिली। क्योंकि मैंने पूरा इरादा कर लिया है कि मेरे मुँह से बुरी बात नहीं निकलेगी।

4 जो कुछ भी दूसरे करते हैं मैंने ख़ुद तेरे मुँह के फ़रमान के ताबे रहकर अपने आपको ज़ालिमों की राहों से दूर रखा है।

5 मैं क़दम बक़दम तेरी राहों में रहा, मेरे पाँव कभी न डगमगाए।

6 ऐ अल्लाह, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि तू मेरी सुनेगा। कान लगाकर मेरी दुआ को सुन।

7 तू जो अपने दहने हाथ से उन्हें रिहाई देता है जो अपने मुख़ालिफ़ों से तुझमें पनाह लेते हैं, मोजिज़ाना तौर पर अपनी शफ़क़त का इज़हार कर।

8 आँख की पुतली की तरह मेरी हिफ़ाज़त कर, अपने परों के साये में मुझे छुपा ले।

9 उन बेदीनों से मुझे महफ़ूज़ रख जो मुझ पर तबाहकुन हमले कर रहे हैं, उन दुश्मनों से जो मुझे घेरकर मार डालने की कोशिश कर रहे हैं।

10 वह सरकश हो गए हैं, उनके मुँह घमंड की बातें करते हैं।

11 जिधर भी हम क़दम उठाएँ वहाँ वह भी पहुँच जाते हैं। अब उन्होंने हमें घेर लिया है, वह घूर घूरकर हमें ज़मीन पर पटख़ने का मौक़ा ढूँड रहे हैं।

12 वह उस शेरबबर की मानिंद हैं जो शिकार को फाड़ने के लिए तड़पता है, उस जवान शेर की मानिंद जो ताक में बैठा है।

13 ऐ रब, उठ और उनका सामना कर, उन्हें ज़मीन पर पटख़ दे! अपनी तलवार से मेरी जान को बेदीनों से बचा।

14 ऐ रब, अपने हाथ से मुझे इनसे छुटकारा दे। उन्हें तो इस दुनिया में अपना हिस्सा मिल चुका है। क्योंकि तूने उनके पेट को अपने माल से भर दिया, बल्कि उनके बेटे भी सेर हो गए हैं और इतना बाक़ी है कि वह अपनी औलाद के लिए भी काफ़ी कुछ छोड़ जाएंगे।

15 लेकिन मैं ख़ुद रास्तबाज़ साबित होकर तेरे चेहरे का मुशाहदा करूँगा, मैं जागकर तेरी सूरत से सेर हो जाऊँगा।

18

दाऊद का फ़तह का गीत

1 रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। दाऊद ने रब के लिए यह गीत गाया जब रब ने उसे तमाम दुश्मनों और साऊल से बचाया। वह बोला,

ऐ रब मेरी क़ुव्वत, मैं तुझे प्यार करता हूँ।

2 रब मेरी चटान, मेरा क़िला और मेरा नजातदहिंदा है। मेरा ख़ुदा मेरी चटान है जिसमें मैं पनाह लेता हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलंद हिसार है।

3 मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तमजीद हो! तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।

4 मौत के रस्सों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।

5 पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।

6 जब मैं मुसीबत में फँस गया तो मैंने रब को पुकारा। मैंने मदद के लिए अपने ख़ुदा से फ़रियाद की तो उसने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़ सुनी, मेरी चीख़ें उसके कान तक पहुँच गईं।

7 तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी, पहाड़ों की बुनियादें रब के ग़ज़ब के सामने काँपने और झूलने लगीं।

8 उस की नाक से धुआँ निकल आया, उसके मुँह से भस्म करनेवाले शोले और दहकते कोयले भड़क उठे।

9 आसमान को झुकाकर वह नाज़िल हुआ। जब उतर आया तो उसके पाँवों के नीचे अंधेरा ही अंधेरा था।

10 वह करूबी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और उड़कर हवा के परों पर मँडलाने लगा।

11 उसने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह बनाया, बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की तरह अपने गिर्दागिर्द लगाए।

12 उसके हुज़ूर की तेज़ रौशनी से उसके बादल ओले और शोलाज़न कोयले लेकर निकल आए।

13 रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह तआला की आवाज़ गूँज उठी। तब ओले और शोलाज़न कोयले बरसने
लगे।
14 उसने अपने तीर चलाए तो दुश्मन तित्तर-बित्तर हो गए। उस की तेज़ बिजली इधर उधर गिरती गई तो उनमें
हलचल मच गई।
15 ऐ रब, तूने डाँटा तो समुंदर की वादियाँ ज़ाहिर हुईं, जब तू ग़ुस्से में गरजा तो तेरे दम के झोंकों से ज़मीन की
बुनियादें नज़र आईं।

16 बुलंदियों पर से अपना हाथ बढ़ाकर उसने मुझे पकड़ लिया, मुझे गहरे पानी में से खींचकर निकाल लाया।
17 उसने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया, उनसे जो मुझसे नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं ग़ालिब न आ सका।
18 जिस दिन मैं मुसीबत में फँस गया उस दिन उन्होंने मुझ पर हमला किया, लेकिन रब मेरा सहारा बना रहा।
19 उसने मुझे तंग जगह से निकालकर छुटकारा दिया, क्योंकि वह मुझसे ख़ुश था।
20 रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र देता है। मेरे हाथ साफ़ हैं, इसलिए वह मुझे बरकत देता है।
21 क्योंकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं बदी करने से अपने ख़ुदा से दूर नहीं हुआ।
22 उसके तमाम अहकाम मेरे सामने रहे हैं, मैंने उसके फ़रमानों को रद्द नहीं किया।
23 उसके सामने ही मैं बेइलज़ाम रहा, गुनाह करने से बाज़ रहा हूँ।
24 इसलिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र दिया, क्योंकि उस की आँखों के सामने ही में पाक-साफ़ साबित
हुआ।

25 ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उसके साथ तेरा सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइलज़ाम है उसके साथ तेरा सुलूक
बेइलज़ाम है।
26 जो पाक है उसके साथ तेरा सुलूक पाक है। लेकिन जो कजरौ है उसके साथ तेरा सुलूक भी कजरवी का है।
27 क्योंकि तू पस्तहालों को नजात देता और मग़रूर आँखों को पस्त करता है।

28 ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ जलाता, मेरा ख़ुदा ही मेरे अंधेरे को रौशन करता है।
29 क्योंकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हमला कर सकता, अपने ख़ुदा के साथ दीवार को फलाँग सकता हूँ।
30 अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान ख़ालिस है। जो भी उसमें पनाह ले उस की वह ढाल है।
31 क्योंकि रब के सिवा कौन ख़ुदा है? हमारे ख़ुदा के सिवा कौन चटान है?
32 अल्लाह मुझे क़ुव्वत से कमरबस्ता करता, वह मेरी राह को कामिल कर देता है।
33 वह मेरे पाँवों को हिरन की-सी फुरती अता करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलंदियों पर खड़ा करता है।
34 वह मेरे हाथों को जंग करने की तरबियत देता है। अब मेरे बाज़ू पीतल की कमान को भी तान लेते हैं।

35 ऐ रब, तूने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श दी है। तेरे दहने हाथ ने मुझे क़ायम रखा, तेरी नरमी ने मुझे बड़ा
बना दिया है।
36 तू मेरे क़दमों के लिए रास्ता बना देता है, इसलिए मेरे टख़ने नहीं डगमगाते।
37 मैंने अपने दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके उन्हें पकड़ लिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म न हो गए।
38 मैंने उन्हें यों पाश पाश कर दिया कि दुबारा उठ न सके बल्कि गिरकर मेरे पाँवों तले पड़े रहे।
39 क्योंकि तूने मुझे जंग करने के लिए क़ुव्वत से कमरबस्ता कर दिया, तूने मेरे मुख़ालिफ़ों को मेरे सामने झुका
दिया।
40 तूने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया, और मैंने नफ़रत करनेवालों को तबाह कर दिया।
41 वह मदद के लिए चीख़ते-चिल्लाते रहे, लेकिन बचानेवाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे, लेकिन उसने
जवाब न दिया।
42 मैंने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में उड़ा दिया। मैंने उन्हें कचरे की तरह गली में फेंक दिया।

43 तूने मुझे क़ौम के झगड़ों से बचाकर अक़वाम का सरदार बना दिया है। जिस क़ौम से मैं नावाक़िफ़ था वह मेरी
ख़िदमत करती है।
44 ज्योंही मैं बात करता हूँ तो लोग मेरी सुनते हैं। परदेसी दबककर मेरी ख़ुशामद करते हैं।
45 वह हिम्मत हारकर काँपते हुए अपने क़िलों से निकल आते हैं।

46 रब ज़िंदा है! मेरी चटान की तमजीद हो! मेरी नजात के ख़ुदा की ताज़ीम हो!
47 वही ख़ुदा है जो मेरा इंतक़ाम लेता, अक़्वाम को मेरे ताबे कर देता
48 और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है। यक़ीनन तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता, मुझे ज़ालिमों से
बचाए रखता है।
49 ऐ रब, इसलिए मैं अक़्वाम में तेरी हम्दो-सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
50 क्योंकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और उस की औलाद
पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।

19

मख़लूक़ात में अल्लाह का जलाल

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
आसमान अल्लाह के जलाल का एलान करते हैं, आसमानी गुंबद उसके हाथों का काम बयान करता है।
2 एक दिन दूसरे को इत्तला देता, एक रात दूसरी को ख़बर पहुँचाती है,
3 लेकिन ज़बान से नहीं। गो उनकी आवाज़ सुनाई नहीं देती,
4 तो भी उनकी आवाज़ निकलकर पूरी दुनिया में सुनाई देती, उनके अलफ़ाज़ दुनिया की इंतहा तक पहुँच जाते हैं।
वहाँ अल्लाह ने आफ़ताब के लिए ख़ैमा लगाया है।
5 जिस तरह दूल्हा अपनी ख़ाबगाह से निकलता है उसी तरह सूरज निकलकर पहलवान की तरह अपनी दौड़ दौड़ने
पर ख़ुशी मनाता है।
6 आसमान के एक सिरे से चढ़कर उसका चक्कर दूसरे सिरे तक लगता है। उस की तपती गरमी से कोई भी चीज़
पोशीदा नहीं रहती।

7 रब की शरीअत कामिल है, उससे जान में जान आ जाती है। रब के अहकाम क़ाबिले-एतमाद हैं, उनसे सादालौह
दानिशमंद हो जाता है।
8 रब की हिदायात बा-इनसाफ़ हैं, उनसे दिल बाग़ बाग़ हो जाता है। रब के अहकाम पाक हैं, उनसे आँखें चमक
उठती हैं।
9 रब का ख़ौफ़ पाक है और अबद तक क़ायम रहेगा। रब के फ़रमान सच्चे और सबके सब रास्त हैं।
10 वह सोने बल्कि ख़ालिस सोने के ढेर से ज़्यादा मरग़ूब हैं। वह शहद बल्कि छत्ते के ताज़ा शहद से ज़्यादा मीठे हैं।

11 उनसे तेरे ख़ादिम को आगाह किया जाता है, उन पर अमल करने से बड़ा अज्र मिलता है।
12 जो ख़ताएँ बेख़बरी में सरज़द हुईं कौन उन्हें जानता है? मेरे पोशीदा गुनाहों को मुआफ़ कर!
13 अपने ख़ादिम को गुस्ताख़ों से महफ़ूज़ रख ताकि वह मुझ पर हुकूमत न करें। तब मैं बेइलज़ाम होकर संगीन
गुनाह से पाक रहूँगा।

14 ऐ रब, बख़्श दे कि मेरे मुँह की बातें और मेरे दिल की सोच-बिचार तुझे पसंद आए। तू ही मेरी चटान और मेरा
छुड़ानेवाला है।

20

फ़तह के लिए दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
मुसीबत के दिन रब तेरी सुने, याक़ूब के ख़ुदा का नाम तुझे महफ़ूज़ रखे।
2 वह मक़दिस से तेरी मदद भेजे, वह सिय्यून से तेरा सहारा बने।
3 वह तेरी ग़ल्ला की नज़रें याद करे, तेरी भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ क़बूल फ़रमाए। (सिलाह)
4 वह तेरे दिल की आरज़ू पूरी करे, तेरे तमाम मनसूबों को कामयाबी बख़्शे।
5 तब हम तेरी नजात की ख़ुशी मनाएँगे, हम अपने ख़ुदा के नाम में फ़तह का झंडा गाड़ेंगे। रब तेरी तमाम गुज़ारिशें
पूरी करे।

6 अब मैंने जान लिया है कि रब अपने मसह किए हुए बादशाह की मदद करता है। वह अपने मुक़द्दस आसमान से
उस की सुनकर अपने दहने हाथ की क़ुदरत से उसे छुटकारा देगा।
7 बाज़ अपने रथों पर, बाज़ अपने घोड़ों पर फ़ख़र करते हैं, लेकिन हम रब अपने ख़ुदा के नाम पर फ़ख़र करेंगे।
8 हमारे दुश्मन झुककर गिर जाएंगे, लेकिन हम उठकर मज़बूती से खड़े रहेंगे।

9 ऐ रब, हमारी मदद फ़रमा! बादशाह हमारी सुने जब हम मदद के लिए पुकारें।

21

बादशाह के लिए अल्लाह की मदद

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ रब, बादशाह तेरी क़ुव्वत देखकर शादमान है, वह तेरी नजात की कितनी बड़ी ख़ुशी मनाता है।
2 तूने उस की दिली ख़ाहिश पूरी की और इनकार न किया जब उस की आरज़ू ने होंटों पर अलफ़ाज़ का रूप धारा।
(सिलाह)
3 क्योंकि तू अच्छी अच्छी बरकतें अपने साथ लेकर उससे मिलने आया, तूने उसे ख़ालिस सोने का ताज पहनाया।
4 उसने तुझसे ज़िंदगी पाने की आरज़ू की तो तूने उसे उम्र की दराज़ी बख़्शी, मज़ीद इतने दिन कि उनकी इंतहा नहीं।
5 तेरी नजात से उसे बड़ी इज़्ज़त हासिल हुई, तूने उसे शानो-शौकत से आरास्ता किया।
6 क्योंकि तू उसे अबद तक बरकत देता, उसे अपने चेहरे के हुज़ूर लाकर निहायत ख़ुश कर देता है।
7 क्योंकि बादशाह रब पर एतमाद करता है, अल्लाह तआला की शफ़क़त उसे डगमगाने से बचाएगी।

8 तेरे दुश्मन तेरे क़ब्ज़े में आ जाएंगे, जो तुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें तेरा दहना हाथ पकड़ लेगा।
9 जब तू उन पर ज़ाहिर होगा तो वह भड़कती भट्टी की-सी मुसीबत में फँस जाएंगे। रब अपने ग़ज़ब में उन्हें हड़प
कर लेगा, और आग उन्हें खा जाएगी।
10 तू उनकी औलाद को रूए-ज़मीन पर से मिटा डालेगा, इनसानों में उनका नामो-निशान तक नहीं रहेगा।
11 गो वह तेरे ख़िलाफ़ साज़िशें करते हैं तो भी उनके बुरे मनसूबे नाकाम रहेंगे।
12 क्योंकि तू उन्हें भगाकर उनके चेहरों को अपने तीरों का निशाना बना देगा।
13 ऐ रब, उठ और अपनी क़ुदरत का इज़हार कर ताकि हम तेरी क़ुदरत की तमजीद में साज़ बजाकर गीत गाएँ।

22

रास्तबाज़ का दुख

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तुलूए-सुबह की हिरनी।
ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है? मैं चीख़ रहा हूँ, लेकिन मेरी नजात नज़र नहीं आती।
2 ऐ मेरे ख़ुदा, दिन को मैं चिल्लाता हूँ, लेकिन तू जवाब नहीं देता। रात को पुकारता हूँ, लेकिन आराम नहीं पाता।

3 लेकिन तू क़ुद्दूस है, तू जो इसराईल की मद्हसराई पर तख़्तनशीन होता है।
4 तुझ पर हमारे बापदादा ने भरोसा रखा, और जब भरोसा रखा तो तूने उन्हें रिहाई दी।
5 जब उन्होंने मदद के लिए तुझे पुकारा तो बचने का रास्ता खुल गया। जब उन्होंने तुझ पर एतमाद किया तो शरमिंदा
न हुए।

6 लेकिन मैं कीड़ा हूँ, मुझे इनसान नहीं समझा जाता। लोग मेरी बेइज़्ज़ती करते, मुझे हक़ीर जानते हैं।
7 सब मुझे देखकर मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं। वह मुँह बनाकर तौबा तौबा करते और कहते हैं,
8 "उसने अपना मामला रब के सुपुर्द किया है। अब रब ही उसे बचाए। वही उसे छुटकारा दे, क्योंकि वही उससे
ख़ुश है।"

9 यक़ीनन तू मुझे माँ के पेट से निकाल लाया। मैं अभी माँ का दूध पीता था कि तूने मेरे दिल में भरोसा पैदा किया।
10 ज्योंही मैं पैदा हुआ मुझे तुझ पर छोड़ दिया गया। माँ के पेट से ही तू मेरा ख़ुदा रहा है।
11 मुझसे दूर न रह। क्योंकि मुसीबत ने मेरा दामन पकड़ लिया है, और कोई नहीं जो मेरी मदद करे।
12 मुतअद्दिद बैलों ने मुझे घेर लिया, बसन के ताक़तवर साँड चारों तरफ़ जमा हो गए हैं।

13 मेरे ख़िलाफ़ उन्होंने अपने मुँह खोल दिए हैं, उस दहाड़ते हुए शेरबबर की तरह जो शिकार को फाड़ने के जोश
में आ गया है।
14 मुझे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेला गया है, मेरी तमाम हड्डियाँ अलग अलग हो गई हैं, जिस्म के अंदर मेरा
दिल मोम की तरह पिघल गया है।
15 मेरी ताक़त ठीकरे की तरह ख़ुश्क हो गई, मेरी ज़बान तालू से चिपक गई है। हाँ, तूने मुझे मौत की ख़ाक में लिटा
दिया है।
16 कुत्तों ने मुझे घेर रखा, शरीरों के जत्थे ने मेरा इहाता किया है। उन्होंने मेरे हाथों और पाँवों को छेद डाला है।
17 मैं अपनी हड्डियों को गिन सकता हूँ। लोग घूर घूरकर मेरी मुसीबत से ख़ुश होते हैं।
18 वह आपस में मेरे कपड़े बाँट लेते और मेरे लिबास पर क़ुरा डालते हैं।

19 लेकिन तू ऐ रब, दूर न रह! ऐ मेरी क़ुव्वत, मेरी मदद करने के लिए जल्दी कर!
20 मेरी जान को तलवार से बचा, मेरी ज़िंदगी को कुत्ते के पंजे से छुड़ा।
21 शेर के मुँह से मुझे मख़लसी दे, जंगली बैलों के सींगों से रिहाई अता कर।

ऐ रब, तूने मेरी सुनी है!
22 मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का एलान करूँगा, जमात के दरमियान तेरी मद्‌हसराई करूँगा।
23 तुम जो रब का ख़ौफ़ मानते हो, उस की तमजीद करो! ऐ याक़ूब की तमाम औलाद, उसका एहतराम करो! ऐ
इसराईल के तमाम फ़रज़ंदो, उससे ख़ौफ़ खाओ!
24 क्योंकि न उसने मुसीबतज़दा का दुख हक़ीर जाना, न उस की तकलीफ़ से घिन खाई। उसने अपना मुँह उससे
न छुपाया बल्कि उस की सुनी जब वह मदद के लिए चीख़ने-चिल्लाने लगा।
25 ऐ ख़ुदा, बड़े इजतिमा में मैं तेरी सताइश करूँगा, ख़ुदातरसों के सामने अपनी मन्नत पूरी करूँगा।
26 नाचार जी भरकर खाएँगे, रब के तालिब उस की हम्दो-सना करेंगे। तुम्हारे दिल अबद तक ज़िंदा रहें!
27 लोग दुनिया की इंतहा तक रब को याद करके उस की तरफ़ रुजू करेंगे। ग़ैरअक़वाम के तमाम ख़ानदान उसे
सिजदा करेंगे।
28 क्योंकि रब को ही बादशाही का इख़्तियार हासिल है, वही अक़वाम पर हुकूमत करता है।

29 दुनिया के तमाम बड़े लोग उसके हुज़ूर खाएँगे और सिजदा करेंगे। ख़ाक में उतरनेवाले सब उसके सामने झुक
जाएंगे, वह सब जो अपनी ज़िंदगी को ख़ुद क़ायम नहीं रख सकते।
30 उसके फ़रज़ंद उस की ख़िदमत करेंगे। एक आनेवाली नसल को रब के बारे में सुनाया जाएगा।
31 हाँ, वह आकर उस की रास्ती एक क़ौम को सुनाएँगे जो अभी पैदा नहीं हुई, क्योंकि उसने यह कुछ किया है।

23

अच्छा चरवाहा
1 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरा चरवाहा है, मुझे कमी न होगी।
2 वह मुझे शादाब चरागाहों में चराता और पुरसुकून चश्मों के पास ले जाता है।
3 वह मेरी जान को ताज़ादम करता और अपने नाम की ख़ातिर रास्ती की राहों पर मेरी क़ियादत करता है।
4 गो मैं तारीकतरीन वादी में से गुज़रूँ मैं मुसीबत से नहीं डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ है, तेरी लाठी और तेरा असा
मुझे तसल्ली देते हैं।

5 तू मेरे दुश्मनों के रूबरू मेरे सामने मेज़ बिछाकर मेरे सर को तेल से तरो-ताज़ा करता है। मेरा प्याला तेरी बरकत
से छलक उठता है।
6 यक़ीनन भलाई और शफ़क़त उम्र-भर मेरे साथ साथ रहेंगी, और मैं जीते-जी रब के घर में सुकूनत करूँगा।

24

बादशाह का इस्तक़बाल
1 दाऊद का ज़बूर।

ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का है, दुनिया और उसके बाशिंदे उसी के हैं। 2 क्योंकि उसने ज़मीन की बुनियाद
समुंदरों पर रखी और उसे दरियाओं पर क़ायम किया।

3 किस को रब के पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त है? कौन उसके मुक़द्दस मक़ाम में खड़ा हो सकता है?
4 वह जिसके हाथ पाक और दिल साफ़ हैं, जो न फ़रेब का इरादा रखता, न क़सम खाकर झूट बोलता है।
5 वह रब से बरकत पाएगा, उसे अपनी नजात के ख़ुदा से रास्ती मिलेगी।
6 यह होगा उन लोगों का हाल जो अल्लाह की मरज़ी दरियाफ़्त करते, जो तेरे चेहरे के तालिब होते हैं, ऐ याक़ूब
के ख़ुदा। (सिलाह)

7 ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम दरवाज़ो, पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह दाख़िल हो जाए।
8 जलाल का बादशाह कौन है? रब जो क़वी और क़ादिर है, रब जो जंग में ज़ोरावर है।
9 ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ क़दीम दरवाज़ो, पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह दाख़िल हो जाए।
10 जलाल का बादशाह कौन है? रब्बुल-अफ़वाज, वही जलाल का बादशाह है। (सिलाह)

25

मुआफ़ी और राहनुमाई के लिए दुआ
1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं तेरा आरज़ूमंद हूँ।
2 ऐ मेरे ख़ुदा, तुझ पर मैं भरोसा रखता हूँ। मुझे शरमिंदा न होने दे कि मेरे दुश्मन मुझ पर शादियाना बजाएँ।
3 क्योंकि जो भी तुझ पर उम्मीद रखे वह शरमिंदा नहीं होगा जबकि जो बिलावजह बेवफ़ा होते हैं वही शरमिंदा हो
जाएंगे।

4 ऐ रब, अपनी राहें मुझे दिखा, मुझे अपने रास्तों की तालीम दे।
5 अपनी सच्चाई के मुताबिक़ मेरी राहनुमाई कर, मुझे तालीम दे। क्योंकि तू मेरी नजात का ख़ुदा है। दिन-भर मैं तेरे
इंतज़ार में रहता हूँ।
6 ऐ रब, अपना वह रहम और मेहरबानी याद कर जो तू क़दीम ज़माने से करता आया है।
7 ऐ रब, मेरी जवानी के गुनाहों और मेरी बेवफ़ा हरकतों को याद न कर बल्कि अपनी भलाई की ख़ातिर और
अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरा ख़याल रख।

8 रब भला और आदिल है, इसलिए वह गुनाहगारों को सहीह राह पर चलने की तलक़ीन करता है।
9 वह फ़रोतनों की इनसाफ़ की राह पर राहनुमाई करता, हलीमों को अपनी राह की तालीम देता है।
10 जो रब के अहद और अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें उन्हें रब मेहरबानी और वफ़ादारी की राहों पर ले
चलता है।
11 ऐ रब, मेरा क़ुसूर संगीन है, लेकिन अपने नाम की ख़ातिर उसे मुआफ़ कर।
12 रब का ख़ौफ़ माननेवाला कहाँ है? रब ख़ुद उसे उस राह की तालीम देगा जो उसे चुनना है।
13 तब वह ख़ुशहाल रहेगा, और उस की औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी।
14 जो रब का ख़ौफ़ मानें उन्हें वह अपने हमराज़ बनाकर अपने अहद की तालीम देता है।

15 मेरी आँखें रब को तकती रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पाँवों को जाल से निकाल लेता है।
16 मेरी तरफ़ मायल हो जा, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि मैं तनहा और मुसीबतज़दा हूँ।
17 मेरे दिल की परेशानियाँ दूर कर, मुझे मेरी तकालीफ़ से रिहाई दे।
18 मेरी मुसीबत और तंगी पर नज़र डालकर मेरी ख़ताओं को मुआफ़ कर।
19 देख, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, वह कितना ज़ुल्म करके मुझसे नफ़रत करते हैं।
20 मेरी जान को महफ़ूज़ रख, मुझे बचा! मुझे शरमिंदा न होने दे, क्योंकि मैं तुझमें पनाह लेता हूँ।
21 बेगुनाही और दियानतदारी मेरी पहरादारी करें, क्योंकि मैं तेरे इंतज़ार में रहता हूँ।
22 ऐ अल्लाह, फ़िद्या देकर इसराईल को उस की तमाम तकालीफ़ से आज़ाद कर!

26

बेगुनाह का इक़रार और इल्तिजा
1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरा इनसाफ़ कर, क्योंकि मेरा चाल-चलन बेक़ुसूर है। मैंने रब पर भरोसा रखा है, और मैं डाँवाँडोल नहीं हो
जाऊँगा।

2 ऐ रब, मुझे जाँच ले, मुझे आज़माकर दिल की तह तक मेरा मुआयना कर।
3 क्योंकि तेरी शफ़क़त मेरी आँखों के सामने रही है, मैं तेरी सच्ची राह पर चलता रहा हूँ।
4 न मैं धोकेबाज़ों की मजलिस में बैठता, न चालाक लोगों से रिफ़ाक़त रखता हूँ।
5 मुझे शरीरों के इजतिमाओं से नफ़रत है, बेदीनों के साथ मैं बैठता भी नहीं।
6 ऐ रब, मैं अपने हाथ धोकर अपनी बेगुनाही का इज़हार करता हूँ। मैं तेरी क़ुरबानगाह के गिर्द फिरकर
7 बुलंद आवाज़ से तेरी हम्दो-सना करता, तेरे तमाम मोजिज़ात का एलान करता हूँ।
8 ऐ रब, तेरी सुकूनतगाह मुझे प्यारी है, जिस जगह तेरा जलाल ठहरता है वह मुझे अज़ीज़ है।

9 मेरी जान को मुझसे छीनकर मुझे गुनाहगारों में शामिल न कर! मेरी ज़िंदगी को मिटाकर मुझे ख़ूनख़ारों में शुमार
न कर,
10 ऐसे लोगों में जिनके हाथ शर्मनाक हरकतों से आलूदा हैं, जो हर वक़्त रिश्वत खाते हैं।
11 क्योंकि मैं बेगुनाह ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। फ़िद्या देकर मुझे छुटकारा दे! मुझ पर मेहरबानी कर!

12 मेरे पाँव हमवार ज़मीन पर क़ायम हो गए हैं, और मैं इजतिमाओं में रब की सताइश करूँगा।

27

अल्लाह से रिफ़ाक़त
1 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी रौशनी और मेरी नजात है, मैं किससे डरूँ? रब मेरी जान की पनाहगाह है, मैं किससे दहशत खाऊँ?
2 जब शरीर मुझ पर हमला करें ताकि मुझे हड़प कर लें, जब मेरे मुख़ालिफ़ और दुश्मन मुझ पर टूट पड़ें तो वह
ठोकर खाकर गिर जाएंगे।
3 गो फ़ौज मुझे घेर ले मेरा दिल ख़ौफ़ नहीं खाएगा, गो मेरे ख़िलाफ़ जंग छिड़ जाए मेरा भरोसा क़ायम रहेगा।

4 रब से मेरी एक गुज़ारिश है, मैं एक ही बात चाहता हूँ। यह कि जीते-जी रब के घर में रहकर उस की शफ़क़त से
लुत्फ़अंदोज़ हो सकूँ, कि उस की सुकूनतगाह में ठहरकर महवे-ख़याल रह सकूँ।
5 क्योंकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपनी सुकूनतगाह में पनाह देगा, मुझे अपने ख़ैमे में छुपा लेगा, मुझे उठाकर
ऊँची चटान पर रखेगा।
6 अब मैं अपने दुश्मनों पर सरबुलंद हूँगा, अगरचे उन्होंने मुझे घेर रखा है। मैं उसके ख़ैमे में ख़ुशी के नारे लगाकर
क़ुरबानियाँ पेश करूँगा, साज़ बजाकर रब की मद्‌हसराई करूँगा।

7 ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन जब मैं तुझे पुकारूँ, मुझ पर मेहरबानी करके मेरी सुन।
8 मेरा दिल तुझे याद दिलाता है कि तूने ख़ुद फ़रमाया, "मेरे चेहरे के तालिब रहो!" ऐ रब, मैं तेरे ही चेहरे का तालिब
रहा हूँ।
9 अपने चेहरे को मुझसे छुपाए न रख, अपने ख़ादिम को ग़ुस्से से अपने हुज़ूर से न निकाल। क्योंकि तू ही मेरा
सहारा रहा है। ऐ मेरी नजात के ख़ुदा, मुझे न छोड़, मुझे तर्क न कर।
10 क्योंकि मेरे माँ-बाप ने मुझे तर्क कर दिया है, लेकिन रब मुझे क़बूल करके अपने घर में लाएगा।
11 ऐ रब, मुझे अपनी राह की तरबियत दे, हमवार रास्ते पर मेरी राहनुमाई कर ताकि अपने दुश्मनों से महफ़ूज़ रहूँ।
12 मुझे मुख़ालिफ़ों के लालच में न आने दे, क्योंकि झूटे गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं जो तशद्दुद करने के
लिए तैयार हैं।
13 लेकिन मेरा पूरा ईमान यह है कि मैं ज़िंदों के मुल्क में रहकर रब की भलाई देखूँगा।

14 रब के इंतज़ार में रह! मज़बूत और दिलेर हो, और रब के इंतज़ार में रह!

28

मदद के लिए दुआ और जवाब के लिए शुक्रगुज़ारी

1 दाऊद का ज़बूर।

ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ मेरी चटान, ख़ामोशी से अपना मुँह मुझसे न फेर। क्योंकि अगर तू चुप रहे तो मैं मौत के गढ़े में उतरनेवालों की मानिंद हो जाऊँगा।

2 मेरी इल्तिजाएँ सुन जब मैं चीख़ते-चिल्लाते तुझसे मदद माँगता हूँ, जब मैं अपने हाथ तेरी सुकूनतगाह के मुक़द्दसतरीन कमरे की तरफ़ उठाता हूँ।

3 मुझे उन बेदीनों के साथ घसीटकर सज़ा न दे जो ग़लत काम करते हैं, जो अपने पड़ोसियों से बज़ाहिर दोस्ताना बातें करते, लेकिन दिल में उनके ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधते हैं।

4 उन्हें उनकी हरकतों और बुरे कामों का बदला दे। जो कुछ उनके हाथों से सरज़द हुआ है उस की पूरी सज़ा दे। उन्हें उतना ही नुक़सान पहुँचा दे जितना उन्होंने दूसरों को पहुँचाया है।

5 क्योंकि न वह रब के आमाल पर, न उसके हाथों के काम पर तवज्जुह देते हैं। अल्लाह उन्हें ढा देगा और दुबारा कभी तामीर नहीं करेगा।

6 रब की तमजीद हो, क्योंकि उसने मेरी इल्तिजा सुन ली।

7 रब मेरी क़ुव्वत और मेरी ढाल है। उस पर मेरे दिल ने भरोसा रखा, उससे मुझे मदद मिली है। मेरा दिल शादियाना बजाता है, मैं गीत गाकर उस की सताइश करता हूँ।

8 रब अपनी क़ौम की क़ुव्वत और अपने मसह किए हुए ख़ादिम का नजातबख़्श क़िला है।

9 ऐ रब, अपनी क़ौम को नजात दे! अपनी मीरास को बरकत दे! उनकी गल्लाबानी करके उन्हें हमेशा तक उठाए रख।

29

रब के जलाल की तमजीद

1 दाऊद का ज़बूर।

ऐ अल्लाह के फ़रज़ंदो, रब की तमजीद करो! रब के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो!

2 रब के नाम को जलाल दो। मुक़द्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को सिजदा करो।

3 रब की आवाज़ समुंदर के ऊपर गूँजती है। जलाल का ख़ुदा गरजता है, रब गहरे पानी के ऊपर गरजता है।

4 रब की आवाज़ ज़ोरदार है, रब की आवाज़ पुरजलाल है।

5 रब की आवाज़ देवदार के दरख़्तों को तोड़ डालती है, रब लुबनान के देवदार के दरख़्तों को टुकड़े टुकड़े कर देता है।

6 वह लुबनान को बछड़े और कोहे-सिरयून * को जंगली बैल के बच्चे की तरह कूदने फाँदने देता है।

7 रब की आवाज़ आग के शोले भड़का देती है।

8 रब की आवाज़ रेगिस्तान को हिला देती है, रब दश्ते-क़ादिस को काँपने देता है।

9 रब की आवाज़ सुनकर हिरनी दर्दे-ज़ह में मुब्तला हो जाती और जंगलों के पत्ते झड़ जाते हैं। लेकिन उस की सुकूनतगाह में सब पुकारते हैं, "जलाल!"

10 रब सैलाब के ऊपर तख़्तनशीन है, रब बादशाह की हैसियत से अबद तक तख़्तनशीन है।

11 रब अपनी क़ौम को तक़वियत देगा, रब अपने लोगों को सलामती की बरकत देगा।

30

मौत से छुटकारे पर शुक्रगुज़ारी

1 दाऊद का ज़बूर। रब के घर की मख़सूसियत के मौक़े पर गीत।

ऐ रब, मैं तेरी सताइश करता हूँ, क्योंकि तूने मुझे गहराइयों में से खींच निकाला। तूने मेरे दुश्मनों को मुझ पर बग़लें बजाने का मौक़ा नहीं दिया।

2 ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैंने चीख़ते-चिल्लाते हुए तुझसे मदद माँगी, और तूने मुझे शफ़ा दी।

* **29:6** सिरयून हरमून का दूसरा नाम है।

3 ऐ रब, तू मेरी जान को पाताल से निकाल लाया, तूने मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने से बचाया है।
4 ऐ ईमानदारो, साज़ बजाकर रब की तारीफ़ में गीत गाओ। उसके मुक़द्दस नाम की हम्दो-सना करो।
5 क्योंकि वह लमहा-भर के लिए ग़ुस्से होता, लेकिन ज़िंदगी-भर के लिए मेहरबानी करता है। गो शाम को रोना पड़े, लेकिन सुबह को हम ख़ुशी मनाएँगे।

6 जब हालात पुरसुकून थे तो मैं बोला, "मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा।"
7 ऐ रब, जब तू मुझसे ख़ुश था तो तूने मुझे मज़बूत पहाड़ पर रख दिया। लेकिन जब तूने अपना चेहरा मुझसे छुपा लिया तो मैं सख़्त घबरा गया।
8 ऐ रब, मैंने तुझे पुकारा, हाँ ख़ुदावंद से मैंने इल्तिजा की,
9 "क्या फ़ायदा है अगर मैं हलाक होकर मौत के गढ़े में उतर जाऊँ? क्या ख़ाक तेरी सताइश करेगी? क्या वह लोगों को तेरी वफ़ादारी के बारे में बताएगी?
10 ऐ रब, मेरी सुन, मुझ पर मेहरबानी कर। ऐ रब, मेरी मदद करने के लिए आ!"

11 तूने मेरा मातम ख़ुशी के नाच में बदल दिया, तूने मेरे मातमी कपड़े उतारकर मुझे शादमानी से मुलब्बस किया।
12 क्योंकि तू चाहता है कि मेरी जान ख़ामोश न हो बल्कि गीत गाकर तेरी तमजीद करती रहे। ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं अबद तक तेरी हम्दो-सना करूँगा।

31

हिफ़ाज़त के लिए दुआ
1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ रब, मैंने तुझमें पनाह ली है। मुझे कभी शरमिंदा न होने दे बल्कि अपनी रास्ती के मुताबिक़ मुझे बचा!
2 अपना कान मेरी तरफ़ झुका, जल्द ही मुझे छुटकारा दे। चटान का मेरा बुर्ज हो, पहाड़ का क़िला जिसमें मैं पनाह लेकर नजात पा सकूँ।

3 क्योंकि तू मेरी चटान, मेरा क़िला है, अपने नाम की ख़ातिर मेरी राहनुमाई, मेरी क़ियादत कर।
4 मुझे उस जाल से निकाल दे जो मुझे पकड़ने के लिए चुपके से बिछाया गया है। क्योंकि तू ही मेरी पनाहगाह है।
5 मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ। ऐ रब, ऐ वफ़ादार ख़ुदा, तूने फ़िद्या देकर मुझे छुड़ाया है!

6 मैं उनसे नफ़रत रखता हूँ जो बेकार बुतों से लिपटे रहते हैं। मैं तो रब पर भरोसा रखता हूँ।
7 मैं बाग़ बाग़ हूँगा और तेरी शफ़क़त की ख़ुशी मनाऊँगा, क्योंकि तूने मेरी मुसीबत देखकर मेरी जान की परेशानी का ख़याल किया है।
8 तूने मुझे दुश्मन के हवाले नहीं किया बल्कि मेरे पाँवों को खुले मैदान में क़ायम कर दिया है।

9 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरी जान और जिस्म गल रहे हैं।
10 मेरी ज़िंदगी दुख की चक्की में पिस रही है, मेरे साल आहें भरते भरते ज़ाया हो रहे हैं। मेरे क़ुसूर की वजह से मेरी ताक़त जवाब दे गई, मेरी हड्डियाँ गलने-सड़ने लगी हैं।
11 मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ बल्कि मेरे हमसाये भी मुझे लान-तान करते, मेरे जाननेवाले मुझसे दहशत खाते हैं। गली में जो भी मुझे देखे मुझसे भाग जाता है।
12 मैं मुरदों की मानिंद उनकी याददाश्त से मिट गया हूँ, मुझे ठीकरे की तरह फेंक दिया गया है।
13 बहुतों की अफ़वाहें मुझ तक पहुँच गई हैं, चारों तरफ़ से हौलनाक ख़बरें मिल रही हैं। वह मिलकर मेरे ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे, मुझे क़त्ल करने के मनसूबे बाँध रहे हैं।

14 लेकिन मैं ऐ रब, तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मैं कहता हूँ, "तू मेरा ख़ुदा है!"
15 मेरी तक़दीर * तेरे हाथ में है। मुझे मेरे दुश्मनों के हाथ से बचा, उनसे जो मेरे पीछे पड़ गए हैं।
16 अपने चेहरे का नूर अपने ख़ादिम पर चमका, अपनी मेहरबानी से मुझे नजात दे।

* **31:15** लफ़्ज़ी तरजुमा : मेरे औक़ात।

17 ऐ रब, मुझे शरमिंदा न होने दे, क्योंकि मैंने तुझे पुकारा है। मेरे बजाए बेदीनों के मुँह काले हो जाएँ, वह पाताल
में उतरकर चुप हो जाएँ।
18 उनके फ़रेबदेह होंट बंद हो जाएँ, क्योंकि वह तकब्बुर और हिक़ारत से रास्तबाज़ के ख़िलाफ़ कुफ़र बकते हैं।

19 तेरी भलाई कितनी अज़ीम है! तू उसे उनके लिए तैयार रखता है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उसे उन्हें दिखाता है जो
इनसानों के सामने से तुझमें पनाह लेते हैं।
20 तू उन्हें अपने चेहरे की आड़ में लोगों के हमलों से छुपा लेता, उन्हें ख़ैमे में लाकर इलज़ामतराश ज़बानों से
महफ़ूज़ रखता है।
21 रब की तमजीद हो, क्योंकि जब शहर का मुहासरा हो रहा था तो उसने मोजिज़ाना तौर पर मुझ पर मेहरबानी
की।
22 उस वक़्त मैं घबराकर बोला, "हाय, मैं तेरे हुज़ूर से मुंक़ते हो गया हूँ!" लेकिन जब मैंने चीख़ते-चिल्लाते हुए
तुझसे मदद माँगी तो तूने मेरी इल्तिजा सुन ली।

23 ऐ रब के तमाम ईमानदारो, उससे मुहब्बत रखो! रब वफ़ादारों को महफ़ूज़ रखता, लेकिन मग़रूरों को उनके
रवय्ये का पूरा अज्र देगा।
24 चुनाँचे मज़बूत और दिलेर हो, तुम सब जो रब के इंतज़ार में हो।

32

मुआफ़ी की बरकत *(तौबा का दूसरा ज़बूर)*
1 दाऊद का ज़बूर। हिकमत का गीत।
मुबारक है वह जिसके जरायम मुआफ़ किए गए, जिसके गुनाह ढाँपे गए हैं।
2 मुबारक है वह जिसका गुनाह रब हिसाब में नहीं लाएगा और जिसकी रूह में फ़रेब नहीं है।

3 जब मैं चुप रहा तो दिन-भर आहें भरने से मेरी हड्डियाँ गलने लगीं।
4 क्योंकि दिन-रात मैं तेरे हाथ के बोझ तले पिसता रहा, मेरी ताक़त गोया मौसमे-गरमा की झुलसती तपिश में जाती
रही। (सिलाह)
5 तब मैंने तेरे सामने अपना गुनाह तसलीम किया, मैं अपना गुनाह छुपाने से बाज़ आया। मैं बोला, "मैं रब के सामने
अपने जरायम का इक़रार करूँगा।" तब तूने मेरे गुनाह को मुआफ़ कर दिया। (सिलाह)

6 इसलिए तमाम ईमानदार उस वक़्त तुझसे दुआ करें जब तू मिल सकता है। यक़ीनन जब बड़ा सैलाब आए तो उन
तक नहीं पहुँचेगा।

7 तू मेरी छुपने की जगह है, तू मुझे परेशानी से महफ़ूज़ रखता, मुझे नजात के नग़मों से घेर लेता है। (सिलाह)
8 "मैं तुझे तालीम दूँगा, तुझे वह राह दिखाऊँगा जिस पर तुझे जाना है। मैं तुझे मशवरा देकर तेरी देख-भाल करूँगा।
9 नासमझ घोड़े या ख़च्चर की मानिंद न हो, जिन पर क़ाबू पाने के लिए लगाम और दहाने की ज़रूरत है, वरना वह
तेरे पास नहीं आएँगे।"

10 बेदीन की मुतअद्दिद परेशानियाँ होती हैं, लेकिन जो रब पर भरोसा रखे उसे वह अपनी शफ़क़त से घेरे रखता है।
11 ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी में जशन मनाओ! ऐ तमाम दियानतदारो, शादमानी के नारे लगाओ!

33

अल्लाह की हुकूमत और मदद की तारीफ़
1 ऐ रास्तबाज़ो, रब की ख़ुशी मनाओ! क्योंकि मुनासिब है कि सीधी राह पर चलनेवाले उस की सताइश करें।
2 सरोद बजाकर रब की हम्दो-सना करो। उस की तमजीद में दस तारोंवाला साज़ बजाओ।
3 उस की तमजीद में नया गीत गाओ, महारत से साज़ बजाकर ख़ुशी के नारे लगाओ।
4 क्योंकि रब का कलाम सच्चा है, और वह हर काम वफ़ादारी से करता है।
5 उसे रास्तबाज़ी और इनसाफ़ प्यारे हैं, दुनिया रब की शफ़क़त से भरी हुई है।

6 रब के कहने पर आसमान ख़लक़ हुआ, उसके मुँह के दम से सितारों का पूरा लशकर वुजूद में आया।
7 वह समुंदर के पानी का बड़ा ढेर जमा करता, पानी की गहराइयों को गोदामों में महफ़ूज़ रखता है।
8 कुल दुनिया रब का ख़ौफ़ माने, ज़मीन के तमाम बाशिंदे उससे दहशत खाएँ।
9 क्योंकि उसने फ़रमाया तो फ़ौरन वुजूद में आया, उसने हुक्म दिया तो उसी वक़्त क़ायम हुआ।
10 रब अक़वाम का मनसूबा नाकाम होने देता, वह उम्मतों के इरादों को शिकस्त देता है।
11 लेकिन रब का मनसूबा हमेशा तक कामयाब रहता, उसके दिल के इरादे पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहते हैं।

12 मुबारक है वह क़ौम जिसका ख़ुदा रब है, वह क़ौम जिसे उसने चुनकर अपनी मीरास बना लिया है।

13 रब आसमान से नज़र डालकर तमाम इनसानों का मुलाहज़ा करता है।
14 अपने तख़्त से वह ज़मीन के तमाम बाशिंदों का मुआयना करता है।
15 जिसने उन सबके दिलों को तश्कील दिया वह उनके तमाम कामों पर ध्यान देता है।

16 बादशाह की बड़ी फ़ौज उसे नहीं छुड़ाती, और सूरमे की बड़ी ताक़त उसे नहीं बचाती।
17 घोड़ा भी मदद नहीं कर सकता। जो उस पर उम्मीद रखे वह धोका खाएगा। उस की बड़ी ताक़त छुटकारा नहीं
देती।
18 यक़ीनन रब की आँख उन पर लगी रहती है जो उसका ख़ौफ़ मानते और उस की मेहरबानी के इंतज़ार में रहते हैं,
19 कि वह उनकी जान मौत से बचाए और काल में महफ़ूज़ रखे।

20 हमारी जान रब के इंतज़ार में है। वही हमारा सहारा, हमारी ढाल है।
21 हमारा दिल उसमें ख़ुश है, क्योंकि हम उसके मुक़द्दस नाम पर भरोसा रखते हैं।

22 ऐ रब, तेरी मेहरबानी हम पर रहे, क्योंकि हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं।

34

अल्लाह की हिफ़ाज़त

1 दाऊद का यह ज़बूर उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब उसने फ़िलिस्ती बादशाह अबीमलिक के सामने पागल बनने
का रूप भर लिया। यह देखकर बादशाह ने उसे भगा दिया। चले जाने के बाद दाऊद ने यह गीत गाया।
हर वक़्त मैं रब की तमजीद करूँगा, उस की हम्दो-सना हमेशा ही मेरे होंटों पर रहेगी।
2 मेरी जान रब पर फ़ख़र करेगी। मुसीबतज़दा यह सुनकर ख़ुश हो जाएँ।
3 आओ, मेरे साथ रब की ताज़ीम करो। आओ, हम मिलकर उसका नाम सरबुलंद करें।

4 मैंने रब को तलाश किया तो उसने मेरी सुनी। जिन चीज़ों से मैं दहशत खा रहा था उन सबसे उसने मुझे रिहाई दी।
5 जिनकी आँखें उस पर लगी रहें वह ख़ुशी से चमकेंगे, और उनके मुँह शरमिंदा नहीं होंगे।
6 इस नाचार ने पुकारा तो रब ने उस की सुनी, उसने उसे उस की तमाम मुसीबतों से नजात दी।

7 जो रब का ख़ौफ़ मानें उनके इर्दगिर्द उसका फ़रिश्ता ख़ैमाज़न होकर उनको बचाए रखता है।
8 रब की भलाई का तजरबा करो। मुबारक है वह जो उसमें पनाह ले।
9 ऐ रब के मुक़द्दसीन, उसका ख़ौफ़ मानो, क्योंकि जो उसका ख़ौफ़ मानें उन्हें कमी नहीं।
10 जवान शेरबबर कभी ज़रूरतमंद और भूके होते हैं, लेकिन रब के तालिबों को किसी भी अच्छी चीज़ की कमी
नहीं होगी।
11 ऐ बच्चो, आओ, मेरी बातें सुनो! मैं तुम्हें रब के ख़ौफ़ की तालीम दूँगा।
12 कौन मज़े से ज़िंदगी गुज़ारना और अच्छे दिन देखना चाहता है?
13 वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके और अपने होंटों को झूट बोलने से।
14 वह बुराई से मुँह फेरकर नेक काम करे, सुलह-सलामती का तालिब होकर उसके पीछे लगा रहे।
15 रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी इल्तिजाओं की तरफ़ मायल हैं।
16 लेकिन रब का चेहरा उनके ख़िलाफ़ है जो ग़लत काम करते हैं। उनका ज़मीन पर नामो-निशान तक नहीं रहेगा।

17 जब रास्तबाज़ फ़रियाद करें तो रब उनकी सुनता, वह उन्हें उनकी तमाम मुसीबत से छुटकारा देता है।
18 रब शिकस्तादिलों के क़रीब होता है, वह उन्हें रिहाई देता है जिनकी रूह को ख़ाक में कुचला गया हो।
19 रास्तबाज़ की मुतअद्दिद तकालीफ़ होती हैं, लेकिन रब उसे उन सबसे बचा लेता है।
20 वह उस की तमाम हड्डियों की हिफ़ाज़त करता है, एक भी नहीं तोड़ी जाएगी।
21 बुराई बेदीन को मार डालेगी, और जो रास्तबाज़ से नफ़रत करे उसे मुनासिब अज्र मिलेगा।
22 लेकिन रब अपने ख़ादिमों की जान का फ़िद्या देगा। जो भी उसमें पनाह ले उसे सज़ा नहीं मिलेगी।

35

शरीरों के हमलों से रिहाई के लिए दुआ

1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, उनसे झगड़ जो मेरे साथ झगड़ते हैं, उनसे लड़ जो मेरे साथ लड़ते हैं।
2 लंबी और छोटी ढाल पकड़ ले और उठकर मेरी मदद करने आ।
3 नेज़े और बरछी को निकालकर उन्हें रोक दे जो मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं! मेरी जान से फ़रमा, "मैं तेरी नजात हूँ!"
4 जो मेरी जान के लिए कोशाँ हैं उनका मुँह काला हो जाए, वह रुसवा हो जाएँ। जो मुझे मुसीबत में डालने के मनसूबे
बाँध रहे हैं वह पीछे हटकर शरमिंदा हों।
5 वह हवा में भूसे की तरह उड़ जाएँ जब रब का फ़रिश्ता उन्हें भगा दे।
6 उनका रास्ता तारीक और फिसलना हो जब रब का फ़रिश्ता उनके पीछे पड़ जाए।
7 क्योंकि उन्होंने बेसबब और चुपके से मेरे रास्ते में जाल बिछाया, बिलावजह मुझे पकड़ने का गढ़ा खोदा है।
8 इसलिए तबाही अचानक ही उन पर आ पड़े, पहले उन्हें पता ही न चले। जो जाल उन्होंने चुपके से बिछाया उसमें
वह ख़ुद उलझ जाएँ, जिस गढ़े को उन्होंने खोदा उसमें वह ख़ुद गिरकर तबाह हो जाएँ।

9 तब मेरी जान रब की ख़ुशी मनाएगी और उस की नजात के बाइस शादमान होगी।
10 मेरे तमाम आज़ा कह उठेंगे, "ऐ रब, कौन तेरी मानिंद है? कोई भी नहीं! क्योंकि तू ही मुसीबतज़दा को
ज़बरदस्त आदमी से छुटकारा देता, तू ही नाचार और ग़रीब को लूटनेवाले के हाथ से बचा लेता है।"

11 ज़ालिम गवाह मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हो रहे हैं। वह ऐसी बातों के बारे में मेरी पूछ-गछ कर रहे हैं जिनसे मैं
वाक़िफ़ ही नहीं।
12 वह मेरी नेकी के एवज़ मुझे नुक़सान पहुँचा रहे हैं। अब मेरी जान तने-तनहा है।
13 जब वह बीमार हुए तो मैंने टाट ओढ़कर और रोज़ा रखकर अपनी जान को दुख दिया। काश मेरी दुआ मेरी गोद
में वापस आए!
14 मैंने यों मातम किया जैसे मेरा कोई दोस्त या भाई हो। मैं मातमी लिबास पहनकर यों ख़ाक में झुक गया जैसे
अपनी माँ का जनाज़ा हो।

15 लेकिन जब मैं ख़ुद ठोकर खाने लगा तो वह ख़ुश होकर मेरे ख़िलाफ़ जमा हुए। वह मुझ पर हमला करने के लिए
इकट्ठे हुए, और मुझे मालूम ही नहीं था। वह मुझे फाड़ते रहे और बाज़ न आए।
16 मुसलसल कुफ़र बक बककर वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते, मेरे ख़िलाफ़ दाँत पीसते थे।
17 ऐ रब, तू कब तक ख़ामोशी से देखता रहेगा? मेरी जान को उनकी तबाहकुन हरकतों से बचा, मेरी ज़िंदगी को
जवान शेरों से छुटकारा दे।
18 तब मैं बड़ी जमात में तेरी सताइश और बड़े हुजूम में तेरी तारीफ़ करूँगा।
19 उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न दे जो बेसबब मेरे दुश्मन हैं। उन्हें मुझ पर नाक-भौं चढ़ाने न दे जो बिलावजह मुझसे
कीना रखते हैं।
20 क्योंकि वह ख़ैर और सलामती की बातें नहीं करते बल्कि उनके ख़िलाफ़ फ़रेबदेह मनसूबे बाँधते हैं जो अमन
और सुकून से मुल्क में रहते हैं।
21 वह मुँह फाड़कर कहते हैं, "लो जी, हमने अपनी आँखों से उस की हरकतें देखी हैं!"
22 ऐ रब, तुझे सब कुछ नज़र आया है। ख़ामोश न रह! ऐ रब, मुझसे दूर न हो।
23 ऐ रब मेरे ख़ुदा, जाग उठ! मेरे दिफ़ा में उठकर उनसे लड़!
24 ऐ रब मेरे ख़ुदा, अपनी रास्ती के मुताबिक़ मेरा इनसाफ़ कर। उन्हें मुझ पर बग़लें बजाने न दे।

25 वह दिल में न सोचें, "लो जी, हमारा इरादा पूरा हुआ है!" वह न बोलें, "हमने उसे हड़प कर लिया है।"
26 जो मेरा नुक़सान देखकर ख़ुश हुए उन सबका मुँह काला हो जाए, वह शरमिंदा हो जाएँ। जो मुझे दबाकर अपने
आप पर फ़ख़र करते हैं वह शरमिंदगी और रुसवाई से मुलब्बस हो जाएँ।

27 लेकिन जो मेरे इनसाफ़ के आरज़ूमंद हैं वह ख़ुश हों और शादियाना बजाएँ। वह कहें, "रब की बड़ी तारीफ़ हो,
जो अपने ख़ादिम की ख़ैरियत चाहता है।"
28 तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती बयान करेगी, वह सारा दिन तेरी तमजीद करती रहेगी।

36

अल्लाह की मेहरबानी की तारीफ़

1 रब के ख़ादिम दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
बदकारी बेदीन के दिल ही में उससे बात करती है। उस की आँखों के सामने अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं होता,
2 क्योंकि उस की नज़र में यह बात फ़ख़र का बाइस है कि उसे क़ुसूरवार पाया गया, कि वह नफ़रत करता है।
3 उसके मुँह से शरारत और फ़रेब निकलता है, वह समझदार होने और नेक काम करने से बाज़ आया है।
4 अपने बिस्तर पर भी वह शरारत के मनसूबे बाँधता है। वह मज़बूती से बुरी राह पर खड़ा रहता और बुराई को
मुस्तरद नहीं करता।

5 ऐ रब, तेरी शफ़क़त आसमान तक, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
6 तेरी रास्ती बुलंदतरीन पहाड़ों की मानिंद, तेरा इनसाफ़ समुंदर की गहराइयों जैसा है। ऐ रब, तू इनसानो-हैवान की
मदद करता है।
7 ऐ अल्लाह, तेरी शफ़क़त कितनी बेशक़ीमत है! आदमज़ाद तेरे परों के साये में पनाह लेते हैं।
8 वह तेरे घर के उम्दा खाने से तरो-ताज़ा हो जाते हैं, और तू उन्हें अपनी ख़ुशियों की नदी में से पिलाता है।
9 क्योंकि ज़िंदगी का सरचश्मा तेरे ही पास है, और हम तेरे नूर में रहकर नूर का मुशाहदा करते हैं।
10 अपनी शफ़क़त उन पर फैलाए रख जो तुझे जानते हैं, अपनी रास्ती उन पर जो दिल से दियानतदार हैं।
11 मग़रूरों का पाँव मुझ तक न पहुँचे, बेदीनों का हाथ मुझे बेघर न बनाए।
12 देखो, बदकार गिर गए हैं! उन्हें ज़मीन पर पटख़ दिया गया है, और वह दुबारा कभी नहीं उठेंगे।

37

बेदीनों की बज़ाहिर ख़ुशहाली

1 दाऊद का ज़बूर।
शरीरों के बाइस बेचैन न हो जा, बदकारों पर रश्क न कर।
2 क्योंकि वह घास की तरह जल्द ही मुरझा जाएंगे, हरियाली की तरह जल्द ही सूख जाएंगे।
3 रब पर भरोसा रखकर भलाई कर, मुल्क में रहकर वफ़ादारी की परवरिश कर।
4 रब से लुत्फ़अंदोज़ हो तो जो तेरा दिल चाहे वह तुझे देगा।
5 अपनी राह रब के सुपुर्द कर। उस पर भरोसा रख तो वह तुझे कामयाबी बख़्शेगा।
6 तब वह तेरी रास्तबाज़ी सूरज की तरह तुलू होने देगा और तेरा इनसाफ़ दोपहर की रौशनी की तरह चमकने देगा।
7 रब के हुज़ूर चुप होकर सब्र से उसका इंतज़ार कर। बेक़रार न हो अगर साज़िशें करनेवाला कामयाब हो।
8 ख़फ़ा होने से बाज़ आ, ग़ुस्से को छोड़ दे। रंजीदा न हो, वरना बुरा ही नतीजा निकलेगा।

9 क्योंकि शरीर मिट जाएंगे जबकि रब से उम्मीद रखनेवाले मुल्क को मीरास में पाएँगे।
10 मज़ीद थोड़ी देर सब्र कर तो बेदीन का नामो-निशान मिट जाएगा। तू उसका खोज लगाएगा, लेकिन कहीं नहीं
पाएगा।
11 लेकिन हलीम मुल्क को मीरास में पाकर बड़े अमन और सुकून से लुत्फ़अंदोज़ होंगे।
12 बेशक बेदीन दाँत पीस पीसकर रास्तबाज़ के ख़िलाफ़ साज़िशें करता रहे।
13 लेकिन रब उस पर हँसता है, क्योंकि वह जानता है कि उसका अंजाम क़रीब ही है।
14 बेदीनों ने तलवार को खींचा और कमान को तान लिया है ताकि नाचारों और ज़रूरतमंदों को गिरा दें और सीधी
राह पर चलनेवालों को क़त्ल करें।
15 लेकिन उनकी तलवार उनके अपने दिल में घोंपी जाएगी, उनकी कमान टूट जाएगी।

16 रास्तबाज़ को जो थोड़ा-बहुत हासिल है वह बहुत बेदीनों की दौलत से बेहतर है।
17 क्योंकि बेदीनों का बाज़ू टूट जाएगा जबकि रब रास्तबाज़ों को सँभालता है।
18 रब बेइलज़ामों के दिन जानता है, और उनकी मौरूसी मिलकियत हमेशा के लिए क़ायम रहेगी।
19 मुसीबत के वक़्त वह शर्मसार नहीं होंगे, काल भी पड़े तो सेर होंगे।
20 लेकिन बेदीन हलाक हो जाएंगे, और रब के दुश्मन चरागाहों की शान की तरह नेस्त हो जाएंगे, धुएँ की तरह
ग़ायब हो जाएंगे।
21 बेदीन क़र्ज़ लेता और उसे नहीं उतारता, लेकिन रास्तबाज़ मेहरबान है और फ़ैयाज़ी से देता है।
22 क्योंकि जिन्हें रब बरकत दे वह मुल्क को मीरास में पाएँगे, लेकिन जिन पर वह लानत भेजे उनका नामो-निशान
तक नहीं रहेगा।
23 अगर किसी के पाँव जम जाएँ तो यह रब की तरफ़ से है। ऐसे शख़्स की राह को वह पसंद करता है।
24 अगर गिर भी जाए तो पड़ा नहीं रहेगा, क्योंकि रब उसके हाथ का सहारा बना रहेगा।

25 मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ। लेकिन मैंने कभी नहीं देखा कि रास्तबाज़ को तर्क किया गया या उसके
बच्चों को भीक माँगनी पड़ी।
26 वह हमेशा मेहरबान और क़र्ज़ देने के लिए तैयार है। उस की औलाद बरकत का बाइस होगी।

27 बुराई से बाज़ आकर भलाई कर। तब तू हमेशा के लिए मुल्क में आबाद रहेगा,
28 क्योंकि रब को इनसाफ़ प्यारा है, और वह अपने ईमानदारों को कभी तर्क नहीं करेगा। वह अबद तक महफ़ूज़
रहेंगे जबकि बेदीनों की औलाद का नामो-निशान तक नहीं रहेगा।
29 रास्तबाज़ मुल्क को मीरास में पाकर उसमें हमेशा बसेंगे।
30 रास्तबाज़ का मुँह हिकमत बयान करता और उस की ज़बान से इनसाफ़ निकलता है।
31 अल्लाह की शरीअत उसके दिल में है, और उसके क़दम कभी नहीं डगमगाएँगे।
32 बेदीन रास्तबाज़ की ताक में बैठकर उसे मार डालने का मौक़ा ढूँडता है।
33 लेकिन रब रास्तबाज़ को उसके हाथ में नहीं छोड़ेगा, वह उसे अदालत में मुजरिम नहीं ठहरने देगा।
34 रब के इंतज़ार में रह और उस की राह पर चलता रह। तब वह तुझे सरफ़राज़ करके मुल्क का वारिस बनाएगा,
और तू बेदीनों की हलाकत देखेगा।

35 मैंने एक बेदीन और ज़ालिम आदमी को देखा जो फलते-फूलते देवदार के दरख़्त की तरह आसमान से बातें करने
लगा।
36 लेकिन थोड़ी देर के बाद जब मैं दुबारा वहाँ से गुज़रा तो वह था नहीं। मैंने उसका खोज लगाया, लेकिन कहीं
न मिला।
37 बेइलज़ाम पर ध्यान दे और दियानतदार पर ग़ौर कर, क्योंकि आख़िरकार उसे अमन और सुकून हासिल होगा।
38 लेकिन मुजरिम मिलकर तबाह हो जाएंगे, और बेदीनों को आख़िरकार रूए-ज़मीन पर से मिटाया जाएगा।
39 रास्तबाज़ों की नजात रब की तरफ़ से है, मुसीबत के वक़्त वही उनका क़िला है।
40 रब ही उनकी मदद करके उन्हें छुटकारा देगा, वही उन्हें बेदीनों से बचाकर नजात देगा। क्योंकि उन्होंने उसमें
पनाह ली है।

38

सज़ा से बचने की इल्तिजा *(तौबा का तीसरा ज़बूर)*
1 दाऊद का ज़बूर। याददाश्त के लिए।
ऐ रब, अपने ग़ज़ब में मुझे सज़ा न दे, क़हर में मुझे तंबीह न कर!
2 क्योंकि तेरे तीर मेरे जिस्म में लग गए हैं, तेरा हाथ मुझ पर भारी है।
3 तेरी लानत के बाइस मेरा पूरा जिस्म बीमार है, मेरे गुनाह के बाइस मेरी तमाम हड्डियाँ गलने लगी हैं।
4 क्योंकि मैं अपने गुनाहों के सैलाब में डूब गया हूँ, वह नाक़ाबिले-बरदाश्त बोझ बन गए हैं।
5 मेरी हमाक़त के बाइस मेरे ज़ख़्मों से बदबू आने लगी, वह गलने लगे हैं।
6 मैं कुबड़ा बनकर ख़ाक में दब गया हूँ, पूरा दिन मातमी लिबास पहने फिरता हूँ।
7 मेरी कमर में शदीद सोज़िश है, पूरा जिस्म बीमार है।

8 मैं निढाल और पाश पाश हो गया हूँ। दिल के अज़ाब के बाइस मैं चीख़ता-चिल्लाता हूँ।

9 ऐ रब, मेरी तमाम आरज़ू तेरे सामने है, मेरी आहें तुझसे पोशीदा नहीं रहतीं।
10 मेरा दिल ज़ोर से धड़कता, मेरी ताक़त जवाब दे गई बल्कि मेरी आँखों की रौशनी भी जाती रही है।
11 मेरे दोस्त और साथी मेरी मुसीबत देखकर मुझसे गुरेज़ करते, मेरे क़रीब के रिश्तेदार दूर खड़े रहते हैं।
12 मेरे जानी दुश्मन फंदे बिछा रहे हैं, जो मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं वह धमकियाँ दे रहे और सारा सारा दिन
फ़रेबदेह मनसूबे बाँध रहे हैं।
13 और मैं? मैं तो गोया बहरा हूँ, मैं नहीं सुनता। मैं गूँगे की मानिंद हूँ जो अपना मुँह नहीं खोलता।
14 मैं ऐसा शख़्स बन गया हूँ जो न सुनता, न जवाब में एतराज़ करता है।

15 क्योंकि ऐ रब, मैं तेरे इंतज़ार में हूँ। ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू ही मेरी सुनेगा।
16 मैं बोला, "ऐसा न हो कि वह मेरा नुक़सान देखकर बग़लें बजाएँ, वह मेरे पाँवों के डगमगाने पर मुझे दबाकर
अपने आप पर फ़ख़र करें।"
17 क्योंकि मैं लड़खड़ाने को हूँ, मेरी अज़ियत मुतवातिर मेरे सामने रहती है।
18 चुनाँचे मैं अपना क़ुसूर तसलीम करता हूँ, मैं अपने गुनाह के बाइस ग़मगीन हूँ।
19 मेरे दुश्मन ज़िंदा और ताक़तवर हैं, और जो बिलावजह मुझसे नफ़रत करते हैं वह बहुत हैं।
20 वह नेकी के बदले बदी करते हैं। वह इसलिए मेरे दुश्मन हैं कि मैं भलाई के पीछे लगा रहता हूँ।

21 ऐ रब, मुझे तर्क न कर! ऐ अल्लाह, मुझसे दूर न रह!
22 ऐ रब मेरी नजात, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

39

इनसान के फ़ानी होने के पेशे-नज़र इल्तिजा
1 दाऊद का ज़बूर। यदूतून के लिए। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
मैं बोला, "मैं अपनी राहों पर ध्यान दूँगा ताकि अपनी ज़बान से गुनाह न करूँ। जब तक बेदीन मेरे सामने रहे उस
वक़्त तक अपने मुँह को लगाम दिए रहूँगा।"
2 मैं चुप-चाप हो गया और अच्छी चीज़ों से दूर रहकर ख़ामोश रहा। तब मेरी अज़ियत बढ़ गई।
3 मेरा दिल परेशानी से तपने लगा, मेरे कराहते कराहते मेरे अंदर बेचैनी की आग-सी भड़क उठी। तब बात ज़बान
पर आ गई,
4 "ऐ रब, मुझे मेरा अंजाम और मेरी उम्र की हद दिखा ताकि मैं जान लूँ कि कितना फ़ानी हूँ।
5 देख, मेरी ज़िंदगी का दौरानिया तेरे सामने लमहा-भर का है। मेरी पूरी उम्र तेरे नज़दीक कुछ भी नहीं है। हर इनसान
दम-भर का ही है, ख़ाह वह कितनी ही मज़बूती से खड़ा क्यों न हो। (सिलाह)
6 जब वह इधर उधर घूमे फिरे तो साया ही है। उसका शोर-शराबा बातिल है, और गो वह दौलत जमा करने में
मसरूफ़ रहे तो भी उसे मालूम नहीं कि बाद में किसके क़ब्ज़े में आएगी।"

7 चुनाँचे ऐ रब, मैं किसके इंतज़ार में रहूँ? तू ही मेरी वाहिद उम्मीद है!
8 मेरे तमाम गुनाहों से मुझे छुटकारा दे। अहमक़ को मेरी रुसवाई करने न दे।
9 मैं ख़ामोश हो गया हूँ और कभी अपना मुँह नहीं खोलता, क्योंकि यह सब कुछ तेरे ही हाथ से हुआ है।
10 अपना अज़ाब मुझसे दूर कर! तेरे हाथ की ज़रबों से मैं हलाक हो रहा हूँ।
11 जब तू इनसान को उसके क़ुसूर की मुनासिब सज़ा देकर उसको तंबीह करता है तो उस की ख़ूबसूरती कीड़ा लगे
कपड़े की तरह जाती रहती है। हर इनसान दम-भर का ही है। (सिलाह)

12 ऐ रब, मेरी दुआ सुन और मदद के लिए मेरी आहों पर तवज्जुह दे। मेरे आँसुओं को देखकर ख़ामोश न रह।
क्योंकि मैं तेरे हुज़ूर रहनेवाला परदेसी, अपने तमाम बापदादा की तरह तेरे हुज़ूर बसनेवाला ग़ैरशहरी हूँ।
13 मुझसे बाज़ आ ताकि मैं कूच करके नेस्त हो जाने से पहले एक बार फिर हश्शाश-बश्शाश हो जाऊँ।

40

शुक्र और दरख़ास्त
1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
मैं सब्र से रब के इंतज़ार में रहा तो वह मेरी तरफ़ मायल हुआ और मदद के लिए मेरी चीख़ों पर तवज्जुह दी।
2 वह मुझे तबाही के गढ़े से खींच लाया, दलदल और कीचड़ से निकाल लाया। उसने मेरे पाँवों को चटान पर रख
दिया, और अब मैं मज़बूती से चल-फिर सकता हूँ।
3 उसने मेरे मुँह में नया गीत डाल दिया, हमारे ख़ुदा की हम्दो-सना का गीत उभरने दिया। बहुत-से लोग यह देखेंगे
और ख़ौफ़ खाकर रब पर भरोसा रखेंगे।
4 मुबारक है वह जो रब पर पूरा भरोसा रखता है, जो तंग करनेवालों और फ़रेब में उलझे हुओं की तरफ़ रुख़ नहीं
करता।
5 ऐ रब मेरे ख़ुदा, बार बार तूने हमें अपने मोजिज़े दिखाए, जगह बजगह अपने मनसूबे वुजूद में लाकर हमारी मदद
की। तुझ जैसा कोई नहीं है। तेरे अज़ीम काम बेशुमार हैं, मैं उनकी पूरी फ़हरिस्त बता भी नहीं सकता।

6 तू क़ुरबानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था, लेकिन तूने मेरे कानों को खोल दिया। तूने भस्म होनेवाली क़ुरबानियों
और गुनाह की क़ुरबानियों का तक़ाज़ा न किया।
7 फिर मैं बोल उठा, "मैं हाज़िर हूँ जिस तरह मेरे बारे में कलामे-मुक़द्दस * में लिखा है।
8 ऐ मेरे ख़ुदा, मैं ख़ुशी से तेरी मरज़ी पूरी करता हूँ, तेरी शरीअत मेरे दिल में टिक गई है।"
9 मैंने बड़े इजतिमा में रास्ती की ख़ुशख़बरी सुनाई है। ऐ रब, यक़ीनन तू जानता है कि मैंने अपने होंटों को बंद न
रखा।
10 मैंने तेरी रास्ती अपने दिल में छुपाए न रखी बल्कि तेरी वफ़ादारी और नजात बयान की। मैंने बड़े इजतिमा में
तेरी शफ़क़त और सदाक़त की एक बात भी पोशीदा न रखी।

11 ऐ रब, तू मुझे अपने रहम से महरूम नहीं रखेगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी मुसलसल मेरी निगहबानी करेंगी।
12 क्योंकि बेशुमार तकलीफ़ों ने मुझे घेर रखा है, मेरे गुनाहों ने आख़िरकार मुझे आ पकड़ा है। अब मैं नज़र भी
नहीं उठा सकता। वह मेरे सर के बालों से ज़्यादा हैं, इसलिए मैं हिम्मत हार गया हूँ।

13 ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा! ऐ रब, मेरी मदद करने में जल्दी कर!
14 मेरे जानी दुश्मन सब शरमिंदा हो जाएँ, उनकी सख़्त रुसवाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से लुत्फ़ उठाते हैं
वह पीछे हट जाएँ, उनका मुँह काला हो जाए।
15 जो मेरी मुसीबत देखकर क़हक़हा लगाते हैं वह शर्म के मारे तबाह हो जाएँ।

16 लेकिन तेरे तालिब शादमान होकर तेरी ख़ुशी मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें, "रब अज़ीम
है!"
17 मैं नाचार और ज़रूरतमंद हूँ, लेकिन रब मेरा ख़याल रखता है। तू ही मेरा सहारा और मेरा नजातदहिंदा है। ऐ मेरे
ख़ुदा, देर न कर!

41

मरीज़ की दुआ
1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
मुबारक है वह जो पस्तहाल का ख़याल रखता है। मुसीबत के दिन रब उसे छुटकारा देगा।
2 रब उस की हिफ़ाज़त करके उस की ज़िंदगी को महफ़ूज़ रखेगा, वह मुल्क में उसे बरकत देकर उसे उसके दुश्मनों
के लालच के हवाले नहीं करेगा।
3 बीमारी के वक़्त रब उसको बिस्तर पर सँभालेगा। तू उस की सेहत पूरी तरह बहाल करेगा।

4 मैं बोला, "ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मुझे शफ़ा दे, क्योंकि मैंने तेरा ही गुनाह किया है।"
5 मेरे दुश्मन मेरे बारे में ग़लत बातें करके कहते हैं, "वह कब मरेगा? उसका नामो-निशान कब मिटेगा?"

* **40:7** लफ़्ज़ी तरजुमा : किताब के तूमार में।

6 जब कभी कोई मुझसे मिलने आए तो उसका दिल झूट बोलता है। पसे-परदा वह ऐसी नुक़सानदेह मालूमात जमा
करता है जिन्हें बाद में बाहर जाकर गलियों में फैला सके।
7 मुझसे नफ़रत करनेवाले सब आपस में मेरे ख़िलाफ़ फुसफुसाते हैं। वह मेरे ख़िलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधकर कहते हैं,
8 "उसे मोहलक मरज़ लग गया है। वह कभी अपने बिस्तर पर से दुबारा नहीं उठेगा।"
9 मेरा दोस्त भी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है। जिस पर मैं एतमाद करता था और जो मेरी रोटी खाता था, उसने
मुझ पर लात उठाई है।

10 लेकिन तू ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर! मुझे दुबारा उठा खड़ा कर ताकि उन्हें उनके सुलूक का बदला दे सकूँ।
11 इससे मैं जानता हूँ कि तू मुझसे ख़ुश है कि मेरा दुश्मन मुझ पर फ़तह के नारे नहीं लगाता।
12 तूने मुझे मेरी दियानतदारी के बाइस क़ायम रखा और हमेशा के लिए अपने हुज़ूर खड़ा किया है।

13 रब की हम्द हो जो इसराईल का ख़ुदा है। अज़ल से अबद तक उस की तमजीद हो। आमीन, फिर आमीन।

दूसरी किताब 42-72

42

परदेस में अल्लाह का आरज़ूमंद
1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिकमत का गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, जिस तरह हिरनी नदियों के ताज़ा पानी के लिए तड़पती है उसी तरह मेरी जान तेरे लिए तड़पती है।
2 मेरी जान ख़ुदा, हाँ ज़िंदा ख़ुदा की प्यासी है। मैं कब जाकर अल्लाह का चेहरा देखूँगा?

3 दिन-रात मेरे आँसू मेरी ग़िज़ा रहे हैं। क्योंकि पूरा दिन मुझसे कहा जाता है, "तेरा ख़ुदा कहाँ है?"
4 पहले हालात याद करके मैं अपने सामने अपने दिल की आहो-ज़ारी उंडेल देता हूँ। * कितना मज़ा आता था जब
हमारा जुलूस निकलता था, जब मैं हुजूम के बीच में ख़ुशी और शुक्रगुज़ारी के नारे लगाते हुए अल्लाह की सुकूनतगाह
की जानिब बढ़ता जाता था। कितना शोर मच जाता था जब हम जशन मनाते हुए घुमते-फिरते थे।

5 ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा
उस की सताइश करूँगा जो मेरा ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

6 मेरी जान ग़म के मारे पिघल रही है। इसलिए मैं तुझे यरदन के मुल्क, हरमून के पहाड़ी सिलसिले और कोहे-मिसआर
से याद करता हूँ।
7 जब से तेरे आबशारों की आवाज़ बुलंद हुई तो एक सैलाब दूसरे को पुकारने लगा है। तेरी तमाम मौजें और लहरें
मुझ पर से गुज़र गई हैं।
8 दिन के वक़्त रब अपनी शफ़क़त भेजेगा, और रात के वक़्त उसका गीत मेरे साथ होगा, मैं अपनी हयात के ख़ुदा
से दुआ करूँगा।
9 मैं अल्लाह अपनी चटान से कहूँगा, "तू मुझे क्यों भूल गया है? मैं अपने दुश्मन के ज़ुल्म के बाइस क्यों मातमी
लिबास पहने फिरूँ?"
10 मेरे दुश्मनों की लान-तान से मेरी हड्डियाँ टूट रही हैं, क्योंकि पूरा दिन वह कहते हैं, "तेरा ख़ुदा कहाँ है?"

11 ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा
उस की सताइश करूँगा जो मेरा ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

43

1 ऐ अल्लाह, मेरा इनसाफ़ कर! मेरे लिए ग़ैरईमानदार क़ौम से लड़, मुझे धोकेबाज़ और शरीर आदमियों से बचा।
2 क्योंकि तू मेरी पनाह का ख़ुदा है। तूने मुझे क्यों रद्द किया है? मैं अपने दुश्मन के ज़ुल्म के बाइस क्यों मातमी
लिबास पहने फिरूँ?

* **42:4** लफ़्ज़ी तरजुमा : अपनी जान उंडेल देता हूँ।

3 अपनी रौशनी और सच्चाई को भेज ताकि वह मेरी राहनुमाई करके मुझे तेरे मुक़द्दस पहाड़ और तेरी सुकूनतगाह
के पास पहुँचाएँ।
4 तब मैं अल्लाह की क़ुरबानगाह के पास आऊँगा, उस ख़ुदा के पास जो मेरी ख़ुशी और फ़रहत है। ऐ अल्लाह मेरे
ख़ुदा, वहाँ मैं सरोद बजाकर तेरी सताइश करूँगा।

5 ऐ मेरी जान, तू ग़म क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा
उस की सताइश करूँगा जो मेरा ख़ुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

44

क्या अल्लाह ने अपनी क़ौम को रद्द किया है?

1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिकमत का गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, जो कुछ तूने हमारे बापदादा के ऐयाम में यानी क़दीम ज़माने में किया वह हमने अपने कानों से उनसे
सुना है।
2 तूने ख़ुद अपने हाथ से दीगर क़ौमों को निकालकर हमारे बापदादा को मुल्क में पौदे की तरह लगा दिया। तूने ख़ुद
दीगर उम्मतों को शिकस्त देकर हमारे बापदादा को मुल्क में फलने फूलने दिया।
3 उन्होंने अपनी ही तलवार के ज़रीए मुल्क पर क़ब्ज़ा नहीं किया, अपने ही बाज़ू से फ़तह नहीं पाई बल्कि तेरे
दहने हाथ, तेरे बाज़ू और तेरे चेहरे के नूर ने यह सब कुछ किया। क्योंकि वह तुझे पसंद थे।
4 तू मेरा बादशाह, मेरा ख़ुदा है। तेरे ही हुक्म पर याक़ूब को मदद हासिल होती है।
5 तेरी मदद से हम अपने दुश्मनों को ज़मीन पर पटख़ देते, तेरा नाम लेकर अपने मुख़ालिफ़ों को कुचल देते हैं।
6 क्योंकि मैं अपनी कमान पर एतमाद नहीं करता, और मेरी तलवार मुझे नहीं बचाएगी
7 बल्कि तू ही हमें दुश्मन से बचाता, तू ही उन्हें शरमिंदा होने देता है जो हमसे नफ़रत करते हैं।
8 पूरा दिन हम अल्लाह पर फ़ख़र करते हैं, और हम हमेशा तक तेरे नाम की तमजीद करेंगे। (सिलाह)

9 लेकिन अब तूने हमें रद्द कर दिया, हमें शरमिंदा होने दिया है। जब हमारी फ़ौजें लड़ने के लिए निकलती हैं तो तू
उनका साथ नहीं देता।
10 तूने हमें दुश्मन के सामने पसपा होने दिया, और जो हमसे नफ़रत करते हैं उन्होंने हमें लूट लिया है।
11 तूने हमें भेड़-बकरियों की तरह क़स्साब के हाथ में छोड़ दिया, हमें मुख़्तलिफ़ क़ौमों में मुंतशिर कर दिया है।
12 तूने अपनी क़ौम को ख़फ़ीफ़-सी रक़म के लिए बेच डाला, उसे फ़रोख़्त करने से नफ़ा हासिल न हुआ।
13 यह तेरी तरफ़ से हुआ कि हमारे पड़ोसी हमें रुसवा करते, गिर्दो-नवाह के लोग हमें लान-तान करते हैं।
14 हम अक़वाम में इबरतअंगेज़ मिसाल बन गए हैं। लोग हमें देखकर तौबा तौबा कहते हैं।
15 दिन-भर मेरी रुसवाई मेरी आँखों के सामने रहती है। मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है,
16 क्योंकि मुझे उनकी गालियाँ और कुफ़र सुनना पड़ता है, दुश्मन और इंतक़ाम लेने पर तुले हुए को बरदाश्त करना
पड़ता है।

17 यह सब कुछ हम पर आ गया है, हालाँकि न हम तुझे भूल गए और न तेरे अहद से बेवफ़ा हुए हैं।
18 न हमारा दिल बाग़ी हो गया, न हमारे क़दम तेरी राह से भटक गए हैं।
19 ताहम तूने हमें चूर चूर करके गीदड़ों के दरमियान छोड़ दिया, तूने हमें गहरी तारीकी में डूबने दिया है।
20 अगर हम अपने ख़ुदा का नाम भूलकर अपने हाथ किसी और माबूद की तरफ़ उठाते
21 तो क्या अल्लाह को यह बात मालूम न हो जाती? ज़रूर! वह तो दिल के राज़ों से वाक़िफ़ होता है।
22 लेकिन तेरी ख़ातिर हमें दिन-भर मौत का सामना करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होनेवाली भेड़ों के बराबर
समझते हैं।

23 ऐ रब, जाग उठ! तू क्यों सोया हुआ है? हमें हमेशा के लिए रद्द न कर बल्कि हमारी मदद करने के लिए खड़ा
हो जा।
24 तू अपना चेहरा हमसे पोशीदा क्यों रखता है, हमारी मुसीबत और हम पर होनेवाले ज़ुल्म को नज़रंदाज़ क्यों
करता है?

25 हमारी जान ख़ाक में दब गई, हमारा बदन मिट्टी से चिमट गया है।
26 उठकर हमारी मदद कर! अपनी शफ़क़त की ख़ातिर फ़िद्या देकर हमें छुड़ा!

45

बादशाह की शादी

1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। हिकमत और मुहब्बत का गीत। तर्ज़ : सोसन के फूल। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

मेरे दिल से ख़ूबसूरत गीत छलक रहा है, मैं उसे बादशाह को पेश करूँगा। मेरी ज़बान माहिर कातिब के क़लम की मानिंद हो!

2 तू आदमियों में सबसे ख़ूबसूरत है! तेरे होंट शफ़क़त से मसह किए हुए हैं, इसलिए अल्लाह ने तुझे अबदी बरकत दी है।
3 ऐ सूरमे, अपनी तलवार से कमरबस्ता हो, अपनी शानो-शौकत से मुलब्बस हो जा!
4 ग़लबा और कामयाबी हासिल कर। सच्चाई, इंकिसारी और रास्ती की ख़ातिर लड़ने के लिए निकल आ। तेरा दहना हाथ तुझे हैरतअंगेज़ काम दिखाए।
5 तेरे तेज़ तीर बादशाह के दुश्मनों के दिलों को छेद डालें। क़ौमें तेरे पाँवों में गिर जाएँ।
6 ऐ अल्लाह, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक क़ायमो-दायम रहेगा, और इनसाफ़ का शाही असा तेरी बादशाही पर हुकूमत करेगा।
7 तूने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बेदीनी से नफ़रत की, इसलिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे ख़ुशी के तेल से मसह करके तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ कर दिया।
8 मुर, ऊद और अमलतास की बेशक़ीमत ख़ुशबू तेरे तमाम कपड़ों से फैलती है। हाथीदाँत के महलों में तारदार मौसीक़ी तेरा दिल बहलाती है।
9 बादशाहों की बेटियाँ तेरे ज़ेवरात से सजी फिरती हैं। मलिका ओफ़ीर का सोना पहने हुए तेरे दहने हाथ खड़ी है।

10 ऐ बेटी, सुन मेरी बात! ग़ौर कर और कान लगा। अपनी क़ौम और अपने बाप का घर भूल जा।
11 बादशाह तेरे हुस्न का आरज़ूमंद है, क्योंकि वह तेरा आक़ा है। चुनाँचे झुककर उसका एहतराम कर।
12 सूर की बेटी तोहफ़ा लेकर आएगी, क़ौम के अमीर तेरी नज़रे-करम हासिल करने की कोशिश करेंगे।
13 बादशाह की बेटी कितनी शानदार चीज़ों से आरास्ता है। उसका लिबास सोने के धागों से बुना हुआ है।
14 उसे नफ़ीस रंगदार कपड़े पहने बादशाह के पास लाया जाता है। जो कुँवारी सहेलियाँ उसके पीछे चलती हैं उन्हें भी तेरे सामने लाया जाता है।
15 लोग शादमान होकर और ख़ुशी मनाते हुए उन्हें वहाँ पहुँचाते हैं, और वह शाही महल में दाख़िल होती हैं।

16 ऐ बादशाह, तेरे बेटे तेरे बापदादा की जगह खड़े हो जाएंगे, और तू उन्हें रईस बनाकर पूरी दुनिया में ज़िम्मादारियाँ देगा।
17 पुश्त-दर-पुश्त मैं तेरे नाम की तमजीद करूँगा, इसलिए क़ौमें हमेशा तक तेरी सताइश करेंगी।

46

अल्लाह हमारी क़ुव्वत है

1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। गीत का तर्ज़ : कुँवारियाँ।

अल्लाह हमारी पनाहगाह और क़ुव्वत है। मुसीबत के वक़्त वह हमारा मज़बूत सहारा साबित हुआ है।
2 इसलिए हम ख़ौफ़ नहीं खाएँगे, गो ज़मीन लरज़ उठे और पहाड़ झूमकर समुंदर की गहराइयों में गिर जाएँ,
3 गो समुंदर शोर मचाकर ठाठें मारे और पहाड़ उस की दहाड़ों से काँप उठें। (सिलाह)

4 दरिया की शाख़ें अल्लाह के शहर को ख़ुश करती हैं, उस शहर को जो अल्लाह तआला की मुक़द्दस सुकूनतगाह है।
5 अल्लाह उसके बीच में है, इसलिए शहर नहीं डगमगाएगा। सुबह-सवेरे ही अल्लाह उस की मदद करेगा।
6 क़ौमें शोर मचाने, सलतनतें लड़खड़ाने लगीं। अल्लाह ने आवाज़ दी तो ज़मीन लरज़ उठी।

7 रब्बुल-अफ़वाज हमारे साथ है, याक़ूब का ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

8 आओ, रब के अज़ीम कामों पर नज़र डालो! उसी ने ज़मीन पर हौलनाक तबाही नाज़िल की है।
9 वही दुनिया की इंतहा तक जंगें रोक देता, वही कमान को तोड़ देता, नेज़े को टुकड़े टुकड़े करता और ढाल को
जला देता है।
10 वह फ़रमाता है, "अपनी हरकतों से बाज़ आओ! जान लो कि मैं ख़ुदा हूँ। मैं अक़वाम में सरबुलंद और दुनिया
में सरफ़राज़ हूँगा।"

11 रब्बुल-अफ़वाज हमारे साथ है। याक़ूब का ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

47

अल्लाह तमाम क़ौमों का बादशाह है

1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम क़ौमो, ताली बजाओ! ख़ुशी के नारे लगाकर अल्लाह की मद्हसराई करो!
2 क्योंकि रब तआला पुरजलाल है, वह पूरी दुनिया का अज़ीम बादशाह है।
3 उसने क़ौमों को हमारे तहत कर दिया, उम्मतों को हमारे पाँवों तले रख दिया।
4 उसने हमारे लिए हमारी मीरास को चुन लिया, उसी को जो उसके प्यारे बंदे याक़ूब के लिए फ़ख़र का बाइस था।
(सिलाह)

5 अल्लाह ने सऊद फ़रमाया तो साथ साथ ख़ुशी का नारा बुलंद हुआ, रब बुलंदी पर चढ़ गया तो साथ साथ नरसिंगा
बजता रहा।
6 मद्हसराई करो, अल्लाह की मद्हसराई करो! मद्हसराई करो, हमारे बादशाह की मद्हसराई करो!
7 क्योंकि अल्लाह पूरी दुनिया का बादशाह है। हिकमत का गीत गाकर उस की सताइश करो।
8 अल्लाह क़ौमों पर हुकूमत करता है, अल्लाह अपने मुक़द्दस तख़्त पर बैठा है।
9 दीगर क़ौमों के शुरफ़ा इब्राहीम के ख़ुदा की क़ौम के साथ जमा हो गए हैं, क्योंकि वह दुनिया के हुक्मरानों का
मालिक है। वह निहायत ही सरबुलंद है।

48

अल्लाह का शहर यरूशलम

1 गीत। क़ोरह की औलाद का ज़बूर।
रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लायक़ है। उसका मुक़द्दस पहाड़ हमारे ख़ुदा के शहर में है।
2 कोहे-सिय्यून की बुलंदी ख़ूबसूरत है, पूरी दुनिया उससे ख़ुश होती है। कोहे-सिय्यून दूरतरीन शिमाल का इलाही
पहाड़ ही है, वह अज़ीम बादशाह का शहर है।
3 अल्लाह उसके महलों में है, वह उस की पनाहगाह साबित हुआ है।
4 क्योंकि देखो, बादशाह जमा होकर यरूशलम से लड़ने आए।
5 लेकिन उसे देखते ही वह हैरान हुए, वह दहशत खाकर भाग गए।
6 वहाँ उन पर कपकपी तारी हुई, और वह दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाने लगे।
7 जिस तरह मशरिक़ी आँधी तरसीस के शानदार जहाज़ों को टुकड़े टुकड़े कर देती है उसी तरह तूने उन्हें तबाह कर
दिया।

8 जो कुछ हमने सुना है वह हमारे देखते देखते रब्बुल-अफ़वाज हमारे ख़ुदा के शहर पर सादिक़ आया है, अल्लाह
उसे अबद तक क़ायम रखेगा। (सिलाह)
9 ऐ अल्लाह, हमने तेरी सुकूनतगाह में तेरी शफ़क़त पर ग़ौरो-ख़ौज़ किया है।
10 ऐ अल्लाह, तेरा नाम इस लायक़ है कि तेरी तारीफ़ दुनिया की इंतहा तक की जाए। तेरा दहना हाथ रास्ती से भरा
रहता है।
11 कोहे-सिय्यून शादमान हो, यहूदाह की बेटियाँ * तेरे मुंसिफ़ाना फ़ैसलों के बाइस ख़ुशी मनाएँ।

* **48:11** यहाँ यहूदाह की बेटियों से मुराद उसके शहर भी हो सकते हैं।

12 सिय्यून के इर्दगिर्द घूमो फिरो, उस की फ़सील के साथ साथ चलकर उसके बुर्ज गिन लो।
13 उस की क़िलाबंदी पर ख़ूब ध्यान दो, उसके महलों का मुआयना करो ताकि आनेवाली नसल को सब कुछ सुना
सको।
14 यक़ीनन अल्लाह हमारा ख़ुदा हमेशा तक ऐसा ही है। वह अबद तक हमारी राहनुमाई करेगा।

49

अमीरों की शान सराब ही है
1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम क़ौमो, सुनो! दुनिया के तमाम बाशिंदो, ध्यान दो!
2 छोटे और बड़े, अमीर और ग़रीब सब तवज्जुह दें।
3 मेरा मुँह हिकमत बयान करेगा और मेरे दिल का ग़ौरो-ख़ौज़ समझ अता करेगा।
4 मैं अपना कान एक कहावत की तरफ़ झुकाऊँगा, सरोद बजाकर अपनी पहेली का हल बताऊँगा।

5 मैं ख़ौफ़ क्यों खाऊँ जब मुसीबत के दिन आएँ और मक्कारों का बुरा काम मुझे घेर ले?
6 ऐसे लोग अपनी मिलकियत पर एतमाद और अपनी बड़ी दौलत पर फ़ख़र करते हैं।
7 कोई भी फ़िद्या देकर अपने भाई की जान को नहीं छुड़ा सकता। वह अल्लाह को इस क़िस्म का तावान नहीं दे
सकता।
8 क्योंकि इतनी बड़ी रक़म देना उसके बस की बात नहीं। आख़िरकार उसे हमेशा के लिए ऐसी कोशिशों से बाज़
आना पड़ेगा।
9 चुनाँचे कोई भी हमेशा के लिए ज़िंदा नहीं रह सकता, आख़िरकार हर एक मौत के गढ़े में उतरेगा।
10 क्योंकि हर एक देख सकता है कि दानिशमंद भी वफ़ात पाते और अहमक़ और नासमझ भी मिलकर हलाक हो
जाते हैं। सबको अपनी दौलत दूसरों के लिए छोड़नी पड़ती है।
11 उनकी क़ब्रें अबद तक उनके घर बनी रहेंगी, पुश्त-दर-पुश्त वह उनमें बसे रहेंगे, गो उन्हें ज़मीनें हासिल थीं जो
उनके नाम पर थीं।

12 इनसान अपनी शानो-शौकत के बावुजूद क़ायम नहीं रहता, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।
13 यह उन सबकी तक़दीर है जो अपने आप पर एतमाद रखते हैं, और उन सबका अंजाम जो उनकी बातें पसंद
करते हैं। (सिलाह)
14 उन्हें भेड़-बकरियों की तरह पाताल में लाया जाएगा, और मौत उन्हें चराएगी। क्योंकि सुबह के वक़्त दियानतदार
उन पर हुकूमत करेंगे। तब उनकी शक्लो-सूरत घिसे-फटे कपड़े की तरह गल-सड़ जाएगी, पाताल ही उनकी रिहाइशगाह
होगा।
15 लेकिन अल्लाह मेरी जान का फ़िद्या देगा, वह मुझे पकड़कर पाताल की गिरिफ़्त से छुड़ाएगा। (सिलाह)

16 मत घबरा जब कोई अमीर हो जाए, जब उसके घर की शानो-शौकत बढ़ती जाए।
17 मरते वक़्त तो वह अपने साथ कुछ नहीं ले जाएगा, उस की शानो-शौकत उसके साथ पाताल में नहीं उतरेगी।
18 बेशक वह जीते-जी अपने आपको मुबारक कहेगा, और दूसरे भी खाते-पीते आदमी की तारीफ़ करेंगे।
19 फिर भी वह आख़िरकार अपने बापदादा की नसल के पास उतरेगा, उनके पास जो दुबारा कभी रौशनी नहीं
देखेंगे।

20 जो इनसान अपनी शानो-शौकत के बावुजूद नासमझ है, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।

50

सहीह इबादत
1 आसफ़ का ज़बूर।
रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा बोल उठा है, उसने तुलूए-सुबह से लेकर ग़ुरूबे-आफ़ताब तक पूरी दुनिया को बुलाया है।
2 अल्लाह का नूर सिय्यून से चमक उठा है, उस पहाड़ से जो कामिल हुस्न का इज़हार है।
3 हमारा ख़ुदा आ रहा है, वह ख़ामोश नहीं रहेगा। उसके आगे आगे सब कुछ भस्म हो रहा है, उसके इर्दगिर्द तेज़
आँधी चल रही है।

4 वह आसमानो-ज़मीन को आवाज़ देता है, “अब मैं अपनी क़ौम की अदालत करूँगा।
5 मेरे ईमानदारों को मेरे हुज़ूर जमा करो, उन्हें जिन्होंने क़ुरबानियाँ पेश करके मेरे साथ अहद बाँधा है।”
6 आसमान उस की रास्ती का एलान करेंगे, क्योंकि अल्लाह ख़ुद इनसाफ़ करनेवाला है। (सिलाह)
7 “ऐ मेरी क़ौम, सुन! मुझे बात करने दे। ऐ इसराईल, मैं तेरे ख़िलाफ़ गवाही दूँगा। मैं अल्लाह तेरा ख़ुदा हूँ।
8 मैं तुझे तेरी ज़बह की क़ुरबानियों के बाइस मलामत नहीं कर रहा। तेरी भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ तो मुसलसल
मेरे सामने हैं।
9 न मैं तेरे घर से बैल लूँगा, न तेरे बाड़ों से बकरे।
10 क्योंकि जंगल के तमाम जानदार मेरे ही हैं, हज़ारों पहाड़ियों पर बसनेवाले जानवर मेरे ही हैं।
11 मैं पहाड़ों के हर परिंदे को जानता हूँ, और जो भी मैदानों में हरकत करता है वह मेरा है।
12 अगर मुझे भूक लगती तो मैं तुझे न बताता, क्योंकि ज़मीन और जो कुछ उस पर है मेरा है।
13 क्या तू समझता है कि मैं साँडों का गोश्त खाना या बकरों का ख़ून पीना चाहता हूँ?
14 अल्लाह को शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी पेश कर, और वह मन्नत पूरी कर जो तूने अल्लाह तआला के हुज़ूर मानी
है।
15 मुसीबत के दिन मुझे पुकार। तब मैं तुझे नजात दूँगा और तू मेरी तमजीद करेगा।”

16 लेकिन बेदीन से अल्लाह फ़रमाता है, “मेरे अहकाम सुनाने और मेरे अहद का ज़िक्र करने का तेरा क्या हक़ है?
17 तू तो तरबियत से नफ़रत करता और मेरे फ़रमान कचरे की तरह अपने पीछे फेंक देता है।
18 किसी चोर को देखते ही तू उसका साथ देता है, तू ज़िनाकारों से रिफ़ाक़त रखता है।
19 तू अपने मुँह को बुरे काम के लिए इस्तेमाल करता, अपनी ज़बान को धोका देने के लिए तैयार रखता है।
20 तू दूसरों के पास बैठकर अपने भाई के ख़िलाफ़ बोलता है, अपनी ही माँ के बेटे पर तोहमत लगाता है।

21 यह कुछ तूने किया है, और मैं ख़ामोश रहा। तब तू समझा कि मैं बिलकुल तुझ जैसा हूँ। लेकिन मैं तुझे मलामत
करूँगा, तेरे सामने ही मामला तरतीब से सुनाऊँगा।
22 तुम जो अल्लाह को भूले हुए हो, बात समझ लो, वरना मैं तुम्हें फाड़ डालूँगा। उस वक़्त कोई नहीं होगा जो तुम्हें
बचाए।

23 जो शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी पेश करे वह मेरी ताज़ीम करता है। जो मुसम्मम इरादे से ऐसी राह पर चले उसे मैं
अल्लाह की नजात दिखाऊँगा।”

51

मुझ जैसे गुनाहगार पर रहम कर*! (*तौबा का चौथा ज़बूर*)*
1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दाऊद के बत-सबा के
साथ ज़िना करने के बाद नातन नबी उसके पास आया।
ऐ अल्लाह, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर, अपने बड़े रहम के मुताबिक़ मेरी सरकशी के दाग़
मिटा दे।
2 मुझे धो दे ताकि मेरा क़ुसूर दूर हो जाए, जो गुनाह मुझसे सरज़द हुआ है उससे मुझे पाक कर।
3 क्योंकि मैं अपनी सरकशी को मानता हूँ, और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने रहता है।
4 मैंने तेरे, सिर्फ़ तेरे ही ख़िलाफ़ गुनाह किया, मैंने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में बुरा है। क्योंकि लाज़िम है कि तू
बोलते वक़्त रास्त ठहरे और अदालत करते वक़्त पाकीज़ा साबित हो जाए।

5 यक़ीनन मैं गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ। ज्योंही मैं माँ के पेट में वुजूद में आया तो गुनाहगार था।
6 यक़ीनन तू बातिन की सच्चाई पसंद करता और पोशीदगी में मुझे हिकमत की तालीम देता है।
7 ज़ूफ़ा लेकर मुझसे गुनाह दूर कर ताकि पाक-साफ़ हो जाऊँ। मुझे धो दे ताकि बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद हो जाऊँ।
8 मुझे दुबारा ख़ुशी और शादमानी सुनने दे ताकि जिन हड्डियों को तूने कुचल दिया वह शादियाना बजाएँ।
9 अपने चेहरे को मेरे गुनाहों से फेर ले, मेरा तमाम क़ुसूर मिटा दे।
10 ऐ अल्लाह, मेरे अंदर पाक दिल पैदा कर, मुझमें नए सिरे से साबितक़दम रूह क़ायम कर।
11 मुझे अपने हुज़ूर से ख़ारिज न कर, न अपने मुक़द्दस रूह को मुझसे दूर कर।

12 मुझे दुबारा अपनी नजात की ख़ुशी दिला, मुझे मुस्तैद रूह अता करके सँभाले रख।
13 तब मैं उन्हें तेरी राहों की तालीम दूँगा जो तुझसे बेवफ़ा हो गए हैं, और गुनाहगार तेरे पास वापस आएँगे।

14 ऐ अल्लाह, मेरी नजात के ख़ुदा, क़त्ल का क़ुसूर मुझसे दूर करके मुझे बचा। तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती की
हम्दो-सना करेगी।
15 ऐ रब, मेरे होंटों को खोल ताकि मेरा मुँह तेरी सताइश करे।
16 क्योंकि तू ज़बह की क़ुरबानी नहीं चाहता, वरना मैं वह पेश करता। भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ तुझे पसंद नहीं।
17 अल्लाह को मंज़ूर क़ुरबानी शिकस्ता रूह है। ऐ अल्लाह, तू शिकस्ता और कुचले हुए दिल को हक़ीर नहीं
जानेगा।

18 अपनी मेहरबानी का इज़हार करके सिय्यून को ख़ुशहाली बख़्श, यरूशलम की फ़सील तामीर कर।
19 तब तुझे हमारी सहीह क़ुरबानियाँ, हमारी भस्म होनेवाली और मुकम्मल क़ुरबानियाँ पसंद आएँगी। तब तेरी
क़ुरबानगाह पर बैल चढ़ाए जाएंगे।

52

ज़ुल्म के बावुजूद तसल्ली

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। हिकमत का यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दोएग अदोमी
साऊल बादशाह के पास गया और उसे बताया, "दाऊद अख़ीमलिक इमाम के घर में गया है।"
ऐ सूरमे, तू अपनी बदी पर क्यों फ़ख़र करता है? अल्लाह की शफ़क़त दिन-भर क़ायम रहती है।
2 ऐ धोकेबाज़, तेरी ज़बान तेज़ उस्तरे की तरह चलती हुई तबाही के मनसूबे बाँधती है।
3 तुझे भलाई की निसबत बुराई ज़्यादा प्यारी है, सच बोलने की निसबत झूट ज़्यादा पसंद है। (सिलाह)
4 ऐ फ़रेबदेह ज़बान, तू हर तबाहकुन बात से प्यार करती है।
5 लेकिन अल्लाह तुझे हमेशा के लिए ख़ाक में मिलाएगा। वह तुझे मार मारकर तेरे ख़ैमे से निकाल देगा, तुझे जड़
से उखाड़कर ज़िंदों के मुल्क से ख़ारिज कर देगा। (सिलाह)

6 रास्तबाज़ यह देखकर ख़ौफ़ खाएँगे। वह उस पर हँसकर कहेंगे,
7 "लो, यह वह आदमी है जिसने अल्लाह में पनाह न ली बल्कि अपनी बड़ी दौलत पर एतमाद किया, जो अपने
तबाहकुन मनसूबों से ताक़तवर हो गया था।"

8 लेकिन मैं अल्लाह के घर में ज़ैतून के फलते-फूलते दरख़्त की मानिंद हूँ। मैं हमेशा के लिए अल्लाह की शफ़क़त
पर भरोसा रखूँगा।
9 मैं अबद तक उसके लिए तेरी सताइश करूँगा जो तूने किया है। मैं तेरे ईमानदारों के सामने ही तेरे नाम के इंतज़ार
में रहूँगा, क्योंकि वह भला है।

53

बेदीन की हमाक़त

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। हिकमत का गीत। तर्ज़ : महलत।
अहमक़ दिल में कहता है, "अल्लाह है ही नहीं!" ऐसे लोग बदचलन हैं, उनकी हरकतें क़ाबिले-घिन हैं। एक भी
नहीं है जो अच्छा काम करे।
2 अल्लाह ने आसमान से इनसान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का
तालिब है?
3 अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सबके सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।

4 क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की तरह खा लेते हैं उन्हें समझ नहीं आती? वह तो अल्लाह को पुकारते
ही नहीं।
5 तब उन पर सख़्त दहशत वहाँ छा गई जहाँ पहले दहशत का सबब नहीं था। जिन्होंने तुझे घेर रखा था अल्लाह
ने उनकी हड्डियाँ बिखेर दीं। तूने उनको रुसवा किया, क्योंकि अल्लाह ने उन्हें रद्द किया है।

6 काश कोहे-सिय्यून से इसराईल की नजात निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा तो याक़ूब ख़ुशी के नारे
लगाएगा, इसराईल बाग़ बाग़ होगा।

54

ख़तरे में फँसे हुए शख़्स की इल्तिजा

1 दाऊद का ज़बूर। हिकमत का यह गीत तारदार साज़ों के साथ गाना है। यह उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब ज़ीफ़
के बाशिंदों ने साऊल के पास जाकर कहा, "दाऊद हमारे पास छुपा हुआ है।"
ऐ अल्लाह, अपने नाम के ज़रीए से मुझे छुटकारा दे! अपनी क़ुदरत के ज़रीए से मेरा इनसाफ़ कर!
2 ऐ अल्लाह, मेरी इल्तिजा सुन, मेरे मुँह के अलफ़ाज़ पर ध्यान दे।
3 क्योंकि परदेसी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं, ज़ालिम जो अल्लाह का लिहाज़ नहीं करते मेरी जान लेने के दरपै
हैं। (सिलाह)

4 लेकिन अल्लाह मेरा सहारा है, रब मेरी ज़िंदगी क़ायम रखता है।
5 वह मेरे दुश्मनों की शरारत उन पर वापस लाएगा। चुनाँचे अपनी वफ़ादारी दिखाकर उन्हें तबाह कर दे!
6 मैं तुझे रज़ाकाराना क़ुरबानी पेश करूँगा। ऐ रब, मैं तेरे नाम की सताइश करूँगा, क्योंकि वह भला है।
7 क्योंकि उसने मुझे सारी मुसीबत से रिहाई दी, और अब मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर ख़ुश हूँगा।

55

झूटे भाइयों पर शिकायत

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। हिकमत का यह गीत तारदार साज़ों के साथ गाना है।
ऐ अल्लाह, मेरी दुआ पर ध्यान दे, अपने आपको मेरी इल्तिजा से छुपाए न रख।
2 मुझ पर ग़ौर कर, मेरी सुन। मैं बेचैनी से इधर उधर घूमते हुए आहें भर रहा हूँ।
3 क्योंकि दुश्मन शोर मचा रहा, बेदीन मुझे तंग कर रहा है। वह मुझ पर आफ़त लाने पर तुले हुए हैं, ग़ुस्से में मेरी
मुख़ालफ़त कर रहे हैं।
4 मेरा दिल मेरे अंदर तड़प रहा है, मौत की दहशत मुझ पर छा गई है।
5 ख़ौफ़ और लरज़िश मुझ पर तारी हुई, हैबत मुझ पर ग़ालिब आ गई है।

6 मैं बोला, "काश मेरे कबूतर के-से पर हों ताकि उड़कर आरामो-सुकून पा सकूँ!
7 तब मैं दूर तक भागकर रेगिस्तान में बसेरा करता,
8 मैं जल्दी से कहीं पनाह लेता जहाँ तेज़ आँधी और तूफ़ान से महफ़ूज़ रहता।" (सिलाह)

9 ऐ रब, उनमें अबतरी पैदा कर, उनकी ज़बान में इख़्तिलाफ़ डाल! क्योंकि मुझे शहर में हर तरफ़ ज़ुल्म और झगड़े
नज़र आते हैं।
10 दिन-रात वह फ़सील पर चक्कर काटते हैं, और शहर फ़साद और ख़राबी से भरा रहता है।
11 उसके बीच में तबाही की हुकूमत है, और ज़ुल्म और फ़रेब उसके चौक को नहीं छोड़ते।

12 अगर कोई दुश्मन मेरी रुसवाई करता तो क़ाबिले-बरदाश्त होता। अगर मुझसे नफ़रत करनेवाला मुझे दबाकर
अपने आपको सरफ़राज़ करता तो मैं उससे छुप जाता।
13 लेकिन तू ही ने यह किया, तू जो मुझ जैसा है, जो मेरा क़रीबी दोस्त और हमराज़ है।
14 मेरी तेरे साथ कितनी अच्छी रिफ़ाक़त थी जब हम हुजूम के साथ अल्लाह के घर की तरफ़ चलते गए!

15 मौत अचानक ही उन्हें अपनी गिरिफ़्त में ले ले। ज़िंदा ही वह पाताल में उतर जाएँ, क्योंकि बुराई ने उनमें अपना
घर बना लिया है।
16 लेकिन मैं पुकारकर अल्लाह से मदद माँगता हूँ, और रब मुझे नजात देगा।
17 मैं हर वक़्त आहो-ज़ारी करता और कराहता रहता हूँ, ख़ाह सुबह हो, ख़ाह दोपहर या शाम। और वह मेरी सुनेगा।

18 वह फ़िद्या देकर मेरी जान को उनसे छुड़ाएगा जो मेरे ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। गो उनकी तादाद बड़ी है वह मुझे आरामो-सुकून देगा।
19 अल्लाह जो अज़ल से तख़्तनशीन है मेरी सुनकर उन्हें मुनासिब जवाब देगा। (सिलाह) क्योंकि न वह तबदील हो जाएंगे, न कभी अल्लाह का ख़ौफ़ मानेंगे।

20 उस शख़्स ने अपना हाथ अपने दोस्तों के ख़िलाफ़ उठाया, उसने अपना अहद तोड़ लिया है।
21 उस की ज़बान पर मक्खन की-सी चिकनी-चुपड़ी बातें और दिल में जंग है। उसके तेल से ज़्यादा नरम अलफ़ाज़ हक़ीक़त में खींची हुई तलवारें हैं।

22 अपना बोझ रब पर डाल तो वह तुझे सँभालेगा। वह रास्तबाज़ को कभी डगमगाने नहीं देगा।
23 लेकिन ऐ अल्लाह, तू उन्हें तबाही के गढे में उतरने देगा। ख़ूनख़ार और धोकेबाज़ आधी उम्र भी नहीं पाएँगे बल्कि जल्दी मरेंगे। लेकिन मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ।

56

मुसीबत में भरोसा

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : दूर-दराज़ जज़ीरों का कबूतर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब फ़िलिस्तियों ने उसे जात में पकड़ लिया।
ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि लोग मुझे तंग कर रहे हैं, लड़नेवाला दिन-भर मुझे सता रहा है।
2 दिन-भर मेरे दुश्मन मेरे पीछे लगे हैं, क्योंकि वह बहुत हैं और ग़ुरूर से मुझसे लड़ रहे हैं।
3 लेकिन जब ख़ौफ़ मुझे अपनी गिरिफ़्त में ले ले तो मैं तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ।

4 अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इनसान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है?

5 दिन-भर वह मेरे अलफ़ाज़ को तोड़-मरोड़कर ग़लत मानी निकालते, अपने तमाम मनसूबों से मुझे ज़रर पहुँचाना चाहते हैं।
6 वह हमलाआवर होकर ताक में बैठ जाते और मेरे हर क़दम पर ग़ौर करते हैं। क्योंकि वह मुझे मार डालने पर तुले हुए हैं।
7 जो ऐसी शरीर हरकतें करते हैं, क्या उन्हें बचना चाहिए? हरगिज़ नहीं! ऐ अल्लाह, अक़वाम को ग़ुस्से में ख़ाक में मिला दे।
8 जितने भी दिन मैं बेघर फिरा हूँ उनका तूने पूरा हिसाब रखा है। ऐ अल्लाह, मेरे आँसू अपने मशकीज़े में डाल ले! क्या वह पहले से तेरी किताब में क़लमबंद नहीं हैं? ज़रूर!
9 फिर जब मैं तुझे पुकारूँगा तो मेरे दुश्मन मुझसे बाज़ आएँगे। यह मैंने जान लिया है कि अल्लाह मेरे साथ है!
10 अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, रब के कलाम पर मेरा फ़ख़र है।
11 अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इनसान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है?

12 ऐ अल्लाह, तेरे हुज़ूर मैंने मन्नतें मानी हैं, और अब मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानियाँ पेश करूँगा।
13 क्योंकि तूने मेरी जान को मौत से बचाया और मेरे पाँवों को ठोकर खाने से महफ़ूज़ रखा ताकि ज़िंदगी की रौशनी में अल्लाह के हुज़ूर चलूँ।

57

आज़माइश में अल्लाह पर एतमाद

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब वह साऊल से भागकर ग़ार में छुप गया।
ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि मेरी जान तुझमें पनाह लेती है। जब तक आफ़त मुझ पर से गुज़र न जाए मैं तेरे परों के साये में पनाह लूँगा।
2 मैं अल्लाह तआला को पुकारता हूँ, अल्लाह से जो मेरा मामला ठीक करेगा।

3 वह आसमान से मदद भेजकर मुझे छुटकारा देगा और उनकी रुसवाई करेगा जो मुझे तंग कर रहे हैं। (सिलाह)
अल्लाह अपना करम और वफ़ादारी भेजेगा।
4 मैं इनसान को हड़प करनेवाले शेरबबरों के बीच में लेटा हुआ हूँ, उनके दरमियान जिनके दाँत नेज़े और तीर हैं
और जिनकी ज़बान तेज़ तलवार है।

5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरबुलंद हो जा! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए!

6 उन्होंने मेरे क़दमों के आगे फंदा बिछा दिया, और मेरी जान ख़ाक में दब गई है। उन्होंने मेरे सामने गढ़ा खोद
लिया, लेकिन वह ख़ुद उसमें गिर गए हैं। (सिलाह)

7 ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत, मेरा दिल साबितक़दम है। मैं साज़ बजाकर तेरी मद्‌हसराई करूँगा।
8 ऐ मेरी जान, जाग उठ! ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! आओ, मैं तुलूए-सुबह को जगाऊँ।
9 ऐ रब, क़ौमों में मैं तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी मद्‌हसराई करूँगा।
10 क्योंकि तेरी अज़ीम शफ़क़त आसमान जितनी बुलंद है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
11 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।

58

इंतक़ाम की दुआ

1 दाऊद का सुनहरा गीत। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।
ऐ हुक्मरानो, क्या तुम वाक़ई मुंसिफ़ाना फ़ैसला करते, क्या दियानतदारी से आदमज़ादों की अदालत करते हो?
2 हरगिज़ नहीं, तुम दिल में बदी करते और मुल्क में अपने ज़ालिम हाथों के लिए रास्ता बनाते हो।
3 बेदीन पैदाइश से ही सहीह राह से दूर हो गए हैं, झूट बोलनेवाले माँ के पेट से ही भटक गए हैं।
4 वह साँप की तरह ज़हर उगलते हैं, उस बहरे नाग की तरह जो अपने कानों को बंद कर रखता है
5 ताकि न जादूगर की आवाज़ सुने, न माहिर सपेरे के मंत्र।

6 ऐ अल्लाह, उनके मुँह के दाँत तोड़ डाल! ऐ रब, जवान शेरबबरों के जबड़े को पाश पाश कर!
7 वह उस पानी की तरह ज़ाया हो जाएँ जो बहकर ग़ायब हो जाता है। उनके चलाए हुए तीर बेअसर रहें।
8 वह धूप में घोंगे की मानिंद हों जो चलता चलता पिघल जाता है। उनका अंजाम उस बच्चे का-सा हो जो माँ के
पेट में ज़ाया होकर कभी सूरज नहीं देखेगा।
9 इससे पहले कि तुम्हारी देगें काँटेदार टहनियों की आग महसूस करें अल्लाह उन सबको आँधी में उड़ाकर ले
जाएगा।

10 आख़िरकार दुश्मन को सज़ा मिलेगी। यह देखकर रास्तबाज़ ख़ुश होगा, और वह अपने पाँवों को बेदीनों के ख़ून
में धो लेगा।
11 तब लोग कहेंगे, "वाक़ई रास्तबाज़ को अज्र मिलता है, वाक़ई अल्लाह है जो दुनिया में लोगों की अदालत करता
है!"

59

दुश्मन के दरमियान दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है
जब साऊल ने अपने आदमियों को दाऊद के घर की पहरादारी करने के लिए भेजा ताकि जब मौक़ा मिले उसे क़त्ल
करें।
ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे मेरे दुश्मनों से बचा। उनसे मेरी हिफ़ाज़त कर जो मेरे ख़िलाफ़ उठे हैं।
2 मुझे बदकारों से छुटकारा दे, ख़ूनख़ारों से रिहा कर।
3 देख, वह मेरी ताक में बैठे हैं। ऐ रब, ज़बरदस्त आदमी मुझ पर हमलाआवर हैं, हालाँकि मुझसे न ख़ता हुई न
गुनाह।

4 मैं बेक़ुसूर हूँ, ताहम वह दौड़ दौड़कर मुझसे लड़ने की तैयारियाँ कर रहे हैं। चुनाँचे जाग उठ, मेरी मदद करने आ,
जो कुछ हो रहा है उस पर नज़र डाल।
5 ऐ रब, लशकरों और इसराईल के ख़ुदा, दीगर तमाम क़ौमों को सज़ा देने के लिए जाग उठ! उन सब पर करम न
फ़रमा जो शरीर और ग़द्दार हैं। (सिलाह)

6 हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घुमते-फिरते हैं।
7 देख, उनके मुँह से राल टपक रही है, उनके होंटों से तलवारें निकल रही हैं। क्योंकि वह समझते हैं, "कौन
सुनेगा?"

8 लेकिन तू ऐ रब, उन पर हँसता है, तू तमाम क़ौमों का मज़ाक़ उड़ाता है।
9 ऐ मेरी क़ुव्वत, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहेंगी, क्योंकि अल्लाह मेरा क़िला है।
10 मेरा ख़ुदा अपनी मेहरबानी के साथ मुझसे मिलने आएगा, अल्लाह बख़्श देगा कि मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त
देखकर ख़ुश हूँगा।

11 ऐ अल्लाह हमारी ढाल, उन्हें हलाक न कर, वरना मेरी क़ौम तेरा काम भूल जाएगी। अपनी क़ुदरत का इज़हार
यों कर कि वह इधर उधर लड़खड़ाकर गिर जाएँ।
12 जो कुछ भी उनके मुँह से निकलता है वह गुनाह है, वह लानतें और झूट ही सुनाते हैं। चुनाँचे उन्हें उनके तकब्बुर
के जाल में फँसने दे।
13 ग़ुस्से में उन्हें तबाह कर! उन्हें यों तबाह कर कि उनका नामो-निशान तक न रहे। तब लोग दुनिया की इंतहा तक
जान लेंगे कि अल्लाह याक़ूब की औलाद पर हुकूमत करता है। (सिलाह)

14 हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घुमते-फिरते हैं।
15 वह इधर उधर गश्त लगाकर खाने की चीज़ें ढूँडते हैं। अगर पेट न भरे तो ग़ुर्राते रहते हैं।

16 लेकिन मैं तेरी क़ुदरत की मद्हसराई करूँगा, सुबह को ख़ुशी के नारे लगाकर तेरी शफ़क़त की सताइश करूँगा।
क्योंकि तू मेरा क़िला और मुसीबत के वक़्त मेरी पनाहगाह है।
17 ऐ मेरी क़ुव्वत, मैं तेरी मद्हसराई करूँगा, क्योंकि अल्लाह मेरा क़िला और मेरा मेहरबान ख़ुदा है।

60

मरदूद क़ौम की दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : अहद का सोसन। तालीम के लिए यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दाऊद
ने मसोपुतामिया के अरामियों और ज़ोबाह के अरामियों से जंग की। वापसी पर योआब ने नमक की वादी में 12,000
अदोमियों को मार डाला।
ऐ अल्लाह, तूने हमें रद्द किया, हमारी क़िलाबंदी में रख़ना डाल दिया है। लेकिन अब अपने ग़ज़ब से बाज़ आकर
हमें बहाल कर।
2 तूने ज़मीन को ऐसे झटके दिए कि उसमें दराड़ें पड़ गईं। अब उसके शिगाफ़ों को शफ़ा दे, क्योंकि वह अभी तक
थरथरा रही है।
3 तूने अपनी क़ौम को तलख़ तजरबों से दोचार होने दिया, हमें ऐसी तेज़ मै पिला दी कि हम डगमगाने लगे हैं।
4 लेकिन जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं उनके लिए तूने झंडा गाड़ दिया जिसके इर्दगिर्द वह जमा होकर तीरों से पनाह ले
सकते हैं। (सिलाह)
5 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि जो तुझे प्यारे हैं वह नजात पाएँ।

6 अल्लाह ने अपने मक़दिस में फ़रमाया है, "मैं फ़तह मनाते हुए सिकम को तक़सीम करूँगा और वादीए-सुक्कात
को नापकर बाँट दूँगा।
7 जिलियाद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़राईम मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा है।
8 मोआब मेरा ग़ुस्ल का बरतन है, और अदोम पर मैं अपना जूता फेंक दूँगा। ऐ फ़िलिस्ती मुल्क, मुझे देखकर ज़ोरदार
नारे लगा!"

9 कौन मुझे क़िलाबंद शहर में लाएगा? कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?
10 ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तूने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का साथ नहीं देता
जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।
11 मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक़्त इनसानी मदद बेकार है।
12 अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे, क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

61

दूर से दरख़ास्त

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ के साथ गाना है।
ऐ अल्लाह, मेरी आहो-ज़ारी सुन, मेरी दुआ पर तवज्जुह दे।
2 मैं तुझे दुनिया की इंतहा से पुकार रहा हूँ, क्योंकि मेरा दिल निढाल हो गया है। मेरी राहनुमाई करके मुझे उस चटान
पर पहुँचा दे जो मुझसे बुलंद है।

3 क्योंकि तू मेरी पनाहगाह रहा है, एक मज़बूत बुर्ज जिसमें मैं दुश्मन से महफ़ूज़ हूँ।
4 मैं हमेशा के लिए तेरे ख़ैमे में रहना, तेरे परों तले पनाह लेना चाहता हूँ। (सिलाह)

5 क्योंकि ऐ अल्लाह, तूने मेरी मन्नतों पर ध्यान दिया, तूने मुझे वह मीरास बख़्शी जो उन सबको मिलती है जो तेरा
ख़ौफ़ मानते हैं।
6 बादशाह को उम्र की दराज़ी बख़्श दे। वह पुश्त-दर-पुश्त जीता रहे।
7 वह हमेशा तक अल्लाह के हुज़ूर तख़्तनशीन रहे। शफ़क़त और वफ़ादारी उस की हिफ़ाज़त करें।
8 तब मैं हमेशा तक तेरे नाम की मद्हसराई करूँगा, रोज़ बरोज़ अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

62

ख़ामोशी से अल्लाह का इंतज़ार कर

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। यदूतून के लिए।
मेरी जान ख़ामोशी से अल्लाह ही के इंतज़ार में है। उसी से मुझे मदद मिलती है।
2 वही मेरी चटान, मेरी नजात और मेरा क़िला है, इसलिए मैं ज़्यादा नहीं डगमगाऊँगा।

3 तुम कब तक उस पर हमला करोगे जो पहले ही झुकी हुई दीवार की मानिंद है? तुम सब कब तक उसे क़त्ल करने
पर तुले रहोगे जो पहले ही गिरनेवाली चारदीवारी जैसा है?
4 उनके मनसूबों का एक ही मक़सद है, कि उसे उसके ऊँचे ओहदे से उतारें। उन्हें झूट से मज़ा आता है। मुँह से वह
बरकत देते, लेकिन अंदर ही अंदर लानत करते हैं। (सिलाह)

5 लेकिन तू ऐ मेरी जान, ख़ामोशी से अल्लाह ही के इंतज़ार में रह। क्योंकि उसी से मुझे उम्मीद है।
6 सिर्फ़ वही मेरी जान की चटान, मेरी नजात और मेरा क़िला है, इसलिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।

7 मेरी नजात और इज़्ज़त अल्लाह पर मबनी है, वही मेरी महफ़ूज़ चटान है। अल्लाह में मैं पनाह लेता हूँ।
8 ऐ उम्मत, हर वक़्त उस पर भरोसा रख! उसके हुज़ूर अपने दिल का रंजो-अलम पानी की तरह उंडेल दे। अल्लाह
ही हमारी पनाहगाह है। (सिलाह)

9 इनसान दम-भर का ही है, और बड़े लोग फ़रेब ही हैं। अगर उन्हें तराज़ू में तोला जाए तो मिलकर उनका वज़न
एक फूँक से भी कम है।
10 ज़ुल्म पर एतमाद न करो, चोरी करने पर फ़ज़ूल उम्मीद न रखो। और अगर दौलत बढ़ जाए तो तुम्हारा दिल
उससे लिपट न जाए।
11 अल्लाह ने एक बात फ़रमाई बल्कि दो बार मैंने सुनी है कि अल्लाह ही क़ादिर है।
12 ऐ रब, यक़ीनन तू मेहरबान है, क्योंकि तू हर एक को उसके आमाल का बदला देता है।

63

अल्लाह के लिए आरज़ू

1 दाऊद का ज़बूर। यह उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब वह यहूदाह के रेगिस्तान में था।
ऐ अल्लाह, तू मेरा ख़ुदा है जिसे मैं ढूँडता हूँ। मेरी जान तेरी प्यासी है, मेरा पूरा जिस्म तेरे लिए तरसता है। मैं उस ख़ुश्क और निढाल मुल्क की मानिंद हूँ जिसमें पानी नहीं है।
2 चुनाँचे मैं मक़दिस में तुझे देखने के इंतज़ार में रहा ताकि तेरी क़ुदरत और जलाल का मुशाहदा करूँ।
3 क्योंकि तेरी शफ़क़त ज़िंदगी से कहीं बेहतर है, मेरे होंट तेरी मद्हसराई करेंगे।
4 चुनाँचे मैं जीते-जी तेरी सताइश करूँगा, तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा।
5 मेरी जान उम्दा ग़िज़ा से सेर हो जाएगी, मेरा मुँह ख़ुशी के नारे लगाकर तेरी हम्दो-सना करेगा।
6 बिस्तर पर मैं तुझे याद करता, पूरी रात के दौरान तेरे बारे में सोचता रहता हूँ।
7 क्योंकि तू मेरी मदद करने आया, और मैं तेरे परों के साये में ख़ुशी के नारे लगाता हूँ।
8 मेरी जान तेरे साथ लिपटी रहती, और तेरा दहना हाथ मुझे सँभालता है।

9 लेकिन जो मेरी जान लेने पर तुले हुए हैं वह तबाह हो जाएंगे, वह ज़मीन की गहराइयों में उतर जाएंगे।
10 उन्हें तलवार के हवाले किया जाएगा, और वह गीदड़ों की ख़ुराक बन जाएंगे।

11 लेकिन बादशाह अल्लाह की ख़ुशी मनाएगा। जो भी अल्लाह की क़सम खाता है वह फ़ख़र करेगा, क्योंकि झूट बोलनेवालों के मुँह बंद हो जाएंगे।

64

शरीअत के पोशीदा हमलों से हिफ़ाज़त की दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, सुन जब मैं अपनी आहो-ज़ारी पेश करता हूँ। मेरी ज़िंदगी दुश्मन की दहशत से महफ़ूज़ रख।
2 मुझे बदमाशों की साज़िशों से छुपाए रख, उनकी हलचल से जो ग़लत काम करते हैं।
3 वह अपनी ज़बान को तलवार की तरह तेज़ करते और अपने ज़हरीले अलफ़ाज़ को तीरों की तरह तैयार रखते हैं
4 ताकि ताक में बैठकर उन्हें बेक़ुसूर पर चलाएँ। वह अचानक और बेबाकी से उन्हें उस पर बरसा देते हैं।
5 वह बुरा काम करने में एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करते, एक दूसरे से मशवरा लेते हैं कि हम अपने फंदे किस तरह छुपाकर लगाएँ? वह कहते हैं, "यह किसी को भी नज़र नहीं आएँगे।"
6 वह बड़ी बारीकी से बुरे मनसूबों की तैयारियाँ करते, फिर कहते हैं, "चलो, बात बन गई है, मनसूबा सोच-बिचार के बाद तैयार हुआ है।" यक़ीनन इनसान के बातिन और दिल की तह तक पहुँचना मुश्किल ही है।

7 लेकिन अल्लाह उन पर तीर बरसाएगा, और अचानक ही वह ज़ख़मी हो जाएंगे।
8 वह अपनी ही ज़बान से ठोकर खाकर गिर जाएंगे। जो भी उन्हें देखेगा वह "तौबा तौबा" कहेगा।
9 तब तमाम लोग ख़ौफ़ खाकर कहेंगे, "अल्लाह ही ने यह किया!" उन्हें समझ आएगी कि यह उसी का काम है।

10 रास्तबाज़ अल्लाह की ख़ुशी मनाकर उसमें पनाह लेगा, और जो दिल से दियानतदार हैं वह सब फ़ख़र करेंगे।

65

रूहानी और जिस्मानी बरकतों के लिए शुक्रगुज़ारी

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए गीत।
ऐ अल्लाह, तू ही इस लायक़ है कि इनसान कोहे-सिय्यून पर ख़ामोशी से तेरे इंतज़ार में रहे, तेरी तमजीद करे और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करे।
2 तू दुआओं को सुनता है, इसलिए तमाम इनसान तेरे हुज़ूर आते हैं।
3 गुनाह मुझ पर ग़ालिब आ गए हैं, तू ही हमारी सरकश हरकतों को मुआफ़ कर।
4 मुबारक है वह जिसे तू चुनकर क़रीब आने देता है, जो तेरी बारगाहों में बस सकता है। बख़्श दे कि हम तेरे घर, तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की अच्छी चीज़ों से सेर हो जाएँ।

5 ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हैबतनाक कामों से अपनी रास्ती क़ायम करके हमारी सुन! क्योंकि तू ज़मीन की तमाम
हुदूद और दूर-दराज़ समुंदरों तक सबकी उम्मीद है।
6 तू अपनी क़ुदरत से पहाड़ों की मज़बूत बुनियादें डालता और क़ुव्वत से कमरबस्ता रहता है।
7 तू मुतलातिम समुंदरों को थमा देता है, तू उनकी गरजती लहरों और उम्मतों का शोर-शराबा ख़त्म कर देता है।
8 दुनिया की इंतहा के बाशिंदे तेरे निशानात से ख़ौफ़ खाते हैं, और तू तुलूए-सुबह और ग़ुरूबे-आफ़ताब को ख़ुशी
मनाने देता है।

9 तू ज़मीन की देख-भाल करके उसे पानी की कसरत और ज़रख़ेज़ी से नवाज़ता है, चुनाँचे अल्लाह की नदी पानी
से भरी रहती है। ज़मीन को यों तैयार करके तू इनसान को अनाज की अच्छी फ़सल मुहैया करता है।
10 तू खेत की रेघारियों को शराबोर करके उसके ढेलों को हमवार करता है। तू बारिश की बौछाड़ों से ज़मीन को
नरम करके उस की फ़सलों को बरकत देता है।
11 तू साल को अपनी भलाई का ताज पहना देता है, और तेरे नक़्शे-क़दम तेल की फ़रावानी से टपकते हैं।
12 बयाबान की चरागाहें तेल * की कसरत से टपकती हैं, और पहाड़ियाँ भरपूर ख़ुशी से मुलब्बस हो जाती हैं।
13 सब्ज़ाज़ार भेड़-बकरियों से आरास्ता हैं, वादियाँ अनाज से ढकी हुई हैं। सब ख़ुशी के नारे लगा रहे हैं, सब गीत
गा रहे हैं!

66

अल्लाह की मोजिज़ाना मदद की तारीफ़

1 मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। ज़बूर। गीत।
ऐ सारी ज़मीन, ख़ुशी के नारे लगाकर अल्लाह की मद्हसराई कर!
2 उसके नाम के जलाल की तमजीद करो, उस की सताइश उरूज तक ले जाओ!
3 अल्लाह से कहो, "तेरे काम कितने पुरजलाल हैं। तेरी बड़ी क़ुदरत के सामने तेरे दुश्मन दबककर तेरी ख़ुशामद
करने लगते हैं।
4 तमाम दुनिया तुझे सिजदा करे! वह तेरी तारीफ़ में गीत गाए, तेरे नाम की सताइश करे।" (सिलाह)

5 आओ, अल्लाह के काम देखो! आदमज़ाद की ख़ातिर उसने कितने पुरजलाल मोजिज़े किए हैं!
6 उसने समुंदर को ख़ुश्क ज़मीन में बदल दिया। जहाँ पहले पानी का तेज़ बहाव था वहाँ से लोग पैदल ही गुज़रे।
चुनाँचे आओ, हम उस की ख़ुशी मनाएँ।
7 अपनी क़ुदरत से वह अबद तक हुकूमत करता है। उस की आँखें क़ौमों पर लगी रहती हैं ताकि सरकश उसके
ख़िलाफ़ न उठें। (सिलाह)

8 ऐ उम्मतो, हमारे ख़ुदा की हम्द करो। उस की सताइश दूर तक सुनाई दे।
9 क्योंकि वह हमारी ज़िंदगी क़ायम रखता, हमारे पाँवों को डगमगाने नहीं देता।

10 क्योंकि ऐ अल्लाह, तूने हमें आज़माया। जिस तरह चाँदी को पिघलाकर साफ़ किया जाता है उसी तरह तूने हमें
पाक-साफ़ कर दिया है।
11 तूने हमें जाल में फँसा दिया, हमारी कमर पर अज़ियतनाक बोझ डाल दिया।
12 तूने लोगों के रथों को हमारे सरों पर से गुज़रने दिया, और हम आग और पानी की ज़द में आ गए। लेकिन फिर
तूने हमें मुसीबत से निकालकर फ़रावानी की जगह पहुँचाया।

13 मैं भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ लेकर तेरे घर में आऊँगा और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करूँगा,
14 वह मन्नतें जो मेरे मुँह ने मुसीबत के वक़्त मानी थीं।
15 भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर मैं तुझे मोटी-ताज़ी भेड़ें और मेंढों का धुआँ पेश करूँगा, साथ साथ बैल और
बकरे भी चढ़ाऊँगा। (सिलाह)

* **65:12** लफ़्ज़ी तरजुमा : 'चरबी,' जो फ़रावानी का निशान था।

16 ऐ अल्लाह का ख़ौफ़ माननेवालो, आओ और सुनो! जो कुछ अल्लाह ने मेरी जान के लिए किया वह तुम्हें
सुनाऊँगा।
17 मैंने अपने मुँह से उसे पुकारा, लेकिन मेरी ज़बान उस की तारीफ़ करने के लिए तैयार थी।
18 अगर मैं दिल में गुनाह की परवरिश करता तो रब मेरी न सुनता।
19 लेकिन यक़ीनन रब ने मेरी सुनी, उसने मेरी इल्तिजा पर तवज्जुह दी।
20 अल्लाह की हम्द हो, जिसने न मेरी दुआ रद्द की, न अपनी शफ़क़त मुझसे बाज़ रखी।

67

तमाम क़ौमें अल्लाह की तारीफ़ करें
1 ज़बूर। तारदार साज़ों के साथ गाना है। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
अल्लाह हम पर मेहरबानी करे और हमें बरकत दे। वह अपने चेहरे का नूर हम पर चमकाए (सिलाह)
2 ताकि ज़मीन पर तेरी राह और तमाम क़ौमों में तेरी नजात मालूम हो जाए।

3 ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम क़ौमें तेरी सताइश करें।

4 उम्मतें शादमान होकर ख़ुशी के नारे लगाएँ, क्योंकि तू इनसाफ़ से क़ौमों की अदालत करेगा और ज़मीन पर
उम्मतों की क़ियादत करेगा। (सिलाह)

5 ऐ अल्लाह, क़ौमें तेरी सताइश करें, तमाम क़ौमें तेरी सताइश करें।

6 ज़मीन अपनी फ़सलें देती है। अल्लाह हमारा ख़ुदा हमें बरकत दे!
7 अल्लाह हमें बरकत दे, और दुनिया की इंतहाएँ सब उसका ख़ौफ़ मानें।

68

अल्लाह की फ़तह
1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए गीत।
अल्लाह उठे तो उसके दुश्मन तित्तर-बित्तर हो जाएंगे, उससे नफ़रत करनेवाले उसके सामने से भाग जाएंगे।
2 वह धुएँ की तरह बिखर जाएंगे। जिस तरह मोम आग के सामने पिघल जाता है उसी तरह बेदीन अल्लाह के हुज़ूर
हलाक हो जाएंगे।
3 लेकिन रास्तबाज़ ख़ुशो-ख़ुर्रम होंगे, वह अल्लाह के हुज़ूर जशन मनाकर फूले न समाएँगे।

4 अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ, उसके नाम की मद्हसराई करो! जो रथ पर सवार बयाबान में से गुज़र रहा है
उसके लिए रास्ता तैयार करो। रब उसका नाम है, उसके हुज़ूर ख़ुशी मनाओ!
5 अल्लाह अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में यतीमों का बाप और बेवाओं का हामी है।
6 अल्लाह बेघरों को घरों में बसा देता और क़ैदियों को क़ैद से निकालकर ख़ुशहाली अता करता है। लेकिन जो
सरकश हैं वह झुलसे हुए मुल्क में रहेंगे।

7 ऐ अल्लाह, जब तू अपनी क़ौम के आगे आगे निकला, जब तू रेगिस्तान में क़दम बक़दम आगे बढ़ा (सिलाह)
8 तो ज़मीन लरज़ उठी और आसमान से बारिश टपकने लगी। हाँ, अल्लाह के हुज़ूर जो कोहे-सीना और इसराईल
का ख़ुदा है ऐसा ही हुआ।
9 ऐ अल्लाह, तूने कसरत की बारिश बरसने दी। जब कभी तेरा मौरूसी मुल्क निढाल हुआ तो तूने उसे ताज़ादम
किया।
10 यों तेरी क़ौम उसमें आबाद हुई। ऐ अल्लाह, अपनी भलाई से तूने उसे ज़रूरतमंदों के लिए तैयार किया।

11 रब फ़रमान सादिर करता है तो ख़ुशख़बरी सुनानेवाली औरतों का बड़ा लशकर निकलता है,
12 “फ़ौजों के बादशाह भाग रहे हैं। वह भाग रहे हैं और औरतें लूट का माल तक़सीम कर रही हैं।

13 तुम क्यों अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठे रहते हो? देखो, कबूतर के परों पर चाँदी और उसके शाहपरों
पर पीला सोना चढ़ाया गया है।"
14 जब क़ादिरे-मुतलक़ ने वहाँ के बादशाहों को मुंतशिर कर दिया तो कोहे-ज़लमोन पर बर्फ़ पड़ी।

15 कोहे-बसन इलाही पहाड़ है, कोहे-बसन की मुतअद्दिद चोटियाँ हैं।
16 ऐ पहाड़ की मुतअद्दिद चोटियो, तुम उस पहाड़ को क्यों रश्क की निगाह से देखती हो जिसे अल्लाह ने अपनी
सुकूनतगाह के लिए पसंद किया है? यक़ीनन रब वहाँ हमेशा के लिए सुकूनत करेगा।
17 अल्लाह के बेशुमार रथ और अनगिनत फ़ौजी हैं। ख़ुदावंद उनके दरमियान है, सीना का ख़ुदा मक़दिस में है।
18 तूने बुलंदी पर चढ़कर क़ैदियों का हुजूम गिरिफ़्तार कर लिया, तुझे इनसानों से तोहफ़े मिले, उनसे भी जो सरकश
हो गए थे। यों ही रब ख़ुदा वहाँ सुकूनतपज़ीर हुआ।

19 रब की तमजीद हो जो रोज़ बरोज़ हमारा बोझ उठाए चलता है। अल्लाह हमारी नजात है। (सिलाह)
20 हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो हमें बार बार नजात देता है, रब क़ादिरे-मुतलक़ हमें बार बार मौत से बचने के रास्ते
मुहैया करता है।
21 यक़ीनन अल्लाह अपने दुश्मनों के सरों को कुचल देगा। जो अपने गुनाहों से बाज़ नहीं आता उस की खोपड़ी
वह पाश पाश करेगा।
22 रब ने फ़रमाया, "मैं उन्हें बसन से वापस लाऊँगा, समुंदर की गहराइयों से वापस पहुँचाऊँगा।
23 तब तू अपने पाँवों को दुश्मन के ख़ून में धो लेगा, और तेरे कुत्ते उसे चाट लेंगे।"

24 ऐ अल्लाह, तेरे जुलूस नज़र आ गए हैं, मेरे ख़ुदा और बादशाह के जुलूस मक़दिस में दाख़िल होते हुए नज़र आ
गए हैं।
25 आगे गुलूकार, फिर साज़ बजानेवाले चल रहे हैं। उनके आस-पास कुँवारियाँ दफ़ बजाते हुए फिर रही हैं।
26 "जमातों में अल्लाह की सताइश करो! जितने भी इसराईल के सरचश्मे से निकले हुए हो रब की तमजीद करो!"
27 वहाँ सबसे छोटा भाई बिनयमीन आगे चल रहा है, फिर यहूदाह के बुज़ुर्गों का पुरशोर हुजूम ज़बूलून और नफ़ताली
के बुज़ुर्गों के साथ चल रहा है।

28 ऐ अल्लाह, अपनी क़ुदरत बरूए-कार ला! ऐ अल्लाह, जो क़ुदरत तूने पहले भी हमारी ख़ातिर दिखाई उसे
दुबारा दिखा!
29 उसे यरूशलम के ऊपर अपनी सुकूनतगाह से दिखा। तब बादशाह तेरे हुज़ूर तोहफ़े लाएँगे।
30 सरकंडों में छुपे हुए दरिंदे को मलामत कर! साँडों का जो ग़ोल बछड़ों जैसी क़ौमों में रहता है उसे डाँट! उन्हें
कुचल दे जो चाँदी को प्यार करते हैं। उन क़ौमों को मुंतशिर कर जो जंग करने से लुत्फ़अंदोज़ होती हैं।
31 मिसर से सफ़ीर आएँगे, एथोपिया अपने हाथ अल्लाह की तरफ़ उठाएगा।

32 ऐ दुनिया की सलतनतो, अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ! रब की मद्हसराई करो (सिलाह)
33 जो अपने रथ पर सवार होकर क़दीम ज़माने के बुलंदतरीन आसमानों में से गुज़रता है। सुनो उस की आवाज़ जो
ज़ोर से गरज रहा है।
34 अल्लाह की क़ुदरत को तसलीम करो! उस की अज़मत इसराईल पर छाई रहती और उस की क़ुदरत आसमान
पर है।
35 ऐ अल्लाह, तू अपने मक़दिस से ज़ाहिर होते वक़्त कितना महीब है। इसराईल का ख़ुदा ही क़ौम को क़ुव्वत और
ताक़त अता करता है। अल्लाह की तमजीद हो!

69

आज़माइश से नजात की दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : सोसन के फूल। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, मुझे बचा! क्योंकि पानी मेरे गले तक पहुँच गया है।
2 मैं गहरी दलदल में धँस गया हूँ, कहीं पाँव जमाने की जगह नहीं मिलती। मैं पानी की गहराइयों में आ गया हूँ,
सैलाब मुझ पर ग़ालिब आ गया है।

3 मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया हूँ। मेरा गला बैठ गया है। अपने ख़ुदा का इंतज़ार करते करते मेरी आँखें धुँधला गईं।

4 जो बिलावजह मुझसे कीना रखते हैं वह मेरे सर के बालों से ज़्यादा हैं, जो बेसबब मेरे दुश्मन हैं और मुझे तबाह करना चाहते हैं वह ताक़तवर हैं। जो कुछ मैंने नहीं लूटा उसे मुझसे तलब किया जाता है।

5 ऐ अल्लाह, तू मेरी हमाक़त से वाक़िफ़ है, मेरा क़ुसूर तुझसे पोशीदा नहीं है।

6 ऐ क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज, जो तेरे इंतज़ार में रहते हैं वह मेरे बाइस शरमिंदा न हों। ऐ इसराईल के ख़ुदा, मेरे बाइस तेरे तालिब की रुसवाई न हो।

7 क्योंकि तेरी ख़ातिर मैं शरमिंदगी बरदाश्त कर रहा हूँ, तेरी ख़ातिर मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है।

8 मैं अपने सगे भाइयों के नज़दीक अजनबी और अपनी माँ के बेटों के नज़दीक परदेसी बन गया हूँ।

9 क्योंकि तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा गई है, जो तुझे गालियाँ देते हैं उनकी गालियाँ मुझ पर आ गई हैं।

10 जब मैं रोज़ा रखकर रोता था तो लोग मेरा मज़ाक़ उड़ाते थे।

11 जब मातमी लिबास पहने फिरता था तो उनके लिए इबरतअंगेज़ मिसाल बन गया।

12 जो बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े पर बैठे हैं वह मेरे बारे में गप्पें हाँकते हैं। शराबी मुझे अपने तंज़ भरे गीतों का निशाना बनाते हैं।

13 लेकिन ऐ रब, मेरी तुझसे दुआ है कि मैं तुझे दुबारा मंज़ूर हो जाऊँ। ऐ अल्लाह, अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी सुन, अपनी यक़ीनी नजात के मुताबिक़ मुझे बचा।

14 मुझे दलदल से निकाल ताकि ग़रक़ न हो जाऊँ। मुझे उनसे छुटकारा दे जो मुझसे नफ़रत करते हैं। पानी की गहराइयों से मुझे बचा।

15 सैलाब मुझ पर ग़ालिब न आए, समुंदर की गहराई मुझे हड़प न कर ले, गढ़ा मेरे ऊपर अपना मुँह बंद न कर ले।

16 ऐ रब, मेरी सुन, क्योंकि तेरी शफ़क़त भली है। अपने अज़ीम रहम के मुताबिक़ मेरी तरफ़ रुजू कर।

17 अपना चेहरा अपने ख़ादिम से छुपाए न रख, क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। जल्दी से मेरी सुन!

18 क़रीब आकर मेरी जान का फ़िद्या दे, मेरे दुश्मनों के सबब से एवज़ाना देकर मुझे छुड़ा।

19 तू मेरी रुसवाई, मेरी शरमिंदगी और तज़लील से वाक़िफ़ है। तेरी आँखें मेरे तमाम दुश्मनों पर लगी रहती हैं।

20 उनके तानों से मेरा दिल टूट गया है, मैं बीमार पड़ गया हूँ। मैं हमदर्दी के इंतज़ार में रहा, लेकिन बेफ़ायदा। मैंने तवक़्क़ो की कि कोई मुझे दिलासा दे, लेकिन एक भी न मिला।

21 उन्होंने मेरी ख़ुराक में कड़वा ज़हर मिलाया, मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।

22 उनकी मेज़ उनके लिए फंदा और उनके साथियों के लिए जाल बन जाए।

23 उनकी आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख न सकें। उनकी कमर हमेशा तक डगमगाती रहे।

24 अपना पूरा ग़ुस्सा उन पर उतार, तेरा सख़्त ग़ज़ब उन पर आ पड़े।

25 उनकी रिहाइशगाह सुनसान हो जाए और कोई उनके ख़ैमों में आबाद न हो,

26 क्योंकि जिसे तू ही ने सज़ा दी उसे वह सताते हैं, जिसे तू ही ने ज़ख़मी किया उसका दुख दूसरों को सुनाकर ख़ुश होते हैं।

27 उनके क़ुसूर का सख़्ती से हिसाब-किताब कर, वह तेरे सामने रास्तबाज़ न ठहरें।

28 उन्हें किताबे-हयात से मिटाया जाए, उनका नाम रास्तबाज़ों की फ़हरिस्त में दर्ज न हो।

29 हाय, मैं मुसीबत में फँसा हुआ हूँ, मुझे बहुत दर्द है। ऐ अल्लाह, तेरी नजात मुझे महफ़ूज़ रखे।

30 मैं अल्लाह के नाम की मद्हसराई करूँगा, शुक्रगुज़ारी से उस की ताज़ीम करूँगा।

31 यह रब को बैल या सींग और खुर रखनेवाले साँड से कहीं ज़्यादा पसंद आएगा।

32 हलीम अल्लाह का काम देखकर ख़ुश हो जाएंगे। ऐ अल्लाह के तालिबो, तसल्ली पाओ!

33 क्योंकि रब मुहताजों की सुनता और अपने क़ैदियों को हक़ीर नहीं जानता।

34 आसमानो-ज़मीन उस की तमजीद करें, समुंदर और जो कुछ उसमें हरकत करता है उस की सताइश करे।

35 क्योंकि अल्लाह सिय्यून को नजात देकर यहूदाह के शहरों को तामीर करेगा, और उसके ख़ादिम उन पर क़ब्ज़ा
करके उनमें आबाद हो जाएंगे।
36 उनकी औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी, और उसके नाम से मुहब्बत रखनेवाले उसमें बसे रहेंगे।

70

दुश्मन से नजात की दुआ
1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। याददाश्त के लिए।
ऐ अल्लाह, जल्दी से आकर मुझे बचा! ऐ रब, मेरी मदद करने में जल्दी कर!
2 मेरे जानी दुश्मन शरमिंदा हो जाएँ, उनकी सख़्त रुसवाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से लुत्फ़ उठाते हैं वह
पीछे हट जाएँ, उनका मुँह काला हो जाए।
3 जो मेरी मुसीबत देखकर क़हक़हा लगाते हैं वह शर्म के मारे पुश्त दिखाएँ।
4 लेकिन तेरे तालिब शादमान होकर तेरी ख़ुशी मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें, "अल्लाह अज़ीम
है!"
5 लेकिन मैं नाचार और मुहताज हूँ। ऐ अल्लाह, जल्दी से मेरे पास आ! तू ही मेरा सहारा और मेरा नजातदहिंदा है।
ऐ रब, देर न कर!

71

हिफ़ाज़त के लिए दुआ
1 ऐ रब, मैंने तुझमें पनाह ली है। मुझे कभी शरमिंदा न होने दे।
2 अपनी रास्ती से मुझे बचाकर छुटकारा दे। अपना कान मेरी तरफ़ झुकाकर मुझे नजात दे।
3 मेरे लिए चटान पर महफ़ूज़ घर हो जिसमें मैं हर वक़्त पनाह ले सकूँ। तूने फ़रमाया है कि मुझे नजात देगा, क्योंकि
तू ही मेरी चटान और मेरा क़िला है।

4 ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे बेदीन के हाथ से बचा, उसके क़ब्ज़े से जो बेइनसाफ़ और ज़ालिम है।

5 क्योंकि तू ही मेरी उम्मीद है। ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू मेरी जवानी ही से मेरा भरोसा रहा है।
6 पैदाइश से ही मैंने तुझ पर तकिया किया है, माँ के पेट से तूने मुझे सँभाला है। मैं हमेशा तेरी हम्दो-सना करूँगा।

7 बहुतों के नज़दीक मैं बदशुगूनी हूँ, लेकिन तू मेरी मज़बूत पनाहगाह है।
8 दिन-भर मेरा मुँह तेरी तमजीद और ताज़ीम से लबरेज़ रहता है।

9 बुढ़ापे में मुझे रद्द न कर, ताक़त के ख़त्म होने पर मुझे तर्क न कर।
10 क्योंकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें कर रहे हैं, जो मेरी जान की ताक लगाए बैठे हैं वह एक दूसरे से सलाह-मशवरा
कर रहे हैं।
11 वह कहते हैं, "अल्लाह ने उसे तर्क कर दिया है। उसके पीछे पड़कर उसे पकड़ो, क्योंकि कोई नहीं जो उसे
बचाए।"

12 ऐ अल्लाह, मुझसे दूर न हो। ऐ मेरे ख़ुदा, मेरी मदद करने में जल्दी कर।
13 मेरे हरीफ़ शरमिंदा होकर फ़ना हो जाएँ, जो मुझे नुक़सान पहुँचाने के दरपै हैं वह लान-तान और रुसवाई तले दब
जाएँ।
14 लेकिन मैं हमेशा तेरे इंतज़ार में रहूँगा, हमेशा तेरी सताइश करता रहूँगा।
15 मेरा मुँह तेरी रास्ती सुनाता रहेगा, सारा दिन तेरे नजातबख़्श कामों का ज़िक्र करता रहेगा, गो मैं उनकी पूरी तादाद
गिन भी नहीं सकता।
16 मैं रब क़ादिरे-मुतलक़ के अज़ीम काम सुनाते हुए आऊँगा, मैं तेरी, सिर्फ़ तेरी ही रास्ती याद करूँगा।

17 ऐ अल्लाह, तू मेरी जवानी से मुझे तालीम देता रहा है, और आज तक मैं तेरे मोजिज़ात का एलान करता आया
हूँ।

18 ऐ अल्लाह, ख़ाह मैं बूढ़ा हो जाऊँ और मेरे बाल सफ़ेद हो जाएँ मुझे तर्क न कर जब तक मैं आनेवाली पुश्त के
तमाम लोगों को तेरी क़ुव्वत और क़ुदरत के बारे में बता न लूँ।

19 ऐ अल्लाह, तेरी रास्ती आसमान से बातें करती है। ऐ अल्लाह, तुझ जैसा कौन है जिसने इतने अज़ीम काम किए
हैं?
20 तूने मुझे मुतअद्दिद तलख़ तजरबों में से गुज़रने दिया है, लेकिन तू मुझे दुबारा ज़िंदा भी करेगा, तू मुझे ज़मीन की
गहराइयों में से वापस लाएगा।
21 मेरा रुतबा बढ़ा दे, मुझे दुबारा तसल्ली दे।
22 ऐ मेरे ख़ुदा, मैं सितार बजाकर तेरी सताइश और तेरी वफ़ादारी की तमजीद करूँगा। ऐ इसराईल के क़ुद्दूस, मैं
सरोद बजाकर तेरी तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
23 जब मैं तेरी मद्‌हसराई करूँगा तो मेरे होंट ख़ुशी के नारे लगाएँगे, और मेरी जान जिसे तूने फ़िद्या देकर छुड़ाया है
शादियाना बजाएगी।
24 मेरी ज़बान भी दिन-भर तेरी रास्ती बयान करेगी, क्योंकि जो मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते थे वह शर्मसार और
रुसवा हो गए हैं।

72

सलामती का बादशाह
1 सुलेमान का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, बादशाह को अपना इनसाफ़ अता कर, बादशाह के बेटे को अपनी रास्ती बख़्श दे
2 ताकि वह रास्ती से तेरी क़ौम और इनसाफ़ से तेरे मुसीबतज़दों की अदालत करे।
3 पहाड़ क़ौम को सलामती और पहाड़ियाँ रास्ती पहुँचाएँ।
4 वह क़ौम के मुसीबतज़दों का इनसाफ़ करे और मुहताजों की मदद करके ज़ालिमों को कुचल दे।
5 तब लोग पुश्त-दर-पुश्त तेरा ख़ौफ़ मानेंगे जब तक सूरज चमके और चाँद रौशनी दे।
6 वह कटी हुई घास के खेत पर बरसनेवाली बारिश की तरह उतर आए, ज़मीन को तर करनेवाली बौछाड़ों की
तरह नाज़िल हो जाए।
7 उसके दौरे-हुकूमत में रास्तबाज़ फले-फूलेगा, और जब तक चाँद नेस्त न हो जाए सलामती का ग़लबा होगा।
8 वह एक समुंदर से दूसरे समुंदर तक और दरियाए-फ़ुरात से दुनिया की इंतहा तक हुकूमत करे।
9 रेगिस्तान के बाशिंदे उसके सामने झुक जाएँ, उसके दुश्मन ख़ाक चाटें।
10 तरसीस और साहिली इलाक़ों के बादशाह उसे ख़राज पहुँचाएँ, सबा और सिबा उसे बाज पेश करें।
11 तमाम बादशाह उसे सिजदा करें, सब अक़वाम उस की ख़िदमत करें।

12 क्योंकि जो ज़रूरतमंद मदद के लिए पुकारे उसे वह छुटकारा देगा, जो मुसीबत में है और जिसकी मदद कोई
नहीं करता उसे वह रिहाई देगा।
13 वह पस्तहालों और ग़रीबों पर तरस खाएगा, मुहताजों की जान को बचाएगा।
14 वह एवज़ाना देकर उन्हें ज़ुल्मो-तशद्दुद से छुड़ाएगा, क्योंकि उनका ख़ून उस की नज़र में क़ीमती है।

15 बादशाह ज़िंदाबाद! सबा का सोना उसे दिया जाए। लोग हमेशा उसके लिए दुआ करें, दिन-भर उसके लिए
बरकत चाहें।
16 मुल्क में अनाज की कसरत हो, पहाड़ों की चोटियों पर भी उस की फ़सलें लहलहाएँ। उसका फल लुबनान के
फल जैसा उम्दा हो, शहरों के बाशिंदे हरियाली की तरह फलें-फूलें।
17 बादशाह का नाम अबद तक क़ायम रहे, जब तक सूरज चमके उसका नाम फले-फूले। तमाम अक़वाम उससे
बरकत पाएँ, और वह उसे मुबारक कहें।

18 रब ख़ुदा की तमजीद हो जो इसराईल का ख़ुदा है। सिर्फ़ वही मोजिज़े करता है!
19 उसके जलाली नाम की अबद तक तमजीद हो, पूरी दुनिया उसके जलाल से भर जाए। आमीन, फिर आमीन।

20 यहाँ दाऊद बिन यस्सी की दुआएँ ख़त्म होती हैं।

तीसरी किताब **73-89**

73

बेदीनों की कामयाबी के बावुजूद तसल्ली

1 आसफ़ का ज़बूर।

यक़ीनन अल्लाह इसराईल पर मेहरबान है, उन पर जिनके दिल पाक हैं।

2 लेकिन मैं फिसलने को था, मेरे क़दम लग़ज़िश खाने को थे।

3 क्योंकि शेख़ीबाज़ों को देखकर मैं बेचैन हो गया, इसलिए कि बेदीन इतने ख़ुशहाल हैं।

4 मरते वक़्त उनको कोई तकलीफ़ नहीं होती, और उनके जिस्म मोटे-ताज़े रहते हैं।

5 आम लोगों के मसायल से उनका वास्ता नहीं पड़ता। जिस दर्दो-करब में दूसरे मुब्तला रहते हैं उससे वह आज़ाद होते हैं।

6 इसलिए उनके गले में तकब्बुर का हार है, वह ज़ुल्म का लिबास पहने फिरते हैं।

7 चरबी के बाइस उनकी आँखें उभर आई हैं। उनके दिल बेलगाम वहमों की गिरिफ़्त में रहते हैं।

8 वह मज़ाक़ उड़ाकर बुरी बातें करते हैं, अपने ग़ुरूर में ज़ुल्म की धमकियाँ देते हैं।

9 वह समझते हैं कि जो कुछ हमारे मुँह से निकलता है वह आसमान से है, जो बात हमारी ज़बान पर आ जाती है वह पूरी ज़मीन के लिए अहमियत रखती है।

10 चुनाँचे अवाम उनकी तरफ़ रुजू होते हैं, क्योंकि उनके हाँ कसरत का पानी पिया जाता है।

11 वह कहते हैं, "अल्लाह को क्या पता है? अल्लाह तआला को इल्म ही नहीं।"

12 देखो, यही है बेदीनों का हाल। वह हमेशा सुकून से रहते, हमेशा अपनी दौलत में इज़ाफ़ा करते हैं।

13 यक़ीनन मैंने बेफ़ायदा अपना दिल पाक रखा और अबस अपने हाथ ग़लत काम करने से बाज़ रखे।

14 क्योंकि दिन-भर मैं दर्दो-करब में मुब्तला रहता हूँ, हर सुबह मुझे सज़ा दी जाती है।

15 अगर मैं कहता, "मैं भी उनकी तरह बोलूँगा," तो तेरे फ़रज़ंदों की नसल से ग़द्दारी करता।

16 मैं सोच-बिचार में पड़ गया ताकि बात समझूँ, लेकिन सोचते सोचते थक गया, अज़ियत में सिर्फ़ इज़ाफ़ा हुआ।

17 तब मैं अल्लाह के मक़दिस में दाख़िल होकर समझ गया कि उनका अंजाम क्या होगा।

18 यक़ीनन तू उन्हें फिसलनी जगह पर रखेगा, उन्हें फ़रेब में फँसाकर ज़मीन पर पटख़ देगा।

19 अचानक ही वह तबाह हो जाएंगे, दहशतनाक मुसीबत में फँसकर मुकम्मल तौर पर फ़ना हो जाएंगे।

20 ऐ रब, जिस तरह ख़ाब जाग उठते वक़्त ग़ैरहक़ीक़ी साबित होता है उसी तरह तू उठते वक़्त उन्हें वहम क़रार देकर हक़ीर जानेगा।

21 जब मेरे दिल में तलख़ी पैदा हुई और मेरे बातिन में सख़्त दर्द था

22 तो मैं अहमक़ था। मैं कुछ नहीं समझता था बल्कि तेरे सामने मवेशी की मानिंद था।

23 तो भी मैं हमेशा तेरे साथ लिपटा रहूँगा, क्योंकि तू मेरा दहना हाथ थामे रखता है।

24 तू अपने मशवरे से मेरी क़ियादत करके आख़िर में इज़्ज़त के साथ मेरा ख़ैरमक़्दम करेगा।

25 जब तू मेरे साथ है तो मुझे आसमान पर क्या कमी होगी? जब तू मेरे साथ है तो मैं ज़मीन की कोई भी चीज़ नहीं चाहूँगा।

26 ख़ाह मेरा जिस्म और मेरा दिल जवाब दे जाएँ, लेकिन अल्लाह हमेशा तक मेरे दिल की चटान और मेरी मीरास है।

27 यक़ीनन जो तुझसे दूर हैं वह हलाक हो जाएंगे, जो तुझसे बेवफ़ा हैं उन्हें तू तबाह कर देगा।

28 लेकिन मेरे लिए अल्लाह की क़ुरबत सब कुछ है। मैंने रब क़ादिरे-मुतलक़ को अपनी पनाहगाह बनाया है, और मैं लोगों को तेरे तमाम काम सुनाऊँगा।

74

रब के घर की बेहुरमती पर अफ़सोस

1 आसफ़ का ज़बूर। हिकमत का गीत।

ऐ अल्लाह, तूने हमें हमेशा के लिए क्यों रद्द किया है? अपनी चरागाह की भेड़ों पर तेरा क़हर क्यों भड़कता रहता है?

2 अपनी जमात को याद कर जिसे तूने क़दीम ज़माने में ख़रीदा और एवज़ाना देकर छुड़ाया ताकि तेरी मीरास का क़बीला हो। कोहे-सिय्यून को याद कर जिस पर तू सुकूनतपज़ीर रहा है।

3 अपने क़दम इन दायमी खंडरात की तरफ़ बढ़ा। दुश्मन ने मक़दिस में सब कुछ तबाह कर दिया है।

4 तेरे मुख़ालिफ़ों ने गरजते हुए तेरी जलसागाह में अपने निशान गाड़ दिए हैं।

5 उन्होंने गुंजान जंगल में लकड़हारों की तरह अपने कुल्हाड़े चलाए,

6 अपने कुल्हाड़ों और कुदालों से उस की तमाम कंदाकारी को टुकड़े टुकड़े कर दिया है।

7 उन्होंने तेरे मक़दिस को भस्म कर दिया, फ़र्श तक तेरे नाम की सुकूनतगाह की बेहुरमती की है।

8 अपने दिल में वह बोले, "आओ, हम उन सबको ख़ाक में मिलाएँ!" उन्होंने मुल्क में अल्लाह की हर इबादतगाह नज़रे-आतिश कर दी है।

9 अब हम पर कोई इलाही निशान ज़ाहिर नहीं होता। न कोई नबी हमारे पास रह गया, न कोई और मौजूद है जो जानता हो कि ऐसे हालात कब तक रहेंगे।

10 ऐ अल्लाह, हरीफ़ कब तक लान-तान करेगा, दुश्मन कब तक तेरे नाम की तकफ़ीर करेगा?

11 तू अपना हाथ क्यों हटाता, अपना दहना हाथ दूर क्यों रखता है? उसे अपनी चादर से निकालकर उन्हें तबाह कर दे!

12 अल्लाह क़दीम ज़माने से मेरा बादशाह है, वही दुनिया में नजातबख़्श काम अंजाम देता है।

13 तू ही ने अपनी क़ुदरत से समुंदर को चीरकर पानी में अज़दहाओं के सरों को तोड़ डाला।

14 तू ही ने लिवियातान के सरों को चूर चूर करके उसे जंगली जानवरों को खिला दिया।

15 एक जगह तूने चश्मे और नदियाँ फूटने दीं, दूसरी जगह कभी न सूखनेवाले दरिया सूखने दिए।

16 दिन भी तेरा है, रात भी तेरी ही है। चाँद और सूरज तेरे ही हाथ से क़ायम हुए।

17 तू ही ने ज़मीन की हुदूद मुक़र्रर कीं, तू ही ने गरमियों और सर्दियों के मौसम बनाए।

18 ऐ रब, दुश्मन की लान-तान याद कर। ख़याल कर कि अहमक़ क़ौम तेरे नाम पर कुफ़र बकती है।

19 अपने कबूतर की जान को वहशी जानवरों के हवाले न कर, हमेशा तक अपने मुसीबतज़दों की ज़िंदगी को न भूल।

20 अपने अहद का लिहाज़ कर, क्योंकि मुल्क के तारीक कोने ज़ुल्म के मैदानों से भर गए हैं।

21 होने न दे कि मज़लूमों को शरमिंदा होकर पीछे हटना पड़े बल्कि बख़्श दे कि मुसीबतज़दा और ग़रीब तेरे नाम पर फ़ख़र कर सकें।

22 ऐ अल्लाह, उठकर अदालत में अपने मामले का दिफ़ा कर। याद रहे कि अहमक़ दिन-भर तुझे लान-तान करता है।

23 अपने दुश्मनों के नारे न भूल बल्कि अपने मुख़ालिफ़ों का मुसलसल बढ़ता हुआ शोर-शराबा याद कर।

75

अल्लाह मग़रूरों की अदालत करता है

1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।
ऐ अल्लाह, तेरा शुक्र हो, तेरा शुक्र! तेरा नाम उनके क़रीब है जो तेरे मोजिज़े बयान करते हैं।

2 अल्लाह फ़रमाता है, "जब मेरा वक़्त आएगा तो मैं इनसाफ़ से अदालत करूँगा।

3 गो ज़मीन अपने बाशिंदों समेत डगमगाने लगे, लेकिन मैं ही ने उसके सतूनों को मज़बूत कर दिया है। (सिलाह)

4 शेख़ीबाज़ों से मैंने कहा, 'डींगें मत मारो,' और बेदीनों से, 'अपने आप पर फ़ख़र मत करो। *

5 न अपनी ताक़त पर शेख़ी मारो, † न अकड़कर कुफ़र बको'।"

6 क्योंकि सरफ़राज़ी न मशरिक़ से, न मग़रिब से और न बयाबान से आती है

7 बल्कि अल्लाह से जो मुंसिफ़ है। वही एक को पस्त कर देता है और दूसरे को सरफ़राज़।

* **75:4** लफ़्ज़ी तरजुमा : सींग मत उठाओ। † **75:5** लफ़्ज़ी मतलब : न अपना सींग उठाओ।

8 क्योंकि रब के हाथ में झागदार और मसालेदार मै का प्याला है जिसे वह लोगों को पिला देता है। यक़ीनन दुनिया के तमाम बेदीनों को इसे आख़िरी क़तरे तक पीना है।

9 लेकिन मैं हमेशा अल्लाह के अज़ीम काम सुनाऊँगा, हमेशा याक़ूब के ख़ुदा की मद्हसराई करूँगा।

10 अल्लाह फ़रमाता है, "मैं तमाम बेदीनों की कमर तोड़ दूँगा जबकि रास्तबाज़ सरफ़राज़ होगा।" ‡

76

अल्लाह मुंसिफ़ है

1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।

अल्लाह यहूदाह में मशहूर है, उसका नाम इसराईल में अज़ीम है।

2 उसने अपनी माँद सालिम * में और अपना भट कोहे-सिय्यून पर बना लिया है।

3 वहाँ उसने जलते हुए तीरों को तोड़ डाला और ढाल, तलवार और जंग के हथियारों को चूर चूर कर दिया है। (सिलाह)

4 ऐ अल्लाह, तू दरख़्शाँ है, तू शिकार के पहाड़ों से आया हुआ अज़ीमुश-शान सूरमा है।

5 बहादुरों को लूट लिया गया है, वह मौत की नींद सो गए हैं। फ़ौजियों में से एक भी हाथ नहीं उठा सकता।

6 ऐ याक़ूब के ख़ुदा, तेरे डाँटने पर घोड़े और रथबान बेहिसो-हरकत हो गए हैं।

7 तू ही महीब है। जब तू झिड़के तो कौन तेरे हुज़ूर क़ायम रहेगा?

8 तूने आसमान से फ़ैसले का एलान किया। ज़मीन सहमकर चुप हो गई

9 जब अल्लाह अदालत करने के लिए उठा, जब वह तमाम मुसीबतज़दों को नजात देने के लिए आया। (सिलाह)

10 क्योंकि इनसान का तैश भी तेरी तमजीद का बाइस है। उसके तैश का आख़िरी नतीजा तेरा जलाल ही है। †

11 रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नतें मानकर उन्हें पूरा करो। जितने भी उसके इर्दगिर्द हैं वह पुरजलाल ख़ुदा के हुज़ूर हदिये लाएँ।

12 वह हुक्मरानों को शिकस्ता रूह कर देता है, उसी से दुनिया के बादशाह दहशत खाते हैं।

77

अल्लाह के अज़ीम कामों से तसल्ली मिलती है

1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। यदूतून के लिए।

मैं अल्लाह से फ़रियाद करके मदद के लिए चिल्लाता हूँ, मैं अल्लाह को पुकारता हूँ कि मुझ पर ध्यान दे।

2 अपनी मुसीबत में मैंने रब को तलाश किया। रात के वक़्त मेरे हाथ बिलानाग़ा उस की तरफ़ उठे रहे। मेरी जान ने तसल्ली पाने से इनकार किया।

3 मैं अल्लाह को याद करता हूँ तो आहें भरने लगता हूँ, मैं सोच-बिचार में पड़ जाता हूँ तो रूह निढाल हो जाती है। (सिलाह)

4 तू मेरी आँखों को बंद होने नहीं देता। मैं इतना बेचैन हूँ कि बोल भी नहीं सकता।

5 मैं क़दीम ज़माने पर ग़ौर करता हूँ, उन सालों पर जो बड़ी देर हुए गुज़र गए हैं।

6 रात को मैं अपना गीत याद करता हूँ। मेरा दिल महवे-ख़याल रहता और मेरी रूह तफ़तीश करती रहती है।

7 "क्या रब हमेशा के लिए रद्द करेगा, क्या आइंदा हमें कभी पसंद नहीं करेगा?

8 क्या उस की शफ़क़त हमेशा के लिए जाती रही है? क्या उसके वादे अब से जवाब दे गए हैं?

9 क्या अल्लाह मेहरबानी करना भूल गया है? क्या उसने ग़ुस्से में अपना रहम बाज़ रखा है?" (सिलाह)

10 मैं बोला, "इससे मुझे दुख है कि अल्लाह तआला का दहना हाथ बदल गया है।"

‡ **75:10** लफ़्ज़ी तरजुमा : बेदीनों के तमाम सींगों को काट डालूँगा जबकि रास्तबाज़ों का सींग सरफ़राज़ हो जाएगा। * **76:2** सालिम से मुराद यरूशलम है। † **76:10** लफ़्ज़ी तरजुमा : तू बचे हुए तैश से कमरबस्ता हो जाता है।

11 मैं रब के काम याद करूँगा, हाँ क़दीम ज़माने के तेरे मोजिज़े याद करूँगा।
12 जो कुछ तूने किया उसके हर पहलू पर ग़ौरो-ख़ौज़ करूँगा, तेरे अज़ीम कामों में महवे-ख़याल रहूँगा।
13 ऐ अल्लाह, तेरी राह क़ुद्दूस है। कौन-सा माबूद हमारे ख़ुदा जैसा अज़ीम है?
14 तू ही मोजिज़े करनेवाला ख़ुदा है। अक़वाम के दरमियान तूने अपनी क़ुदरत का इज़हार किया है।
15 बड़ी क़ुव्वत से तूने एवज़ाना देकर अपनी क़ौम, याक़ूब और यूसुफ़ की औलाद को रिहा कर दिया है। (सिलाह)
16 ऐ अल्लाह, पानी ने तुझे देखा, पानी ने तुझे देखा तो तड़पने लगा, गहराइयों तक लरज़ने लगा।
17 मूसलाधार बारिश बरसी, बादल गरज उठे और तेरे तीर इधर उधर चलने लगे।
18 आँधी में तेरी आवाज़ कड़कती रही, दुनिया बिजलियों से रौशन हुई, ज़मीन काँपती काँपती उछल पड़ी।
19 तेरी राह समुंदर में से, तेरा रास्ता गहरे पानी में से गुज़रा, तो भी तेरे नक़्शे-क़दम किसी को नज़र न आए।
20 मूसा और हारून के हाथ से तूने रेवड़ की तरह अपनी क़ौम की राहनुमाई की।

78

इसराईल की तारीख़ में इलाही सज़ा और रहम
1 आसफ़ का ज़बूर। हिकमत का गीत।
ऐ मेरी क़ौम, मेरी हिदायत पर ध्यान दे, मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।
2 मैं तमसीलों में बात करूँगा, क़दीम ज़माने के मुअम्मे बयान करूँगा।
3 जो कुछ हमने सुन लिया और हमें मालूम हुआ है, जो कुछ हमारे बापदादा ने हमें सुनाया है
4 उसे हम उनकी औलाद से नहीं छुपाएँगे। हम आनेवाली पुश्त को रब के क़ाबिले-तारीफ़ काम बताएँगे, उस की
क़ुदरत और मोजिज़ात बयान करेंगे।
5 क्योंकि उसने याक़ूब की औलाद को शरीअत दी, इसराईल में अहकाम क़ायम किए। उसने फ़रमाया कि हमारे
बापदादा यह अहकाम अपनी औलाद को सिखाएँ
6 ताकि आनेवाली पुश्त भी उन्हें अपनाए, वह बच्चे जो अभी पैदा नहीं हुए थे। फिर उन्हें भी अपने बच्चों को
सुनाना था।
7 क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि इस तरह हर पुश्त अल्लाह पर एतमाद रखकर उसके अज़ीम काम न भूले
बल्कि उसके अहकाम पर अमल करे।
8 वह नहीं चाहता कि वह अपने बापदादा की मानिंद हों जो ज़िद्दी और सरकश नसल थे, ऐसी नसल जिसका दिल
साबितक़दम नहीं था और जिसकी रूह वफ़ादारी से अल्लाह से लिपटी न रही।

9 चुनाँचे इफ़राईम के मर्द गो कमानों से लैस थे जंग के वक़्त फ़रार हुए।
10 वह अल्लाह के अहद के वफ़ादार न रहे, उस की शरीअत पर अमल करने के लिए तैयार नहीं थे।
11 जो कुछ उसने किया था, जो मोजिज़े उसने उन्हें दिखाए थे, इफ़राईमी वह सब कुछ भूल गए।
12 मुल्के-मिसर के इलाक़े ज़ुअन में उसने उनके बापदादा के देखते देखते मोजिज़े किए थे।
13 समुंदर को चीरकर उसने उन्हें उसमें से गुज़रने दिया, और दोनों तरफ़ पानी मज़बूत दीवार की तरह खड़ा रहा।
14 दिन को उसने बादल के ज़रीए और रात-भर चमकदार आग से उनकी क़ियादत की।
15 रेगिस्तान में उसने पत्थरों को चाक करके उन्हें समुंदर की-सी कसरत का पानी पिलाया।
16 उसने होने दिया कि चटान से नदियाँ फूट निकलें और पानी दरियाओं की तरह बहने लगे।

17 लेकिन वह उसका गुनाह करने से बाज़ न आए बल्कि रेगिस्तान में अल्लाह तआला से सरकश रहे।
18 जान-बूझकर उन्होंने अल्लाह को आज़माकर वह ख़ुराक माँगी जिसका लालच करते थे।
19 अल्लाह के ख़िलाफ़ कुफ़्र बककर वह बोले, "क्या अल्लाह रेगिस्तान में हमारे लिए मेज़ बिछा सकता है?
20 बेशक जब उसने चटान को मारा तो पानी फूट निकला और नदियाँ बहने लगीं। लेकिन क्या वह रोटी भी दे
सकता है, अपनी क़ौम को गोश्त भी मुहैया कर सकता है? यह तो नामुमकिन है।"
21 यह सुनकर रब तैश में आ गया। याक़ूब के ख़िलाफ़ आग भड़क उठी, और उसका ग़ज़ब इसराईल पर नाज़िल
हुआ।
22 क्यों? इसलिए कि उन्हें अल्लाह पर यक़ीन नहीं था, वह उस की नजात पर भरोसा नहीं रखते थे।

23 इसके बावुजूद अल्लाह ने उनके ऊपर बादलों को हुक्म देकर आसमान के दरवाज़े खोल दिए।

24 उसने खाने के लिए उन पर मन बरसाया, उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।
25 हर एक ने फ़रिश्तों की यह रोटी खाई बल्कि अल्लाह ने इतना खाना भेजा कि उनके पेट भर गए।
26 फिर उसने आसमान पर मशरिक़ी हवा चलाई और अपनी क़ुदरत से जुनूबी हवा पहुँचाई।
27 उसने गर्द की तरह उन पर गोश्त बरसाया, समुंदर की रेत जैसे बेशुमार परिंदे उन पर गिरने दिए।
28 ख़ैमागाह के बीच में ही वह गिर पड़े, उनके घरों के इर्दगिर्द ही ज़मीन पर आ गिरे।
29 तब वह खा खाकर ख़ूब सेर हो गए, क्योंकि जिसका लालच वह करते थे वह अल्लाह ने उन्हें मुहैया किया था।
30 लेकिन उनका लालच अभी पूरा नहीं हुआ था और गोश्त अभी उनके मुँह में था
31 कि अल्लाह का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। क़ौम के खाते-पीते लोग हलाक हुए, इसराईल के जवान ख़ाक में
मिल गए।

32 इन तमाम बातों के बावुजूद वह अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करते गए और उसके मोजिज़ात पर ईमान न लाए।
33 इसलिए उसने उनके दिन नाकामी में गुज़रने दिए, और उनके साल दहशत की हालत में इख़्तितामपज़ीर हुए।
34 जब कभी अल्लाह ने उनमें क़त्लो-ग़ारत होने दी तो वह उसे ढूँडने लगे, वह मुड़कर अल्लाह को तलाश करने
लगे।
35 तब उन्हें याद आया कि अल्लाह हमारी चटान, अल्लाह तआला हमारा छुड़ानेवाला है।
36 लेकिन वह मुँह से उसे धोका देते, ज़बान से उसे झूट पेश करते थे।
37 न उनके दिल साबितक़दमी से उसके साथ लिपटे रहे, न वह उसके अहद के वफ़ादार रहे।

38 तो भी अल्लाह रहमदिल रहा। उसने उन्हें तबाह न किया बल्कि उनका क़ुसूर मुआफ़ करता रहा। बार बार वह
अपने ग़ज़ब से बाज़ आया, बार बार अपना पूरा क़हर उन पर उतारने से गुरेज़ किया।
39 क्योंकि उसे याद रहा कि वह फ़ानी इनसान हैं, हवा का एक झोंका जो गुज़रकर कभी वापस नहीं आता।

40 रेगिस्तान में वह कितनी दफ़ा उससे सरकश हुए, कितनी मरतबा उसे दुख पहुँचाया।
41 बार बार उन्होंने अल्लाह को आज़माया, बार बार इसराईल के क़ुद्दूस को रंजीदा किया।
42 उन्हें उस की क़ुदरत याद न रही, वह दिन जब उसने फ़िद्या देकर उन्हें दुश्मन से छुड़ाया,

43 वह दिन जब उसने मिसर में अपने इलाही निशान दिखाए, जुअन के इलाक़े में अपने मोजिज़े किए।
44 उसने उनकी नहरों का पानी ख़ून में बदल दिया, और वह अपनी नदियों का पानी पी न सके।
45 उसने उनके दरमियान जुओं के ग़ोल भेजे जो उन्हें खा गईं, मेंढक जो उन पर तबाही लाए।
46 उनकी पैदावार उसने जवान टिड्डियों के हवाले की, उनकी मेहनत का फल बालिग़ टिड्डियों के सुपुर्द किया।
47 उनकी अंगूर की बेलें उसने ओलों से, उनके अंजीर-तूत के दरख़्त सैलाब से तबाह कर दिए।
48 उनके मवेशी उसने ओलों के हवाले किए, उनके रेवड़ बिजली के सुपुर्द किए।
49 उसने उन पर अपना शोलाज़न ग़ज़ब नाज़िल किया। क़हर, ख़फ़गी और मुसीबत यानी तबाही लानेवाले फ़रिश्तों
का पूरा दस्ता उन पर हमलाआवर हुआ।
50 उसने अपने ग़ज़ब के लिए रास्ता तैयार करके उन्हें मौत से न बचाया बल्कि मोहलक वबा की ज़द में आने दिया।
51 मिसर में उसने तमाम पहलौठों को मार डाला और हाम के ख़ैमों में मरदानगी का पहला फल तमाम कर दिया।
52 फिर वह अपनी क़ौम को भेड़-बकरियों की तरह मिसर से बाहर लाकर रेगिस्तान में रेवड़ की तरह लिए फिरा।
53 वह हिफ़ाज़त से उनकी क़ियादत करता रहा। उन्हें कोई डर नहीं था जबकि उनके दुश्मन समुंदर में डूब गए।
54 यों अल्लाह ने उन्हें मुक़द्दस मुल्क तक पहुँचाया, उस पहाड़ तक जिसे उसके दहने हाथ ने हासिल किया था।
55 उनके आगे आगे वह दीगर क़ौमें निकालता गया। उनकी ज़मीन उसने तक़सीम करके इसराईलियों को मीरास
में दी, और उनके ख़ैमों में उसने इसराईली क़बीले बसाए।

56 इसके बावुजूद वह अल्लाह तआला को आज़माने से बाज़ न आए बल्कि उससे सरकश हुए और उसके अहकाम
के ताबे न रहे।
57 अपने बापदादा की तरह वह ग़द्दार बनकर बेवफ़ा हुए। वह ढीली कमान की तरह नाकाम हो गए।
58 उन्होंने ऊँची जगहों की ग़लत क़ुरबानगाहों से अल्लाह को ग़ुस्सा दिलाया और अपने बुतों से उसे रंजीदा किया।
59 जब अल्लाह को ख़बर मिली तो वह ग़ज़बनाक हुआ और इसराईल को मुकम्मल तौर पर मुस्तरद कर दिया।
60 उसने सैला में अपनी सुकूनतगाह छोड़ दी, वह ख़ैमा जिसमें वह इनसान के दरमियान सुकूनत करता था।

61 अहद का संदूक़ उस की क़ुदरत और जलाल का निशान था, लेकिन उसने उसे दुश्मन के हवाले करके जिलावतनी
में जाने दिया।
62 अपनी क़ौम को उसने तलवार की ज़द में आने दिया, क्योंकि वह अपनी मौरूसी मिलकियत से निहायत नाराज़
था।
63 क़ौम के जवान नज़रे-आतिश हुए, और उस की कुँवारियों के लिए शादी के गीत गाए न गए।
64 उसके इमाम तलवार से क़त्ल हुए, और उस की बेवाओं ने मातम न किया।

65 तब रब जाग उठा, उस आदमी की तरह जिसकी नींद उचाट हो गई हो, उस सूरमे की मानिंद जिससे नशे का
असर उतर गया हो।
66 उसने अपने दुश्मनों को मार मारकर भगा दिया और उन्हें हमेशा के लिए शरमिंदा कर दिया।
67 उस वक़्त उसने यूसुफ़ का ख़ैमा रद्द किया और इफ़राईम के क़बीले को न चुना
68 बल्कि यहूदाह के क़बीले और कोहे-सिय्यून को चुन लिया जो उसे प्यारा था।
69 उसने अपना मक़दिस बुलंदियों की मानिंद बनाया, ज़मीन की मानिंद जिसे उसने हमेशा के लिए क़ायम किया है।
70 उसने अपने ख़ादिम दाऊद को चुनकर भेड़-बकरियों के बाड़ों से बुलाया।
71 हाँ, उसने उसे भेड़ों * की देख-भाल से बुलाया ताकि वह उस की क़ौम याक़ूब, उस की मीरास इसराईल की
गल्लाबानी करे।
72 दाऊद ने ख़ुलूसदिली से उनकी गल्लाबानी की, बड़ी महारत से उसने उनकी राहनुमाई की।

79

जंग की मुसीबत में क़ौम की दुआ

1 आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, अजनबी क़ौमें तेरी मौरूसी ज़मीन में घुस आई हैं। उन्होंने तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की बेहुरमती करके
यरूशलम को मलबे का ढेर बना दिया है।
2 उन्होंने तेरे ख़ादिमों की लाशें परिंदों को और तेरे ईमानदारों का गोश्त जंगली जानवरों को खिला दिया है।
3 यरूशलम के चारों तरफ़ उन्होंने ख़ून की नदियाँ बहाईं, और कोई बाक़ी न रहा जो मुरदों को दफ़नाता।
4 हमारे पड़ोसियों ने हमें मज़ाक़ का निशाना बना लिया है, इर्दगिर्द की क़ौमें हमारी हँसी उड़ाती और लान-तान
करती हैं।

5 ऐ रब, कब तक? क्या तू हमेशा तक ग़ुस्से होगा? तेरी ग़ैरत कब तक आग की तरह भड़कती रहेगी?
6 अपना ग़ज़ब उन अक़वाम पर नाज़िल कर जो तुझे तसलीम नहीं करतीं, उन सलतनतों पर जो तेरे नाम को नहीं
पुकारतीं।
7 क्योंकि उन्होंने याक़ूब को हड़प करके उस की रिहाइशगाह तबाह कर दी है।
8 हमें उन गुनाहों के क़ुसूरवार न ठहरा जो हमारे बापदादा से सरज़द हुए। हम पर रहम करने में जल्दी कर, क्योंकि
हम बहुत पस्तहाल हो गए हैं।
9 ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमारी मदद कर ताकि तेरे नाम को जलाल मिले। हमें बचा, अपने नाम की ख़ातिर हमारे
गुनाहों को मुआफ़ कर।
10 दीगर अक़वाम क्यों कहें, "उनका ख़ुदा कहाँ है?" हमारे देखते देखते उन्हें दिखा कि तू अपने ख़ादिमों के ख़ून
का बदला लेता है।
11 क़ैदियों की आहें तुझ तक पहुँचीं, जो मरने को हैं उन्हें अपनी अज़ीम क़ुदरत से महफ़ूज़ रख।
12 ऐ रब, जो लान-तान हमारे पड़ोसियों ने तुझ पर बरसाई है उसे सात गुना उनके सरों पर वापस ला।
13 तब हम जो तेरी क़ौम और तेरी चरागाह की भेड़ें हैं अबद तक तेरी सताइश करेंगे, पुश्त-दर-पुश्त तेरी हम्दो-सना
करेंगे।

80

अंगूर की बेल की बहाली के लिए दुआ

1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : अहद के सोसन।

* **78:71** इबरानी मतन से मुराद वह भेड़ है जो अभी अपने बच्चों को दूध पिलाती है।

ऐ इसराईल के गल्लाबान, हम पर ध्यान दे! तू जो यूसुफ़ की रेवड़ की तरह राहनुमाई करता है, हम पर तवज्जुह
कर! तू जो करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है, अपना नूर चमका!
2 इफ़राईम, बिनयमीन और मनस्सी के सामने अपनी क़ुदरत को हरकत में ला। हमें बचाने आ!

3 ऐ अल्लाह, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

4 ऐ रब, लशकरों के ख़ुदा, तेरा ग़ज़ब कब तक भड़कता रहेगा, हालाँकि तेरी क़ौम तुझसे इल्तिजा कर रही है?
5 तूने उन्हें आँसुओं की रोटी खिलाई और आँसुओं का प्याला ख़ूब पिलाया।
6 तूने हमें पड़ोसियों के झगड़ों का निशाना बनाया। हमारे दुश्मन हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं।

7 ऐ लशकरों के ख़ुदा, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

8 अंगूर की जो बेल मिसर में उग रही थी उसे तू उखाड़कर मुल्के-कनान लाया। तूने वहाँ की अक़वाम को भगाकर
यह बेल उनकी जगह लगाई।
9 तूने उसके लिए ज़मीन तैयार की तो वह जड़ पकड़कर पूरे मुल्क में फैल गई।
10 उसका साया पहाड़ों पर छा गया, और उस की शाख़ों ने देवदार के अज़ीम दरख़्तों को ढाँक लिया।
11 उस की टहनियाँ मग़रिब में समुंदर तक फैल गईं, उस की डालियाँ मशरिक़ में दरियाए-फ़ुरात तक पहुँच गईं।
12 तूने उस की चारदीवारी क्यों गिरा दी? अब हर गुज़रनेवाला उसके अंगूर तोड़ लेता है।
13 जंगल के सुअर उसे खा खाकर तबाह करते, खुले मैदान के जानवर वहाँ चरते हैं।

14 ऐ लशकरों के ख़ुदा, हमारी तरफ़ दुबारा रुजू फ़रमा! आसमान से नज़र डालकर हालात पर ध्यान दे। इस बेल
की देख-भाल कर।

15 उसे महफ़ूज़ रख जिसे तेरे दहने हाथ ने ज़मीन में लगाया, उस बेटे को जिसे तूने अपने लिए पाला है।
16 इस वक़्त वह कटकर नज़रे-आतिश हुआ है। तेरे चेहरे की डाँट-डपट से लोग हलाक हो जाते हैं।
17 तेरा हाथ अपने दहने हाथ के बंदे को पनाह दे, उस आदमज़ाद को जिसे तूने अपने लिए पाला था।
18 तब हम तुझसे दूर नहीं हो जाएंगे। बख़्श दे कि हमारी जान में जान आए तो हम तेरा नाम पुकारेंगे।

19 ऐ रब, लशकरों के ख़ुदा, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

81

हक़ीक़ी इबादत क्या है?
1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।
अल्लाह हमारी क़ुव्वत है। उस की ख़ुशी में शादियाना बजाओ, याक़ूब के ख़ुदा की ताज़ीम में ख़ुशी के नारे लगाओ।
2 गीत गाना शुरू करो। दफ़ बजाओ, सरोद और सितार की सुरीली आवाज़ निकालो।
3 नए चाँद के दिन नरसिंगा फूँको, पूरे चाँद के जिस दिन हमारी ईद होती है उसे फूँको।
4 क्योंकि यह इसराईल का फ़र्ज़ है, यह याक़ूब के ख़ुदा का फ़रमान है।
5 जब यूसुफ़ मिसर के ख़िलाफ़ निकला तो अल्लाह ने ख़ुद यह मुक़र्रर किया।

मैंने एक ज़बान सुनी, जो मैं अब तक नहीं जानता था,
6 "मैंने उसके कंधे पर से बोझ उतारा और उसके हाथ भारी टोकरी उठाने से आज़ाद किए।
7 मुसीबत में तूने आवाज़ दी तो मैंने तुझे बचाया। गरजते बादल में से मैंने तुझे जवाब दिया और तुझे मरीबा के पानी
पर आज़माया। (सिलाह)
8 ऐ मेरी क़ौम, सुन, तो मैं तुझे आगाह करूँगा। ऐ इसराईल, काश तू मेरी सुने!
9 तेरे दरमियान कोई और ख़ुदा न हो, किसी अजनबी माबूद को सिजदा न कर।
10 मैं ही रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर से निकाल लाया। अपना मुँह ख़ूब खोल तो मैं उसे भर दूँगा।

11 लेकिन मेरी क़ौम ने मेरी न सुनी, इसराईल मेरी बात मानने के लिए तैयार न था।
12 चुनाँचे मैंने उन्हें उनके दिलों की ज़िद के हवाले कर दिया, और वह अपने ज़ाती मशवरों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने लगे।
13 काश मेरी क़ौम सुने, इसराईल मेरी राहों पर चले!
14 तब मैं जल्दी से उसके दुश्मनों को ज़ेर करता, अपना हाथ उसके मुख़ालिफ़ों के ख़िलाफ़ उठाता।
15 तब रब से नफ़रत करनेवाले दबककर उस की ख़ुशामद करते, उनकी शिकस्त अबदी होती।
16 लेकिन इसराईल को मैं बेहतरीन गंदुम खिलाता, मैं चटान में से शहद निकालकर उसे सेर करता।"

82

सबसे आला मुंसिफ़
1 आसफ़ का ज़बूर।
अल्लाह इलाही मजलिस में खड़ा है, माबूदों के दरमियान वह अदालत करता है,
2 "तुम कब तक अदालत में ग़लत फ़ैसले करके बेदीनों की जानिबदारी करोगे? (सिलाह)
3 पस्तहालों और यतीमों का इनसाफ़ करो, मुसीबतज़दों और ज़रूरतमंदों के हुक़ूक़ क़ायम रखो।
4 पस्तहालों और ग़रीबों को बचाकर बेदीनों के हाथ से छुड़ाओ।"

5 लेकिन वह कुछ नहीं जानते, उन्हें समझ ही नहीं आती। वह तारीकी में टटोल टटोलकर घुमते-फिरते हैं जबकि ज़मीन की तमाम बुनियादें झूमने लगी हैं।
6 बेशक मैंने कहा, "तुम ख़ुदा हो, सब अल्लाह तआला के फ़रज़ंद हो।
7 लेकिन तुम फ़ानी इनसान की तरह मर जाओगे, तुम दीगर हुक्मरानों की तरह गिर जाओगे।"

8 ऐ अल्लाह, उठकर ज़मीन की अदालत कर! क्योंकि तमाम अक़वाम तेरी ही मौरूसी मिलकियत हैं।

83

क़ौम के दुश्मनों के ख़िलाफ़ दुआ
1 गीत। आसफ़ का ज़बूर।
ऐ अल्लाह, ख़ामोश न रह! ऐ अल्लाह, चुप न रह!
2 देख, तेरे दुश्मन शोर मचा रहे हैं, तुझसे नफ़रत करनेवाले अपना सर तेरे ख़िलाफ़ उठा रहे हैं।
3 तेरी क़ौम के ख़िलाफ़ वह चालाक मनसूबे बाँध रहे हैं, जो तेरी आड़ में छुप गए हैं उनके ख़िलाफ़ साज़िशें कर रहे हैं।
4 वह कहते हैं, "आओ, हम उन्हें मिटा दें ताकि क़ौम नेस्त हो जाए और इसराईल का नामो-निशान बाक़ी न रहे।"
5 क्योंकि वह आपस में सलाह-मशवरा करने के बाद दिली तौर पर मुत्तहिद हो गए हैं, उन्होंने तेरे ही ख़िलाफ़ अहद बाँधा है।
6 उनमें अदोम के ख़ैमे, इसमाईली, मोआब, हाजिरी,
7 जबाल, अम्मोन, अमालीक़, फ़िलिस्तिया और सूर के बाशिंदे शामिल हो गए हैं।
8 असूर भी उनमें शरीक होकर लूत की औलाद को सहारा दे रहा है। (सिलाह)

9 उनके साथ वही सुलूक कर जो तूने मिदियानियों से यानी क़ैसोन नदी पर सीसरा और याबीन से किया।
10 क्योंकि वह ऐन-दोर के पास हलाक होकर खेत में गोबर बन गए।
11 उनके शुरफ़ा के साथ वही बरताव कर जो तूने ओरेब और ज़एब से किया। उनके तमाम सरदार ज़िबह और ज़लमुन्ना की मानिंद बन जाएँ,
12 जिन्होंने कहा, "आओ, हम अल्लाह की चरागाहों पर क़ब्ज़ा करें।"
13 ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें लुढ़कबूटी और हवा में उड़ते हुए भूसे की मानिंद बना दे।
14 जिस तरह आग पूरे जंगल में फैल जाती और एक ही शोला पहाड़ों को झुलसा देता है,
15 उसी तरह अपनी आँधी से उनका ताक़्क़ुब कर, अपने तूफ़ान से उनको दहशतज़दा कर दे।
16 ऐ रब, उनका मुँह काला कर ताकि वह तेरा नाम तलाश करें।
17 वह हमेशा तक शरमिंदा और हवासबाख़्ता रहें, वह शर्मसार होकर हलाक हो जाएँ।

18 तब ही वह जान लेंगे कि तू ही जिसका नाम रब है अल्लाह तआला यानी पूरी दुनिया का मालिक है।

84

रब के घर पर ख़ुशी

1 क़ोरह ख़ानदान का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गित्तीत।
ऐ रब्बुल-अफ़वाज, तेरी सुकूनतगाह कितनी प्यारी है!
2 मेरी जान रब की बारगाहों के लिए तड़पती हुई निढाल है। मेरा दिल बल्कि पूरा जिस्म ज़िंदा ख़ुदा को ज़ोर से
पुकार रहा है।
3 ऐ रब्बुल-अफ़वाज, ऐ मेरे बादशाह और ख़ुदा, तेरी क़ुरबानगाहों के पास परिंदे को भी घर मिल गया, अबाबील
को भी अपने बच्चों को पालने का घोंसला मिल गया है।

4 मुबारक हैं वह जो तेरे घर में बसते हैं, वह हमेशा ही तेरी सताइश करेंगे। (सिलाह)
5 मुबारक हैं वह जो तुझमें अपनी ताक़त पाते, जो दिल से तेरी राहों में चलते हैं।
6 वह बुका की ख़ुश्क वादी * में से गुज़रते हुए उसे शादाब जगह बना लेते हैं, और बारिशें उसे बरकतों से ढाँप देती
हैं।
7 वह क़दम बक़दम तक़वियत पाते हुए आगे बढ़ते, सब कोहे-सिय्यून पर अल्लाह के सामने हाज़िर हो जाते हैं।
8 ऐ रब, ऐ लशकरों के ख़ुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ याक़ूब के ख़ुदा, ध्यान दे! (सिलाह)
9 ऐ अल्लाह, हमारी ढाल पर करम की निगाह डाल। अपने मसह किए हुए ख़ादिम के चेहरे पर नज़र कर।

10 तेरी बारगाहों में एक दिन किसी और जगह पर हज़ार दिनों से बेहतर है। मुझे अपने ख़ुदा के घर के दरवाज़े पर
हाज़िर रहना बेदीनों के घरों में बसने से कहीं ज़्यादा पसंद है।
11 क्योंकि रब ख़ुदा आफ़ताब और ढाल है, वही हमें फ़ज़ल और इज़्ज़त से नवाज़ता है। जो दियानतदारी से चलें
उन्हें वह किसी भी अच्छी चीज़ से महरूम नहीं रखता।
12 ऐ रब्बुल-अफ़वाज, मुबारक है वह जो तुझ पर भरोसा रखता है!

85

नए सिरे से बरकत पाने के लिए दुआ

1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ रब, पहले तूने अपने मुल्क को पसंद किया, पहले याक़ूब को बहाल किया।
2 पहले तूने अपनी क़ौम का क़ुसूर मुआफ़ किया, उसका तमाम गुनाह ढाँप दिया। (सिलाह)
3 जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल हो रहा था उसका सिलसिला तूने रोक दिया, जो क़हर हमारे ख़िलाफ़ भड़क रहा था उसे
छोड़ दिया।

4 ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमें दुबारा बहाल कर। हमसे नाराज़ होने से बाज़ आ।
5 क्या तू हमेशा तक हमसे ग़ुस्से रहेगा? क्या तू अपना क़हर पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रखेगा?
6 क्या तू दुबारा हमारी जान को ताज़ादम नहीं करेगा ताकि तेरी क़ौम तुझसे ख़ुश हो जाए?
7 ऐ रब, अपनी शफ़क़त हम पर ज़ाहिर कर, अपनी नजात हमें अता फ़रमा।

8 मैं वह कुछ सुनूँगा जो ख़ुदा रब फ़रमाएगा। क्योंकि वह अपनी क़ौम और अपने ईमानदारों से सलामती का वादा
करेगा, अलबत्ता लाज़िम है कि वह दुबारा हमाक़त में उलझ न जाएँ।
9 यक़ीनन उस की नजात उनके क़रीब है जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं ताकि जलाल हमारे मुल्क में सुकूनत करे।
10 शफ़क़त और वफ़ादारी एक दूसरे के गले लग गए हैं, रास्ती और सलामती ने एक दूसरे को बोसा दिया है।
11 सच्चाई ज़मीन से फूट निकलेगी और रास्ती आसमान से ज़मीन पर नज़र डालेगी।
12 अल्लाह ज़रूर वह कुछ देगा जो अच्छा है, हमारी ज़मीन ज़रूर अपनी फ़सलें पैदा करेगी।
13 रास्ती उसके आगे आगे चलकर उसके क़दमों के लिए रास्ता तैयार करेगी।

* **84:6** या रोनेवाली यानी आँसुओं की वादी।

86

मुसीबत में दुआ
1 दाऊद की दुआ।
ऐ रब, अपना कान झुकाकर मेरी सुन, क्योंकि मैं मुसीबतज़दा और मुहताज हूँ।
2 मेरी जान को महफ़ूज़ रख, क्योंकि मैं ईमानदार हूँ। अपने ख़ादिम को बचा जो तुझ पर भरोसा रखता है। तू ही
मेरा ख़ुदा है!
3 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि दिन-भर मैं तुझे पुकारता हूँ।
4 अपने ख़ादिम की जान को ख़ुश कर, क्योंकि मैं तेरा आरज़ूमंद हूँ।
5 क्योंकि तू ऐ रब भला है, तू मुआफ़ करने के लिए तैयार है। जो भी तुझे पुकारते हैं उन पर तू बड़ी शफ़क़त करता
है।
6 ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर तवज्जुह कर।
7 मुसीबत के दिन मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि तू मेरी सुनता है।

8 ऐ रब, माबूदों में से कोई तेरी मानिंद नहीं है। जो कुछ तू करता है कोई और नहीं कर सकता।
9 ऐ रब, जितनी भी क़ौमें तूने बनाईं वह आकर तेरे हुज़ूर सिजदा करेंगी और तेरे नाम को जलाल देंगी।
10 क्योंकि तू ही अज़ीम है और मोजिज़े करता है। तू ही ख़ुदा है।

11 ऐ रब, मुझे अपनी राह सिखा ताकि तेरी वफ़ादारी में चलूँ। बख़्श दे कि मैं पूरे दिल से तेरा ख़ौफ़ मानूँ।
12 ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं पूरे दिल से तेरा शुक्र करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की ताज़ीम करूँगा।
13 क्योंकि तेरी मुझ पर शफ़क़त अज़ीम है, तूने मेरी जान को पाताल की गहराइयों से छुड़ाया है।

14 ऐ अल्लाह, मग़रूर मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं, ज़ालिमों का जत्था मेरी जान लेने के दरपै है। यह लोग तेरा
लिहाज़ नहीं करते।
15 लेकिन तू, ऐ रब, रहीम और मेहरबान ख़ुदा है। तू तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर है।
16 मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा, मुझ पर मेहरबानी कर! अपने ख़ादिम को अपनी क़ुव्वत अता कर, अपनी ख़ादिमा के
बेटे को बचा।
17 मुझे अपनी मेहरबानी का कोई निशान दिखा। मुझसे नफ़रत करनेवाले यह देखकर शरमिंदा हो जाएँ कि तू रब ने
मेरी मदद करके मुझे तसल्ली दी है।

87

सिय्यून अक़वाम की माँ है
1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। गीत।
उस की बुनियाद मुक़द्दस पहाड़ों पर रखी गई है।
2 रब सिय्यून के दरवाज़ों को याक़ूब की दीगर आबादियों से कहीं ज़्यादा प्यार करता है।

3 ऐ अल्लाह के शहर, तेरे बारे में शानदार बातें सुनाई जाती हैं। (सिलाह)
4 रब फ़रमाता है, “मैं मिसर और बाबल को उन लोगों में शुमार करूँगा जो मुझे जानते हैं।” फ़िलिस्तिया, सूर और
एथोपिया के बारे में भी कहा जाएगा, “इनकी पैदाइश यहीं हुई है।”

5 लेकिन सिय्यून के बारे में कहा जाएगा, “हर एक बाशिंदा उसमें पैदा हुआ है। अल्लाह तआला ख़ुद उसे क़ायम
रखेगा।”
6 जब रब अक़वाम को किताब में दर्ज करेगा तो वह साथ साथ यह भी लिखेगा, “यह सिय्यून में पैदा हुई हैं।”
(सिलाह)
7 और लोग नाचते हुए गाएँगे, “मेरे तमाम चश्मे तुझमें हैं।”

88

तर्क किए गए शख़्स के लिए दुआ

1 क़ोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : महलत लअन्नोत। हैमान इज़राही का हिकमत का गीत।

ऐ रब, ऐ मेरी नजात के ख़ुदा, दिन-रात मैं तेरे हुज़ूर चीख़ता-चिल्लाता हूँ।

2 मेरी दुआ तेरे हुज़ूर पहुँचे, अपना कान मेरी चीख़ों की तरफ़ झुका।

3 क्योंकि मेरी जान दुख से भरी है, और मेरी टाँगें क़ब्र में लटकी हुई हैं।

4 मुझे उनमें शुमार किया जाता है जो पाताल में उतर रहे हैं। मैं उस मर्द की मानिंद हूँ जिसकी तमाम ताक़त जाती रही है।

5 मुझे मुरदों में तनहा छोड़ा गया है, क़ब्र में उन मक़तूलों की तरह जिनका तू अब ख़याल नहीं रखता और जो तेरे हाथ के सहारे से मुंक़ते हो गए हैं।

6 तूने मुझे सबसे गहरे गढ़े में, तारीकतरीन गहराइयों में डाल दिया है।

7 तेरे ग़ज़ब का पूरा बोझ मुझ पर आ पड़ा है, तूने मुझे अपनी तमाम मौजों के नीचे दबा दिया है। (सिलाह)

8 तूने मेरे क़रीबी दोस्तों को मुझसे दूर कर दिया है, और अब वह मुझसे घिन खाते हैं। मैं फँसा हुआ हूँ और निकल नहीं सकता।

9 मेरी आँखें ग़म के मारे पज़मुरदा हो गई हैं। ऐ रब, दिन-भर मैं तुझे पुकारता, अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाए रखता हूँ।

10 क्या तू मुरदों के लिए मोजिज़े करेगा? क्या पाताल के बाशिंदे उठकर तेरी तमजीद करेंगे? (सिलाह)

11 क्या लोग क़ब्र में तेरी शफ़क़त या पाताल में तेरी वफ़ा बयान करेंगे?

12 क्या तारीकी में तेरे मोजिज़े या मुल्के-फ़रामोश में तेरी रास्ती मालूम हो जाएगी?

13 लेकिन ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ, मेरी दुआ सुबह-सवेरे तेरे सामने आ जाती है।

14 ऐ रब, तू मेरी जान को क्यों रद्द करता, अपने चेहरे को मुझसे पोशीदा क्यों रखता है?

15 मैं मुसीबतज़दा और जवानी से मौत के क़रीब रहा हूँ। तेरे दहशतनाक हमले बरदाश्त करते करते मैं जान से हाथ धो बैठा हूँ।

16 तेरा भड़कता क़हर मुझ पर से गुज़र गया, तेरे हौलनाक कामों ने मुझे नाबूद कर दिया है।

17 दिन-भर वह मुझे सैलाब की तरह घेरे रखते हैं, हर तरफ़ से मुझ पर हमलाआवर होते हैं।

18 तूने मेरे दोस्तों और पड़ोसियों को मुझसे दूर कर रखा है। तारीकी ही मेरी क़रीबी दोस्त बन गई है।

89

इसराईल की मुसीबत और दाऊद से वादा

1 ऐतान इज़राही का हिकमत का गीत।

मैं अबद तक रब की मेहरबानियों की मद्‌हसराई करूँगा, पुश्त-दर-पुश्त मुँह से तेरी वफ़ा का एलान करूँगा।

2 क्योंकि मैं बोला, "तेरी शफ़क़त हमेशा तक क़ायम है, तूने अपनी वफ़ा की मज़बूत बुनियाद आसमान पर ही रखी है।"

3 तूने फ़रमाया, "मैंने अपने चुने हुए बंदे से अहद बाँधा, अपने ख़ादिम दाऊद से क़सम खाकर वादा किया है,

4 'मैं तेरी नसल को हमेशा तक क़ायम रखूँगा, तेरा तख़्त हमेशा तक मज़बूत रखूँगा'।" (सिलाह)

5 ऐ रब, आसमान तेरे मोजिज़ों की सताइश करेंगे, मुक़द्दसीन की जमात में ही तेरी वफ़ादारी की तमजीद करेंगे।

6 क्योंकि बादलों में कौन रब की मानिंद है? इलाही हस्तियों में से कौन रब की मानिंद है?

7 जो भी मुक़द्दसीन की मजलिस में शामिल हैं वह अल्लाह से ख़ौफ़ खाते हैं। जो भी उसके इर्दगिर्द होते हैं उन पर उस की अज़मत और रोब छाया रहता है।

8 ऐ रब, ऐ लशकरों के ख़ुदा, कौन तेरी मानिंद है? ऐ रब, तू क़वी और अपनी वफ़ा से घिरा रहता है।

9 तू ठाठें मारते हुए समुंदर पर हुकूमत करता है। जब वह मौजज़न हो तो तू उसे थमा देता है।

10 तूने समुंदरी अज़दहे रहब को कुचल दिया, और वह मक़तूल की मानिंद बन गया। अपने क़वी बाज़ू से तूने अपने दुश्मनों को तित्तर-बित्तर कर दिया।

11 आसमानो-ज़मीन तेरे ही हैं। दुनिया और जो कुछ उसमें है तूने क़ायम किया।
12 तूने शिमालो-जुनूब को ख़लक़ किया। तबूर और हरमून तेरे नाम की ख़ुशी में नारे लगाते हैं।
13 तेरा बाज़ू क़वी और तेरा हाथ ताक़तवर है। तेरा दहना हाथ अज़ीम काम करने के लिए तैयार है।
14 रास्ती और इनसाफ़ तेरे तख़्त की बुनियाद हैं। शफ़क़त और वफ़ा तेरे आगे आगे चलती हैं।

15 मुबारक है वह क़ौम जो तेरी ख़ुशी के नारे लगा सके। ऐ रब, वह तेरे चेहरे के नूर में चलेंगे।
16 रोज़ाना वह तेरे नाम की ख़ुशी मनाएँगे और तेरी रास्ती से सरफ़राज़ होंगे।
17 क्योंकि तू ही उनकी ताक़त की शान है, और तू अपने करम से हमें सरफ़राज़ करेगा।
18 क्योंकि हमारी ढाल रब ही की है, हमारा बादशाह इसराईल के क़ुद्दूस ही का है।

19 माज़ी में तू रोया में अपने ईमानदारों से हमकलाम हुआ। उस वक़्त तूने फ़रमाया, "मैंने एक सूरमे को ताक़त से
नवाज़ा है, क़ौम में से एक को चुनकर सरफ़राज़ किया है।
20 मैंने अपने ख़ादिम दाऊद को पा लिया और उसे अपने मुक़द्दस तेल से मसह किया है।
21 मेरा हाथ उसे क़ायम रखेगा, मेरा बाज़ू उसे तक़वियत देगा।
22 दुश्मन उस पर ग़ालिब नहीं आएगा, शरीर उसे ख़ाक में नहीं मिलाएँगे।
23 उसके आगे आगे मैं उसके दुश्मनों को पाश पाश करूँगा। जो उससे नफ़रत रखते हैं उन्हें ज़मीन पर पटख़ दूँगा।
24 मेरी वफ़ा और मेरी शफ़क़त उसके साथ रहेंगी, मेरे नाम से वह सरफ़राज़ होगा।
25 मैं उसके हाथ को समुंदर पर और उसके दहने हाथ को दरियाओं पर हुकूमत करने दूँगा।
26 वह मुझे पुकारकर कहेगा, 'तू मेरा बाप, मेरा ख़ुदा और मेरी नजात की चटान है।'
27 मैं उसे अपना पहलौठा और दुनिया का सबसे आला बादशाह बनाऊँगा।
28 मैं उसे हमेशा तक अपनी शफ़क़त से नवाज़ता रहूँगा, मेरा उसके साथ अहद कभी तमाम नहीं होगा।
29 मैं उस की नसल हमेशा तक क़ायम रखूँगा, जब तक आसमान क़ायम है उसका तख़्त क़ायम रखूँगा।
30 अगर उसके बेटे मेरी शरीअत तर्क करके मेरे अहकाम पर अमल न करें,
31 अगर वह मेरे फ़रमानों की बेहुरमती करके मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारें
32 तो मैं लाठी लेकर उनकी तादीब करूँगा और मोहलक वबाओं से उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा।
33 लेकिन मैं उसे अपनी शफ़क़त से महरूम नहीं करूँगा, अपनी वफ़ा का इनकार नहीं करूँगा।
34 न मैं अपने अहद की बेहुरमती करूँगा, न वह कुछ तबदील करूँगा जो मैंने फ़रमाया है।
35 मैंने एक बार सदा के लिए अपनी क़ुद्दूसियत की क़सम खाकर वादा किया है, और मैं दाऊद को कभी धोका नहीं
दूँगा।
36 उस की नसल अबद तक क़ायम रहेगी, उसका तख़्त आफ़ताब की तरह मेरे सामने खड़ा रहेगा।
37 चाँद की तरह वह हमेशा तक बरक़रार रहेगा, और जो गवाह बादलों में है वह वफ़ादार है।" (सिलाह)

38 लेकिन अब तूने अपने मसह किए हुए ख़ादिम को ठुकराकर रद्द किया, तू उससे ग़ज़बनाक हो गया है।
39 तूने अपने ख़ादिम का अहद नामंज़ूर किया और उसका ताज ख़ाक में मिलाकर उस की बेहुरमती की है।
40 तूने उस की तमाम फ़सीलें ढाकर उसके क़िलों को मलबे के ढेर बना दिया है।
41 जो भी वहाँ से गुज़रे वह उसे लूट लेता है। वह अपने पड़ोसियों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया है।
42 तूने उसके मुख़ालिफ़ों का दहना हाथ सरफ़राज़ किया, उसके तमाम दुश्मनों को ख़ुश कर दिया है।
43 तूने उस की तलवार की तेज़ी बेअसर करके उसे जंग में फ़तह पाने से रोक दिया है।
44 तूने उस की शान ख़त्म करके उसका तख़्त ज़मीन पर पटख़ दिया है।
45 तूने उस की जवानी के दिन मुख़तसर करके उसे रुसवाई की चादर में लपेटा है। (सिलाह)

46 ऐ रब, कब तक? क्या तू अपने आपको हमेशा तक छुपाए रखेगा? क्या तेरा क़हर अबद तक आग की तरह
भड़कता रहेगा?
47 याद रहे कि मेरी ज़िंदगी कितनी मुख़तसर है, कि तूने तमाम इनसान कितने फ़ानी ख़लक़ किए हैं।
48 कौन है जिसका मौत से वास्ता न पड़े, कौन है जो हमेशा ज़िंदा रहे? कौन अपनी जान को मौत के क़ब्ज़े से बचाए
रख सकता है? (सिलाह)

49 ऐ रब, तेरी वह पुरानी मेहरबानियाँ कहाँ हैं जिनका वादा तूने अपनी वफ़ा की क़सम खाकर दाऊद से किया?
50 ऐ रब, अपने ख़ादिमों की ख़जालत याद कर। मेरा सीना मुतअद्दिद क़ौमों की लान-तान से दुखता है,
51 क्योंकि ऐ रब, तेरे दुश्मनों ने मुझे लान-तान की, उन्होंने तेरे मसह किए हुए ख़ादिम को हर क़दम पर लान-तान की है!

52 अबद तक रब की हम्द हो! आमीन, फिर आमीन।

चौथी किताब 90-106

90

फ़ानी इनसान अल्लाह में पनाह ले
1 मर्दे-ख़ुदा मूसा की दुआ।
ऐ रब, पुश्त-दर-पुश्त तू हमारी पनाहगाह रहा है।
2 इससे पहले कि पहाड़ पैदा हुए और तू ज़मीन और दुनिया को वुजूद में लाया तू ही था। ऐ अल्लाह, तू अज़ल से अबद तक है।
3 तू इनसान को दुबारा ख़ाक होने देता है। तू फ़रमाता है, 'ऐ आदमज़ादो, दुबारा ख़ाक में मिल जाओ!'
4 क्योंकि तेरी नज़र में हज़ार साल कल के गुज़रे हुए दिन के बराबर या रात के एक पहर की मानिंद हैं।
5 तू लोगों को सैलाब की तरह बहा ले जाता है, वह नींद और उस घास की मानिंद हैं जो सुबह को फूट निकलती है।
6 वह सुबह को फूट निकलती और उगती है, लेकिन शाम को मुरझाकर सूख जाती है।

7 क्योंकि हम तेरे ग़ज़ब से फ़ना हो जाते और तेरे क़हर से हवासबाख़्ता हो जाते हैं।
8 तूने हमारी ख़ताओं को अपने सामने रखा, हमारे पोशीदा गुनाहों को अपने चेहरे के नूर में लाया है।
9 चुनाँचे हमारे तमाम दिन तेरे क़हर के तहत घटते घटते ख़त्म हो जाते हैं। जब हम अपने सालों के इख़्तिताम पर पहुँचते हैं तो ज़िंदगी सर्द आह के बराबर ही होती है।
10 हमारी उम्र 70 साल या अगर ज़्यादा ताक़त हो तो 80 साल तक पहुँचती है, और जो दिन फ़ख़र का बाइस थे वह भी तकलीफ़देह और बेकार हैं। जल्द ही वह गुज़र जाते हैं, और हम परिंदों की तरह उड़कर चले जाते हैं।
11 कौन तेरे ग़ज़ब की पूरी शिद्दत जानता है? कौन समझता है कि तेरा क़हर हमारी ख़ुदातरसी की कमी के मुताबिक़ ही है?
12 चुनाँचे हमें हमारे दिनों का सहीह हिसाब करना सिखा ताकि हमारे दिल दानिशमंद हो जाएँ।

13 ऐ रब, दुबारा हमारी तरफ़ रुजू फ़रमा! तू कब तक दूर रहेगा? अपने ख़ादिमों पर तरस खा!
14 सुबह को हमें अपनी शफ़क़त से सेर कर! तब हम ज़िंदगी-भर बाग़ बाग़ होंगे और ख़ुशी मनाएँगे।
15 हमें उतने ही दिन ख़ुशी दिला जितने तूने हमें पस्त किया है, उतने ही साल जितने हमें दुख सहना पड़ा है।
16 अपने ख़ादिमों पर अपने काम और उनकी औलाद पर अपनी अज़मत ज़ाहिर कर।
17 रब हमारा ख़ुदा हमें अपनी मेहरबानी दिखाए। हमारे हाथों का काम मज़बूत कर, हाँ हमारे हाथों का काम मज़बूत कर!

91

अल्लाह की पनाह में
1 जो अल्लाह तआला की पनाह में रहे वह क़ादिरे-मुतलक़ के साये में सुकूनत करेगा।
2 मैं कहूँगा, "ऐ रब, तू मेरी पनाह और मेरा क़िला है, मेरा ख़ुदा जिस पर मैं भरोसा रखता हूँ।"

3 क्योंकि वह तुझे चिड़ीमार के फंदे और मोहलक मरज़ से छुड़ाएगा।
4 वह तुझे अपने शाहपरों के नीचे ढाँप लेगा, और तू उसके परों तले पनाह ले सकेगा। उस की वफ़ादारी तेरी ढाल और पुश्ता रहेगी।
5 रात की दहशतों से ख़ौफ़ मत खा, न उस तीर से जो दिन के वक़्त चले।

6 उस मोहलक मरज़ से दहशत मत खा जो तारीकी में घूमे फिरे, न उस वबाई बीमारी से जो दोपहर के वक़्त तबाही
फैलाए।
7 गो तेरे साथ खड़े हज़ार अफ़राद हलाक हो जाएँ और तेरे दहने हाथ दस हज़ार मर जाएँ, लेकिन तू उस की ज़द में
नहीं आएगा।
8 तू अपनी आँखों से इसका मुलाहज़ा करेगा, तू ख़ुद बेदीनों की सज़ा देखेगा।
9 क्योंकि तूने कहा है, "रब मेरी पनाहगाह है," तू अल्लाह तआला के साये में छुप गया है।
10 इसलिए तेरा किसी बला से वास्ता नहीं पड़ेगा, कोई आफ़त भी तेरे ख़ैमे के क़रीब फटकने नहीं पाएगी।

11 क्योंकि वह अपने फ़रिश्तों को हर राह पर तेरी हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा,
12 और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न लगे।
13 तू शेरबबरों और ज़हरीले साँपों पर क़दम रखेगा, तू जवान शेरों और अज़दहाओं को कुचल देगा।
14 रब फ़रमाता है, "चूँकि वह मुझसे लिपटा रहता है इसलिए मैं उसे बचाऊँगा। चूँकि वह मेरा नाम जानता है
इसलिए मैं उसे महफ़ूज़ रखूँगा।
15 वह मुझे पुकारेगा तो मैं उस की सुनूँगा। मुसीबत में मैं उसके साथ हूँगा। मैं उसे छुड़ाकर उस की इज़्ज़त करूँगा।
16 मैं उसे उम्र की दराज़ी बख़्शूँगा और उस पर अपनी नजात ज़ाहिर करूँगा।"

92

अल्लाह की सताइश करने की ख़ुशी
1 ज़बूर। सबत के लिए गीत।
रब का शुक्र करना भला है। ऐ अल्लाह तआला, तेरे नाम की मद्हसराई करना भला है।
2 सुबह को तेरी शफ़क़त और रात को तेरी वफ़ा का एलान करना भला है,
3 ख़ासकर जब साथ साथ दस तारोंवाला साज़, सितार और सरोद बजते हैं।

4 क्योंकि ऐ रब, तूने मुझे अपने कामों से ख़ुश किया है, और तेरे हाथों के काम देखकर मैं ख़ुशी के नारे लगाता हूँ।
5 ऐ रब, तेरे काम कितने अज़ीम, तेरे ख़यालात कितने गहरे हैं।
6 नादान यह नहीं जानता, अहमक़ को इसकी समझ नहीं आती।
7 गो बेदीन घास की तरह फूट निकलते और बदकार सब फलते-फूलते हैं, लेकिन आख़िरकार वह हमेशा के लिए
हलाक हो जाएंगे।
8 मगर तू, ऐ रब, अबद तक सरबुलंद रहेगा।

9 क्योंकि तेरे दुश्मन, ऐ रब, तेरे दुश्मन यक़ीनन तबाह हो जाएंगे, बदकार सब तित्तर-बित्तर हो जाएंगे।

10 तूने मुझे जंगली बैल की-सी ताक़त देकर ताज़ा तेल से मसह किया है।
11 मेरी आँख अपने दुश्मनों की शिकस्त से और मेरे कान उन शरीरों के अंजाम से लुत्फ़अंदोज़ हुए हैं जो मेरे
ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं।

12 रास्तबाज़ खजूर के दरख़्त की तरह फले-फूलेगा, वह लुबनान के देवदार के दरख़्त की तरह बढ़ेगा।
13 जो पौदे रब की सुकूनतगाह में लगाए गए हैं वह हमारे ख़ुदा की बारगाहों में फलें-फूलेंगे।
14 वह बुढ़ापे में भी फल लाएँगे और तरो-ताज़ा और हरे-भरे रहेंगे।
15 उस वक़्त भी वह एलान करेंगे, "रब रास्त है। वह मेरी चटान है, और उसमें नारास्ती नहीं होती।"

93

अल्लाह अबदी बादशाह है
1 रब बादशाह है, वह जलाल से मुलब्बस है। रब जलाल से मुलब्बस और क़ुदरत से कमरबस्ता है। यक़ीनन दुनिया
मज़बूत बुनियाद पर क़ायम है, और वह नहीं डगमगाएगी।

2 तेरा तख़्त क़दीम ज़माने से क़ायम है, तू अज़ल से मौजूद है।

3 ऐ रब, सैलाब गरज उठे, सैलाब शोर मचाकर गरज उठे, सैलाब ठाठें मारकर गरज उठे।
4 लेकिन एक है जो गहरे पानी के शोर से ज़्यादा ज़ोरावर, जो समुंदर की ठाठों से ज़्यादा ताक़तवर है। रब जो
बुलंदियों पर रहता है कहीं ज़्यादा अज़ीम है।

5 ऐ रब, तेरे अहकाम हर तरह से क़ाबिले-एतमाद हैं। तेरा घर हमेशा तक क़ुद्दूसियत से आरास्ता रहेगा।

94

क़ौम पर ज़ुल्म करनेवालों से रिहाई के लिए दुआ
1 ऐ रब, ऐ इंतक़ाम लेनेवाले ख़ुदा! ऐ इंतक़ाम लेनेवाले ख़ुदा, अपना नूर चमका।
2 ऐ दुनिया के मुंसिफ़, उठकर मग़रूरों को उनके आमाल की मुनासिब सज़ा दे।
3 ऐ रब, बेदीन कब तक, हाँ कब तक फ़तह के नारे लगाएँगे?

4 वह कुफ़र की बातें उगलते रहते, तमाम बदकार शेख़ी मारते रहते हैं।
5 ऐ रब, वह तेरी क़ौम को कुचल रहे, तेरी मौरूसी मिलकियत पर ज़ुल्म कर रहे हैं।
6 बेवाओं और अजनबियों को वह मौत के घाट उतार रहे, यतीमों को क़त्ल कर रहे हैं।
7 वह कहते हैं, "यह रब को नज़र नहीं आता, याक़ूब का ख़ुदा ध्यान ही नहीं देता।"

8 ऐ क़ौम के नादानो, ध्यान दो! ऐ अहमक़ो, तुम्हें कब समझ आएगी?
9 जिसने कान बनाया, क्या वह नहीं सुनता? जिसने आँख को तश्कील दिया क्या वह नहीं देखता?
10 जो अक़वाम को तंबीह करता और इनसान को तालीम देता है क्या वह सज़ा नहीं देता?
11 रब इनसान के ख़यालात जानता है, वह जानता है कि वह दम-भर के ही हैं।

12 ऐ रब, मुबारक है वह जिसे तू तरबियत देता है, जिसे तू अपनी शरीअत की तालीम देता है
13 ताकि वह मुसीबत के दिनों से आराम पाए और उस वक़्त तक सुकून से ज़िंदगी गुज़ारे जब तक बेदीनों के लिए
गढ़ा तैयार न हो।
14 क्योंकि रब अपनी क़ौम को रद्द नहीं करेगा, वह अपनी मौरूसी मिलकियत को तर्क नहीं करेगा।
15 फ़ैसले दुबारा इनसाफ़ पर मबनी होंगे, और तमाम दियानतदार दिल उस की पैरवी करेंगे।

16 कौन शरीरों के सामने मेरा दिफ़ा करेगा? कौन मेरे लिए बदकारों का सामना करेगा?
17 अगर रब मेरा सहारा न होता तो मेरी जान जल्द ही ख़ामोशी के मुल्क में जा बसती।
18 ऐ रब, जब मैं बोला, "मेरा पाँव डगमगाने लगा है" तो तेरी शफ़क़त ने मुझे सँभाला।
19 जब तशवीशनाक ख़यालात मुझे बेचैन करने लगे तो तेरी तसल्लियों ने मेरी जान को ताज़ादम किया।

20 ऐ अल्लाह, क्या तबाही की हुकूमत तेरे साथ मुत्तहिद हो सकती है, ऐसी हुकूमत जो अपने फ़रमानों से ज़ुल्म
करती है? हरगिज़ नहीं!
21 वह रास्तबाज़ की जान लेने के लिए आपस में मिल जाते और बेक़ुसूरों को क़ातिल ठहराते हैं।
22 लेकिन रब मेरा क़िला बन गया है, और मेरा ख़ुदा मेरी पनाह की चटान साबित हुआ है।
23 वह उनकी नाइनसाफ़ी उन पर वापस आने देगा और उनकी शरीर हरकतों के जवाब में उन्हें तबाह करेगा। रब
हमारा ख़ुदा उन्हें नेस्त करेगा।

95

परस्तिश और फ़रमाँबरदारी की दावत
1 आओ, हम शादियाना बजाकर रब की मद्हसराई करें, ख़ुशी के नारे लगाकर अपनी नजात की चटान की तमजीद
करें!
2 आओ, हम शुक्रगुज़ारी के साथ उसके हुज़ूर आएँ, गीत गाकर उस की सताइश करें।
3 क्योंकि रब अज़ीम ख़ुदा और तमाम माबूदों पर अज़ीम बादशाह है।
4 उसके हाथ में ज़मीन की गहराइयाँ हैं, और पहाड़ की बुलंदियाँ भी उसी की हैं।

5 समुंदर उसका है, क्योंकि उसने उसे ख़लक़ किया। ख़ुश्की उस की है, क्योंकि उसके हाथों ने उसे तश्कील
दिया।
6 आओ हम सिजदा करें और रब अपने ख़ालिक़ के सामने झुककर घुटने टेकें।
7 क्योंकि वह हमारा ख़ुदा है और हम उस की चरागाह की क़ौम और उसके हाथ की भेड़ें हैं। अगर तुम आज उस
की आवाज़ सुनो
8 "तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह मरीबा में हुआ, जिस तरह रेगिस्तान में मस्सा में हुआ।
9 वहाँ तुम्हारे बापदादा ने मुझे आज़माया और जाँचा, हालाँकि उन्होंने मेरे काम देख लिए थे।
10 चालीस साल मैं उस नसल से घिन खाता रहा। मैं बोला, 'उनके दिल हमेशा सहीह राह से हट जाते हैं, और वह
मेरी राहें नहीं जानते।'
11 अपने ग़ज़ब में मैंने क़सम खाई, 'यह कभी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून देता'।"

96

दुनिया का ख़ालिक़ और मुंसिफ़

1 रब की तमजीद में नया गीत गाओ, ऐ पूरी दुनिया, रब की मद्हसराई करो।
2 रब की तमजीद में गीत गाओ, उसके नाम की सताइश करो, रोज़ बरोज़ उस की नजात की ख़ुशख़बरी सुनाओ।
3 क़ौमों में उसका जलाल और तमाम उम्मतों में उसके अजायब बयान करो।
4 क्योंकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत लायक़ है। वह तमाम माबूदों से महीब है।
5 क्योंकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही हैं जबकि रब ने आसमान को बनाया।
6 उसके हुज़ूर शानो-शौकत, उसके मक़दिस में क़ुदरत और जलाल है।
7 ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तमजीद करो, रब के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो।
8 रब के नाम को जलाल दो। क़ुरबानी लेकर उस की बारगाहों में दाख़िल हो जाओ।
9 मुक़द्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को सिजदा करो। पूरी दुनिया उसके सामने लरज़ उठे।
10 क़ौमों में एलान करो, "रब ही बादशाह है! यक़ीनन दुनिया मज़बूती से क़ायम है और नहीं डगमगाएगी। वह
इनसाफ़ से क़ौमों की अदालत करेगा।"

11 आसमान ख़ुश हो, ज़मीन जशन मनाए! समुंदर और जो कुछ उसमें है ख़ुशी से गरज उठे।
12 मैदान और जो कुछ उसमें है बाग़ बाग़ हो। फिर जंगल के दरख़्त शादियाना बजाएंगे।
13 वह रब के सामने शादियाना बजाएंगे, क्योंकि वह आ रहा है, वह दुनिया की अदालत करने आ रहा है। वह
इनसाफ़ से दुनिया की अदालत करेगा और अपनी सदाक़त से अक़वाम का फ़ैसला करेगा।

97

अल्लाह की सलतनत पर ख़ुशी

1 रब बादशाह है! ज़मीन जशन मनाए, साहिली इलाक़े दूर दूर तक ख़ुश हों।
2 वह बादलों और गहरे अंधेरे से घिरा रहता है, रास्ती और इनसाफ़ उसके तख़्त की बुनियाद हैं।
3 आग उसके आगे आगे भड़ककर चारों तरफ़ उसके दुश्मनों को भस्म कर देती है।
4 उस की कड़कती बिजलियों ने दुनिया को रौशन कर दिया तो ज़मीन यह देखकर पेचो-ताब खाने लगी।
5 रब के आगे आगे, हाँ पूरी दुनिया के मालिक के आगे आगे पहाड़ मोम की तरह पिघल गए।
6 आसमानों ने उस की रास्ती का एलान किया, और तमाम क़ौमों ने उसका जलाल देखा।

7 तमाम बुतपरस्त, हाँ सब जो बुतों पर फ़ख़र करते हैं शरमिंदा हों। ऐ तमाम माबूदो, उसे सिजदा करो!
8 कोहे-सिय्यून सुनकर ख़ुश हुआ। ऐ रब, तेरे फ़ैसलों के बाइस यहूदाह की बेटियाँ * बाग़ बाग़ हुईं।
9 क्योंकि तू ऐ रब, पूरी दुनिया पर सबसे आला है, तू तमाम माबूदों से सरबुलंद है।

10 तुम जो रब से मुहब्बत रखते हो, बुराई से नफ़रत करो! रब अपने ईमानदारों की जान को महफ़ूज़ रखता है, वह
उन्हें बेदीनों के क़ब्ज़े से छुड़ाता है।

* **97:8** एक और मुमकिना तरजुमा : यहूदाह की आबादियाँ।

11 रास्तबाज़ के लिए नूर का और दिल के दियानतदारों के लिए शादमानी का बीज बोया गया है।
12 ऐ रास्तबाज़ो, रब से ख़ुश हो, उसके मुक़द्दस नाम की सताइश करो।

98

पूरी दुनिया का शाही मुंसिफ़

1 रब की तमजीद में नया गीत गाओ, क्योंकि उसने मोजिज़े किए हैं। अपने दहने हाथ और मुक़द्दस बाज़ू से उसने
नजात दी है।
2 रब ने अपनी नजात का एलान किया और अपनी रास्ती क़ौमों के रूबरू ज़ाहिर की है।
3 उसने इसराईल के लिए अपनी शफ़क़त और वफ़ा याद की है। दुनिया की इंतहाओं ने सब हमारे ख़ुदा की नजात
देखी है।
4 ऐ पूरी दुनिया, नारे लगाकर रब की मद्हसराई करो! आपे में न समाओ और जशन मनाकर हम्द के गीत गाओ!
5 सरोद बजाकर रब की मद्हसराई करो, सरोद और गीत से उस की सताइश करो।
6 तुरम और नरसिंगा फूँककर रब बादशाह के हुज़ूर ख़ुशी के नारे लगाओ!
7 समुंदर और जो कुछ उसमें है, दुनिया और उसके बाशिंदे ख़ुशी से गरज उठें।
8 दरिया तालियाँ बजाएँ, पहाड़ मिलकर ख़ुशी मनाएँ,
9 वह रब के सामने ख़ुशी मनाएँ। क्योंकि वह ज़मीन की अदालत करने आ रहा है। वह इनसाफ़ से दुनिया की
अदालत करेगा, रास्ती से क़ौमों का फ़ैसला करेगा।

99

क़ुद्दूस ख़ुदा

1 रब बादशाह है, अक़वाम लरज़ उठें! वह करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है, दुनिया डगमगाए!
2 कोहे-सिय्यून पर रब अज़ीम है, तमाम अक़वाम पर सरबुलंद है।
3 वह तेरे अज़ीम और पुरजलाल नाम की सताइश करें, क्योंकि वह क़ुद्दूस है।

4 वह बादशाह की क़ुदरत की तमजीद करें जो इनसाफ़ से प्यार करता है। ऐ अल्लाह, तू ही ने अदल क़ायम किया,
तू ही ने याक़ूब में इनसाफ़ और रास्ती पैदा की है।
5 रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो, उसके पाँवों की चौकी के सामने सिजदा करो, क्योंकि वह क़ुद्दूस है।

6 मूसा और हारून उसके इमामों में से थे। समुएल भी उनमें से था जो उसका नाम पुकारते थे। उन्होंने रब को पुकारा,
और उसने उनकी सुनी।
7 वह बादल के सतून में से उनसे हमकलाम हुआ, और वह उन अहकाम और फ़रमानों के ताबे रहे जो उसने उन्हें
दिए थे।
8 ऐ रब हमारे ख़ुदा, तूने उनकी सुनी। तू जो अल्लाह है उन्हें मुआफ़ करता रहा, अलबत्ता उन्हें उनकी बुरी हरकतों
की सज़ा भी देता रहा।
9 रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो और उसके मुक़द्दस पहाड़ पर सिजदा करो, क्योंकि रब हमारा ख़ुदा क़ुद्दूस है।

100

अल्लाह की सताइश करो!

1 शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी के लिए ज़बूर।
ऐ पूरी दुनिया, ख़ुशी के नारे लगाकर रब की मद्हसराई करो!
2 ख़ुशी से रब की इबादत करो, जशन मनाते हुए उसके हुज़ूर आओ!
3 जान लो कि रब ही ख़ुदा है। उसी ने हमें ख़लक़ किया, और हम उसके हैं, उस की क़ौम और उस की चरागाह
की भेड़ें।

4 शुक्र करते हुए उसके दरवाज़ों में दाख़िल हो, सताइश करते हुए उस की बारगाहों में हाज़िर हो। उसका शुक्र करो,
उसके नाम की तमजीद करो!

5 क्योंकि रब भला है। उस की शफ़क़त अबदी है, और उस की वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त क़ायम है।

101

बादशाह की हुकूमत कैसी होनी चाहिए?

1 दाऊद का ज़बूर।

मैं शफ़क़त और इनसाफ़ का गीत गाऊँगा। ऐ रब, मैं तेरी मद्हसराई करूँगा।

2 मैं बड़ी एहतियात से बेइलज़ाम राह पर चलूँगा। लेकिन तू कब मेरे पास आएगा? मैं ख़ुलूसदिली से अपने घर में ज़िंदगी गुज़ारूँगा।

3 मैं शरारत की बात अपने सामने नहीं रखता और बुरी हरकतों से नफ़रत करता हूँ। ऐसी चीज़ें मेरे साथ लिपट न जाएँ।

4 झूटा दिल मुझसे दूर रहे। मैं बुराई को जानना ही नहीं चाहता।

5 जो चुपके से अपने पड़ोसी पर तोहमत लगाए उसे मैं ख़ामोश कराऊँगा, जिसकी आँखें मग़रूर और दिल मुतकब्बिर हो उसे बरदाश्त नहीं करूँगा।

6 मेरी आँखें मुल्क के वफ़ादारों पर लगी रहती हैं ताकि वह मेरे साथ रहें। जो बेइलज़ाम राह पर चले वही मेरी ख़िदमत करे।

7 धोकेबाज़ मेरे घर में न ठहरे, झूट बोलनेवाला मेरी मौजूदगी में क़ायम न रहे।

8 हर सुबह को मैं मुल्क के तमाम बेदीनों को ख़ामोश कराऊँगा ताकि तमाम बदकारों को रब के शहर में से मिटाया जाए।

102

सिय्यून की बहाली के लिए दुआ (तौबा का पाँचवाँ ज़बूर)

1 मुसीबतज़दा की दुआ, उस वक़्त जब वह निढाल होकर रब के सामने अपनी आहो-ज़ारी उंडेल देता है।

ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मदद के लिए मेरी आहें तेरे हुज़ूर पहुँचें।

2 जब मैं मुसीबत में हूँ तो अपना चेहरा मुझसे छुपाए न रख बल्कि अपना कान मेरी तरफ़ झुका। जब मैं पुकारूँ तो जल्द ही मेरी सुन।

3 क्योंकि मेरे दिन धुएँ की तरह ग़ायब हो रहे हैं, मेरी हड्डियाँ कोयलों की तरह दहक रही हैं।

4 मेरा दिल घास की तरह झुलसकर सूख गया है, और मैं रोटी खाना भी भूल गया हूँ।

5 आहो-ज़ारी करते करते मेरा जिस्म सुकड़ गया है, जिल्द और हड्डियाँ ही रह गई हैं।

6 मैं रेगिस्तान में दश्ती उल्लू और खंडरात में छोटे उल्लू की मानिंद हूँ।

7 मैं बिस्तर पर जागता रहता हूँ, छत पर तनहा परिंदे की मानिंद हूँ।

8 दिन-भर मेरे दुश्मन मुझे लान-तान करते हैं। जो मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं वह मेरा नाम लेकर लानत करते हैं।

9 राख मेरी रोटी है, और जो कुछ पीता हूँ उसमें मेरे आँसू मिले होते हैं।

10 क्योंकि मुझ पर तेरी लानत और तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ है। तूने मुझे उठाकर ज़मीन पर पटख़ दिया है।

11 मेरे दिन शाम के ढलनेवाले साये की मानिंद हैं। मैं घास की तरह सूख रहा हूँ।

12 लेकिन तू ऐ रब अबद तक तख़्तनशीन है, तेरा नाम पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहता है।

13 अब आ, कोहे-सिय्यून पर रहम कर। क्योंकि उस पर मेहरबानी करने का वक़्त आ गया है, मुक़र्ररा वक़्त आ गया है।

14 क्योंकि तेरे ख़ादिमों को उसका एक एक पत्थर प्यारा है, और वह उसके मलबे पर तरस खाते हैं।

15 तब ही क़ौमें रब के नाम से डरेंगी, और दुनिया के तमाम बादशाह तेरे जलाल का ख़ौफ़ खाएँगे।

16 क्योंकि रब सिय्यून को अज़ सरे-नौ तामीर करेगा, वह अपने पूरे जलाल के साथ ज़ाहिर हो जाएगा।

17 मुफ़लिसों की दुआ पर वह ध्यान देगा और उनकी फ़रियादों को हक़ीर नहीं जानेगा।

18 आनेवाली नसल के लिए यह क़लमबंद हो जाए ताकि जो क़ौम अभी पैदा नहीं हुई वह रब की सताइश करे।

19 क्योंकि रब ने अपने मक़दिस की बुलंदियों से झाँका है, उसने आसमान से ज़मीन पर नज़र डाली है

20 ताकि क़ैदियों की आहो-ज़ारी सुने और मरनेवालों की ज़ंजीरें खोले।

21 क्योंकि उस की मरज़ी है कि वह कोहे-सिय्यून पर रब के नाम का एलान करें और यरूशलम में उस की सताइश करें,
22 कि क़ौमें और सलतनतें मिलकर जमा हो जाएँ और रब की इबादत करें।

23 रास्ते में ही अल्लाह ने मेरी ताक़त तोड़कर मेरे दिन मुख़तसर कर दिए हैं।
24 मैं बोला, "ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे ज़िंदों के मुल्क से दूर न कर, मेरी ज़िंदगी तो अधूरी रह गई है। लेकिन तेरे साल पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहते हैं।
25 तूने क़दीम ज़माने में ज़मीन की बुनियाद रखी, और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।
26 यह तो तबाह हो जाएंगे, लेकिन तू क़ायम रहेगा। यह सब कपड़े की तरह घिस फट जाएंगे। तू उन्हें पुराने लिबास की तरह बदल देगा, और वह जाते रहेंगे।
27 लेकिन तू वही का वहीं रहता है, और तेरी ज़िंदगी कभी ख़त्म नहीं होती।
28 तेरे ख़ादिमों के फ़रज़ंद तेरे हुज़ूर बसते रहेंगे, और उनकी औलाद तेरे सामने क़ायम रहेगी।"

103

रब की शफ़क़त की सताइश
1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! मेरा रगो-रेशा उसके क़ुद्दूस नाम की हम्द करे!
2 ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर और जो कुछ उसने तेरे लिए किया है उसे भूल न जा।
3 क्योंकि वह तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करता, तुझे तमाम बीमारियों से शफ़ा देता है।
4 वह एवज़ाना देकर तेरी जान को मौत के गढ़े से छुड़ा लेता, तेरे सर को अपनी शफ़क़त और रहमत के ताज से आरास्ता करता है।
5 वह तेरी ज़िंदगी को अच्छी चीज़ों से सेर करता है, और तू दुबारा जवान होकर उक़ाब की-सी तक़वियत पाता है।

6 रब तमाम मज़लूमों के लिए रास्ती और इनसाफ़ क़ायम करता है।
7 उसने अपनी राहें मूसा पर और अपने अज़ीम काम इसराईलियों पर ज़ाहिर किए।
8 रब रहीम और मेहरबान है, वह तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है।
9 न वह हमेशा डाँटता रहेगा, न अबद तक नाराज़ रहेगा।
10 न वह हमारी ख़ताओं के मुताबिक़ सज़ा देता, न हमारे गुनाहों का मुनासिब अज्र देता है।
11 क्योंकि जितना बुलंद आसमान है, उतनी ही अज़ीम उस की शफ़क़त उन पर है जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं।
12 जितनी दूर मशरिक़ मग़रिब से है उतना ही उसने हमारे क़ुसूर हमसे दूर कर दिए हैं।
13 जिस तरह बाप अपने बच्चों पर तरस खाता है उसी तरह रब उन पर तरस खाता है जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं।

14 क्योंकि वह हमारी साख़्त जानता है, उसे याद है कि हम ख़ाक ही हैं।
15 इनसान के दिन घास की मानिंद हैं, और वह जंगली फूल की तरह ही फलता-फूलता है।
16 जब उस पर से हवा गुज़रे तो वह नहीं रहता, और उसके नामो-निशान का भी पता नहीं चलता।

17 लेकिन जो रब का ख़ौफ़ मानें उन पर वह हमेशा तक मेहरबानी करेगा, वह अपनी रास्ती उनके पोतों और नवासों पर भी ज़ाहिर करेगा।
18 शर्त यह है कि वह उसके अहद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें और ध्यान से उसके अहकाम पर अमल करें।

19 रब ने आसमान पर अपना तख़्त क़ायम किया है, और उस की बादशाही सब पर हुकूमत करती है।
20 ऐ रब के फ़रिश्तो, उसके ताक़तवर सूरमाओ, जो उसके फ़रमान पूरे करते हो ताकि उसका कलाम माना जाए, रब की सताइश करो!
21 ऐ तमाम लशकरो, तुम सब जो उसके ख़ादिम हो और उस की मरज़ी पूरी करते हो, रब की सताइश करो!
22 तुम सब जिन्हें उसने बनाया, रब की सताइश करो! उस की सलतनत की हर जगह पर उस की तमजीद करो। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर!

104

ख़ालिक़ की हम्दो-सना
1 ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू निहायत ही अज़ीम है, तू जाहो-जलाल से आरास्ता है।
2 तेरी चादर नूर है जिसे तू ओढे रहता है। तू आसमान को ख़ैमे की तरह तानकर
3 अपना बालाखाना उसके पानी के बीच में तामीर करता है। बादल तेरा रथ है, और तू हवा के परों पर सवार होता है।
4 तू हवाओं को अपने क़ासिद और आग के शोलों को अपने ख़ादिम बना देता है।

5 तूने ज़मीन को मज़बूत बुनियाद पर रखा ताकि वह कभी न डगमगाए।
6 सैलाब ने उसे लिबास की तरह ढाँप दिया, और पानी पहाड़ों के ऊपर ही खड़ा हुआ।
7 लेकिन तेरे डाँटने पर पानी फ़रार हुआ, तेरी गरजती आवाज़ सुनकर वह एकदम भाग गया।
8 तब पहाड़ ऊँचे हुए और वादियाँ उन जगहों पर उतर आईं जो तूने उनके लिए मुक़र्रर की थीं।
9 तूने एक हद बाँधी जिससे पानी बढ नहीं सकता। आइंदा वह कभी पूरी ज़मीन को नहीं ढाँकने का।
10 तू वादियों में चश्मे फूटने देता है, और वह पहाड़ों में से बह निकलते हैं।
11 बहते बहते वह खुले मैदान के तमाम जानवरों को पानी पिलाते हैं। जंगली गधे आकर अपनी प्यास बुझाते हैं।
12 परिंदे उनके किनारों पर बसेरा करते, और उनकी चहचहाती आवाज़ें घने बेल-बूटों में से सुनाई देती हैं।
13 तू अपने बालाख़ाने से पहाड़ों को तर करता है, और ज़मीन तेरे हाथ से सेर होकर हर तरह का फल लाती है।
14 तू जानवरों के लिए घास फूटने और इनसान के लिए पौदे उगने देता है ताकि वह ज़मीन की काश्तकारी करके रोटी हासिल करे।
15 तेरी मै इनसान का दिल ख़ुश करती, तेरा तेल उसका चेहरा रौशन कर देता, तेरी रोटी उसका दिल मज़बूत करती है।
16 रब के दरख़्त यानी लुबनान में उसके लगाए हुए देवदार के दरख़्त सेराब रहते हैं।
17 परिंदे उनमें अपने घोंसले बना लेते हैं, और लक़लक़ जूनीपर के दरख़्त में अपना आशियाना।
18 पहाड़ों की बुलंदियों पर पहाड़ी बकरों का राज है, चटानों में बिज्जू पनाह लेते हैं।
19 तूने साल को महीनों में तक़सीम करने के लिए चाँद बनाया, और सूरज को ग़ुरूब होने के औक़ात मालूम हैं।
20 तू अंधेरा फैलने देता है तो दिन ढल जाता है और जंगली जानवर हरकत में आ जाते हैं।
21 जवान शेरबबर दहाड़कर शिकार के पीछे पड़ जाते और अल्लाह से अपनी ख़ुराक का मुतालबा करते हैं।
22 फिर सूरज तुलू होने लगता है, और वह खिसककर अपने भटों में छुप जाते हैं।
23 उस वक़्त इनसान घर से निकलकर अपने काम में लग जाता और शाम तक मसरूफ़ रहता है।

24 ऐ रब, तेरे अनगिनत काम कितने अज़ीम हैं! तूने हर एक को हिकमत से बनाया, और ज़मीन तेरी मख़लूक़ात से भरी पड़ी है।

25 समुंदर को देखो, वह कितना बड़ा और वसी है। उसमें बेशुमार जानदार हैं, बड़े भी और छोटे भी।
26 उस की सतह पर जहाज़ इधर उधर सफ़र करते हैं, उस की गहराइयों में लिवियातान फिरता है, वह अज़दहा जिसे तूने उसमें उछलने कूदने के लिए तश्कील दिया था।
27 सब तेरे इंतज़ार में रहते हैं कि तू उन्हें वक़्त पर खाना मुहैया करे।
28 तू उनमें ख़ुराक तक़सीम करता है तो वह उसे इकट्ठा करते हैं। तू अपनी मुट्ठी खोलता है तो वह अच्छी चीज़ों से सेर हो जाते हैं।
29 जब तू अपना चेहरा छुपा लेता है तो उनके हवास गुम हो जाते हैं। जब तू उनका दम निकाल लेता है तो वह नेस्त होकर दुबारा ख़ाक में मिल जाते हैं।
30 तू अपना दम भेज देता है तो वह पैदा हो जाते हैं। तू ही रूए-ज़मीन को बहाल करता है।

31 रब का जलाल अबद तक क़ायम रहे! रब अपने काम की ख़ुशी मनाए!
32 वह ज़मीन पर नज़र डालता है तो वह लरज़ उठती है। वह पहाड़ों को छू देता है तो वह धुआँ छोड़ते हैं।
33 मैं उम्र-भर रब की तमजीद में गीत गाऊँगा, जब तक ज़िंदा हूँ अपने ख़ुदा की मद्हसराई करूँगा।
34 मेरी बात उसे पसंद आए! मैं रब से कितना ख़ुश हूँ!

35 गुनाहगार ज़मीन से मिट जाएँ और बेदीन नेस्तो-नाबूद हो जाएँ। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! रब की हम्द
हो!

105

माज़ी में रब की नजात की हम्द

1 रब का शुक्र करो और उसका नाम पुकारो! अक़वाम में उसके कामों का एलान करो।
2 साज़ बजाकर उस की मद्हसराई करो। उसके तमाम अजायब के बारे में लोगों को बताओ।
3 उसके मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के तालिब दिल से ख़ुश हों।
4 रब और उस की क़ुदरत की दरियाफ़्त करो, हर वक़्त उसके चेहरे के तालिब रहो।
5 जो मोजिज़े उसने किए उन्हें याद करो। उसके इलाही निशान और उसके मुँह के फ़ैसले दोहराते रहो।
6 तुम जो उसके ख़ादिम इब्राहीम की औलाद और याक़ूब के फ़रज़ंद हो, जो उसके बरगुज़ीदा लोग हो, तुम्हें सब
कुछ याद रहे!
7 वही रब हमारा ख़ुदा है, वही पूरी दुनिया की अदालत करता है।
8 वह हमेशा अपने अहद का ख़याल रखता है, उस कलाम का जो उसने हज़ार पुश्तों के लिए फ़रमाया था।
9 यह वह अहद है जो उसने इब्राहीम से बाँधा, वह वादा जो उसने क़सम खाकर इसहाक़ से किया था।
10 उसने उसे याक़ूब के लिए क़ायम किया ताकि वह उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे, उसने तसदीक़ की कि यह मेरा
इसराईल से अबदी अहद है।
11 साथ साथ उसने फ़रमाया, "मैं तुझे मुल्के-कनान दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।"

12 उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।
13 अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सलतनतों में घुमते-फिरते थे।
14 लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म करने न दिया, और उनकी ख़ातिर उसने बादशाहों को डाँटा,
15 "मेरे मसह किए हुए ख़ादिमों को मत छेड़ना, मेरे नबियों को नुक़सान मत पहुँचाना।"

16 फिर अल्लाह ने मुल्के-कनान में काल पड़ने दिया और ख़ुराक का हर ज़ख़ीरा ख़त्म किया।
17 लेकिन उसने उनके आगे आगे एक आदमी को मिसर भेजा यानी यूसुफ़ को जो ग़ुलाम बनकर फ़रोख़्त हुआ।
18 उसके पाँव और गरदन ज़ंजीरों में जकड़े रहे
19 जब तक वह कुछ पूरा न हुआ जिसकी पेशगोई यूसुफ़ ने की थी, जब तक रब के फ़रमान ने उस की तसदीक़ न
की।
20 तब मिसरी बादशाह ने अपने बंदों को भेजकर उसे रिहाई दी, क़ौमों के हुक्मरान ने उसे आज़ाद किया।
21 उसने उसे अपने घराने पर निगरान और अपनी तमाम मिलकियत पर हुक्मरान मुक़र्रर किया।
22 यूसुफ़ को फ़िरौन के रईसों को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ चलाने और मिसरी बुज़ुर्गों को हिकमत की तालीम देने
की ज़िम्मादारी भी दी गई।

23 फिर याक़ूब का ख़ानदान मिसर आया, और इसराईल हाम के मुल्क में अजनबी की हैसियत से बसने लगा।
24 वहाँ अल्लाह ने अपनी क़ौम को बहुत फलने फूलने दिया, उसने उसे उसके दुश्मनों से ज़्यादा ताक़तवर बना
दिया।
25 साथ साथ उसने मिसरियों का रवैया बदल दिया, तो वह उस की क़ौम इसराईल से नफ़रत करके रब के ख़ादिमों
से चालाकियाँ करने लगे।

26 तब अल्लाह ने अपने ख़ादिम मूसा और अपने चुने हुए बंदे हारून को मिसर में भेजा।
27 मुल्के-हाम में आकर उन्होंने उनके दरमियान अल्लाह के इलाही निशान और मोजिज़े दिखाए।
28 अल्लाह के हुक्म पर मिसर पर तारीकी छा गई, मुल्क में अंधेरा हो गया। लेकिन उन्होंने उसके फ़रमान न माने।
29 उसने उनका पानी ख़ून में बदलकर उनकी मछलियों को मरवा दिया।
30 मिसर के मुल्क पर मेंढकों के ग़ोल छा गए जो उनके हुक्मरानों के अंदरूनी कमरों तक पहुँच गए।
31 अल्लाह के हुक्म पर मिसर के पूरे इलाक़े में मक्खियों और जुओं के ग़ोल फैल गए।
32 बारिश की बजाए उसने उनके मुल्क पर ओले और दहकते शोले बरसाए।

33 उसने उनकी अंगूर की बेलें और अंजीर के दरख़्त तबाह कर दिए, उनके इलाक़े के दरख़्त तोड़ डाले।
34 उसके हुक्म पर अनगिनत टिड्डियाँ अपने बच्चों समेत मुल्क पर हमलाआवर हुईं।
35 वह उनके मुल्क की तमाम हरियाली और उनके खेतों की तमाम पैदावार चट कर गईं।
36 फिर अल्लाह ने मिसर में तमाम पहलौठों को मार डाला, उनकी मरदानगी का पहला फल तमाम हुआ।

37 इसके बाद वह इसराईल को चाँदी और सोने से नवाज़कर मिसर से निकाल लाया। उस वक़्त उसके क़बीलों में
ठोकर खानेवाला एक भी नहीं था।
38 मिसर ख़ुश था जब वह रवाना हुए, क्योंकि उन पर इसराईल की दहशत छा गई थी।
39 दिन को अल्लाह ने उनके ऊपर बादल कम्बल की तरह बिछा दिया, रात को आग मुहैया की ताकि रौशनी हो।
40 जब उन्होंने ख़ुराक माँगी तो उसने उन्हें बटेर पहुँचाकर आसमानी रोटी से सेर किया।
41 उसने चटान को चाक किया तो पानी फूट निकला, और रेगिस्तान में पानी की नदियाँ बहने लगीं।

42 क्योंकि उसने उस मुक़द्दस वादे का ख़याल रखा जो उसने अपने ख़ादिम इब्राहीम से किया था।
43 चुनाँचे वह अपनी चुनी हुई क़ौम को मिसर से निकाल लाया, और वह ख़ुशी और शादमानी के नारे लगाकर
निकल आए।
44 उसने उन्हें दीगर अक़वाम के ममालिक दिए, और उन्होंने दीगर उम्मतों की मेहनत के फल पर क़ब्ज़ा किया।
45 क्योंकि वह चाहता था कि वह उसके अहकाम और हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें। रब की हम्द हो।

106

अल्लाह का फ़ज़ल और इसराईल की सरकशी

1 रब की हम्द हो! रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
2 कौन रब के तमाम अज़ीम काम सुना सकता, कौन उस की मुनासिब तमजीद कर सकता है?

3 मुबारक हैं वह जो इनसाफ़ क़ायम रखते, जो हर वक़्त रास्त काम करते हैं।
4 ऐ रब, अपनी क़ौम पर मेहरबानी करते वक़्त मेरा ख़याल रख, नजात देते वक़्त मेरी भी मदद कर
5 ताकि मैं तेरे चुने हुए लोगों की ख़ुशहाली देख सकूँ और तेरी क़ौम की ख़ुशी में शरीक होकर तेरी मीरास के साथ
सताइश कर सकूँ।

6 हमने अपने बापदादा की तरह गुनाह किया है, हमसे नाइनसाफ़ी और बेदीनी सरज़द हुई है।
7 जब हमारे बापदादा मिसर में थे तो उन्हें तेरे मोजिज़ों की समझ न आई और तेरी मुतअद्दिद मेहरबानियाँ याद न
रहीं बल्कि वह समुंदर यानी बहरे-क़ुलज़ुम पर सरकश हुए।

8 तो भी उसने उन्हें अपने नाम की ख़ातिर बचाया, क्योंकि वह अपनी क़ुदरत का इज़हार करना चाहता था।
9 उसने बहरे-क़ुलज़ुम को झिड़का तो वह ख़ुश्क हो गया। उसने उन्हें समुंदर की गहराइयों में से यों गुज़रने दिया
जिस तरह रेगिस्तान में से।
10 उसने उन्हें नफ़रत करनेवाले के हाथ से छुड़ाया और एवज़ाना देकर दुश्मन के हाथ से रिहा किया।
11 उनके मुख़ालिफ़ पानी में डूब गए। एक भी न बचा।
12 तब उन्होंने अल्लाह के फ़रमानों पर ईमान लाकर उस की मद्हसराई की।

13 लेकिन जल्द ही वह उसके काम भूल गए। वह उस की मरज़ी का इंतज़ार करने के लिए तैयार न थे।
14 रेगिस्तान में शदीद लालच में आकर उन्होंने वहीं बयाबान में अल्लाह को आज़माया।
15 तब उसने उनकी दरख़ास्त पूरी की, लेकिन साथ साथ मोहलक वबा भी उनमें फैला दी।
16 ख़ैमागाह में वह मूसा और रब के मुक़द्दस इमाम हारून से हसद करने लगे।
17 तब ज़मीन खुल गई, और उसने दातन को हड़प कर लिया, अबीराम के जत्थे को अपने अंदर दफ़न कर लिया।
18 आग उनके जत्थे में भड़क उठी, और बेदीन नज़रे-आतिश हुए।

19 वह कोहे-होरिब यानी सीना के दामन में बछड़े का बुत ढालकर उसके सामने औंधे मुँह हो गए।

20 उन्होंने अल्लाह को जलाल देने के बजाए घास खानेवाले बैल की पूजा की।
21 वह अल्लाह को भूल गए, हालाँकि उसी ने उन्हें छुड़ाया था, उसी ने मिसर में अज़ीम काम किए थे।
22 जो मोजिज़े हाम के मुल्क में हुए और जो जलाली वाक़ियात बहरे-क़ुलज़ुम पर पेश आए थे वह सब अल्लाह के
हाथ से हुए थे।
23 चुनाँचे अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं उन्हें नेस्तो-नाबूद करूँगा। लेकिन उसका चुना हुआ ख़ादिम मूसा रख़ने में
खड़ा हो गया ताकि उसके ग़ज़ब को इसराईलियों को मिटाने से रोके। सिर्फ़ इस वजह से अल्लाह अपने इरादे से बाज़
आया।

24 फिर उन्होंने कनान के ख़ुशगवार मुल्क को हक़ीर जाना। उन्हें यक़ीन नहीं था कि अल्लाह अपना वादा पूरा
करेगा।
25 वह अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाने लगे और रब की आवाज़ सुनने के लिए तैयार न हुए।
26 तब उसने अपना हाथ उनके ख़िलाफ़ उठाया ताकि उन्हें वहीं रेगिस्तान में हलाक करे
27 और उनकी औलाद को दीगर अक़वाम में फेंककर मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दे।

28 वह बाल-फ़ग़ूर देवता से लिपट गए और मुरदों के लिए पेश की गई क़ुरबानियों का गोश्त खाने लगे।
29 उन्होंने अपनी हरकतों से रब को तैश दिलाया तो उनमें मोहलक बीमारी फैल गई।
30 लेकिन फ़ीनहास ने उठकर उनकी अदालत की। तब वबा रुक गई।
31 इसी बिना पर अल्लाह ने उसे पुश्त-दर-पुश्त और अबद तक रास्तबाज़ क़रार दिया।

32 मरीबा के चश्मे पर भी उन्होंने रब को ग़ुस्सा दिलाया। उन्हीं के बाइस मूसा का बुरा हाल हुआ।
33 क्योंकि उन्होंने उसके दिल में इतनी तलख़ी पैदा की कि उसके मुँह से बेजा बातें निकलीं।

34 जो दीगर क़ौमें मुल्क में थीं उन्हें उन्होंने नेस्त न किया, हालाँकि रब ने उन्हें यह करने को कहा था।
35 न सिर्फ़ यह बल्कि वह ग़ैरक़ौमों से रिश्ता बाँधकर उनमें घुल मिल गए और उनके रस्मो-रिवाज अपना लिए।
36 वह उनके बुतों की पूजा करने में लग गए, और यह उनके लिए फंदे का बाइस बन गए।
37 वह अपने बेटे-बेटियों को बदरूहों के हुज़ूर क़ुरबान करने से भी न कतराए।
38 हाँ, उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को कनान के देवताओं के हुज़ूर पेश करके उनका मासूम ख़ून बहाया। इससे मुल्क
की बेहुरमती हुई।
39 वह अपनी ग़लत हरकतों से नापाक और अपने ज़िनाकाराना कामों से अल्लाह से बेवफ़ा हुए।

40 तब अल्लाह अपनी क़ौम से सख़्त नाराज़ हुआ, और उसे अपनी मौरूसी मिलकियत से घिन आने लगी।
41 उसने उन्हें दीगर क़ौमों के हवाले किया, और जो उनसे नफ़रत करते थे वह उन पर हुकूमत करने लगे।
42 उनके दुश्मनों ने उन पर ज़ुल्म करके उनको अपना मुती बना लिया।
43 अल्लाह बार बार उन्हें छुड़ाता रहा, हालाँकि वह अपने सरकश मनसूबों पर तुले रहे और अपने क़ुसूर में डूबते
गए।
44 लेकिन उसने मदद के लिए उनकी आहें सुनकर उनकी मुसीबत पर ध्यान दिया।
45 उसने उनके साथ अपना अहद याद किया, और वह अपनी बड़ी शफ़क़त के बाइस पछताया।
46 उसने होने दिया कि जिसने भी उन्हें गिरिफ़्तार किया उसने उन पर तरस खाया।

47 ऐ रब हमारे ख़ुदा, हमें बचा! हमें दीगर क़ौमों से निकालकर जमा कर। तब ही हम तेरे मुक़द्दस नाम की सताइश
करेंगे और तेरे क़ाबिले-तारीफ़ कामों पर फ़ख़र करेंगे।
48 अज़ल से अबद तक रब, इसराईल के ख़ुदा की हम्द हो। तमाम क़ौम कहे, "आमीन! रब की हम्द हो!"

पाँचवीं किताब 107-15

107

नजातयाफ़्ता की शुक्रगुज़ारी

1 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
2 रब के नजातयाफ़्ता जिनको उसने एवज़ाना देकर दुश्मन के क़ब्ज़े से छुड़ाया है सब यह कहें।

3 उसने उन्हें मशरिक़ से मग़रिब तक और शिमाल से जुनूब तक दीगर ममालिक से इकट्ठा किया है।

4 बाज़ रेगिस्तान में सहीह रास्ता भूलकर वीरान रास्ते पर मारे मारे फिरे, और कहीं भी आबादी न मिली।
5 भूक और प्यास के मारे उनकी जान निढाल हो गई।
6 तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।
7 उसने उन्हें सहीह राह पर लाकर ऐसी आबादी तक पहुँचाया जहाँ रह सकते थे।
8 वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।
9 क्योंकि वह प्यासी जान को आसूदा करता और भूकी जान को कसरत की अच्छी चीज़ों से सेर करता है।

10 दूसरे ज़ंजीरों और मुसीबत में जकड़े हुए अंधेरे और गहरी तारीकी में बसते थे,
11 क्योंकि वह अल्लाह के फ़रमानों से सरकश हुए थे, उन्होंने अल्लाह तआला का फ़ैसला हक़ीर जाना था।
12 इसलिए अल्लाह ने उनके दिल को तकलीफ़ में मुब्तला करके पस्त कर दिया। जब वह ठोकर खाकर गिर गए
और मदद करनेवाला कोई न रहा था
13 तो उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।
14 वह उन्हें अंधेरे और गहरी तारीकी से निकाल लाया और उनकी ज़ंजीरें तोड़ डालीं।
15 वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।
16 क्योंकि उसने पीतल के दरवाज़े तोड़ डाले, लोहे के कुंडे टुकड़े टुकड़े कर दिए हैं।

17 कुछ लोग अहमक़ थे, वह अपने सरकश चाल-चलन और गुनाहों के बाइस परेशानियों में मुब्तला हुए।
18 उन्हें हर ख़ुराक से घिन आने लगी, और वह मौत के दरवाज़ों के क़रीब पहुँचे।
19 तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।
20 उसने अपना कलाम भेजकर उन्हें शफ़ा दी और उन्हें मौत के गढ़े से बचाया।
21 वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।
22 वह शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानियाँ पेश करें और ख़ुशी के नारे लगाकर उसके कामों का चर्चा करें।

23 बाज़ बहरी जहाज़ में बैठ गए और तिजारत के सिलसिले में समुंदर पर सफ़र करते करते दूर-दराज़ इलाक़ों तक
पहुँचे।
24 उन्होंने रब के अज़ीम काम और समुंदर की गहराइयों में उसके मोजिज़े देखे हैं।
25 क्योंकि रब ने हुक्म दिया तो आँधी चली जो समुंदर की मौजें बुलंदियों पर लाई।
26 वह आसमान तक चढ़ीं और गहराइयों तक उतरीं। परेशानी के बाइस मल्लाहों की हिम्मत जवाब दे गई।
27 वह शराब में धुत आदमी की तरह लड़खड़ाते और डगमगाते रहे। उनकी तमाम हिकमत नाकाम साबित हुई।
28 तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।
29 उसने समुंदर को थमा दिया और ख़ामोशी फैल गई, लहरें साकित हो गईं।
30 मुसाफ़िर पुरसुकून हालात देखकर ख़ुश हुए, और अल्लाह ने उन्हें मनज़िले-मक़सूद तक पहुँचाया।
31 वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।
32 वह क़ौम की जमात में उस की ताज़ीम करें, बुज़ुर्गों की मजलिस में उस की हम्द करें।

33 कई जगहों पर वह दरियाओं को रेगिस्तान में और चश्मों को प्यासी ज़मीन में बदल देता है।
34 बाशिंदों की बुराई देखकर वह ज़रख़ेज़ ज़मीन को कल्लर के बयाबान में बदल देता है।
35 दूसरी जगहों पर वह रेगिस्तान को झील में और प्यासी ज़मीन को चश्मों में बदल देता है।
36 वहाँ वह भूकों को बसा देता है ताकि आबादियाँ क़ायम करें।
37 तब वह खेत और अंगूर के बाग़ लगाते हैं जो ख़ूब फल लाते हैं।
38 अल्लाह उन्हें बरकत देता है तो उनकी तादाद बहुत बढ़ जाती है। वह उनके रेवड़ों को भी कम होने नहीं देता।
39 जब कभी उनकी तादाद कम हो जाती और वह मुसीबत और दुख के बोझ तले ख़ाक में दब जाते हैं
40 तो वह शुरफ़ा पर अपनी हिक़ारत उंडेल देता और उन्हें रेगिस्तान में भगाकर सहीह रास्ते से दूर फिरने देता है।

41 लेकिन मुहताज को वह मुसीबत की दलदल से निकालकर सरफ़राज़ करता और उसके ख़ानदानों को भेड़-बकरियों की तरह बढ़ा देता है।

42 सीधी राह पर चलनेवाले यह देखकर ख़ुश होंगे, लेकिन बेइनसाफ़ का मुँह बंद किया जाएगा।
43 कौन दानिशमंद है? वह इस पर ध्यान दे, वह रब की मेहरबानियों पर ग़ौर करे।

108

जंग में रब पर उम्मीद
1 दाऊद का ज़बूर। गीत।
ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत है। मैं साज़ बजाकर तेरी मद्हसराई करूँगा। ऐ मेरी जान, जाग उठ!
2 ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! मैं तुलूए-सुबह को जगाऊँगा।
3 ऐ रब, मैं क़ौमों में तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी मद्हसराई करूँगा।
4 क्योंकि तेरी शफ़क़त आसमान से कहीं बुलंद है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।
6 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि जो तुझे प्यारे हैं नजात पाएँ।

7 अल्लाह ने अपने मक़दिस में फ़रमाया है, "मैं फ़तह मनाते हुए सिकम को तक़सीम करूँगा और वादीए-सुक्कात
को नापकर बाँट दूँगा।
8 जिलियाद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़राईम मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा है।
9 मोआब मेरा ग़ुस्ल का बरतन है, और अदोम पर मैं अपना जूता फेंक दूँगा। मैं फ़िलिस्ती मुल्क पर ज़ोरदार नारे
लगाऊँगा!"

10 कौन मुझे क़िलाबंद शहर में लाएगा? कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?
11 ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तूने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का साथ नहीं देता
जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।
12 मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक़्त इनसानी मदद बेकार है।
13 अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे, क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

109

बेरहम मुख़ालिफ़ के सामने अल्लाह से दुआ
1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह मेरे फ़ख़र, ख़ामोश न रह!
2 क्योंकि उन्होंने अपना बेदीन और फ़रेबदेह मुँह मेरे ख़िलाफ़ खोलकर झूटी ज़बान से मेरे साथ बात की है।
3 वह मुझे नफ़रत के अलफ़ाज़ से घेरकर बिलावजह मुझसे लड़े हैं।
4 मेरी मुहब्बत के जवाब में वह मुझ पर अपनी दुश्मनी का इज़हार करते हैं। लेकिन दुआ ही मेरा सहारा है।
5 मेरी नेकी के एवज़ वह मुझे नुक़सान पहुँचाते और मेरे प्यार के बदले मुझसे नफ़रत करते हैं।

6 ऐ अल्लाह, किसी बेदीन को मुक़र्रर कर जो मेरे दुश्मन के ख़िलाफ़ गवाही दे, कोई मुख़ालिफ़ उसके दहने हाथ
खड़ा हो जाए जो उस पर इलज़ाम लगाए।
7 मुक़दमे में उसे मुजरिम ठहराया जाए। उस की दुआएँ भी उसके गुनाहों में शुमार की जाएँ।
8 उस की ज़िंदगी मुख़तसर हो, कोई और उस की ज़िम्मादारी उठाए।
9 उस की औलाद यतीम और उस की बीवी बेवा बन जाए।
10 उसके बच्चे आवारा फिरें और भीक माँगने पर मजबूर हो जाएँ। उन्हें उनके तबाहशुदा घरों से निकलकर इधर
उधर रोटी ढूँडनी पड़े।
11 जिससे उसने क़र्ज़ा लिया था वह उसके तमाम माल पर क़ब्ज़ा करे, और अजनबी उस की मेहनत का फल लूट
लें।

12 कोई न हो जो उस पर मेहरबानी करे या उसके यतीमों पर रहम करे।
13 उस की औलाद को मिटाया जाए, अगली पुश्त में उनका नामो-निशान तक न रहे।
14 रब उसके बापदादा की नाइनसाफ़ी का लिहाज़ करे, और वह उस की माँ की ख़ता भी दरगुज़र न करे।
15 उनका बुरा किरदार रब के सामने रहे, और वह उनकी याद रूए-ज़मीन पर से मिटा डाले।
16 क्योंकि उसको कभी मेहरबानी करने का ख़याल न आया बल्कि वह मुसीबतज़दा, मुहताज और शिकस्तादिल
का ताक़्क़ुब करता रहा ताकि उसे मार डाले।
17 उसे लानत करने का शौक़ था, चुनाँचे लानत उसी पर आए! उसे बरकत देना पसंद नहीं था, चुनाँचे बरकत
उससे दूर रहे।
18 उसने लानत चादर की तरह ओढ़ ली, चुनाँचे लानत पानी की तरह उसके जिस्म में और तेल की तरह उस की
हड्डियों में सरायत कर जाए।
19 वह कपड़े की तरह उससे लिपटी रहे, पटके की तरह हमेशा उससे कमरबस्ता रहे।

20 रब मेरे मुख़ालिफ़ों को और उन्हें जो मेरे ख़िलाफ़ बुरी बातें करते हैं यही सज़ा दे।
21 लेकिन तू ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, अपने नाम की ख़ातिर मेरे साथ मेहरबानी का सुलूक कर। मुझे बचा, क्योंकि
तेरी ही शफ़क़त तसल्लीबख़्श है।
22 क्योंकि मैं मुसीबतज़दा और ज़रूरतमंद हूँ। मेरा दिल मेरे अंदर मजरूह है।
23 शाम के ढलते साये की तरह मैं ख़त्म होनेवाला हूँ। मुझे टिड्डी की तरह झाड़कर दूर कर दिया गया है।
24 रोज़ा रखते रखते मेरे घुटने डगमगाने लगे और मेरा जिस्म सूख गया है।
25 मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ। मुझे देखकर वह सर हिलाकर “तौबा तौबा” कहते हैं।
26 ऐ रब मेरे ख़ुदा, मेरी मदद कर! अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मुझे छुड़ा!
27 उन्हें पता चले कि यह तेरे हाथ से पेश आया है, कि तू रब ही ने यह सब कुछ किया है।
28 जब वह लानत करें तो मुझे बरकत दे! जब वह मेरे ख़िलाफ़ उठें तो बख़्श दे कि शरमिंदा हो जाएँ जबकि तेरा
ख़ादिम ख़ुश हो।
29 मेरे मुख़ालिफ़ रुसवाई से मुलब्बस हो जाएँ, उन्हें शरमिंदगी की चादर ओढ़नी पड़े।

30 मैं ज़ोर से रब की सताइश करूँगा, बहुतों के दरमियान उस की हम्द करूँगा।
31 क्योंकि वह मुहताज के दहने हाथ खड़ा रहता है ताकि उसे उनसे बचाए जो उसे मुजरिम ठहराते हैं।

110

अबदी बादशाह और इमाम
1 दाऊद का ज़बूर।
रब ने मेरे रब से कहा, “मेरे दहने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।”
2 रब सिय्यून से तेरी सलतनत की सरहद्दें बढ़ाकर कहेगा, “आस-पास के दुश्मनों पर हुकूमत कर!”
3 जिस दिन तू अपनी फ़ौज को खड़ा करेगा तेरी क़ौम ख़ुशी से तेरे पीछे हो लेगी। तू मुक़द्दस शानो-शौकत से आरास्ता
होकर तुलूए-सुबह के बातिन से अपनी जवानी की ओस पाएगा।

4 रब ने क़सम खाई है और इससे पछताएगा नहीं, “तू अबद तक इमाम है, ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क़ था।”
5 रब तेरे दहने हाथ पर रहेगा और अपने ग़ज़ब के दिन दीगर बादशाहों को चूर चूर करेगा।
6 वह क़ौमों में अदालत करके मैदान को लाशों से भर देगा और दूर तक सरों को पाश पाश करेगा।
7 रास्ते में वह नदी से पानी पी लेगा, इसलिए अपना सर उठाए फिरेगा।

111

अल्लाह के फ़ज़ल की तमजीद
1 रब की हम्द हो! मैं पूरे दिल से दियानतदारों की मजलिस और जमात में रब का शुक्र करूँगा।
2 रब के काम अज़ीम हैं। जो उनसे लुत्फ़अंदोज़ होते हैं वह उनका ख़ूब मुतालआ करते हैं।

3 उसका काम शानदार और जलाली है, उस की रास्ती अबद तक क़ायम रहती है।

4 वह अपने मोजिज़े याद कराता है। रब मेहरबान और रहीम है।
5 जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं उन्हें उसने ख़ुराक मुहैया की है। वह हमेशा तक अपने अहद का ख़याल रखेगा।
6 उसने अपनी क़ौम को अपने ज़बरदस्त कामों का एलान करके कहा, "मैं तुम्हें ग़ैरक़ौमों की मीरास अता करूँगा।"
7 जो भी काम उसके हाथ करें वह सच्चे और रास्त हैं। उसके तमाम अहकाम क़ाबिले-एतमाद हैं।
8 वह अज़ल से अबद तक क़ायम हैं, और उन पर सच्चाई और दियानतदारी से अमल करना है।
9 उसने अपनी क़ौम का फ़िद्या भेजकर उसे छुड़ाया है। उसने फ़रमाया, "मेरा क़ौम के साथ अहद अबद तक क़ायम
रहे।" उसका नाम क़ुद्दूस और पुरजलाल है।
10 हिकमत इससे शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़ मानें। जो भी उसके अहकाम पर अमल करे उसे अच्छी समझ
हासिल होगी। उस की हम्द हमेशा तक क़ायम रहेगी।

112

अल्लाह के ख़ौफ़ की तारीफ़

1 रब की हम्द हो! मुबारक है वह जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और उसके अहकाम से बहुत लुत्फ़अंदोज़ होता है।
2 उसके फ़रज़ंद मुल्क में ताक़तवर होंगे, और दियानतदार की नसल को बरकत मिलेगी।
3 दौलत और ख़ुशहाली उसके घर में रहेगी, और उस की रास्तबाज़ी अबद तक क़ायम रहेगी।
4 अंधेरे में चलते वक़्त दियानतदारों पर रौशनी चमकती है। वह रास्तबाज़, मेहरबान और रहीम है।

5 मेहरबानी करना और क़र्ज़ देना बा-बरकत है। जो अपने मामलों को इनसाफ़ से हल करे वह अच्छा करेगा,
6 क्योंकि वह अबद तक नहीं डगमगाएगा। रास्तबाज़ हमेशा ही याद रहेगा।
7 वह बुरी ख़बर मिलने से नहीं डरता। उसका दिल मज़बूत है, और वह रब पर भरोसा रखता है।
8 उसका दिल मुस्तहकम है। वह सहमा हुआ नहीं रहता, क्योंकि वह जानता है कि एक दिन मैं अपने दुश्मनों की
शिकस्त देखकर ख़ुश हूँगा।
9 वह फ़ैयाज़ी से ज़रूरतमंदों में ख़ैरात बिखेर देता है। उस की रास्तबाज़ी हमेशा क़ायम रहेगी, और उसे इज़्ज़त के
साथ सरफ़राज़ किया जाएगा।
10 बेदीन यह देखकर नाराज़ हो जाएगा, वह दाँत पीस पीसकर नेस्त हो जाएगा। जो कुछ बेदीन चाहते हैं वह जाता
रहेगा।

113

अल्लाह की अज़मत और मेहरबानी

1 रब की हम्द हो! ऐ रब के ख़ादिमो, रब के नाम की सताइश करो, रब के नाम की तारीफ़ करो।
2 रब के नाम की अब से अबद तक तमजीद हो।
3 तुलूए-सुबह से ग़ुरूबे-आफ़ताब तक रब के नाम की हम्द हो।
4 रब तमाम अक़वाम से सरबुलंद है, उसका जलाल आसमान से अज़ीम है।
5 कौन रब हमारे ख़ुदा की मानिंद है जो बुलंदियों पर तख़्तनशीन है
6 और आसमानो-ज़मीन को देखने के लिए नीचे झुकता है?
7 पस्तहाल को वह ख़ाक में से उठाकर पाँवों पर खड़ा करता, मुहताज को राख से निकालकर सरफ़राज़ करता है।
8 वह उसे शुरफ़ा के साथ, अपनी क़ौम के शुरफ़ा के साथ बिठा देता है।
9 बाँझ को वह औलाद अता करता है ताकि वह घर में ख़ुशी से ज़िंदगी गुज़ार सके। रब की हम्द हो!

114

मिसर में अल्लाह के मोजिज़ात

1 जब इसराईल मिसर से रवाना हुआ और याक़ूब का घराना अजनबी ज़बान बोलनेवाली क़ौम से निकल आया
2 तो यहूदाह अल्लाह का मक़दिस बन गया और इसराईल उस की बादशाही।
3 यह देखकर समुंदर भाग गया और दरियाए-यरदन पीछे हट गया।
4 पहाड़ मेंढों की तरह कूदने और पहाड़ियाँ जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगीं।

5 ऐ समुंदर, क्या हुआ कि तू भाग गया है? ऐ यरदन, क्या हुआ कि तू पीछे हट गया है?

6 ऐ पहाड़ो, क्या हुआ कि तुम मेंढों की तरह कूदने लगे हो? ऐ पहाड़ियो, क्या हुआ कि तुम जवान भेड़-बकरियों
की तरह फाँदने लगी हो?
7 ऐ ज़मीन, रब के हुज़ूर, याक़ूब के ख़ुदा के हुज़ूर लरज़ उठ,
8 उसके सामने थरथरा जिसने चटान को जोहड़ में और सख़्त पत्थर को चश्मे में बदल दिया।

115

अल्लाह ही की हम्द हो

1 ऐ रब, हमारी हीं इज़्ज़त की ख़ातिर काम न कर बल्कि इसलिए कि तेरे नाम को जलाल मिले, इसलिए कि तू
मेहरबान और वफ़ादार ख़ुदा है।
2 दीगर अक़वाम क्यों कहें, "उनका ख़ुदा कहाँ है?"
3 हमारा ख़ुदा तो आसमान पर है, और जो जी चाहे करता है।

4 उनके बुत सोने-चाँदी के हैं, इनसान के हाथ ने उन्हें बनाया है।
5 उनके मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते। उनकी आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
6 उनके कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते, उनकी नाक है लेकिन वह सूँघ नहीं सकते।
7 उनके हाथ हैं, लेकिन वह छू नहीं सकते। उनके पाँव हैं, लेकिन वह चल नहीं सकते। उनके गले से आवाज़ नहीं
निकलती।
8 जो बुत बनाते हैं वह उनकी मानिंद हो जाएँ, जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिसो-हरकत हो जाएँ।

9 ऐ इसराईल, रब पर भरोसा रख! वही तेरा सहारा और तेरी ढाल है।
10 ऐ हारून के घराने, रब पर भरोसा रख! वही तेरा सहारा और तेरी ढाल है।
11 ऐ रब का ख़ौफ़ माननेवालो, रब पर भरोसा रखो! वही तुम्हारा सहारा और तुम्हारी ढाल है।

12 रब ने हमारा ख़याल किया है, और वह हमें बरकत देगा। वह इसराईल के घराने को बरकत देगा, वह हारून के
घराने को बरकत देगा।
13 वह रब का ख़ौफ़ माननेवालों को बरकत देगा, ख़ाह छोटे हों या बड़े।
14 रब तुम्हारी तादाद में इज़ाफ़ा करे, तुम्हारी भी और तुम्हारी औलाद की भी।
15 रब जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है तुम्हें बरकत से मालामाल करे।
16 आसमान तो रब का है, लेकिन ज़मीन को उसने आदमज़ादों को बख़्श दिया है।
17 ऐ रब, मुरदे तेरी सताइश नहीं करते, ख़ामोशी के मुल्क में उतरनेवालों में से कोई भी तेरी तमजीद नहीं करता।
18 लेकिन हम रब की सताइश अब से अबद तक करेंगे। रब की हम्द हो!

116

मौत से नजात पर शुक्रगुज़ारी

1 मैं रब से मुहब्बत रखता हूँ, क्योंकि उसने मेरी आवाज़ और मेरी इल्तिजा सुनी है।
2 उसने अपना कान मेरी तरफ़ झुकाया है, इसलिए मैं उम्र-भर उसे पुकारूँगा।

3 मौत ने मुझे अपनी ज़ंजीरों में जकड़ लिया, और पाताल की परेशानियाँ मुझ पर ग़ालिब आईं। मैं मुसीबत और
दुख में फँस गया।
4 तब मैंने रब का नाम पुकारा, "ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा!"
5 रब मेहरबान और रास्त है, हमारा ख़ुदा रहीम है।
6 रब सादा लोगों की हिफ़ाज़त करता है। जब मैं पस्तहाल था तो उसने मुझे बचाया।
7 ऐ मेरी जान, अपनी आरामगाह के पास वापस आ, क्योंकि रब ने तेरे साथ भलाई की है।
8 क्योंकि ऐ रब, तूने मेरी जान को मौत से, मेरी आँखों को आँसू बहाने से और मेरे पाँवों को फिसलने से बचाया है।
9 अब मैं ज़िंदों की ज़मीन में रहकर रब के हुज़ूर चलूँगा।
10 मैं ईमान लाया और इसलिए बोला, "मैं शदीद मुसीबत में फँस गया हूँ।"
11 मैं सख़्त घबरा गया और बोला, "तमाम इनसान दरोग़गो हैं।"

12 जो भलाइयाँ रब ने मेरे साथ की हैं उन सबके एवज़ मैं क्या दूँ?
13 मैं नजात का प्याला उठाकर रब का नाम पुकारूँगा।
14 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

15 रब की निगाह में उसके ईमानदारों की मौत गिराँक़दर है।
16 ऐ रब, यक़ीनन मैं तेरा ख़ादिम, हाँ तेरा ख़ादिम और तेरी ख़ादिमा का बेटा हूँ। तूने मेरी ज़ंजीरों को तोड़ डाला है।
17 मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी पेश करके तेरा नाम पुकारूँगा।
18 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।
19 मैं रब के घर की बारगाहों में, ऐ यरूशलम तेरे बीच में ही उन्हें पूरा करूँगा। रब की हम्द हो।

117

तमाम अक़वाम अल्लाह की हम्द करें

1 ऐ तमाम अक़वाम, रब की तमजीद करो! ऐ तमाम उम्मतो, उस की मद्हसराई करो!
2 क्योंकि उस की हम पर शफ़क़त अज़ीम है, और रब की वफ़ादारी अबदी है। रब की हम्द हो!

118

अल्लाह की मदद पर शुक्रगुज़ारी

1 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
2 इसराईल कहे, "उस की शफ़क़त अबदी है।"
3 हारून का घराना कहे, "उस की शफ़क़त अबदी है।"
4 रब का ख़ौफ़ माननेवाले कहें, "उस की शफ़क़त अबदी है।"

5 मुसीबत में मैंने रब को पुकारा तो रब ने मेरी सुनकर मेरे पाँवों को खुले मैदान में क़ायम कर दिया है।
6 रब मेरे हक़ में है, इसलिए मैं नहीं डरूँगा। इनसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?
7 रब मेरे हक़ में है और मेरा सहारा है, इसलिए मैं उनकी शिकस्त देखकर ख़ुश हूँगा जो मुझसे नफ़रत करते हैं।

8 रब में पनाह लेना इनसान पर एतमाद करने से कहीं बेहतर है।
9 रब में पनाह लेना शुरफ़ा पर एतमाद करने से कहीं बेहतर है।

10 तमाम अक़वाम ने मुझे घेर लिया, लेकिन मैंने अल्लाह का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।
11 उन्होंने मुझे घेर लिया, हाँ चारों तरफ़ से घेर लिया, लेकिन मैंने अल्लाह का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।
12 वह शहद की मक्खियों की तरह चारों तरफ़ से मुझ पर हमलाआवर हुए, लेकिन काँटेदार झाड़ियों की आग
की तरह जल्द ही बुझ गए। मैंने रब का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।
13 दुश्मन ने मुझे धक्का देकर गिराने की कोशिश की, लेकिन रब ने मेरी मदद की।
14 रब मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है।

15 ख़ुशी और फ़तह के नारे रास्तबाज़ों के ख़ैमों में गूँजते हैं, "रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है!
16 रब का दहना हाथ सरफ़राज़ करता है, रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है!"
17 मैं नहीं मरूँगा बल्कि ज़िंदा रहकर रब के काम बयान करूँगा।
18 गो रब ने मेरी सख़्त तादीब की है, उसने मुझे मौत के हवाले नहीं किया।

19 रास्ती के दरवाज़े मेरे लिए खोल दो ताकि मैं उनमें दाख़िल होकर रब का शुक्र करूँ।
20 यह रब का दरवाज़ा है, इसी में रास्तबाज़ दाख़िल होते हैं।

21 मैं तेरा शुक्र करता हूँ, क्योंकि तूने मेरी सुनकर मुझे बचाया है।
22 जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।
23 यह रब ने किया और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है।

24 इसी दिन रब ने अपनी क़ुदरत दिखाई है। आओ, हम शादियाना बजाकर उस की ख़ुशी मनाएँ।
25 ऐ रब, मेहरबानी करके हमें बचा! ऐ रब, मेहरबानी करके कामयाबी अता फ़रमा!

26 मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। रब की सुकूनतगाह से हम तुम्हें बरकत देते हैं।
27 रब ही ख़ुदा है, और उसने हमें रौशनी बख़्शी है। आओ, ईद की क़ुरबानी रस्सियों से क़ुरबानगाह के सींगों के
साथ बान्धो।

28 तू मेरा ख़ुदा है, और मैं तेरा शुक्र करता हूँ। ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करता हूँ।
29 रब की सताइश करो, क्योंकि वह भला है और उस की शफ़क़त अबदी है।

119

अल्लाह के कलाम की शान

1

1 मुबारक हैं वह जिनका चाल-चलन बेइलज़ाम है, जो रब की शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं।
2 मुबारक हैं वह जो उसके अहकाम पर अमल करते और पूरे दिल से उसके तालिब रहते हैं,
3 जो बदी नहीं करते बल्कि उस की राहों पर चलते हैं।
4 तूने हमें अपने अहकाम दिए हैं, और तू चाहता है कि हम हर लिहाज़ से उनके ताबे रहें।
5 काश मेरी राहें इतनी पुख़्ता हों कि मैं साबितक़दमी से तेरे अहकाम पर अमल करूँ!
6 तब मैं शरमिंदा नहीं हूँगा, क्योंकि मेरी आँखें तेरे तमाम अहकाम पर लगी रहेंगी।
7 जितना मैं तेरे बा-इनसाफ़ फ़ैसलों के बारे में सीखूँगा उतना ही दियानतदार दिल से तेरी सताइश करूँगा।
8 तेरे अहकाम पर मैं हर वक़्त अमल करूँगा। मुझे पूरी तरह तर्क न कर!

2

9 नौजवान अपनी राह को किस तरह पाक रखे? इस तरह कि तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे।
10 मैं पूरे दिल से तेरा तालिब रहा हूँ। मुझे अपने अहकाम से भटकने न दे।
11 मैंने तेरा कलाम अपने दिल में महफ़ूज़ रखा है ताकि तेरा गुनाह न करूँ।
12 ऐ रब, तेरी हम्द हो! मुझे अपने अहकाम सिखा।
13 अपने होंटों से मैं दूसरों को तेरे मुँह की तमाम हिदायात सुनाता हूँ।
14 मैं तेरे अहकाम की राह से उतना लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ जितना कि हर तरह की दौलत से।
15 मैं तेरी हिदायात में महवे-ख़याल रहूँगा और तेरी राहों को तकता रहूँगा।
16 मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ और तेरा कलाम नहीं भूलता।

3

17 अपने ख़ादिम से भलाई कर ताकि मैं ज़िंदा रहूँ और तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूँ।
18 मेरी आँखों को खोल ताकि तेरी शरीअत के अजायब देखूँ।
19 दुनिया में मैं परदेसी ही हूँ। अपने अहकाम मुझसे छुपाए न रख!
20 मेरी जान हर वक़्त तेरी हिदायात की आरज़ू करते करते निढाल हो रही है।
21 तू मग़रूरों को डाँटता है। उन पर लानत जो तेरे अहकाम से भटक जाते हैं!
22 मुझे लोगों की तौहीन और तहक़ीर से रिहाई दे, क्योंकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहा हूँ।
23 गो बुज़ुर्ग मेरे ख़िलाफ़ मनसूबे बाँधने के लिए बैठ गए हैं, तेरा ख़ादिम तेरे अहकाम में महवे-ख़याल रहता है।
24 तेरे अहकाम से ही मैं लुत्फ़ उठाता हूँ, वही मेरे मुशीर हैं।

4

25 मेरी जान ख़ाक में दब गई है। अपने कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
26 मैंने अपनी राहें बयान कीं तो तूने मेरी सुनी। मुझे अपने अहकाम सिखा।
27 मुझे अपने अहकाम की राह समझने के क़ाबिल बना ताकि तेरे अजायब में महवे-ख़याल रहूँ।
28 मेरी जान दुख के मारे निढाल हो गई है। मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ तक़वियत दे।
29 फ़रेब की राह मुझसे दूर रख और मुझे अपनी शरीअत से नवाज़।
30 मैंने वफ़ा की राह इख़्तियार करके तेरे आईन अपने सामने रखे हैं।

31 मैं तेरे अहकाम से लिपटा रहता हूँ। ऐ रब, मुझे शरमिंदा न होने दे।
32 मैं तेरे फ़रमानों की राह पर दौड़ता हूँ, क्योंकि तूने मेरे दिल को कुशादगी बख़्शी है।

5

33 ऐ रब, मुझे अपने आईन की राह सिखा तो मैं उम्र-भर उन पर अमल करूँगा।
34 मुझे समझ अता कर ताकि तेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूँ और पूरे दिल से उसके ताबे रहूँ।
35 अपने अहकाम की राह पर मेरी राहनुमाई कर, क्योंकि यही मैं पसंद करता हूँ।
36 मेरे दिल को लालच में आने न दे बल्कि उसे अपने फ़रमानों की तरफ़ मायल कर।
37 मेरी आँखों को बातिल चीज़ों से फेर ले, और मुझे अपनी राहों पर सँभालकर मेरी जान को ताज़ादम कर।
38 जो वादा तूने अपने ख़ादिम से किया वह पूरा कर ताकि लोग तेरा ख़ौफ़ मानें।
39 जिस रुसवाई से मुझे ख़ौफ़ है उसका ख़तरा दूर कर, क्योंकि तेरे अहकाम अच्छे हैं।
40 मैं तेरी हिदायात का शदीद आरज़ूमंद हूँ, अपनी रास्ती से मेरी जान को ताज़ादम कर।

6

41 ऐ रब, तेरी शफ़क़त और वह नजात जिसका वादा तूने किया है मुझ तक पहुँचे
42 ताकि मैं बेइज़्ज़ती करनेवाले को जवाब दे सकूँ। क्योंकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा रखता हूँ।
43 मेरे मुँह से सच्चाई का कलाम न छीन, क्योंकि मैं तेरे फ़रमानों के इंतज़ार में हूँ।
44 मैं हर वक़्त तेरी शरीअत की पैरवी करूँगा, अब से अबद तक उसमें क़ायम रहूँगा।
45 मैं खुले मैदान में चलता फिरूँगा, क्योंकि तेरे आईन का तालिब रहता हूँ।
46 मैं शर्म किए बग़ैर बादशाहों के सामने तेरे अहकाम बयान करूँगा।
47 मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ, वह मुझे प्यारे हैं।
48 मैं अपने हाथ तेरे फ़रमानों की तरफ़ उठाऊँगा, क्योंकि वह मुझे प्यारे हैं। मैं तेरी हिदायात में महवे-ख़याल रहूँगा।

7

49 उस बात का ख़याल रख जो तूने अपने ख़ादिम से की और जिससे तूने मुझे उम्मीद दिलाई है।
50 मुसीबत में यही तसल्ली का बाइस रहा है कि तेरा कलाम मेरी जान को ताज़ादम करता है।
51 मग़रूर मेरा हद से ज़्यादा मज़ाक़ उड़ाते हैं, लेकिन मैं तेरी शरीअत से दूर नहीं होता।
52 ऐ रब, मैं तेरे क़दीम फ़रमान याद करता हूँ तो मुझे तसल्ली मिलती है।
53 बेदीनों को देखकर मैं आग-बगूला हो जाता हूँ, क्योंकि उन्होंने तेरी शरीअत को तर्क किया है।
54 जिस घर में मैं परदेसी हूँ उसमें मैं तेरे अहकाम के गीत गाता रहता हूँ।
55 ऐ रब, रात को मैं तेरा नाम याद करता हूँ, तेरी शरीअत पर अमल करता रहता हूँ।
56 यह तेरी बख़्शिश है कि मैं तेरे आईन की पैरवी करता हूँ।

8

57 रब मेरी मीरास है। मैंने तेरे फ़रमानों पर अमल करने का वादा किया है।
58 मैं पूरे दिल से तेरी शफ़क़त का तालिब रहा हूँ। अपने वादे के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर।
59 मैंने अपनी राहों पर ध्यान देकर तेरे अहकाम की तरफ़ क़दम बढ़ाए हैं।
60 मैं नहीं झिजकता बल्कि भागकर तेरे अहकाम पर अमल करने की कोशिश करता हूँ।
61 बेदीनों के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया है, लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
62 आधी रात को मैं जाग उठता हूँ ताकि तेरे रास्त फ़रमानों के लिए तेरा शुक्र करूँ।
63 मैं उन सबका साथी हूँ जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उन सबका दोस्त जो तेरी हिदायात पर अमल करते हैं।
64 ऐ रब, दुनिया तेरी शफ़क़त से मामूर है। मुझे अपने अहकाम सिखा!

9

65 ऐ रब, तूने अपने कलाम के मुताबिक़ अपने ख़ादिम से भलाई की है।
66 मुझे सहीह इम्तियाज़ और इरफ़ान सिखा, क्योंकि मैं तेरे अहकाम पर ईमान रखता हूँ।
67 इससे पहले कि मुझे पस्त किया गया मैं आवारा फिरता था, लेकिन अब मैं तेरे कलाम के ताबे रहता हूँ।
68 तू भला है और भलाई करता है। मुझे अपने आईन सिखा!
69 मग़रूरों ने झूट बोलकर मुझ पर कीचड़ उछाली है, लेकिन मैं पूरे दिल से तेरी हिदायात की फ़रमाँबरदारी करता
हूँ।

70 उनके दिल अकड़कर बेहिस हो गए हैं, लेकिन मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
71 मेरे लिए अच्छा था कि मुझे पस्त किया गया, क्योंकि इस तरह मैंने तेरे अहकाम सीख लिए।
72 जो शरीअत तेरे मुँह से सादिर हुई है वह मुझे सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से ज़्यादा पसंद है।

10

73 तेरे हाथों ने मुझे बनाकर मज़बूत बुनियाद पर रख दिया है। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि तेरे अहकाम सीख लूँ।
74 जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं वह मुझे देखकर ख़ुश हो जाएँ, क्योंकि मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में रहता हूँ।
75 ऐ रब, मैंने जान लिया है कि तेरे फ़ैसले रास्त हैं। यह भी तेरी वफ़ादारी का इज़हार है कि तूने मुझे पस्त किया है।
76 तेरी शफ़क़त मुझे तसल्ली दे, जिस तरह तूने अपने ख़ादिम से वादा किया है।
77 मुझ पर अपने रहम का इज़हार कर ताकि मेरी जान में जान आए, क्योंकि मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
78 जो मग़रूर मुझे झूट से पस्त कर रहे हैं वह शरमिंदा हो जाएँ। लेकिन मैं तेरे फ़रमानों में महवे-ख़याल रहूँगा।
79 काश जो तेरा ख़ौफ़ मानते और तेरे अहकाम जानते हैं वह मेरे पास वापस आएँ!
80 मेरा दिल तेरे आईन की पैरवी करने में बेइलज़ाम रहे ताकि मेरी रुसवाई न हो जाए।

11

81 मेरी जान तेरी नजात की आरज़ू करते करते निढाल हो रही है, मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में हूँ।
82 मेरी आँखें तेरे वादे की राह देखते देखते धुँधला रही हैं। तू मुझे कब तसल्ली देगा?
83 मैं धुएँ में सुकड़ी हुई मशक की मानिंद हूँ लेकिन तेरे फ़रमानों को नहीं भूलता।
84 तेरे ख़ादिम को मज़ीद कितनी देर इंतज़ार करना पड़ेगा? तू मेरा ताक़्क़ुब करनेवालों की अदालत कब करेगा?
85 जो मग़रूर तेरी शरीअत के ताबे नहीं होते उन्होंने मुझे फँसाने के लिए गढ़े खोद लिए हैं।
86 तेरे तमाम अहकाम पुरवफ़ा हैं। मेरी मदद कर, क्योंकि वह झूट का सहारा लेकर मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं।
87 वह मुझे रूए-ज़मीन पर से मिटाने के क़रीब ही हैं, लेकिन मैंने तेरे आईन को तर्क नहीं किया।
88 अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मेरी जान को ताज़ादम कर ताकि तेरे मुँह के फ़रमानों पर अमल करूँ।

12

89 ऐ रब, तेरा कलाम अबद तक आसमान पर क़ायमो-दायम है।
90 तेरी वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त रहती है। तूने ज़मीन की बुनियाद रखी, और वह वहीं की वहीं बरक़रार रहती है।
91 आज तक आसमानो-ज़मीन तेरे फ़रमानों को पूरा करने के लिए हाज़िर रहते हैं, क्योंकि तमाम चीज़ें तेरी ख़िदमत करने के लिए बनाई गई हैं।
92 अगर तेरी शरीअत मेरी ख़ुशी न होती तो मैं अपनी मुसीबत में हलाक हो गया होता।
93 मैं तेरी हिदायात कभी नहीं भूलूँगा, क्योंकि उन्हीं के ज़रीए तू मेरी जान को ताज़ादम करता है।
94 मैं तेरा ही हूँ, मुझे बचा! क्योंकि मैं तेरे अहकाम का तालिब रहा हूँ।
95 बेदीन मेरी ताक में बैठ गए हैं ताकि मुझे मार डालें, लेकिन मैं तेरे आईन पर ध्यान देता रहूँगा।
96 मैंने देखा है कि हर कामिल चीज़ की हद होती है, लेकिन तेरे फ़रमान की कोई हद नहीं होती।

13

97 तेरी शरीअत मुझे कितनी प्यारी है! दिन-भर मैं उसमें महवे-ख़याल रहता हूँ।
98 तेरा फ़रमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज़्यादा दानिशमंद बना देता है, क्योंकि वह हमेशा तक मेरा ख़ज़ाना है।
99 मुझे अपने तमाम उस्तादों से ज़्यादा समझ हासिल है, क्योंकि मैं तेरे आईन में महवे-ख़याल रहता हूँ।
100 मुझे बुज़ुर्गों से ज़्यादा समझ हासिल है, क्योंकि मैं वफ़ादारी से तेरे अहकाम की पैरवी करता हूँ।
101 मैंने हर बुरी राह पर क़दम रखने से गुरेज़ किया है ताकि तेरे कलाम से लिपटा रहूँ।
102 मैं तेरे फ़रमानों से दूर नहीं हुआ, क्योंकि तू ही ने मुझे तालीम दी है।
103 तेरा कलाम कितना लज़ीज़ है, वह मेरे मुँह में शहद से ज़्यादा मीठा है।
104 तेरे अहकाम से मुझे समझ हासिल होती है, इसलिए मैं झूट की हर राह से नफ़रत करता हूँ।

14

105 तेरा कलाम मेरे पाँवों के लिए चराग़ है जो मेरी राह को रौशन करता है।
106 मैंने क़सम खाई है कि तेरे रास्त फ़रमानों की पैरवी करूँगा, और मैं यह वादा पूरा भी करूँगा।
107 मुझे बहुत पस्त किया गया है। ऐ रब, अपने कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।

108 ऐ रब, मेरे मुँह की रज़ाकाराना क़ुरबानियों को पसंद कर और मुझे अपने आईन सिखा!
109 मेरी जान हमेशा ख़तरे में है, लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
110 बेदीनों ने मेरे लिए फंदा तैयार कर रखा है, लेकिन मैं तेरे फ़रमानों से नहीं भटका।
111 तेरे अहकाम मेरी अबदी मीरास बन गए हैं, क्योंकि उनसे मेरा दिल ख़ुशी से उछलता है।
112 मैंने अपना दिल तेरे अहकाम पर अमल करने की तरफ़ मायल किया है, क्योंकि इसका अज्र अबदी है।

15
113 मैं दोदिलों से नफ़रत लेकिन तेरी शरीअत से मुहब्बत करता हूँ।
114 तू मेरी पनाहगाह और मेरी ढाल है, मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में रहता हूँ।
115 ऐ बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ, क्योंकि मैं अपने ख़ुदा के अहकाम से लिपटा रहूँगा।
116 अपने फ़रमान के मुताबिक़ मुझे सँभाल ताकि ज़िंदा रहूँ। मेरी आस टूटने न दे ताकि शरमिंदा न हो जाऊँ।
117 मेरा सहारा बन ताकि बचकर हर वक़्त तेरे आईन का लिहाज़ रखूँ।
118 तू उन सबको रद्द करता है जो तेरे अहकाम से भटके फिरते हैं, क्योंकि उनकी धोकेबाज़ी फ़रेब ही है।
119 तू ज़मीन के तमाम बेदीनों को नापाक चाँदी से ख़ारिज की हुई मैल की तरह फेंककर नेस्त कर देता है, इसलिए
तेरे फ़रमान मुझे प्यारे हैं।
120 मेरा जिस्म तुझसे दहशत खाकर थरथराता है, और मैं तेरे फ़ैसलों से डरता हूँ।

16
121 मैंने रास्त और बा-इनसाफ़ काम किया है, चुनाँचे मुझे उनके हवाले न कर जो मुझ पर ज़ुल्म करते हैं।
122 अपने ख़ादिम की ख़ुशहाली का ज़ामिन बनकर मग़रूरों को मुझ पर ज़ुल्म करने न दे।
123 मेरी आँखें तेरी नजात और तेरे रास्त वादे की राह देखते देखते रह गई हैं।
124 अपने ख़ादिम से तेरा सुलूक तेरी शफ़क़त के मुताबिक़ हो। मुझे अपने अहकाम सिखा।
125 मैं तेरा ही ख़ादिम हूँ। मुझे फ़हम अता फ़रमा ताकि तेरे आईन की पूरी समझ आए।
126 अब वक़्त आ गया है कि रब क़दम उठाए, क्योंकि लोगों ने तेरी शरीअत को तोड़ डाला है।
127 इसलिए मैं तेरे अहकाम को सोने बल्कि ख़ालिस सोने से ज़्यादा प्यार करता हूँ।
128 इसलिए मैं एहतियात से तेरे तमाम आईन के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। मैं हर फ़रेबदेह राह से नफ़रत करता
हूँ।

17
129 तेरे अहकाम ताज्जुबअंगेज़ हैं, इसलिए मेरी जान उन पर अमल करती है।
130 तेरे कलाम का इनकिशाफ़ रौशनी बख़्शता और सादालौह को समझ अता करता है।
131 मैं तेरे फ़रमानों के लिए इतना प्यासा हूँ कि मुँह खोलकर हाँप रहा हूँ।
132 मेरी तरफ़ रुजू फ़रमा और मुझ पर वही मेहरबानी कर जो तू उन सब पर करता है जो तेरे नाम से प्यार करते हैं।
133 अपने कलाम से मेरे क़दम मज़बूत कर, किसी भी गुनाह को मुझ पर हुकूमत न करने दे।
134 फ़िद्या देकर मुझे इनसान के ज़ुल्म से छुटकारा दे ताकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहूँ।
135 अपने चेहरे का नूर अपने ख़ादिम पर चमका और मुझे अपने अहकाम सिखा।
136 मेरी आँखों से आँसुओं की नदियाँ बह रही हैं, क्योंकि लोग तेरी शरीअत के ताबे नहीं रहते।

18
137 ऐ रब, तू रास्त है, और तेरे फ़ैसले दुरुस्त हैं।
138 तूने रास्ती और बड़ी वफ़ादारी के साथ अपने फ़रमान जारी किए हैं।
139 मेरी जान ग़ैरत के बाइस तबाह हो गई है, क्योंकि मेरे दुश्मन तेरे फ़रमान भूल गए हैं।
140 तेरा कलाम आज़माकर पाक-साफ़ साबित हुआ है, तेरा ख़ादिम उसे प्यार करता है।
141 मुझे ज़लील और हक़ीर जाना जाता है, लेकिन मैं तेरे आईन नहीं भूलता।
142 तेरी रास्ती अबदी है, और तेरी शरीअत सच्चाई है।
143 मुसीबत और परेशानी मुझ पर ग़ालिब आ गई हैं, लेकिन मैं तेरे अहकाम से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
144 तेरे अहकाम अबद तक रास्त हैं। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि मैं जीता रहूँ।

19
145 मैं पूरे दिल से पुकारता हूँ, "ऐ रब, मेरी सुन! मैं तेरे आईन के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूँगा।"

146 मैं पुकारता हूँ, “मुझे बचा! मैं तेरे अहकाम की पैरवी करूँगा।”
147 पौ फटने से पहले पहले मैं उठकर मदद के लिए पुकारता हूँ। मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में हूँ।
148 रात के वक़्त ही मेरी आँखें खुल जाती हैं ताकि तेरे कलाम पर ग़ौरो-ख़ौज़ करूँ।
149 अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी आवाज़ सुन! ऐ रब, अपने फ़रमानों के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
150 जो चालाकी से मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं वह क़रीब पहुँच गए हैं। लेकिन वह तेरी शरीअत से इंतहाई दूर हैं।
151 ऐ रब, तू क़रीब ही है, और तेरे अहकाम सच्चाई हैं।
152 बड़ी देर पहले मुझे तेरे फ़रमानों से मालूम हुआ है कि तूने उन्हें हमेशा के लिए क़ायम रखा है।

20

153 मेरी मुसीबत का ख़याल करके मुझे बचा! क्योंकि मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
154 अदालत में मेरे हक़ में लड़कर मेरा एवज़ाना दे ताकि मेरी जान छूट जाए। अपने वादे के मुताबिक़ मेरी जान
को ताज़ादम कर।
155 नजात बेदीनों से बहुत दूर है, क्योंकि वह तेरे अहकाम के तालिब नहीं होते।
156 ऐ रब, तू मुतअद्दिद तरीक़ों से अपने रहम का इज़हार करता है। अपने आईन के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम
कर।
157 मेरा ताक़्क़ुब करनेवालों और मेरे दुश्मनों की बड़ी तादाद है, लेकिन मैं तेरे अहकाम से दूर नहीं हुआ।
158 बेवफ़ाओं को देखकर मुझे घिन आती है, क्योंकि वह तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारते।
159 देख, मुझे तेरे अहकाम से प्यार है। ऐ रब, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
160 तेरे कलाम का लुब्बे-लुबाब सच्चाई है, तेरे तमाम रास्त फ़रमान अबद तक क़ायम हैं।

21

161 सरदार बिलावजह मेरा पीछा करते हैं, लेकिन मेरा दिल तेरे कलाम से ही डरता है।
162 मैं तेरे कलाम की ख़ुशी उस की तरह मनाता हूँ जिसे कसरत का माले-ग़नीमत मिल गया हो।
163 मैं झूट से नफ़रत करता बल्कि घिन खाता हूँ, लेकिन तेरी शरीअत मुझे प्यारी है।
164 मैं दिन में सात बार तेरी सताइश करता हूँ, क्योंकि तेरे अहकाम रास्त हैं।
165 जिन्हें शरीअत प्यारी है उन्हें बड़ा सुकून हासिल है, वह किसी भी चीज़ से ठोकर खाकर नहीं गिरेंगे।
166 ऐ रब, मैं तेरी नजात के इंतज़ार में रहते हुए तेरे अहकाम की पैरवी करता हूँ।
167 मेरी जान तेरे फ़रमानों से लिपटी रहती है, वह उसे निहायत प्यारे हैं।
168 मैं तेरे आईन और हिदायात की पैरवी करता हूँ, क्योंकि मेरी तमाम राहें तेरे सामने हैं।

22

169 ऐ रब, मेरी आहें तेरे सामने आएँ, मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ समझ अता फ़रमा।
170 मेरी इल्तिजाएँ तेरे सामने आएँ, मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ छुड़ा!
171 मेरे होंटों से हम्दो-सना फूट निकले, क्योंकि तू मुझे अपने अहकाम सिखाता है।
172 मेरी ज़बान तेरे कलाम की मद्हसराई करे, क्योंकि तेरे तमाम फ़रमान रास्त हैं।
173 तेरा हाथ मेरी मदद करने के लिए तैयार रहे, क्योंकि मैंने तेरे अहकाम इख़्तियार किए हैं।
174 ऐ रब, मैं तेरी नजात का आरज़ूमंद हूँ, तेरी शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
175 मेरी जान ज़िंदा रहे ताकि तेरी सताइश कर सके। तेरे आईन मेरी मदद करें।
176 मैं भटकी हुई भेड़ की तरह आवारा फिर रहा हूँ। अपने ख़ादिम को तलाश कर, क्योंकि मैं तेरे अहकाम नहीं
भूलता।

120

तोहमत लगानेवालों से रिहाई के लिए दुआ

1 ज़ियारत का गीत।
मुसीबत में मैंने रब को पुकारा, और उसने मेरी सुनी।
2 ऐ रब, मेरी जान को झूटे होंटों और फ़रेबदेह ज़बान से बचा।
3 ऐ फ़रेबदेह ज़बान, वह तेरे साथ किया करे, मज़ीद तुझे क्या दे?
4 वह तुझ पर जंगजू के तेज़ तीर और दहकते कोयले बरसाए!

5 मुझ पर अफ़सोस! मुझे अजनबी मुल्क मसक में, क़ीदार के ख़ैमों के पास रहना पड़ता है।
6 इतनी देर से अमन के दुश्मनों के पास रहने से मेरी जान तंग आ गई है।
7 मैं तो अमन चाहता हूँ, लेकिन जब कभी बोलूँ तो वह जंग करने पर तुले होते हैं।

121

इनसान का वफ़ादार मुहाफ़िज़
1 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को पहाड़ों की तरफ़ उठाता हूँ। मेरी मदद कहाँ से आती है?
2 मेरी मदद रब से आती है, जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है।

3 वह तेरा पाँव फिसलने नहीं देगा। तेरा मुहाफ़िज़ ऊँघने का नहीं।
4 यक़ीनन इसराईल का मुहाफ़िज़ न ऊँघता है, न सोता है।
5 रब तेरा मुहाफ़िज़ है, रब तेरे दहने हाथ पर सायबान है।
6 न दिन को सूरज, न रात को चाँद तुझे ज़रर पहुँचाएगा।
7 रब तुझे हर नुक़सान से बचाएगा, वह तेरी जान को महफ़ूज़ रखेगा।
8 रब अब से अबद तक तेरे आने जाने की पहरादारी करेगा।

122

यरूशलम पर बरकत
1 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
मैं उनसे ख़ुश हुआ जिन्होंने मुझसे कहा, "आओ, हम रब के घर चलें।"
2 ऐ यरूशलम, अब हमारे पाँव तेरे दरवाज़ों में खड़े हैं।
3 यरूशलम शहर यों बनाया गया है कि उसके तमाम हिस्से मज़बूती से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।
4 वहाँ क़बीले, हाँ रब के क़बीले हाज़िर होते हैं ताकि रब के नाम की सताइश करें जिस तरह इसराईल को फ़रमाया
गया है।
5 क्योंकि वहाँ तख़्ते-अदालत करने के लिए लगाए गए हैं, वहाँ दाऊद के घराने के तख़्त हैं।
6 यरूशलम के लिए सलामती माँगो! "जो तुझसे प्यार करते हैं वह सुकून पाएँ।
7 तेरी फ़सील में सलामती और तेरे महलों में सुकून हो।"
8 अपने भाइयों और हमसायों की ख़ातिर मैं कहूँगा, "तेरे अंदर सलामती हो!"
9 रब हमारे ख़ुदा के घर की ख़ातिर मैं तेरी ख़ुशहाली का तालिब रहूँगा।

123

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे
1 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को तेरी तरफ़ उठाता हूँ, तेरी तरफ़ जो आसमान पर तख़्तनशीन है।
2 जिस तरह ग़ुलाम की आँखें अपने मालिक के हाथ की तरफ़ और लौंडी की आँखें अपनी मालिकन के हाथ की
तरफ़ लगी रहती हैं उसी तरह हमारी आँखें रब अपने ख़ुदा पर लगी रहती हैं, जब तक वह हम पर मेहरबानी न करे।
3 ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर, हम पर मेहरबानी कर! क्योंकि हम हद से ज़्यादा हिक़ारत का निशाना बन गए हैं।
4 सुकून से ज़िंदगी गुज़ारनेवालों की लान-तान और मग़रूरों की तहक़ीर से हमारी जान दूभर हो गई है।

124

मुसीबत में अल्लाह हमारा सहारा है
1 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
इसराईल कहे, "अगर रब हमारे साथ न होता,
2 अगर रब हमारे साथ न होता जब लोग हमारे ख़िलाफ़ उठे
3 और आग-बगूला होकर अपना पूरा ग़ुस्सा हम पर उतारा, तो वह हमें ज़िंदा हड़प कर लेते।
4 फिर सैलाब हम पर टूट पड़ता, नदी का तेज़ धारा हम पर ग़ालिब आ जाता

5 और मुतलातिम पानी हम पर से गुज़र जाता।"
6 रब की हम्द हो जिसने हमें उनके दाँतों के हवाले न किया, वरना वह हमें फाड़ खाते।
7 हमारी जान उस चिड़िया की तरह छूट गई है जो चिड़ीमार के फंदे से निकलकर उड़ गई है। फंदा टूट गया है,
और हम बच निकले हैं।
8 रब का नाम, हाँ उसी का नाम हमारा सहारा है जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है।

125

चारों तरफ़ से क़ौम की हिफ़ाज़त
1 ज़ियारत का गीत।
जो रब पर भरोसा रखते हैं वह कोहे-सिय्यून की मानिंद हैं जो कभी नहीं डगमगाता बल्कि अबद तक क़ायम रहता है।
2 जिस तरह यरूशलम पहाड़ों से घिरा रहता है उसी तरह रब अपनी क़ौम को अब से अबद तक चारों तरफ़ से
महफ़ूज़ रखता है।
3 क्योंकि बेदीनों की रास्तबाज़ों की मीरास पर हुकूमत नहीं रहेगी, ऐसा न हो कि रास्तबाज़ बदकारी करने की
आज़माइश में पड़ जाएँ।
4 ऐ रब, उनसे भलाई कर जो नेक हैं, जो दिल से सीधी राह पर चलते हैं।
5 लेकिन जो भटककर अपनी टेढ़ी-मेढ़ी राहों पर चलते हैं उन्हें रब बदकारों के साथ ख़ारिज कर दे। इसराईल की
सलामती हो!

126

रब अपने क़ैदियों को रिहाई देता है
1 ज़ियारत का गीत।
जब रब ने सिय्यून को बहाल किया तो ऐसा लग रहा था कि हम ख़ाब देख रहे हैं।
2 तब हमारा मुँह हँसी-ख़ुशी से भर गया, और हमारी ज़बान शादमानी के नारे लगाने से रुक न सकी। तब दीगर क़ौमों
में कहा गया, "रब ने उनके लिए ज़बरदस्त काम किया है।"
3 रब ने वाक़ई हमारे लिए ज़बरदस्त काम किया है। हम कितने ख़ुश थे, कितने ख़ुश!

4 ऐ रब, हमें बहाल कर। जिस तरह मौसमे-बरसात में दश्ते-नजब के ख़ुश्क नाले पानी से भर जाते हैं उसी तरह हमें
बहाल कर।
5 जो आँसू बहा बहाकर बीज बोएँ वह ख़ुशी के नारे लगाकर फ़सल काटेंगे।
6 वह रोते हुए बीज बोने के लिए निकलेंगे, लेकिन जब फ़सल पक जाए तो ख़ुशी के नारे लगाकर पूले उठाए अपने
घर लौटेंगे।

127

अल्लाह ही हमारा घर तामीर करता है
1 सुलेमान का ज़ियारत का गीत।
अगर रब घर को तामीर न करे तो उस पर काम करनेवालों की मेहनत अबस है। अगर रब शहर की पहरादारी न करे तो इनसानी पहरेदारों की निगहबानी अबस है।
2 यह भी अबस है कि तुम सुबह-सवेरे उठो और पूरे दिन मेहनत-मशक़्क़त के साथ रोज़ी कमाकर रात गए सो जाओ।
क्योंकि जो अल्लाह को प्यारे हैं उन्हें वह उनकी ज़रूरियात उनके सोते में पूरी कर देता है।

3 बच्चे ऐसी नेमत हैं जो हम मीरास में रब से पाते हैं, औलाद एक अज्र है जो वही हमें देता है।
4 जवानी में पैदा हुए बेटे सूरमे के हाथ में तीरों की मानिंद हैं।
5 मुबारक है वह आदमी जिसका तरकश उनसे भरा है। जब वह शहर के दरवाज़े पर अपने दुश्मनों से झगड़ेगा तो
शरमिंदा नहीं होगा।

128

जिस ख़ानदान को अल्लाह बरकत देता है

1 ज़ियारत का गीत।
मुबारक है वह जो रब का ख़ौफ़ मानकर उस की राहों पर चलता है।
2 यक़ीनन तू अपनी मेहनत का फल खाएगा। मुबारक हो, क्योंकि तू कामयाब होगा।
3 घर में तेरी बीवी अंगूर की फलदार बेल की मानिंद होगी, और तेरे बेटे मेज़ के इर्दगिर्द बैठकर ज़ैतून की ताज़ा
शाख़ों * की मानिंद होंगे।
4 जो आदमी रब का ख़ौफ़ माने उसे ऐसी ही बरकत मिलेगी।
5 रब तुझे कोहे-सिय्यून से बरकत दे। वह करे कि तू जीते-जी यरूशलम की ख़ुशहाली देखे,
6 कि तू अपने पोतों-नवासों को भी देखे। इसराईल की सलामती हो!

129

मदद के लिए इसराईल की दुआ
1 ज़ियारत का गीत।
इसराईल कहे, "मेरी जवानी से ही मेरे दुश्मन बार बार मुझ पर हमलाआवर हुए हैं।
2 मेरी जवानी से ही वह बार बार मुझ पर हमलाआवर हुए हैं। तो भी वह मुझ पर ग़ालिब न आए।"
3 हल चलानेवालों ने मेरी पीठ पर हल चलाकर उस पर अपनी लंबी लंबी रेघारयाँ बनाई हैं।
4 रब रास्त है। उसने बेदीनों के रस्से काटकर मुझे आज़ाद कर दिया है।

5 अल्लाह करे कि जितने भी सिय्यून से नफ़रत रखें वह शरमिंदा होकर पीछे हट जाएँ।
6 वह छतों पर की घास की मानिंद हों जो सहीह तौर पर बढ़ने से पहले ही मुरझा जाती है
7 और जिससे न फ़सल काटनेवाला अपना हाथ, न पूले बाँधनेवाला अपना बाज़ू भर सके।
8 जो भी उनसे गुज़रे वह न कहे, "रब तुम्हें बरकत दे।"
हम रब का नाम लेकर तुम्हें बरकत देते हैं!

130

बड़ी मुसीबत से रिहाई की दुआ (तौबा का छटा ज़बूर)
1 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, मैं तुझे गहराइयों से पुकारता हूँ।
2 ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन! कान लगाकर मेरी इल्तिजाओं पर ध्यान दे!
3 ऐ रब, अगर तू हमारे गुनाहों का हिसाब करे तो कौन क़ायम रहेगा? कोई भी नहीं!
4 लेकिन तुझसे मुआफ़ी हासिल होती है ताकि तेरा ख़ौफ़ माना जाए।

5 मैं रब के इंतज़ार में हूँ, मेरी जान शिद्दत से इंतज़ार करती है। मैं उसके कलाम से उम्मीद रखता हूँ।
6 पहरेदार जिस शिद्दत से पौ फटने के इंतज़ार में रहते हैं, मेरी जान उससे भी ज़्यादा शिद्दत के साथ, हाँ ज़्यादा शिद्दत
के साथ रब की मुंतज़िर रहती है।

7 ऐ इसराईल, रब की राह देखता रह! क्योंकि रब के पास शफ़क़त और फ़िद्या का ठोस बंदोबस्त है।
8 वह इसराईल के तमाम गुनाहों का फ़िद्या देकर उसे नजात देगा।

131

बच्चे का-सा ईमान
1 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, न मेरा दिल घमंडी है, न मेरी आँखें मग़रूर हैं। जो बातें इतनी अज़ीम और हैरानकुन हैं कि मैं उनसे निपट
नहीं सकता उन्हें मैं नहीं छेड़ता।
2 यक़ीनन मैंने अपनी जान को राहत और सुकून दिलाया है, और अब वह माँ की गोद में बैठे छोटे बच्चे की मानिंद
है, हाँ मेरी जान छोटे बच्चे * की मानिंद है।
3 ऐ इसराईल, अब से अबद तक रब के इंतज़ार में रह!

* **128:3** इससे मुराद है पैवंदकारी के लिए दरख़्त से काटी गई टहनियाँ। * **131:2** जिस बच्चे ने माँ का दूध पीना छोड़ दिया है।

132

दाऊद का घराना और सिय्यून पर मक़दिस

1 ज़ियारत का गीत।
ऐ रब, दाऊद का ख़याल रख, उस की तमाम मुसीबतों को याद कर।
2 उसने क़सम खाकर रब से वादा किया और याक़ूब के क़वी ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत मानी,
3 "न मैं अपने घर में दाख़िल हूँगा, न बिस्तर पर लेटूँगा,
4 न मैं अपनी आँखों को सोने दूँगा, न अपने पपोटों को ऊँघने दूँगा
5 जब तक रब के लिए मक़ाम और याक़ूब के सूरमे के लिए सुकूनतगाह न मिले।"

6 हमने इफ़राता में अहद के संदूक़ की ख़बर सुनी और यार के खुले मैदान में उसे पा लिया।
7 आओ, हम उस की सुकूनतगाह में दाख़िल होकर उसके पाँवों की चौकी के सामने सिजदा करें।

8 ऐ रब, उठकर अपनी आरामगाह के पास आ, तू और अहद का संदूक़ जो तेरी क़ुदरत का इज़हार है।
9 तेरे इमाम रास्ती से मुलब्बस हो जाएँ, और तेरे ईमानदार ख़ुशी के नारे लगाएँ।

10 ऐ अल्लाह, अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर अपने मसह किए हुए बंदे के चेहरे को रद्द न कर।
11 रब ने क़सम खाकर दाऊद से वादा किया है, और वह उससे कभी नहीं फिरेगा, "मैं तेरी औलाद में से एक को
तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा।
12 अगर तेरे बेटे मेरे अहद के वफ़ादार रहें और उन अहकाम की पैरवी करें जो मैं उन्हें सिखाऊँगा तो उनके बेटे भी
हमेशा तक तेरे तख़्त पर बैठेंगे।"

13 क्योंकि रब ने कोहे-सिय्यून को चुन लिया है, और वही वहाँ सुकूनत करने का आरज़ूमंद था।
14 उसने फ़रमाया, "यह हमेशा तक मेरी आरामगाह है, और यहाँ मैं सुकूनत करूँगा, क्योंकि मैं इसका आरज़ूमंद
हूँ।
15 मैं सिय्यून की ख़ुराक को कसरत की बरकत देकर उसके ग़रीबों को रोटी से सेर करूँगा।
16 मैं उसके इमामों को नजात से मुलब्बस करूँगा, और उसके ईमानदार ख़ुशी से ज़ोरदार नारे लगाएँगे।
17 यहाँ मैं दाऊद की ताक़त बढ़ा दूँगा, * और यहाँ मैंने अपने मसह किए हुए ख़ादिम के लिए चराग़ तैयार कर रखा
है।
18 मैं उसके दुश्मनों को शरमिंदगी से मुलब्बस करूँगा जबकि उसके सर का ताज चमकता रहेगा।"

133

भाइयों की यगांगत की बरकत

1 दाऊद का ज़बूर। ज़ियारत का गीत।
जब भाई मिलकर और यगांगत से रहते हैं यह कितना अच्छा और प्यारा है।
2 यह उस नफ़ीस तेल की मानिंद है जो हारून इमाम के सर पर उंडेला जाता है और टपक टपककर उस की दाढ़ी
और लिबास के गरेबान पर आ जाता है।
3 यह उस ओस की मानिंद है जो कोहे-हरमून से सिय्यून के पहाड़ों पर पड़ती है। क्योंकि रब ने फ़रमाया है, "वहीं
हमेशा तक बरकत और ज़िंदगी मिलेगी।"

134

रब के घर में रात की सताइश

1 ज़ियारत का गीत।
आओ, रब की सताइश करो, ऐ रब के तमाम ख़ादिमो जो रात के वक़्त रब के घर में खड़े हो।
2 मक़दिस में अपने हाथ उठाकर रब की तमजीद करो!
3 रब सिय्यून से तुझे बरकत दे, आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ तुझे बरकत दे।

* **132:17** लफ़्ज़ी तरजुमा : मैं दाऊद का सींग फूटने दूँगा।

135

अल्लाह की परस्तिश
1 रब की हम्द हो! रब के नाम की सताइश करो! उस की तमजीद करो, ऐ रब के तमाम ख़ादिमो,
2 जो रब के घर में, हमारे ख़ुदा की बारगाहों में खड़े हो।
3 रब की हम्द करो, क्योंकि रब भला है। उसके नाम की मद्हसराई करो, क्योंकि वह प्यारा है।
4 क्योंकि रब ने याक़ूब को अपने लिए चुन लिया, इसराईल को अपनी मिलकियत बना लिया है।

5 हाँ, मैंने जान लिया है कि रब अज़ीम है, कि हमारा रब दीगर तमाम माबूदों से ज़्यादा अज़ीम है।
6 रब जो जी चाहे करता है, ख़ाह आसमान पर हो या ज़मीन पर, ख़ाह समुंदरों में हो या गहराइयों में कहीं भी हो।
7 वह ज़मीन की इंतहा से बादल चढ़ने देता और बिजली बारिश के लिए पैदा करता है, वह हवा अपने गोदामों से
निकाल लाता है।
8 मिसर में उसने इनसानो-हैवान के तमाम पहलौठों को मार डाला।
9 ऐ मिसर, उसने अपने इलाही निशान और मोजिज़ात तेरे दरमियान ही किए। तब फ़िरौन और उसके तमाम मुलाज़िम
उनका निशाना बन गए।

10 उसने मुतअद्दिद क़ौमों को शिकस्त देकर ताक़तवर बादशाहों को मौत के घाट उतार दिया।
11 अमोरियों का बादशाह सीहोन, बसन का बादशाह ओज और मुल्के-कनान की तमाम सलतनतें न रहीं।
12 उसने उनका मुल्क इसराईल को देकर फ़रमाया कि आइंदा यह मेरी क़ौम की मौरूसी मिलकियत होगा।

13 ऐ रब, तेरा नाम अबदी है। ऐ रब, तुझे पुश्त-दर-पुश्त याद किया जाएगा।
14 क्योंकि रब अपनी क़ौम का इनसाफ़ करके अपने ख़ादिमों पर तरस खाएगा।

15 दीगर क़ौमों के बुत सोने-चाँदी के हैं, इनसान के हाथ ने उन्हें बनाया।
16 उनके मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते, उनकी आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
17 उनके कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते, उनके मुँह में साँस ही नहीं होती।
18 जो बुत बनाते हैं वह उनकी मानिंद हो जाएँ, जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिसो-हरकत हो जाएँ।

19 ऐ इसराईल के घराने, रब की सताइश कर। ऐ हारून के घराने, रब की तमजीद कर।
20 ऐ लावी के घराने, रब की हम्दो-सना कर। ऐ रब का ख़ौफ़ माननेवालो, रब की सताइश करो।
21 सिय्यून से रब की हम्द हो। उस की हम्द हो जो यरूशलम में सुकूनत करता है। रब की हम्द हो!

136

तख़लीक़ और क़ौम की तारीख़ में अल्लाह के मोजिज़े
1 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
2 ख़ुदाओं के ख़ुदा का शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
3 मालिकों के मालिक का शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
4 जो अकेला ही अज़ीम मोजिज़े करता है उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
5 जिसने हिकमत के साथ आसमान बनाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
6 जिसने ज़मीन को मज़बूती से पानी के ऊपर लगा दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
7 जिसने आसमान की रौशनियों को ख़लक़ किया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
8 जिसने सूरज को दिन के वक़्त हुकूमत करने के लिए बनाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी
है।
9 जिसने चाँद और सितारों को रात के वक़्त हुकूमत करने के लिए बनाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
10 जिसने मिसर में पहलौठों को मार डाला उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
11 जो इसराईल को मिसरियों में से निकाल लाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

12 जिसने उस वक़्त बड़ी ताक़त और क़ुदरत का इज़हार किया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी
है।
13 जिसने बहरे-क़ुलज़ुम को दो हिस्सों में तक़सीम कर दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
14 जिसने इसराईल को उसके बीच में से गुज़रने दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
15 जिसने फ़िरौन और उस की फ़ौज को बहरे-क़ुलज़ुम में बहाकर ग़रक़ कर दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस
की शफ़क़त अबदी है।
16 जिसने रेगिस्तान में अपनी क़ौम की क़ियादत की उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
17 जिसने बड़े बादशाहों को शिकस्त दी उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
18 जिसने ताक़तवर बादशाहों को मार डाला उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
19 जिसने अमोरियों के बादशाह सीहोन को मौत के घाट उतारा उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी
है।
20 जिसने बसन के बादशाह ओज को हलाक कर दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
21 जिसने उनका मुल्क इसराईल को मीरास में दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
22 जिसने उनका मुल्क अपने ख़ादिम इसराईल की मौरूसी मिलकियत बनाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की
शफ़क़त अबदी है।
23 जिसने हमारा ख़याल किया जब हम ख़ाक में दब गए थे उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
24 जिसने हमें उनके क़ब्ज़े से छुड़ाया जो हम पर ज़ुल्म कर रहे थे उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त
अबदी है।
25 जो तमाम जानदारों को ख़ुराक मुहैया करता है उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।
26 आसमान के ख़ुदा का शुक्र करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।

137

बाबल में जिलावतनों की आहो-ज़ारी

1 जब सिय्यून की याद आई तो हम बाबल की नहरों के किनारे ही बैठकर रो पड़े।
2 हमने वहाँ के सफ़ेदा के दरख़्तों से अपने सरोद लटका दिए,
3 क्योंकि जिन्होंने हमें गिरिफ़्तार किया था उन्होंने हमें वहाँ गीत गाने को कहा, और जो हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं
उन्होंने ख़ुशी का मुतालबा किया, "हमें सिय्यून का कोई गीत सुनाओ!"
4 लेकिन हम अजनबी मुल्क में किस तरह रब का गीत गाएँ?
5 ऐ यरूशलम, अगर मैं तुझे भूल जाऊँ तो मेरा दहना हाथ सूख जाए।
6 अगर मैं तुझे याद न करूँ और यरूशलम को अपनी अज़ीमतरीन ख़ुशी से ज़्यादा क़ीमती न समझूँ तो मेरी ज़बान
तालू से चिपक जाए।

7 ऐ रब, वह कुछ याद कर जो अदोमियों ने उस दिन किया जब यरूशलम दुश्मन के क़ब्ज़े में आया। उस वक़्त वह
बोले, "उसे ढा दो! बुनियादों तक उसे गिरा दो!"
8 ऐ बाबल बेटी जो तबाह करने पर तुली हुई है, मुबारक है वह जो तुझे उसका बदला दे जो तूने हमारे साथ किया है।
9 मुबारक है वह जो तेरे बच्चों को पकड़कर पत्थर पर पटख़ दे।

138

अल्लाह की मदद के लिए शुक्रगुज़ारी

1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, माबूदों के सामने ही तेरी तमजीद करूँगा।
2 मैं तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की तरफ़ रुख़ करके सिजदा करूँगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी के बाइस तेरा शुक्र
करूँगा। क्योंकि तूने अपने नाम और कलाम को तमाम चीज़ों पर सरफ़राज़ किया है।
3 जिस दिन मैंने तुझे पुकारा तूने मेरी सुनकर मेरी जान को बड़ी तक़वियत दी।

4 ऐ रब, दुनिया के तमाम हुक्मरान तेरे मुँह के फ़रमान सुनकर तेरा शुक्र करें।
5 वह रब की राहों की मद्‌हसराई करें, क्योंकि रब का जलाल अज़ीम है।

6 क्योंकि गो रब बुलंदियों पर है वह पस्तहाल का ख़याल करता और मग़रूरों को दूर से ही पहचान लेता है।

7 जब कभी मुसीबत मेरा दामन नहीं छोड़ती तो तू मेरी जान को ताज़ादम करता है, तू अपना दहना हाथ बढ़ाकर
मुझे मेरे दुश्मनों के तैश से बचाता है।
8 रब मेरी ख़ातिर बदला लेगा। ऐ रब, तेरी शफ़क़त अबदी है। उन्हें न छोड़ जिनको तेरे हाथों ने बनाया है!

139

अल्लाह सब कुछ जानता और हर जगह मौजूद है

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
ऐ रब, तू मेरा मुआयना करता और मुझे ख़ूब जानता है।
2 मेरा उठना बैठना तुझे मालूम है, और तू दूर से ही मेरी सोच समझता है।
3 तू मुझे जाँचता है, ख़ाह मैं रास्ते में हूँ या आराम करूँ। तू मेरी तमाम राहों से वाक़िफ़ है।
4 क्योंकि जब भी कोई बात मेरी ज़बान पर आए तू ऐ रब पहले ही उसका पूरा इल्म रखता है।
5 तू मुझे चारों तरफ़ से घेरे रखता है, तेरा हाथ मेरे ऊपर ही रहता है।
6 इसका इल्म इतना हैरानकुन और अज़ीम है कि मैं इसे समझ नहीं सकता।

7 मैं तेरे रूह से कहाँ भाग जाऊँ, तेरे चेहरे से कहाँ फ़रार हो जाऊँ?
8 अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ तो तू वहाँ मौजूद है, अगर उतरकर अपना बिस्तर पाताल में बिछाऊँ तो तू वहाँ भी
है।
9 गो मैं तुलूए-सुबह के परों पर उड़कर समुंदर की दूरतरीन हद पर जा बसूँ,
10 वहाँ भी तेरा हाथ मेरी क़ियादत करेगा, वहाँ भी तेरा दहना हाथ मुझे थामे रखेगा।
11 अगर मैं कहूँ, "तारीकी मुझे छुपा दे, और मेरे इर्दगिर्द की रौशनी रात में बदल जाए," तो भी कोई फ़रक़ नहीं
पड़ेगा।
12 तेरे सामने तारीकी भी तारीक नहीं होती, तेरे हुज़ूर रात दिन की तरह रौशन होती है बल्कि रौशनी और अंधेरा
एक जैसे होते हैं।

13 क्योंकि तूने मेरा बातिन बनाया है, तूने मुझे माँ के पेट में तश्कील दिया है।
14 मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मुझे जलाली और मोजिज़ाना तौर से बनाया गया है। तेरे काम हैरतअंगेज़ हैं, और मेरी
जान यह ख़ूब जानती है।
15 मेरा ढाँचा तुझसे छुपा नहीं था जब मुझे पोशीदगी में बनाया गया, जब मुझे ज़मीन की गहराइयों में तश्कील दिया
गया।
16 तेरी आँखों ने मुझे उस वक़्त देखा जब मेरे जिस्म की शक्ल अभी नामुकम्मल थी। जितने भी दिन मेरे लिए
मुक़र्रर थे वह सब तेरी किताब में उस वक़्त दर्ज थे, जब एक भी नहीं गुज़रा था।

17 ऐ अल्लाह, तेरे ख़यालात समझना मेरे लिए कितना मुश्किल है! उनकी कुल तादाद कितनी अज़ीम है।
18 अगर मैं उन्हें गिन सकता तो वह रेत से ज़्यादा होते। मैं जाग उठता हूँ तो तेरे ही साथ होता हूँ।

19 ऐ अल्लाह, काश तू बेदीन को मार डाले, कि ख़ूनख़ार मुझसे दूर हो जाएँ।
20 वह फ़रेब से तेरा ज़िक्र करते हैं, हाँ तेरे मुख़ालिफ़ झूट बोलते हैं।
21 ऐ रब, क्या मैं उनसे नफ़रत न करूँ जो तुझसे नफ़रत करते हैं? क्या मैं उनसे घिन न खाऊँ जो तेरे ख़िलाफ़ उठे
हैं?
22 यक़ीनन मैं उनसे सख़्त नफ़रत करता हूँ। वह मेरे दुश्मन बन गए हैं।

23 ऐ अल्लाह, मेरा मुआयना करके मेरे दिल का हाल जान ले, मुझे जाँचकर मेरे बेचैन ख़यालात को जान ले।
24 मैं नुक़सानदेह राह पर तो नहीं चल रहा? अबदी राह पर मेरी क़ियादत कर!

140

दुश्मन से रिहाई की दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, मुझे शरीरों से छुड़ा और ज़ालिमों से महफ़ूज़ रख।

2 दिल में वह बुरे मनसूबे बाँधते, रोज़ाना जंग छेड़ते हैं।

3 उनकी ज़बान साँप की ज़बान जैसी तेज़ है, और उनके होंटों में साँप का ज़हर है। (सिलाह)

4 ऐ रब, मुझे बेदीन के हाथों से महफ़ूज़ रख, ज़ालिम से मुझे बचाए रख, उनसे जो मेरे पाँवों को ठोकर खिलाने के मनसूबे बाँध रहे हैं।

5 मग़रूरों ने मेरे रास्ते में फंदा और रस्से छुपाए हैं, उन्होंने जाल बिछाकर रास्ते के किनारे किनारे मुझे पकड़ने के फंदे लगाए हैं। (सिलाह)

6 मैं रब से कहता हूँ, "तू ही मेरा ख़ुदा है, मेरी इल्तिजाओं की आवाज़ सुन!"

7 ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, ऐ मेरी क़वी नजात! जंग के दिन तू अपनी ढाल से मेरे सर की हिफ़ाज़त करता है।

8 ऐ रब, बेदीन का लालच पूरा न कर। उसका इरादा कामयाब होने न दे, ऐसा न हो कि यह लोग सरफ़राज़ हो जाएँ। (सिलाह)

9 उन्होंने मुझे घेर लिया है, लेकिन जो आफ़त उनके होंट मुझ पर लाना चाहते हैं वह उनके अपने सरों पर आए!

10 दहकते कोयले उन पर बरसें, और उन्हें आग में, अथाह गढ़ों में फेंका जाए ताकि आइंदा कभी न उठें।

11 तोहमत लगानेवाला मुल्क में क़ायम न रहे, और बुराई ज़ालिम को मार मारकर उसका पीछा करे।

12 मैं जानता हूँ कि रब अदालत में मुसीबतज़दा का दिफ़ा करेगा। वही ज़रूरतमंद का इनसाफ़ करेगा।

13 यक़ीनन रास्तबाज़ तेरे नाम की सताइश करेंगे, और दियानतदार तेरे हुज़ूर बसेंगे।

141

हिफ़ाज़त की गुज़ारिश

1 दाऊद का ज़बूर।

ऐ रब, मैं तुझे पुकार रहा हूँ, मेरे पास आने में जल्दी कर! जब मैं तुझे आवाज़ देता हूँ तो मेरी फ़रियाद पर ध्यान दे!

2 मेरी दुआ तेरे हुज़ूर बख़ूर की क़ुरबानी की तरह क़बूल हो, मेरे तेरी तरफ़ उठाए हुए हाथ शाम की ग़ल्ला की नज़र की तरह मंज़ूर हों।

3 ऐ रब, मेरे मुँह पर पहरा बिठा, मेरे होंटों के दरवाज़े की निगहबानी कर।

4 मेरे दिल को ग़लत बात की तरफ़ मायल न होने दे, ऐसा न हो कि मैं बदकारों के साथ मिलकर बुरे काम में मुलव्वस हो जाऊँ और उनके लज़ीज़ खानों में शिरकत करूँ।

5 रास्तबाज़ शफ़क़त से मुझे मारे और मुझे तंबीह करे। मेरा सर इससे इनकार नहीं करेगा, क्योंकि यह उसके लिए शफ़ाबख़्श तेल की मानिंद होगा। लेकिन मैं हर वक़्त शरीरों की हरकतों के ख़िलाफ़ दुआ करता हूँ।

6 जब वह गिरकर उस चटान के हाथ में आएँगे जो उनका मुंसिफ़ है तो वह मेरी बातों पर ध्यान देंगे, और उन्हें समझ आएगी कि वह कितनी प्यारी हैं।

7 ऐ अल्लाह, हमारी हड्डियाँ उस ज़मीन की मानिंद हैं जिस पर किसी ने इतने ज़ोर से हल चलाया है कि ढेले उड़कर इधर उधर बिखर गए हैं। हमारी हड्डियाँ पाताल के मुँह तक बिखर गई हैं।

8 ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहती हैं, और मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। मुझे मौत के हवाले न कर।

9 मुझे उस जाल से महफ़ूज़ रख जो उन्होंने मुझे पकड़ने के लिए बिछाया है। मुझे बदकारों के फंदों से बचाए रख।

10 बेदीन मिलकर उनके अपने जालों में उलझ जाएँ जबकि मैं बचकर आगे निकलूँ।

142

सख़्त मुसीबत में मदद की पुकार

1 हिकमत का गीत। दुआ जो दाऊद ने की जब वह ग़ार में था।

मैं मदद के लिए चीख़ता-चिल्लाता रब को पुकारता हूँ, मैं ज़ोरदार आवाज़ से रब से इल्तिजा करता हूँ।
2 मैं अपनी आहो-ज़ारी उसके सामने उंडेल देता, अपनी तमाम मुसीबत उसके हुज़ूर पेश करता हूँ।
3 जब मेरी रूह मेरे अंदर निढाल हो जाती है तो तू ही मेरी राह जानता है। जिस रास्ते में मैं चलता हूँ उसमें लोगों ने फंदा छुपाया है।
4 मैं दहनी तरफ़ नज़र डालकर देखता हूँ, लेकिन कोई नहीं है जो मेरा ख़याल करे। मैं बच नहीं सकता, कोई नहीं है जो मेरी जान की फ़िकर करे।

5 ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ। मैं कहता हूँ, "तू मेरी पनाहगाह और ज़िंदों के मुल्क में मेरा मौरूसी हिस्सा है।"
6 मेरी चीख़ों पर ध्यान दे, क्योंकि मैं बहुत पस्त हो गया हूँ। मुझे उनसे छुड़ा जो मेरा पीछा कर रहे हैं, क्योंकि मैं उन पर क़ाबू नहीं पा सकता।
7 मेरी जान को क़ैदख़ाने से निकाल ला ताकि तेरे नाम की सताइश करूँ। जब तू मेरे साथ भलाई करेगा तो रास्तबाज़ मेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएंगे।

143

बचाव और क़ियादत की गुज़ारिश *(तौबा का सातवाँ ज़बूर)*
1 दाऊद का ज़बूर।
ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर ध्यान दे। अपनी वफ़ादारी और रास्ती की ख़ातिर मेरी सुन!
2 अपने ख़ादिम को अपनी अदालत में न ला, क्योंकि तेरे हुज़ूर कोई भी जानदार रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता।
3 क्योंकि दुश्मन ने मेरी जान का पीछा करके उसे ख़ाक में कुचल दिया है। उसने मुझे उन लोगों की तरह तारीकी में बसा दिया है जो बड़े अरसे से मुरदा हैं।
4 मेरे अंदर मेरी रूह निढाल है, मेरे अंदर मेरा दिल दहशत के मारे बेहिसो-हरकत हो गया है।

5 मैं क़दीम ज़माने के दिन याद करता और तेरे कामों पर ग़ौरो-ख़ौज़ करता हूँ। जो कुछ तेरे हाथों ने किया उसमें मैं महवे-ख़याल रहता हूँ।
6 मैं अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाता हूँ, मेरी जान ख़ुश्क ज़मीन की तरह तेरी प्यासी है। (सिलाह)

7 ऐ रब, मेरी सुनने में जल्दी कर। मेरी जान तो ख़त्म होनेवाली है। अपना चेहरा मुझसे छुपाए न रख, वरना मैं गढ़े में उतरनेवालों की मानिंद हो जाऊँगा।
8 सुबह के वक़्त मुझे अपनी शफ़क़त की ख़बर सुना, क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मुझे वह राह दिखा जिस पर मुझे जाना है, क्योंकि मैं तेरा ही आरज़ूमंद हूँ।
9 ऐ रब, मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा, क्योंकि मैं तुझमें पनाह लेता हूँ।
10 मुझे अपनी मरज़ी पूरी करना सिखा, क्योंकि तू मेरा ख़ुदा है। तेरा नेक रूह हमवार ज़मीन पर मेरी राहनुमाई करे।
11 ऐ रब, अपने नाम की ख़ातिर मेरी जान को ताज़ादम कर। अपनी रास्ती से मेरी जान को मुसीबत से बचा।
12 अपनी शफ़क़त से मेरे दुश्मनों को हलाक कर। जो भी मुझे तंग कर रहे हैं उन्हें तबाह कर! क्योंकि मैं तेरा ख़ादिम हूँ।

144

नजात और ख़ुशहाली की दुआ
1 दाऊद का ज़बूर।
रब मेरी चटान की हम्द हो, जो मेरे हाथों को लड़ने और मेरी उँगलियों को जंग करने की तरबियत देता है।
2 वह मेरी शफ़क़त, मेरा क़िला, मेरा नजातदहिंदा और मेरी ढाल है। उसी में मैं पनाह लेता हूँ, और वही दीगर अक़वाम को मेरे ताबे कर देता है।

3 ऐ रब, इनसान कौन है कि तू उसका ख़याल रखे? आदमज़ाद कौन है कि तू उसका लिहाज़ करे?
4 इनसान दम-भर का ही है, उसके दिन तेज़ी से गुज़रनेवाले साये की मानिंद हैं।

5 ऐ रब, अपने आसमान को झुकाकर उतर आ! पहाड़ों को छू ताकि वह धुआँ छोड़ें।
6 बिजली भेजकर उन्हें मुंतशिर कर, अपने तीर चलाकर उन्हें दरहम-बरहम कर।
7 अपना हाथ बुलंदियों से नीचे बढ़ा और मुझे छुड़ाकर पानी की गहराइयों और परदेसियों के हाथ से बचा,
8 जिनका मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब देता है।

9 ऐ अल्लाह, मैं तेरी तमजीद में नया गीत गाऊँगा, दस तारों का सितार बजाकर तेरी मद्हसराई करूँगा।
10 क्योंकि तू बादशाहों को नजात देता और अपने ख़ादिम दाऊद को मोहलक तलवार से बचाता है।

11 मुझे छुड़ाकर परदेसियों के हाथ से बचा, जिनका मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब देता है।
12 हमारे बेटे जवानी में फलने फूलनेवाले पौदों की मानिंद हों, हमारी बेटियाँ महल को सजाने के लिए तराशे हुए
कोने के सतून की मानिंद हों।
13 हमारे गोदाम भरे रहें और हर क़िस्म की ख़ुराक मुहैया करें। हमारी भेड़-बकरियाँ हमारे मैदानों में हज़ारों बल्कि
बेशुमार बच्चे जन्म दें।
14 हमारे गाय-बैल मोटे-ताज़े हों, और न कोई ज़ाया हो जाए, न किसी को नुक़सान पहुँचे। हमारे चौकों में आहो-ज़ारी
की आवाज़ सुनाई न दे।
15 मुबारक है वह क़ौम जिस पर यह सब कुछ सादिक़ आता है, मुबारक है वह क़ौम जिसका ख़ुदा रब है!

145

अल्लाह की अबदी शफ़क़त

1 दाऊद का ज़बूर। हम्दो-सना का गीत।
ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करूँगा। ऐ बादशाह, मैं हमेशा तक तेरे नाम की सताइश करूँगा।
2 रोज़ाना मैं तेरी तमजीद करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की हम्द करूँगा।
3 रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लायक़ है। उस की अज़मत इनसान की समझ से बाहर है।
4 एक पुश्त अगली पुश्त के सामने वह कुछ सराहे जो तूने किया है, वह दूसरों को तेरे ज़बरदस्त काम सुनाएँ।
5 मैं तेरे शानदार जलाल की अज़मत और तेरे मोजिज़ों में महवे-ख़याल रहूँगा।
6 लोग तेरे हैबतनाक कामों की क़ुदरत पेश करें, और मैं भी तेरी अज़मत बयान करूँगा।
7 वह जोश से तेरी बड़ी भलाई को सराहें और ख़ुशी से तेरी रास्ती की मद्हसराई करें।
8 रब मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है।
9 रब सबके साथ भलाई करता है, वह अपनी तमाम मख़लूक़ात पर रहम करता है।

10 ऐ रब, तेरी तमाम मख़लूक़ात तेरा शुक्र करें। तेरे ईमानदार तेरी तमजीद करें।
11 वह तेरी बादशाही के जलाल पर फ़ख़र करें और तेरी क़ुदरत बयान करें
12 ताकि आदमज़ाद तेरे क़वी कामों और तेरी बादशाही की जलाली शानो-शौकत से आगाह हो जाएँ।
13 तेरी बादशाही की कोई इंतहा नहीं, और तेरी सलतनत पुश्त-दर-पुश्त हमेशा तक क़ायम रहेगी।

14 रब तमाम गिरनेवालों का सहारा है। जो भी दब जाए उसे वह उठा खड़ा करता है।
15 सबकी आँखें तेरे इंतज़ार में रहती हैं, और तू हर एक को वक़्त पर उसका खाना मुहैया करता है।
16 तू अपनी मुट्ठी खोलकर हर जानदार की ख़ाहिश पूरी करता है।
17 रब अपनी तमाम राहों में रास्त और अपने तमाम कामों में वफ़ादार है।
18 रब उन सबके क़रीब है जो उसे पुकारते हैं, जो दियानतदारी से उसे पुकारते हैं।
19 जो उसका ख़ौफ़ मानें उनकी आरज़ू वह पूरी करता है। वह उनकी फ़रियादें सुनकर उनकी मदद करता है।
20 रब उन सबको महफ़ूज़ रखता है जो उसे प्यार करते हैं, लेकिन बेदीनों को वह हलाक करता है।

21 मेरा मुँह रब की तारीफ़ बयान करे, तमाम मख़लूक़ात हमेशा तक उसके मुक़द्दस नाम की सताइश करें।

146

अल्लाह की अबदी वफ़ादारी

1 रब की हम्द हो! ऐ मेरी जान, रब की हम्द कर।
2 जीते-जी मैं रब की सताइश करूँगा, उम्र-भर अपने ख़ुदा की मद्‌हसराई करूँगा।

3 शुरफ़ा पर भरोसा न रखो, न आदमज़ाद पर जो नजात नहीं दे सकता।
4 जब उस की रूह निकल जाए तो वह दुबारा ख़ाक में मिल जाता है, उसी वक़्त उसके मनसूबे अधूरे रह जाते हैं।

5 मुबारक है वह जिसका सहारा याक़ूब का ख़ुदा है, जो रब अपने ख़ुदा के इंतज़ार में रहता है।
6 क्योंकि उसने आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है बनाया है। वह हमेशा तक वफ़ादार है।
7 वह मज़लूमों का इनसाफ़ करता और भूकों को रोटी खिलाता है। रब क़ैदियों को आज़ाद करता है।
8 रब अंधों की आँखें बहाल करता और ख़ाक में दबे हुओं को उठा खड़ा करता है, रब रास्तबाज़ को प्यार करता
है।
9 रब परदेसियों की देख-भाल करता, यतीमों और बेवाओं को क़ायम रखता है। लेकिन वह बेदीनों की राह को
टेढ़ा बनाकर कामयाब होने नहीं देता।

10 रब अबद तक हुकूमत करेगा। ऐ सिय्यून, तेरा ख़ुदा पुश्त-दर-पुश्त बादशाह रहेगा। रब की हम्द हो।

147

कायनात और तारीख़ में रब का बंदोबस्त

1 रब की हम्द हो! अपने ख़ुदा की मद्‌हसराई करना कितना भला है, उस की तमजीद करना कितना प्यारा और
ख़ूबसूरत है।
2 रब यरूशलम को तामीर करता और इसराईल के मुंतशिर जिलावतनों को जमा करता है।
3 वह दिलशिकस्तों को शफ़ा देकर उनके ज़ख़मों पर मरहम-पट्टी लगाता है।
4 वह सितारों की तादाद गिन लेता और हर एक का नाम लेकर उन्हें बुलाता है।
5 हमारा रब अज़ीम है, और उस की क़ुदरत ज़बरदस्त है। उस की हिकमत की कोई इंतहा नहीं।
6 रब मुसीबतज़दों को उठा खड़ा करता लेकिन बदकारों को ख़ाक में मिला देता है।

7 रब की तमजीद में शुक्र का गीत गाओ, हमारे ख़ुदा की ख़ुशी में सरोद बजाओ।
8 क्योंकि वह आसमान पर बादल छाने देता, ज़मीन को बारिश मुहैया करता और पहाड़ों पर घास फूटने देता है।
9 वह मवेशी को चारा और कौवे के बच्चों को वह कुछ खिलाता है जो वह शोर मचाकर माँगते हैं।

10 न वह घोड़े की ताक़त से लुत्फ़अंदोज़ होता, न आदमी की मज़बूत टाँगों से ख़ुश होता है।
11 रब उन्हीं से ख़ुश होता है जो उसका ख़ौफ़ मानते और उस की शफ़क़त के इंतज़ार में रहते हैं।

12 ऐ यरूशलम, रब की मद्‌हसराई कर! ऐ सिय्यून, अपने ख़ुदा की हम्द कर!
13 क्योंकि उसने तेरे दरवाज़ों के कुंडे मज़बूत करके तेरे दरमियान बसनेवाली औलाद को बरकत दी है।
14 वही तेरे इलाक़े में अमन और सुकून क़ायम रखता और तुझे बेहतरीन गंदुम से सेर करता है।
15 वह अपना फ़रमान ज़मीन पर भेजता है तो उसका कलाम तेज़ी से पहुँचता है।
16 वह ऊन जैसी बर्फ़ मुहैया करता और पाला राख की तरह चारों तरफ़ बिखेर देता है।
17 वह अपने ओले कंकरों की तरह ज़मीन पर फेंक देता है। कौन उस की शदीद सर्दी बरदाश्त कर सकता है?
18 वह एक बार फिर अपना फ़रमान भेजता है तो बर्फ़ पिघल जाती है। वह अपनी हवा चलने देता है तो पानी टपकने
लगता है।

19 उसने याक़ूब को अपना कलाम सुनाया, इसराईल पर अपने अहकाम और आईन ज़ाहिर किए हैं।
20 ऐसा सुलूक उसने किसी और क़ौम से नहीं किया। दीगर अक़वाम तो तेरे अहकाम नहीं जानतीं। रब की हम्द
हो!

148

आसमानो-ज़मीन पर अल्लाह की तमजीद
1 रब की हम्द हो! आसमान से रब की सताइश करो, बुलंदियों पर उस की तमजीद करो!
2 ऐ उसके तमाम फ़रिश्तो, उस की हम्द करो! ऐ उसके तमाम लशकरो, उस की तारीफ़ करो!
3 ऐ सूरज और चाँद, उस की हम्द करो! ऐ तमाम चमकदार सितारो, उस की सताइश करो!
4 ऐ बुलंदतरीन आसमानो और आसमान के ऊपर के पानी, उस की हम्द करो!

5 वह रब के नाम की सताइश करें, क्योंकि उसने फ़रमाया तो वह वुजूद में आए।
6 उसने नाक़ाबिले-मनसूख़ फ़रमान जारी करके उन्हें हमेशा के लिए क़ायम किया है।

7 ऐ समुंदर के अज़दहाओ और तमाम गहराइयो, ज़मीन से रब की तमजीद करो!
8 ऐ आग, ओलो, बर्फ़, धुंध और उसके हुक्म पर चलनेवाली आँधियो, उस की हम्द करो!
9 ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, फलदार दरख़तो और तमाम देवदारो, उस की तारीफ़ करो!
10 ऐ जंगली जानवरो, मवेशियो, रेंगनेवाली मख़लूक़ात और परिंदो, उस की हम्द करो!
11 ऐ ज़मीन के बादशाहो और तमाम क़ौमो, सरदारो और ज़मीन के तमाम हुक्मरानो, उस की तमजीद करो!
12 ऐ नौजवानो और कुँवारियो, बुज़ुर्गो और बच्चो, उस की हम्द करो!

13 सब रब के नाम की सताइश करें, क्योंकि सिर्फ़ उसी का नाम अज़ीम है, उस की अज़मत आसमानो-ज़मीन से आला है।
14 उसने अपनी क़ौम को सरफ़राज़ करके * अपने तमाम ईमानदारों की शोहरत बढ़ाई है, यानी इसराईलियों की शोहरत, उस क़ौम की जो उसके क़रीब रहती है। रब की हम्द हो!

149

सिय्यून रब की हम्द करे!
1 रब की हम्द हो! रब की तमजीद में नया गीत गाओ, ईमानदारों की जमात में उस की तारीफ़ करो।
2 इसराईल अपने ख़ालिक़ से ख़ुश हो, सिय्यून के फ़रज़ंद अपने बादशाह की ख़ुशी मनाएँ।
3 वह नाचकर उसके नाम की सताइश करें, दफ़ और सरोद से उस की मद्हसराई करें।

4 क्योंकि रब अपनी क़ौम से ख़ुश है। वह मुसीबतज़दों को अपनी नजात की शानो-शौकत से आरास्ता करता है।
5 ईमानदार इस शानो-शौकत के बाइस ख़ुशी मनाएँ, वह अपने बिस्तरों पर शादमानी के नारे लगाएँ।
6 उनके मुँह में अल्लाह की हम्दो-सना और उनके हाथों में दोधारी तलवार हो
7 ताकि दीगर अक़वाम से इंतक़ाम लें और उम्मतों को सज़ा दें।
8 वह उनके बादशाहों को ज़ंजीरों में और उनके शुरफ़ा को बेड़ियों में जकड़ लेंगे
9 ताकि उन्हें वह सज़ा दें जिसका फ़ैसला क़लमबंद हो चुका है। यह इज़्ज़त अल्लाह के तमाम ईमानदारों को हासिल है। रब की हम्द हो!

150

रब की हम्दो-सना
1 रब की हम्द हो! अल्लाह के मक़दिस में उस की सताइश करो। उस की क़ुदरत के बने हुए आसमानी गुंबद में उस की तमजीद करो।
2 उसके अज़ीम कामों के बाइस उस की हम्द करो। उस की ज़बरदस्त अज़मत के बाइस उस की सताइश करो।
3 नरसिंगा फूँककर उस की हम्द करो, सितार और सरोद बजाकर उस की तमजीद करो।
4 दफ़ और लोकनाच से उस की हम्द करो। तारदार साज़ और बाँसरी बजाकर उस की सताइश करो।
5 झाँझों की झंकारती आवाज़ से उस की हम्द करो, गूँजती झाँझ से उस की तारीफ़ करो।
6 जिसमें भी साँस है वह रब की सताइश करे। रब की हम्द हो!।

* **148:14** लफ़्ज़ी तरजुमा : अपनी क़ौम का सींग बुलंद करके।